हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

शोधनिबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७६, शक संवत् १९४१
सन् २०१९-२०२०, जय हिन्द संवत् ७२-७३

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥
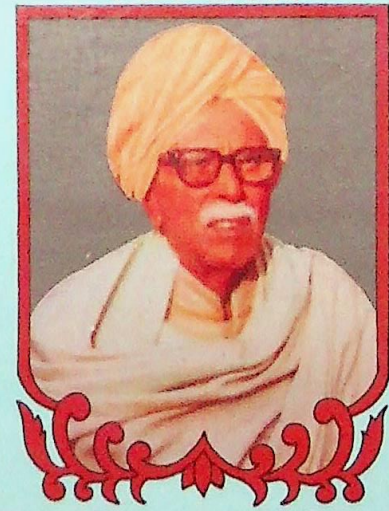
दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि

मंत्री सूर्य

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व॰ डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्राप्ति स्थानः रुचिका पब्लिकेशन्स
टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
117/-

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च**– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में –––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां [illegible] समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ. –अस्त।
अं –अंश।
उ. –उदित, उत्तर।
क. –कला।
कृ. –कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा. –क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू. –गोधूलि (लग्न)।
ति. –तिथि।
द. –दक्षिण।
दा. –दानपूजन।
दि. –दिन।
दि.ल. –दिन का लग्न।
प्रा. –प्रारम्भ।
भ. –भद्रा।
मा. –मार्गी।
मि. –मिनट।
रा. –राशि।
ल. –लग्न।
व. –वक्री।
वा. –वार।
वि. –विकला।
वै. –वैष्णवों के लिए।
स. –व्रत सबके लिए।
शु. – शुक्लपक्ष, शुक्रवार,
– शुक्र (ग्रह)।
सं. –संक्रान्ति, संवत्।
सा.का. –साम्पातिक काल।
स्मा. –स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरस्थान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीऽयम्। त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

शोधनिबन्ध विशेषांक

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

विक्रम संवत् २०७६, शक संवत् १९४१
सन् २०१९-२०२०, जय हिन्द संवत् ७२-७३
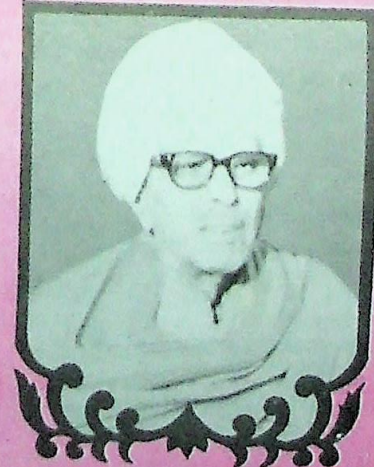
दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि

मंत्री सूर्य

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व० डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D.(Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S.(LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य

गौरवशाली ९२वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : अग्रवाल बुक डिपो (रजि.)
460, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23943254, 23936116

मूल्य 117/-

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2076 वि.)

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

शोधनिबन्ध विशेषांक *

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के बारे निर्देश पृष्ठ 291 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य्य - श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद-प्रतिष्ठित-श्रींकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पंचांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत-पर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड-पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती-महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक-लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

कांचीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या
(सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2077 वि.) में विशेष—अगले वर्ष (सं. 2077 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा।— संपादक

* इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 291 भी देखें।

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

व्रत-पर्व	तिथि	वार
जनवरी (सन् 2019 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2019 ई. प्रा.	1 जन.	मं.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	र.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	चं.
पौषी पूर्णिमा	21 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	21 जन.	चं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	24 जन.	गु.
फरवरी (सन् 2019 ई.)		
अर्द्धकुम्भ प्रयागराज	4 फर.	चं.
मौनी अमावस/सोमवती अमा	4 फर.	चं.
महोदय योग	4 फर.	चं.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	5 फर.	मं.
गौरी तृतीया (गौंतरी)	8 फर.	शु.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	8 फर.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	9 फर.	श.
लक्ष्मी/सरस्वती-पूजन	9 फर.	श.
रथसप्तमी(पूर्वारुणोदय वाली)	12 फर.	मं.
आरोग्य सप्तमी	12 फर.	मं.
भीष्टमाष्टमी	13 फर.	बु.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	14 फर.	गु.
भीष्म द्वादशी	16 फर.	श.
माघी पूर्णिमा	19 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	19 फर.	मं.
मार्च (सन् 2019 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग)	4 मार्च	चं.
होलाष्टक प्रारम्भ	14 मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	18 मार्च	चं.
होलिकादहन	20 मार्च	बु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	21 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	21 मार्च	गु.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	21 मार्च	गु.
अप्रैल (सन् 2019 ई.)		
वारुणीपर्व	2 अप्रै.	मं.
पिहोवा तीर्थ (हरि.)	3 अप्रै.	बु.
चान्द्र संवत् 2075 वि. पूर्ण	5 अप्रै.	शु.
चान्द्र संवत् 2076 वि.प्रा.	6 अप्रै.	श.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	6 अप्रै.	श.
वर्षफलश्रवण	6 अप्रै.	श.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	6 अप्रै.	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	8 अप्रै.	चं.
आन्दोलन तृतीया	8 अप्रै.	चं.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	9 अप्रै.	मं.
हयव्रत	9 अप्रै.	मं.
नागपंचमी	10 अप्रै.	बु.
स्कन्दषष्ठी	10 अप्रै.	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	13 अप्रै.	श.
श्रीरामनवमी	13 अप्रै.	श.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	र.
वासन्त नवरात्र समाप्त	14 अप्रै.	र.
नवरात्र-व्रतपारणा	15 अप्रै.	चं.
दोलोत्सव	15 अप्रै.	चं.
विष्णुदमनोत्सव	16 अप्रै.	मं.
अनंग त्रयोदशी	17 अप्रै.	बु.
श्रीमहावीर जयन्ती	17 अप्रै.	बु.
शिवदमनोत्सव	18 अप्रै.	गु.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	19 अप्रै.	शु.
मई (सन् 2019 ई.)		
शनैश्चरी अमा	4 मई	श.
श्रीपरशुराम जयन्ती	7 मई	मं.
अक्षय तृतीया	7 मई	मं.
श्रीगंगा जन्म	11 मई	श.
श्रीजानकी जयन्ती	13 मई	चं.
श्रीनृसिंह जयन्ती	17 मई	शु.
श्रीकूर्म जयन्ती	18 मई	श.
वैशाखी पूर्णिमा	18 मई	श.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	18 मई	श.
वैशाखस्नान समाप्त	18 मई	श.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	30 मई	गु.
जून (सन् 2019 ई.)		
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	3 जून	चं.
भावुका अमा/सोमवती अमा	3 जून	चं.
रम्भा तृतीया	5 जून	बु.
अरण्यषष्ठी	8 जून	श.
विन्ध्यवासिनी पूजा	8 जून	श.
श्रीगंगा दशहरा	12 जून	बु.
निर्जला एकादशी व्रत	13 जून	गु.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	16 जून	र.
जुलाई (सन् 2019 ई.)		
भौमवती अमा	2 जुला.	मं.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	3 जुला.	बु.
रथयात्रा (पुरी)	4 जुला.	गु.
कुमार षष्ठी	7 जुला.	र.
विवस्वत् सप्तमी	8 जुला.	चं.
गुप्त नवरात्र समाप्त	10 जुला.	बु.
श्रीविष्णुशयनोत्सव	12 जुला.	शु.
कोकिला व्रत	16 जुला.	मं.
शिवशयनोत्सव	16 जुला.	मं.
गुरु पूर्णिमा (व्यास-पूजा)	16 जुला.	मं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रा.	16 जुला.	मं.
चन्द्रग्रहण	16 जुला.	मं.
श्रावण-शिवरात्रि	30 जुला.	मं.
अगस्त (सन् 2019 ई.)		
हरियाली अमावस	1 अग.	गु.
मधुस्रवा तृतीया/संधारा तीज	3 अग.	श.
नागपंचमी	5 अग.	चं.
श्रीदुर्गाष्टमी	8 अग.	गु.
ऋक्- उपाकर्म	14 अग.	बु.
रक्षाबन्धन (राखी)	15 अग.	गु.
श्रावणी पूर्णिमा	15 अग.	गु.
शुक्ल-कृष्ण यजु-उपाकर्म	15 अग.	गु.
श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.)	15 अग.	गु.
कज्जली तृतीया	18 अग.	र.
श्रीगणेश(संकष्ट) चतुर्थी	19 अग.	चं.
बहुला चतुर्थी	19 अग.	चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	23 अग.	शु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	24 अग.	श.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	25 अग.	र.
श्रीगुग्गा नवमी	25 अग.	र.
कुशोत्पाटिनी अमावस	30 अग.	शु.
पिठोरी अमावस	30 अग.	शु.
सितम्बर (सन् 2019 ई.)		
साम उपाकर्म	1 सितं.	र.
गौरी तृतीया	1 सितं.	र.
हरितालिका तृतीया	1 सितं.	र.
कलंक चतुर्थी	2 सितं.	चं.
सिद्धिविनायक व्रत	2 सितं.	चं.
ऋषि पंचमी	3 सितं.	मं.
सूर्यषष्ठी व्रत	4 सितं.	बु.
मुक्ताभरण सप्तमी	5 सितं.	गु.
श्रीराधाष्टमी	6 सितं.	शु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	6 सितं.	शु.
श्रीचन्द नवमी	7 सितं.	श.
श्रीवामन जयन्ती	10 सितं.	मं.
श्री अनन्त चतुर्दशी	12 सितं.	गु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	13 सितं.	शु.
पूर्णिमा श्राद्ध	13 सितं.	शु.
महालय प्रारम्भ	13 सितं.	शु.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

व्रत-पर्व	तारीख	वार
पितृपक्ष प्रारम्भ	13 सितं.	शु.
चन्द्रषष्ठी व्रत	19 सितं.	गु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	21 सितं.	श.
शनैश्चरी अमा	28 सितं.	श.
महालय/श्राद्ध समाप्त	28 सितं.	श.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	29 सितं.	र.
अक्टूबर (सन् 2019 ई.)		
उपाङ्गललिता व्रत	2 अक्तू.	बु.
सरस्वती आवाहन	4 अक्तू.	शु.
सरस्वती पूजन	5 अक्तू.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	6 अक्तू.	र.
सरस्वती के लिए बलिदान	6 अक्तू.	र.
महानवमी (पूजा, उपवास के लिए)	6 अक्तू.	र.
महानवमी (बलिदान के लिए)	7 अक्तू.	चं.
नवरात्र समाप्त	7 अक्तू.	चं.
सरस्वती विसर्जन	7 अक्तू.	चं.
विजयादशमी (दशहरा)	8 अक्तू.	मं.
नवरात्रपारणा	8 अक्तू.	मं.
भरतमिलाप	9 अक्तू.	बु.
कोजागर व्रत	13 अक्तू.	र.
शरत् पूर्णिमा	13 अक्तू.	र.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	13 अक्तू.	र.
कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ	13 अक्तू.	र.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	17 अक्तू.	गु.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	21 अक्तू.	चं.
गोवत्स द्वादशी	25 अक्तू.	शु.
धन त्रयोदशी	26 अक्तू.	श.
यम-प्रीत्यर्थ दीपदान	26 अक्तू.	श.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.)	26 अक्तू.	श.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	27 अक्तू.	र.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	27 अक्तू.	र.

व्रत-पर्व	तारीख	वार
गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	28 अक्तू.	चं.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	28 अक्तू.	चं.
सोमवती अमा	28 अक्तू.	चं.
यमद्वितीया, भाईदूज	29 अक्तू.	मं.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	29 अक्तू.	मं.
नवम्बर (सन् 2019 ई.)		
सूर्यषष्ठी (बिहार)	2 नवं.	श.
गोपाष्टमी	4 नवं.	चं.
अक्षय नवमी	5 नवं.	मं.
कूष्माण्ड नवमी	5 नवं.	मं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	8 नवं.	शु.
हरिप्रबोधोत्सव	8 नवं.	शु.
तुलसी विवाह	9 नवं.	श.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	9 नवं.	श.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	10 नवं.	र.
त्रिपुरोत्सव	12 नवं.	मं.
श्रीगुरुनानक जयन्ती	12 नवं.	मं.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	12 नवं.	मं.
कार्त्तिक पूर्णिमा	12 नवं.	मं.
भीष्म पंचक समाप्त	12 नवं.	मं.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	19 नवं.	मं.
दिसम्बर (सन् 2019 ई.)		
स्कन्द, गुहषष्ठी	2 दिसं.	चं.
चम्पा षष्ठी	2 दिसं.	चं.
मित्र सप्तमी	3 दिसं.	मं.
श्रीगीता जयन्ती	8 दिसं.	र.
श्रीदत्त जयन्ती	11 दिसं.	बु.
कंकण सूर्य-ग्रहण	26 दिसं.	गु.
जनवरी (सन् 2020 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2020 ई. प्रा.	1 जन.	बु.
पौषी पूर्णिमा	10 जन.	शु.

व्रत-पर्व	तारीख	वार
माघस्नान प्रारम्भ	10 जन.	शु.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	13 जन.	चं.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	चं.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	मं.
मौनी अमावस	24 जन.	शु.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	25 जन.	श.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	28 जन.	मं.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	28 जन.	मं.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	29 जन.	बु.
लक्ष्मी/सरस्वती पूजन	29 जन.	बु.
फरवरी (सन् 2020 ई.)		
रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	1 फर.	श.
भीष्माष्टमी	2 फर.	र.
गुप्त नवरात्र समाप्त	3 फर.	चं.
भीष्म द्वादशी	6 फर.	गु.
माघी पूर्णिमा	9 फर.	र.
माघस्नान समाप्त	9 फर.	र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर.	शु.
मार्च (सन् 2020 ई.)		
होलाष्टक प्रारम्भ	2 मार्च	चं.
गोविन्द द्वादशी	6 मार्च	शु.
होलिकादहन	9 मार्च	चं.
होलाष्टक समाप्त	9 मार्च	चं.
वसन्तोत्सव	10 मार्च	मं.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	10 मार्च	मं.
महाविषुव दिन	20 मार्च	शु.
महावारुणी पर्व	21 मार्च	श.
वारुणी पर्व	22 मार्च	र.
पिहोवा तीर्थ (हरि.)	22 मार्च	र.
भौमवती अमा	24 मार्च	मं.
चान्द्र संवत् 2076 वि.पूर्ण	24 मार्च	मं.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व

आगामी वर्ष (वि.सं. 2077) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2020 ई.)	
नवरात्र प्रारम्भ	25 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	1 अप्रैल
श्रीरामनवमी	2 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	6 अप्रैल
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	25 अप्रैल
श्रीबुद्ध जयन्ती	7 मई
श्रीगंगा दशहरा	1 जून
गुरु पूर्णिमा	5 जुलाई
रक्षाबन्धन	3 अगस्त
संकष्ट चतुर्थी	7 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	11 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	12 अगस्त
श्राद्ध प्रारम्भ	1 सितम्बर
शारद नवरात्र प्रारम्भ	17 अक्तू.
श्रीदुर्गाष्टमी	23 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	25 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	30 अक्तू.
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	31 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	4 नवम्बर
दीपावली	14 नवम्बर
भाईदूज	16 नवम्बर
श्रीगुरु नानक जयन्ती	30 नवम्बर
श्रीभैरवाष्टमी	7 दिसम्बर
(सन् 2021 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	16 फर.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	27 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2019 ई.)	
पौष कृष्ण	1 जन.
पौष शुक्ल	17 जन.
माघ कृष्ण	31 जन.
माघ शुक्ल	16 फर.
फाल्गुन कृष्ण	2 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	17 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	31 मार्च
चैत्र शुक्ल (स्मा.)	15 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	30 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	15 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	30 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	13 जून
आषाढ़ कृष्ण	29 जून
आषाढ़ शुक्ल	12 जुलाई
श्रावण कृष्ण	28 जुलाई
श्रावण शुक्ल	11 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण (स्मा.)	26 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल	9 सितं.
आश्विन कृष्ण	25 सितं.
आश्विन शुक्ल	9 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	24 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	8 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (स्मा.)	22 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	8 दिसं.
पौष कृष्ण	22 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
पौष शुक्ल	6 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल	6 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	19 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2019 ई.)	
पौष शुक्ल	6 जन.
माघ कृष्ण	21 जन.
माघ शुक्ल	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	20 फर.
फाल्गुन शुक्ल	7 मार्च
चैत्र कृष्ण	21 मार्च
चैत्र शुक्ल	6 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	20 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	5 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	19 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	4 जून
आषाढ़ कृष्ण	18 जून
आषाढ़ शुक्ल	3 जुलाई
श्रावण कृष्ण	17 जुलाई
श्रावण शुक्ल	2 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण	16 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल	31 अगस्त
आश्विन कृष्ण	15 सितं.
आश्विन शुक्ल	29 सितं.
कार्तिक कृष्ण	14 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	29 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	13 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	27 नवं.
पौष कृष्ण	13 दिसं.
पौष शुक्ल	27 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ कृष्ण	11 जन.
माघ शुक्ल	25 जन.
फाल्गुन कृष्ण	10 फर.
फाल्गुन शुक्ल	24 फर.
चैत्र कृष्ण	10 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिये गये पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2019 ई.)	
पौष	20 जन.
माघ	19 फर.
फाल्गुन	20 मार्च
चैत्र	18 अप्रैल
वैशाख	18 मई
ज्येष्ठ	16 जून
आषाढ़	16 जुलाई
श्रावण	14 अगस्त
भाद्रपद	13 सितं.
आश्विन	13 अक्तू.
कार्तिक	12 नवं.
मार्गशीर्ष	11 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	9 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2019 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	8 अप्रैल
श्रीरामनवमी	13 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	7 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	17 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	18 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	18 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	5 अगस्त
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	23 अगस्त
श्रीवराह जयन्ती	1 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	10 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2019 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	24 जन.
फाल्गुन	22 फर.
चैत्र	24 मार्च
वैशाख	22 अप्रैल
ज्येष्ठ	22 मई
आषाढ़	20 जून
श्रावण	20 जुलाई
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	19 अगस्त
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	12 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2019 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	10 मार्च
चैत्र	9 अप्रैल
वैशाख	8 मई
ज्येष्ठ	6 जून
आषाढ़	6 जुलाई
श्रावण	4 अगस्त
भाद्रपद	2 सितं.
आश्विन	2 अक्तू.
कार्तिक	31 अक्तू.
मार्गशीर्ष	30 नवं.
पौष	29 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ	28 जन.
फाल्गुन	27 फर.

प्रदोष व्रत

(सन् 2019 ई.)	
पौष कृष्ण	3 जन.
पौष शुक्ल	18 जन.
माघ कृष्ण (शनि)	2 फर.
माघ शुक्ल	17 फर.
फाल्गुन कृष्ण	3 मार्च
फाल्गुन शुक्ल (सोम)	18 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम)	2 अप्रैल
चैत्र शुक्ल	17 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	2 मई
वैशाख शुक्ल	16 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	31 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	14 जून
आषाढ़ कृष्ण	30 जून
आषाढ़ शुक्ल	14 जुलाई
श्रावण कृष्ण (सोम)	29 जुलाई
श्रावण शुक्ल (सोम)	12 अग.
भाद्रपद कृष्ण	28 अग.
भाद्रपद शुक्ल	11 सितं.
आश्विन कृष्ण	26 सितं.
आश्विन शुक्ल	11 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	25 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल (शनि)	9 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	24 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (सोम)	9 दिसं.
पौष कृष्ण (सोम)	23 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
पौष शुक्ल	8 जन.
माघ कृष्ण	22 जन.
माघ शुक्ल	7 फर.
फाल्गुन कृष्ण	20 फर.
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	7 मार्च
चैत्र कृष्ण (शनि)	21 मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
पौष	4 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रैल
वैशाख	3 मई
ज्येष्ठ	1 जून
आषाढ़	1 जुलाई
श्रावण	30 जुलाई
भाद्रपद	28 अग.
आश्विन	27 सितं.
कार्त्तिक	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष	25 नवं.
पौष	24 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ	23 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	21 फर.
चैत्र	22 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2019 ई.) (स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	21 जन.
माघ	19 फर.
फाल्गुन	21 मार्च
चैत्र	19 अप्रैल
वैशाख	18 मई
ज्येष्ठ	17 जून
आषाढ़	16 जुलाई
श्रावण	15 अग.
भाद्रपद	14 सितं.
आश्विन	13 अक्तू.
कार्त्तिक	12 नवं.
मार्गशीर्ष	12 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	9 फर.
फाल्गुन	9 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रैल
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुलाई
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्त्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ) (सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
पौष (शनैश्चरी)	5 जन.
माघ (सोमवती)	4 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	5 अप्रैल
वैशाख (शनैश्चरी)	4 मई
ज्येष्ठ (सोमवती)	3 जून
आषाढ़ (सोमवती)	2 जुलाई
श्रावण	1 अग.
भाद्रपद	30 अग.
आश्विन (शनैश्चरी)	28 सितं.
कार्त्तिक (सोमवती)	28 अक्तू.
मार्गशीर्ष (भौमवती)	26 नवं.
पौष	26 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ	24 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र (भौमवती)	24 मार्च

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत (सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
पौष	14 जन.
माघ	13 फर.
फाल्गुन	14 मार्च
चैत्र	13 अप्रैल
वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	10 जून
आषाढ़	9 जुलाई
श्रावण	8 अग.
भाद्रपद	6 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्त्तिक	4 नवं.
मार्गशीर्ष	4 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
पौष	3 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	3 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
माघ	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र	28 मार्च
वैशाख	26 अप्रैल
ज्येष्ठ	26 मई
आषाढ़	25 जून
श्रावण	25 जुलाई
भाद्रपद	23 अग.
आश्विन	22 सितं.
कार्त्तिक	21 अक्तू.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	19 नवं.
पौष	19 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ	17 जन.
फाल्गुन	15 फर.
चैत्र	16 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी

श्रीसंगमेश्वर महादेव, अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी) (सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
पौष	3 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रैल
वैशाख	2 मई
ज्येष्ठ	1 जून
आषाढ़	30 जून
श्रावण	30 जुलाई
भाद्रपद	28 अग.
आश्विन	27 सितं.
कार्त्तिक	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष	24 नवं.
पौष	24 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
माघ	22 जन.
फाल्गुन	21 फर.
चैत्र	22 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2019 ई.)

श्राद्ध	तिथि
✣ प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा	13 सितं.
प्रतिपदा	14 सितं.
द्वितीया	15 सितं.
तृतीया	17 सितं.
चतुर्थी/भरणी श्राद्ध	18 सितं.
पंचमी	19 सितं.
षष्ठी	20 सितं.
सप्तमी	21 सितं.
अष्टमी	22 सितं.
❈ नवमी	23 सितं.
दशमी	24 सितं.
एकादशी	25 सितं.
⁜ द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	25 सितं.
त्रयोदशी/मघा श्राद्ध	26 सितं.
अपमृत्यु वालों का श्राद्ध	27 सितं.
✳ चतुर्दशी	27 सितं.
सर्वपितृ, अमावस श्राद्ध (पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध)	28 सितं.
नाना/नानी का श्राद्ध	29 सितं.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2019 ई.)

त्योहार	तिथि
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	14 अप्रैल
गुड फ्राइ डे	19 अप्रैल
ईस्टर सण्डे	21 अप्रैल
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

✣ "जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"—यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक-परम्परा है।
❈ सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

⁜ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।
✳ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु से मरने वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

जैन व्रत-पर्व (सन् 2019 ई.)

व्रत-पर्व	तिथि
श्रीमेरुत्रयोदशी	2 फर.
मर्यादा महोत्सव	12 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	14 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती	17 अप्रैल
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	14 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	8 जुलाई
तेरापन्थ स्थापना दिवस	16 जुलाई
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि-प्रारम्भ	16 जुलाई
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	27 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	27 अग.
संवत्सरी महापर्व	3 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	4 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	7 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	11 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	27 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	29 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	1 नवं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	12 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	22 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	16 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	21 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	22 जन.
मर्यादा महोत्सव	1 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2019 ई.)

महापुरुष	तिथि
स्वामी विवेकानन्द	12 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	27 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	6 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	19 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	8 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	21 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रैल
श्रीवल्लभाचार्य	30 अप्रैल
श्रीछत्रपति शिवाजी	6 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	9 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	10 मई
श्रीमहाराणा प्रताप	6 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुलाई
गोस्वामी तुलसीदास जी	7 अगस्त
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराज अग्रसेन जी	29 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	8 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	10 नवं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2020 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	17 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	17 जन.
श्रीनेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	26 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	25 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	9 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2019 ई.)

त्योहार	तिथि
जन्म श्री हज़रत अली	21 मार्च
शब-ए-मिराज	4 अप्रैल
शब-ए-बरात	21 अप्रैल
रमज़ान का पहला दिन	7 मई
शहादत-ए-हज़रत अली	27 मई
जमतुल-विदा	31 मई
* शब-ए-कद्र	2 जून
ईद-उल-फित्र	5 जून
इदुलज्जुहा (बकरीद)	12 अग.
मुहर्रम (ताज़िया)	10 सितं.
चेहल्म	19 अक्तू.
आखिरी चहार शम्बा	23 अक्तू.
शहादत-ए-इमाम हसन	28 अक्तू.
ईद-ए-मिलाद	10 नवं.
ईद-ए-मौलाद	15 नवं.
फतिहा यज़दहुम	9 दिसं.
(सन् 2020 ई.)	
जन्म श्री हज़रत अली	9 मार्च
* शब-ए-मिराज	23 मार्च

* ये त्योहार पूर्ववर्त्ती रात्रि में मनाये जाते हैं।

सूचना—सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर सम्भव है। इसकी सूचना T.V. आदि द्वारा प्रसारित कर दी जाती है।

क्या किससे पूछें?

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।)—प्रियव्रत शर्मा

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रत-पर्व, तेजी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि—किससे सम्पर्क साधा जाये। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है—यह हम यहां स्पष्ट किये देते हैं—

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरण-प्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी तरह से बाधित नहीं हूं, यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O. पंचकूला—134 109, Phone-0172-2565 303,

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिक दलों के चुनाव चक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन, पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवं वायदा-हाज़र बाजार के चांस, सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी-मन्दी-सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिये—

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
जिला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
Phone : 0160-2641277, 09988407010,

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उस लेख के लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए। —सम्पादक मण्डल

सिक्ख पर्व (सं. 2076 वि.) (6 अप्रैल, 2019 ई. से 24 मार्च, 2020 ई. तक)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा [विक्रमी कैलेण्डर (तिथियों)] के अनुसार						नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (ग्रेगोरियन तारीखों के अनुसार स्थिर)		
	प्रकाश दिवस		गुरयाई मिली		जोतीजोत समाए		प्रकाश दिवस	गुरयाई मिली	जोतीजोत समाए
	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तारीख	तारीख	तारीख
श्री गुरु नानकदेव जी	कार्त्तिक शु.15	12 नवं.	—	—	आश्वि.कृ.10	24 सितं.	कार्त्तिक पू.	—	22 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	वैशाख शु.1	5 मई	आश्वि.कृ.5	19 सितं.	चैत्र शु.4	9 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	वैशाख शु. 14	17 मई	चैत्र शु. 1	6 अप्रैल	भाद्र.शु. 15	14 सितं.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
श्री गुरु रामदास जी	कार्त्तिक कृ. 2	15 अक्तू.	भाद्र.शु. 13	11 सितं.	भाद्र.शु. 3	1 सितं.	9 अक्टू.	16 सितं.	16 सितं.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	वैशाख कृ. 7	20 अप्रैल	भाद्र.शु. 2	1 सितं.	ज्ये. शु.4	7 जून	2 मई	16 सितं.	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	आषाढ़ कृ. 1	18 जून	ज्ये.कृ. 8	27 मई	चैत्र शु. 5	10 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	माघ शु. 13	7 फर.	चैत्र कृ. 13	22 मार्च	कार्त्ति.कृ. 9	22 अक्तू.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्टू.
श्री गुरु हरकिशन जी	श्राव कृ. 9	26 जुलाई	कार्त्ति. कृ. 9	22 अक्तू.	चैत्र शु. 14	18 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्टू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	वैशाख कृ. 5	24 अप्रैल	चैत्र शु. 14	18 अप्रैल	मार्ग. शु. 5	1 दिसं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	पौष शु. 7	2 जन.	मार्ग शु. 3	29 नवं.	कार्त्ति. शु. 5	1 नवं.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्टू.

ध्यान दें:— 'नानकशाही कैलेण्डर', जिसके अनुसार सभी सिक्खपर्वों का निर्णय अंग्रेजी तारीखों के आधार पर किया गया है, सन् 2003 ई. में लागू किया गया। चूंकि, सभी सिक्खपर्व विगत शताब्दियों से पुरातन परम्परा (विक्रमी कैलेण्डर/तिथियों) के अनुसार ही मनाये जाते रहे हैं, अतः कई सिक्ख सम्प्रदाय एवं पटना, नान्देड़ आदि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां भी सिक्खपर्वों को 'पुरातन परम्परा वाले विक्रमी कैलेण्डर' के अनुसार ही मनाने के पक्ष में हैं। इस प्रकार इस विषय में उत्पन्न मतभेद को शान्त करने के लिए सिक्ख-धर्म की सर्वोच्च संस्था S.G.P.C. (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी) अमृतसर द्वारा पर्वों के निर्णय के लिए अब पुनः विक्रमी कैलेण्डर को ही मान्यता दी गयी है—यह ध्यान देने योग्य है।

पुरातन परम्परा के अनुसार इस वर्ष (सं. 2076 वि.) की संक्रान्तियां—वैशा. 14-4-19, ज्ये. 15-5-19, आषाढ़ 15-6-19, श्रावण 16-7-19, भाद्र. 17-8-19, आश्वि. 17-9-19, कार्त्तिक 17-10-19, मार्ग. 16-11-19, पौष 16-12-19, माघ 14-1-20, फाल्गुन 13-2-20, चैत्र 14-3-20.

नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार संक्रान्तियां (सं. 2076 वि.)—इस कैलेण्डर के अनुसार चैत्र की संक्रान्ति हमेशा 14 मार्च को होती है, चैत्र से श्रावण तक के पांच महीने हमेशा 31-31 दिनों के और शेष 6 महीने हमेशा 30-30 दिनों के होते हैं, लीप इयर में फाल्गुन मास के 32 दिन माने गये हैं।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

(ध्यान दें—अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से अवश्य मिला लें।)

(सन् 2019 ई.)		वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रैल	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	24 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	1 दिसं.
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रैल	मुहर्रम (ताजिया)	10 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.
जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	13 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	17 अप्रैल	ओणम (केरल)	11 सितं.	(सन् 2020 ई.)	
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	गुड फ्राई डे	19 अप्रैल	जन्मदिन श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.
पोंगल	15 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	18 मई	श्रीदुर्गाष्टमी	6 अक्तू.	जन्मदिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	2 जन.
भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.	जमतुल विदा	31 मई	दशहरा	8 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	19 फर.	इदुल-फित्र	5 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	13 अक्तू.	पोंगल	16 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	4 मार्च	रथयात्रा (पुरी)	4 जुलाई	दीपावली	27 अक्तू.	भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्म श्रीहज़रत अली	21 मार्च	इदुलज्जुहा	12 अग.	भाईदूज	29 अक्तू.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	9 फर.
होला, वसन्तोत्सव	21 मार्च	भारतस्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	ईद-ए-मिलाद	10 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	21 फर.
गुड़ी पड़वा	6 अप्रैल	रक्षाबन्धन (राखी)	15 अग.	श्री गुरुनानक जयन्ती	12 नवं.	जन्म श्री हज़रत अली	9 मार्च
श्रीरामनवमी	13 अप्रैल	श्रीगणेश चतुर्थी	19 अग.			होला, वसन्तोत्सव	10 मार्च

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2019 ई.)	तारीख	नाम मेला/पर्व (सन् 2019 ई.)	तारीख	नाम मेला/पर्व (सन् 2019 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2019 ई.		माईसर खाना (पंजाब)	11 अप्रैल	पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	13 जून
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.	ज्वालामुखी (हरचोवाल-गुरदासपुर)	13 अप्रैल	पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.	कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रैल	भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.	मेला माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	17 अप्रैल	शुद्ध महादेवयात्रा (उधमपुर)	17 जून
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.	मेला पीर भीखनशाह (घड़ाम, पटियाला) प्रा.	17 अप्रैल	यादगारी दिवस बीबी शरणकौर जी, — गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.	मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	18 अप्रैल	**जुलाई सन् 2019 ई.**	
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.	देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	18 अप्रैल	ब.सं.बा. तेजासिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि.प्र.) प्रा.	1 जुलाई
फरवरी सन् 2019 ई.		ज.दि. भाई दित्तसिंह ज्ञानी	21 अप्रैल	जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी — सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	8 जुलाई
वसन्त पंचमी	9 फर.	पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रैल	ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह– गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुलाई
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.	**मई सन् 2019 ई.**		शरीक भवानी (जम्मू-कश्मीर)	10 जुलाई
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	17 फर.	पिंजौर (हरि.)	4 मई	गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	16 जुलाई
मार्च सन् 2019 ई.		आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई	मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	16 जुलाई
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	4 मार्च	समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण-(हि.प्र.) प्रा.	12 मई	धाटा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	16 जुलाई
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	4 मार्च	ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	15 मई	उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	18 जुलाई
ज.दि.सं.बा. अतर सिंह जी — (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च	बंजार (कुल्लू) प्रा.	15 मई	गाड़ा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	30 जुलाई
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	21 मार्च	ज.दि.सं.बा. तेजासिंह जी, बदरीपुर, — पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	15 मई	**अगस्त सन् 2019 ई.**	
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	25 मार्च	साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	19 मई	ब.सं.बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अगस्त
ज.दि.सं.बा. निधानसिंह जी — (श्री हजूरसाहिब वाले, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च	**जून सन् 2019 ई.**		नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	5 अगस्त
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	26 मार्च	पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	9 जून	ज.दि.सं.बा. ईशरसिंह जी — (राड़ा सा. वाले), आलोवाल पटियाला	5 अगस्त
शीतला माता (कुराली) पं.	28 मार्च	क्षीरभवानी (जम्मू-कश्मीर)	10 जून	बरसी सं. बाबा प्यारासिंह जी, गुरु• — श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अगस्त
अप्रैल सन् 2019 ई.		श्रीगंगा दशहरा	12 जून		
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	3 अप्रैल	सपोर यात्रा-धारलदा (उधमपुर)	12 जून		
		नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	13 जून		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2019 ई.)	तारीख
श्रीनयना देवी (हि.प्र.)	8 अगस्त
श्री चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)	8 अगरत
श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	15 अगस्त
ब.सं.बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अगस्त
ब.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अगस्त
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	24 अगस्त
कैलाशयात्रा (कश्मीर) प्रा.	28 अगस्त
सितम्बर सन् 2019 ई.	
श्रीगोसाईं आणां, कुराली (पंजाब)	1 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	2 सितं.
मेला पट्ट (कश्मीर) प्रारम्भ	3 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	3 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	4 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	6 सितं.
ब.भा. दित्तसिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	10 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	12 सितं.
छपार (पं.)	12 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	14 सितं.
श्री आशापति यात्रा (कश्मीर) प्रा.	27 सितं.
अक्टूबर सन् 2019 ई.	
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	6 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	6 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	6 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	8 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	12 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2019 ई.)	तारीख
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	12 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	12 अक्तू.
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.)	18 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	23 अक्तू.
ब.सं.बा. गुरुचरण सिंह जी, —— गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	27 अक्तू.
नवम्बर सन् 2019 ई.	
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	8 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	8 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	8 नवं.
ज.दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	10 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	11 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर-पं.)	12 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	12 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	12 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	25 नवं.
दिसम्बर सन् 2019 ई.	
ब.सं.बा. विसाखासिंह, दुदेहर सा.(तारनतारन)	5 दिसं.
ब.सं.बा.रामसिंह/बूटासिंह, नानकसर चीमा	6 दिसं.
ब. बीबी तेजकौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज.दि.सं.बा. किशनसिंह जी —— (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा-हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2019 ई.)	तारीख
ब.सं.बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर — साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2020 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब.सं.बा. बख्शीशसिंह जी	26 जन.
तसन्तपंचमी	29 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2020 ई.	
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	7 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद — सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	21 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	21 फर.
मार्च सन् 2020 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	10 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	10 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	12 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	13 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतरसिंह जी, —— (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	22 मार्च

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

(भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2076 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	चन्द्रोदय-श्री गणेशचतुर्थी												श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
													स्मार्त	वैष्णव
	22 अप्रैल 2019 घं. मि.	22 मई 2019 घं. मि.	20 जून 2019 घं. मि.	20 जुला. 2019 घं. मि.	19 अग. 2019 घं. मि.	17 सित. 2019 घं. मि.	17 अक्तू. 2019 घं. मि.	16 नवं. 2019 घं. मि.	15 दिसं. 2019 घं. मि.	13 जन. 2020 घं. मि.	12 फर. 2020 घं. मि.	12 मार्च 2020 घं. मि.	23 अग. 2019 घं. मि.	24 अग. 2019 घं. मि.
अजमेर	22 01	22 34	22 00	21 53	21 32	20 38	20 31	20 57	20 51	20 48	21 48	21 40	23 53	24 37
अमृतसर	22 11	22 45	22 10	21 58	21 31	20 34	20 21	20 44	20 39	20 39	21 47	21 44	23 43	24 23
अलवर	21 55	22 08	21 54	21 47	21 24	20 30	20 21	20 46	20 40	20 38	21 40	21 33	23 43	24 27
अलीगढ़	21 54	22 27	21 53	21 47	21 26	20 33	20 26	20 52	20 46	20 43	21 42	21 34	23 47	24 20
अहमदाबाद	22 04	22 35	22 03	21 58	21 40	20 49	20 45	21 13	21 06	21 01	21 57	21 46	24 06	24 52
अयोध्या	21 31	22 03	21 30	21 23	21 01	20 07	19 59	20 25	20 18	20 16	21 17	21 09	23 21	24 05
आगरा	21 49	22 31	21 48	21 40	21 18	20 24	20 16	20 41	20 35	20 33	21 34	21 27	23 37	24 22
इन्दौर	21 50	22 21	21 49	21 45	21 27	20 36	20 33	21 00	20 53	20 48	21 43	21 32	23 54	24 39
इलाहाबाद	21 30	22 02	21 29	21 23	21 03	20 10	20 03	20 29	20 23	20 19	21 18	21 09	23 25	24 09
उज्जैन	21 51	22 23	21 50	21 46	21 28	20 36	20 32	21 00	20 53	20 48	21 44	21 33	23 53	24 38
उदयपुर (रा.)	22 00	22 33	21 39	21 51	21 36	20 34	20 25	20 51	20 44	20 54	21 44	21 38	23 54	24 44
ऊना	22 05	22 39	22 04	21 53	21 25	20 28	20 15	20 38	20 33	20 34	21 41	21 38	23 38	24 26
कपूरथला	22 08	22 43	22 07	21 56	21 29	20 32	20 19	20 42	20 37	20 38	21 45	21 41	23 41	24 24
करनाल	21 58	22 31	21 57	21 47	21 22	20 26	20 16	20 40	20 34	20 33	21 38	21 33	23 38	24 21
कांगड़ा	21 29	22 01	21 26	21 15	21 29	20 28	20 14	20 37	20 32	20 33	21 41	21 38	23 35	24 18
कानपुर	21 38	22 10	21 37	21 30	21 09	20 15	20 07	20 33	20 27	20 24	21 24	21 16	23 39	24 13
कुरुक्षेत्र	21 59	22 33	21 58	21 48	21 23	20 27	20 16	20 40	20 34	20 34	21 39	21 34	23 38	24 21
कुल्लू	22 02	22 36	22 02	21 50	21 22	20 24	20 11	20 34	20 29	20 30	21 38	21 35	23 33	24 15
कोटा	21 54	22 26	21 53	21 47	21 27	20 34	20 28	20 55	20 48	20 45	21 43	21 34	23 50	24 34
कोलकाता	20 57	21 29	20 57	20 53	20 36	19 45	19 41	20 09	20 01	19 56	20 51	20 40	23 03	23 48
गुरदासपुर	22 09	22 43	22 09	21 57	21 29	20 31	20 18	20 40	20 35	20 36	21 45	21 42	23 40	24 22
ग्वालियर	21 46	22 19	21 46	21 39	21 18	20 24	20 17	20 43	20 37	20 34	21 34	21 25	23 39	24 23
चण्डीगढ़	22 00	22 34	22 00	21 49	21 23	20 26	20 14	20 38	20 32	20 33	21 39	21 35	23 36	24 20
चम्बा	22 07	22 42	22 07	21 55	21 26	20 28	20 14	20 36	20 31	20 33	21 42	21 39	23 36	24 20
चूरू	22 03	22 37	22 02	21 54	21 31	20 36	20 26	20 51	20 45	20 44	21 47	21 40	23 48	24 33
चैन्नई	21 16	21 45	21 14	21 17	21 09	20 24	20 29	21 01	20 52	20 42	21 25	21 07	23 49	24 37
जम्मू	22 13	22 47	22 12	22 00	21 31	20 33	20 19	20 41	20 36	20 38	21 47	21 45	23 41	24 23
जयपुर	21 57	22 30	21 56	21 49	21 27	20 33	20 25	20 51	20 45	20 42	21 43	21 36	23 47	24 31
जालन्धर	22 08	22 42	22 08	21 56	21 30	20 32	20 20	20 43	20 38	20 38	21 45	21 42	23 42	24 23
जैसलमेर	22 18	22 50	22 17	22 09	21 47	20 53	20 46	21 12	21 05	21 03	22 04	21 56	24 07	24 51
जोधपुर	22 08	22 40	22 07	22 00	21 39	20 45	20 38	21 04	20 58	20 55	21 55	21 47	23 59	24 44
दरभंगा	21 14	21 47	21 13	21 07	20 46	19 52	19 45	20 11	20 04	20 01	21 01	20 53	23 07	23 51
दिल्ली	21 55	22 28	21 54	21 46	21 22	20 26	20 17	20 42	20 36	20 34	21 37	21 31	23 39	24 22

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

(भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2076 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	चन्द्रोदय-श्री गणेशचतुर्थी												श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
													स्मार्त	वैष्णव
	22 अप्रैल 2019 घं. मि.	22 मई 2019 घं. मि.	20 जून 2019 घं. मि.	20 जुला. 2019 घं. मि.	19 अग. 2019 घं. मि.	17 सित. 2019 घं. मि.	17 अक्तू. 2019 घं. मि.	16 नव. 2019 घं. मि.	15 दिसं. 2019 घं. मि.	13 जन. 2020 घं. मि.	12 फर. 2020 घं. मि.	12 मार्च 2020 घं. मि.	23 अग. 2019 घं. मि.	24 अग. 2019 घं. मि.
देहरादून	21 55	22 28	21 54	21 44	21 18	20 22	20 10	20 34	20 28	20 28	21 34	21 29	23 32	24 15
नाहन	21 58	22 32	21 58	21 47	21 21	20 25	20 13	20 36	20 31	20 31	21 37	21 32	23 35	24 18
पटना	21 16	21 48	21 30	21 24	21 04	20 11	20 04	20 30	20 23	20 20	21 19	21 11	23 26	24 11
पटियाला	22 02	22 35	22 01	21 51	21 25	20 28	20 17	20 41	20 35	20 35	21 41	21 36	23 39	24 22
पठानकोट	22 09	22 43	22 08	21 56	21 28	20 30	20 16	20 39	20 34	20 35	21 44	21 41	23 39	24 21
पुणे	21 51	22 21	21 49	21 48	21 35	20 47	20 47	21 17	21 09	21 02	21 52	21 37	24 07	24 54
फगवाड़ा	21 36	22 10	21 36	21 24	20 58	20 00	20 19	20 11	20 06	20 36	21 13	21 40	23 10	24 23
फिरोजपुर	22 10	22 49	22 09	21 59	21 32	20 35	20 23	20 47	20 41	20 42	21 48	21 44	23 45	24 30
जंगलौर	21 27	21 55	21 25	21 28	21 20	20 35	20 40	21 12	21 03	20 53	21 37	21 18	23 59	24 48
बरेली	21 45	22 18	21 44	21 36	21 13	20 18	20 08	20 33	20 27	20 25	21 28	21 22	23 30	24 13
बिलासपुर (हि.प्र.)	22 02	22 36	22 02	21 51	21 24	20 26	20 14	20 37	20 32	20 32	21 39	21 36	23 36	24 18
बीकानेर	22 10	22 43	22 09	22 01	21 37	20 43	20 34	21 00	20 53	20 51	21 54	21 47	23 56	24 39
बून्दी	21 55	22 38	21 54	21 48	21 28	20 35	20 29	20 55	20 48	20 45	21 44	21 35	23 50	24 33
भटिण्डा	22 07	22 41	22 07	21 57	21 31	20 35	20 23	20 47	20 42	20 41	21 47	21 42	23 45	24 28
भरतपुर	21 51	22 24	21 50	21 43	21 20	20 26	20 18	20 44	20 37	20 35	21 36	21 29	23 40	24 24
भोपाल	21 43	22 15	21 42	21 38	21 20	20 29	20 25	20 52	20 45	20 40	21 36	21 25	23 46	24 31
मण्डी (हि.प्र.)	22 02	22 36	22 02	21 50	21 23	20 25	20 12	20 35	20 30	20 31	21 38	21 35	23 34	24 17
मथुरा	21 51	22 24	21 50	21 42	21 20	20 25	20 17	20 12	20 36	20 34	21 35	21 28	23 39	24 24
मुम्बई	21 56	22 26	21 54	21 53	21 39	20 51	20 51	21 20	21 12	21 06	21 56	21 42	24 11	24 58
रोपड़	22 02	22 36	22 02	21 51	21 24	20 28	20 28	20 39	20 33	20 34	21 40	21 36	23 38	24 22
रोहतक	21 58	22 31	21 57	21 48	21 24	20 29	20 19	20 43	20 37	20 36	21 40	21 34	23 41	24 24
लखनऊ	21 36	22 09	21 35	21 28	21 06	20 13	20 05	20 30	20 24	20 21	21 22	21 14	23 26	24 10
लुधियाना	22 05	22 39	22 04	21 54	21 27	20 30	20 18	20 41	20 36	20 36	21 43	21 39	23 40	24 23
वाराणसी	21 25	21 57	21 24	21 18	20 58	20 05	19 58	20 25	20 18	20 15	21 13	21 05	23 20	24 04
शिमला	22 00	22 34	21 59	21 48	21 22	20 25	20 12	20 36	20 30	20 30	21 37	21 34	23 34	24 17
श्रीनगर (का.)	22 16	22 51	22 16	22 02	21 31	20 32	20 16	20 38	20 33	20 36	21 47	21 46	23 39	24 20
संगरूर	22 04	22 37	22 03	21 53	21 27	20 31	20 19	20 43	20 38	20 38	21 43	21 38	23 42	24 24
सहारनपुर	21 57	22 30	21 56	21 46	21 21	20 25	20 14	20 38	20 32	20 32	21 37	21 32	23 36	24 18
सीकर	22 01	22 34	22 00	21 52	21 30	20 35	20 27	20 52	20 46	20 44	21 46	21 39	23 48	24 32
हरिद्वार	21 54	22 27	21 53	21 43	21 18	20 21	20 10	20 34	20 28	20 28	21 33	21 28	23 32	24 16
हिसार	22 02	22 35	22 01	21 52	21 28	20 32	20 22	20 46	20 40	20 40	21 43	21 38	23 44	24 27
होशियारपुर	22 06	22 40	22 05	21 54	21 27	20 30	20 17	20 40	20 35	20 35	21 43	21 39	23 39	24 22

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2076 वि.)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)—134109,

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए,—प्रियव्रत शर्मा)

(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

श्री(लक्ष्मी)पंचमी (चैत्र शुक्ल पंचमी)

यह पंचमी व्रत चतुर्थीविद्धा चैत्रशुक्ल पंचमी में किया जाता है। यदि दो दिन पंचमी विद्यमान हो तो पूर्व(चतुर्थी)विद्धा पंचमी में इसे करने का निर्देश है।

इस वर्ष चैत्र शु. पंचमी 9 अप्रै. '19 को चतुर्थीविद्धा है, अतः यह पर्व इसी दिन होगा। लेकिन यह पर्व भारत के पूर्वी प्रदेशों में तो 10 अप्रैल को ही होगा। क्योंकि वहां सूर्यास्त 9 अप्रै. को 18 घं. 39 मि. से पहिले हो जाएगा, जिससे वहां 9 अप्रैल. को पंचमी चतुर्थीविद्धा नहीं होगी, क्योंकि वहां तब यह तिथि सूर्यास्त से पहिले त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी नहीं रहेगी। यह तो व्रत-पर्वनिर्णायक शास्त्री जानते ही हैं कि—कोई भी तिथि पूर्व तिथि से तभी विद्ध मानी जाती है, जबकि उस दिन वह स्वयं भी सूर्यास्त से पूर्व कम-से-कम त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी हो (अर्थात् वेधकतिथि की समाप्ति और सूर्यास्त के समय का अन्तर वहां त्रिमुहूर्त्त से कम नहीं होना चाहिए)। **इसके अनुसार यहां यह जान लेना चाहिए कि—इस वर्ष यह 'श्रीपंचमी पर्व' पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में 9 अप्रै. को और दिल्ली, म.प्र., उ.प्र., उ.खं. आदि पूर्वस्थ प्रदेशों में 10 अप्रै. को मनाना होगा।**

यहां श्री(लक्ष्मी) पंचमी व्रत के लिए पूर्व(चतुर्थी)विद्धा पंचमी लेनी चाहिए। इस बारे में '**पुरुषार्थ चिन्तामणि**' का यह वाक्य है—"सा (पंचमी) च स्कन्दो-पवासातिरिक्तोपवासे पूर्व(चतुर्थी)विद्धा ग्राह्या।"

नागपंचमी (चैत्र शुक्ल पंचमी)

परविद्धा चैत्र शुक्ल पंचमी में नागव्रत किया जाता है—"**पंचमी तु उपवासादि-सर्वकर्मसु चतुर्थीविद्धैव। नागव्रते इयं परविद्धैव।**"-(तिथिनिर्णयः)।

इस वर्ष 10 अप्रैल, '19 को पंचमी पर(षष्ठी)विद्धा है, अतः इसी दिन यह पर्व होगा।

स्कन्दषष्ठी (चैत्र शुक्ल षष्ठी)

पंचमीविद्धा षष्ठी के दिन यह व्रतपर्व मनाया जाता है। तदनुसार इसे 10 अप्रैल को लिखा गया है, क्योंकि इस दिन षष्ठी पंचमीविद्धा है।

श्रीरामनवमी व्रत (चैत्र शुक्ल नवमी)

यह व्रत मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी को किया जाता है। इस वर्ष मध्याह्न 13 अप्रै. को लगभग 11घं. 7 मि. से 13 घं. 40 मि. तक रहेगा, **तदनुसार यह व्रत 13 अप्रैल, '19 को ही होगा, क्योंकि इस दिन ही नवमी की मध्याह्नव्याप्ति है।**

कामदा एकादशी व्रत (चैत्र शुक्ल एकादशी)

इस वर्ष चैत्र शुक्ल एकादशी का क्षय है, अतः स्मार्तों को एकादशी व्रत (कामदा एकादशी व्रत) दशमीविद्धा एकादशी में ही करना होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर (द्वादशी के दिन वैष्णवों के व्रत के साथ ही व्रत करने पर) उनको पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी, जोकि उनके लिए सर्वथा निषिद्ध है, इसीलिए इस स्थिति में 'ऋष्यशृंग' का विशेष वचन है—

"पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयाऽपि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः॥"

इसीलिए इस वर्ष यह कामदा एकादशी व्रत स्मार्तों के लिए 15 अप्रै., '19 के दिन लिखा गया है।

श्री हनुमान जयन्ती (चैत्र पूर्णिमा)

यह जयन्ती उत्तरी और दक्षिणी भारत में दो भिन्न-भिन्न तिथियों में मनाई

जाती है। द. भारत में इसे अर्धरात्रव्यापिनी चैत्री पूर्णिमा में मनाया जाता है। **18 अप्रै., '19 को इसे अर्धरात्रिव्यापिनी पूर्णिमा के दिन द. भारत में मनाया जाएगा। उ.भा. में तो इसे अर्धरात्रव्यापिनी कार्तिक कृ. चतुर्दशी में 26 अक्तू., '19 को मनाया जाएगा।**

श्रीसत्यनारायणव्रत (चैत्र पूर्णिमा)

यह व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। **इस वर्ष यह व्रत चैत्री पूर्णिमा 18 अप्रै., '19 को किया जाएगा, क्योंकि इसी दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी है। इस दिन प्रदोष 18 घं. 45 मि. से 21 घं. 00 मि. तक होगा।**

वटसावित्री व्रत (उ.भारत पक्ष, ज्येष्ठ अमा)

वटसावित्री के अनुष्ठान की दो परम्पराएं हैं। एक उत्तर भारतीय परम्परा अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ अमा को और दूसरी दक्षिण भारतीय परम्परानुसार यह ज्येष्ठ पूर्णिमा को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व(चतुर्दशी तिथि)विद्धा अमा व पूर्णिमा को किया जाता है। इस बारे में '**ब्रह्मवैवर्त्त**' का वाक्य है—

"भूतविद्धान कर्त्तव्या दर्शः पूर्णा कदाचन।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम्॥"

इस निर्णायानुसार उ.भारत में यह व्रत इस वर्ष ज्येष्ठ अमा के दिन 3 जून, '19 को किया जाएगा। ध्यान दें—2 जून को अमा चतुर्दशीविद्धा नहीं है, क्योंकि वह (अमा) उस दिन सूर्यास्त से पहिले त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी नहीं है।

रम्भा तृतीया (ज्येष्ठ शु. तृतीया)

द्वितीयाविद्धा ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया के दिन यह व्रत किया जाता है। **इस वर्ष यह व्रत 5 जून, '19 को किया जाएगा, क्योंकि इस दिन तृतीया द्वितीया से विद्ध हैं।**

वटसावित्री व्रत (द. भारत पक्ष,ज्येष्ठ पूर्णिमा)

द.भारत में यह व्रत चतुर्दशीविद्धा ज्येष्ठ पूर्णिमा को किया जाता है। **इस वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा 16 जून, '19 को चतुर्दशीविद्धा है, अतः द. भारत में यह व्रत 16 जून, '19 को किया जाएगा।**

कुमार षष्ठी (आषाढ़ शुक्ल षष्ठी)

यह व्रत पंचमीविद्धा आषाढ़ शु. षष्ठी में किया जाता है। 'वशिष्ठ' का वाक्य है—

"कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिस्त्रयोदशी।
एता पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्॥"

इस वर्ष आषा. शु. षष्ठी 7 जुला., '19 को पंचमीविद्धा है, तदनुसार यह पर्व इस वर्ष इसी दिन होगा।

विवस्वत् सप्तमी (आषा. शु. सप्तमी)

यह पर्व पूर्वविद्धा आषा. शु. सप्तमी में मनाया जाता है—"**पूर्व विद्धा द्विज-श्रेष्ठ कर्त्तव्या सप्तमी तिथिः**"—**ब्रह्मपुराण। तदनुसार इस वर्ष तो सप्तमी का क्षय है, अतः यह निर्विवादरूपेण 8 जुला.,'19 को ही होगा।**

हरिशयनी एकादशी व्रत (आषा. शु. एकादशी)

इस वर्ष आषा. शु. दशमी द्वारा अरुणोदय एवं सूर्योदय—दोनों का वेध नहीं है, **अतः स्मार्त्त एवं वैष्णव दोनों द्वारा व्रत एकादशी वाले दिन 12 जुला., '19 को ही किया जाएगा।**

श्री कल्कि जयन्ती (श्राव. शु. षष्ठी)

सायाह्नव्यापिनी श्रावण शु. षष्ठी के दिन यह जयन्ती मनाई जाती है। **इस वर्ष इसे 5 अग., '19 को सायाह्नव्यापिनी के दिन मनाया जाएगा।**

श्री सत्यनारायण व्रत (श्रावण पूर्णिमा)

यह व्रत इस वर्ष 14 अग., '19 को प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाएगा।

दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शु. अष्टमी)

यह व्रत भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन रोहिण(नवम)मुहूर्त्त में किया जाता है, **बशर्ते कि उस समय अगस्त्य तारा उदित (दृश्य) न हो।** सूर्य यदि इस दिन सिंह **में हो तो यह बहुत अच्छा माना जाता है। 'स्कन्दपुराण'** का वचन है— **"सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तमे।"**

यदि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन अगस्त्य उदित हो तो शास्त्रकारों का कहना है, तब इस अष्टमी से निरन्तर पूर्ववर्ती किसी रोहिण(नवममुहूर्त्त)व्यापिनी अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए। इस वर्ष पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि में भाद्र. शु. अष्टमी से पूर्व ही (3 सितं. को) अगस्त्य उदित हो चुका होगा, **अतः शास्त्रनिर्णयानुसार इस वर्ष दूर्वाष्टमी व्रत रोहिणव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी के दिन (23 अग., '19 को) ही यह व्रत किया जाएगा।**

प्रोष्ठपदी श्राद्ध (पूर्णिमा का महालय श्राद्ध)

पूर्णिमा जिनकी मृत्युतिथि हो, उनका महालय श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी भाद्र. शु. पूर्णिमा में किया जाता है, क्योंकि यह पार्वण श्राद्ध है। **इस वर्ष यह 13 सितं., '19 को होगा, क्योंकि इसी दिन पूर्णिमा अपराह्णव्यापिनी है।**

ध्यान दें—पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध आश्विन अमा वाले दिन ही करने की परम्परा है। लेकिन धर्मशास्त्रकार इसे भाद्र. पूर्णिमा में ही मनाने का निर्णय देते हैं। भाद्र. पूर्णिमा को उन्होंने महालय की ही तिथि माना है।

प्रतिपदा का महालय श्राद्ध

जिनकी मृत्युतिथि प्रतिपदा हो, उनका महालय श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी आश्वि. कृष्ण प्रतिपदा को किया जाता है। **इस वर्ष यह प्रतिपदा 14 सितं., '19 को अपराह्णव्यापिनी है, अतः प्रतिपदा का महालय श्राद्ध इसी तारीख को किया जाएगा।**

द्वितीया का महालय श्राद्ध

क्योंकि इस वर्ष आश्वि. कृ. द्वितीया 15 और 16 सितं. को (दोनों दिन) अपराह्णव्याप्नी है, **अतः यहां द्वितीया का श्राद्ध 15 सितं. को ही किया जाएगा,** क्योंकि इस स्थिति में श्राद्ध उसी दिन किया जाता है, जिस दिन तिथि अपराह्ण को अधिक व्याप्त करे। इस वर्ष द्वितीया अपराह्णकाल के अधिक भाग को 15 सितं. के दिन ही व्याप्त कर रही है।

16 सितं., '19 को कोई महालय श्राद्ध नहीं।

इस वर्ष द्वितीया का महालय श्राद्ध 15 सितं., '19 को होगा (देखें उपरोक्त निर्णय) और तृतीया का महालय श्राद्ध 17 सितं., '19 को होगा, क्योंकि इस दिन तृतीया तिथि सम्पूर्ण अपराह्ण को व्याप्त कर रही है, जबकि यह (तृतीया) 16 सितं. को आंशिक रूप से ही व्याप्त कर रही है। इस प्रकार स्पष्ट है—16 सितं., '19 को कोई महालय श्राद्ध नहीं बनता।

अपमृत्यु वालों का महालय श्राद्ध (आश्विन कृ. चतुर्दशी)

जिनकी मृत्यु सर्पदंश, शत्रु आक्रमण, जलमज्जन, यानदुर्घटना, विषभक्षण, भूकम्प आदि के कारण घटी हो, उनका महालय श्राद्ध केवल चतुर्दशी तिथि में ही करने का शास्त्रनिर्देश है। **ध्यान रहे**—राष्ट्ररक्षा-हेतु युद्ध, जलसमाधि-ग्रहण, देवोपासनार्थ आमरण अनशन-व्रत आदि द्वारा शरीरत्याग करने वालों का श्राद्ध तो उनकी मृत्युतिथि अनुसार ही करना चाहिए।

चन्द्रषष्ठी व्रत (आश्विन कृ. षष्ठी)

यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी आश्विन कृ. षष्ठी को किया जाता है। **इस वर्ष 19 सितं., '19 को ही षष्ठी चन्द्रोदयव्यापिनी है, जिससे यह व्रत इसी दिन लिखा गया है।**

द्वादशी-महालय श्राद्ध

आश्वि. कृ. द्वादशी 25 सितं., '19 को ही अपराह्णव्यापिनी है। अतः द्वादशी-श्राद्ध इसी दिन लिखा गया है।

मघा श्राद्ध

26 सितं., '19 को ही मघा अपराह्णव्यापी है। किंच—इस समय त्रयोदशी भी है, अतः मघा-त्रयोदशी के योग में पितरों का श्राद्ध करना विशेष माहात्म्य रखता है। ध्यान रहे—इस श्राद्ध में पुत्रवान् को पिण्डदान का निषेध है।

इस वर्ष **'गजच्छाया योग'** नहीं है। आश्विन अमा के दिन चन्द्र और सूर्य-दोनों हस्त नक्षत्र में हों तो वह काल श्राद्ध, दान तथा तीर्थस्थान पर स्नान आदि के लिए विशेष माहात्म्य रखता है, लेकिन इस वर्ष इस अमा को सूर्य तो हस्त नक्षत्र में है, चन्द्रमा हस्त नक्षत्र में केवल रात्रि के समय 10 घं. 2 मि. पर आता है।

सरस्वती-विसर्जन

सरस्वती का आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्ल पक्ष में क्रमशः मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद में किया जाता है। आवाहन आदि दिन के समय ही किए जाते हैं, रात्रि में ये नहीं होते। यदि मूल आदि नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्त से कम हों या उनका प्रथम पाद रात्रि के समय विद्यमान हो तो आवाहन आदि दूसरे दिन मूल आदि के द्वितीय आदि किसी भी चरण में (दिन के समय ही) करने चाहिएं—

"तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनि सरस्वत्या-वाहनम्। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेषवचनं विना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिन एवावाहनम्, एवं पूर्वाषाढादि-नक्षत्रं पूजादौ दिनव्याप्येव ग्राह्यम्।—" *(धर्मसिन्धुः)*

ध्यान दें—यहां विशेष बात यह है कि—केवल विसर्जन श्रवणनक्षत्र के प्रथमपाद में रात्रि के प्रथम प्रहर में भी किया जा सकता है—**"विसर्जनन्तु श्रवण-प्रथमपादे रात्रिभागगतेऽपि कार्यम्, विशेष-वचनात्। तच्च रात्रेः प्रथमप्रहर-पर्यन्तमेव इति भाति"**—(धर्मसिन्धुः)

इसी आधार पर इस वर्ष 7 अक्तूबर, '19 को सूर्यास्त बाद विद्यमान श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में रात्रि के प्रथम प्रहर में ही सरस्वती-विसर्जन लिखा है।

महानवमी उपवासार्थ

आश्वि. शु. अष्टमी के दिन पूर्ण सायंव्यापिनी नवमी को धर्मशास्त्रकारों ने पूजा एवं उपवासार्थ **'महानवमी'** माना है। **इस वर्ष 6 अक्तूबर, '19 को यह नवमी अष्टमी के दिन पूर्ण सायंव्यापिनी है, इसलिए इस वर्ष महानवमी की पूजा व उपवास इसी दिन किया जाएगा।**

पद्मक योग

विशाखा में सूर्य की स्थिति के समय जब चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में हो तब **'पद्मक योग'** होता है। किसी तीर्थस्थान, विशेषतः तीर्थराज पुष्कर (राजस्थान) पर इस योग में स्नान-दान का विशेष माहात्म्य माना गया है—**"विशाखास्थे सूर्ये सति यद्दिने चन्द्रनक्षत्रं कृत्तिका, तत्र 'पद्मकयोगः', अयं पुष्करेऽति प्रशस्तः।"** —*(धर्मसिन्धुः)*

इस वर्ष 13 नवं., '19 को सूर्य विशाखा में और चन्द्र कृत्तिका में है, जिससे इस दिन 'पद्मक योग' लिखा गया है।

मोक्षदा एकादशी व्रत

एकादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त एवं वैष्णव—दोनों द्वादशीयुता एकादशी के दिन ही व्रत करते हैं। यह नियम दशमी-द्वारा अरुणोदय का वेध एवं अवेध—दोनों स्थितियों में समान है।

इस नियम का समर्थन नारद का यह वाक्य करता है—

"सम्पूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा।
सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि॥"

अर्थात् पहिले दिन यदि षष्टिघट्यात्मक एकादशी हो और दूसरे दिन भी वह एकादशी विद्यमान हो, तब सभी (स्मार्त्तों और वैष्णवों) को दूसरे दिन व्रत करना चाहिए, बशर्ते कि वहां द्वादशी का क्षय न हुआ हो। लेकिन 'स्कन्द' का मत है कि—यहां (एकादशी की वृद्धि होने पर) पहिले दिन षष्टिघट्यात्मक एकादशी के दिन स्मार्त्तों एवं दूसरे दिन वैष्णवों को व्रत करना चाहिए। यहां उनका वचन

यह है—

"प्रथमेऽहनि सम्पूर्णा व्याप्याहोरात्र-संयुता।
द्वादश्यां च तथा तात दृश्यते पुनरेव च॥
पूर्वा कार्या गृहस्थैस्तु यतिभिश्चोत्तरा विभो॥"

लेकिन यहां नारद के मत को ही बहुमत प्राप्त है।

इस वर्ष एकादशी की वृद्धि है तथा द्वादशी का क्षय नहीं है। अत: यहां नारद के उपरोक्त वचन ("सम्पूर्णैकादशी यत्र...") अनुसार वैष्णव और स्मार्त्त—दोनों **का मार्ग. शुक्ल एकादशी का व्रत (मोक्षदा एकादशी व्रत) 8 दिसं., '19 को ही होगा।**

संकष्ट चतुर्थी व्रत

चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्र. कृष्ण चतुर्थी एवं माघ कृष्ण चतुर्थी के दिन '**संकष्ट चतुर्थी**' व्रत किया जाता है। **इस वर्ष माघ कृष्ण चतुर्थी केवल 13 जन., '20 को चन्द्रोदयव्यापिनी है, अत: इस वर्ष यह व्रत 13 जन., '20 को ही लिखा गया है।**

गौरी तृतीया (गोंतरी)

चैत्र, भाद्रपद और माघ मासों की शुक्ल तृतीयाएं "**गौरी तृतीया**" कहलाती हैं। गौरी तृतीया का व्रत परयुता(चतुर्थीयुता)तृतीया में करने का निर्देश है। यदि तृतीया दूसरे दिन एक मुहूर्त्त भी हो तो भी उसी दिन (दूसरे ही दिन) यह व्रत करना चाहिए। "**पुरुषार्थचिन्तामणि**" कार का वचन है—

"चैत्र-भाद्रपद-माघशुक्लतृतीयासु गौरीव्रतं विहितम्। तत्र मुहूर्त-मात्राऽप्युत्तरैव।"—(पुरुषार्थचिन्तामणि:)

'**कालमाधव**' कार का कहना है कि—तृतीया की वृद्धि होने पर यदि दूसरे दिन तृतीया एक मुहूर्त्त भी हो तब पहिली षष्टिघटिकात्मक (शुद्धा) तृतीया को भी छोड़कर दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि गौरीतृतीया का गणेश की तिथि (चतुर्थी) से सम्पर्क का माहात्म्य है—

"मुहूर्त्तमात्र-सत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे।
शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोगप्रशंसनात्॥"

—(कालमाधव:)

धर्मसिन्धुकार का तो मत है कि—यदि दूसरे दिन तृतीया यत्किंचित्काल (घड़ी से भी कम काल) के लिए क्यों न हो तब भी दूसरे ही दिन गौरीव्रत करना चाहिए। लेकिन यहां '**कालमाधव**' कार के मत को ही अधिकतर मान्यता दी जाती है।

देखिए—इस वर्ष 27 जन., '20 को अहोरात्रव्यापिनी (शुद्धा) तृतीया को भी उपरोक्त निर्णयानुसार छोड़कर यह गौरी तृतीया व्रत दूसरे ही दिन (केवल 2½ घटी-व्यापिनी) तृतीया को ही (28 जन. को) लिखा गया है।

वसन्त पंचमी

माघ शुक्ल पंचमी को '**वसन्तपंचमी**' मनाई जाती है। इस दिन पूर्वाह्ण में रति एवं कामदेव की पूजा का विधान है—**"माघमासे सुरश्रेष्ठ शुक्लायां पंचमीतिथौ। रति-कामौ तु सम्पूज्य कर्त्तव्य: सुमहोत्सव:॥"**—*(पुराण समुच्चय:)*

पूर्वाह्णव्यापिनी पंचमी के दिन ही यह पर्व मनाया जाता है। यदि केवल दूसरे ही दिन पूर्वाह्णव्यापिनी पंचमी हो तभी यह व्रत दूसरे दिन होता है, अन्यथा प्रत्येक स्थिति में पहिले ही दिन यह मनाया जाता है—**"इयं परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा, अन्यथा पूर्वैव"**—*(धर्मसिन्धु:)*। युग्मवाक्य भी इसी मत का समर्थक है।

इस वर्ष पंचमी 29 और 30 जन., '20 को दोनों दिन पूर्वाह्णव्यापिनी है। **अत: इस वर्ष यह पर्व चतुर्थीविद्धा पंचमी (29 जन., '20) को ही लिखा गया है।**

श्रीपंचमी

माघ शुक्ल पंचमी में श्री(लक्ष्मी) व श्रीपति विष्णु की पूजा की जाती है—

**" माघशुक्लचतुर्थ्यां तु वरमाराध्य च श्रिय:।
पंचम्यां कुन्दकुसुमै: पूजां कुर्यात्समृद्धये॥"**

—(वराहपुराण)

इस दिन पूर्वाह्न में श्री(लक्ष्मी) एवं सरस्वती—दोनों का पूजन करने का भी निर्देश है—

"पंचम्यां पूजयेल्लक्ष्मीं पुष्प-धूपान्नवारिभिः।
मस्याधारं लेखनीं च पूजयेच्च लिखेत्ततः॥
माघे मासि सिते पक्षे पंचमी या श्रियः प्रिया।
तस्याः पूर्वाह्न एवेह कार्यः सारस्वतोत्सवः॥"

—*(संवत्सर प्रदीपः)*

स्पष्ट है—यह पंचमी भी पूर्वाह्नव्यापिनी ली जाती है। **माधवमतानुसार** युग्म वाक्यानुसार भी यह पूर्वविद्धा (पूर्वयुता) लेनी चाहिए। अर्थात् यदि यह पंचमी दूसरे दिन ही पूर्वाह्नव्यापिनी हो तो श्रीपंचमी दूसरे दिन मनानी होगी, अन्यथा प्रत्येक स्थिति में पहले ही दिन इसे मनाना होगा।

इस वर्ष यह पंचमी 29 और 30 जन., '20—दोनों दिन पूर्वाह्नव्यापिनी है, **अतः यह पर्व चतुर्थीविद्धा पंचमी के दिन 29 जन., '20 को ही लिखा गया है।**

माघ-नवरात्रपारणा

इस वर्ष माघ (गुप्तनवरात्र) व्रतों की संख्या तृतीया की वृद्धि हो जाने के कारण 10 हो गई है। **अतः इस माघ-नवरात्र की पारणा 4 फर., '20 को दशमी तिथि के दिन ही करनी होगी—यह स्पष्ट है।**

पापमोचिनी एकादशी व्रत

इस वर्ष चैत्र कृ. द्वादशी की वृद्धि है। **इस स्थिति में स्मार्त्त द्वादशीयुत एकादशी के दिन (19 मार्च, '20 को) और वैष्णव षष्टी-घट्यात्मक द्वादशी के दिन (20 मार्च, '20) व्रत करेंगे।** ध्यान रहे—दशमी द्वारा अरुणोदयवेध और अवेध—दोनों स्थितियों में यह नियम समानरूपेण प्रवृत्त होता है। हेमाद्रि के मतानुसार ऐसी स्थिति में स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के साथ 20 मार्च,'20 को ही होना चाहिए, लेकिन इसे अन्य धर्मशास्त्री मान्यता नहीं देते।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2019 से 25 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त		
2019 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.
3 जन.	11	03	5 जन.	15	07
13 जन.	11	05	15 जन.	13	55
22 जन.	2	27	23 जन.	20	46
30 जन.	16	40	1 फर.	21	07
9 फर.	17	30	11 फर.	21	12
18 फर.	14	01	20 फर.	7	59
26 फर.	23	03	1 मार्च	3	06
8 मार्च	23	16	11 मार्च	2	57
18 मार्च	00	11	19 मार्च	19	04
26 मार्च	7	15	28 मार्च	10	10
5 अप्रै.	5	36	7 अप्रै.	8	44
14 अप्रै.	7	39	16 अप्रै.	4	01
22 अप्रै.	16	45	24 अप्रै.	18	35

प्रारम्भ			समाप्त		
2019 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.
2 मई	13	01	4 मई	15	46
11 मई	13	13	13 मई	10	27
20 मई	2	07	22 मई	3	31
29 मई	21	17	1 जून	00	11
7 जून	18	56	9 जून	15	48
16 जून	10	06	18 जून	11	50
26 जून	5	37	28 जून	9	11
5 जुला.	2	30	6 जुला.	22	10
13 जुला.	16	27	15 जुला.	18	51
23 जुला.	13	13	25 जुला.	17	39
1 अग.	12	11	3 अग.	6	43
9 अग.	21	58	12 अग.	00	45
19 अग.	19	48	22 अग.	00	47

प्रारम्भ			समाप्त		
2019 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.
28 अग.	22	55	30 अग.	17	11
6 सितं.	4	08	8 सितं.	6	29
16 सितं.	00	44	18 सितं.	6	43
25 सितं.	8	52	27 सितं.	4	00
3 अक्तू.	12	10	5 अक्तू.	13	18
13 अक्तू.	7	52	15 अक्तू.	12	30
22 अक्तू.	16	38	24 अक्तू.	13	18
30 अक्तू.	21	59	1 नवं.	21	51
9 नवं.	14	55	11 नवं.	19	17
18 नवं.	22	20	20 नवं.	20	04
27 नवं.	8	12	29 नवं.	7	33
6 दिसं.	22	57	9 दिसं.	3	30
16 दिसं.	4	00	18 दिसं.	1	26

प्रारम्भ			समाप्त		
2019-20 ई.	घं.	मि.	2019-20 ई.	घं.	मि.
24 दिस.	16	59	26 दिस.	16	50
3 जन.	7	19	5 जन.	12	27
12 जन.	11	49	14 ज़न.	7	55
20 जन.	23	30	23 जन.	00	19
30 जन.	15	12	1 फर.	20	53
8 फर.	22	05	10 फर.	17	05
17 फर.	4	53	19 फर.	6	06
26 फर.	22	08	29 फर.	4	02
7 मार्च	9	05	9 मार्च	4	09
15 मार्च	11	23	17 मार्च	11	46
25 मार्च	4	18	—		—

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2019 से 25 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त		
2019 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.
9 जन.	13	14	14 जन.	12	52
5 फर.	19	34	10 फर.	19	37
5 मार्च	1	44	10 मार्च	1	18
1 अप्रै.	8	21	6 अप्रै.	7	22
28 अप्रै.	15	45	3 मई	14	39

प्रारम्भ			समाप्त		
2019 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.
25 मई	23	43	30 मई	23	03
22 जून	7	39	27 जून	7	43
19 जुला.	14	58	24 जुला.	15	41
15 अग.	21	27	20 अग.	22	28
12 सितं.	3	28	17 सितं.	4	21

प्रारम्भ			समाप्त		
2019-20 ई.	घं.	मि.	2019-20 ई.	घं.	मि.
9 अक्तू.	9	41	14 अक्तू.	10	20
5 नवं.	16	46	10 नवं.	17	18
3 दिसं.	00	56	8 दिसं.	1	27
30 दिसं.	9	34	4 जन.	10	05
26 जन.	17	39	31 जन.	18	09

प्रारम्भ			समाप्त		
2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.
23 फर.	00	28	28 फर.	1	08
21 मार्च	6	20	—		—

रविवार-कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2019 से 31 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

2019 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	6	13	20	27	—
फरवरी	3	10	17	24	—
मार्च	3	10	17	24	31
अप्रैल	7	14	21	28	—

2019 ई.	रविवार की तारीखें				
मई	5	12	19	26	—
जून	2	9	16	23	30
जुलाई	7	14	21	28	—
अगस्त	4	11	18	25	—

2019 ई.	रविवार की तारीखें				
सितम्बर	1	8	15	22	29
अक्टूबर	6	13	20	27	—
नवम्बर	3	10	17	24	—
दिसम्बर	1	8	15	22	29

2020 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	5	12	19	26	—
फरवरी	2	9	16	23	—
मार्च	1	8	15	22	29

ग्रहण-विवरण (सं. 2076 वि.)

गणक-परिलेखक—प्रियव्रत शर्मा, ग्रहणफल—इन्दुशेखर शर्मा,

[इस ग्रहणगणित में मेरे प्रिय दौहित्र चि. प्रांशु चतुर्वेदी, B.A., L.L.B.(Hons.), L.L.M., Assistant District Attorney ने पर्याप्त सहयोग दिया है, तदर्थ उसे सर्वथा सुख-समृद्धिसम्पन्न शतोत्तर आयु के लिए मेरा आत्मिक सस्नेह आशीर्वाद है—प्रियव्रत शर्मा]

इस वर्ष (सं. 2076 वि.) में भूमण्डल पर निम्नांकित तीन ग्रहण दृश्य होंगे—

1. **खग्रास सूर्यग्रहण (2/3 जुलाई, सन् 2019 ई.)**
2. **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, सन् 2019 ई.)**
3. **कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसम्बर, सन् 2019 ई.)**

नोट करें कि—उल्लिखित ग्रहणों में से 2/3 जुलाई, सन् 2019 ई. वाला सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। शेष दोनों (खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 16/17 जुलाई, 2019 ई. एवं कंकण सूर्यग्रहण, 26 दिसं., सन् 2019 ई. वाले) ग्रहण ही भारत में दिखाई देंगे।

भारत में अदृश्य (न दिखाई देने वाले) खग्रास सूर्यग्रहण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

भारत में अदृश्य खग्रास सूर्यग्रहण 2/3 जुलाई, सन् 2019 ई. का स्पर्श-मोक्ष आदि काल का विवरण भा.स्टैं.टा. के अनुसार इस प्रकार है—

ग्रहणस्पर्श (ग्रहण-प्रारम्भ)	**22 घं. 25 मि.**
खग्रास-प्रारम्भ	**23 घं. 32 मि.**
ग्रहणमध्य	**24 घं. 53 मि.**
खग्रास समाप्त	**26 घं. 14 मि.**
ग्रहणमोक्ष (समाप्त)	**27 घं. 21 मि.**

उल्लिखित विवरण से स्पष्ट है कि—भारतीय समयानुसार ग्रहण-स्पर्श-मोक्ष के समय 2/3 जुलाई, सन् 2019 ई. की मध्यगत रात्रि होगी।

पृष्ठ 23 पर ग्रहण-चित्र (i) देखिए—

यह ग्रहण केवल प्रशान्त महासागर, लगभग पूरी दक्षिण अमेरिका, द. ध्रुव स्थान तथा पनामा में दिखाई देगा। इसकी खग्रास आकृति प्रशान्त महासागर, चिली एवं अर्जेन्टाइना में दिखाई देगी।

भारत में दृश्य (दिखाई देने वाले) दोनों ग्रहणों का विवरण इस प्रकार है—

(1) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, सन् 2019 ई.)—

यह ग्रहण 16/17 जुलाई, सन् 2019 ई. को आषाढ़-पूर्णिमा, मंगलवार के दिन सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास के रूप में स्पर्श से मोक्ष तक दिखाई देगा।

इस ग्रहण के स्पर्श, मध्य एवं मोक्ष(समाप्ति)काल आदि भा.स्टैं.टा. के अनुसार इस प्रकार हैं—

ग्रहण-प्रारम्भ	25 घं. 32 मि.	
ग्रहण-मध्य	27 घं. 1 मि.	(भा.स्टैं.टा.)
ग्रहण समाप्त	28 घं. 31 मि.	(16 जुलाई, 2019 ई.)
ग्रहण का पर्वकाल	2 घं. 59 मि.	
परमग्रास	0.658	

ध्यान दें—इस ग्रहण के समय भारतीय काल के अनुसार भारत में 16/17 जुलाई की मध्यरात्रि होगी।

पृष्ठ 24 पर ग्रहणचित्र (2) देखिए—

यह ग्रहण भारत में तो सर्वत्र स्पर्श (प्रारम्भ) से मोक्ष (समाप्ति) तक दिखेगा ही, यह आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मलेशिया, ताईवान, जापान, चीन, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, मंगोलिया, ईरान, कजाकिस्तान, द.उ.

अफ्रीका, यू.के. एवं द. अमेरिका आदि देशों में भी दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 16 जुलाई, सन् 2019 ई. को 16 घं. 32 मि. (I.S.T.) पर प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण धनु राशिस्थ उ.षा. नक्षत्र में प्रारम्भ होकर मकर राशिस्थ उ.षा. नक्षत्र में पूर्ण होगा। स्पष्ट है कि **16/17** जुलाई वाला यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण उ.षा. नक्षत्र धनु एवं मकर राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष कष्टप्रद है।

जन्म किंवा नाम राशि के अनुसार विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस चन्द्रग्रहण का राशियों के आधार पर फल नीचे दो कोष्ठकों में दिया गया है।

चन्द्रग्रहण का प्रारम्भ धनुराशि में होने से—

धनु-राशिगत चन्द्रग्रहण का फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख

चन्द्रग्रहण का मोक्ष मकर राशि में होने से—

मकर राशिस्थ चन्द्रग्रहण का फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	अपमान	भारी कष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ

चन्द्रग्रहण का वारफल एवं माहात्म्य—यह ग्रहण धनु एवं मकर राशि को स्पर्श करने से एवं मंगलवार वाले दिन घटित होने से स्नान, दान, जपादि के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है। मन्त्रजाप, दान-पूजा आदि इस समय विशेष फलप्रद लिखे हैं—**"बहुफलं जपदान-हुतादिके स्मृति-पुराणविदः प्रवदन्ति हि।"**

उ.षा. नक्षत्र में ग्रहण होने से वर्षा अधिक हो, अनाज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों, नारियल, चावल, तिलहन, घी, उड़द आदि दालें महंगी हों।

ग्रहण का राशिगत फल—'बृहत् संहिता' के अनुसार धनु राशि में ग्रहण होने से फल इस प्रकार है—प्रधान पुरुष, मन्त्रिगण, घोड़े, मिथिला-पाञ्चाल देशवासियों, पहलवानों, चिकित्सकों, व्यापारी वर्ग एवं शास्त्रों की जानकारी वाले क्रूर लोगों के लिए धनु राशि का ग्रहण क़ष्टप्रद है—

" धन्विन्यमात्यवर-वाजि-विदेह मल्लान्।
पाञ्चाल-वैद्य-वणिजो विषमायुधज्ञान्॥"

किञ्च—मकर राशि में ग्रहण-मोक्ष होने से यह ग्रहण जल-जन्तुओं, मन्त्रियों एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों, मन्त्रवेत्ताओं, चिकित्सकों, वृद्धों एवं आयुधजीवियों के लिए कष्टप्रद है—

"हन्यान्मृगे तु झष-मन्त्रि-कुलानि नीचान्।
मन्त्रौषधीषु कुशलान् स्थविरायुधीयान्॥"

चन्द्रग्रहण मासफल—क्योंकि यह चन्द्रग्रहण आषाढ़ी पूर्णिमा (आषाढ़ मास) में घटित होगा। अतः 'बृहत् संहिता' के अनुसार जलप्रपातों के स्रोत एवं नदी-नालों के सीमातिक्रमण किंवा पानी की टंकी/बांध आदि के टूटने से विनाश हो। पेयजल के संकट का सामना करना पड़े। नदियों में बाढ़ से हानि हो। फल एवं सब्जी-विक्रेताओं को हानि हो। गान्धार, कश्मीर, पुलिन्द एवं चीन में संकटापन्न स्थिति का सामना करना पड़े। वर्ष में कहीं-कहीं वर्षा हो—

" आषाढ-पर्वण्युदपान-वप्र-नदी-प्रवाहान् फल-मूल-वार्तान्।
गान्धार-काश्मीर-पुलिन्द-चीनान् हतान् वदेद् मण्डल-वर्षमस्मिन्॥"

(2)* कंकणाकृति खण्डग्रास सूर्यग्रहण (26 दिसं., 2019 ई.)

यह ग्रहण 26 दिसं., सन् 2019 ई. को पौषी अमावस गुरुवार के दिन समस्त भारत में खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा।.

दक्षिण भारत के कर्णाटक, केरल व तमिलनाडु के कुछ नगरों में इस ग्रहण की कंकणाकृति भी देखने को मिलेगी।

यह ग्रहण विश्व के रशिया, आस्ट्रेलिया एवं सोलोमन द्वीप आदि अन्य देशों में भी दिखाई पड़ेगा।

आगे पृष्ठ 27 से 33 तक दो कोष्ठक [कोष्ठक (1), कोष्ठक (2)] दिए गए हैं। कोष्ठक (1) तीन भागों में है, जिसमें भारत के 250 प्रसिद्ध नगरों का इस ग्रहण का स्पर्शकाल, मध्यकाल एवं परमग्रास मान व मोक्षकाल दिया गया है।

कोष्ठक (2) चार भागों में है। इनसे भारत तथा भारत के पड़ौसी देश नेपाल, श्रीलंका, बंगलादेश, म्यांमार, भूटान के किसी भी छोटे-बड़े ग्राम-नगर में इस ग्रहण के स्पर्श, मध्य, परमग्रास व मोक्षकाल, उस नगर किंवा ग्राम के रेखांश-अक्षांश द्वारा तुरन्त जाने जा सकते हैं।

द. भारत के पीछे बतलाये तीन प्रदेशों में इस ग्रहण की कंकणाकृति किस-किस नगर में कब से कब तक दिखाई देगी, इसका विस्तृत सचित्र विवरण पृष्ठ 25 पर पढ़िए।

कंकण सूर्यग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 25 दिसम्बर, सन् 2019 ई. को सायं 8 बजकर 0 मिनट पर प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल—इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष **मूल नक्षत्र** एवं **धनु राशि** में ही हो रहा है। अत: **धनु राशिस्थ-चन्द्र एवं मूल नक्षत्र में घटित होने से मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में जन्म लेने वाले किंवा धनु नामराशि वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेष कष्टप्रद है।**

जन्म किंवा नाम राशि के आधार पर विभिन्न राशि वालेव्यक्तियोंके लिए इस 'सूर्यग्रहण' का फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है—

धनु-राशिगत सूर्यग्रहण का फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख

पौष मास में ग्रहणफल—क्योंकि यह सूर्यग्रहण पौषी अमावस (पौष मास) में हो रहा है, अत: बुद्धिजीवि वर्ग एवं शस्त्रधारी किंवा युद्धप्रिय वर्ग में परस्पर उपद्रव की सम्भावना रहेगी। सिंध प्रदेश, कुकुर प्रदेश, विदेह (मिथिला-प्रदेश) भारी कष्टप्रद परिस्थिति में रहें।

इस वर्ष कुछ प्रान्तों में वर्षा से हानि, कहीं दुर्भिक्ष से परेशानी का सामना

* *सूर्य-चन्द्र के बिम्ब लगभग समान हैं। पृथ्वी से सूर्य और चन्द्र की दूरी व समीपता घटती-बढ़ती रहती है, जिससे हमें इनके बिम्ब छोटे-बड़े होते दीखते हैं। जब सूर्यग्रहण के समय चन्द्र-बिम्ब सूर्य-बिम्ब के बराबर होता है, तब* ***सूर्य का पूर्णग्रास ग्रहण****, जब वह सूर्य-बिम्ब से कुछ बड़ा होता है, तब* ***सूर्यखग्रास ग्रहण*** *और जब वह सूर्य-बिम्ब से कुछ छोटा होता है, तब* ***सूर्यग्रहण कंकणाकृति*** *होता है। उस समय चन्द्र-बिम्ब सूर्य-बिम्ब को इस प्रकार ढकता है कि-सूर्य-बिम्ब के लगभग मध्य में चन्द्र-बिम्ब समाविष्ट होता है, जिससे उस समय सूर्य-बिम्ब का अनाच्छादित बाहरी भाग चांदी के चमकते कंकण (कंगन) की तरह दिखाई देने लगता है, इसीलिए इस ग्रहण को कंकणाकृति ग्रहण कहा जाता है। यह ग्रहण 12 मिनट से अधिक नहीं टिकता।*

करना पड़े—

"पौषे द्विज-क्षत्र-जनोपरोधः
ससैन्धवारब्याः कुकुरा विदेहाः।
ध्वंसं ब्रजन्त्यत्र च मन्दवृष्टिं
भयं च विन्द्यादसुभिक्ष-युक्तम्॥"

सूर्यग्रहण-वेला में ग्रहस्थिति-जन्य प्रभाव—26 दिसम्बर, सन् 2019 ई. को इस (कंकण) सूर्यग्रहण के समय 25 दिसम्बर को 16 घं. 41 मि. से ही 27 दिसम्बर तक (ग्रहणवेध-अवधि के लगभग तक) गुरु, सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि एवं केतु—ये षड्ग्रह सूर्यग्रहणकालीन राशि (धनु) में रहेंगे। उल्लिखित ग्रहस्थिति भारतीय राजनीति में प्रतिष्ठित व्यक्तियों, व्यापारियों, चतुर्थश्रेणी कर्मचारियों एवं सैन्य-अधिकारियों के लिए भयावह है यह स्थिति पाक, अमरीका, इजराइल, उ.कोरिया एवं भारत आदि की शासन-व्यवस्था में उलटफेर का संकेत देती है। भारत एवं भारतेतर कुछ मुस्लिम राष्ट्रों एवं चीन, जापान आदि में भी भयंकर प्राकृतिक आपदा (भूकम्प, विस्फोट आदि) से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का भी संकेत मिलता है—

"क्रूर – संयुक्ते सूर्येंद्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः।
राष्ट्रभंगमिति प्राहुर्प्राज्ञा वै मुनीश्वराः॥"

ग्रहणकालीन षड्ग्रहीयोग विश्व के प्रतिष्ठित शासकों के लिए भयावह है;—"षड्वै ग्रहा घ्नन्ति समस्त-भूपान्।"

खग्रास सूर्यग्रहण (2/3 जुलाई, 2019)
(भूगोल पर ग्रहण-घटनास्थल, ग्रहणमध्य-काल, परम ग्रासमान और खग्रास-दृश्यस्थल)

(i) उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहीं वक्ररेखाओं पर ग्रहण का मध्यकाल U.T. (Universal time) में है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ देने पर यह भा.स्टैं. टा. हो जायेगा।

(ii) दूसरी वक्र-रेखाओं पर ग्रहण का परम ग्रास (प्रतिशत में) अंकित है।

(iii) बांईं से दाईं ओर जा रही बारीक पट्टी पर बसे स्थलों पर इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई देगी। यह ग्रहण भारत में अदृश्य है।

ग्रहण-चित्र (1)
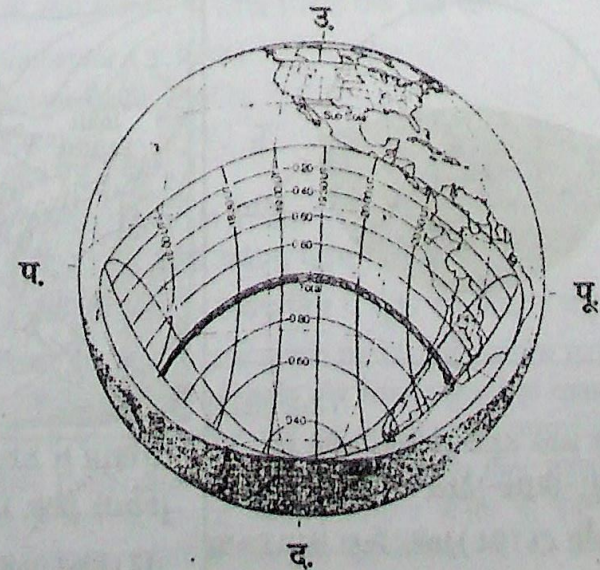
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, 2019)

ग्रहण-चित्र (2)

(यह ग्रहण भूगोल पर कहां ग्रस्तोदय, कहां ग्रस्तास्त, कहां सर्वथा अदृश्य और कहां सम्पूर्ण काल के लिए (स्पर्श से मोक्ष तक) दिखाई देगा—यह नीचे दिये इस भूगोल चित्र में देखिये)

60° उ.
30° उ.
0°
30° द.
60° द.
ग्रहण अदृश्य
ग्रस्तोदय ग्रहण
सम्पूर्ण ग्रहणकाल दृश्य
ग्रस्तास्त ग्रहण
180° प. 120° प. 60° प. 0° 60° पू. 120° पू. 180° पू.
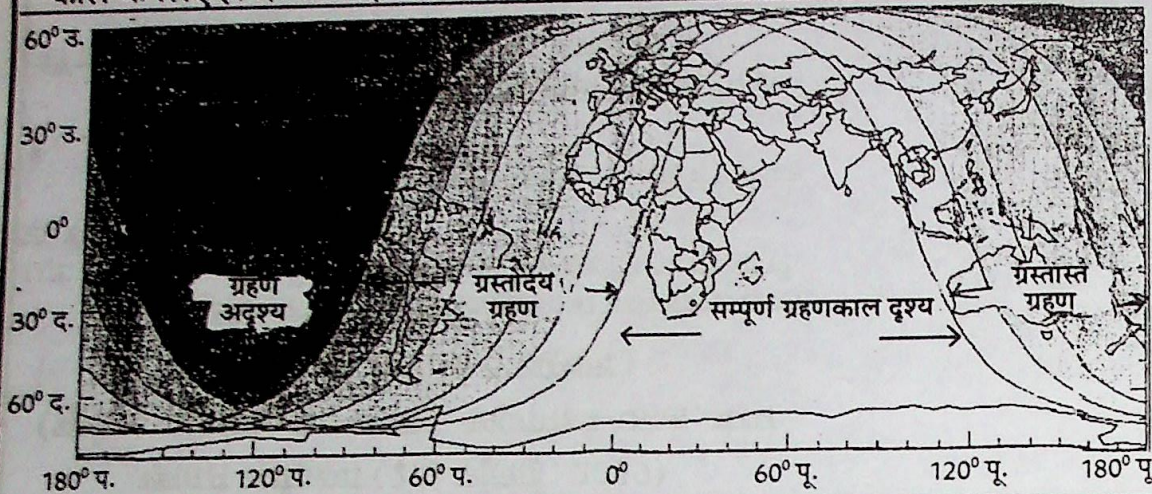
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुला., '19)

स्पर्श-मोक्ष-दिशाएं

यह ग्रहण भारत में सर्वत्र स्पर्श से मोक्ष तक दिखाई देगा।

उ.
स्पर्श
मोक्ष
पू.
प.
द.
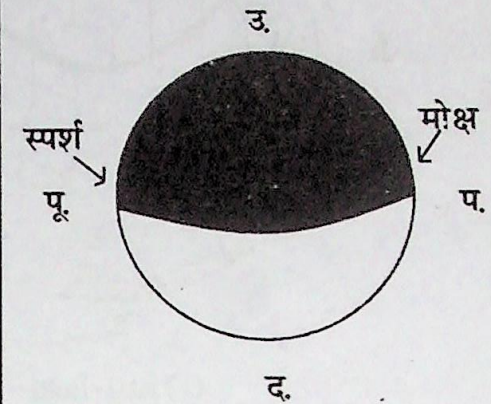
कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसं., 2019)

(भूगोल पर ग्रहण-घटनास्थल, ग्रहणमध्यकाल, परम ग्रासमान और कंकणाकृति दृश्यस्थल)

(i) दक्षिण से उत्तर की ओर जा रहीं वक्ररेखाओं पर ग्रहण का मध्यकाल U.T. (Universal time) दिया गया है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ देने पर यह भा.स्टैं.टा. हो जायेगा।

(ii) दूसरी वक्र-रेखाओं पर ग्रहण का परम ग्रासमान (प्रतिशत में) अंकित है।

(iii) बाईं से दाईं ओर जा रही बारीक पट्टी पर इस ग्रहण की कंकण आकृति दिखाई देगी।

जैसा कि पहले भी बतला चुके हैं, यह ग्रहण भारत में सर्वत्र खण्डग्रास के
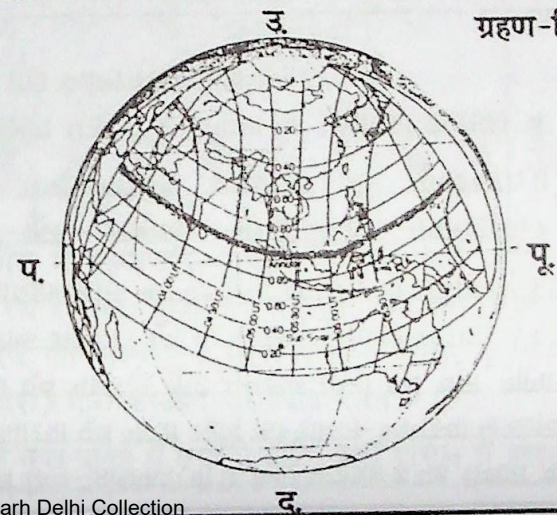
रूप में दिखाई देगा। लेकिन द. भारत के कर्णाटक, केरल और तमिलनाडू प्रदेशों के कुछ नगरों में इसकी कंकणाकृति भी लगभग 3¼ मिनट के लिए दिखाई देगी, इसके लिए आगे दिया **'भारत-मानचित्र'** और विवरण देखिए।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (26 दिसं., 2019)
(कंकणाकृति-ग्रहण-मार्ग)
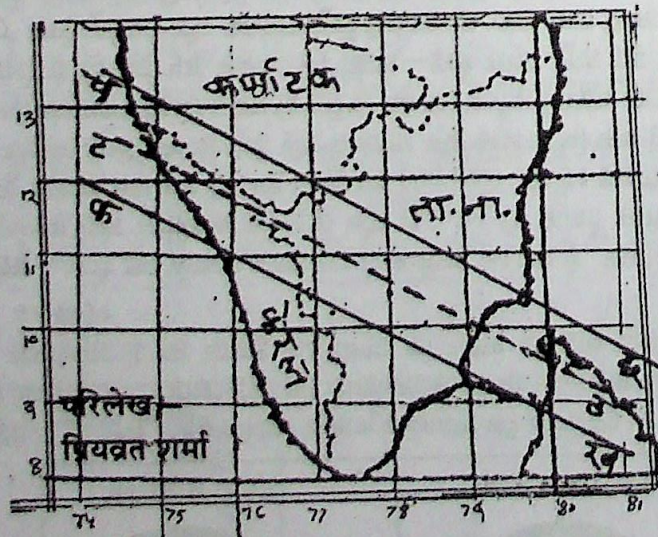
26 दिसं., 2019 वाले सूर्यग्रहण की कंकणाकृति इस भारत मानचित्र में अंकित 'च-छ' और 'क-ख' रेखाओं के मध्यगत लगभग 130 कि.मी. चौड़ी धुंधली पट्टी (कंकण ग्रहणमार्ग) में स्थित केवल कर्णाटक, केरल और तमिलनाडू के नगरों में लगभग 3¼ मिनट के लिए ही दिखाई देगी। इस कंकण ग्रहणमार्ग में स्थित नगरों में ग्रहण की कंकणाकृति सर्वत्र लगभग 9 घं. 30 मि. पर दिखाई देनी प्रारम्भ हो जाएगी। यह कंकणाकृति उन नगरों में लगभग 3¼ मि. तक ही देखी जा सकेगी, जो इस कंकण ग्रहणमार्ग के मध्य से गुजरने वाली 'ट-ठ' रेखा पर स्थित होंगे। जो नगर इस मध्यरेखा से 'च-छ' या 'क-ख' रेखा की ओर जितना अधिक हटा होगा, उस नगर में कंकणाकृति ग्रहण का काल उतना ही 3¼ से कम हो जाएगा। यह मध्यरेखा इस कंकणाकृति मार्ग की चौड़ाई को समान रूप से 65-65 कि.मी. में विभाजित करती है। 'च-छ' और 'क-ख' रेखाओं पर स्थित नगरों में ग्रहण की कंकणाकृति नहीं रहेगी। 'च-छ' रेखा से ऊपर उत्तर की ओर वाले नगरों में सूर्य का खण्डग्रास ही दिखाई देगा और वहां सूर्य के बिम्ब का दक्षिणी भाग ग्रस्त दिखेगा। **किंच**—'क-ख' रेखा से नीचे दक्षिण की ओर वाले नगरों में भी ग्रहण का खण्डग्रास ही दिखाई देगा, जहां सूर्यबिम्ब का उत्तरी भाग ग्रस्त दिखेगा।

'कंकणाकृति-मार्ग' की मध्य रेखा'ट-ठ'पर आपका अभीष्ट नगर स्थित है या नहीं—इसका निर्णय आप ऊपर दिए इस **भारत-मानचित्र** द्वारा आसानी से कर सकते हैं, क्योंकि इस मानचित्र में अक्षांश एवं रेखांश की रेखाएं एक-एक अंश के अन्तर पर स्पष्टता से अंकित हैं, फिर भी पाठकों की सुविधा के लिए यहां नीचे हम तमिलनाडु, कर्णाटक एवं पड़ौसी राष्ट्र श्रीलंका के चार प्रसिद्ध नगरों का निर्देश कर रहे हैं, जहां से आप इस अद्भुत **'कंकण ग्रहण'** का मनोहर दृश्य इनके साथ कोष्ठक में लिखे मिनटों तक देख सकेंगे—

Coimbatoor (3 मिनट)
Cannanore (3 मिनट)
Mangalore (2 मिनट)
Jaffna (3 मिनट)
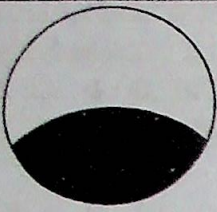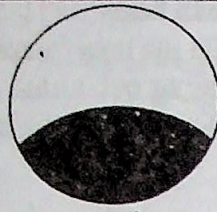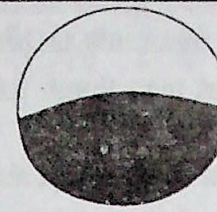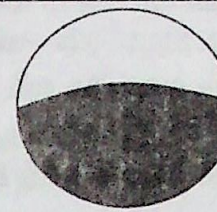
इस कंकण ग्रहण का रोचक दृश्य देखने के लिए अभीष्ट नगर में 9 घं. 25 मि. तक अवश्य पहुंचना चाहिए।

इस कंकण ग्रहण के समय दिन में कुछ ग्रह दिखाई पड़ सकते हैं—

सूर्य का खग्रास ग्रहण तथा कंकण ग्रहण—दोनों दर्शनीय घटनाएं हैं। सूर्य-चन्द्र का यह अद्भुत मिलन आकाश और धरा पर कुछ ऐसा वातावरण पैदा कर देता है, जिसे शब्द परिभाषित नहीं कर सकते। इस समय विश्व की सभी वेधशालाओं (observatories) के नक्षत्रविद् वेधयन्त्र लिए ग्रहण के खग्रास व कंकणाकृति मार्ग पर सन्नद्ध मिलेंगे। सामान्य जनता भी इन घटनाओं द्वारा उत्पादित विलक्षण प्राकृतिक वातावरण का आनन्द लेने को उत्सुक रहती है।

26 दिसं., '19 के सूर्यग्रहण का कुछ नगरों में मध्यकाल (भा.स्टैं.टा.) तथा परम ग्रासमान (प्रतिशत)

उत्तर

पश्चिम — पूर्व

कुरुक्षेत्र ग्रहणमध्य 9 घं. 30 मि.	हरिद्वार ग्रहणमध्य 9 घं. 33 मि.	प्रयाग ग्रहणमध्य 9 घं. 37 मि.	उज्जैन ग्रहणमध्य 9 घं. 29 मि.
परमग्रास 0.53	परमग्रास 0.51	परमग्रास 0.57	परमग्राम 0.70

दक्षिण

आप देखेंगे—26 दिसं., '19 को इस कंकण ग्रहणमार्ग की मध्यरेखा 'ट-ठ' पर भारत एवं अन्य पड़ौसी देशों की वेधशालाओं के भी नक्षत्रवेत्ता अपने वेध-यन्त्रों से सुसज्जित हो इस केवल 3¼ मिनट की घटना की तीव्र उत्कण्ठा से प्रतीक्षा में डटे होंगे।

देखिए—आगे इस कंकण ग्रहण का चित्र दिया जा रहा है, चन्द्रबिम्ब से लगभग पूर्णतया ढके सूर्यबिम्ब की पूर्वी कोर (Limb) के काफी समीप एक सफेद बिन्दु दिखाई पड़ रहा है। यह बिन्दु गुरु (Jupiter) ग्रह है। इस ग्रहण के समय इस ग्रह का सूर्यबिम्ब के पूर्वी छोर से अन्तर एक अंश से भी कम है, अत: इस ग्रहण की कंकणाकृति के समय दिन में ही यह ग्रह पर्याप्त निष्प्रभ आकाश में बड़ी आसानी से दिखाई पड़ सकता है। **किंच**—इसी समय शुक्र ग्रह सूर्य से लगभग 30° आगे पूर्व की ओर भारतीय पूर्वी क्षितिज के आस-पास स्थित होगा। जहां कहीं भी यह पूर्वी क्षितिज से ऊपर स्थित होगा, वहां पर्याप्त सम्भावना है, यह ग्रह भी कंकण, ग्रहणकाल में दृश्य हो जाए। इस समय सूर्य के आस-पास स्थित अन्य ग्रह मंगल, बुध, शनि भी दृश्य हो सकते हैं।

सावधान—ग्रहण के समय सूर्य के आसपास आकाशस्थ तारों ग्रहों को नंगी आंख से मत देखिए, इससे दृष्टि बुरी तरह क्षतिग्रग्रस्त हो सकती है। इस समय इन्हें देखने के लिए वेल्डिंग के काले ग्लास का प्रयोग किया जा सकता है।

सूर्यग्रहण (26 दिसं., '19) कंकणाकृति व गुरुग्रह
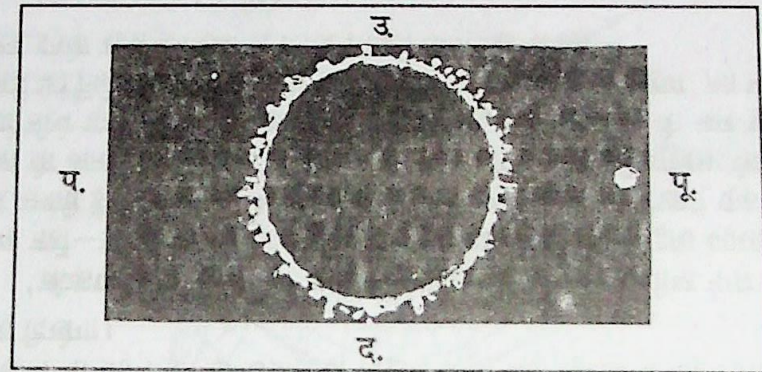
आगामी वर्ष (सं. 2077 वि.) में भारत में दृश्य-अदृश्य ग्रहण--
आगामी वर्ष में भूगोल पर दो ग्रहण घटित होंगे—
(i) कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, '20)
(ii) खग्रास सूर्यग्रहण (14 दिसं., '20)
(इनमें से केवल 'कंकण सूर्यग्रहण' ही सं. 2077 वि. में भारत में दृश्य होगा।)

सूर्यग्रहण (26-12-2019) (भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (1) (भाग 1)

नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास	नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
आबू	8	7	9	22	10	51	0.703	बीकानेर	8	11	9	24	10	50	0.616
आरा (बिहार)	8	23	9	43	11	17	0.534	बिलासपुर (हि.प्र.)	8	20	9	31	10	53	0.500
अगरतला	8	34	10	0	11	39	0.500	बिलासपुर (म.प्र.)	8	15	9	37	11	15	0.642
आगरा	8	16	9	31	11	0	0.576	बृन्दावन	8	16	9	31	10	59	0.572
अहमदाबाद	8	6	9	22	10	52	0.744	बुलन्दशहर	8	17	9	31	10	58	0.551
ऐजावल	8	38	10	5	11	43	0.489	बूंदी	8	11	9	27	10	56	0.646
आजमगढ़	8	22	9	40	11	13	0.539	केपकोमोरिन	8	7	9	31	11	14	0.910
अजमेर	8	11	9	26	10	53	0.635	चम्बा	8	21	9	31	10	51	0.483
अकोला	8	8	9	28	11	3	0.742	चण्डीगढ़	8	19	9	31	10	54	0.512
अलीगढ़	8	17	9	31	10	59	0.560	चेन्नई	8	8	9	34	11	19	0.889
इलाहाबाद	8	19	9	37	11	10	0.569	चेरापूंजी	8	38	10	2	11	37	0.464
अलमोड़ा	8	21	9	35	11	0	0.503	छपरा	8	24	9	44	11	17	0.528
अलवर	8	14	9	29	10	56	0.585	छतरपुर	8	15	9	33	11	6	0.609
अम्बाला	8	19	9	31	10	54	0.521	चित्तौड़गढ़	8	9	9	25	10	55	0.672
अमेठी (उ.प्र.)	8	19	9	38	11	9	0.554	चिटगाँग (बं.दे.)	8	34	10	2	11	43	0.527
अमरावती (म.प्र.)	8	9	9	29	11	5	0.726	चूरू	8	13	9	27	10	53	0.588
अमृतसर	8	18	9	29	10	50	0.516	कोचीन	8	5	9	28	11	9	0.940
अमरोहा (उ.प्र.)	8	19	9	33	10	59	0.533	कोयम्बटूर	8	6	9	29	11	10	0.979
अनन्तनाग (क.)	8	22	9	31	10	49	0.467	कोलम्बो (श्रीलंका)	8	10	9	36	11	22	0.912
अनूपशहर (उ.प्र.)	8	17	9	32	10	59	0.548	कटक	8	20	9	46	11	28	0.634
अर्की (हि.प्र.)	8	20	9	31	10	54	0.502	ढाका (बं.दे.)	8	32	9	58	11	36	0.511
अयोध्या	8	21	9	39	11	9	0.534	दरभंगा	8	27	9	47	11	20	0.506
बदायूं	8	18	9	33	11	1	0.544	दार्जीलिंग	8	33	9	53	11	24	0.461
बलिया	8	23	9	42	11	16	0.535	दतिया	8	14	9	31	11	2	0.606
बालोरघाट (बं.दे.)	8	31	9	54	11	29	0.496	देहरादून	8	20	9	33	10	57	0.507
बंगलौर	8	6	9	29	11	11	0.928	दिल्ली	8	16	9	30	10	57	0.554
बांसवाड़ा	8	8	9	24	10	55	0.709	देवरिया	8	23	9	42	11.	13	0.522
बाड़मेर	8	7	9	21	10	48	0.694	देवास	8	9	9	27	10	59	0.699
बट्टीकलोआ (श्रीलंका)	8	11	9	39	11	28	0.959	देवबन्द	8	19	9	32	10	57	0.525
भागलपुर	8	27	9	49	11	24	0.514	देवप्रयाग	8	21	9	33	10	58	0.504
भरतपुर	8	15	9	30	10	58	0.582	धनबाद	8	24	9	47	11	25	0.552
बठिण्डा	8	16	9	28	10	51	0.547	धनकुटा (नेपाल)	8	31	9	50	11	22	0.473
भीनमाल	8	7	9	22	10	50	0.700	धर्मशाला	8	21	9	31	10	52	0.485
भिवानी	8	16	9	29	10	55	0.562	धूरी	8	17	9	29	10	52	0.532
भोपाल	8	10	9	29	11	2	0.676	डिब्रूगढ़	8	50	10	12	11	42	0.392
भुवनेश्वर	8	19	9	46	11	28	0.640	डीडवाना	8	12	9	26	10	52	0.615
भुज	8	4	9	18	10	46	0.776	डूंगरपुर	8	7	9	23	10	53	0.710
भूसावल	8	7	9	26	11	0	0.750	द्वारिका	8	3	9	17	10	45	0.812
बीजापुर	8	5	9	26	11	3	0.855	ऐटा	8	17	9	32	11	1	0.560
बिजनौर	8	19	9	32	10	58	0.526	इटावा	8	16	9	33	11	2	0.573

सूर्यग्रहण (26-12-2019) (भा. स्टैं. टा.)
कोष्ठक (1) (भाग 2)

नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास	नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
फरीदाबाद	8	16	9	30	10	57	0.557	झांसी	8	14	9	31	11	3	0.609
फरीदकोट	8	16	9	28	10	50	0.540	झरिया	8	24	9	48	11	25	0.550
फाजिल्का	8	15	9	27	10	49	0.553	झुंझुनु	8	14	9	27	10	54	0.588
फिरोजपुर	8	17	9	28	10	50	0.534	जीन्द	8	16	9	29	10	54	0.549
गाले (श्रीलंका)	8	10	9	37	11	23	0.894	जोधपुर	8	9	9	23	10	50	0.660
गंगटोक	8	34	9	54	11	25	0.452	जोरहाट	8	47	10	10	11	42	0.413
गया	8	23	9	44	11	19	0.546	कैथल	8	17	9	30	10	54	0.538
गाजियाबाद	8	17	9	31	10	57	0.550	कालका	8	20	9	31	10	54	0.508
गोरखपुर	8	23	9	41	11	12	0.522	कांचीपुरम्	8	8	9	33	11	18	0.902
गुंटकल	8	6	9	28	11	9	0.875	कैंडी (श्रीलंका)	8	10	9	37	11	24	0.933
गुरदासपुर	8	19	9	30	10	50	0.501	कांगड़ा	8	21	9	31	10	52	0.490
गुरुग्राम	8	16	9	30	10	56	0.560	कन्नौज	8	18	9	34	11	4	0.556
गुआहाटी	8	39	10	2	11	36	0.446	कानपुर	8	18	9	35	11	6	0.564
ग्वालियर	8	14	9	31	11	1	0.597	कपूरथला	8	18	9	29	10	51	0.515
हांसी	8	16	9	29	10	54	0.559	कारगिल	8	25	9	32	10	49	0.440
हमीरपुर (हि.प्र.)	8	20	9	31	10	52	0.496	करनाल	8	18	9	31	10	55	0.533
हमीरपुर (उ.प्र.)	8	17	9	34	11	6	0.578	काठियावाड़	8	4	9	19	10	49	0.791
हापुड़	8	17	9	31	10	58	0.545	काठमाण्डू (नेपाल)	8	28	9	45	11	15	0.481
हरिद्वार	8	20	9	33	10	57	0.513	कठुआ (क.)	8	20	9	30	10	50	0.494
हाथरस	8	16	9	31	10	59	0.567	कटनी	8	15	9	34	11	9	0.624
हिसार	8	15	9	28	10	53	0.560	खन्ना	8	18	9	30	10	53	0.521
होशंगाबाद	8	10	9	29	11	3	0.683	खुर्जा	8	17	9	31	10	58	0.555
होशियारपुर	8	19	9	30	10	52	0.506	किशनगढ़ (राज.)	8	9	9	21	10	45	0.653
हैदराबाद	8	8	9	30	11	10	0.805	कोडैकनाल	8	6	9	30	11	12	0.965
इम्फाल	8	43	10	9	11	45	0.456	कोहिमा	8	45	10	9	11	44	0.435
इन्दौर	8	8	9	26	10	59	0.709	कोटखाई	8	21	9	32	10	55	0.495
इटानगर	8	46	10	8	11	39	0.410	कोलकाता	8	26	9	52	11	32	0.558
इटारसी	8	10	9	29	11	3	0.686	कोटा	8	11	9	27	10	57	0.650
जबलपुर	8	13	9	33	11	8	0.645	कुल्लू	8	22	9	32	10	53	0.483
जाफना (श्रीलंका)	8	9	9	35	11	21	0.981	कुराली (पं.)	8	19	9	31	10	53	0.513
जयपुर	8	13	9	27	10	55	0.610	कुरुक्षेत्र	8	18	9	30	10	54	0.529
जैसलमेर	8	8	9	21	10	46	0.672	लखनऊ	8	19	9	36	11	6	0.547
जालन्धर	8	18	9	29	10	51	0.515	लुधियाना	8	18	9	30	10	52	0.520
जालौर	8	8	9	22	10	50	0.688	मदुरै	8	7	9	32	11	15	0.967
जम्मू	8	20	9	29	10	49	0.492	महेन्द्रगढ़	8	15	9	29	10	55	0.574
जामनगर	8	4	9	18	10	47	0.792	मलेरकोटला	8	18	9	29	10	53	0.527
जमशेदपुर	8	23	9	47	11	25	0.577	मन्दसौर	8	9	9	25	10	56	0.687
जासौर (बं.दे.)	8	30	9	55	11	34	0.530	मण्डी (हि.प्र.)	8	21	9	32	10	53	0.490
झालावाड़	8	8	9	24	10	54	0.686	मानेसर	8	18	9	31	10	55	0.528
झालरापाटन	8	10	9	27	10	58	0.661	मंगलोर	8	4	9	25	11	3	0.969

सूर्यग्रहण (26-12-2019) (भा. स्टैं. टा.)
कोष्ठक (1) (भाग3)

नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास	नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
मारवाड़ (जं.)	8	9	9	24	10	52	0.666	रामेछाप (नेपाल)	8	29	9	47	11	18	0.479
मथुरा	8	15	9	31	10	59	0.575	रामेश्वरम्	8	8	9	34	11	19	0.967
मेरठ	8	18	9	31	10	57	0.539	रामपुरबुशहर	8	21	9	33	10	55	0.488
मिरजापुर	8	19	9	39	11	12	0.567	रांची	8	22	9	45	11	22	0.575
मोगा	8	17	9	28	10	51	0.531	रतनगढ़	8	13	9	26	10	52	0.598
मुम्बई	8	4	9	21	10	55	0.840	रतलाम	8	8	9	25	10	57	0.704
मुंगेर	8	26	9	48	11	22	0.516	रीवा	8	17	9	36	11	10	0.597
मुरादाबाद	8	19	9	33	11	0	0.530	रिवाड़ी	8	15	9	29	10	56	0.571
मंसूरी	8	20	9	33	10	56	0.504	रोहतक	8	16	9	30	10	55	0.555
मुजफ्फरनगर	8	18	9	32	10	57	0.530	रोपड़	8	19	9	30	10	53	0.512
मैसूर	8	5	9	28	11	9	0.959	सागर	8	12	9	31	11	5	0.645
नाभा	8	18	9	30	10	53	0.528	सहारनपुर	8	19	9	32	10	56	0.521
नागौर	8	11	9	24	10	51	0.631	सांगानेर	8	12	9	27	10	55	0.613
नागपुर	8	11	9	31	11	8	0.703	संगरूर	8	17	9	29	10	53	0.536
नाहन	8	20	9	32	10	55	0.510	सरहिन्द	8	18	9	30	10	53	0.520
नैनीताल	8	21	9	35	11	0.	0.510	सेहोर (बं.दे.)	8	29	9	54	11	34	0.536
नालागढ़	8	19	9	31	10	53	0.507	शाहदरा	8	17	9	31	10	57	0.552
नारैना	8	11	9	25	10	52	0.633	शिलांग	8	39	10	2	11	37	0.457
नारनौल	8	14	9	28	10	55	0.580	शिमला	8	20	9	32	10	54	0.500
नासिक	8	5	9	23	10	56	0.802	शोलापुर	8	5	9	26	11	3	0.833
नाथद्वारा	8	8	9	24	10	53	0.682	श्रीनगर (क.)	8	22	9	30	10	48	0.464
नवलगढ़	8	13	9	27	10	54	0.595	सीकर	8	13	9	27	10	54	0.602
नीमच	8	9	9	25	10	55	0.680	सिलीगुड़ी	8	33	9	53	11	25	0.467
पालमपुर	8	21	9	31	10	52	0.486	सिरसा	8	15	9	28	10	52	0.560
पाली	8	9	9	23	10	51	0.668	सोलन	8	20	9	31	10	54	0.505
पणजी	8	3	9	23	10	59	0.917	सूरत	8	5	9	21	10	53	0.786
पंचकूला	8	19	9	31	10	54	0.511	सूरतगढ़	8	14	9	26	10	50	0.579
पानीपत	8	17	9	30	10	55	0.539	सिलहट (बं.दे.)	8	37	10	2	11	38	0.471
पठानकोट	8	20	9	30	10	51	0.493	तंजावर	8	7	9	33	11	17	0.964
पटियाला	8	18	9	30	10	53	0.526	थानेसर	8	18	9	31	10	55	0.528
पटना	8	24	9	45	11	19	0.526	थिम्फू (भूटान)	8	37	9	57	11	28	0.435
फुलेरा	8	12	9	27	10	54	0.618	तिरुपति	8	7	9	32	11	16	0.886
पिलानी	8	14	9	28	10	54	0.581	टोंक	8	12	9	27	10	56	0.627
पोखरा (नेपाल)	8	26	9	43	11	12	0.484	त्रिवेन्द्रम्	8	7	9	30	11	11	0.911
पाण्डिचेरी	8	8	9	34	11	19	0.923	टुटीकोरिन	8	7	9	32	11	15	0.937
पुंछ	8	21	9	29	10	47	0.477	उदयपुर (राज.)	8	8	9	23	10	53	0.692
पोरबन्दर	8	3	9	18	10	47	0.816	उद्धमपुर (क.)	8	21	9	30	10	49	0.486
पोर्टब्लेयर	8	27	10	7	12	3	0.770	उज्जैन	8	8	9	26	10	58	0.700
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	8	19	9	38	11	10	0.557	ऊना	8	20	9	31	10	52	0.502
पूना	8	4	9	23	10	57	0.839	उन्नाव	8	18	9	35	11	6	0.560
पुरनिया	8	29	9	50	11	24	0.496	वड़ोदरा	8	6	9	22	10	53	0.753
पुरी	8	19	9	46	11	29	0.650	वाराणसी	8	20	9	40	11	13	0.558
रायपुर (छ.ग.)	8	14	9	36	11	15	0.668	वेरावल (गु.)	8	3	9	18	10	48	0.826
राजकोट	8	4	9	19	10	48	0.786	विजयवाड़ा	8	9	9	34	11	17	0.797
राजशाही (बं.दे.)	8	29	9	53	11	30	0.516	विशाखापट्टनम्	8	13	9	40	11	24	0.732

सूर्यग्रहण (26-12-2019) प्रारम्भ-काल(भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (2) (भाग 1)

अक्षांश	रेखांश (पूर्व) 68		69		70		71		72		73		74		75		76		77		78		79		80		81		82	
(उ.)	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
7	8	4	8	5	8	5	8	5	8	5	8	6	8	6	8	7	8	7	8	8	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12
8	8	4	8	4	8	4	8	4	8	5	8	5	8	6	8	6	8	7	8	7	8	8	8	9	8	10	8	10	8	11
9	8	3	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	5	8	6	8	6	8	7	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
10	8	2	8	3	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	5	8	6	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
11	8	2	8	3	8	3	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
12	8	2	8	3	8	2	8	3	8	3	8	3	8	4	8	5	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
13	8	1	8	3	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
14	8	1	8	1	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
15	8	1	8	1	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
16	8	1	8	1	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	5	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11
17	8	1	8	1	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	5	8	6	8	6	8	7	8	8	8	9	8	11	8	12
18	8	1	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12
19	8	1	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	5	8	6	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	12	8	13
20	8	2	8	2	8	3	8	3	8	4	8	5	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12	8	14
21	8	2	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12	8	13	8	14
22	8	3	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	7	8	7	8	8	8	9	8	10	8	12	8	13	8	14	8	15
23	8	3	8	4	8	4	8	5	8	6	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12	8	14	8	15	8	16
24	8	4	8	4	8	5	8	6	8	6	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12	8	13	8	15	8	16	8	18
25	8	5	8	5	8	6	8	7	8	7	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12	8	13	8	15	8	16	8	17	8	19
26	8	6	8	6	8	7	8	8	8	8	8	9	8	10	8	11	8	12	8	13	8	14	8	16	8	17	8	19	8	20
27	8	6	8	7	8	8	8	9	8	9	8	10	8	11	8	12	8	13	8	14	8	16	8	17	8	18	8	20	8	21
28	8	8	8	8	8	9	8	10	8	11	8	11	8	12	8	13	8	15	8	16	8	17	8	18	8	20	8	21	8	23
29	8	9	8	9	8	10	8	11	8	12	8	13	8	14	8	15	8	16	8	17	8	18	8	20	8	21	8	23	8	24
30	8	10	8	10	8	11	8	12	8	13	8	14	8	15	8	16	8	17	8	19	8	20	8	21	8	23	8	24	8	26
31	8	11	8	12	8	13	8	14	8	15	8	16	8	17	8	18	8	19	8	20	8	22	8	23	8	25	8	26	8	28
32	8	12	8	13	8	14	8	15	8	16	8	17	8	18	8	19	8	21	8	22	8	23	8	25	8	26	8	28	8	30
33	8	14	8	15	8	16	8	17	8	18	8	19	8	20	8	21	8	22	8	24	8	25	8	27	8	28	8	30	8	32
34	8	16	8	16	8	17	8	18	8	19	8	20	8	22	8	23	8	24	8	26	8	27	8	29	8	30	8	32	8	34
35	8	17	8	18	8	19	8	20	8	21	8	22	8	23	8	25	8	26	8	27	8	29	8	31	8	32	8	34	8	36
36	8	19	8	20	8	21	8	22	8	23	8	24	8	25	8	27	8	28	8	29	8	31	8	33	8	34	8	36	8	38

अक्षांश	रेखांश (पूर्व) 83		84		85		86		87		88		89		90		91		92		93		94		95		96		97	
(उ.)	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
7	8	13	8	14	8	15	8	17	8	18	8	19	8	21	8	23	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	34	8	37
8	8	12	8	14	8	15	8	16	8	18	8	19	8	21	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	34	8	37
9	8	12	8	13	8	15	8	16	8	17	8	19	8	20	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	34	8	37
10	8	12	8	13	8	14	8	16	8	17	8	19	8	20	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	35	8	37
11	8	12	8	13	8	14	8	16	8	17	8	19	8	20	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	35	8	37
12	8	12	8	13	8	14	8	16	8	17	8	19	8	21	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	33	8	35	8	38
13	8	12	8	13	8	14	8	16	8	17	8	19	8	21	8	23	8	25	8	27	8	29	8	31	8	33	8	36	8	38
14	8	12	8	13	8	15	8	16	8	18	8	19	8	21	8	23	8	25	8	27	8	29	8	31	8	34	8	36	8	39
15	8	12	8	14	8	15	8	17	8	18	8	20	8	22	8	23	8	25	8	28	8	30	8	32	8	34	8	37	8	39
16	8	13	8	14	8	15	8	17	8	19	8	20	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	33	8	35	8	38	8	40
17	8	13	8	14	8	16	8	18	8	19	8	21	8	23	8	25	8	27	8	29	8	31	8	33	8	36	8	38	8	41
18	8	14	8	15	8	17	8	18	8	20	8	22	8	24	8	25	8	28	8	30	8	32	8	34	8	37	8	39	8	42
19	8	14	8	16	8	17	8	19	8	21	8	22	8	24	8	26	8	28	8	31	8	33	8	35	8	38	8	41	8	43
20	8	15	8	17	8	18	8	20	8	22	8	23	8	25	8	27	8	29	8	32	8	34	8	37	8	39	8	42	8	44
21	8	16	8	17	8	19	8	21	8	23	8	24	8	26	8	28	8	31	8	33	8	35	8	38	8	40	8	43	8	46
22	8	17	8	18	8	20	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	34	8	37	8	39	8	42	8	44	8	47
23	8	18	8	19	8	21	8	23	8	25	8	27	8	29	8	31	8	33	8	35	8	38	8	40	8	43	8	46	8	49
24	8	19	8	21	8	22	8	24	8	26	8	28	8	30	8	32	8	35	8	37	8	39	8	42	8	45	8	47	8	50
25	8	20	8	22	8	24	8	25	8	27	8	29	8	32	8	34	8	36	8	38	8	41	8	44	8	46	8	49	8	52
26	8	22	8	23	8	25	8	27	8	29	8	31	8	33	8	35	8	38	8	40	8	43	8	45	8	48	8	51	8	54
27	8	23	8	25	8	27	8	28	8	30	8	33	8	35	8	37	8	39	8	42	8	44	8	47	8	50	8	53	8	56
28	8	25	8	26	8	28	8	30	8	32	8	34	8	36	8	39	8	41	8	44	8	46	8	49	8	52	8	55	8	58
29	8	26	8	28	8	30	8	32	8	34	8	36	8	38	8	41	8	43	8	46	8	48	8	51	8	54	8	57	9	0
30	8	28	8	30	8	32	8	34	8	36	8	38	8	40	8	42	8	45	8	48	8	50	8	53	8	56	8	59	9	2
31	8	30	8	31	8	33	8	35	8	38	8	40	8	42	8	44	8	47	8	50	8	52	8	55	8	58	9	1	9	4
32	8	31	8	33	8	35	8	37	8	40	8	42	8	44	8	47	8	49	8	52	8	54	8	57	9	0	9	3	9	6
33	8	33	8	35	8	37	8	39	8	42	8	44	8	46	8	49	8	51	8	54	8	57	9	0	9	2	9	5	9	8
34	8	36	8	37	8	40	8	42	8	44	8	46	8	49	8	51	8	54	8	56	8	59	9	2	9	5	9	8	9	11
35	8	38	8	40	8	42	8	44	8	46	8	48	8	51	8	53	8	56	8	59	9	1	9	4	9	7	9	10	9	13
36	8	40	8	42	8	44	8	46	8	48	8	51	8	53	8	56	8	58	9	1	9	4	9	7	9	10	9	13	9	16

सूर्यग्रहण (26-12-2019) मध्य-काल(भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (2) (भाग 2)

अक्षांश	रेखांश (पूर्व) 68		69		70		71		72		73		74		75		76		77		78		79		80		81		82	
(उ.)	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
7	9	18	9	19	9	20	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	29	9	31	9	33	9	35	9	37	9	39	9	41
8	9	18	9	19	9	20	9	21	9	23	9	24	9	26	9	27	9	29	9	31	9	32	9	34	9	36	9	38	9	40
9	9	17	9	18	9	20	9	21	9	22	9	24	9	25	9	27	9	28	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38	9	40
10	9	17	9	18	9	19	9	20	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	31	9	33	9	35	9	37	9	39
11	9	16	9	18	9	19	9	20	9	21	9	23	9	24	9	26	9	28	9	29	9	31	9	33	9	35	9	37	9	39
12	9	16	9	17	9	19	9	20	9	21	9	23	9	24	9	26	9	27	9	29	9	31	9	33	9	34	9	37	9	39
13	9	16	9	17	9	18	9	20	9	21	9	22	9	24	9	25	9	27	9	29	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38
14	9	16	9	17	9	18	9	19	9	21	9	22	9	24	9	25	9	27	9	28	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38
15	9	16	9	17	9	18	9	19	9	21	9	22	9	23	9	25	9	27	9	28	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38
16	9	16	9	17	9	18	9	19	9	21	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38
17	9	16	9	17	9	18	9	19	9	20	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	32	9	33	9	35	9	37
18	9	16	9	17	9	18	9	19	9	20	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	31	9	33	9	35	9	37
19	9	16	9	17	9	18	9	19	9	21	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	31	9	33	9	35	9	37
20	9	16	9	17	9	18	9	19	9	21	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	31	9	33	9	35	9	37
21	9	16	9	17	9	18	9	19	9	21	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	30	9	32	9	33	9	35	9	37
22	9	16	9	17	9	18	9	20	9	21	9	22	9	24	9	25	9	27	9	28	9	30	9	32	9	34	9	35	9	38
23	9	16	9	18	9	19	9	20	9	21	9	22	9	24	9	25	9	27	9	28	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38
24	9	17	9	18	9	19	9	20	9	21	9	23	9	24	9	26	9	27	9	29	9	30	9	32	9	34	9	36	9	38
25	9	17	9	18	9	19	9	20	9	22	9	23	9	24	9	26	9	27	9	29	9	31	9	32	9	34	9	36	9	38
26	9	18	9	18	9	20	9	21	9	22	9	23	9	25	9	26	9	28	9	29	9	31	9	33	9	35	9	36	9	38
27	9	18	9	19	9	20	9	21	9	23	9	24	9	25	9	27	9	28	9	30	9	31	9	33	9	35	9	37	9	39
28	9	18	9	19	9	21	9	22	9	23	9	24	9	26	9	27	9	29	9	30	9	32	9	34	9	35	9	37	9	39
29	9	19	9	20	9	21	9	22	9	24	9	25	9	26	9	28	9	29	9	31	9	32	9	34	9	36	9	38	9	40
30	9	20	9	21	9	22	9	23	9	24	9	25	9	27	9	28	9	30	9	31	9	33	9	35	9	36	9	38	9	40
31	9	20	9	21	9	22	9	23	9	25	9	26	9	27	9	29	9	30	9	32	9	33	9	35	9	37	9	39	9	41
32	9	21	9	22	9	23	9	24	9	25	9	27	9	28	9	29	9	31	9	32	9	34	9	36	9	37	9	39	9	41
33	9	22	9	23	9	24	9	25	9	26	9	27	9	29	9	30	9	32	9	33	9	35	9	36	9	38	9	40	9	42
34	9	22	9	23	9	24	9	26	9	27	9	28	9	29	9	31	9	32	9	34	9	35	9	37	9	39	9	41	9	42
35	9	23	9	24	9	25	9	26	9	28	9	29	9	30	9	32	9	33	9	35	9	36	9	38	9	39	9	41	9	43
36	9	24	9	25	9	26	9	27	9	28	9	30	9	31	9	32	9	34	9	35	9	37	9	39	9	40	9	42	9	44

अक्षांश	रेखांश (पूर्व) 83		84		85		86		87		88		89		90		91		92		93		94		95		96		97	
(उ.)	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
7	9	43	9	45	9	48	9	50	9	53	9	56	9	59	10	2	10	5	10	8	10	11	10	14	10	18	10	21	10	25
8	9	43	9	45	9	47	9	50	9	52	9	55	9	58	10	1	10	4	10	7	10	10	10	14	10	17	10	21	10	24
9	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	55	9	58	10	0	10	3	10	7	10	10	10	13	10	17	10	20	10	24
10	9	42	9	44	9	46	9	49	9	51	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	20	10	23
11	9	41	9	44	9	46	9	48	9	51	9	54	9	57	9	59	10	3	10	6	10	9	10	12	10	16	10	19	10	23
12	9	41	9	43	9	46	9	48	9	51	9	53	9	56	9	59	10	2	10	5	10	8	10	12	10	15	10	19	10	23
13	9	41	9	43	9	45	9	48	9	50	9	53	9	56	9	59	10	2	10	5	10	8	10	11	10	15	10	18	10	22
14	9	40	9	43	9	45	9	47	9	50	9	53	9	55	9	58	10	1	10	4	10	8	10	11	10	15	10	18	10	22
15	9	40	9	42	9	45	9	47	9	50	9	52	9	55	9	58	10	1	10	4	10	7	10	11	10	14	10	18	10	21
16	9	40	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	55	9	58	10	1	10	4	10	7	10	10	10	14	10	17	10	21
17	9	40	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	55	9	58	10	1	10	4	10	7	10	10	10	14	10	17	10	21
18	9	40	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	55	9	57	10	0	10	3	10	7	10	10	10	13	10	17	10	20
19	9	39	9	42	9	44	9	46	9	49	9	52	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	10	10	13	10	17	10	20
20	9	39	9	42	9	44	9	46	9	49	9	52	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	10	10	13	10	16	10	20
21	9	40	9	42	9	44	9	46	9	49	9	52	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	20
22	9	40	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	20
23	9	40	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	20
24	9	40	9	42	9	44	9	47	9	49	9	52	9	54	9	57	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	19
25	9	40	9	42	9	45	9	47	9	49	9	52	9	55	9	57	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	19
26	9	40	9	43	9	45	9	47	9	50	9	52	9	55	9	58	10	0	10	3	10	6	10	9	10	13	10	16	10	19
27	9	41	9	43	9	45	9	47	9	50	9	52	9	55	9	58	10	1	10	3	10	6	10	10	10	13	10	16	10	19
28	9	41	9	43	9	46	9	48	9	50	9	53	9	55	9	58	10	1	10	4	10	7	10	10	10	13	10	16	10	19
29	9	42	9	44	9	46	9	48	9	51	9	53	9	56	9	58	10	1	10	4	10	7	10	10	10	13	10	16	10	19
30	9	42	9	44	9	46	9	49	9	51	9	53	9	56	9	59	10	1	10	4	10	7	10	10	10	13	10	16	10	20
31	9	43	9	45	9	47	9	49	9	51	9	54	9	56	9	59	10	2	10	4	10	7	10	10	10	13	10	16	10	20
32	9	43	9	45	9	47	9	50	9	52	9	54	9	57	9	59	10	2	10	5	10	8	10	11	10	14	10	17	10	20
33	9	44	9	46	9	48	9	50	9	52	9	55	9	57	10	0	10	2	10	5	10	8	10	11	10	14	10	17	10	20
34	9	44	9	46	9	48	9	51	9	53	9	55	9	58	10	0	10	3	10	6	10	8	10	11	10	14	10	17	10	20
35	9	45	9	47	9	49	9	51	9	54	9	56	9	58	10	1	10	3	10	6	10	9	10	11	10	14	10	17	10	20
36	9	46	9	48	9	50	9	52	9	54	9	56	9	59	10	1	10	4	10	6	10	9	10	12	10	15	10	18	10	21

सूर्यग्रहण (26-12-2019) परम ग्रास-मान
कोष्ठक (2) (भाग 3)

अक्षांश (उ.)	रेखांश (पूर्व) 68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82
7	0.740	0.755	0.770	0.784	0.799	0.814	0.829	0.844	0.858	0.873	0.888	0.902	0.916	0.931	0.945
8	0.767	0.781	0.796	0.811	0.826	0.840	0.855	0.870	0.885	0.899	0.914	0.928	0.943	0.957	0.971
9	0.793	0.808	0.823	0.837	0.852	0.867	0.882	0.896	0.911	0.925	0.940	0.954	0.969	0.983	0.970
10	0.820	0.834	0.849	0.864	0.878	0.893	0.908	0.922	0.937	0.952	0.966	0.980	0.972	0.958	0.944
11	0.846	0.861	0.875	0.890	0.905	0.919	0.934	0.949	0.963	0.977	0.974	0.960	0.946	0.932	0.918
12	0.873	0.887	0.902	0.916	0.931	0.945	0.960	0.974	0.976	0.962	0.948	0.934	0.920	0.906	0.892
13	0.899	0.913	0.928	0.942	0.957	0.971	0.978	0.964	0.950	0.936	0.922	0.908	0.894	0.880	0.867
14	0.925	0.940	0.954	0.968	0.981	0.967	0.953	0.938	0.924	0.910	0.896	0.882	0.869	0.855	0.842
15	0.951	0.966	0.980	0.969	0.955	0.941	0.927	0.913	0.899	0.885	0.871	0.857	0.843	0.830	0.816
16	0.977	0.971	0.957	0.943	0.929	0.915	0.901	0.887	0.873	0.859	0.846	0.832	0.818	0.805	0.792
17	0.959	0.945	0.931	0.917	0.903	0.889	0.876	0.862	0.848	0.834	0.820	0.807	0.793	0.780	0.767
18	0.933	0.919	0.906	0.892	0.878	0.864	0.850	0.836	0.823	0.809	0.796	0.782	0.769	0.755	0.742
19	0.907	0.894	0.880	0.866	0.852	0.839	0.825	0.811	0.798	0.784	0.771	0.757	0.744	0.731	0.718
20	0.882	0.868	0.855	0.841	0.827	0.814	0.800	0.787	0.773	0.760	0.746	0.733	0.720	0.707	0.694
21	0.856	0.843	0.829	0.816	0.802	0.789	0.775	0.762	0.749	0.735	0.722	0.709	0.696	0.683	0.670
22	0.831	0.818	0.804	0.791	0.777	0.764	0.751	0.737	0.724	0.711	0.698	0.685	0.672	0.659	0.647
23	0.806	0.793	0.779	0.766	0.753	0.740	0.726	0.713	0.700	0.687	0.674	0.661	0.648	0.636	0.623
24	0.781	0.768	0.755	0.742	0.728	0.715	0.702	0.689	0.676	0.663	0.650	0.638	0.625	0.613	0.600
25	0.756	0.743	0.730	0.717	0.704	0.691	0.678	0.665	0.653	0.640	0.627	0.614	0.602	0.590	0.577
26	0.732	0.719	0.706	0.693	0.680	0.667	0.655	0.642	0.629	0.617	0.604	0.592	0.579	0.567	0.555
27	0.708	0.695	0.682	0.669	0.657	0.644	0.631	0.619	0.606	0.594	0.581	0.569	0.557	0.545	0.533
28	0.684	0.671	0.658	0.646	0.633	0.621	0.608	0.596	0.583	0.571	0.559	0.547	0.535	0.523	0.511
29	0.660	0.647	0.635	0.622	0.610	0.598	0.585	0.573	0.561	0.549	0.537	0.525	0.513	0.501	0.489
30	0.636	0.624	0.612	0.599	0.587	0.575	0.563	0.551	0.539	0.527	0.515	0.503	0.491	0.480	0.468
31	0.613	0.601	0.589	0.577	0.565	0.553	0.541	0.529	0.517	0.505	0.493	0.481	0.470	0.459	0.447
32	0.590	0.578	0.566	0.554	0.542	0.530	0.519	0.507	0.495	0.483	0.472	0.460	0.449	0.438	0.427
33	0.568	0.556	0.544	0.532	0.520	0.509	0.497	0.485	0.474	0.462	0.451	0.440	0.429	0.418	0.407
34	0.545	0.534	0.522	0.510	0.499	0.487	0.476	0.464	0.453	0.442	0.431	0.419	0.409	0.398	0.387
35	0.523	0.512	0.500	0.489	0.478	0.466	0.455	0.444	0.432	0.421	0.410	0.400	0.389	0.378	0.368
36	0.502	0.490	0.479	0.468	0.457	0.445	0.434	0.423	0.412	0.401	0.391	0.380	0.369	0.359	0.349

अक्षांश (उ.)	रेखांश (पूर्व) 83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97
7	0.959	0.972	0.982	0.969	0.956	0.944	0.932	0.920	0.909	0.898	0.888	0.878	0.869	0.860	0.852
8	0.982	0.969	0.956	0.943	0.930	0.918	0.906	0.894	0.883	0.872	0.862	0.852	0.843	0.834	0.826
9	0.956	0.943	0.930	0.917	0.904	0.892	0.880	0.868	0.857	0.846	0.836	0.826	0.817	0.808	0.800
10	0.930	0.917	0.904	0.891	0.878	0.866	0.854	0.842	0.831	0.821	0.810	0.801	0.791	0.783	0.775
11	0.905	0.891	0.878	0.865	0.853	0.840	0.829	0.817	0.806	0.795	0.785	0.775	0.766	0.757	0.749
12	0.879	0.866	0.853	0.840	0.827	0.815	0.803	0.792	0.781	0.770	0.760	0.750	0.741	0.732	0.724
13	0.854	0.840	0.827	0.815	0.802	0.790	0.778	0.767	0.756	0.745	0.735	0.725	0.716	0.708	0.700
14	0.828	0.815	0.802	0.790	0.777	0.765	0.753	0.742	0.731	0.720	0.710	0.701	0.692	0.683	0.675
15	0.803	0.790	0.777	0.765	0.752	0.740	0.729	0.717	0.706	0.696	0.686	0.676	0.667	0.659	0.651
16	0.778	0.765	0.753	0.740	0.728	0.716	0.704	0.693	0.682	0.672	0.662	0.652	0.643	0.635	0.627
17	0.754	0.741	0.728	0.716	0.704	0.692	0.680	0.669	0.658	0.648	0.638	0.629	0.620	0.611	0.604
18	0.729	0.717	0.704	0.692	0.680	0.668	0.656	0.645	0.635	0.624	0:615	0.605	0.596	0.588	0.580
19	0.705	0.692	0.680	0.668	0.656	0.644	0.633	0.622	0.611	0.601	0.591	0.582	0.573	0.565	0.557
20	0.681	0.669	0.656	0.644	0.632	0.621	0.610	0.599	0.588	0.578	0.568	0.559	0.551	0.542	0.535
21	0.657	0.645	0.633	0.621	0.609	0.598	0.587	0.576	0.565	0.555	0.546	0.537	0.528	0.520	0.513
22	0.634	0.622	0.610	0.598	0.586	0.575	0.564	0.553	0.543	0.533	0.524	0.515	0.506	0.498	0.491
23	0.611	0.599	0.587	0.575	0.564	0.552	0.542	0.531	0.521	0.511	0.502	0.493	0.484	0.477	0.469
24	0.588	0.576	0.564	0.553	0.541	0.530	0.520	0.509	0.499	0.489	0.480	0.471	0.463	0.455	0.448
25	0.565	0.554	0.542	0.530	0.519	0.508	0.498	0.488	0.478	0.468	0.459	0.450	0.442	0.434	0.427
26	0.543	0.531	0.520	0.509	0.498	0.487	0.476	0.466	0.457	0.447	0.438	0.430	0.422	0.414	0.407
27	0.521	0.510	0.498	0.487	0.476	0.466	0.455	0.445	0.436	0.427	0.418	0.409	0.401	0.394	0.387
28	0.499	0.488	0.477	0.466	0.455	0.445	0.435	0.425	0.415	0.406	0.398	0.389	0.381	0.374	0.367
29	0.478	0.467	0.456	0.445	0.435	0.424	0.414	0.405	0.395	0.386	0.378	0.370	0.362	0.355	0.348
30	0.457	0.446	0.435	0.425	0.414	0.404	0.394	0.385	0.376	0.367	0.359	0.351	0.343	0.336	0.329
31	0.436	0.426	0.415	0.404	0.394	0.384	0.375	0.365	0.356	0.348	0.340	0.332	0.324	0.317	0.311
32	0.416	0.405	0.395	0.385	0.375	0.365	0.356	0.346	0.338	0.329	0.321	0.313	0.306	0.299	0.293
33	0.396	0.386	0.375	0.365	0.356	0.346	0.337	0.328	0.319	0.311	0.303	0.295	0.288	0.282	0.275
34	0.377	0.366	0.356	0.346	0.337	0.327	0.318	0.310	0.301	0.293	0.285	0.278	0.271	0.264	0.258
35	0.358	0.347	0.338	0.328	0.318	0.309	0.300	0.292	0.284	0.276	0.268	0.261	0.254	0.248	0.242
36	0.339	0.329	0.319	0.310	0.301	0.292	0.283	0.274	0.266	0.259	0.251	0.244	0.237	0.231	0.225

सूर्यग्रहण (26-12-2019) (समाप्तिकाल(भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (2) (भाग 4)

अक्षांश (उ.)	रेखांश (पूर्व) 68 घं. मि.	69 घं. मि.	70 घं. मि.	71 घं. मि.	72 घं. मि.	73 घं. मि.	74 घं. मि.	75 घं. मि.	76 घं. मि.	77 घं. मि.	78 घं. मि.	79 घं. मि.	80 घं. मि.	81 घं. मि.	82 घं. मि.
7	10 46	10 49	10 51	10 54	10 57	11 0	11 3	11 6	11 9	11 13	11 16	11 19	11 23	11 26	11 30
8	10 46	10 49	10 51	10 54	10 57	11 0	11 3	11 6	11 9	11 12	11 15	11 19	11 22	11 25	11 29
9	10 46	10 49	10 51	10 54	10 57	11 0	11 3	11 6	11 9	11 12	11 15	11 18	11 21	11 25	11 28
10	10 46	10 48	10 51	10 54	10 57	10 59	11 2	11 5	11 8	11 11	11 14	11 18	11 21	11 24	11 28
11	10 46	10 48	10 51	10 54	10 56	10 59	11 2	11 5	11 8	11 11	11 14	11 17	11 20	11 23	11 27
12	10 46	10 48	10 51	10 53	10 56	10 59	11 2	11 4	11 7	11 10	11 13	11 16	11 19	11 23	11 26
13	10 46	10 48	10 51	10 53	10 56	10 58	11 1	11 4	11 7	11 10	11 13	11 16	11 19	11 22	11 25
14	10 46	10 48	10 50	10 53	10 55	10 58	11 1	11 3	11 6	11 9	11 12	11 15	11 18	11 21	11 24
15	10 45	10 48	10 50	10 52	10 55	10 57	11 0	11 3	11 5	11 8	11 11	11 14	11 17	11 20	11 23
16	10 45	10 47	10 50	10 52	10 54	10 57	11 0	11 2	11 5	11 8	11 10	11 13	11 16	11 19	11 22
17	10 45	10 47	10 49	10 52	10 54	10 56	10 59	11 1	11 4	11 7	11 9	11 12	11 15	11 18	11 21
18	10 45	10 47	10 49	10 51	10 54	10 56	10 58	11 1	11 3	11 6	11 9	11 11	11 14	11 17	11 20
19	10 44	10 46	10 49	10 51	10 53	10 55	10 58	11 0	11 3	11 5	11 8	11 10	11 13	11 16	11 19
20	10 44	10 46	10 48	10 50	10 53	10 55	10 57	10 59	11 2	11 4	11 7	11 9	11 12	11 15	11 18
21	10 44	10 46	10 48	10 50	10 52	10 54	10 56	10 59	11 1	11 4	11 6	11 9	11 11	11 14	11 16
22	10 43	10 45	10 47	10 49	10 51	10 54	10 56	10 58	11 0	11 3	11 5	11 8	11 10	11 13	11 15
23	10 43	10 45	10 47	10 49	10 51	10 53	10 55	10 57	10 59	11 2	11 4	11 7	11 9	11 12	11 14
24	10 43	10 44	10 46	10 48	10 50	10 52	10 54	10 56	10 59	11 1	11 3	11 5	11 8	11 10	11 13
25	10 42	10 44	10 46	10 48	10 50	10 52	10 54	10 56	10 58	11 0	11 2	11 4	11 7	11 9	11 12
26	10 42	10 44	10 45	10 47	10 49	10 51	10 53	10 55	10 57	10 59	11 1	11 3	11 6	11 8	11 10
27	10 42	10 43	10 45	10 47	10 48	10 50	10 52	10 54	10 56	10 58	11 0	11 2	11 5	11 7	11 9
28	10 41	10 43	10 44	10 46	10 48	10 50	10 51	10 53	10 55	10 57	10 59	11 1	11 3	11 6	11 8
29	10 41	10 42	10 44	10 46	10 47	10 49	10 51	10 52	10 54	10 56	10 58	11 0	11 2	11 4	11 7
30	10 40	10 42	10 43	10 45	10 47	10 48	10 50	10 52	10 53	10 55	10 57	10 59	11 1	11 3	11 5
31	10 40	10 41	10 43	10 44	10 46	10 48	10 49	10 51	10 53	10 54	10 56	10 58	11 0	11 2	11 4
32	10 40	10 41	10 42	10 44	10 45	10 47	10 48	10 50	10 52	10 53	10 55	10 57	10 59	11 1	11 3
33	10 39	10 40	10 42	10 43	10 45	10 46	10 48	10 49	10 51	10 53	10 54	10 56	10 58	11 0	11 1
34	10 39	10 40	10 41	10 43	10 44	10 45	10 47	10 48	10 50	10 52	10 53	10 55	10 57	10 58	11 0
35	10 38	10 40	10 41	10 42	10 43	10 45	10 46	10 48	10 49	10 51	10 52	10 54	10 55	10 57	10 59
36	10 38	10 39	10 40	10 42	10 43	10 44	10 45	10 47	10 48	10 50	10 51	10 53	10 54	10 56	10 58

अक्षांश (उ.)	रेखांश (पूर्व) 83 घं. मि.	84 घं. मि.	85 घं. मि.	86 घं. मि.	87 घं. मि.	88 घं. मि.	89 घं. मि.	90 घं. मि.	91 घं. मि.	92 घं. मि.	93 घं. मि.	94 घं. मि.	95 घं. मि.	96 घं. मि.	97 घं. मि.
7	11 33	11 37	11 40	11 44	11 48	11 51	11 55	11 59	12 2	12 6	12 10	12 13	12 17	12 20	12 24
8	11 32	11 36	11 40	11 43	11 47	11 50	11 54	11 58	12 1	12 5	12 9	12 12	12 16	12 19	12 23
9	11 32	11 35	11 39	11 42	11 46	11 49	11 53	11 57	12 0	12 4	12 8	12 11	12 15	12 18	12 22
10	11 31	11 34	11 38	11 41	11 45	11 49	11 52	11 56	11 59	12 3	12 7	12 10	12 14	12 17	12 21
11	11 30	11 33	11 37	11 40	11 44	11 47	11 51	11 55	11 58	12 2	12 5	12 9	12 13	12 16	12 20
12	11 29	11 33	11 36	11 39	11 43	11 46	11 50	11 53	11 57	12 1	12 4	12 8	12 11	12 15	12 18
13	11 28	11 32	11 35	11 38	11 42	11 45	11 49	11 52	11 56	11 59	12 3	12 6	12 10	12 13	12 17
14	11 27	11 31	11 34	11 37	11 41	11 44	11 47	11 51	11 54	11 58	12 1	12 5	12 8	12 12	12 15
15	11 26	11 29	11 33	11 36	11 39	11 43	11 46	11 50	11 53	11 56	12 0	12 3	12 7	12 10	12 14
16	11 25	11 28	11 31	11 35	11 38	11 41	11 45	11 48	11 52	11 55	11 58	12 2	12 5	12 9	12 12
17	11 24	11 27	11 30	11 33	11 37	11 40	11 43	11 47	11 50	11 53	11 57	12 0	12 4	12 7	12 10
18	11 23	11 26	11 29	11 32	11 35	11 39	11 42	11 45	11 48	11 52	11 55	11 59	12 2	12 5	12 9
19	11 22	11 25	11 28	11 31	11 34	11 37	11 40	11 43	11 47	11 50	11 53	11 57	12 0	12 3	12 7
20	11 21	11 23	11 26	11 29	11 32	11 36	11 39	11 42	11 45	11 48	11 52	11 55	11 58	12 2	12 5
21	11 19	11 22	11 25	11 28	11 31	11 34	11 37	11 40	11 43	11 47	11 50	11 53	11 56	12 0	12 3
22	11 18	11 21	11 24	11 26	11 29	11 32	11 35	11 38	11 42	11 45	11 48	11 51	11 54	11 58	12 1
23	11 17	11 19	11 22	11 25	11 28	11 31	11 34	11 37	11 40	11 43	11 46	11 49	11 52	11 56	11 59
24	11 15	11 18	11 21	11 24	11 26	11 29	11 32	11 35	11 38	11 41	11 44	11 47	11 50	11 54	11 57
25	11 14	11 17	11 19	11 22	11 25	11 27	11 30	11 33	11 36	11 39	11 42	11 45	11 48	11 51	11 55
26	11 13	11 15	11 18	11 20	11 23	11 26	11 29	11 31	11 34	11 37	11 40	11 43	11 46	11 49	11 52
27	11 11	11 14	11 16	11 19	11 21	11 24	11 27	11 30	11 32	11 35	11 38	11 41	11 44	11 47	11 50
28	11 10	11 12	11 15	11 17	11 20	11 22	11 25	11 28	11 30	11 33	11 36	11 39	11 42	11 45	11 48
29	11 9	11 11	11 13	11 16	11 18	11 21	11 23	11 26	11 29	11 31	11 34	11 37	11 40	11 42	11 45
30	11 7	11 10	11 12	11 14	11 17	11 19	11 21	11 24	11 27	11 29	11 32	11 35	11 37	11 40	11 43
31	11 6	11 8	11 10	11 13	11 15	11 17	11 20	11 22	11 25	11 27	11 30	11 32	11 35	11 38	11 41
32	11 5	11 7	11 9	11 11	11 13	11 16	11 18	11 20	11 23	11 25	11 28	11 30	11 33	11 36	11 38
33	11 3	11 5	11 7	11 9	11 12	11 14	11 16	11 18	11 21	11 23	11 26	11 28	11 31	11 33	11 36
34	11 2	11 4	11 6	11 8	11 10	11 12	11 14	11 16	11 19	11 21	11 23	11 26	11 28	11 31	11 33
35	11 1	11 3	11 4	11 6	11 8	11 10	11 12	11 15	11 17	11 19	11 21	11 24	11 26	11 29	11 31
36	10 59	11 1	11 3	11 5	11 7	11 9	11 11	11 13	11 15	11 17	11 19	11 21	11 24	11 26	11 29

संवत् 2076 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-मुहूर्त्त-कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में पूर्ण सहयोग के लिए "श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय"—कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्त्ता **ग्राम सुन्हाड़—सौर, सोलन (हि.प्र.) निवासी प्रबुद्ध ज्योतिर्विद्वान् आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य** को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिये बिना मैं नहीं रह सकता।—**प्रियव्रत शर्मा**

यद्यपि जातकपद्धति एवं ताजिक ग्रन्थों में द्वादश-भाव-साधनपूर्वक बनायी गयी भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक-जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश-कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि-कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाये हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भाव राशि तथा तदुत्तरवर्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनायी गयी जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाये हुए है। सच बात तो यह है—फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक-रूप तो लगभग लुप्त-सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2076 वि. में बनने वाली सभी (कुल 210) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **"किस तारीख के कितने बजे से, किस तारीख के कितने बजे तक"**—कौन-सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन-किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति—कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश — कालानुसारी वर्षप्रवेश — कुण्डली (वर्षप्रवेश—कालिक ग्रहस्थिति—कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति—कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति — कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास ही बना सकेंगे।

ध्यान दें—यहां दी गयीं ये कुण्डलियां विवाहादि-मुहूर्त्तकालिक लग्नों के निर्णय में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गयीं इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयं भी लग्न की शुद्धि-अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अत्यन्त आसानीपूर्वक अनायास ही कर सकते हैं।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जायेगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो, तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाइम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में बदलकर इन्हें प्रयोग में लाइये।

स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (1)—शिमला (H.P.) में 25 अगस्त, 2019 ई. को 13 घं. 40 मि. (भा.स्टै. टा.) पर उत्पन्न होने वाले/हुए जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है?

क्योंकि, इस जातक का जन्म **"23 अगस्त 08 घं. 57 मि. से 25 अगस्त 16 घं. 11 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—शिमला में 25 अगस्त को 13 घं. 40 मि. (भा.स्टै. टा.) पर वृश्चिक लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न-कुण्डली यह बनी—

श. 9 के.
7
10
8 गु.
6
11
सू. 5 मं. शु.
12
2 चं.
4 बु.
1
3 रा.

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (2)—15 फर., 2020 ई. को Zurich (Switzerland) में 10 घं. 15 मि. पर पैदा हुए/होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है?

Zurich (Switzerland) में D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चलता है, जो क्षेत्रीय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है। लेकिन इन दिनों (सर्दियों में) यह लागू नहीं होता। **स्पष्ट है**—इस जातक का यह जन्मसमय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार है। Zurich (Switzerland) के स्टैं.टा. से भा.स्टैं.टा. 4 घं. 30 मि. आगे रहता है, अत: इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 15 फरवरी, 2020 ई. और जन्मकाल 14 घं. 45 मि. (भा.स्टैं.टा.) बने। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"13 फरवरी, 20 घं. 22 मि. से 15 फरवरी 23 घं. 17 मि."** के मध्य हुआ है, अत: इसकी जन्मकालिक-कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—Zurich में इसके जन्म के समय लग्न मेष होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी—

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (3)—भारत (हि.प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11 घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवं सम्प्रति मोहाली (पं.) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2019-20 की वर्षकुण्डली जाननी है?

इस जातक के गताब्द यहां 45 मिले और 46वां वर्षप्रवेश 15/16 अगस्त, 2019 ई. (गुरु/शुक्रवार) की मध्यरात्रि में 0 घं. 06 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वर्षप्रवेश **"15 अगस्त 21 घं. 27 मि. से 16 अगस्त 20 घं. 38 मि."** के मध्य हुआ है, अत: इसकी वर्षकुण्डली (46वें वर्ष की) यहां दी गयी इसी कुण्डली अनुरूप होगी। **किंच**—इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (16 अगस्त, 2019 ई. को 0 घं. 06 मि. पर) वृष लग्न है, अत: इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी—

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं—

उदाहरण (4)—मान लें, 6 अप्रैल, 2019 ई. को 12 घं. 25 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आपके पास चण्डीगढ़ (U.T.), भारत में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि/असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 6 अप्रैल, 2019 ई. और प्रश्नकाल 12 घं. 25 मि. आगे इस स्तम्भ में दिये गये **"6 अप्रैल 7 घं. 22 मि. से 8 अप्रैल 15 घं. 52 मि."** के मध्य पड़ता है, अत: यहां यह प्रश्नकुण्डली इसी अवधि के अन्तर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—यहां प्रश्नस्थल (चण्डीगढ़) में इस समय लग्न कर्क है, अत: यहां इस प्रश्नकर्त्ता की कुण्डली इस तरह बनेगी—

आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (5)—हमारे इस पंचांग (श्रीमार्त्तण्ड) में 13 अक्तू., 2019 ई. को पृष्ठ 273 पर दिये कुम्भ लग्न वाले विवाहमुहूर्त की कुण्डली जाननी है?

इस लग्न (कुम्भ) का काल इस दिन (13 अक्तू., 2019 ई. को) चण्डीगढ़ में 15 घं. 12 मि. से 16 घं. 37 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये **" 11 अक्तू. 22 घं. 26 मि. से 14 अक्तू. 10 घं. 19 मि."** के मध्य पड़ता है, अत: यह मुहूर्त्त-कुण्डली (कुम्भ लग्न की) यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी—

इस प्रकार पाठक समझ गये होंगे—जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे—कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

5 अप्रैल से 12 मई, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

अवधि	ग्रह स्थिति (राशि अंक)
5 अप्रै. 14 घं. 21 मि. से 6 अप्रै. 7 घं. 21 मि.	2 मं.; 3 रा.; 9 के. गु. श.; 11 बु. शु.; 12 सू. चं.
6 अप्रै. 7 घं. 22 मि. से 8 अप्रै. 15 घं. 52 मि.	1 चं.; 2 मं.; 3 रा.; 9 के. गु. श.; 11 बु. शु.; 12 सू.
8 अप्रै. 15 घं. 53 मि. से 10 अप्रै. 22 घं. 31 मि.	2 मं. चं.; 3 रा.; 9 गु. के. श.; 11 बु. शु.; 12 सू.
10 अप्रै. 22 घं. 32 मि. से 12 अप्रै. 04 घं. 20 मि.	2 मं.; 3 चं. रा.; 9 के. गु. श.; 11 बु. शु.; 12 सू.
12 अप्रै. 4 घं. 21 मि. से 13 अप्रै. 3 घं. 13 मि.	2 मं.; 3 रा. चं.; 9 के. गु. श.; 11 शु.; 12 सू. बु.
13 अप्रै. 3 घं. 14 मि. से 14अप्रै. 14 घं. 8 मि.	2 मं.; 3 रा.; 4 चं.; 9 के. गु. श.; 11 शु.; 12 सू. बु.
14 अप्रै. 14 घं. 9 मि. से 15 अप्रै. 5 घं. 58 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 4 चं.; 9 के. गु. श.; 11 शु.; 12 बु.
15 अप्रै. 5 घं. 59 मि. से 16 अप्रै. 1 घं. 03 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 5 चं.; 9 के. श. गु.; 11 शु.; 12 बु.
16 अप्रै. 1 घं. 4 मि. से 17 अप्रै. 7 घं. 15 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 5 चं.; 9 के. श. गु.; 12 शु. बु.
17 अप्रै. 7 घं. 16 मि. से 19 अप्रै. 8 घं. 23 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 6 चं.; 9 के. गु. श.; 12 बु. शु.
19 अप्रै. 8 घं. 24 मि. से 21 अप्रै. 11 घं. 10 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 7 चं.; 9 के. गु. श.; 12 बु. शु.
21 अप्रै. 11 घं. 11 मि. से 23 अप्रै. 1 घं. 10 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 8 चं.; 9 के. गु. श.; 12 बु. शु.
23 अप्रै. 1 घं. 11 मि. से 23 अप्रै. 17 घं. 15 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 8 चं. गु.; 9 के. श.; 12 बु. शु.
23 अप्रै. 17 घं. 16 मि. से 26 अप्रै. 3 घं. 12 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. चं. श.; 12 बु. शु.
26 अप्रै. 3 घं. 13 मि. से 28 अप्रै. 15 घं. 44 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 10 चं.; 12 बु. शु.
28 अप्रै. 15 घं. 45 मि. से 1 मई 4 घं. 13 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 11 चं.; 12 शु. बु.
1 मई 4 घं. 14 मि. से 3 मई 14 घं. 38 मि.	1 सू.; 2 मं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 शु. चं. बु.
3 मई 14 घं. 39 मि. से 3 मई 16 घं. 58 मि.	1 सू. चं.; 2 मं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 बु. शु.
3 मई 16 घं. 59 मि. से 5 मई 22 घं. 28 मि.	1 सू. बु. चं.; 2 मं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 शु.
5 मई 22 घं. 29 मि. से 7 मई 6 घं. 53 मि.	1 सू. बु.; 2 मं. चं.; 3 रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 शु.
7 मई 6 घं. 54 मि. से 8 मई 4 घं. 14 मि.	1 सू. बु.; 2 चं.; 3 मं. रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 शु.
8 मई 4 घं. 15 मि. से 10 मई 8घं. 35 मि.	1 सू. बु.; 3 चं. मं. रा.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 शु.
10 मई 8 घं. 36 मि. से 10 मई 19 घं. 4 मि.	1 सू. बु.; 3 मं. रा.; 4 चं.; 8 गु.; 9 के. श.; 12 शु.
10 मई 19 घं. 5 मि. से 12 मई 11 घं. 53 मि.	1 सू. बु. शु.; 3 मं. रा.; 4 चं.; 8 गु.; 9 के. श.

12 मई से 22 जून, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

12 मई 11 घं. 54 मि. से 14 मई 14 घं. 27 मि.	14 मई 14 घं. 28 मि. से 15 मई 11 घं. 00 मि.	15 मई 11 घं. 1 मि. से 16 मई 16 घं. 56 मि.	16 मई 16 घं. 57 मि. से 18 मई 20 घं. 29 मि.	18 मई 20 घं. 30 मि. से 18 मई 23 घं. 32 मि.	18 मई 23 घं. 33 मि. से 21 मई 2 घं. 28 मि.
21 मई 2 घं. 29 मि. से 23 मई 11 घं. 43 मि.	23 मई 11 घं. 44 मि. से 25 मई 23 घं. 42 मि.	25 मई 23 घं. 43 मि. से 28 मई 12 घं. 17 मि.	28 मई 12 घं. 18 मि. से 30 मई 23 घं. 2 मि.	30 मई 23 घं. 3 मि. से 2 जून 0 घं. 18 मि.	2 जून 0 घं. 19 मि. से 2 जून 6 घं. 43 मि.
2 जून 6 घं. 44 मि. से 4 जून 11 घं. 19 मि.	4 जून 11 घं. 20 मि. से 4 जून 11 घं. 38 मि.	4 जून 11 घं. 39 मि. से 6 जून 14 घं. 49 मि.	6 जून 14 घं. 50 मि. से 8 जून 17 घं. 21 मि.	8 जून 17 घं. 22 मि. से 10 जून 19 घं. 59 मि.	10 जून 20 घं. 00 मि. से 12 जून 23 घं. 20 मि.
12 जून 23 घं. 21 मि. से 15 जून 4 घं. 00 मि.	15 जून 4 घं. 1 मि. से 15 जून 17 घं. 37 मि.	15 जून 17 घं. 38 मि. से 17 जून 10 घं. 41 मि.	17 जून 10 घं. 42 मि. से 19 जून 19 घं. 58 मि.	19 जून 19 घं. 59 मि. से 21 जून 2 घं. 29 मि.	21 जून 2घं. 30 मि. से 22 जून 7 घं. 38 मि.

22 जून से 3 अगस्त, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

22 जून 7 घं. 39 मि. से 22 जून 23 घं. 22 मि.	22 जून 23 घं. 23 मि. से 24 जून 20 घं. 18 मि.	24 जून 20 घं. 19 मि. से 27 जून 7 घं. 42 मि.	27 जून 7 घं. 43 मि. से 29 जून 1 घं. 32 मि.	29 जून 1 घं. 33 मि. से 29 जून 16 घं. 1 मि.	29 जून 16 घं. 2 मि. से 1 जुलाई 20 घं. 52 मि.
1 जुलाई 20 घं. 53 मि. से 3 जुलाई 23 घं. 8 मि.	3 जुलाई 23 घं. 9 मि. से 6 जुलाई 0 घं. 17 मि.	6 जुलाई 0 घं. 18 मि. से 8 जुलाई 1 घं. 45 मि.	8 जुलाई 1 घं. 46 मि. से 10 जुलाई 4 घं. 44 मि.	10 जुलाई 4 घं. 45 मि. से 12 जुलाई 9 घं. 52 मि.	12 जुलाई 9 घं. 53 मि. से 14 जुलाई 17 घं. 24 मि.
14 जुलाई 17 घं. 25 मि. से 17 जुलाई 3 घं. 13 मि.	17 जुलाई 3 घं. 14 मि. से 17 जुलाई 4 घं. 32 मि.	17 जुलाई 4 घं. 33 मि. से 19 जुलाई 14 घं. 57 मि.	19 जुलाई 14 घं. 58 मि. से 22 जुलाई 3 घं. 38 मि.	22 जुलाई 3 घं. 39 मि. से 23 जुलाई 12 घं. 48 मि.	23 जुलाई 12 घं. 49 मि. से 24 जुलाई 15 घं. 40 मि.
24 जुलाई 15 घं. 41 मि. से 27 जुलाई 1 घं. 8 मि.	27 जुलाई 1 घं. 9 मि. से 29 जुलाई 6 घं. 54 मि.	29 जुलाई 6 घं. 55 मि. से 30 जुलाई 13 घं. 28 मि.	30 जुलाई 13 घं. 29 मि. से 31 जुलाई 9 घं. 13 मि.	31 जुलाई 9 घं. 14 मि. से 2 अगस्त 9 घं. 28 मि.	2 अगस्त 9 घं. 29 मि. से 3 अगस्त 5 घं. 51 मि.

3 अगस्त से 12 सितम्बर, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

3 अगस्त 5 घं. 52 मि. से 4 अगस्त 9 घं. 27 मि.

2 12 रा.3 11 शु. 1 बु. 4 सू. 10 मं. 7 के. चं.5 9 श. 6 8 गु.

4 अगस्त 9 घं. 28 मि. से 6 अगस्त 10 घं. 59 मि.

2 12 रा.3 11 बु. 1 शु. 4 सू. 10 मं. 7 के. 5 9 श. 6 चं. 8 गु.

6 अगस्त 11 घं. 00 मि. से 8 अगस्त 15 घं. 24 मि.

2 12 रा.3 11 सू. 1 शु. 4 बु. 10 मं. 7 चं. के. 5 9 श. 6 8 गु.

8 अगस्त 15 घं. 25 मि. से 9 अगस्त 4 घं. 45 मि.

2 12 रा.3 11 सू. 1 शु. 4 बु. 10 मं. 7 के. 5 9 श. 6 चं. 8 गु.

9 अगस्त 4 घं. 46 मि. से 10 अगस्त 23 घं. 4 मि.

2 12 रा.3 11 1 बु. 4 शु. 10 सू. 7 के. मं. 5 9 श. 6 चं. 8 गु.

10 अगस्त 23 घं. 5 मि. से 13 अगस्त 9 घं. 25 मि.

2 12 रा.3 11 1 बु. 4 शु. 10 सू. 7 के. मं. 5 9 श. चं. 6 8 गु.

13 अगस्त 9 घं. 26 मि. से 15 अगस्त 21 घं. 26 मि.

2 12 रा.3 11 1 सू. 4 शु. 10 बु. चं. 7 के. मं.5 9 श. 6 8 गु.

15 अगस्त 21 घं. 27 मि. से 16 अगस्त 20 घं. 38 मि.

2 12 चं. रा.3 11 1 शु. 4 सू. 10 बु. 7 के. मं.5 9 श. 6 8 गु.

16 अगस्त 20 घं. 39 मि. से 17 अगस्त 13 घं. 1 मि.

2 12 रा.3 11 चं. 1 सू. 4 बु. 10 शु. मं. 5 7 के. 9 श. 6 8 गु.

17 अगस्त 13 घं. 2 मि. से 18 अगस्त 10 घं. 9 मि.

2 12 रा.3 11 चं. 1 4 बु. 10 सू. शु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

18 अगस्त 10 घं. 10 मि. से 20 अगस्त 22 घं. 27 मि.

2 12 चं. रा.3 11 1 4 बु. 10 सू. शु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

20 अगस्त 22 घं. 28 मि. से 23 अगस्त 8 घं. 56 मि.

2 चं. 12 रा.3 11 1 4 बु. 10 सू. मं.5 शु. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

23 अगस्त 8 घं. 57 मि. से 25 अगस्त 16 घं. 11 मि.

चं. 2 12 रा.3 11 1 4 बु. 10 सू. शु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

25 अगस्त 16 घं. 12 मि. से 26 अगस्त 14 घं. 5 मि.

रा. चं. 3 2 12 11 1 4 बु. 10 सू. शु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

26 अगस्त 14 घं. 6 मि. से 27 अगस्त 19 घं. 41 मि.

रा. चं. 3 2 12 11 1 4 10 सू. शु. मं. 5 बु. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

27 अगस्त 19 घं. 42 मि. से 29 अगस्त 20 घं. 9 मि.

रा.3 2 12 11 1 4 चं. 10 शु. सू. मं. 5 बु. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

29 अगस्त 20 घं. 10 मि. से 31 अगस्त 19 घं. 21 मि.

रा.3 2 12 11 1 4 10 सू. बु. मं. 5 शु. चं. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

31 अगस्त 19 घं. 22 मि. से 2 सितम्बर 19 घं. 23 मि.

रा.3 2 12 11 1 4 10 शु. सू. बु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 चं. 8 गु.

2 सितम्बर 19 घं. 24 मि. से 4 सितम्बर 22 घं. 13 मि.

2 12 रा.3 11 1 4 10 शु. बु. सू. 5 मं. 7 चं. के. 9 श. 6 8 गु.

4 सितम्बर 22 घं. 14 मि. से 7 सितम्बर 4 घं. 56 मि.

2 12 रा.3 11 1 4 10 शु. सू. बु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 चं. 8 गु.

7 सितम्बर 4 घं. 57 मि. से 9 सितम्बर 15 घं. 11 मि.

2 12 रा.3 11 1 4 10 सू. बु. शु. 5 मं. 7 के. 9 श. चं. 6 8 गु.

9 सितम्बर 15 घं. 12 मि. से 10 सितम्बर 1 घं. 40 मि.

2 12 रा.3 11 1 4 10 चं. सू. शु. बु. 5 मं. 7 के. 9 श. 6 8 गु.

10 सितम्बर 1 घं. 41 मि. से 11 सितम्बर 4 घं. 57 मि.

2 12 रा.3 11 1 4 10 चं. सू. मं. 5 बु. 7 के. 9 श. 6 शु. 8 गु.

11 सितम्बर 4 घं. 58 मि. से 12 सितम्बर 3 घं. 27 मि.

2 12 रा.3 11 1 4 10 चं. सू. मं. 5 7 के. 9 श. बु. 6 शु. 8 गु.

12 सितम्बर से 23 अक्तूबर, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

अवधि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
12 सितम्बर 3घं. 28 मि. से 14 सितम्बर 16 घं. 10 मि.			रा.		सू. मं.	बु. शु.		गु.	के. श.		चं.	
14 सितम्बर 16 घं. 11 मि. से 17 सितम्बर 4 घं. 20 मि.			रा.		सू. मं.	बु. शु.		गु.	के. श.			चं.
17 सितम्बर 4 घं. 21 मि. से 17 सितम्बर 13 घं. 1 मि.	चं.		रा.		सू. मं.	शु. बु.		गु.	के. श.			
17 सितम्बर 13 घं. 2 मि. से 19 सितम्बर 15 घं. 10 मि.	चं.		रा.		मं.	शु. सू. बु.		गु.	के. श.			
19 सितम्बर 15 घं. 11 मि. से 21 सितम्बर 23 घं. 37 मि.		चं.	रा.		मं.	सू. बु. शु.		गु.	के. श.			
21 सितम्बर 23 घं. 38 मि. से 24 सितम्बर 4 घं. 48 मि.			रा. चं.		मं.	शु. सू. बु.		गु.	के. श.			
24 सितम्बर 4 घं. 49 मि. से 25 सितम्बर 6 घं. 30 मि.			रा.	चं.	मं.	शु. सू. बु.		गु.	के. श.			
25 सितम्बर 6 घं. 31 मि. से 26 सितम्बर 6 घं. 39 मि.			रा.	चं.		शु. बु. सू. मं.		गु.	के. श.			
26 सितम्बर 6 घं. 40 मि. से 28 सितम्बर 6 घं. 18 मि.			रा.		चं.	शु. सू. बु. मं.		गु.	के. श.			
28 सितम्बर 6 घं. 19 मि. से 29 सितम्बर 12 घं. 55 मि.			रा.			शु. चं. सू. मं. बु.		गु.	के. श.			
29 सितम्बर 12 घं. 56 मि. से 30 सितम्बर 5 घं. 43 मि.			रा.			शु. सू. चं. मं.	बु.	गु.	के. श.			
30 सितम्बर 5घं. 44 मि. से 2 अक्तूबर 7 घं. 9 मि.			रा.			सू. मं. शु.	चं. बु.	गु.	के. श.			
2 अक्तूबर 7 घं. 10 मि. से 4 अक्तूबर 5 घं. 13 मि.			रा.			सू. शु. मं.	बु.	चं. गु.	के. श.			
4 अक्तूबर 5 घं. 14 मि. से 4 अक्तूबर 12 घं. 18 मि.			रा.			सू. मं.	शु. बु.	चं. गु.	के. श.			
4 अक्तूबर 12 घं. 19 मि. से 6 अक्तूबर 21 घं. 34 मि.			रा.			सू. मं.	शु. बु.	गु.	के. श. चं.			
6 अक्तूबर 21 घं. 35 मि. से 9 अक्तूबर 9 घं. 40 मि.			रा.			सू. मं.	बु. शु.	गु.	के. श.	चं.		
9 अक्तूबर 9 घं. 41 मि. से 11 अक्तूबर 22 घं. 25 मि.			रा.			मं. सू.	बु. शु.	गु.	के. श.		चं.	
11 अक्तूबर 22 घं. 26 मि. से 14 अक्तूबर 10 घं. 19 मि.			रा.			सू. मं.	बु. शु.	गु.	के. श.			चं.
14 अक्तूबर 10 घं. 20 मि. से 16 अक्तूबर 20 घं. 44 मि.	चं.		रा.			सू. मं.	बु. शु.	गु.	के. श.			
16 अक्तूबर 20 घं. 45 मि. से 18 अक्तूबर 01 घं. 01 मि.		चं.	रा.			मं. सू.	बु. शु.	गु.	के. श.			
18 अक्तूबर 1 घं. 2 मि. से 19 अक्तूबर 5 घं. 22 मि.		चं.	रा.			मं.	सू. बु. शु.	गु.	के. श.			
19 अक्तूबर 5 घं. 23 मि. से 21 अक्तूबर 11 घं. 39 मि.			रा. चं.			मं.	सू. बु. शु.	गु.	के. श.			
21 अक्तूबर 11 घं. 40 मि. से 23 अक्तूबर 15 घं. 11 मि.			रा.	चं.		मं.	सू. शु. बु.	गु.	के. श.			
23 अक्तूबर 15 घं. 12 मि. से 23 अक्तूबर 23 घं. 21 मि.			रा.		चं.	मं.	सू. बु. शु.	गु.	के. श.			

23 अक्तूबर से 3 दिसम्बर, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

अवधि	ग्रह स्थिति (राशि संख्या)
23 अक्तूबर 23घं. 22 मि. से 25 अक्तूबर 16 घं. 21 मि.	रा.3, चं.5, शु. सू. 7, 6 मं., बु. 8 गु., के. 9 श.
25 अक्तूबर 16 घं. 22 मि. से 27 अक्तूबर 16 घं. 30 मि.	रा.3, सू. 7 शु., चं. 6 मं., बु. 8 गु., के. 9 श.
27 अक्तूबर 16 घं. 31 मि. से 28 अक्तूबर 8 घं. 30 मि.	रा.3, शु. 7 चं. सू., मं.6, बु. 8 गु., के. 9 श.
28 अक्तूबर 8 घं. 31 मि. से 29 अक्तूबर 17 घं. 34 मि.	रा.3, सू. 7 चं., 6 मं., बु. श. गु. 8, के. 9 श.
29 अक्तूबर 17 घं. 35 मि. से 31 अक्तूबर 21 घं. 30 मि.	रा.3, 7 सू., 6 मं., शु. बु. चं. गु. 8, के. 9 श.
31 अक्तूबर 21 घं. 31 मि. से 3 नवम्बर 5 घं. 24 मि.	रा.3, 7 सू., 6 मं., बु. शु. गु. 8, के. 9 श. चं.
3 नवम्बर 5 घं. 25 मि. से 5 नवम्बर 5 घं. 18 मि.	रा.3, 10 चं., 7 सू., 6 मं., बु. शु. गु. 8, के. 9 श.
5 नवम्बर 5 घं. 19 मि. से 5 नवम्बर 16 घं. 45 मि.	रा.3, 10 चं., 7 सू., 6 मं., बु. 8 शु., के. 9 श. गु.
5 नवम्बर 16 घं. 46 मि. से 7 नवम्बर 15 घं. 32 मि.	रा.3, 11 चं., 7 सू., मं.6, बु. 8 शु., के. 9 श. गु.
7 नवम्बर 15 घं. 33 मि. से 8 नवम्बर 5 घं. 27 मि.	रा.3, 11 चं., सू. 7 बु., 6 मं., 8 शु., के. 9 श. गु.
8 नवम्बर 5घं. 28 मि. से 10 नवम्बर 14 घं. 21 मि.	रा.3, 12 चं., सू. 7 बु., 6 मं., 8 शु., के. 9 श. गु.
10 नवम्बर 14 घं. 22 मि. से 10 नवम्बर 17 घं. 17 मि.	रा.3, 12 चं., सू. 7 बु. मं., 8 शु., के. 9 श. गु.
10 नवम्बर 17 घं. 18 मि. से 13 नवम्बर 3 घं. 09 मि.	रा.3, 2 चं., सू. 7 बु. मं., 8 शु., के. 9 श. गु.
13 नवम्बर 3 घं. 10 मि. से 15 नवम्बर 11 घं. 1 मि.	रा.3, चं. 2, सू. 7 मं. बु., 8 शु., के. 9 श. गु.
15 नवम्बर 11 घं. 2 मि. से 17 नवम्बर 0 घं. 49 मि.	चं. रा. 3, सू. 7 मं. बु., 8 शु., के. 9 श. गु.
17 नवम्बर 0 घं. 50 मि. से 17 नवम्बर 17 घं. 3 मि.	रा. चं. 3, मं. 7 बु., सू. 8 शु., के. 9 श. गु.
17 नवम्बर 17 घं. 4 मि. से 19 नवम्बर 21 घं. 21 मि.	रा.3, 4 चं., मं. 7 बु., शु. 8 सू., के. 9 श. गु.
19 नवम्बर 21 घं. 22 मि. से 21 नवम्बर 12 घं. 21 मि.	रा.3, चं.5, मं. 7 बु., शु. 8 सू., के. 9 श. गु.
21 नवम्बर 12 घं. 22 मि. से 22 नवम्बर 0 घं. 02 मि.	रा.3, चं.5, मं. 7 बु., 8 सू., के. 9 शु. गु. श.
22 नवम्बर 0 घं. 3 मि. से 24 नवम्बर 1 घं. 44 मि.	रा.3, चं. 6, बु. 7 मं., 8 सू., श. के. 9 शु. गु.
24 नवम्बर 1 घं. 45 मि. से 26 नवम्बर 3 घं. 43 मि.	रा.3, चं. 7 मं. बु., 8 सू., के. 9 श. गु. शु.
26 नवम्बर 3 घं. 44 मि. से 28 नवम्बर 7 घं. 32 मि.	रा.3, मं. 7 बु., चं. 8 सू., के. 9 श. गु. शु.
28 नवम्बर 7 घं. 33 मि. से 30 नवम्बर 14 घं. 31 मि.	रा.3, मं. 7 बु., 8 सू., चं. के. गु. श. शु. 9
30 नवम्बर 14 घं. 32 मि. से 3 दिसम्बर 0 घं. 55 मि.	रा.3, 10 चं., 7 बु. मं., 8 सू., के. 9 गु. श. शु.

3 दिसम्बर से 13 जनवरी, सन् 2019-20 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

अवधि	ग्रह स्थिति (भाव संख्या : ग्रह)
3 दिसम्बर 0 घं. 56 मि. से 5 दिसम्बर 10 घं. 30 मि.	3 रा., 11 चं., 7 मं. बु., 8 सू., 9 के. शु. गु. श.
5 दिसम्बर 10 घं. 31 मि. से 5 दिसम्बर 13 घं. 21 मि.	3 रा., 11 चं., 7 मं., 8 बु. सू., 9 के. शु. गु. श.
5 दिसम्बर 13 घं. 22 मि. से 8 दिसम्बर 1 घं. 26 मि.	3 रा., 12 चं., 7 मं., 8 बु. सू., 9 के. शु. गु. श.
8 दिसम्बर 1 घं. 27 मि. से 10 दिसम्बर 11 घं. 16 मि.	3 रा., 1 चं., 7 मं., 8 सू. बु., 9 के. शु. गु. श.
10 दिसम्बर 11 घं. 17 मि. से 12 दिसम्बर 18 घं. 22 मि.	3 रा., 2 चं., 7 मं., 8 सू. बु., 9 के. शु. गु. श.
12 दिसम्बर 18 घं. 23 मि. से 14 दिसम्बर 23 घं. 15 मि.	3 रा. चं., 7 मं., 8 सू. बु., 9 के. शु. गु. श.
14 दिसम्बर 23 घं. 16 मि. से 15 दिसम्बर 17 घं. 57 मि.	3 रा., 4 चं., 7 मं., 8 सू. बु., 9 के. शु. गु. श.
15 दिसम्बर 17 घं. 58 मि. से 16 दिसम्बर 15 घं. 26 मि.	3 रा., 4 चं., 10 शु., 7 मं., 8 सू. बु., 9 के. गु. श.
16 दिसम्बर 15 घं. 27 मि. से 17 दिसम्बर 2 घं. 46 मि.	3 रा., 4 चं., 10 शु., 7 मं., 8 बु., 9 के. सू. गु. श.
17 दिसम्बर 2 घं. 47 मि. से 19 दिसम्बर 5 घं. 37 मि.	3 रा., 5 चं., 10 शु., 7 मं., 8 बु., 9 के. सू. गु. श.
19 दिसम्बर 5 घं. 38 मि. से 21 दिसम्बर 8 घं. 26 मि.	3 रा., 6 चं., 10 शु., 7 मं., 8 बु., 9 के. सू. गु. श.
21 दिसम्बर 8 घं. 27 मि. से 23 दिसम्बर 11 घं. 51 मि.	3 रा., 7 मं. चं., 10 शु., 8 बु., 9 के. सू. गु. श.
23 दिसम्बर 11 घं. 52 मि. से 25 दिसम्बर 15 घं. 44 मि.	3 रा., 10 शु., 7 मं., 8 चं. बु., 9 के. सू. गु. श.
25 दिसम्बर 15 घं. 45 मि. से 25 दिसम्बर 16 घं. 40 मि.	3 रा., 10 शु., 7 मं., 8 चं., 9 के. सू. बु. गु. श.
25 दिसम्बर 16 घं. 41 मि. से 25 दिसम्बर 21 घं. 27 मि.	3 रा., 10 शु., 7 मं., 8, 9 के. सू. बु. गु. चं. श.
25 दिसम्बर 21 घं. 28 मि. से 27 दिसम्बर 23 घं. 44 मि.	3 रा., 10 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. चं. श.
27 दिसम्बर 23 घं. 45 मि. से 30 दिसम्बर 9 घं. 33 मि.	3 रा., 10 चं. शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.
30 दिसम्बर 9 घं. 34 मि. से 1 जनवरी 21 घं. 37 मि.	3 रा., 11 चं., 10 शु., 8 मं., 9 के. बु. सू. गु. श.
1 जनवरी 21 घं. 38 मि. से 4 जनवरी 10 घं. 4 मि.	3 रा., 12 चं., 10 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.
4 जनवरी 10 घं. 5 मि. से 6 जनवरी 20 घं. 35 मि.	3 रा., 1 चं., 10 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.
6 जनवरी 20 घं. 36 मि. से 9 जनवरी 3 घं. 48 मि.	3 रा., 2 चं., 10 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.
9 जनवरी 3 घं. 49 मि. से 9 जनवरी 4 घं. 21 मि.	3 चं. रा., 10 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.
9 जनवरी 4 घं. 22 मि. से 11 जनवरी 7 घं. 51 मि.	3 रा. चं., 11 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.
11 जनवरी 7 घं. 52 मि. से 13 जनवरी 9 घं. 54 मि.	3 रा., 4 चं., 11 शु., 8 मं., 9 के. सू. बु. गु. श.

13 जनवरी से 20 फरवरी, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

20 फरवरी से 25 मार्च, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

अवधि	ग्रह स्थिति
20 फरवरी 13 घं. 52 मि. से 23 फरवरी 0 घं. 27 मि.	रा. 3, शु. 12, सू. बु. 11, चं. श. 10, के. गु. मं. 9
23 फरवरी 0 घं. 28 मि. से 25 फरवरी 12 घं. 25 मि.	रा. 3, शु. 12, सू. बु. चं. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
25 फरवरी 12 घं. 26 मि. से 28 फरवरी 1 घं. 7 मि.	रा. 3, चं. शु. 12, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
28 फरवरी 1 घं. 8 मि. से 29 फरवरी 1 घं. 31 मि.	रा. 3, चं. 1, शु. 12, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
29 फरवरी 1 घं. 32 मि. से 1 मार्च 13 घं. 17 मि.	रा. 3, शु. चं. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
1 मार्च 13 घं. 18 मि. से 3 मार्च 23 घं. 2 मि.	चं. 2, रा. 3, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
3 मार्च 23 घं. 3 मि. से 6 मार्च 4 घं. 53 मि.	रा. चं. 3, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
6 मार्च 4 घं. 54 मि. से 8 मार्च 6 घं. 51 मि.	रा. 3, चं. 4, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
8 मार्च 6 घं. 52 मि. से 10 मार्च 6 घं. 20 मि.	रा. 3, चं. 5, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
10 मार्च 6 घं. 21 मि. से 12 मार्च 5 घं. 33 मि.	रा. 3, चं. 6, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
12 मार्च 5 घं. 34 मि. से 14 मार्च 6 घं. 40 मि.	रा. 3, चं. 7, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
14 मार्च 6 घं. 41 मि. से 14 मार्च 11 घं. 52 मि.	रा. 3, चं. 8, शु. 1, सू. बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
14 मार्च 11 घं. 53 मि. से 16 मार्च 11 घं. 11 मि.	रा. 3, शु. 1, सू. 12, बु. 11, श. 10, के. गु. मं. 9, चं. 8
16 मार्च 11 घं. 12 मि. से 18 मार्च 19 घं. 23 मि.	रा. 3, शु. 1, सू. 12, बु. 11, श. 10, के. गु. मं. चं. 9
18 मार्च 19 घं. 24 मि. से 21 मार्च 6 घं. 19 मि.	रा. 3, शु. 1, सू. 12, बु. 11, श. चं. 10, के. गु. मं. 9
21 मार्च 6 घं. 20 मि. से 22 मार्च 14 घं. 39 मि.	रा. 3, शु. 1, सू. 12, बु. चं. 11, श. 10, के. गु. मं. 9
22 मार्च 14 घं. 40 मि. से 23 मार्च 1१ घं. 35 मि.	रा. 3, शु. 1, सू. चं. 12, बु. 11, श. मं. 10, के. गु. 9
23 मार्च 18 घं. 36 मि. से 25 मार्च 6 घं. 24 मि.	रा. 3, शु. 1, सू. चं. 12, बु. 11, श. मं. 10, के. गु. 9

(अंतिम पंक्ति में छः रिक्त कुंडलियाँ — 1 से 12 तक भाव संख्याएँ)

शनि की साढेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पादविचार और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2076 वि.)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। **यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ; कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढेसाती किसे कहते हैं? समझ लें—शनि की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक 'साढेसाती' के प्रभाव में रहता है, अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है—

"द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्॥"

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इस प्रकार लिखा है—

"राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्॥"

"शनि की ढैय्या" किसे कहते हैं? यह भी जान लें—गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्म राशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हों तो उस व्यक्तिविशेष पर 'शनि की ढैय्या' चल रही है, ऐसा जानें। ढैय्या का फल इस प्रकार है—

"ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध-विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥"

ध्यान दें—शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु-शुक्र स्थितिविशेष-विचार से शुभ एवं शनि-मंगल अशुभ फलप्रद माने गये हैं—

"तेषामतीव शुभदौ गुरु-दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत-क्षितिभौ भवेताम्॥"
—(फलितमार्त्तण्ड)

शनि के लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे 'मन्द' किंवा **'शनैश्चरति इति शनिः'** की संज्ञा दी गयी है। लेकिन शनिग्रह की वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपने अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी-कभी शनि अपनी वक्र-मार्ग गति एवं शनि के अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं तत्तदराशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देता है।

अनेकदा शनि-मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि-सम्बन्ध बना ले तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु-रक्त-पित्त-विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देश-विशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/ सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है—"क्रूराः वक्राः महाक्रूराः"।

शनि-पादविचार

"जन्मांग-रुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रि-सप्त-दिक् ताम्रपादं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम्॥"

पादफल-विचार—

"लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥"

शनि के राशि परिवर्तन के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11 स्थान में हो तो स्वर्णपाद; 2, 5, 9 स्थान में हो तो रजतपाद; 3, 7, 10 स्थान में चन्द्र हो तो ताम्रपाद। यदि शनि के राशि परिवर्तन के समय चन्द्र 4, 8, 12 में हो तो लौहपाद होता है। स्वर्णपाद सभी प्रकार के दुःखों को देने वाला, रजतपाद सुख-सौभाग्यप्रद, ताम्रपाद मध्यम फलद एवं लौहपाद धन-धान्य का नाशक होता है।

धनुः राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

26 अक्तूबर, सन् 2017 ई. को पू.षा. नक्षत्र एवं धनुःस्थ चन्द्र के समय 15 घं. 29 मि. पर शनिदेव पुनः धनु राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2076 वि. में 24 जनवरी, सन् 2020 ई. तक धनु राशि में ही रहेंगे।

धनुः राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल
(26 अक्तूबर, सन् 2017 ई. से 24 जनवरी, सन् 2020 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	ढैय्या	लौह	—	—	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री—परिवार-कष्ट, पशु—पुत्रपीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय।
कन्या	ढैय्या	लौह	—	—	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री—परिवार-कष्ट, पुत्रकष्ट, पशुहानि, राजपक्ष से भय, कारोबार में हानि।
वृश्चिक	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, प्रभावक्षेत्र बढ़े, धन-धान्य-समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, घर में शुभ-मांगलिक कार्य हों, राजपक्ष से सम्मान।
धनु	साढेसाती	सुवर्ण	हृदय	—	शत्रु प्रबल, निजीजन-विरोध, रोगकष्ट, गृहक्लेश, वृथाव्यय, धनहानि से चिन्ता।
मकर	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तपित्त-विकार, स्त्री—परिवारकष्ट, पशु-पुत्रपीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय।

नोट—यहां दिये गये कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल धनु एवं मकर राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है, यह समझ लें।

24 जनवरी, सन् 2020 ई. को उ.षा. नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय 9 घं. 52 मि. पर शनिदेव मकर राशि में प्रविष्ट होंगे, सं. 2076 वि. के अन्त किंवा आगे तक शनिदेव मकर राशि में ही रहेंगे।

मकरराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल
(24 जनवरी, सन् 2020 ई. से संवत् 2076 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	ढैय्या	लौहपाद	—	—	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री कष्ट, पुत्र किंवा पशुपीड़ा, व्यापार में हानि एवं आर्थिक संकट का सामना करना पड़े।
तुला	ढैय्या	लौहपाद	—	—	शरीर कष्ट, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र कष्ट, व्यापार में हानि, आर्थिक संकट एवं पशुपीड़ा हो।
धनु	साढेसाती	रजतपाद	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धन-धान्य समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभाव क्षेत्र बढ़े। घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान।
मकर	साढेसाती	सुवर्णपाद	हृदय	—	शत्रु प्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।
कुम्भ	साढेसाती	लौहपाद	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतया अशुभ फल कब होगा—

मेष राशि वालों के बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढाई वर्ष, मिथुन को अन्त के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवानादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा-दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीज मन्त्र—"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।"

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले **"अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर-नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि-मन्त्रजापमहं करोमि"**—इस प्रकार संकल्प करके शनि-मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि-मन्त्रजाप, स्तोत्र पाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधि—अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्त-समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर, पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लाल चन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर **"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"**—इस मन्त्र का कुल 23 हज़ार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नमः॥"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जायें। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' या 'नीलम' नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

'नीलम' रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष निवारण के लिए अनेक व्यक्ति 'नीलम' धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध 'नीलम' रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले-बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अतः सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में **'बिच्छू बूटी'**की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अतः इसका नाम बिच्छू बूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रातः (यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू बूटी की जड़ उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमन्त्रण दे आयें। इस जड़ के टुकड़े को चांदी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। शं शनये नमः ॐ॥"

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमन्दिर या घर में भी बैठकर प्रातः करने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल परिहारार्थ तुलादान करायें—

विधि—शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर या **शनैश्चरी अमावस** शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (मांह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तौल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके दान कर दें।

नोट—तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

सं. 2076 वि. में गुरु ग्रह का गोचर फल

गुरु का धनु राशि में प्रवेश

सं. 2075 वि. में चैत्र कृष्ण नवमी शुक्रवार, तदनुसार 29 मार्च, सन् 2019 ई. को उ.षा. नक्षत्र, शिवयोग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव 20 घं. 15 मि. (I.S.T.) पर धनु राशि में दाखिल होकर 22 अप्रैल तक धनु राशि में ही रहेंगे।

धनुः राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(29 मार्च, सन् 2019 ई. से 22 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	शत्रुभय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि

वृश्चिक राशि में गुरु का प्रवेश

सं. 2076 वि. में वैशाख कृष्णपक्ष तृतीया (तत्कालिकी चतुर्थी), तदनुसार 22/23 अप्रैल, सन् 2019 ई. को ज्येष्ठ नक्षत्र, वरियान योग एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव **वक्र स्थिति** में 1 घं. 6 मि. पर वृश्चिक राशि में प्रवेश करके 5 नवं., सन् 2019 ई. तक वृश्चिक राशि में ही रहेंगे।

वृश्चिक राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(23 अप्रैल, 2019 ई. से 5 नवं., सन् 2019 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ

धनु राशि में गुरु का पुनः प्रवेश

सं. 2076 वि. में कार्तिक शुक्ल अष्टमी (तत्कालिकी नवमी) तदनुसार 5 नवम्बर, सन् 2019 ई. को धनिष्ठा नक्षत्र, गण्ड योग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय 5 घं. 17 मि. (I.S.T.) पर गुरुदेव पुनः धनु राशि में प्रविष्ट होंगे। संवत् 2076 वि. के अन्त तक गुरुदेव धनु राशि में ही रहेंगे।

धनुःराशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(5 नवं., 2019 ई. से संवत् 2076 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	शत्रुभय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग में या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो—गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हज़ार जाप करें। **गुरु का जपनीय बीज मन्त्र यह है—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।"** केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला 'पुखराज' 5/7 रत्ती पुरुष दायें हाथ की एवं स्त्रियां बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

संवत् 2076 वि. में गोचरस्थ राहु का शुभाशुभ फल

राहु का मिथुन राशि में प्रवेश

सं. 2075 वि. में फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार, तदनुसार 7 मार्च, सन् 2019 ई. को 9 घं. 36 मि. पर पू.भा. नक्षत्र, साध्य योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय राहु मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा और यह सं. 2076 वि. के अन्त तक मिथुन में ही रहेगा।

मिथुन राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(7 मार्च, सन् 2019 ई. से सं. 2076 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान

राहु जन्मांग या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो—कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवं काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के **बीजमन्त्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः)** का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ **'गोमेद'** नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2076 वि.)

(ग्रह-परिषद् एवं गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं अन्य देशों की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

★ सं. 2076 वि. का राजा 'शनि' एवं मन्त्री 'सूर्य' होने से राजनीतिज्ञों में परस्पर विरोध बढ़ेगा, राजनीतिक पार्टियों में एकरूपता न होने से इस वर्ष आश्चर्यजनक उलटफेर होंगे।

★ इस 'परिधावी' नामक संवत्सर में राजनीतिज्ञों का शक्तिपरीक्षण होगा एवं सीमाप्रान्तों पर भयंकर अशान्ति का साम्राज्य होगा।

★ नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली में गुरु-शुक्र, शनि-मंगल आदि का समसप्तक एवं षडष्टक देश में उग्रवाद से भारी जनधनहानि करे, कश्मीर, छत्तीसगढ़ एवं अन्य सीमाओं पर भारी हानि हो, सेना का सहारा लेना पड़ेगा।

★ 6 मई से लगभग 21 जून तक एवं आगे 16 अग., 2019 ई. तक और आगे 22 मार्च, सन् 2020 ई. के लगभग से आगे देश में प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग हैं।

★ सं. 2076 एवं सं. 2077 के पूर्वार्ध में चीन-पाक-अमेरिका-रूस-कोरिया आदि द्वारा अशान्ति से विश्वशान्ति को खतरा पैदा हो सकता है।

★ शनि-मंगल की स्थिति से महानगरों में प्रदूषण, पेयजल की समस्या, भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफान आदि से हानि के योग बनते हैं।

★ संवत् के प्रारम्भ में ही निर्वाचनों में भाजपा को परास्त करने पर विपक्ष का एकजुट होना सिद्धान्त-भेद से सम्भव नहीं। परिणामस्वरूप, देशहित में ही पार्टी सत्ता में आयेगी।

★ यह संवत् राजनैतिक दृष्टि से संघर्षपूर्ण एवं अघटित घटनाओं वाला रहे।

★ गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार प्रधान नेताओं की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना आवश्यक है।

"विमृश्य ग्रह-संस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः।
राष्ट्रे राज-समाज-धर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥"

"मनुष्य जीवन अनन्त आकाशव्यापी सौरजगत् की एक क्षुद्र प्रतिकृति है"—यह तथ्य भारतीय ही नहीं, पाश्चात्य विद्वान् भी स्वीकार करते हैं। मानव-जीवन एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सौर जगत् के साथ एकत्व-सम्बन्ध होने से सौर जगत् के आकर्षण-विकर्षण, सिद्धान्त के अनुसार समय-समय पर मानव-जीवन एवं विश्वजनीन परिवर्तन स्वाभाविक एवं युक्तियुक्त हैं। ग्रहों की 'आकर्षण-विकर्षण' रूपी दो अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रकृति एवं जन-जीवन की मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन से सम्पूर्ण विश्व का घटनाचक्र चलता ही रहता है। इस खोज में ऋषियों ने अथाह चिन्तन एवं सम्पूर्ण जीवन लगाकर ग्रहों एवं प्रकृति का गहन अध्ययन करके 'ज्योतिष शास्त्र' का आविष्कार किया, जोकि आज भी अनुसन्धान का विषय है।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये तो विराट् ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे"—यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक

निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृत् धर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही 'ज्योतिष' है।

यह वेदांगरूप ज्योतिष गुरु-शिष्यपरम्परा आज तक जीवित है। इसका प्रमाण वेदांग 'निरुक्त' में स्पष्ट है—

"साक्षात्कृतधर्माणो वै ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रददुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं वेदांगानि च॥"

—(यास्काचार्य)

प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति-स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं और यह इस प्रकाशन का 92वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2076 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 91 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 92वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्रीजवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की विशेष अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता, शुद्धि एवं अन्य विशेष ज्योतिषीय शोध-निबन्धों के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

पाठको! 14 जून, 2016 ई. से पहले लिखी गयी भविष्यवाणियों की चर्चा हम गत वर्षों के पंचांगों में कर चुके हैं। अब उसके बाद सत्यसिद्ध भविष्यवाणियों की चर्चा हम आगामी संवत् 2076 वि. के पंचांग में कर देना युक्तिसंगत समझते हैं—

भविष्यवाणी-7 दिसम्बर, सन् 2016 ई. को श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2073 वि. में की गयी भविष्यवाणी पृ. 45, कॉलम 2 पर इन शब्दों में की गयी थी—

"1 नवम्बर से लगभग 11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि विश्व में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद किंवा हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर ध्यान दें—

19 नवम्बर सन् 2016 के **'अमर उजाला'** के मुख्य पृष्ठ पर स्पष्ट लिखा था कि—**"(भारतीय) सेना पर सबसे बड़ा आतंकी हमला, 17 जवान शहीद, (उड़ी) जम्मू-काश्मीर में सैन्य मुख्यालय पर हमला।"**

भविष्यवाणी—सं. 2074 वि. की जगत् लग्नकुण्डली में—

जलराशि के स्वामी **चन्द्र का सूर्य के साथ समसप्तक 'जलशोषक'** योग बनाता है, मंगल की शनि पर अष्टम दृष्टि भी कहीं अकाल का संकेत देती है। अतः शासन को देश में **'जल-सुविधा'** की तरफ विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं जल-वितरणसमस्या आपसी कलह का कारण बनने का योग है।

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 52, कॉलम 1)

सत्यता—कावेरी जल से भड़की आग तामिलनाडु और कर्णाटक में उग्र हिंसा (13 सितम्बर, सन् 2016 ई.)-(अमर उजाला)

भविष्यवाणी—11 दिसम्बर, 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी विश्व में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद-हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 45, कॉलम 2)

सत्यता—11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. को नाइजीरिया में गिरजाघर की छत गिर गयी, 160 व्यक्ति मरे।

भविष्यवाणी—"श्री नरेन्द्र मोदी (P.M.) महोदय की नीति विदेशों से सकारात्मक मधुर सम्बन्ध बनाने में सफल रहेगी। लेकिन इस वर्ष श्री मोदी एवं अन्य प्रतिष्ठित

व्यक्तियों की सुरक्षा-व्यवस्था में ढील नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अघटित घटना से कष्टभय का योग है। जगत्-लगनकुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर पर गुरु की दृष्टि है। सूर्य-शुक्र उच्चस्थ हैं, अतः भारत की प्रतिष्ठा एवं गौरव उत्तरोत्तर बढ़ेगा।"

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2074 वि., पृ. 52, कॉलम 1, अन्तिम पंक्तियां)

सत्यता—श्री नरेन्द्र मोदी (P.M. भारत) महाभाग ने अपनी कूटनीति से अमेरिका- इण्डोनेशिया एवं रूस आदि देशों के साथ सुदृढ़ मैत्री सम्बन्ध बनाकर एवं राष्ट्र को सशक्त बनाकर 'भारत को महाशक्ति' के रूप में स्थापित कर दिया है।

भविष्यवाणी—"13 अक्तूबर से आगे शुक्र-शनि एवं सूर्य-शनि की पोजीशन अनुसार 15 दिसम्बर तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है।"

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 49, कॉलम 2)

सत्यता—1. तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता जी का 5 दिसम्बर को निधन हुआ।

2. दिनांक 27-11-2016 ई. को क्यूबा के राष्ट्रपति कास्त्रो का निधन हुआ।

भविष्यवाणी—सं. 2073 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर 19वीं पंक्ति से आगे पढ़ें—"श्री मोदी की दूरदर्शिता से भारत की अर्थव्यवस्था को विशेष गति मिलेगी। राजनीति की गतिमत्ता के भी दूरगामी परिणाम होंगे। यह बात विपक्षीदलों को स्वीकार्य नहीं कि—एकवर्ष का समय सरकार के काम-काज का आकलन का अन्तिम मापदण्ड नहीं है। फिर भी भारत सरकार की रीति-नीति से सरकार के वायदों का बोध तो आगे होने का संकेत ग्रहस्थिति देती है।"

पृष्ठ 50, कॉलम 2 पर 19वीं पंक्ति से आगे की भविष्यवाणी—"15 नवम्बर से सूर्य-शनि (परस्पर शत्रुग्रह) दिसम्बर तक एकराशि में चलेंगे। यह ग्रहस्थिति शासनतन्त्र के सामने सिद्धान्तवादिता, आदर्शवाद वाली व्यावहारिक मजबूरियां हाजिर करेंगी। इस दौरान भाजपा एवं विपक्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष शुरु होगा एवं R.S.S. पर भी विपक्ष के आक्षेप आयेंगे।"

इन पंक्तियों की सत्यता—8 नवम्बर, 2016 ई. को रात्रि में नोटबन्दी की घटना से विपक्ष ने लगभग दिसम्बर तक लोकसभा को संचालित नहीं होने दिया। यह भविष्यवाणी फलितशास्त्र की गरिमा का निदर्शन है।

चीन द्वारा तिब्बत-सिक्किम के सीमाप्रान्तों पर तनाव की भविष्यवाणी—श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2074 वि. के पृष्ठ 58, कॉलम 1 पर निम्नांकित रूप में पढ़ें—

"संवत् 2074 वि. की ग्रहस्थिति विश्व में घटित प्रमुख बातों पर भी ध्यान आकर्षित करती है। इस वर्ष अप्रैल से जून 2017 ई. तक, 27 अगस्त से 29 नवम्बर, 2017 ई. तक एवं फरवरी से मार्च, 2018 ई. तक की ग्रहस्थिति उत्तरी कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, चीन, पाकिस्तान आदि देश, अमेरिका, ब्रिटेन एवं भारत आदि देशों के लिए आगामी समय में हालात भयावह रहेंगे। जिससे विश्व के शान्तिप्रिय देश विनाश एवं अनिश्चय की ओर बढ़ेंगे। संयुक्तराष्ट्र के सामने भी यह एक समस्या बन सकती है। ऊपर निर्दिष्ट समय देश एवं विश्व के लिए अघटित घटनाओं वाले रहेंगे।"

स्पष्ट है कि—ब्रिटेन, फ्रांस आदि में उग्रवादी हमले से जनधनहानि हुई, भारत में भी छत्तीसगढ़, कश्मीर एवं अन्यत्र कई स्थानों पर उग्रवादियों द्वारा जनधनहानि से इस भविष्यवाणी की सत्यता स्पष्ट सिद्ध हुई।

बिहार में महागठबन्धन/समाजवादी पार्टी के बारे में की गयी भविष्यवाणी सं. 2074 वि. के पंचांग में पृ. 60, कॉलम 1 पर इस प्रकार की गयी थी—

समाजवादी पार्टी—कुम्भ राशि का स्वामी शनि सारे संवत् में क्रूर ग्रह से किसी न किसी दृष्टि से मेल कर रहा है, अतः भरपूर प्रयत्न के बाद भी इस पार्टी को राजनैतिक दृष्टि से प्रगतिप्रद सफलता प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है।

बिहार में महागठबन्धन—के बारे में इतना ही लिख सकेंगे कि—ग्रहस्थिति पार्टी में कुछ वैमत्य पैदा करेगी, लेकिन सुधारात्मक योग स्थिति को नियन्त्रित करेंगे।

आप इस घटनाक्रम को देख चुके हैं, अतः इसकी सत्यता स्पष्ट सिद्ध है।

'जम्मू-कश्मीर' के बारे में की गयी भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्यापित हुई, जोकि 2074 वि. के पंचांग, पृष्ठ 62, कॉलम 2 में 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें—"इस संवत् की ग्रहस्थिति में सभी आतंकी संगठन विशेषतः I.S.I. कश्मीर पर बड़ा हमला करेगा। कश्मीर के सीमाक्षेत्र अशान्त रहेंगे एवं यहां की शासन-सत्ता इस प्रान्त में शान्ति स्थापित करने में असमर्थ रहेगी। उग्रवाद के जघन्य अपराध व पाक अधिकृत कश्मीर से आतंक की घुसपैठ जनधनहानि का कारण बनेगी। इस संवत् के उत्तरार्ध में पाक का सीमातिक्रमण संघर्ष का कारण भी बन सकता है।"

सं. 2074 वि. में पृष्ठ 52, कॉलम 1 पर स्टैंजा 2 की अन्तिम पंक्तियों में आश्चर्यजनक भविष्यवाणी पढ़ें—"संवत् 2074 वि. के प्रारम्भ से जुलाई, 2017 तक की ग्रहस्थिति से भारत के कुछ प्रान्तों में I.S.I. द्वारा भारी जनधनहानि का संकेत मिलता है। इस उल्लिखित समयावधि में भारतीय सीमाप्रान्तों पर पाक-चीन-नेपाल-सीमावर्ती देशों की गतिविधियों एवं उग्रवादियों (I.S.I.) आदि से भी सावधान रहना आवश्यक है।"

आज चीन द्वारा सिक्किम एवं पाक द्वारा कश्मीर के सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावरण बना दिया गया है—यह सार्वजनिक चर्चा का विषय है।

संवत् 2075 वि. में सफलसिद्ध कुछ भविष्यवाणियां

1. संवत् 2075 वि. के पंचांग पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर स्पष्ट घोषणा की गयी थी, कि—

"7 मार्च, सन् 2018 ई. को मंगल धनुराशि में आकर शनि के साथ 'एकराशि-सम्बन्ध' बनायेगा। यह स्थिति 30 अप्रैल, 2018 ई. तक प्रभावी रहेगी।

यह स्थिति विश्व में युद्धपरक वातावरण एवं अघटित घटनाओं, प्राकृतिक उत्पात, यान-दुर्घटनाओं एवं प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। प्रकृति के दोहन से उपजित एवं अन्य पर्यावरण-सम्बन्धित समस्याएं विश्व में संकटमय स्थिति पर विचार करने के लिए विवश करेंगी।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार 9 मार्च, सन् 2018 ई. को अमेरिका के 10 राज्यों में बर्फीला तूफान आया। 6 करोड़ लोग न्यूजर्सी में प्रभावित हुए और 2600 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। (पंजाब केसरी, 9 मार्च, 2018 ई.)

2. भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की भविष्यवाणी—सं. 2075 वि. के पंचांग, पृष्ठ 52, कॉलम 1/2 पर स्पष्ट भविष्यवाणी की गयी थी, कि—

"गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत इस वर्ष किंवा आगामी वर्षों में अन्तरिक्ष विज्ञान (Space-Science) में आश्चर्यजनक प्रगति करेगा। जिसमें अन्य कुछ देश भी सहायकरूप में मददगार रहेंगे।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता को समाचारपत्रों ने इस प्रकार प्रसारित किया—

ISRO continues to make India proud

It was yet another year of jubilation for Indian Space Research Organisation (ISRO) for it achieved a historic feat of having launched a massive 104 satellites using its Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV).

इसके अतिरिक्त भारत की अन्तरिक्ष विज्ञान में प्रगति से चीन एवं पाक भी प्रभावित हुए हैं।

3. 12 अप्रैल, सन् 2018 ई. को हरिकोटा में I.R.N.S.S.-1 आई. का परीक्षण सफल, सदमे में चीन-पाक (पंजाब केसरी 13/4/18)

Space-Science की इस सफलता की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 4 जून, 2017 को की गयी थी, जोकि आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुई।

4. पाक में शरीफ-सरकार का पतन एवं सत्ता-संघर्ष के लिए सेना के दखल की भविष्यवाणी—पंचांग पृष्ठ 51, कॉलम 1 पर पढ़ें—

"पाक की राशि कन्या में नीचाकांक्षी सूर्य की स्थिति एवं बुध का अतिचारी शुक्र के साथ मेल खराब स्थिति का संकेत देता है। प्रधान नेतृत्व पर सेना हावी रहेगी एवं सत्ता-संघर्ष से परिवर्तन के योग बनते हैं।"

5. क्षेत्रीय एवं प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टियों के एकीकरण की नीति एवं सत्तारूढ़ दल को अपदस्थ करने की साजिश की भविष्यवाणी—पृष्ठ 53, कॉलम 1 पर पढ़ें—

"राजनीतिक-क्षेत्रीय पार्टियों में सत्ता हथियाने की लालसा ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ा देगी। कुछ प्रधान पार्टियां आपसी तालमेल बनाकर आगे सत्ता के गलियारों में हलचल पैदा करेंगी।"

6. इस्लामिक आतंकवादग्रस्त देशों के बारे में की गयी भविष्यवाणी—पढ़ें पृष्ठ 51, कॉलम 1 पर—

"इस्लामिक आतंकवाद से पाक, अफगानिस्तान, इराक, लीबिया, तुर्की, सीरिया आदि में हालात बदतर होते जायेंगे। साथ ही चीन, उत्तरी कोरिया आदि कुछ प्रधान देश भी इस बुरी स्थिति के लिए कुप्रेरणा के स्त्रोत सिद्ध होंगे।"

यह सर्वविदित है कि—I.S.I को समाप्त करने के लिए सीरिया पर ता. 14-4-18 को 100 से अधिक मिसाइलों का प्रहार किया था, जिससे रूस आदि कुछ देशों द्वारा

अघोषित युद्ध की स्थिति बन गयी थी।

7. "कश्मीर-समस्या एवं सीमा-प्रान्तों का हल, सहज सम्भव नहीं"—एतद्विषयक भविष्यवाणी पढ़ें, पृष्ठ 58, कॉलम 1 पर—

"संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि तुला पर मंगलयुत **'शनि की दृष्टि'** होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त प्रदेशों पर भारत के साथ पाक- चीन जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।"

8. 28 फरवरी (सन् 2018 ई.) को 'जगद्गुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती जी' महाराज (कांचीमठ) के स्वर्गवास बारे—मार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2075 वि.), पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर पढ़ें—

"13 जनवरी, 2018 ई. को शुक्र मकर राशि में आयेगा एवं 14 जनवरी को सूर्य भी मकर राशि में आकर शनि एवं केतु के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य, शुक्र, केतु पर मंगल की दृष्टि भी है। **इस समय किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन हो।**"

9. श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2075 वि. के पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर निम्नांकित भविष्यवाणी पर ध्यान दें—

2 मई से मंगल मकर (उच्च राशि) में आकर राहु के साथ समसप्तकयोग बनायेगा। इसी मध्य 14/15 मई से 8 जून तक शुक्र-शनि का समसप्तकयोग चलेगा। फिर लगभग 6 नवम्बर, से 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. के लगभग शनि अपने शत्रुग्रह मंगल पर विशेष दृष्टि रखेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि—उल्लिखित समयावधियों में विश्व के प्रमुख देशों में भारी उलट-फेर एवं अघटित घटनाओं किंवा **प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादियों के जघन्य अपराधों से भारी अशान्ति बनेगी। इस समय जनता एवं शासकों को भी सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना चाहिए—यह आवश्यक सूचना ग्रहगोचर के अनुसार दे देना उचित समझते हैं।**

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार 2 मई को अफगानिस्तान में 6.6 रियेक्टर का भूकम्प आया, जिसका प्रभाव उ.भारत में भी 10 मई तक अनुभव किया गया एवं इन्हीं **दिनों मई में ही मौसम-विभाग ने महावात (भयंकर तूफान) की चेतावनी भी दी थी, तदनुसार भारत के मुम्बई, उ.प्र., राजस्थान, उ.खं., गुजरात आदि एवं कुछ** अन्य प्रान्तों में भी (लगभग आधे हिन्दुस्तान में) भयंकर तूफान से सैकड़ों व्यक्ति इस प्राकृतिक प्रकोप से हताहत हुए। थाईलैण्ड, ताईवान, अमेरिका, जापान, चीन आदि में भी बाढ़, अग्निप्रकोप, तूफान आदि की दु:खद घटनाएं इन दिनों सामने आईं और भारी जान-माल की हानि हुई।

15 मई तक किंवा आगे भी इस तरह के प्राकृतिक प्रकोप का कहर, अग्निकाण्ड, वायुवेग से मकानों का ध्वस्त होना एवं वाहनों से मृत्यु आदि भयंकर परिणाभ देखने को मिले। सरकारें भी इस प्रकोप को रोकने में असमर्थ रहीं।

पाठको! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गयीं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता-जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2076 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान **'कार्य-कारण के सिद्धान्त'** को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अत: सिद्धान्तों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतान्त्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमन्त्री **आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवं शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल**

संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2076 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2076 वि. को **संहिता ग्रन्थों में 'परिधावी'** संवत्सर की संज्ञा दी गयी है। दशम युग का प्रथम संवत्सर होने से **ऋषभ-मत** से भूभाग में उपद्रव, भूकम्प, ज्वालामुखी, विस्फोट, शासन-सत्ता में परिवर्तन एवं अग्निकाण्ड आदि घटनाओं से जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहे। इसका फल इस प्रकार है—

"धन-धान्य-समृद्धिः स्यात् भयं भूरि प्रजायते।
अन्यथा क्षेममारोग्यं परिधावीति वत्सरे॥"

अर्थात्—परिधावी संवत्सर में धन-धान्यसमृद्धि रहने पर भी देश के सीमाप्रदेशों में भय किंवा आशंकाओं से भरा माहौल रहे। परिणामतः भय का कोई कारण नहीं होता।

'भविष्यफल भास्कर' के अनुसार **'परिधावी'** संवत्सर का फल इस प्रकार है—

"भूयाहवो महारोगो मध्य-सस्यार्घ-वृष्टयः।
दुखिनो जन्तवः सर्वे संवत्सरे परिधाविनि॥"

अर्थात्—इस संवत्सर में शासकों (राजनीतिज्ञों) में शक्तिपरीक्षण किंवा राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध रहे। वर्षा मध्यम, महंगाई बढ़े, जन-जीवन (रोगादि व अन्य कारणों से) दुखी रहे।

'मेघ महोदय' ग्रन्थ के अनुसार इसका फल निम्नांकित है—

"अभिभूतं जगत्सर्वं क्लेशैश्च विविधैः प्रिये।
मारुतो बहुदाहश्च परिधाविनि वत्सरे॥"

अर्थात्—सम्पूर्ण विश्व अनेकविध (सामाजिक-राजनैतिक किंवा प्राकृतिक) उत्पातों से परेशान रहे। वायुवेग (तूफान) किंवा अग्निकाण्ड आदि से अनेकत्र जनधन-हानि भी हो।

संवत् 2076 वि. की प्रारम्भिक गोचर ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—स्वार्थपरक राजनीति से प्रेरित विपक्षीदल सत्तालोलुपता से ग्रस्त रहेंगे, जिससे सत्तारूढ़ दल भाजपा आदि नेतृत्व क्षुब्ध रहेंगे। फिर भी विपक्षी दलों के लिए परिणाम आश्चर्यजनक रहेंगे; क्योंकि भारत का राजनैतिक परिदृश्य अप्रत्याशित करवट लेगा।

संवत् 2076 वि. का राजा शनि (युद्धप्रिय, महाक्रूर ग्रह) होने से इस वर्ष साम्प्रदायिक किंवा राजनैतिक उपद्रव, उग्रवादजन्य विस्फोट एवं कुछ देशों में मारक शस्त्रास्त्रों का परीक्षण, कहीं मारकाट से वातावरण अशान्त होगा। विश्व के कुछ देश अघोषित युद्ध का वातावरण बनाकर विश्वशान्ति को भंग कर सकते हैं—

"दुर्भिक्ष-मरकं रोगान् करोति पवनं तथा।
शनैश्चराब्दो दोषाश्च-विग्रहांश्चैव भूभुजाम्॥"

शनि के साम्राज्य में अनेक प्रान्तों में भयंकर अकाल की स्थिति एवं जलवायु प्रदूषण (पोल्यूशन) की समस्या किंवा पेयजल-समस्या का भी सामना करना पड़ेगा। अनेक प्रकार के भयंकर रोगों का सामना जनता-जनार्दन को करना पड़ेगा। इस वर्ष राजनैतिक परिदृश्य विकट स्थिति वाला रहेगा। इस वर्ष किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से राष्ट्रीय शोक भी झेलना पड़ेगा।

इस संवत् का मन्त्री (प्रमुख सलाहकार) सूर्य (राजा शनि का परम शत्रु) है, इस प्रकार संवत् के राजा एवं मन्त्री का शत्रुत्वभाव देश में अविमृश्यकारिता का वातावरण बना दे तो कोई आश्चर्य नहीं। **स्पष्ट है कि—संवत् 2076 वि. का प्रारम्भ एवं अन्तिम चरण राजनैतिक कठिन परिस्थितियों को लेकर आ रहा है। विपक्षी क्षेत्रीय एवं बड़ी केन्द्रीय पार्टियों द्वारा बनाया गया गठबन्धन अन्ततः एक असफल प्रयास रहेगा, जोकि देश के लिए कटु अनुभव वाला सिद्ध होगा।**

मन्त्री सूर्य होने से राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध से जनता को किंकर्तव्यविमूढ़ सा बनायेगा। देश में रोग, चौर एवं अनैतिक कार्य अधिक होंगे। **(राजनीति) कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में परस्पर तालमेल न के बराबर होने से शनि एवं सूर्य—ये दोनों अराजकता जैसा वातावरण बना सकते हैं।** गोचर ग्रह-स्थिति से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि—सत्तारूढ़ दल जनहितार्थ (देशहितार्थ) सकारात्मक कार्य करने में ढील करेगा तो जनता का विश्वासमत प्राप्त करने में असफल रहेगा, परिणाम दूरगामी होंगे।

इस वर्ष मेघेश-फलेश एवं दुर्गेश (सैन्याधिपति) शनि ही है। अतः अनेकत्र पेयजल की समस्या परेशान करेगी। राजनीतिज्ञों के व्यवहार से जनता रुष्ट रहे, मारक रोग अधिक रहें। दुर्गेश शनि इस वर्ष शुभ नहीं है—जनता उग्रवाद व उपद्रवों से पलायन करे, परस्पर साम्प्रदायिक झगड़े बढ़ेंगे एवं कुछ देश युद्धपरक नीति से शान्ति भंग कर

सकते हैं।

नोट—इस संवत् में शनि के प्रभुत्व एवं सूर्य के मन्त्रित्व के फलस्वरूप भारत को पाक, कश्मीर, चीन, अमेरिका, उ. कोरिया, नेपाल एवं बंगलादेशवर्ती सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना होगा।

संवत् 2076 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्-लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार सांसारिक घटनाओं पर एक नज़र

वर्षेश (जगत्) लग्नकुण्डली
(संवत् 2076 वि.)

6, 4 च., 7, 5, 3 रा., 8, 2 मं., श. गु. के. 9, 11 शु., 1 सू., 10, 12 बु.

[14 अप्रै., 2019 ई., 14 घं. 9 मि. (I.S.T.)]

जगत् लग्न का उदय सिंह लग्न में हुआ है। मंगल एवं शनि का षडष्टकयोग एवं वृष-मिथुन में मंगल-राहु की स्थिति मुस्लिम राष्ट्र विशेष का युद्धोन्माद व अणुशस्त्र-संग्रह विश्व-शान्ति को भंग कर सकता है। इस वर्ष उग्रवाद, मारक शस्त्र-भण्डारण एवं प्रभुसत्ता स्थापित करने तथा देश के विस्तार की नीति कुछ देशों के लिए भयावह रहेगी। शांत्यर्थ भारत की भूमिका प्रशंसनीय सिद्ध होगी। क्योंकि भारत की प्रभाव राशि (मकर) का स्वामी (शनि) गुरु की सन्निधि में है।

वर्षेश लग्न में राहु एवं शनि की परिधि में ही सभी प्रभावी ग्रह हैं। अत: कुछ राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (प्राकृतिक प्रकोप), अग्निकाण्ड, भयंकर तूफान, भूकम्प आदि से मई 2019 तक भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं।

वर्षेश कुण्डली में लग्नेश सूर्य एवं बुध-गुरु-शुक्र की स्थिति भारत को आर्थिक क्षेत्र एवं राष्ट्रीय गरिमा की दृष्टि से अग्रसर करने वाली है। विदेशों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनेंगे। कुछ सीमा-सम्बन्धी विवाद हल होते नजर आयेंगे।

जगत् लग्नेश उच्च एवं लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से भारत अग्रणी देशों की कोटि में आ सकेगा—

"निजोच्चे निजवर्गे वा शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्॥"

इस वर्ष जगत्-लग्नानुसार भाद्रपद, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष एवं माघ मास विश्व (जगत्) के देशों के लिए विशेष नेष्ट घटनापूर्ण रहेंगे। अत: शासकों को भूकम्प, तूफान एवं उग्रवादियों से सावधान रहना होगा।

संवत् 2076 वि. की प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार कर्क लग्न में संवत् का प्रारम्भ भारत के पूर्वी प्रान्तों में सुख-समृद्धि का संकेत देता है। उत्तर दिशा में प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादजन्य अशान्ति एवं कश्मीर आदि में उग्रवादजन्य परेशानी, सीमा-प्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति से अशान्ति रहेगी। पश्चिम में अनेकत्र दुर्भिक्ष एवं पेयजल-समस्या से शासन चिन्तित रहेगा।

संवत् 2076 वि. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति पर गम्भीरता से विचार करने पर शनि-मंगल का षडष्टक एवं राहु-शनि का समसप्तक भारत की राजनीति में आश्चर्यजनक विशेष उथल-पुथल होने का संकेत देता है। लग्नेश चन्द्र, सूर्य के साथ गुरु के क्षेत्र में होने से देश की प्रगति के लिए राष्ट्रनायक देश में नयी प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करेंगे।

संवत् की प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट भान होता है कि—भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि मकर से द्वादशभाव में गुरुक्षेत्र में गुरु की सन्निधि में है, अत: विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लेकिन राजनैतिक परिदृश्य में कुछ परिवर्तन सम्भव है। क्योंकि इस वर्ष के मध्य मंगल-शनि का षडष्टक भारत की पश्चिमी, उत्तरी सीमाओं एवं दक्षिणी भूभाग में उग्रवाद किंवा भयंकर प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देता है।

किसी मुस्लिम-राष्ट्रविशेष की नीति शक्तिसम्पन्न राष्ट्र की मदद से सीमाप्रान्तों को अशान्त करेगी एवं युद्धात्मिका स्थिति में लाकर खड़ा कर देगी—

"मारिर्दक्षिण-देशे स्यात् तथा बंगेष्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

संवत् 2076 वि. की ग्रहस्थिति का यूरोप के देशों पर प्रभाव (एक संक्षिप्त सर्वेक्षण)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1)

(1 जनवरी से 31 दिसम्बर, सन् 2019 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) की ग्रहस्थिति के अनुसार गुरु-बुध दोनों

मंगल के क्षेत्र में एक साथ हैं—यह ग्रहस्थिति पश्चिमी-भूभाग में कहीं युद्धात्मक स्थिति बना सकती है।

इस कुण्डली में बृहस्पति के क्षेत्र में सूर्य-शनि की सन्निधि बनती है। अतः अशान्त वातावरण एवं उग्रवादजन्य अपराधों से मुक्त होने में अनेक राष्ट्र परस्पर सहयोग तो देंगे, लेकिन कुछ मसले अशान्ति व उलझन का कारण भी बनेंगे, फिर भी इससे उग्रवाद के पोषक तत्त्वों (संस्थाओं) एवं देशों को सबक मिलेगा।

ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी कोरिया, पाक एवं चीन, रूस आदि देश अमेरिका की शांन्ति एवं प्रभुत्व को क्षीण करने का प्रयास करेंगे। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, उत्तरी कोरिया, चीन आदि द्वारा विकसित मारक शस्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी। अमेरिका द्वारा परिणाम संघर्षात्मक हो सकते हैं। कुछ मुस्लिम व अन्य कुछ देश भी उग्रवादी शस्त्रास्त्रों के प्रयोग को गुप्तरूप से संचालित ही रखेंगे।

यह वर्ष कहीं युद्धात्मक स्थिति, प्राकृतिक प्रकोप, यान व अग्निकाण्ड आदि से जनहानि का संकेत देता है। प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भयावह ग्रहस्थिति है।

प्रकृति के दोहन से उत्पन्न एवं अन्य पर्यावरण-सम्बन्धित समस्याएं भी विश्व के यूरोपीय देशों को संकटमय स्थिति का हल ढूंढ़ने के लिए विवश कर देंगी। परिणामस्वरूप, उत्तरी कोरिया, चीन, पाक आदि तथा अन्य कुछ मुस्लिम देश मारक-क्षमता को बल देने वाले शस्त्रास्त्रों के निर्माण में व्यस्त रहेंगे। 22 मार्च, सन् 2019 ई. के बाद विशेषत: 6 मई, सन् 2019 ई. तक एवं अक्तूबर, 2019 ई. के आगे तक की ग्रहस्थिति विश्वशान्ति को क्षुब्ध करने वाली ही मालूम देती है—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

कुण्डली नं. (1) में राहु-मंगल पर गुरु की दृष्टि एवं सूर्य-शनि का धनु राशि में एकसाथ होना विश्व के कुछ विरोधी देशों में शान्तिवार्ता का वातावरण बनायेगा। क्योंकि कुम्भ राशि पर शनि की दृष्टि भी है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुन-प्रभाव राशि-देश अमेरिका के प्रभुत्व को सूर्य-शनि की दृष्टि क्षीण करे एवं ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, उ.कोरिया, चीन द्वारा विकसित मारक शस्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी, परिणाम संघर्षात्मक ...

हैं।

इस वर्ष शनि-सूर्य के प्रभुत्व वाले संवत् में लगभग 11 अप्रैल को गुरु के वक्र होने पर जलवायु-प्रदूषण की स्थिति 10 अगस्त, 2019 ई. तक भारी संकट यूरोप के देशों में बनायेगी, एतदर्थ दुनिया के प्रमुख देशों को गम्भीरता से सोचना होगा। मुस्लिम राष्ट्र, अफगानिस्तान, पाक-अधिकृत कश्मीर, गिलगित, पख्तून में गोचर ग्रहस्थिति से भयंकर आपदाओं का संकेत मिलता है। कहीं भयंकर भूकम्प, विस्फोट, उग्रवाद से अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बनेगा।

1 मई को शनि वक्री होकर लगभग 17 सितं. तक वक्र गति से चलेगा। इस समयावधि में यूरोप के राजनैतिक कुछ भयंकर परिस्थितियों में उलझेंगे एवं इस दौरान प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन त्रस्त होगा। गोचर ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—यूरोप में प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने से शोक व्याप्त हो। **इसी मध्य 6 मई से 21 जून, 2019 ई. तक शनि-मंगल की स्थिति यूरोपीय देशों के लिए विशेष भयावह सिद्ध होगी।** 28 अक्तू. से दिसम्बर 2019 ई. के मध्य तक की ग्रहस्थिति (शनि-गुरु का एकत्र होना) कहीं युद्धाग्नि को प्रज्वलित करे एवं प्राकृतिक आपदा से कहीं भयंकर जनधनहानि का कारण भी बनेंगे—

"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत्।"

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2

(1 जनवरी, सन् 2020 ई. से दिसम्बर, सन् 2020 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2 में चतुर्थ भाव में पंचग्रही योग शनि-सूर्य-बुध-गुरु एवं केतु को राहु के साथ समसप्तकयोग यूरोपीय देशविशेष में अघटित घटनाओं को जन्म देगा, अणुशस्त्र, सीमाविवाद, शस्त्रास्त्रों की मारक क्षमताजन्य उन्माद एवं शक्ति-सम्पन्नता-प्रदर्शन से हालात बिगड़ेंगे। यूरोप के देशों में विचार-वैमनस्य से द्विधाविभक्त किंवा विशेष ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति घातक रहेगी, इससे विश्वशान्ति को भी खतरा पैदा हो सकता है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
(1 जन. से 31 दिसं., सन् 2020 तक)
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

5
8 मं.
7
6
4
9 गु. श.
बु. के.
3 रा.
10
सू.
12
2
शु.
चं. 11
1

... भाग, अमेरिका, फ्रांस आदि में गुटबाजी एवं

चीन, रूस, जर्मनी किंवा जापान आदि में परस्पर शस्त्रास्त्रों की होड़ से पंचग्रही योग वातावरण को खराब करेगा।

लगभग 24 जनवरी, 2020 ई. से शनि-सूर्य का मकर राशि में लगभग 12 फर. तक एक साथ होना भी विश्वशान्ति के लिए भयावह है।

14 मार्च से संवत् 2076 वि. के अन्त तक सूर्य पर शनि-मंगल की दृष्टि एवं लगभग 22 मार्च से मकर राशि में शनि-मंगल का (लगभग 3 मई, सन् 2020 ई. तक) एक साथ रहना कहीं भयंकर युद्धाग्नि से विनाश का कारण बनेगा—

"मकरस्थो यदा भौमः क्रूरग्रह-समन्वितः।
त्रिभागशेषा पृथिवी मांस-शोणितकर्दमैः॥"

इन दिनों यूरोप में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, अग्निकाण्ड, समुद्री तूफान आदि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं। लगभग मार्च से मई 2020 ई. के मध्य किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का संकेत मिलता है—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

संवत् 2076 वि. में मुस्लिम राष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1)

(12 सितम्बर, सन् 2018 ई. से 31 अगस्त, सन् 2019 ई. तक)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1) हिज़्री सन् 1440 (1 मुहर्रम)

12 सितम्बर, सन् 2018 ई., बुधवार, 18 घं. 28 मि. (सूर्यास्त समय) (I.S.T.)

कुण्डली नं. (1) में लग्नेश शनि लग्न, योजनास्थान एवं अष्टम भाव को विशेष दृष्टि से देख रहा है, जोकि इस वर्ष उग्रवाद के स्वयंभू नेताओं के लिए भयावह परिस्थिति बनाता है। भारत की प्रभावराशि मकर में केतु एवं उच्च का मंगल भारत के शत्रुभूत मुस्लिम राष्ट्र-विशेष को हतप्रभ कर देगा। लेकिन कश्मीर के अंगभूत गिलगित-बाल्टिस्तान तथा सीमाप्रान्तीय विवादों पर भारत का पाकिस्तान एवं चीन के साथ **परस्पर विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कूटनीति किंवा युद्धात्मक परिस्थिति से ही कश्मीर की समस्या का हल सम्भव है।**

कुण्डली नं. 1 के सप्तम भाव में 'बुधादित्य योग' तो श्रेष्ठ है, लेकिन बुध पाक की प्रभावराशि कन्या का स्वामी है और शनि की कन्या राशि पर दृष्टि भी है। इस समय बुध अस्त एवं मंगल से भी प्रभावित है। यह समय पाक, अफगानिस्तान एवं पाक-अधिकृत क्षेत्रों कश्मीर आदि के लिए एवं पाक-प्रशासक-प्रमुख के लिए चिन्तनीय है। इस समय पूर्वोत्तर, दक्षिण-पश्चिमी भूभाग पर विशेष उपद्रव सम्भव हैं। अफगानिस्तान, ईरान, इराक, पाक, अफ्रीकन देश, कतर आदि में कहीं उत्तराधिकार किंवा स्वतन्त्रता के लिए, कहीं प्राकृतिक प्रकोप एवं अनेकत्र उग्रवादजन्य-अपराधों से जनधनहानि के योग बनते हैं।

कुण्डली नं. (1) की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 6 नवम्बर से 23 दिसम्बर, 2019 ई. तक शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि होने से मुस्लिम-राष्ट्रों का उग्रवाद भयंकर जनधन-हानिकारक रहेगा। आगे जनवरी, सन् 2019 के लगभग से 31 अगस्त, 2020 ई. तक का समय भी मुस्लिम-राष्ट्रों में कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन एवं कहीं फौजी हकूमत का संकेत देता है। आगे **6 मई, सन् 2019 ई. से 8 अगस्त, सन् 2019 तक का समय भी मुस्लिम-राष्ट्रों के शासकों के लिए अपने ही द्वारा संचालित उग्रवाद किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर परिस्थिति का संकेत देता है।**

गोचर ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—6 मई से लगभग 21 जून, 2018 ई. तक अफ्रीकन देश, दोहा, कतर, लीबिया, मस्कट, साऊदी अरब, पाक के सियाचिन गिलगित एवं बलूचिस्तान आदि में कहीं भयंकर आन्तरिक क्रान्ति, कहीं उग्रवादजन्य विस्फोट आदि एवं कहीं युद्धाग्नि से अशान्ति बनेगी।

आगे 28 अक्तूबर, 2018 ई. से दिसम्बर 2018 ई. तक के लगभग शनि-गुरु की स्थिति एवं 22 मार्च से अगस्त, सन् 2019 ई. तक शनि-मंगल की ग्रहस्थिति मुस्लिम राष्ट्र-विशेष में भयंकर परिस्थिति का संकेत देती है। उग्रवाद भी कहीं (पाक आदि में) शासनतन्त्र पर हावी रहेगा एवं सेना का वर्चस्व शासन को अपने मुताबिक चलाने को विवश करेगा। किसी मुस्लिम देश में प्रमुख शासक को सत्ता से च्युत होकर अराजकता का सामना करना पड़े। कहीं हत्याकाण्ड से शान्ति भंग होने एवं भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होने का योग भी है।

मुस्लिम-देशों की कुण्डली नं. (2)

(हिज़्री सन् 1441 (1 मुहर्रम)

भाद्रपद शुक्ल द्वितीया रविवार, तदनुसार 1 सितम्बर को मुहर्रम (मुस्लिम हिज़्री

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
हिज़री सन् 1441 (1 मुहर्रम)

12 | 10 | 1 | 11 | 9 के. श. | 2 | 8 गु. | 3 रा. | 5 सू.शु. बु.मं. | 7 | 4 | 6 चं.

1 सितम्बर, सन् 2019 ई., रविवार, 18 घं. 42 मि., (सूर्यास्तसमय) (I.S.T.)

सन् 1441) प्रारम्भ होगा। इस हिज़री सन् का बादशाह सूर्य है। ग्रहस्थिति के अनुसार ईरान, इराक, पाक के क्षेत्र बलूचिस्तान, पाक-अधिकृत कश्मीर आदि में भयंकर अशान्ति का वातावरण बनेगा।

कन्या राशि में स्थित चन्द्र पर शनि की विशेष दृष्टि है, अतः पाकिस्तान में गणतन्त्र का स्वप्न साकार न होकर उग्रवाद-जन्य एवं सैन्यजनित दमनतन्त्र ही रहेगा। पाक के कुछ क्षेत्र हवाई हमलों, निर्दोषों की हत्याओं और दमन के परिणामस्वरूप पाक से अलग होने का आह्वान भी करेंगे, जिसकी कीमत पाक को आगामी कुछ ही समयावधि में चुकानी पड़ेगी।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 2) में कुम्भ राशि पर मंगल एवं शनि की दृष्टि है, अतः सीरिया पर जो जघन्य प्रहार हो रहे हैं, उसका परिणाम अघोषित विश्वव्यापी अशान्ति के रूप में देखा जायेगा। परिणामस्वरूप, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान एवं रूस, चीन आदि में परस्पर युद्धोन्माद पैदा होने को है। परिणाम मानव-जीवन के लिए चिन्तनीय होगा।

17 सितम्बर, 2019 ई. तक शनि के वक्रत्वकाल में मुस्लिम-राष्ट्रों में उलझनें बढ़ेंगी।

लगभग 24 सितम्बर, 2019 ई. के बाद शनि-मंगल का दशम-चतुर्थसम्बन्ध और मिथुनस्थ राहु-चन्द्र पर शनि की दृष्टि मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह है। आश्विन शुक्ल सप्तमी शनिवारी होने से सीरिया, इरान, पाक आदि में हत्याकाण्डों का संकेत मिलता है—

"सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने।
मूले वा धनिष्ठायां जगतो नाशकारणम्॥"

10 नवं., सन् 2019 ई. तक शनि-मंगल का दृष्टिसम्बन्ध एवं 29 अक्तूबर, 2019 ई. से गुरु-शनि का एकत्र होना साऊदी अरब, अफ्रीकन देश, सीरिया, पाक-अधिकृत कुछ क्षेत्रों में भयंकर अशान्ति करेगा।

7 फरवरी, सन् 2020 ई. से आगे संवत् 2076 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति एवं आगे शनि-मंगल के एकत्र होने से मुस्लिम-राष्ट्रों में कहीं भयंकर राजनैतिक उथल-पुथल, उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, सेना के अत्याचार आदि से अशान्ति रहे। कहीं प्रधान नेता के अपदस्थ होने या हत्या किंवा कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से जनधन-हानि के योग हैं।

संवत् 2076 वि. की गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत-सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत-भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिये जाते हैं। हमारे ऋषियों ने वेद-चक्षु इस ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है—

"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्॥"—(श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम **"भवितव्यता"** किंवा **"ईश्वरेच्छा"** कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 72वां वर्ष

(14 अगस्त, सन् 2018 ई. से 14 अग., 2019 ई. तक)

स्वतन्त्र भारत के 72वें वर्ष की ग्रहस्थिति

5 | 3 | 6 चं. शु. | 4 सू. रा. बु. | 2 | 7 गु. | 1 | 8 | 10 मं. के. | 12 | 9 श. | 11

14/15 अग., 2018 ई., 4-50A.M. (I.S.T.)

स्वतन्त्र भारत के 72वें वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत-शासन के समक्ष अनेकों समस्याएं पेश होंगी। वर्षलग्नेश चन्द्र अपने शत्रु शुक्र के साथ कन्या राशि में है। शुक्र नीच एवं केन्द्रेश-आयेश भी है, अतः कुछ अप्रत्याशित कारणों से देश की आर्थिक स्थिति में व्यवधान पैदा होगा। विशेषतः अक्तूबर, सन् 2018 ई. के बाद भारत अनुभव करेगा कि—भारतसहित उत्तरी कोरिया, चीन, पाक, ब्रिटेन,

यू.एस., जापान आदि व कुछ अन्य देश भी उग्रवादजन्य अपराधों के कारण बारूद के ढेर पर बैठे हैं। विश्वव्यापी पनप रहे I.S.I. आदि संगठनों के कारण एवं विस्तारवादी नीति, सैन्यशक्ति-प्रदर्शन, मारकक्षमता के शस्त्रों से त्रस्त कुछ देश एक **'अघोषित मिनि-विश्वयुद्ध'** की तरफ बढ़ेंगे, परिणाम विघातक होंगे। ऐसी गतिविधि में भारत की भूमिका प्रशंसनीय रहेगी। भारत की कूटनीति से मुस्लिम-देशों में बिखराव की स्थिति बनेगी और कुछ प्रमुख राष्ट्र मिलकर उग्रवाद पर नकेल डालने में समर्थ होंगे।

आगे 6 नवम्बर से लगभग दिसम्बर, 2018 ई. तक की समयावधि भारत-सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण रहेगी। इस समयावधि में शनि की मंगल पर दृष्टि राजनैतिक दृष्टि से प्रमुख राजनीतिज्ञों के लिए भयावह एवं उलझनपूर्ण रहेगी। सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा व चीन, पाक की कुनीति एवं नापाक इरादों से भारत को कठिन परिस्थिति से सुलझना पड़ेगा।

7 मार्च, 2019 ई. के बाद राहु-शनि की स्थिति के कारण भारत के विपक्षी राजनैतिक गठबन्धन में पार्टियों के शीर्ष नेतृत्व के स्वर अलग-अलग नजर आयेंगे, जिससे विपक्ष की योजनाएं निष्फल हो जाने के योग हैं। सत्तारूढ़ दल पुनः प्रभाव पकड़ेगा।

ध्यान रहे—15 अगस्त से नवम्बर, सन् 2018 ई., 6 नवम्बर से 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. के मध्य, तत्पश्चात् 29 जनवरी, सन् 2019 ई. से संवत् 2075 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति देश की सुरक्षा एवं राजनैतिक दृष्टि, प्राकृतिक प्रकोप से भी चिन्तनीय स्थिति का संकेत देती है। इस समय देश में राजनैतिक एकता एवं सीमाप्रान्तों पर सैन्य-समृद्धि एवं उग्रवाद से होने वाली जनधन की सम्भावनाओं से सावधान रहना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि, मार्ग. शुक्लपक्ष में द्वादशी तिथि का क्षय है एवं माघ कृष्ण छठ शनिवारी है—

"मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समाचरेत्॥"

किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का भय है एवं कहीं युद्धभय व्याप्त हो।

संवत् 2076 वि. का प्रारम्भ शनिवार से हो रहा है, इस समय शनि-मंगल का षडष्टकयोग चल रहा है एवं शनि-गुरु दोनों धनु राशि में चल रहे हैं। शनि-गुरु का राहु के साथ समसप्तकयोग भी बन रहा है। कहीं महावात, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप किंवा दुर्भिक्ष से भारी हानि सम्भव है।

आगे 1 मई, सन् 2019 ई. के लगभग शनि वक्री होगा एवं गुरु भी वक्रस्थिति में चल रहा होगा, लगभग 9 अगस्त तक दोनों वक्री रहेंगे और शनि तो आगे भी लगभग 17 सितम्बर तक वक्रगति से ही चलता रहेगा। इस संवत् में वैशाख में 5 शनिवार कहीं भूकम्प, विस्फोट एवं कहीं सीमाप्रान्तों पर भयंकर अशान्ति के कारण बनेंगे—

"शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशान-देश-भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"

ध्यान दें, लगभग 4 मई से 21 जून, 2019 ई. तक शनि-मंगल का समसप्तक-योग एवं राहु की स्थिति सीमाप्रान्तों पर भारी विक्षोभ का कारण बन सकती है। इस समय भारत को सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को सुदृढ़ एवं सचेष्ट रखना होगा। पाक, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान आदि सीमाओं पर एवं चीन के मिजोरम आदि सीमाओं पर शत्रुदेश अशान्ति का कारण बन सकते हैं। यह योग कुछ प्रान्तों में भयंकर अकाल की स्थिति का संकेत भी देता है।

15 जून से लगभग 8 अगस्त, सन् 2019 ई. तक शनि-मंगल एवं सूर्य-शुक्र की स्थिति देश में साम्प्रदायिक उपद्रव एवं लोकसभा में अवरोध, विद्यार्थियों व दुष्टजनों में देशविरोधी भावना शासकों को परेशान करेगी। जून से अगस्त, सन् 2019 ई. तक की समयावधि में सीमाप्रान्तों पर अशान्ति, प्राकृतिक प्रकोप एवं कहीं हत्याकाण्ड आदि से प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होने की आशंका भी बनती है।

स्वतन्त्र भारत का 73वां वर्ष

(15 अगस्त, सन् 2019 ई. से सं. 2076 वि. के अन्त तक)

स्वतन्त्र भारत के 73वें वर्ष की ग्रहस्थिति के आधार पर शनि-राहु का समसप्तक एवं सूर्य-शुक्र का शनि के साथ षडष्टकयोग देश के प्रतिष्ठित गण्यमान्य नेतृत्व के लिए परेशान करने वाला है।

30 अगस्त, 2019 ई. के लगभग वक्री शनि पू.षा. नक्षत्र में प्रवेश करके राहु से प्रभावित होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति-विशेष का पद रिक्त करे—ऐसा योग है।

10 सितम्बर, 2019 ई. को शुक्र-बुध पर शनि की विशेष दृष्टि होने से पड़ोसी

देश-विशेष में शासनसत्ता में विशेष रद्दोबदल हों एवं वहां आन्तरिक अशान्ति से अघोषित सिविलवार जैसी स्थिति बन सकती है, जिससे भारत भी अशान्त रहे।

इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा शनिवारी होने से कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से सत्ता में परिवर्तन के योग भी हैं—

"अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद्यदि।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥"

इन दिनों लगभग 11 सितम्बर को राहु के आर्द्रा चतुर्थ चरण में आने पर कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप (अवर्षण या अतिवर्षण आदि) से भारी हानि भी सम्भव है—

"प्लावत्यन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।"

17 सितम्बर, सन् 2019 ई. को सूर्य कन्या में आकर मंगल, सूर्य, शनि की विशेष दृष्टि में आ रहा है। आश्विन तृतीया को मंगलवार एवं सप्तमी को शनिवार होने से कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो एवं महंगाई उत्तरोत्तर बढ़े, पाक आदि के कुछ क्षेत्रों पर ब्लूचिस्तान, गिलगित आदि में राजनैतिक हत्याकाण्ड हो—

"आश्विने हि तृतीयायां भौमवारो यदा भवेत्।
तदा त्वग्निभयं भूम्यामन्नादीनां महर्घता॥"

किञ्च—

"सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने।
मूले वा धनिष्ठायां जगतो नाश-कारणम्॥"

गोचर ग्रहस्थिति-वश अगस्त/सितम्बर में भारी रोगविशेष से जनता में परेशानी भी बनेगी।

29 अक्तूबर, सन् 2019 ई. को गुरु मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर शनि के साथ एक-राशिसम्बन्ध बनायेगा एवं शनि-मंगल का दशम-चतुर्थसम्बन्ध 10 नवम्बर, 2019 ई. तक चलेगा। परिणामस्वरूप, अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी एवं कहीं धार्मिक उन्माद, साम्प्रदायिक दंगे, सीमाप्रान्तों एवं अन्य सरहदी इलाकों में भी उग्रवाद-जन्य हत्याकाण्डों से हानि भी होने के योग हैं—

"यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद् वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपश्चान्न-परिक्षयः॥"

21 नवम्बर, सन् 2019 ई. को शुक्र धनु राशि में आकर गुरु-शनि-केतु के साथ मेल करेगा। यह योग भी देश एवं प्रमुख शासकों के लिए कष्टप्रद रहेगा—

"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।"

26 दिसम्बर, 2019 ई. के लगभग षड्ग्रही-योग विश्व के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए भयावह परिस्थितियों को लेकर आ रहा है—

"षड्ग्रहा घ्नन्ति समस्त-भूपान्।"

26 दिसम्बर से एक मास के अन्दर विश्व में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त एवं कहीं राजनैतिक उथल-पुथल होने का योग है।

24 जनवरी, सन् 2020 ई. को शनि मकर राशि में आकर सूर्य के साथ 12 फरवरी तक एक-राशिसम्बन्ध बनायेगा। मकरस्थ शनि का फल इस प्रकार लिखा है—

"पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति पथिभयं सर्व-रोगाद् विनाशः।
चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे॥"

राजनीतिज्ञ परस्पर वैमनस्य से उलझें, रास्ते में स्नैचिंग, चोरी आदि की घटनाएं अधिक हों, अनेकविध रोगों से हानि हो। शासक प्राकृतिक आपदाओं किंवा अन्य प्रकार की समस्याओं से परेशान रहें।

जनवरी के अन्तिम सप्ताह से 15 फरवरी, सन् 2020 ई. तक कहीं वायु का प्रकोप, अग्निकाण्ड एवं शनि के उदय होने पर "नृप-युद्ध-बुद्धिः"- प्रमाणानुसार कहीं युद्ध आदि से भारी हानि के योग बनते हैं।

मकर राशि भारत की प्रभाव राशि है। इस राशि में शनि की **13 फरवरी तक स्थिति एवं लगभग 22 मार्च, सन् 2020 ई. से मई, 2020 ई. के प्रथम सप्ताह तक शनि- मंगल का एक राशि-सम्बन्धविश्वव्यापी अशान्ति का कारण बनेगा— "युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।"** इस समयावधि में कहीं व्यापक युद्ध की आहट सुनाई देने लगेगी और अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवादजन्य अशान्ति, भूकम्प किंवा दुर्भिक्ष आदि से जनता स्थानान्तरण करने को विवश होगी।

संवत् 2076 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

पाठको! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड, देश-समाज एवं व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भांति ही अनुभव की गयी है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर-उधर भागता फिरता है। 'नैषधचरित' में स्पष्ट लिखा है—

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।

तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना॥"
—(नैषधचरित)

यह बात भी नितान्त सत्य है कि—ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि—आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है—इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी-महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवं अन्य पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है, क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतों को ठीक-ठीक पकड़ने में अनेकदा चूक भी हो सकती है, तो विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधारकर हमें आशीर्वाद दें—प्रार्थना है।

संवत् 2076 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

5 अप्रैल, सन् 2019 ई., 14 घं.20 मि. (I.S.T.)

संवत् 2075 वि. में चैत्र कृष्ण अमावस शुक्रवार, तदनुसार 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. को रेवती नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय 14 घं. 20 मि. (I.S.T.) पर कर्क लग्न में सं. 2076 वि. का उदय होगा। कर्क लग्न में नये संवत् 2076 वि. का शुभारम्भ होने से पूर्वी प्रान्तों की स्थिति ठीक रहे, सुख-समृद्धि रहे। उत्तर दिशा में भयंकर प्राकृतिक (भूकम्प, ज्वालामुखी-विस्फोट, तूफान आदि) आपदा किंवा उग्रवादजन्य परेशानी से वातावरण अशान्त रहे। सीमाप्रान्तों पर विस्फोट आदि एवं साम्प्रदायिक उपद्रवों से जनधनहानि भी सम्भव है। मकर-राशीश शनि वर्षप्रवेश कुण्डली में अपनी राशि से बारहवें गुरु एवं केतु के साथ राहु का समसप्तक एवं मंगल के साथ शनि-गुरु का षडष्टकयोग बना रहा है। यह ग्रहस्थिति भारतीय शासनसत्ता में आश्चर्यजनक सत्तासंघर्ष का वातावरण बनायेगी।

2019 में सत्ताप्राप्ति हेतु मुस्लिम एवं दलित-विरोधी प्रचार, भाजपा के लिए नयी चुनौती सिद्ध होगा। महाराष्ट्र में शिवसेना से सिद्धान्त-वैमत्य, कश्मीर की साम्प्रदायिक राजनीति, 26 सहयोगी दलों का गठबन्धन, जोकि आज आधा दर्जन से भी कम रह गया है, इस प्रकार महत्त्वपूर्ण सहयोगी दलों का अलग होना भाजपा के लिए पुरातन गरिमा (शासनसत्ता) को बरकरार रखना भारी पड़ेगा।

आपस में सिद्धान्त-विपरीत विचारधारा वाला गठबन्धन भाजपा को हानि तो पहुंचायेगा, लेकिन धराशायी न कर सकेगा, अन्ततः भाजपा सरकार बना सकेगी, कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवन जरूर मिलेगा।

वर्षप्रवेश-कुण्डली-स्थित ग्रहस्थिति से स्पष्ट ज्ञात होता है कि—रूस, चीन, पाक की तिकड़ी केवल अमेरिका एवं पश्चिमी देशों को ही प्रभावित नहीं करेगी, इस घटना से भारत का राजनयिक समर्थन-आधार भी घटेगा, अतः देश के शासकों को सावधान रहना होगा।

वर्षप्रवेश-कुण्डली में संवत्सरेश शनि का मंगल के साथ षडष्टक देश की सत्तारूढ़ पार्टी के लिए आश्चर्यजनक उथल-पुथल वाला रहेगा। लग्नेश चन्द्र, सूर्य के साथ गुरु के क्षेत्र में होने से देश की राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिति को सामान्य बनाने में शासनतन्त्र नये आयाम स्थापित करेगा, परिणाम भाजपा के लिए सुखद रहेंगे। वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार ज्ञात होता है कि—भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि मकर राशि से द्वादश भाव गुरुक्षेत्र में गुरु के साथ ही है। अतः विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लेकिन राजनीतिक परिदृश्य में परिवर्तन सम्भव है।

क्योंकि शनि के दृष्टिविचार से संवत् 2076 के प्रारम्भ में शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा की तरफ रहेगी। अतः मकर एवं धनु राशि वाले देशों एवं प्रान्तों में हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। 24 जनवरी, सन् 2020 ई. को शनि मकर राशि में आकर सं. 2076 वि. के अन्त व आगे तक मकर राशि में ही रहेगा, इन दिनों शनि की नजर उत्तर दिशा की तरफ रहेगी। स्पष्ट है कि—इस वर्ष पश्चिमी एवं उत्तरी गोलार्ध के देशों में भूकम्प, समुद्री तूफान, विस्फोट, हिंसा, साम्प्रदायिक उपद्रव होंगे एवं कुछ देश आन्तरिक उपद्रवों से भी अशान्त रहेंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार दिसं., 2019 ई. के बाद गुरु, शनि का योग एवं शनि-मंगल की स्थिति विश्व में व्यापक हिंसा एवं युद्धात्मक वातावरण से भारी संकट का संकेत देती है। वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ नाम राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए समय अनुकूल नहीं। पश्चिमी, उत्तरी एवं दक्षिणी भूभाग में कहीं प्राकृतिक आपदा, तूफान, भूकम्प आदि से इस वर्ष के अन्तिम मासों में हानि हो। कश्मीर, राजस्थान, उत्तरांचल, मिजोरम की ओर सीमाप्रान्तों पर उग्रवादजन्य कृत्यों से भारी अशान्ति के योग

हैं। मुस्लिम राष्ट्रविशेष की नीति किसी शक्तिसम्पन्न राष्ट्र की शह पर विद्रोह-प्रदर्शन करके वातावरण को अशान्त बना सकती है। सीमाप्रान्तों पर विशेष सैन्यबल को सतर्क रखना अनिवार्य है।

भारतीय गणतन्त्र का 70वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र की ग्रहस्थिति
26/27 जन. 2019 ई., 2 घं.52 मि. (I.S.T.)

सू. 9मुं.श. | 7 चं. | 10बु. के. | 8 गु. शु. | 6 | 11 | 5 | 12 मं. | 2 | 4 रा. | 1 | 3

भारतीय गणतन्त्र के 70वें वर्ष का उदय चित्रा नक्षत्र, धृति योग एवं तुला राशिस्थ चन्द्र के समय हुआ है।

मुन्थेश गुरु अपनी राशि से बारहवें (मंगल के क्षेत्र में) शुक्र से राशिसम्बन्ध बना रहा है। लग्नेश मंगल, गुरु के क्षेत्र में है। अत: मुन्थेश का लग्नेश के साथ राशिव्यत्यय देश को अप्रत्याशित राजनैतिक, साम्प्रदायिक किंवा प्राकृतिक आपदाओं का सामना तो करना पड़ेगा, लेकिन देश आर्थिक दृष्टि से प्रगतिपथ पर रहेगा एवं साम्प्रदायिक विपरीत परिस्थितियों को सुलझाने में भी सफल रहेगा।

चतुर्थेश शनि की चतुर्थ भाव पर विशेष दृष्टि है। अत: सुरक्षाप्रबन्धों के सुदृढ़ीकरण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। शत्रु देशों को सीमाप्रान्तों पर मुंह की खानी पड़ेगी।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की गणना आर्थिक, वैज्ञानिक एवं सुरक्षा सुदृढ़ता की दृष्टि से विश्व के प्रमुख देशों में होने लगेगी।

गणतन्त्र (70वें वर्ष की) कुण्डली में शनि (जोकि इस संवत् का राजा एवं सेनापति भी है) द्वितीय भाव में है तथा नवमेश चन्द्र व्ययस्थान में नीचाकांक्षी भी है, अत: इस वर्ष सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से आसाम, कश्मीर, राजस्थान आदि पर सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा।

दशमेश सूर्य शत्रुक्षेत्र में होने से कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका में अनेकत्र विरोध नजर आयेगा। परिणामस्वरूप, महामहिम राष्ट्रपति जी या विधि-विशेषज्ञों को हस्तक्षेप करना पड़ेगा।

सम्पूर्ण गोचर ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि—अन्तरिक्ष-विज्ञान में भारत का यश सुदूरगामी होगा। यू.एस., रूस, जापान, इजराइल तथा अन्य देश भी भारत के साथ मैत्री-सम्बन्ध बनायेंगे। **लेकिन किसी देशविशेष के साथ सीमासमस्या का हल बलपूर्वक ही करने को विवश होना पड़ेगा—ऐसा ग्रहगोचर से संकेत मिलता है।**

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भारतीय जनता पार्टी—संवत् 2076 वि. में लगभग 11 अप्रैल, सन् 2018 ई. को वक्री गुरु शनि, मंगल, राहु के साथ स्थित है। 1 मई के लगभग शनि भी वक्री हो जाता है, इस प्रकार भाजपा की प्रभाव राशि धनु का स्वामी गुरु पूर्णतया खलाक्रान्त है।

लगभग फरवरी, 2019 ई. से 10 अगस्त तक की ग्रहस्थिति भारतीय जनता पार्टी के लिए राजनैतिक दृष्टिकोण से उलझनपूर्ण है। सन् 2019 ई. के लोकसभा-चुनावों में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पार्टियों का गठबन्धन आगामी राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन देश के राजनीतिक स्थायीत्व के लिए पार्टियों का गठबन्धन किंवा ध्रुवीकरण शुभ नहीं रहेगा। क्योंकि दलों के राज्यस्तरीय मतभेदों से सांझे तौर पर इन्हें एक सांझे नेतृत्व को स्वीकार करना कठिन समस्या होगी।

6 मई से 22 जून के लगभग तक शनि-मंगल का समसप्तक, आगे 7 अगस्त तक शनि-मंगल का षडष्टक, 24 सितं. से लगभग 10 नवं. तक व आगे 12 फर. तक शनि- सूर्य का मकर राशि में मेल और अन्तत: 22 मार्च, 2020 ई. से शनि-मंगल के एकत्र होने से यह संवत् भाजपा के प्रमुख (प्रथित) लीडरों के लिए राजनैतिक दृष्टि से सत्ताच्युत होने के भय से बहुत ही कठिन परिस्थितियों वाला है। इन उल्लिखित समयावधियों में नेताओं की सुरक्षाव्यवस्था को भी सुदृढ़ रखना नितान्त आवश्यक है।

कांग्रेस पार्टी—गोचर ग्रहस्थिति एवं कांग्रेस-कुण्डलीगत ग्रहस्थिति की समीक्षा करने पर स्पष्ट ज्ञात होता कि—सन् 2019 से कांग्रेस पार्टी में सुधार की लहर शुरु हो जायेगी। श्री राहुल गांधी जी ने कांग्रेस पार्टी की कमाण्ड 16 दिसम्बर, सन् 2017 ई. को दिन में 11 बजकर 7 मिनट पर संभाली है। इस समय की ग्रहस्थिति के अनुसार जनता की सहानुभूति श्री गांधी महाभाग जी को प्राप्त होगी, लेकिन एक पार्टी के रूप में बहुमत

प्राप्त करना इस पार्टी के लिए अभी सम्भव न होगा। कांग्रेस को पुनर्जीवित करने के लिए अभी समय लगेगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सन् 2022 से सन् 2030 ई. तक अनेक प्रान्तों में कांग्रेस सत्ता प्राप्त करने में सफल हो सकेगी।

कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

10 मं.
8 सू. बु. नं.
7 गु. शु.
11 रा.
9
12
6 प्लू. यूरे.
1 श. चं.
3
5 के.
2
4

कांग्रेस-अध्यक्ष पद प्राप्तिकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार इन्हें शुक्र-मंगल (भाग्येश-कर्मेश) का राशिव्यत्यय आगे उच्च-पदाप्ति का संकेत देता तो है, लेकिन शनि जब गोचर में कुम्भ राशि में आयेगा, तब इस पार्टी का राजयोग प्रतिफलित होने का समय प्रारम्भ होगा।

आम आदमी पार्टी (आप)—इस संवत् में भिन्न-भिन्न समय में शनि-मंगल का षडष्टक, दशम-चतुर्थसम्बन्ध, समसप्तक एवं फरवरी से मार्च, 2018 ई. के लगभग तक शनि-मंगल की स्थिति इस पार्टी के लिए आन्तरिक उलझनों वाली है। इस समयावधि में श्री केजरीवाल जी को पार्टी को एकजुट रखना असम्भव होगा। परिणामस्वरूप, दिल्ली एवं अन्यत्र सत्ताप्राप्ति हेतु रथवेग धीमा पड़ जायेगा। परिणाम निराशाजनक रहेंगे।

गतवर्ष के पंचांग (सं. 2075 वि.) में पृ. 55, कॉलम 2 पर स्पष्ट रूप से लिखा था—

"आम आदमी पार्टी—पार्टी की स्थापनागत ग्रहस्थिति के अनुसार नवमेश-दशमेश शनि द्वादश भाव में नीच है, जोकि मार्च, 2018 ई. से मई, 2018 ई. के लगभग शनि-मंगल के एकत्र होने की स्थिति में इस पार्टी के प्रभुत्व को क्षीण करेगा। लगभग 2½ वर्ष आगे तक 'आप' पार्टी की राजनैतिक चाल कोई विशेष महत्त्वपूर्ण प्रभावी नहीं।"

इन पंक्तियों का अक्षरशः सिद्ध होना ग्रहस्थिति के प्रभाव की प्रामाणिकता स्थापित करता है।

भारतीय राजनीति के क्षितिज पर सम्भावित "राजनैतिक महागठबन्धन"

बहुजन समाजपार्टी, समाजवादी पार्टी एवं बिहार के कुछ राजनैतिक दल तथा कांग्रेस—ये सब मिलकर सत्तापक्ष को घेरने के लिए 'महागठबन्धन' को प्राथमिकता देने की चर्चा में हैं। यद्यपि यह गठबन्धन सत्तापक्ष के लिए भारी मालूम देगा, लेकिन राजनैतिक मुद्दा इस महागठबन्धन के पास प्रबल न होने से तथा पार्टियों की सत्ता-लोलुपता, नेतृत्व में वरीयता आदि मुद्दे खींचतान-भरे रहेंगे। आगे शनि-राहु एवं मंगल-शुक्र की स्थिति आगामी काल में शीघ्र ही मतभेद पैदा करके सत्तापक्ष को लाभ पहुंचा सकती है। क्योंकि अभी भारत में एक संघीय पार्टी का शासन सम्भव नहीं। क्योंकि मोदी-विरोधी मुहीम में ठोस मुद्दे व कारगर रणनीति शनि-मंगल नहीं बनने देंगे। जोकि इनकी एकजुटता को प्रभावित करेगी।

कुछ प्रतिष्ठित राजतनीतिज्ञ

श्रीनरेन्द्रमोदी महाभाग—श्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्म 17 सितम्बर, सन् 1950 ई. को गुजरात स्थित Vad Nagar (महेसाना) में 11 घं. 00 मि. A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है—

सं. 2075 वि. के पंचांग में पृ. 56, कॉलम 1 पर अंकित इन पंक्तियों पर ध्यान दें—

" चिन्तनीय ग्रहस्थिति तो चन्द्र में शनि एवं शनि में सूर्य एवं चन्द्र में शनि एवं शनि में मंगल का प्रत्यन्तर तो 18/4/2017 ई. तक रहेगा। इन सभी अन्तर-प्रत्यन्तर के विचार से श्री मोदी जी की स्थिति विशेषरूप से कठिन परिस्थितियों/उलझनों से लदी मालूम देती है।"

उल्लिखित पंक्तियों की सत्यता अक्षरशः प्रमाणित हो चुकी है।

6 नवम्बर, सन् 2018 ई. के लगभग से शनि-राहु का षडष्टकयोग चल रहा है। 6 अक्तूबर से धनुः राशिस्थ शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि रहेगी। 16 दिसम्बर से शनि-सूर्य की स्थिति लगभग 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. तक श्री मोदी जी के विजयरथ को बाधित करने वाली है।

21 जनवरी, सन् 2019 ई. से श्री मोदी जी के धनस्थान में शनि-शुक्र का योग श्री मोदी को उत्साहवर्धक रहेगा, जोकि 29 मार्च, सन् 2019 ई. तक या आगे शीघ्र ही यश एवं राजनैतिक क्षेत्र में पुनः सफलता देगा। लेकिन इनकी पार्टी पुरातन गरिमामय इतिहास को न दोहरा सकेगी। यह स्थिति सन् 2021 तक प्रभावी रहेगी। चन्द्र की महादशा में यह ग्रहस्थिति सत्ताप्राप्ति एवं पदप्राप्ति लाभ तो प्रदान करती ही है।

श्री राहुल गांधी—कांग्रेसाध्यक्ष श्री राहुल गांधी जी के अध्यक्ष पदाप्ति-कालीन ग्रहस्थिति के अनुसार नवमेश-दशमेश का व्यत्यय इन्हें कुम्भस्थ शनि की स्थिति में भाग्योदय करेगा। जनवरी, सन् 2020 ई. के बाद, विशेषतः 13 फरवरी, 2020 ई. के बाद सन् 2030 ई. तक की ग्रहस्थिति श्री गांधी जी को उच्च पदाप्ति प्रदान कराने वाली है। लेकिन सन् 2019 ई. में इनके वर्तमान पद की गरिमा पर प्रश्नचिह्न भी लगेंगे। क्योंकि कुम्भस्थ शनि का जन्मकालिक कुम्भस्थ राहु के साथ मेल भी होगा। आगामी गोचर ग्रहस्थिति से जो संकेत मिला है, लिख दिया है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

कांग्रेस पार्टी-प्रधान शपथग्रहण-कुण्डली
16 दिसम्बर, 2017 ई.
11 घं. 7 मि. AM, शनिवार

12, 10 के., 1, 11, 9 सू. श., 2, 8 बु.शु. चं., 3, 5, 7 गु. मं., 4 रा., 6

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन एवं नामराशि कन्या है। इस वर्ष गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के आरम्भ में ही शनि-मंगल का षडष्टक इस प्रान्त की राजनीति में कुछ सत्तारूढ़ पार्टी के विरुद्ध अन्दरूनी तौर पर विरोध करेगा। प्रान्त में कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव भी पैदा हों। लेकिन सशक्त नेतृत्व विरोधी तत्त्वों को हतप्रभ करेगा। वर्षप्रवेश के समय लग्नेश चन्द्र सूर्य के साथ गुरु के क्षेत्र में होने से नयी योजनाओं को कार्यान्वित करायेगा। प्रान्त में नयी योजनाओं से पार्टी को बल मिलेगा। लेकिन कनाडा, इटली, ऑस्ट्रेलिया आदि में पनप रहे राष्ट्रविरोधी विदेशी तत्त्वों से इस प्रान्त को सावधान रहना नितान्त आवश्यक है।

हरियाणा—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि मिथुन है। नववर्ष प्रवेशकुण्डली में मिथुनस्थ राहु पर गुरु-शनि-केतु की दृष्टि है, जोकि इस प्रान्त में आरक्षण-सम्बन्धित मुद्दे विरोधी पक्ष की नीति से पुनः उजागर होंगे। प्रधान नेतृत्व के नाम राशीश (सिंह राशि के स्वामी सूर्य) पर गुरु की विशेष दृष्टि होने से यहां का प्रधान नेतृत्व इन अशान्तिप्रद आन्दोलनों को दबा देने में सफल सिद्ध रहेगा। नववर्षप्रवेश के समय शनि-राहु का समसप्तक एवं शनि-मंगल का षडष्टक यहां के प्रधान नेता के समक्ष विषम समस्याओं को उपस्थित करेगा। लगभग 11 अप्रैल, 2019 ई. से 10 अगस्त तक अपनी राशि में गुरु वक्रगति से चलेगा, जोकि प्रधान नेतृत्व पद पर भी प्रश्नचिह्न लगा सकता है। लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार प्रधान नेता जनलुभावनी नीतियों से जनता का स्नेह-सौहार्द प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

सं. 2076 वि. के अन्तिम चरण में शनि-मंगल का एकराशिस्थ (मार्च 2020 के लगभग के समय से आगे लगभग 3 मई, 2020 ई. तक) होना इस प्रान्त की शान्ति, सौहार्द एवं प्रधान नेता के लिए कठिन परिस्थितियों वाला रहेगा।

हिमाचल प्रदेश—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन एवं नामराशि कर्क है। कर्क लग्न में ही संवत् 2076 वि. का उदय होगा। इस समय राहु-शनि का समसप्तक एवं शनि-मंगल का षडष्टकयोग चल रहा है। देश की केन्द्रीय शासनसत्ता इस प्रान्त को विशेष सुविधा प्रदान करेगी। यहां प्रान्त में प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी, क्योंकि नये साल का प्रारम्भ शनिवार से होगा। शनि-मंगल की स्थिति (लगभग मार्च 2020 से लगभग मई 2020 के प्रथम सप्ताह तक) में प्रान्त के सीमान्त-क्षेत्रों में प्राकृतिक प्रकोप एवं कुछ अराजक तत्त्व हानि का कारण बन सकते हैं, यह समय यहां प्रधान नेता के लिए सावधानी का है। क्योंकि इस समय शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ रहेगी।

जम्मू-कश्मीर—इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है। इस वर्ष नाम-राशि के स्वामी शनि की स्थिति इस प्रान्त के लिए भयावह परिस्थिति का ही संकेत देती है। गतवर्ष के मार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2075 वि.) में भी पृ. 58, कॉलम 1 पर भविष्यवाणी निम्नप्रकार की थी, पढ़ें—

" संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि तुला पर मंगलयुत 'शनि की दृष्टि' होने मे कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त प्रदेश भारत के साथ पाक-चीन जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।"

इस साल लगभग 11 अप्रैल से 10 अगस्त, 2019 ई. तक गुरु धनु राशि में वक्री चलेगा एवं 6 मई से लगभग 22 जून, 2019 ई. तक वक्र शनि का मंगल-राहु के साथ समसप्तक है। पाक-द्वारा कृत बहुत ही अशान्त स्थिति का सामना करना पड़ेगा। अनुभव होने लगेगा कि—बिना सैन्यसंघर्ष के इस समस्या का हल सम्भव नहीं है। आगे 24 सितं., 2019 ई. से संवत् 2076 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति यहां उग्रवादियों द्वारा और भी भयंकर अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बना सकती है—भगवान् ही रक्षा करें।

दिल्ली—इस प्रान्त की प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन है। गुरु 29 मार्च,

2019 ई. को अपनी राशि धनु में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इस समय मंगल वृषस्थ होकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाता है। संकेत मिलता है कि--केन्द्रीय नेतृत्व को देश की प्रगति एवं सुशासन प्रदान करने के लिए भारी संघर्ष करना पड़े एवं एकताबद्ध राजनीति से विरोधी राजनीतिज्ञों के प्रयासों को हतप्रभ करना होगा। भारत के सीमाप्रान्तों की सुरक्षा हेतु एवं उग्रवादजन्य कुनीति से जनजीवन की रक्षा व देशहितार्थ सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा।

जनवरी से अप्रैल, सन् 2019 तक की ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि--भारत की राजनीति पर पुनः सुयोग्य राजनीतिज्ञों का वरद हाथ रहेगा। जनता राजनीतिक वंशवाद से विमुख होती नजर आयेगी और भारत को चहुंमुखी प्रगति की ओर ले जाने वाला नेतृत्व उभरकर देशहित में काम करेगा।

उत्तर प्रदेश—इस प्रान्त की नाम राशि वृष एवं प्रभाव राशि धनु है। शनि-मंगल एवं गुरु-शुक्र की स्थिति इस वर्ष यहां भयंकर साम्प्रदायिक झगड़ों को जन्म देगी। आगामी निर्वाचनों में यहां भाजपा के विजयरथ को भारी क्षति पहुंचेगी। प्रधान शासक को यहां की आन्तरिक समस्याओं को सुलझाने में भारी संकट का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक एवं साम्प्रदायिक मुद्दे शासनतन्त्र को भारी उलझनों में फंसा देंगे, जिससे प्रधान नेतृत्व एवं भाजपा का प्रभावक्षेत्र क्षीण होगा।

इस वर्ष यहां के प्रधान शासकों को उग्रवादियों की गतिविधि एवं साम्प्रदायिक उलझनों को हल करने के लिए रक्षात्मक व्यवस्था को सुदृढ़ करना पड़ेगा। प्रधान नेता की योजनाओं को कार्यान्वित एवं शासकीय व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कठोर पग उठाने होंगे।

पाठको! प्रभुकृपा से भूत-भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें—

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र-परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः॥"

लेख पूर्ण होने की तिथि—
24 मई, सन् 2018 ई.,
गुरुवार (श्रीगंगादशहरा),

शुभचिन्तक-
इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु. पो. कुराली,
(एस.ए.एस.नगर (मोहाली), (पंजाब)।

आज का दिन कैसे बीतेगा

प्रातः उठकर पंचांग से ज्ञात करो कि उस समय कौन-सा नक्षत्र है। फिर नीचे दिए गये चक्र के समान एक चक्र बनाओ। इस चक्र में जहाँ १ लिखा है, वहां उस दिन के प्रातःकालीन नक्षत्र को लिखकर उससे आगे के नक्षत्रों को २-३-४ आदि अंकों के स्थान पर लिखते हुए अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को चक्र में लिख डालो। अब देखो कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ा है। यदि वह चक्र के भीतर है तो वह दिन सुख-शान्ति से व्यतीत होगा, उस दिन कोई शुभ समाचार मिलेगा। यदि नाम-नक्षत्र चक्र के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग प्रसन्नता से बीते ओर शेष भाग में चिन्ता, दुःख-शोक से चित्त खिन्न हो। यदि नाम नक्षत्र पर पड़े तो वह पूरा दिन विवाद, हानि, दुर्घटना आदि से चित्त की अशान्ति का कारण बने।

-:चक्र:-

संवत् 2076 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा-विचार

आगामी वर्षों की ग्रहस्थिति अनेक प्रान्तों में जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोप-विचार से भारी कठिन परिस्थिति को लेकर आ रही है;— पढ़ें इस लेख में

— संयमी शर्मा,

जलवायु एवं वर्षा-विचार के मूलभूत सिद्धान्तों, मानवीय भूलों, प्रबन्धन की अदूरदर्शिता, प्राकृतिक स्रोतों का दोहन एवं प्राकृतिक रहस्यों की उपेक्षा विश्व के लिए जल्दी ही भयावह सिद्ध होगी—इसे जनता, नेतागण एवं देश की प्रबन्धन-समितियों को गम्भीरता से अतिशीघ्र लेना होगा, अन्यथा **"यद्भावी न तद्भावी भावी चेन्न तदन्यथा"**—(जो होना है, वह होना ही है)—यह सोचकर कब तक प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर पाएंगे—यह तो भगवान् ही जानें। लेकिन ग्रहचाल के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के भयंकर दुष्परिणाम शीघ्र ही स्थावर-जंगम जगत् को विनाश के कगार पर ले जाने वाले मालूम होते हैं। जलवायु वर्षा-विचार के साथ इस लेख में एतत्—सम्बन्धित आधारभूत रहस्यों की चर्चा भी सूक्ष्म रूप से की गयी है।

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि उत्पादन—ये जीवनाधायिका-चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा—ऐसी मान्यता है। लेकिन "जल एवं वायु"—ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "अन्नस्तम्भ" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज सम्भव नहीं। अत: सं. 2076 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। आशा करते हैं कि—यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए एक दिशा- निर्देशक सिद्ध होगा।

गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव, जोकि समस्त विश्व के मौसम को स्थिर रखने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण उत्तरी ध्रुव में बढ़ रहा तापमान आगे आने वाले लगभग 15/16 वर्षों की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शनि, राहु एवं केतु कुछ वर्षों में ही विश्व के लिए खतरे की घण्टी बजा सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि—**"ग्लोबल वार्मिंग" विश्व के जलवायु के लिए भयंकर किंवा विपरीत परिस्थितियां बनाएगी। जिससे ध्रुवों के आसपास के देशों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को ही दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे।** अनेकत्र 'ऋतु-विपर्यय' अनुभव होने से वैश्विक तापमान किंवा प्रकृति में महानद और अन्य जलस्रोत सूखने लगेंगे। समुद्र एवं महानदों के तटों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होंगे। वृक्षों से ऑक्सीजन कम प्राप्त होने लगेगी—इत्यादि आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे, जिससे रोग बढ़ेंगे। मौसम में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव प्रकृति के साथ चल रहे खिलवाड़ के कारण जारी हैं। प्रकृति में हो रहे असामान्य किंवा अप्राकृतिक परिवर्तन को समझने में तो आधुनिक वैज्ञानिक भी सकते में हैं। मौसम की अनिश्चितता से कृषिक्षेत्र में सम्भावित जोखिम कम करने के लिए सरकार को व्यापक रणनीति बनानी होगी।

सभी समुदायों के धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरण-हितैषी बनने के लिए कहा गया है। मनुस्मृति में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर की संज्ञा दी गयी है। कुरान कहती है कि जल ही जीवन है। 'वेद' पानी के महत्त्व की गाथाओं से भरे पड़े हैं। ईसाई समुदाय में भी प्रकृति-प्रेम को श्रेष्ठता प्रदान की गयी है। इस वर्ष की गोचर ग्रह-स्थिति के अनुसार अलनीनो गर्मी को

बढ़ायेगा, परिणामस्वरूप कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ़ से जलधनहानि का संकेत मिलता है। 'अलनीनो' ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिससे प्रशान्त महासागर का गर्म पानी उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका की ओर फैलता है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया का तापमान बढ़ेगा। मौसम का सामान्य जलवायु-चक्र बिगड़ जाता है, कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं सूखे के हालात बनते हैं। अमेरिका, U.K. आदि में गतवर्ष बाढ़ एवं उत्तर भारत में सूखा भी इन्हीं कारणों से सम्भव हुआ है।

आगे बर्फ के पिघलने से विश्व में समुद्री-तूफान आदि विनाशकारी लीलाएं देखने को भी मिलेंगी। आर्द्रा-प्रवेश कालीन ग्रहगति के अनुसार जम्मू-कश्मीर, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, मिजोरम आदि में इस वर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। महाराष्ट्र (मुम्बई) में भी प्राकृतिक प्रकोप दिखाई देगा।

समुद्रतटवर्ती महानगरों एवं विश्व के देशों में इस वर्ष (सं. 2076 वि.) से ही विशेष प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं।

भारत में वर्षा के योग

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन ग्रहगोचर के अनुसार माना गया है। **ज्योतिष-शास्त्रानुसार वर्षा, वायुमण्डल, समुद्री तूफान एवं चक्रवात आदि प्राकृतिक उत्पातों का विचार भी सूर्य के आर्द्रा प्रवेश, रोहिणीवास एवं गोचर ग्रहस्थिति पर निर्भर करता है।** अतः सर्वप्रथम सूर्य की आर्द्राप्रवेशकालीन कुण्डली के आधार पर विचार करते हैं।

सं. 2076 वि. में आषाढ़ कृष्णपक्ष पंचमी, शनिवार, तदनुसार 22 जून, सन् 2019 ई. को धनिष्ठा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव 17 घं. 17 मि. पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य की आर्द्राप्रवेशकालीन कुण्डली इस प्रकार है—

आर्द्राप्रवेश कुण्डली

श.के.9, 7, 10, 8 गु., 6, 11 चं., 5, 12, 2 शु., 4 बु., 1, 3 रा.मं.सू.

इस वर्ष सूर्य सूर्यास्त से पूर्व ही आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट हो रहा है। परिणामस्वरूप अनेकत्र मौसम अनुकूल न होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। लिखा है—

"सायाह्नकाले कृषि-नाशनाय धान्यं महर्घं च तृणस्य नाशः।" पशुओं के लिए चारा भी महंगा होगा। इस वर्ष शनिवार के दिन आर्द्रा प्रवेश भी जलवायु विचार से शुभंकर नहीं है;—**"मन्दे न शुभप्रदः।"**

आर्द्राप्रवेश कुण्डली में सूर्य-राहु एवं मंगल का शनि के साथ समसप्तक योग एवं शनि की चन्द्र पर दृष्टि होने से कुछ प्रान्तों में असामयिक, अतिवर्षा किंवा अवर्षण से दुर्भिक्षजन्य दुःखद स्थिति का सामना करना पड़ेगा। कहीं बाढ़ वर्षा से कृषि को भयंकर हानि भी होगी। पर्यावरण-विक्षोभ से जनता परेशान रहे। पंचमी तिथि में सूर्य का आर्द्राप्रवेश होने से जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता के लिए शासनतन्त्र का पूर्ण प्रयास रहेगा। **"सर्वलोकाश्च भूपाश्च सन्तुष्टाः स्युस्तदा भृशम्।"**

इस संवत् (2076 वि.) का राजा शनि होने से जनहानि व दुर्भिक्ष से अनेकत्र हानि हो। झंझावात एवं समुद्री तूफान, वायुवेग आदि आपदाओं से जनहानि हो। पेय-जल सम्बन्धी समस्याओं से भी सरकार को परेशानी का सामना करना पड़ेगा;—

"दुर्भिक्षमरकं रोगान् करोति पवनं तथा।"

प्रदूषण से जनता में अनेक प्रकार के रोगों से जनजीवन त्रस्त रहेगा। इस संवत् का राजा शनि, मन्त्री सूर्य का शत्रु होने से पर्यावरण एवं राजनैतिक दृष्टि

से देश के लिए शुभंकर नहीं। इस वर्ष मेघेश शनि होने से कुछ प्रान्त भयंकर रूप से सूखाग्रस्त रहेंगे, दुर्भिक्ष से जनधनहानि भी सम्भव है।

इस वर्ष चार मेघों में **'द्रोण'** एवं नवमेघों में **नील** नामक मेघ होने से कुछ प्रान्त बाढ़ग्रस्त होने से एवं कुछ प्रान्तों में आकालिक, अल्पवृष्टि किंवा अवृष्टि से दुर्भिक्ष की स्थिति बने—

"अल्पवृष्टिर्भवेत् काले नीलः क्षिप्रं तु वर्षति।"

इस वर्ष आवह आदि सप्तवायु विचार से **'संवह'** नामक वायु होने से मेघालय, असम, मध्य प्रदेश, झारखण्ड आदि प्रान्त भयंकर प्राकृतिक आपदा से त्रस्त रह सकते हैं।

इस संवत् में **'वज्रदंष्ट्र'** नामक नाग कहीं दुर्भिक्ष किंवा कहीं खड़ी फसलों के नष्ट होने का संकेत देता है—

"तदाम्बुवर्षणं नैव सर्वसस्य-विनाशनम्।"

संवत् 2076 वि. में जलस्तम्भ एवं वायुस्तम्भ का विचार

इस संवत् में **'जलस्तम्भ'** 68 प्रतिशत है। इस आधार पर स्पष्ट है, कि—अनेकत्र वर्षा बाढ़ के प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त रहेंगे।

इस संवत् में **'वायुस्तम्भ'** का मान 62 प्रतिशत होने से बादलों का संचालन बिगड़ेगा। कहीं तूफान से हानि भी सम्भव है।

गर्म हवाओं का प्रकोप आज की ही समस्या नहीं। इसके दूरगामी प्रभावों के प्रति हमें सावधान अभी से रहना होगा। ग्रहगोचर के अनुसार आगामी वर्षों में तापमान दो से चार डिग्री सैल्सियस तक बढ़ सकता है। यह मानवता एवं जीवन्त सृष्टिमात्र के लिए चुनौती है। वैज्ञानिकों को इस बारे में सावधान कर देना उचित समझते हैं। इस संवत् में 'रोहिणी' का वास तट पर.होने से अधिक वर्षा के कारण कहीं खड़ी फसलों को हानि होगी, अनेकत्र पेय-जल समस्या का हल निकलेगा।

सं. 2076 वि. में मासिक वृष्टि का संक्षेप में विवरण

अब संवत् 2076 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत का वर्षा-विचार संक्षेप से लिखना उचित समझते हैं, क्योंकि—

"वृष्टिमूला कृषिः सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्॥"

—(कृषि-पाराशर)

अप्रैल (सन् 2019 ई.)—अप्रैल 2, 6, 7, 11, 12, 14, 15, 16, 18, 23 से 27 अप्रैल तक एवं 29 अप्रैल के लगभग मुम्बई, पश्चिमी राजस्थान, आसाम एवं उड़ीसा के कुछ भागों में कहीं बादल चाल व खण्डवृष्टि के योग हैं।

मई (सन् 2019 ई.)—मई 3, 6, 7, 8, 10, 11, 15, 16, 18, 21, 23 से 25, 29 एवं 31 मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु (नेपाल), जम्मू-कश्मीर एवं उ.प्र. के कुछ भागों में, उ.खण्ड, बिहार एवं हि. प्र. में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

नोट—मई 1, 6, 7, 10 के लगभग कुछ प्रान्तों में वर्षा बाढ़ से किंवा अग्निकाण्डों से हानि के भी योग हैं।

जून (सन् 2019 ई.)—जून 1, 2, 5 से 8, 12, 15, 16, 20, 22, 23, 26, 27, 28 को हि.प्र., उ.खण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर एवं भारत के दक्षिणी-पश्चिमी प्रान्तों में अनेकत्र वर्षा होगी। 22 जून को अनेकत्र वर्षा हो।

नोट—मासारम्भ से लगभग 22 जून तक की गहस्थिति कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बना सकती है, कुछ प्रान्त अतिवर्षण से बाढ़ग्रस्त किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि में रहेंगे। कुछ प्रान्तों में मेघ हों, परन्तु वर्षा न हो—**"गर्जितोऽपि न वर्षति।"**

जुलाई (सन् 2019 ई.)—जुलाई 4, 5, 6, 10 से 13 जुलाई, 15, 17, 18, 20, 22, 23 से 30 जुलाई तक, भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं अतिवर्षा

से बाढ़, कहीं भयंकर सूखा, दुर्भिक्ष से हानि हो, कुछ क्षेत्र प्राकृतिक आपदा से क्षतिग्रस्त रहेंगे। लेकिन हि.प्र., कश्मीर, उ.प्र., उ.खण्ड एवं केन्द्रशासित कुछ क्षेत्रों एवं उ.भारत के प्रान्तों में भारी वर्षा सम्भावित है। 22 जुलाई को यदि वर्षा पड़े तो शुभंकर रहे, यदि हवा का जोर रहे तो शुभ नहीं, दुर्भिक्ष का योग बने।

अगस्त (सन् 2019 ई.)—अगस्त 1, 3, 4, 5, 6, 8 से 12, 16, 17, 19, 22, 23, 26, 27, 29 एवं 30 अगस्त को दार्जिलिंग, विन्ध्य प्रदेश, उ.प्र., उ. खण्ड, कश्मीर, हि.प्र., पंजाब एवं हरियाणा आदि में बादल चाल और वर्षा के योग हैं।

सितम्बर (सन् 2019 ई.)—सितम्बर 9, 10, 11, 14, 16, 17, 18, 19, 20, 24, 25, 27, 29 एवं 30 सितम्बर को पश्चिमी प्रान्तों में कहीं बादल चाल किंवा वायुवेग से वर्षा हो। उ.भारत का तापमान गिरने लगेगा।

अक्तूबर (सन् 2019 ई.)—अक्तूबर 3, 4, 7, 9, 10, 11, 13, 17 से 20 अक्तूबर, 22, 24, 28, 29, 30 एवं 31 अक्तूबर को आसाम, बंगाल एवं उ.प्र. के कुछ भागों में बादल चाल व वर्षा हो।

नोट—22, 23, 29, 30 अक्तूबर के लगभग प्राकृतिक प्रकोप से हानिभय है।

नवम्बर (सन् 2019 ई.)—नवम्बर 5, 6, 10, 11, 21, 22, 26 एवं 28 नवम्बर को उ. भारत भयंकर शीत लहर की चपेट में आ जायेगा। उत्तरी भारत के कुछ भाग, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश में 10, 11, 13, 17, 20, 21 नवम्बर को कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। हिमाचल, कश्मीर में कहीं हिमपात के भी योग हैं।

दिसम्बर (सन् 2019 ई.)--दिसम्बर 1, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 15, 16, 17, 18, 20, 23 एवं 25 से 27 दिसम्बर तक एवं 29, 30 दिसम्बर को समस्त उत्तरी भारत भयंकर शीत लहर की चपेट में रहेगा। कहीं खण्डवृष्टि, धुंद एवं हि.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड आदि में अनेकत्र भारी हिमपात से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। पर्यावरण विक्षोभ से कहीं यान दुर्घटना से हानि सम्भव है।

जनवरी (सन् 2020 ई.)—जनवरी 2 से 5 तक एवं 8, 11, 12, 13, 14 से 16, 18 से 20, 24, 25, 26 एवं 30 जनवरी को उत्तरी भारत में भयंकर शीत लहर चलेगी, हि.प्र., उ.खण्ड एवं कश्मीर आदि पर्वतीय भूभाग पर अनेकत्र जबरदस्त बर्फबारी से यातायात बाधित होगा। अन्यत्र धुन्ध से एवं विक्षुब्ध पर्यावरण से भी परेशानी बनेगी।

फरवरी (सन् 2020 ई.)—फरवरी 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 13, 17, 18, 19, 23, 27 एवं 28 फरवरी को शिलांग, आसाम, तामिलनाडु, उ.खण्ड आदि में कहीं बादल चाल व बूंदाबांदी हो। उ.भारत में हवा का जोर रहे। शीत का प्रभाव क्षीण हो। वसन्त ऋतु का आगमन सुहावना रहे।

मार्च (सन् 2020 ई.)—मार्च 2, 3, 4, 7, 8, 9, 11, 14, 17, 18, 19, 22, 23, 24, 28, 29 एवं 31 मार्च को असम, महाराष्ट्र, प. राजस्थान, कश्मीर एवं हि.प्र. में कहीं-कहीं हवा के साथ खण्डवृष्टि हो, उत्तरी भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगे।

संक्षेप में सं. 2076 वि. की ग्रहस्थिति का सर्वेक्षण करें; तो निष्कर्ष इस प्रकार है—

सं. 2076 वि. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति में शनि-मंगल का षडष्टक लगभग मई के प्रारम्भ तक तत्पश्चात् 6 मई से 22 जून के लगभग तक शनि-मंगल का समसप्तक, तत्पश्चात् अगस्त के प्रथम सप्ताह तक शनि मं. का षडष्टक योग एवं उल्लिखित समयावधियों में क्रूर ग्रहों का वक्रत्व विश्व में भारी प्राकृतिक आपदाओं का संकेत देता है। शस्त्रास्त्रों का परीक्षण एवं प्राकृतिक पर्यावरण में हस्तक्षेप जनमानस को ऑक्सीजन की कमी एवं प्रदूषित वायु से अनेक रोगों का सामना करना पड़ेगा। मई से आगे 2-3 मासों में सीमा प्रान्तों पर अशान्ति एवं कुत्रचित् युद्धाग्नि से भयावह दृश्य उपस्थित होने की सम्भावना बन सकती है।

— — —

व्यापार-विमर्श (संवत् 2076 वि.)

(संवत् 2076 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियन्त्रण है और सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रहविशेष की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम **'तेज़ी-मन्दी'** कहते हैं।

हम यहां **'व्यापार विमर्श'** में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी-मन्दी का मशवरा अपने ग्राहकों को देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2019 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 51,000/- (इक्यावन हज़ार रुपये) है।

नोट— व्यापारियों से निवेदन है कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

संवत् 2076 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी-मन्दी का आकलन

संवत् 2076 वि. में तेज़ी-मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है—

संवत् 2076 वि. का राजा **'शनि'** एवं मन्त्री **'सूर्य'** है। स्पष्ट है कि—राजा-मन्त्री दोनों परस्पर परम शत्रु ग्रह हैं। अत: यह वर्ष विश्व के व्यापारक्षेत्र में भारी उलट-फेर करने वाला है। **राजनैतिक परिप्रेक्ष्य एवं प्राकृतिक प्रकोप के विचार से भी यह वर्ष विशेष संकटापन्न दृश्य को उपस्थित करने वाला है—ऐसा ग्रहगोचर से प्रतीत होता है।** अत: व्यापारी बन्धुओं से हमारा अनुरोध है कि—अनाजों, तेलों के एवं वायदा व्यापारियों को बहुत सोच-समझ से काम करना होगा।

इस वर्ष शनि को ग्रह परिषद में चार महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त होने से विशेष प्रभुत्व प्राप्त है। अत: विश्व के कुछ देश भयंकर युद्धाग्नि के भय से त्रस्त रहेंगे। जिसका प्रभाव व्यापारिक क्षेत्र शेयर बाजारों पर विशेष रूप से स्पष्टत: अनुभव होगा। शनि की मकर राशि में स्थिति सन् 2020 ई. में भयंकर प्राकृतिक आपदा का संकेत देती है। **ध्यान दें** कि—इस वर्ष धान्येश चन्द्र होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंच सकती है। लेकिन चावल एवं बाजरा, चना आदि की फसल काफी अच्छी मालूम देगी। लेकिन इस वर्ष **मेघेश शनि** होने से कुछ प्रान्त-विशेष दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना करेंगे।

दुर्गेश शनि इस वर्ष अनेकत्र धार्मिक एवं साम्प्रदायिक कलहों को बढ़ावा देगा;

कुछ क्षेत्र गम्भीर संकट में रहेंगे। इन परिस्थितियों का प्रभाव व्यापार क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से पड़ेगा।

इस संवत् के चतुर्मेघों में **द्रोण नामक मेघ** है, कुछ प्रान्त भयंकर वर्षा, बाढ़ से हानि में रहेंगे। नवमेघों में **नील नामक** मेघ होने से भी **कुछ प्रान्त दुर्भिक्ष-ग्रस्त रहेंगे।—"अल्पवृष्टिर्भवेत् काले नीलः क्षिप्रं तु वर्षति।"** कहीं आकालिक वर्षा से **खेती को हानि भी सम्भव है।**

व्यापारी ध्यान दें—संवत् 2076 वि. में ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवं सरसों आदि तिलहन, लाल-कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना, चांदी में तेजी-मन्दी के भयंकर रिएक्शन्स आएंगे। **दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आयें या सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स में से किसी भी धातु, अनाज, दालवाना, गुड़, शेयर बाज़ार या तिलहन की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिजिन्स/प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी-मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

नोट—संवत् 2076 वि. में 11 अप्रै. से 9 अगस्त तक एवं जन. 2020 ई. से संवत् के अन्त तक भारी जलवायु विपरीतता (वर्षा की कमी आदि किंवा प्राकृतिक प्रकोप से) भारी हानि के योग हैं, जिसका प्रभाव सं. 2076 वि. के प्रारम्भिक समय में व्यापारियों को भी प्रभावित करेगा। इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें।

ध्यान दें—सं. 2076 वि. में आप दलहन, ग्वार, चना आदि अनाज एवं सोना-चांदी में अच्छी तेजी से लाभ ले सकेंगे, सम्पर्क में रहें।

सज्जनो! सूर्य, बुध एवं शुक्र पर शनियुत मंगल की विशेष दृष्टि होने से संवत् 2076 वि. के प्रारम्भ से पहले तेल, तिलहन, तांबा, घी, दालवाना, रुई एवं शेयरों में तेज़ी से व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

अप्रैल (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ में ही शनि-गुरु का धनु राशि में केतु के साथ योग एवं मंगल की शनि पर दृष्टि होने से कुलथ, मूंग, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक, अनाज, दालें, तिल, तेल, घी, पीतल, लोहा, तांबा, कांसा एवं सिक्का आदि में जोरदार तेजी सम्भव है;—बाजार का रुख देखकर काम करें।

नोट—मार्च 2019 के लगभग (गुरु के धनु राशि में आने से पहले) यदि घी सस्ता हो, तो स्टॉक करें, शीघ्र ही उत्तम लाभ मिलेगा।

20/21 मार्च, 2019 ई. की ग्रहस्थिति घी, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी का रुख बनाएगी।

6 अप्रैल शनिवार को संवत् का प्रारम्भ होगा। इस समय राजनैतिक प्रक्रिया में आश्चर्यजनक परिवर्तन या अप्रत्याशित गतिविधि से शेयर बाजारों में भयंकर तेजी से उठा-पटक चलेगी—सावधान रहें। रुई, कपास, सूत, सण, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग में तेजी रहेगी।

11 अप्रैल के लगभग बुध के मीन राशि में आने पर एवं **धनु राशिस्थ गुरु के वक्री होने पर** गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, अलसी, घी, राई, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर मन्दे होंगे। बिनौला, सोना, चांदी आदि धातु एवं ऊनी वस्त्र तेज होंगे।

नोट—अनाज यदि मन्दे हों, तो माल तुरन्त पकड़ें एवं हाजर के व्यापारी तेजी खेलकर मई में उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे। **इस समय गुरु के वक्री होने पर (11 अप्रैल के लगभग) शेयरों में भयंकर मन्दी या तेजी बनेगी,—सावधान! ताजा मशवरा प्राप्त करें।**

14 अप्रैल को सूर्यदेव अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर अलसी, तिल, तेल, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, नारियल, लाल चन्दन, सुपारी, हींग, सूत, कपड़ा, मेथी, लौंग, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तिलहन, इलायची, जीरा में तेजी करे। अनाजों में तेजी न हो। रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे।

15 अप्रैल के लगभग शुक्र मीन राशि में प्रविष्ट होगा। इस समय शुक्र अकेला मीन में विचरण करेगा। अतः चांदी में पहले कुछ मन्दी करेगा, फिर तेजी बनेगी। इस समय अनाज, दालें, सरसों, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन एवं गुड़, खाण्ड में मन्दी रहेगी।

18 अप्रैल को शुक्र उ.भा. में आकर चावल, रुई, तिल, चांदी, कपूर, नमक, खाण्ड, कपास में मन्दे का वातावरण बनाएगा।

नोट करें, कि—23 अप्रैल को वक्री गुरु ज्येष्ठा के चतुर्थ चरण एवं वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। इस समय गुरु-मंगल का समसप्तक योग बनेगा। परिणामस्वरूप यह तेजी-का बेहतरीन चांस है। रुई में 5 मास तक तेजी रहेगी। सोना, चांदी, कपास, तांबा, कांसी, घी, तेल, सुपारी, सरसों आदि तिलहन, गुड़, नमक, नारियल तेज रहें। करियाना की सारी वस्तुएं, दालें, अनाज तेज रहें। कपास, घी के संग्रह से भाद्रपद से आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

25/26 अप्रैल को बुध का रेवती एवं मंगल का मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश मजीठ, केसर, कुसुम्भ, लाल चन्दन, लालमिर्च आदि में तेजी करे। इस समय सोना, चांदी, कांसी, घी, तेल, तिलहन, नमक, नारियल तेज रहें। दालें मन्दी रहें।

27 अप्रैल के लगभग सूर्य भरणी नक्षत्र में आकर गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, तिल, तेल एवं सरसों आदि तिलहंन, रुई, ऊन, सोंठ, जौ, चना, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ में भी कुछ मन्दी का वातावरण बनाएगा।

29 अप्रैल को रेवती नक्षत्र का शुक्र भी रुई, कपास, चन्दन, चांदी, चावल, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात मन्दे करेगा।

(इन दिनों मन्दी में स्टॉक करें। वायदा व्यापारी आगे तेजी खेलकर जल्दी लाभ में रहेंगे।)

मासान्त तक मन्दी का वातावरण रहेगा।

मई (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ में ही धनु राशिस्थ शनि वक्र गति से चलने लगता है एवं स्वभावतः वक्र राहु के साथ समसप्तक योग बनाता है। इस समय सिक्का, लोहा, कली, गेहूं, पीतल, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, तोड़िया, ग्वार, तमाखू, सीमेण्ट, दालें, जीरा, दालचीनी आदि मसाले तेज रहें। **इस समय राजनीतिक वातावरण भी गर्म रहने से व्यापार प्रभावित होगा।**

3 मई के लगभग बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर सूर्य के साथ एक राशि-सम्बन्ध बनाएगा। **सूर्य के साथ बुध ग्रह तेजीकारक बन जाता है।** गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन में साधारण मन्दे का रुख बनने पर भी अच्छी तेजी बनेगी। चांदी में अच्छी तेजी का झटका आ सकता है, सोना तेज रहे।

6 मई को मंगल मिथुन राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा एवं शनि-मंगल का समसप्तक योग भी राजनीति में ऊहापोह होने से शेयर बाजार एवं सभी बाजारों में भयंकर उठा-पटक का कारण बनेगा—सावधान रहें। 6 मई के लगभग से वर्षा पानी की कमी से अनाज, दालें महंगी होंगी।

"राहुरंगारकश्चैकराशि - ऋक्ष गतोऽपिवा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥"

इस समय शेयर बाजार एवं सोना-चांदी में तेजी-मन्दी के झटके आयेंगे।

8/10 मई के लगभग राहु एवं बुध ग्रह की पोजीशन से चावल आदि अनाजों में तेजी का अच्छा झटका आएगा। सरसों, अलसी, तिल, तेल, घी आदि में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी बनेगी। क्योंकि 10 मई को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रविष्ट होकर सूर्य-बुध के साथ मेल करेगा। अतः अनाज, दालवाना आदि व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी—

"एक - राशिं गताह्येते सौम्य-शुक्र - दिनाधिपाः।
सर्वधान्य-महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः॥"

प्राकृतिक प्रकोप किंवा वर्षा पानी की कमी से व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होंगे। गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, जौ, चना आदि अन्न, तेल, तिलहन तेज रहेंगे। इस समय बुध की स्थिति वायदा बाजार में उठापटक करे।

11 मई को सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में आएगा। 15 दिन में घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई एवं सरसों में तेजी आएगी। **(इस समय शेयर बाजारों में जोरदार तेजी का झटका सम्भव है।)**

15 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शुक्र एवं मंगल-राहु से आक्रान्त है। मंगल

एवं शनि का समसप्तक चल ही रहा है। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल एवं सरसों में तेजी रहे। इस समय अनाजों में कुछ मन्दी रहे।

17 मई को बुध कृत्तिका में आकर चांदी, अफीम में जोरदार घटाबढ़ी के बाद तुरन्त मन्दी करेगा। अनाज एवं रुई में तेजी बनेगी। 18 मई के लगभग से आगे व्यापारी **नोट करें; कि—जब सूर्य के साथ बुध का मेल होता है, तो तेजी वायदा बाजारों में झटके से आती है, लेकिन यदि बुध-सूर्य मेल से पहले यदि मन्दी चल रही हो, तो जोरदार मन्दी, यदि पहले तेजी चल रही हो, तो जोरदार तेजी बनती है, अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें।** लेकिन इस समय हमारा विचार तेजी का ही है। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तेल, तिलहन में तेजी-बनेगी। रुई एवं अन्य वायदा बाजारों में घटाबढ़ी चलेगी।

19 मई से 23 जून के मध्य सोना, चांदी, अफीम, सरसों, तिल, तेल, अलसी आदि तिलहन, रुई, कपास, सूत, गुड़, खाण्ड, दालवाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

(शेयर बाजारों में इन दिनों मन्दा सम्भव है।)

25 से 29 मई के अन्दर तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी, मिर्च, राई एवं सोना, चांदी में तेजी बने। मासान्त में मन्दी सम्भव है।

(शेयर बाजारों में तेजी का झटका आएगा, क्योंकि बुध वक्री होकर ज्येष्ठा में प्रवेश करेगा। यह बाजारों में तेजी करेगा।)

जून (सन् 2019 ई.)

नोट—इस मास में लगभग 22 जून तक शनि का मंगल एवं राहु के साथ समसप्तक योग चलेगा, जोकि कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि करेगा। इसका प्रभाव तेल, तिलहन एवं दालवाना पर स्पष्ट रूप से पड़ेगा।

मासारम्भ में ही बुध मिथुन में, शुक्र कृत्तिका में एवं बुधोदय के परिणामस्वरूप **बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे, क्योंकि बुध मिथुन में क्रूरग्रहाक्रान्त है एवं शनि से दृष्ट है, अतः कदाचित् मन्दा बने, तो तेजी जल्दी बनेगी। वायदा व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे।**

हमारे विचार से मासारम्भ में रुई, सोना, चांदी, पाट, हैसियन, जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, सूत, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात मन्दे बनें, रुई में झटके की मन्दी रहेगी—सावधान रहें।

5 जून के लगभग बुध आर्द्रा में एवं शुक्र वृष राशि में आकर लगभग 15 जून तक सूर्य के साथ मेल करेगा।

इस समय गेहूं, चना, रुई, सूत, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सोना, चांदी में एकदम तेजी बनेगी।

ध्यान दें—यद्यपि वृष राशि का शुक्र रुई-कपास में झटके से मन्दी करता है एवं सोना, चांदी में घटाबढ़ी एवं अनाजों में भी मन्दा करता है, लेकिन सूर्य के साथ शुक्र का मेल हमें फिर भी तेजीकारक मालूम देता है। सावधानी से काम करें, ताजा मशवरा प्राप्त करें।

7 जून के लगभग मंगल का पुनर्वसु नक्षत्र में एवं 8 जून को मृगशिर नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश बाजारों में तेजी करेगा। रुई, नमक, तिल, तेल, खाण्ड, सरसों आदि तिलहन तेज रहें। अनाजों एवं सोना में घटाबढ़ी चले।

नोट—5 से 8 जून तक शेयर बाजार में जोरदार तेजी के झटके आयेंगे—सावधान रहें।

9 से 11 जून के मध्य वायदा व्यापारी सावधान रहें, अन्यथा हानि में रहेंगे।

12 जून से 13 जून तक पुनर्वसु नक्षत्र का बुध रुई, चांदी, कपास, सूत, सण में झटके से मन्दी कर सकता है।

15 जून शनिवार को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करके बुध-राहु एवं मंगल के साथ एक राशि सम्बन्ध (चतुर्ग्रही योग) बनाएगा एवं शनि की इन पर पूर्ण दृष्टि होगी। **यह योग विश्व या देश-विशेष में राजनीतिक दृष्टि से किंवा प्राकृतिक प्रकोप आदि कारणों से विषम स्थिति का संकेत देता है, जिसका प्रभाव व्यापारिक क्षेत्र पर**

प्रत्यक्षतः अनुभव होगा।

"एकराशिं गताह्येते चत्वारः पंच-खेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥"

पुनरपि, इस योग के फलस्वरूप कन्दमूल, फल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना एवं चावल आदि अनाज तेज रहेंगे। सोना, चांदी में भी झटके से तेजी सम्भव है।

(15 से 23 जून तक शेयरों में भारी मन्दी या तेजी बनेगी, सावधान रहें।)

16 से 20 जून के मध्य सोना, चांदी एवं अन्य धातुओं के **व्यापारी बहुत सावधान रहें, जोरदार तेजी-मन्दी बनेगी; इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें।**

20 जून को बुध कर्क राशि में प्रविष्ट होगा। इस समय रुई में लगभग 15 टका की (झटके से) मन्दी आएगी। चांदी में घटाबढ़ी से तेजी बने। गुड़, दूध, तेल, मूंगफली, सरसों एवं सोने में पहले कुछ तेजी आकर बाद में मन्दी आएगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आकर वर्षा-पानी का योग बनाएगा। परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त रहने के समाचारों से रुई, सूत, सण, कपास, खल, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, गेहूं, चावल, चना, जौ एवं चांदी में तेजी रहे। सोने में घटाबढ़ी रहे।

ध्यान दें, कि—ठीक 22 जून को मंगल कर्क राशि में प्रवेश करेगा। इस प्रकार शनि-मंगल का षडष्टक योग भी बन जाता है। अतः कहीं बाढ़, कहीं सूखा रहने से तेल, तिलहन एवं रुई में झटके के साथ **कदाचित् मन्दी बने, तो तुरन्त माल पकड़ें, बहुत जल्दी तेजी से लाभ होगा। वैसे हमारा विचार इन दिनों दालवाना, गुड़, शक्कर, चना, चावल, तिलहन, तेल, घी में तेजी का है,** फिर भी बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ाएं।

23 जून को मृगशिर नक्षत्र का शुक्र गेहूं, चना, ज्वार में मन्दी एवं गुड़, शक्कर, घी में तेजी करे।

24 जून से 26 जून के मध्य अनाज, दालें, सोना, चांदी, रुई मन्दे रहें। सोना, चांदी में झटके की मन्दी के बाद तेजी या तेजी के बाद मन्दी बने,—बाजार के रुख को जांच कर काम करें।

27 जून को रुई में जोरदार घटाबढ़ी चले एवं सोने में झटके के साथ अच्छी तेजी का योग है, क्योंकि पुष्य नक्षत्र का मंगल मैटल्स एवं लालमिर्च, मजीठ, सोना आदि में मन्दीकारक है।

29 जून के लगभग से शुक्र के मिथुन में आने पर सूर्य-राहु के साथ मेल होगा और इनका शनि के साथ समसप्तक भी बनेगा। यह ग्रहस्थिति मासान्त तक प्रभावी रहेगी। गेहूं, जौ, चना, चावल, दालें तेज रहेंगी। इस समय अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी से तेजी रहे। रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, वारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में जोरदार मन्दी सम्भव है। लेकिन **यह मन्दी जल्द ही तेजी में पलट जाएगी, तुरन्त स्टॉक-तुरन्त लाभ लें।**

जुलाई (सन् 2019 ई.)

2 जुलाई की ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य-शुक्र-राहु एवं चन्द्र के साथ शनि-केतु का समसप्तक है। बाजारों में आवक कम होने से महंगाई बढ़ेगी। 4 जुलाई को आर्द्रा नक्षत्र का शुक्र भी कहीं अधिक वर्षा या कहीं सूखे का कारण बने और प्रारम्भिक तेजी के बाद गेहूं आदि अनाजों के भावों में अचानक मन्दे का वातावरण बनेगा, लेकिन 5 जुलाई को रुई, सूत, सण, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, तिल, घी तेज होंगे। चांदी, खाण्ड, गुड़ मन्दे रहें। वायदा बाजार मन्दे रहें।

ध्यान दें—5/6 जुलाई को अनाज, तांबा, लोहा, पीतल, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में अचानक तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।

6 जुलाई को दिन में सूर्य के पुनर्वसु नक्षत्र में दाखिल होने पर रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों आदि तिलहन, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गलादि करियाना में तेजी का वातावरण रहेगा।

(6 से 9 जुलाई तक शेयर बाजार उठेंगे।)

अचानक मन्दी बनेगी।

10 सितम्बर को बुध भी कन्या राशि में आकर शुक्र के साथ एक राशि-सम्बन्ध बनाएगा। तिलहन बाजारों में जोरदार तेजी के आसार हैं, चांदी के बाजार भी जोरदार उठेंगे।

6 से 11 सितम्बर तक उड़द, मूंग, मसूर, मोठ, अरहर, गुड़, हल्दी, खाण्ड, ऊनी- रेशमी वस्त्र एवं चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा।

11 सितम्बर को राहु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में एवं केतु पू.षा. के दूसरे चरण में दाखिल होगा।

नोट करें—आर्द्रा नक्षत्र राहु का नक्षत्र है। अत: मिथुनस्थ राहु का सबसे क्रूर असर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होने पर ही शुरू होता है। इस समय तेलवाना (तिलहन) में जोरदार घटाबढ़ी शुरू होती है। गुड़, खाण्ड, तेल, घी, सरसों, एरण्ड, सोया, मूंगफली, बिनौला, रुई, कपास, चांदी एवं सभी अनाज तेज होंगे। यह तेजी 13 सितम्बर तक चलेगी।

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. में प्रविष्ट होगा। सूर्य ग्रह का असर रुई, अलसी, मूंगफली आदि तिलहन, तेल, घी, दालें, मोटे अनाज, सोना, शेयर, हल्दी तथा कालीमिर्च के बाजारों पर अनुभव किया गया है। सिंहस्थ सूर्य सोना, अलसी एवं कालीमिर्च में विशेष तेजी करता है। अत: इस समय रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंग एवं नील में तेजी बनेगी।

14 सितम्बर को शनिवारी अमावस भी तेजी का संकेत देती है। क्योंकि सूर्य-मंगल का नव-पंचम सम्बन्ध 16 अगस्त से 17 सितम्बर तक रहेगा। वायदा बाजार एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे। इसी मध्य 16 सितम्बर के लगभग बुध का हस्त नक्षत्र में प्रवेश गेहूं आदि अनाजों में मन्दी कर सकता है, सावधान रहें।

17 सितम्बर को सूर्यदेव कन्या राशि में आकर शुक्र एवं बुध के साथ मेल करेंगे। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लालमिर्च एवं सोना-चांदी में जोरदार तेजी का झटका आने पर तुरन्त लाभ लें। क्योंकि 17 सितम्बर को ही शनि भी मार्गी हो रहा है। नोट करें—शनि लगभग 1 मई से 17 सितम्बर तक वक्रगति से चल रहा था। 17 सितम्बर के लगभग ही शुक्र हस्त नक्षत्र में आएगा। अत: रुई, चांदी, चावल, सभी अनाज झटके से मन्दे रहें। गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी घटाबढ़ी चलेगी।

(16 से 18 सितम्बर तक शेयर बाजार मन्दे रहें।)

19 सितम्बर को मंगल उ.फा. में एवं 20 सितम्बर के लगभग बुध का उदय होगा। इस समय वस्त्र, रुई एवं **शेयर बाजार मन्दे रहें**। गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें।

व्यापारी नोट करें—24 सितम्बर के लगभग बुध चित्रा में आएगा एवं मंगल कन्या राशि में दाखिल होकर सूर्य-बुध एवं शुक्र के साथ एक राशि-सम्बन्ध बनएगा। शनि की इन पर दृष्टि भी है। इस समय देश की राजनैतिक गतिविधि से शेयर बाजार एवं वायदा बाजार प्रभावित होंगे,—सावधान रहें।

हमारे विचार से इस समय रुई एवं चांदी में झटके से तेजी बनेगी। सोना, चांदी, ऊनी-सूती वस्त्र, अलसी, गेहूं, घी, तिलहन, दालें एवं अन्य अनाज तेज रहेंगे।

(24 सितम्बर के लगभग शेयरों में जोरदार उठा-पटक रहेगी।)

25 सितम्बर को गुरु ग्रह ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में, 27 को सूर्य हस्त में एवं 28 सितम्बर को शुक्र चित्रा नक्षत्र में आकर पहले (25 सितम्बर के लगभग) चांदी में मन्दी एवं अनाजों में घटाबढ़ी करे। फिर गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, जीरा आदि में तेजी रहे।

29 सितम्बर को बुध तुला राशि में आएगा एवं शुक्र पश्चिम में उदित होगा। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, घी, खाण्ड मन्दे रहें। सूत, सण, सोना, चांदी, अफीम, तिल, चावल तेज रहेंगे।

लेकिन 28 सितम्बर को शनिवारी अमावस भी वायदा एवं हाजर बाजारों में 30 सितम्बर (मासान्त) तक तेजी से लाभप्रद रहेगी।

(24 से मासान्त तक शेयर बाजार तेज रहें।)

8 अगस्त को मंगल मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा। स्वतन्त्र रूप से इसका प्रभाव बाजारों पर पड़ेगा। अत: 8/9 अगस्त को गेहूं, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, तिलहन, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी, लालमिर्च, मजीठ एवं अन्य लाल रंग की चीज़ों में तेजी से लाभ लें। **ध्यान दें—9 अगस्त तक जब भी लाभ मिले, तुरन्त लाभ लें, आखिरी वक्त की प्रतीक्षा न करें।**

नोट—3, 5, 8 अगस्त को शेयर बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा।

9 अगस्त को बुध पुष्य नक्षत्र में आएगा एवं 10 अगस्त को गुरु मार्गी होकर सोना, चांदी में मन्दी; चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू में तेजी करे। अत: वायदा एवं हाजर के व्यापारी लगभग 15 अगस्त तक तेजी-मन्दी के उछालों से लाभ लें। **विशेषत: वायदा व्यापारी 9, 10, 11 अगस्त को मन्दी खेलकर लाभ लें।**

16 अगस्त को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर सिंहस्थ मंगल के साथ मेल करेगा साथ ही 17/18 अगस्त को सूर्य भी मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आयेगा। शुक्र-सूर्य एवं मंगल का योग व्यापार में जोरदार तेजी करेगा—यह नोट कर लें।

इन दिनों सभी अनाज, दालें, सोना, तांबा, जौ, चना, लाल चन्दन, लालमिर्च, केसर, गुड़, शक्कर, खाण्ड, तेल, तिलहन, दाख, बादाम, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात में अच्छी तेजी का झटका आएगा। (इन दिनों शेयरों में मन्दा बने)।

19 अगस्त के लगभग आश्लेषा नक्षत्र का बुध आगामी कुछ दिनों में ही तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली में तेजी से लाभ मिले। 21 अगस्त तक जब भी अच्छा लाभ मिले, तुरन्त ले लें, अन्तिम वक्त तक इन्तजारी नुकसान देगी।

नोट—16 से 21 अगस्त तक घी, तेल, तिलहन एवं गुड़, खाण्ड, चीनी, तिल आदि में तेजी से लाभ मिलेगा। तेजी के उछाले आएंगे।

22 अगस्त से 25 अगस्त तक की ग्रहस्थिति मन्दे के झटके देगी, स्टॉकिस्ट इन दिनों स्टॉक करें। 22 अगस्त के लगभग बुध के अस्त होने पर अनाज, घी, तेल, तिलहन में मन्दी के झटके आयेंगे, सावधान रहें। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी।

26 अगस्त को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर सूर्य-शुक्र-मंगल के साथ मेल करेगा। यह ग्रहस्थिति बाजारों में फोर्स की तेजी बनाएगी। वायदा व्यापारी तेजी खेलकर लाभ लें। ताजा मशवरा प्राप्त करें।

इस समय जौ, चना, गेहूं, सूत, रुई, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्र, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं वायदा बाजार भी तेज रहेंगे।

27/28 अगस्त के लगभग गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना आदि में शुक्र के पू.फा. नक्षत्र में आने पर अचानक मन्दी आ सकती है। सावधान रहें।

29 अगस्त को पू.फा. नक्षत्र का मंगल एवं 30 अगस्त को पू.षा. नक्षत्र के दूसरे चरण में वक्री शनि का प्रवेश कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार, तिल, तेल, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक आदि में तेजी करेगा। इन दिनों मासान्त (31 अगस्त) तक तेजी से लाभ रहे। मासान्त में पंचग्रही योग एवं राजनीति के प्रभाव से और जलवायु विचार से बाजार गड़बड़ रहेंगे।

"एकराशौ यदा यान्ति चत्वार: पंचखेचरा:।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥"

सितम्बर (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ (हिजरी सन् के प्रारम्भ) में जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊन, रुई, सूत, तिलहन तेज रहेंगे।

2 सितम्बर के लगभग बुध पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होकर सूर्य के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध भी बनाएगा। इस समय 6 सितम्बर तक सूर्य-शुक्र, मंगल एवं बुध सिंह राशि में ही हैं, अत: यह योग तेजी का ही रहेगा।

नोट करें—इस समय व्यापारियों की खरीद-शक्ति बढ़ती है। कपड़ा, सूत का उठाव ज्यादा होता है। इस समय फॉरन-एक्सपोर्ट में सरकार कोटा ऐलान कर सकती है। रुई में अच्छी तेजी का झटका आने का सबब बनेगा।

7 सितम्बर के लगभग शुक्र की स्थिति एवं नक्षत्र विचार से अचानक रुई और चांदी में मन्दी आ सकती है। लेकिन उड़द, मूंग, मसूर, मोठ एवं अरहर आदि में

अचानक मन्दी बनेगी।

10 सितम्बर को बुध भी कन्या राशि में आकर शुक्र के साथ एक राशि-सम्बन्ध बनाएगा। तिलहन बाजारों में जोरदार तेजी के आसार हैं, चांदी के बाजार भी जोरदार उठेंगे।

6 से 11 सितम्बर तक उड़द, मूंग, मसूर, मोठ, अरहर, गुड़, हल्दी, खाण्ड, ऊनी- रेशमी वस्त्र एवं चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा।

11 सितम्बर को राहु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में एवं केतु पू.षा. के दूसरे चरण में दाखिल होगा।

नोट करें—आर्द्रा नक्षत्र राहु का नक्षत्र है। अतः मिथुनस्थ राहु का सबसे क्रूर असर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होने पर ही शुरू होता है। इस समय तेलवाना (तिलहन) में जोरदार घटाबढ़ी शुरू होती है। गुड़, खाण्ड, तेल, घी, सरसों, एरण्ड, सोया, मूंगफली, बिनौला, रुई, कपास, चांदी एवं सभी अनाज तेज होंगे। यह तेजी 13 सितम्बर तक चलेगी।

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. में प्रविष्ट होगा। सूर्य ग्रह का असर रुई, अलसी, मूंगफली आदि तिलहन, तेल, घी, दालें, मोटे अनाज, सोना, शेयर, हल्दी तथा कालीमिर्च के बाजारों पर अनुभव किया गया है। सिंहस्थ सूर्य सोना, अलसी एवं कालीमिर्च में विशेष तेजी करता है। अतः इस समय रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंग एवं नील में तेजी बनेगी।

14 सितम्बर को शनिवारी अमावस भी तेजी का संकेत देती है। क्योंकि सूर्य-मंगल का नव-पंचम सम्बन्ध 16 अगस्त से 17 सितम्बर तक रहेगा। वायदा बाजार एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे। इसी मध्य 16 सितम्बर के लगभग बुध का हस्त नक्षत्र में प्रवेश गेहूं आदि अनाजों में मन्दी कर सकता है, सावधान रहें।

17 सितम्बर को सूर्यदेव कन्या राशि में आकर शुक्र एवं बुध के साथ मेल करेंगे। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लालमिर्च एवं सोना-चांदी में जोरदार तेजी का झटका आने पर तुरन्त लाभ लें। क्योंकि 17 सितम्बर को ही शनि भी मार्गी हो रहा है। नोट करें—शनि लगभग 1 मई से 17 सितम्बर तक वक्रगति से चल रहा था। 17 सितम्बर के लगभग ही शुक्र हस्त नक्षत्र में आएगा। अतः रुई, चांदी, चावल, सभी अनाज झटके से मन्दे रहें। गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी घटाबढ़ी चलेगी।

(16 से 18 सितम्बर तक शेयर बाजार मन्दे रहें।)

19 सितम्बर को मंगल उ.फा. में एवं 20 सितम्बर के लगभग बुध का उदय होगा। इस समय वस्त्र, रुई एवं शेयर बाजार मन्दे रहें। गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें।

व्यापारी नोट करें—24 सितम्बर के लगभग बुध चित्रा में आएगा एवं मंगल कन्या राशि में दाखिल होकर सूर्य-बुध एवं शुक्र के साथ एक राशि-सम्बन्ध बनएगा। शनि की इन पर दृष्टि भी है। इस समय देश की राजनैतिक गतिविधि से शेयर बाजार एवं वायदा बाजार प्रभावित होंगे,—सावधान रहें।

हमारे विचार से इस समय रुई एवं चांदी में झटके से तेजी बनेगी। सोना, चांदी, ऊनी-सूती वस्त्र, अलसी, गेहूं, घी, तिलहन, दालें एवं अन्य अनाज तेज रहेंगे।

(24 सितम्बर के लगभग शेयरों में जोरदार उठा-पटक रहेगी।)

25 सितम्बर को गुरु ग्रह ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में, 27 को सूर्य हस्त में एवं 28 सितम्बर को शुक्र चित्रा नक्षत्र में आकर पहले (25 सितम्बर के लगभग) चांदी में मन्दी एवं अनाजों में घटाबढ़ी करे। फिर गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, जीरा आदि में तेजी रहे।

29 सितम्बर को बुध तुला राशि में आएगा एवं शुक्र पश्चिम में उदित होगा। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, घी, खाण्ड मन्दे रहें। सूत, सण, सोना, चांदी, अफीम, तिल, चावल तेज रहेंगे।

लेकिन 28 सितम्बर को शनिवारी अमावस भी वायदा एवं हाजर बाजारों में 30 सितम्बर (मासान्त) तक तेजी से लाभप्रद रहेगी।

(24 से मासान्त तक शेयर बाजार तेज रहें।)

अक्तूबर (सन् 2019 ई.)

आश्विन शुक्ल तृतीया, 1 अक्तूबर को मंगलवार होने से भी अनाज, दालवाना, सोना आदि में तेजी का संकेत मिलता है। कहीं अग्निकाण्ड आदि से हानि भी सम्भव है—

"आश्विनेहि तृतीयायां भौमवारो यदा भवेत्।
तदात्वग्नि:प्रबलो भूम्यामन्नादीनां महर्घता॥"

अत: मासारम्भ में शेयर बाजार एवं वायदा बाजार तेज रहें। **3 अक्तूबर को शुक्र तुला राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा।**

शुक्र विशेषत: कपास, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, तिलहन, घी, चांदी आदि के बाजारों को प्रभावित करता है। **शुक्र एवं बुध जब अकेले साथ होते हैं तो बाजारों में मन्दी का वातावरण बना देते हैं। यदि मन्दी का ट्रैण्ड बने तो जोरदार मन्दी का धमाका लाता है। कदाचित् तेजी का ट्रैण्ड चले तो शुक्र साधारण तेजी करता है।**

हमारे विचार से सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, अफीम में तेजी के बाद मन्दी बनेगी।

3 से 6 अक्तूबर तक बाजार अनिश्चित रहेंगे।

7 अक्तूबर के लगभग शनि पू.षा. के तृतीय चरण में आएगा। तिलहन, घी एवं दालवाना व्यापार को शनि विशेष रूप से प्रभावित करेगा। इन दिनों हमारे विचार से कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार, घी, बाजरा में तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त होगा। क्योंकि इस समय राहु भी शनि को पूर्णतया प्रभावित कर रहा है।

9 अक्तूबर के लगभग शुक्र स्वाती नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। स्वाती नक्षत्र शुक्र का निजी नक्षत्र है। यह योग अचानक बाजारों में मन्दी ला सकता है, सावधान रहें। 11 दिन में गुड़, खाण्ड में कुछ तेजी एवं अनाजों में मन्दी का वातावरण बनाएगा।

10 अक्तूबर को हस्त नक्षत्र में मंगल का प्रवेश होगा। सूर्य-मंगल दोनों क्रूर हैं। शनि की इन पर विशेष दृष्टि भी है। कन्या राशि का मंगल खासतौर पर रुई, कपास, चांदी, सोना, तेल, तिलहन, घी, दालें, बाजरा आदि में तेजी करता है। यहां सूर्य का सन्निकर्ष एवं शनि की दृष्टि विशेष तेजी करेगी। उल्लिखित वस्तुओं एवं गुड़, खाण्ड, नमक के व्यापारी तेजी से अच्छा लाभ ले सकते हैं।

11 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर प्रत्येक वायदा बाजार और हाजिर बाजारों को प्रभावित करेगा। **शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध इस समय वायदा बाजार एवं शेयर बाजारों में भयंकर उलटफेर करेगा, सावधान रहें।** हमारे विचार से 15 दिन में रुई, सोना, चांदी, मोती आदि रत्न; गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, दालें, मसाले, लालमिर्च, घी, तिलहन में तेजी का झटका आ सकता है, सावधानी से तुरन्त लाभ लें।

नोट—जिस प्रकार राहु एवं शनि का बाजारों पर एक-सा प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार सूर्य-मंगल के एक साथ होने का प्रभाव अनुभव किया गया है। यह 11 अक्तूबर वाली तेजी 12 अक्तूबर तक चलेगी।

13 अक्तूबर को बुध विशाखा नक्षत्र में आकर बाजारों का रुख बदल सकता है। हमारे अनुभव के अनुसार सभी अनाज, दालें एवं रुई में विशेष मन्दी का झटका आ सकता है। यह उठा-पटक 16 अक्तूबर तक रहेगी।

17/18 अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में प्रविष्ट होकर बुध एवं शुक्र के साथ एक-राशि सम्बन्ध बनाएगा। **इस समय भी शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध चल रहा है। यह योग वायदा एवं हाजर बाजारों में तेजी मन्दी के रिएक्शन लाएगा। इस समय नीच राशिस्थ सूर्य पहले तेजी, फिर मन्दी करेगा।** लेकिन ध्यान रहे कि—सूर्य का बुध-शुक्र के साथ मेल है, अत: तेजी का अच्छा झटका आएगा, तुरन्त लाभ लें।

"एकराशिं गताह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपा:।
सर्वधान्य महर्घत्वं तथा भयविवर्धना:॥"

17 अक्तूबर को बृहस्पति भी ज्येष्ठा नक्षत्र के चौथे चरण में आकर बाजारों में झटके के साथ मन्दी करेगा। अत: इस समय अनाज कुछ तेज रहेंगे। सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में अच्छा मन्दा रहेगा। 19 अक्तूबर तक बाजार अस्थिर रहेंगे।

20 अक्तूबर के लगभग शुक्र के विशाखा नक्षत्र में आने पर बाजारों में खरीद-फरोख्त बढ़ेगी। विशेषत: गुड़, खाण्ड, घी, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चांदी के बाजारों में जोरदार तेजी आ सकती है, सावधान रहें।

22 अक्तूबर के लगभग मंगल के उदित होने पर 5 दिन में रुई, उड़द, तिल, तेल एवं अलसी तेज रहें। अनाज मन्दे रहें।

23 अक्तूबर को बुध वृश्चिक राशि में आकर बृहस्पति के साथ एक राशि-सम्बन्ध बनाएगा। जब शुक्र या गुरु के साथ बुध का मेल होता है तो बुध शुभ माना जाता है। यद्यपि मंगल की राशि में बुध तेल, पाट, बारदाना व कुछ अन्य बाजारों में तेजी करता है। परन्तु गुरु का साथ घी, तेल, तिलहन, सरसों, रुई और चांदी में साधारण तेजी करेगा। अनाजों में मन्दे का रुख रहेगा।

24 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आकर रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गल, घी में तेजी का झटका लाएगा।

नोट—23 से 28 अक्तूबर के मध्य शेयर बाजारों में अच्छी तेजी का झटका आएगा।

28 अक्तूबर को शुक्र भी वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। इस प्रकार बुध-गुरु एवं शुक्र ये तीनों वृश्चिक राशि में हैं। **इस समय शेयर बाजार में भयंकर तेजी या जोरदार मन्दा बनेगा—समझ से काम करें।** इस समय रुई, चांदी, अफीम में पहले मन्दी, पीछे तेजी बनेगी। गुड़ में घटाबढ़ी, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाज मन्दे हों। अलसी तेज।

नोट—चूंकि 28 अक्तूबर को गुरु (शुभ ग्रह) के साथ शुक्र-बुध का मेल हुआ है। अत: हमें इन दिनों वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार गिरावट मालूम देती है।

30 अक्तूबर को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में आकर गुड़, खाण्ड, चावल एवं नमक आदि में मन्दा करे।

31 अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का मंगल 12 दिन में गेहूं, चावल, चना, सोना, चांदी, तांबा, पीतल तेज करेगा, क्योंकि मंगल पर शनि की दृष्टि भी है।

(28 अक्तूबर से मासान्त तक मन्दे का विचार रखें।)

नवम्बर (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ में सटोरियों की अफवाहों से बाजार तेजी की तरफ रहेंगे।

4 नवम्बर को गुरु मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में एवं धनु राशि में दाखिल होगा। इस समय धनु राशि में शनि केतु भी हैं एवं इन सब पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। यह योग वायदा एवं हाजर बाजारों में धमाके की मन्दी कर सकता है। —सावधान रहें। हमारे विचार से गुड़, खाण्ड, शक्कर की उपज अधिक होने की अफवाह से गुड़ आदि में भारी मन्दी की सम्भावना भूल होगी। क्योंकि गुरु-शनि योग है। अत: गुड़ादि तेज ही रहेंगे। कुलथ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी, नमक, गेहूं आदि अनाज, पाट, सण, तिल, तेल, घी, पीतल, लोहा, तांबा, कांसी, सिक्का आदि मन्दे हों।

नोट—इस मास में प्राकृतिक प्रकोप (कहीं सूखा कहीं अग्निकाण्ड आदि) से फसलों एवं जनधन की हानि होगी, जिससे महंगाई होगी एवं स्टॉकिस्ट लाभ लेने की चेष्टा में रहेंगे। क्योंकि शनि-गुरु की एक राशि में स्थिति शुभ नहीं—

**"यदा जीवयुतो मन्दोजीवाद्वा सप्तमे स्थित:।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्न-परिक्षय:॥"**

5 नवम्बर को बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बाजार का रुख पलट सकता है। **6 नवम्बर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में** आएगा। सूर्य रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, कपास, अनाज, सोना, चांदी, शेयर बाजार, हल्दी तथा कालीमिर्च के बाजारों को प्रभावित करता है। **सूर्य एवं वक्री बुध 7 नवम्बर को एकत्र होंगे। ये भी तेजीकारक हैं।** तेजड़िये तेजी से लाभ लेंगे।

(7 से 11 नवम्बर तक बाजारों में अच्छी तेजी के झटके आयेंगे।)

अब विस्तार से—

10 नवम्बर को मंगल ग्रह तुला राशि में आकर लगभग 14 नवम्बर तक सूर्य-बुध के साथ एक राशि में ही रहेंगे। यह योग वायदा एवं हाजर बाजारों में भयंकर तेजी

करेगा। सावधानी से काम करें। **बुध बालग्रह है। जब यह सूर्य के साथ मेल करता है तो चल रही तेजी-मन्दी की रफ्तार को और बढ़ा देता है। सूर्य फसलों को जन्म देता है। मंगल सूर्य के साथ फसलों को पकाता है। लेकिन ये सब तेजी का संकेत देते हैं।** हमारे विचार से ये ग्रहस्थिति रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाज, घी, तेल, तिलहन, सोना, चांदी, तांबा में अच्छी तेजी करेगी।

13 नवम्बर को राहु आर्द्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में एवं केतु पू.भा. के प्रथम चरण में प्रविष्ट होंगे। **मिथुन राशिस्थ राहु पर शनि-गुरु-केतु की दृष्टि भी है।**

व्यापारी नोट करें कि—**इस समय तेजड़िये तेजी खेलकर तुरन्त लाभ लें, अन्यथा हानि में रहेंगे।** मोटे अनाज, दालें, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, सोया आदि तिलहन व रुई में जोरदार तेजी आकर मन्दा बनेगा। **स्टॉकिस्ट पहले ही स्टॉक करें और इस समय तेजी से तुरन्त लाभ लें।**

15 नवम्बर को वक्री बुध स्वाती में आएगा, यहां बाजार धड़ाम से नीचे जा सकते हैं। रुई आदि के व्यापारी स्टॉक करें।

17 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर लगभग 21 नवम्बर तक शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय रुई, चांदी, सोना, तांबा, पीतल, लोहा, लालमिर्च, मसाले एवं कस्तूरी, ऊनी वस्त्रों में तेजी रहेगी।

18 नवम्बर के लगभग बुध पूर्व में उदित होगा। बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है, सावधानी से काम करें।

20 नवम्बर को सूर्य अनुराधा में एवं मंगल स्वाती में प्रविष्ट होंगे। इस समय जौ, चना आदि अनाज, तिलहन, घी, ऊन व सोना, चांदी में तेजी बनेगी।

21 नवम्बर को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर गुरु-शनि एवं केतु के साथ एक राशि-सम्बन्ध बना लेगा। इस समय गेहूं, जौ, चना आदि अन्न; चांदी, सोना, तांबा आदि धातु एवं शेयर बाजार भी तेज रहेंगे। रुई में तेजी के बाद मन्दी बने। 21 नवम्बर के लगभग ही गुरु मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर कुलथ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा एवं सोना, चांदी में मन्दी करे। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

26 नवम्बर को बुध विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करके अनाजों में मन्दी कर सकता है, रुई के भाव में उठा-पटक रहे।

नोट—बुध का मेल इस समय मंगल के साथ होने से 26 नवम्बर के बाजार तेज भी रह सकते हैं, अतः सावधान रहें।

26 नवम्बर को शनि पू.षा. के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र-गुरु एवं केतु के साथ शनि का मेल है। शनि ग्रह का सीधा सम्बन्ध रुई, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, बिनौला आदि की फसल व पैदावार से है। इस समय फसल खराब होने की अफवाह से बाजारों में तेजी बनेगी।

अनाज, दालें, जीरा, तिलहन, तेल, घी, जौ, ज्वार, बाजरा आदि तेज रहेंगे। मासान्त तक गुरु-शुक्र-राहु एवं शनि की पोजीशन बाजारों में तेजी का ही संकेत देती है।

दिसम्बर (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ से पूर्व ही शनि-गुरु-शुक्र एवं केतु—ये चारों ग्रह धनु राशि में चल रहे हैं। विश्व में प्राकृतिक आपदा एवं राजनैतिक व्यवस्था किंवा चीन आदि की विस्तारवादी नीति, सीमातिक्रमण आदि से वातावरण बिगड़ेगा, जिससे व्यापार क्षेत्र प्रभावित होगा। अतः इस मास में वायदा व्यापारी सावधान रहें।

1 दिसम्बर को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आकर मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक आदि में झटके से मन्दी ला सकता है, स्टॉक करें।

3 दिसम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्य सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी करेगा, लेकिन रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी।

5 दिसम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। यद्यपि वृश्चिक राशि का बुध मन्दे का संकेत देता है, लेकिन जब बुध का सूर्य के साथ मेल होता है, तो बुध तेजीकारक हो जाता है, ऐसा अनुभव है। अतः यहां मन्दी की उम्मीद होने पर भी तेजी से लाभ मिलेगा। घी, तेल, सरसों, तोड़िया, मूंगफली आदि तिलहन,

चावल, दालें, गुड़, खाण्ड एवं रुई में तेजी बनेगी। सोना एवं चांदी में भी उठा-पटक के बाद तेजी रहे।

6 दिसम्बर को गुरु मूल 3 में आएगा। कुलथ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी मन्दे होंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे।

7 दिसम्बर के लगभग बुध जब अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा, तब बाजारों में स्थिरता अनुभव होगी। रुई, सूत, सण, सोना, चांदी में मन्दी या स्थिरता रहे। अनाजों के भाव भी सम रहेंगे।

7 से लगभग 9 दिसम्बर तक बाजारों में उठा-पटक रहेगी। आगे बाजार लाइन पर आएंगे।

10 दिसम्बर को मंगल विशाखा नक्षत्र में आएगा। परिणामस्वरूप रुई, दालबाना, तिलहन, घी, दालें, मोटे अनाज, रुई, कपास एवं वस्त्र तेज रहेंगे।

11 दिसम्बर को ये तेजी अच्छी फल सकती है।

12 दिसम्बर को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आकर गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, घी एवं तिलहन में मन्दे का झटका ला सकता है। क्योंकि शुक्र, शनि, केतु; गुरु के साथ हैं, अत: अनाजों में तेजी एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी।

15 दिसम्बर को शुक्र, मित्र ग्रह शनि की राशि मकर में दाखिल होगा। इस समय शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि भी रहेगी। अकेला शुक्र कभी-कभी अच्छी मन्दी करता है। शुक्र गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन एवं चांदी के बाजारों को विशेष रूप से प्रभावित करता है।

इस समय शुक्र पर मंगल की खास दृष्टि होने से शेयर बाजारों में तेजी, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन, गेहूं, चना आदि सभी अनाजों एवं रुई, चांदी में तेजी रहे, फिर भी बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ाएं।

16 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होकर शनि-गुरु एवं केतु के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार चार ग्रहों का एकत्र होना व्यापार में उठा-पटक करेगा, सावधानी से काम करें।

इस समय रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, अलसी, तिल, तेल, घी में तेजी बने। अनाजों में कुछ मन्दी रहे।

ध्यान दें—16 दिसम्बर को ही बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर घी, गुड़, खाण्ड एवं चावलों में तेजीकारक ही रहेगा।

नोट—16 दिसम्बर के लगभग वायदा एवं हाजर के व्यापारी सावधानी से काम करें। क्योंकि इसी दिन के लगभग धनु राशिस्थ गुरु भी अस्त हो रहा है।

(इस समय 15/16 दिसम्बर को शेयर बाजार तेज रहेंगे। वायदा बाजार भी तेज रहें। सोना, चांदी में मन्दी का झटका आए।)

17 दिसम्बर के लगभग बुध भी पूर्व में अस्त होगा। यह ग्रहस्थिति भी बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी करेगी। इस समय अनाज, घी, कपास, तेल, तिलहन, दालें मन्दी रहें। रुई में घटाबढ़ी, पहले तेज, फिर मन्दी, अन्त में फिर तेजी बनेगी। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

20 दिसम्बर को गुरु मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। यह बाजारों में अचानक मन्दी कर सकता है। कुलथ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी में मन्दा बने। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी ही रहे। तेजी-मन्दी का सिलसिला लगभग 24/25 दिसम्बर तक चलेगा।

25 दिसम्बर को बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर सूर्य-शनि-गुरु-केतु के साथ पंचग्रही योग बनाता है। जलवायु विचार से एवं राजनैतिक दृष्टि से यह समय व्यापारियों को संभलकर कार्य करने का है। रुई, कपास, सूत, चांदी, दालों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी बनेगी।

25 दिसम्बर को मंगल भी वृश्चिक राशि में दाखिल होकर गुड़, रुई, सोना, चांदी आदि धातु एवं घी, तेल, तिलहन आदि सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी करेगा।

27 दिसम्बर को शनि उ.षा. के प्रथम चरण में आकर लगभग अस्त होने को है। अत: रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारा, दालें, अलसी, सरसों आदि तिलहन, घी, तेल, सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र, नमक, चावल, गेहूं, चना, जौ, कपास, रुई,

सूत, वस्त्र के व्यापारी तेजी से लाभ लें।

(शेयर बाजारों में 25/26/27 दिसम्बर को जोरदार उठा-पटक या मन्दी अथवा तेजी आएगी, सावधान रहें। हमारे विचार से तेजी बनेगी।)

29 दिसम्बर को पू.षा. नक्षत्र का सूर्य 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, अलसी, हल्दी, गुग्गल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण एवं चांदी में तेजी से लाभ देगा।

30/31 दिसम्बर के लगभग मंगल अनुराधा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। रुई, कपास, गेहूं, लालमिर्च, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी का झटका आएगा। तुरन्त लाभ लें।

(शेयर बाजार मासान्त में तेज रहें।)

जनवरी (सन् 2020 ई.)

नोट—मासारम्भ से पहले ही तेजी से नफा बुक कर लें, ग्रहगोचर के अनुसार जल्दी ही झटके की मन्दी से हानि उठानी पड़े। मासारम्भ में यदि मन्दी आए, तो माल स्टॉक करें, आगे उत्तम लाभ मिलेगा। लेकिन ग्रहस्थिति अभी तेजीकारक ही है।

2 जनवरी के लगभग बुध पू.षा. नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इस समय बुध-सूर्य-शनि-गुरु एवं केतु—ये सब धनु राशि में हैं। सूर्य भी पू.षा. नक्षत्र में आ चुका है। इस प्रकार बुध-सूर्य एक ही नक्षत्र में हैं। अतः इस समय मन्दी की सम्भावना होने पर भी हमें तेजी ही मामूल देती है, अतः सावधान रहें। तिल, तेल, हन्दी, सरसों, बिनौला, गुड़, घी, दालें एवं बाजरा आदि अनाज तेज रहें; हां, इस समय सोना, चांदी में झटके की मन्दी आ सकती है।

3 जनवरी को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई एवं कपास में तेजी बनेगी, तुरन्त लाभ लें, क्योंकि 4 जनवरी को गुरु उ.षा. नक्षत्र में आकर रुई, सभी धातुओं एवं अनाजों में मन्दा करेगा।

आगे मन्दा खेलने वाले व्यापारी सावधान रहें, क्योंकि **8 जनवरी को शुक्र ग्रह कुम्भ राशि में आएगा और इस समय शुक्र पर शनि एवं मंगल की विशेष दृष्टि भी होगी।** ऐसी स्थिति में चांदी, सोना, दालबाना, रुई, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा में कुछ मन्दी आकर जोरदार तेजी बनेगी।

(जनवरी 3 को वायदा बाजार मन्दे रहें। 8 से 10 तक तेजी प्रधान रहे।)

लगभग 11 जनवरी को सूर्य एवं बुध दोनों उ.षा. नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे एवं बृहस्पति का उदय भी लगभग इन्हीं दिनों में होगा। इस समय धनु राशि में पंचग्रही योग चल रहा है। अतः उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लालमिर्च, शक्कर, कपास, सरसों, मूंज, पाट तेज रहेंगे। चांदी तेज एवं सोना मन्दा रहे।

12 जनवरी को **बुध मकर राशि** में आकर रुई, सोना, चांदी में झटके की तेजी करेगा, अनाजों के भाव स्थिर रहें।

(12 जनवरी को शेयर बाजार तेज रहें।)

12 से 14 जनवरी तक वायदा एवं हाजर बाजारों में उठा-पटक रहेगी।

15 जनवरी को सूर्यदेव मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। लगभग इसी दिन राहु आर्द्रा नक्षत्र में एवं केतु मूल 4 में दाखिल होगा। लगभग 14 जनवरी को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। यह योग भयंकर तेजी का है, नोट कर लें। घी, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, रुई, चावल, सोना, चांदी तेज रहें।

नोट करें कि—राहु के आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होने से पहले यदि बाजार मन्दे हों, तो स्टॉक भरपूर करें; आर्द्रा नक्षत्र में आने पर उत्तम लाभ मिलेगा, क्योंकि इस समय राहु पर मंगल-शनि की दृष्टि भी है।

(इन दिनों शेयर मार्किट में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन आयेंगे।)

उपरोक्त ग्रहस्थिति के फलस्वरूप घी, तेल, अलसी, सरसों, तारामीरा, बिनौला, रुई, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूं, चावल, जौ, बाजरा, मूंग, मोठ, कपास तेज रहें। सोना, चांदी भी तेज रहें।

15 से 17 जनवरी तक बाजारों में अच्छे तेजी के झटके आएंगे, लाभ लें।

18 जनवरी को गुरु पू.षा. के दूसरे चरण में आकर रुई एवं सारी धातुओं में

मन्दी का झटका ला सकता है, सावधान रहें।

19 जनवरी के लगभग बुध श्रवण नक्षत्र में एवं मंगल ज्येष्ठा में आकर रुई और चांदी में घटाबढ़ी, गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में तेजी कर सकते हैं। अफीम में भी तेजी रहेगी।

नोट—19 से 23 जनवरी तक बाजारों में उठा-पटक रहेगी। वायदा व्यापारी तेजी में मन्दी एवं मन्दी में तेजी खेलकर लाभ लेते रहें।

24 जनवरी को सूर्य श्रवण नक्षत्र में आएगा। ठीक इसी दिन (24 जनवरी, सन् 2020 ई. को) शनि भी उ.षा. द्वितीय चरण में आकर मकर राशि में आएगा। यह योग विशेषरूप से नोट कर लें। मकर राशि का शनि देश में अघटित घटना को जन्म दे सकता है, जिससे शेयर बाजार एवं हाजर-वायदा बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी हो सकती है, सावधानी से काम करें। वैसे शास्त्रानुसार इस समय गेहूं, जौ, चावल आदि सभी अनाज, रुई, कपास, सूत, सण, सोना, चांदी, तांबा, जिंक, लोहा, गुड़, खाण्ड, सुपारी, लौंग, चन्दन, मजीठ, दाख, छुआरे एवं घी, तेल, तिलहन में इस समय जोरदार तेजी सम्भव है।

(शनि-सूर्य-बुध का मकर राशि में एक साथ आना 24/25 जनवरी के लगभग शेयर बाजारों में ऐतिहासिक उठा-पटक करे।)

25 जनवरी के लगभग शुक्र पू.भा. में एवं 26 जनवरी के लगभग बुध धनिष्ठा में आकर चावल, दालबाना में तेजी-मन्दी के झटके लाएगा। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। सोना, चांदी में तेजी के बाद मन्दी रहे।

29 जनवरी के लगभग बुध के उदित होने पर शेयर बाजार मन्दे होंगे। गुड़, खाण्ड, घी तेज रहें।

30/31 जनवरी के लगभग बुध कुम्भ राशि में आएगा। इस समय कुम्भस्थ बुध पर मंगल की दृष्टि होने से तेजी का ही संकेत मिलता है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई, अलसी, तिलहन एवं चांदी में तेजी से लाभ मिलेगा। तुरन्त लाभ लें, आगे अचानक मन्दी आ सकती है।

फरवरी (सन् 2020 ई.)

मासारम्भ में ही शनि की पोजीशन के मुताबिक व्यापार में भारी उथल-पुथल होगी। रुई, शेयर बाजार, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दी बने। 1 फरवरी को मकरराशिस्थ शनि उदित होगा।

2 फरवरी को शुक्र मीन राशि में आकर शनि की नजर में आ जाएगा। इसी दिन के लगभग गुरु पू.षा. के तीसरे चरण में दाखिल होगा। बहुत सावधानी से व्यापार बढ़ाएं। क्योंकि अकेला शुक्र चांदी में पहले साधारण मन्दी करता है, लेकिन यहां शनि की शुक्र पर दृष्टि होने से हमें धमाके की तेजी मालूम देती है।

लोहा, सीसा, रांगा, चावल, खाण्ड, अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड में उठा-पटक रहे। तेजी प्रधान रहेगी। सोना, चांदी में मन्दी का झटका आकर तेजी हो।

3/4 फरवरी को बुध शतभिषा में आकर सोना, चांदी में मन्दी, अनाजों में तेजी करे। **(4 फरवरी के लगभग शेयर बाजारों में उछाला आने की उम्मीद है।)**

5 फरवरी को उ.भा. में शुक्र एवं 6 फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र में सूर्य के आने पर बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

सोना, चांदी, मोती आदि जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाज, अलसी, रुई, तिलहन तेज हों।

7 फरवरी को मंगल ग्रह मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होगा। मंगल, भौम होने से पृथ्वी से उपजने वाली प्रत्येक उपज से सम्बन्ध रखता है। मौसम हवा वर्षा पानी पर प्रभाव प्रत्यक्ष है। तेल, तिलहन, रुई, कपास, जूट, चांदी, सोना तथा शेयर बाजारों पर मंगल का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव किया गया है। इस समय चावल, चना, जौ, मूंग, तांबा, चांदी, सोना एवं रुई में तेजी या मन्दी हो। **क्योंकि मंगल धनु राशि में गुरु के साथ मेल करता है, अतः हमें इस समय सभी बाजारों में तेजी की जगह मन्दी मालूम देती है। बाजार के रुख को देखकर काम करें।** यद्यपि धनुस्थ मंगल तेजी करता है फिर भी हमें बाजार मन्दे नजर आते हैं।

(7 फरवरी के लगभग शेयर बाजार तेज रहेंगे।)

14 जनवरी, 2020 ई. से 12 फरवरी तक शनि-सूर्य का मकर में रहना प्राकृतिक आपदा, राजनैतिक विप्लव एवं सीमा प्रान्तों पर अशान्ति रहने से व्यापार में भारी उठा-पटक रहेगी, सावधान रहें।

13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय मंगल एवं शनि की शुक्र पर दृष्टि भी है। यद्यपि कुम्भ का सूर्य कभी-कभी बाजारों में मन्दी करता है, फिर भी यहां बुधादित्य योग तेजीकारक ही है। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, रुई, पाट, गेहूं आदि अनाज एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेजी ही रहे।

13 से 16 फरवरी तक वायदा एवं हाजर बाजारों में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी प्रधान रहेगी।

17 फरवरी को बुध वक्री होगा। शनि की राशि में सूर्य-बुध की स्थिति राजनेताओं के लिए विषम रहेगी। व्यापार एवं शेयर बाजार प्रभावित होंगे। गुड़, शक्कर, दालें, घी, तेल तेज होंगे एवं अलसी, सरसों में मन्दी सम्भव है।

नोट—कदाचित् बुध के वक्री होने पर बाजार पलट जाएं, तो विचारपूर्वक स्टॉक या वायदा खेलें, क्योंकि यहां एक लाइन में बाजार नहीं चलेगा। क्योंकि ठीक इसी दिन 17 तारीख (फरवरी) के लगभग ही शुक्र रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। यह मन्दीकारक है। रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं जवाहरात मन्दे हों।

18 फरवरी को गुरु पू.षा. के चतुर्थ चरण में आकर बाजारों में मन्दी ही करेगा। रुई, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, सीसा, जिंक एवं अनाजों में मन्दे का ही वातावरण रहे।

(17, 18 फरवरी के लगभग शेयरों में जोरदार तेजी या मन्दी बनेगी, बहुत समझ से काम करें। हमारा विचार तेजी का है।)

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में प्रविष्ट होकर तेजीकारक रहेगा। लेकिन इसी दिन सूर्य के साथ कुम्भ राशि में स्थित बुध पश्चिम में अस्त होकर कुछ बाजारों में मन्दी का संकेत देता है, अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमारे विचार से सोना, चांदी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, दाख, छुआरा, जायफल, सोंठ, हल्दी, गेहूं, गुड़, घी में तेजी बनेगी। चांदी में 15/20 टका की शीघ्र मन्दी होगी। **पाट, हैसियन एवं शेयर बाजार मन्दे होंगे।** 21/22 फरवरी तक बाजार प्रायः तेज रहेंगे।

23 फरवरी को शनि उ.षा. नक्षत्र के तीसरे चरण में दाखिल होगा। **शेयर बाजार के व्यापारी एवं स्टॉकिस्ट 17 से 20/22 फरवरी तक माल पकड़ें।** 23 फरवरी से आगे पहले, तीसरे एवं छठे महीने में दोगुना, तीन गुना लाभ होगा। इस समय अनाज, रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुआरा तेज होंगे। 25 से 26 फरवरी को बाजार ऊपर-नीचे (अस्थिर) रहेंगे।

27 फरवरी को मंगल पू.षा. नक्षत्र में आकर सोना, चांदी, तांबा, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली आदि तिलहन तेज करेगा।

28 फरवरी को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर जौ, चना, गेहूं, बाजरा आदि अनाज, घी, सोना, चांदी में अच्छी तेजी करे। गुड़, शक्कर, पाट, बारदाना आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी आए। ऊन, तिल, तेल, अलसी, सरसों, एरण्डी में कुछ मन्दी बने।

(शेयर बाजार मासान्त में तेज रहेंगे।)

नोट—यदि फरवरी के अन्तिम दिनों में अनाजों एवं घी, गुड़ आदि में मन्दी आए, तो माल पकड़ें, आगे मार्च के लगभग तक अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

मार्च (सन् 2020 ई.)

मासारम्भ में वायदा एवं हाजर बाजारों में कुछ मन्दी या तेजी रह सकती है। क्योंकि 2 मार्च के लगभग वक्री बुध धनिष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। **ध्यान दें—**धनिष्ठा नक्षत्र का बुध चावल आदि अनाजों में तेजी, चांदी में मन्दी एवं रुई में घटाबढ़ी करता है। परन्तु यहां सूर्य-बुध का मेल झटके से तेजी भी कर सकता है, अतः सावधान रहें।

लगभग 3 मार्च को बुध का पूर्व में उदय एवं मंगलवार को होलाष्टक का प्रारम्भ होना तेजी का संकेत देता है। सभी अनाज, दालबाना, गुड़, चीनी, घी, तेल, तिलहन में तेजी का वातावरण रहे।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आकर सभी बाजारों में अच्छी तेजी करेगा। रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, मक्का, उड़द, चावल, जौ, ज्वार, चना, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़,

खाण्ड, गुग्गल, पिप्पलामूल एवं रुई में अच्छी तेजी बने। तुरन्त लाभ लें।

7 मार्च को गुरु उ.षा. नक्षत्र के प्रथम चरण में आकर गुड़, खाण्ड, घी एवं तेल, तिलहन में झटके की तेजी से लाभ देगा। **नोट—यद्यपि गुरुग्रह मन्दीकारक है, लेकिन यहां मंगल-केतु के साथ गुरु का मेल होने से तेजी ही करेगा, ऐसा विचार है।** फिर भी सावधानी से काम करें। हां, इस समय अनाज कुछ सस्ते रहेंगे।

11 मार्च से पहले ही तेजी से निकल जाने की सलाह है, क्योंकि 9 मार्च के लगभग होलिका दहन के बाद गुड़, चीनी, तेल, तिलहन की खपत कम हो जाने से भी मन्दे का रुख बन सकता है।

11 मार्च के लगभग बुध मार्गी एवं शुक्र भरणी में आएगा। इस समय चन्दन, सुपारी, नारियल, अंगूर, दाखें तेज रहें। रुई में मन्दी के बाद तेजी, चांदी, सोना में भी अच्छी मन्दी के झटके के बाद तेजी रहे। अफीम, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल एवं लाल चीज़ों में मन्दी रहे। चना, मूंग, मोठ, ज्वार, अरहर में घटाबढ़ी रहे। यह ट्रेंड 13 मार्च तक उठा-पटक वाला रहेगा।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर शनि एवं मंगल की दृष्टि में आ जाता है। तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना तेज रहेंगे। हरेक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेजी के बाद अचानक मन्दी बने। चांदी में स्थिरता के लक्षणों के बाद एकदम तेजी आएगी। 16 मार्च तक बाजारों में तेल, तिलहन, गेहूं, मैदा आदि में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी-मन्दी रहेगी।

17 मार्च को व्यापारी नोट कर लें। 17 मार्च को सूर्य उ.भा. नक्षत्र में एवं इसी दिन मंगल उ.षा. नक्षत्र में आएगा। चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, बिनौला, तिलहन, घी, तेल, सरसों, मूंगफली आदि तिलहन तेज रहें। रुई में विशेष तेजी बनेगी।

18 मार्च के लगभग वायदा एवं हाजर के सभी व्यापारी बहुत अच्छी तरह बाजार के रुख को देखकर काम करें, क्योंकि 18 मार्च के लगभग बुध शतभिषा में एवं राहु आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में आकर वायदा बाजारों में जोरदार उठा-पटक बनाएगा। चांदी, सोने में मन्दी का रुख रहे। **इस समय यदि अनाजों में मन्दी हो, तो भरपूर स्टॉक करें। एक/दो मास में तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।** अनुभव किया गया है, कि—आर्द्रा के राहु में सभी अनाज, अलसी, सरसों, तिल, तेल व सभी तिलहन एवं रुई में प्रायः मन्दी का वातावरण रहता है। **यहां राहु पर गुरु की पूर्ण दृष्टि होने से विशेष मन्दी का झटका आएगा, सावधान रहें।** 21 मार्च (सन् 2020 ई.) तक उत्तम-मध्यम रूप से मन्दी-तेजी के रिएक्शन आयेंगे।

22 मार्च को मंगल शनि की राशि मकर में दाखिल होकर शनि के साथ मेल करेगा। यह योग विश्व की राजनीति को क्षुब्ध करने वाला है। कहीं व्यापक युद्धमय वातावरण बनने से भयंकर तेजी-मन्दी बनेगी, सावधान रहें। इस वक्त रुई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवं ऊन तेज हो। अनाज, दालबाना में भी तेजी सम्भव है। 23 मार्च तक तेजी से लाभ लेकर निकल जाएं। 24 मार्च को शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में आकर बाजारों में मन्दी का रुख बना सकता है। हमारे विचार से इस समय जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, बिनौला, खल, रुई, सूत, ऊन, वस्त्र, चांदी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दे का रुख रहेगा।

28 मार्च को शुक्र वृष राशि में आकर स्वगृही रहेगा। शुक्र का विशेष प्रभाव रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, तिलहन तथा चांदी के बाजारों पर देखा गया है। क्योंकि अकेला शुक्र मन्दीकारक होता है, अतः यहां घटाबढ़ी से मन्दी करेगा।

29 मार्च को गुरु मकर राशि में दाखिल होगा। ध्यान दें, मकर राशि में शनि-मंगल भी मौजूद हैं। यद्यपि गुरु मन्दी-प्रधान ग्रह है। सभी हाजर बाजारों पर जोरदार घटाबढ़ी करता है। यहां शनि-मंगल का साथ होने पर भी गुरु तेजी को रोक देता है।

मकरस्थ गुरु जलवायु को प्रभावित करता है, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं राजनैतिक स्थिति से व्यापार प्रभावित होगा।

"मकरे तु गुरौ याते दुर्भिक्षं घोर-दारुणम्।
विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥"

लगभग 31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर शनि-मंगल से दृष्ट भी होगा। सूर्य का प्रभाव रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, शेयर बाजार, हल्दी, कालीमिर्च पर विशेष रहता है। यहां सूर्य पर शनि की नजर होने से मार्च के अन्त में तेजी मालूम देती है।

॥ ॐ शुभं भूयात्॥

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में कहा है कि क्रान्तिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाये, तो उसकी वृद्धि होती है— *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥"* यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों का निर्माण एवं मन्त्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि-साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहा-वारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी-कभी ही आते हैं।

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिये, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति-पुण्यकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2019 ई.					
20 जन.	8	5	20 जन.	20	53
18 फर.	22	10	19 फर.	10	58
20 मार्च	21	4	21 मार्च	9	52
20 अप्रै.	8	1	20 अप्रै.	20	49
21 मई	7	4	21 मई	19	52
21 जून	15	0	22 जून	3	48
23 जुला.	1	56	23 जुला.	14	44
23 अग.	9	8	23 अग.	21	56
23 सितं.	6	55	23 सितं.	19	43
23 अक्तू.	16	26	24 अक्तू.	5	14
22 नवं.	14	5	23 नवं.	2	53
21 दिसं.	3	25	21 दिसं.	16	13
सन् 2020 ई.					
20 जन.	14	00	21 जन.	2	48
19 फर.	4	02	19 फर.	16	50
20 मार्च	2	56	20 मार्च	15	44

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भांति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यन्त्र-मन्त्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2019 ई.					
18 जन.	18	11	19 जन.	7	17
30 जन.	7	25	30 जन.	15	47
12 फर.	20	52	13 फर.	2	54
24 फर.	9	42	24 फर.	14	44
9 मार्च	21	34	10 मार्च	2	40
21 मार्च	21	48	22 मार्च	1	22
3 अप्रैल	23	13	4 अप्रैल	3	00
16 अप्रैल	11	49	16 अप्रैल	16	30
29 अप्रैल	1	36	29 अप्रैल	8	9
11 मई	20	34	12 मई	3	37
23 मई	23	35	24 मई	12	7
14 जुलाई	16	58	15 जुलाई	10	50
28 जुलाई	4	37	28 जुलाई	12	50
8 अगस्त	20	47	9 अगस्त	3	10
22अगस्त	11	42	22 अगस्त	17	19
3 सितं.	6	44	3 सितं.	11	12
16 सितं.	14	53	16 सितं.	19	52
28 सितं.	23	08	29 सितं.	3	07
11 अक्तू.	17	47	11 अक्तू.	22	59
24 अक्तू.	15	25	24 अक्तू.	20	04
सन् 2019-20 ई.					
5 नव.	20	58	6 नव.	03	31
20 नवं.	1	05	20 नवं.	08	30
30 नवं.	23	00	1 दिसं.	11	40
9 जन.	0	13	9 जन.	14	25
20 जन.	23	8	21 जन.	7	31
3 फर.	11	6	3 फर.	17	33
15 फर.	7	14	15 फर.	12	10
28 फर.	15	17	28 फर.	20	25
11 मार्च	21	4	12 मार्च	0	58
24 मार्च	18	20	24 मार्च	23	11

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ ..20 ... देखिये।

वारुणी पर्व (सन् 2019 ई.) (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
2 अप्रैल	8	38	2 अप्रैल	सूर्यास्त	
सन् 2020 ई.					
22 मार्च	सूर्योदय		22 मार्च	10	8
महावारुणी पर्व (सन् 2020 ई.)					
21 मार्च	19	40	—	—	
महोदय योग (सन् 2019 ई.)					
4 फर.	7	57	4 फर.	सूर्यास्त	

ध्यान रहे—मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। मन्त्रोच्चारणादि की अशुद्धि व अनभिज्ञता स्पष्टरूप से वज्रपात-सम घातक (विनाशकारी) मानी गयी है—

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥"

अनेक विद्वानों द्वारा अनुभूत यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों का चमत्कार (सं. 2076 वि.)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़-निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**—दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों किंवा **'यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के लिए महत्त्वपूर्ण साधनाकाल'** की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनके चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है—**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रच्छन्न शक्ति होती है—

"मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः॥"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्‌भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं—**"अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश-प्रतापू॥"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें।

नोट—मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देख-रेख में गुप्तरुप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है—**"गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

कुछ अनुभूत आश्चर्यजनक मन्त्र प्रयोग

स्वप्न में अभीष्ट प्रश्न के सही उत्तर जानने के लिए रुद्रमन्त्र प्रयोग

मन्त्रः—"ॐ नमो भगवते रुद्राय मम कर्णरन्ध्रे प्रविश्य अतीतानागत-वर्तमानं सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।"

विधि—इस उल्लिखित मन्त्र का दस दिनों में दस-दस हजार जाप करें। अनुष्ठान पूर्ण होने पर दशांश आहुतियां देकर रुद्रदेव को प्रसन्न करें। फिर रात्रि में पवित्रावस्था में कुशासन पर बैठें एवं बायीं तरफ नीचे शयन करें। देवता आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर स्वप्न में अवश्य देंगे।

स्वप्नेश्वर मन्त्र-प्रयोग

मन्त्रः—"ॐ नमो सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।"

विधि—गुड़ाकेश (निद्रापति) श्री विष्णुभगवान् का ध्यान करके उल्लिखित मन्त्र का 1000 (एक हजार) बार जाप करें। फिर पूर्व की ओर सिर करके दाहिनी करवट लेट जायें। स्वप्न में प्रश्न का उत्तर सही मिलेगा।

स्वप्न में इच्छित-कार्य का उत्तर पाने के लिए स्वप्नेश्वरी देवी का मन्त्र

मन्त्रः—"ॐ क्षां क्षीं क्षें क्षुं क्षौं क्षः भगवति मम सर्वनिमित्त-ज्ञान-

ठः ठः नमः॥"

विधि—इस मन्त्र का जाप शुभ मुहूर्त में अर्धरात्रि में प्रारम्भ करें। अर्धरात्रि में 11 माला प्रतिदिन धूप-दीप-नैवेद्यादि-सहित पूर्ण विधि, विश्वास एवं श्रद्धा से करें। सरस्वती माता का ध्यान करके पाठ शुरु करें। ऐसा कुछ दिन करने पर देवी इच्छित कार्य का उत्तर स्वप्न में ही बता देती है, यह अनुभूत है।

व्यापार में शीघ्र लाभ हो

व्यापार में शीघ्र लाभार्थ निम्नांकित मन्त्र का विधि-विधानपूर्वक जाप करने से पूर्वजन्मार्जित अशुभ कर्मों की शान्ति होने पर उत्तम लाभ होगा;—यह अनेकदा अनुभूत है।

मन्त्रः—"ॐ नमो भगवति चाण्डालिनि मम नगर-प्रवेशं शुभदं कल्याणप्रदं कुरु, नर-नारी-महीपति-आबाल-गोपाल-जनान् वश्यं कुरु कुरु, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः फट् स्वाहा।"

विधि—इस मन्त्र से कांटे (शूल) पर 21 बार पढ़कर फूंक मारे और क्षीर वृक्ष (दूध वाले वृक्ष) के तने या पत्ते पर अभिमन्त्रित कांटे को चुभा दें। अपने इष्टदेव का ध्यान करके बायां पैर 3 बार आगे बढ़ाकर यात्रा करें, तो मान-सम्मान एवं प्रचुर मात्रा में व्यापार में अर्थलाभ होगा।

नगर ग्राम किंवा शहर विशेष से लाभ-प्राप्त्यर्थ मन्त्र

मन्त्रः—"गच्छ गौतम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषु च। आसनं वसनं चैव—ताम्बूलं यज कल्पयेत्॥"

विधि—इस मन्त्र को हरी दूब (दूर्वा) पर पूर्वाभिमुख होकर 7 बार अभिमन्त्रित करके (फूंक मारकर) मुख से "श्री गौतम ऋषि" को न्योता (आमन्त्रण) है"—ऐसा उच्चारण करे। अभिमन्त्रित दूब को अपनी पगड़ी, टोपी या अपनी पॉकेट में सुरक्षित रखें, फिर ग्राम, नगर में प्रवेश करें, तो व्यापार में पूर्ण लाभ, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो;—यह अनेक विद्वानों द्वारा अनेकदा परीक्षित है।

रोजी (नौकरी) मिले एवं धन-धान्य वृद्धि के लिए मन्त्र

मन्त्रः—"ॐ नमो भगवति पद्मावति सर्वजनमोहिनि सर्वकार्य-करणी मम विकट संकटहरणी मम मनोरथ पूरिणि, मम चिन्तापूरिणि ॐ नमो, ॐ पद्मावति नमः स्वाहा।"

विधि—प्रातः सायं कम्बल आसन पर बैठकर धूप-दीप करके उल्लिखित मन्त्र की एक-एक माला जाप करें। केसर या लाल चन्दन से भोजपत्र या गंगाजल से शुद्ध वस्त्र पर पंचदशी यन्त्र लिखकर मन्त्र जाप के समय सामने रखें। धूप-दीप-नैवेद्य से पूजन करें। साधक कुछ ही दिनों में सुख-शान्तिपूर्वक आजीविका प्राप्त कर लेगा। सुख-शान्ति एवं धन-धान्य समृद्धि होगी।

स्वप्न में प्रश्नोत्तर-ज्ञानार्थ 'योजन-गन्धा योगिनी' मन्त्र प्रयोग

मन्त्रः—"योजनगन्धा योगिनी ऋद्धि-सिद्धि में भरपूर। मैं आयो तोय जांचणे करिओ कारज जरूर॥"

विधान—सवा सेर गेहूं का आटा, अढ़ाई पाव घी, अढ़ाई पाव खाण्ड—ये सब मिलाकर भून लें। शनिवार के दिन सूर्योदय से पहले (निराहार स्थिति में) जंगल में जाकर चींटियों के बिल में थोड़ा-थोड़ा कसार गिराता जाये और साथ ही उल्लिखित मन्त्र जाप करता जाये। मन्त्रजाप करते समय एकान्त (जंगल) में घूमता रहे। मध्याह्न ढलने पर जब थक जाये, तो किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करें। उस समय निद्रावस्था में एकाकी स्त्री या पुरुष सामने आयेगा और साधक को अभीष्ट प्रश्न का उत्तर देगा।—यह चार प्रहर का प्रयोग निराहार व्रत रखकर ही करें।

इस मन्त्र के प्रयोग से पहले दिन ही प्रश्न का उत्तर मिलने लगेगा;—इसमें सन्देह नहीं। यह विधान कई दिनों तक लगातार करने पर मनोवांछित फल प्राप्त कर सकते हैं। भोजन घर आकर रात्रि में करें।

कर्णपिशाचिनी सिद्धि

ध्यान दें—निम्नांकित गुह्य मन्त्र का जाप कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से प्रारम्भ

करें। किसी एकान्त किंवा मन्दिर में बैठकर सवा लाख मन्त्र का जाप दक्षिणाभिमुख होकर करें। सवा लाख मन्त्र जाप पूरा होने पर दशांश होम करें। ऐसा कर लेने पर स्वतः भूत-भविष्यत् एवं वर्तमान का वर्णन कान में प्रत्यक्षवत् अनुभव होने लगेगा।

मन्त्रः—"ॐ रक्ते महारक्ते इडि विडि सुणिदे कर्णपिशाचिनी आगच्छ भगवति सत्यं वदतु स्वाहा।"

श्रीरामभक्त हनुमान जी द्वारा धन-ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए अनुभूत मन्त्र प्रयोग

मन्त्रः—"ॐ चिन्तामणि हनुमते आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्यादि वांछितं सकलं मम अभीष्टसिद्धिं नवनिधिं देहि देहि स्वाहा।"

विधि—श्रद्धाभक्तिपूर्वक राम पंचायत और मेहंदीपुर बाला जी के चित्रपट के पास सिद्ध श्रीयन्त्र, गणपति यन्त्र की रंगीन फोटो स्थापित करें। मन्त्रजाप करते समय कुशा या ऊन के आसन पर बैठकर प्रातः पूर्वाभिमुख एवं सायं उत्तराभिमुख होकर पंचोपचार पूजन करते समय **"श्रीराम जयराम, जय जय राम"** का जाप करें। फिर तुलसी माला से 108 बार उल्लिखित श्री हनुमान जी के मन्त्र का जाप निष्ठापूर्वक करता रहे। प्रसादरूप में तुलसीदल रखें। शुद्ध देसी घी से बने बेसन के लड्डू भी प्रसादरूप में चढ़ायें।

लगभग एक मास तक विधिवत् उक्त मन्त्र का जाप करने से धन-धान्य-वैभव की प्राप्ति के आप अनेकों अवसर प्राप्त करेंगे।

मन्त्र को दीपमाला,शिवरात्रि किंवा ग्रहणादि काल में सिद्ध कर लेना चाहिए।

सफल यात्रा एवं कार्य-सिद्ध्यर्थ अनुभूत मन्त्र

यात्रा प्रारम्भ करने से पहले थोड़ा-सा गुड़, दही एवं चावल खाकर मस्तक पर चन्दन का तिलक करके माता सीता-श्रीराम-लक्ष्मण एवं तुलसी जी का स्मरण-ध्यान करके यात्रा प्रारम्भ करें। यात्रा सुखद एवं कार्यसिद्धि सुनिश्चित होगी। विरोधी पक्ष हतप्रभ रहेगा।

**मन्त्रः—"ॐ यः स्मरेत्तुलसीं सीतां-राम-सौमित्रिणा सह।
कार्यं कृत्वा रिपून् जित्वा क्षेमेणायाति वै नरः॥"**

सिद्ध उच्चाटन प्रयोग

(इस प्रयोग को अनुचित लाभ के लिए न करें, अन्यथा पाप के भागी होंगे)।

प्रयोग—शनिवार को 7 शमशानों (मसाणों) की भस्म, 7 चौराहों की मिट्टी, 7 सूखे कुओं के मण के ऊपर की मिट्टी—इन सबको मिलाकर जिस घर (या जगह) पर गिरा देंगे, वहां वास (रहना) हानिप्रद रहेगा। ध्यान रहे, मिट्टी ऐसी जगह गिराई जाये, जहां साफ न हो सके।

(यह उच्चाटन प्रयोग अधम/नीच किंवा पापी व्यक्ति के लिए ही है। सत्पुरुष के लिए किया गया यह प्रयोग कर्ता के लिए हानिप्रद रहेगा)।

पुराणोक्त मृत्युंजय मन्त्र

संकटापन्न-दैहिक-दैविक एवं भौतिक आपदाग्रस्त व्यक्ति के लिए निम्नांकित मन्त्र सर्वोत्तम है—अनुभव करें;—

**मन्त्रः—"ॐ मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥"**

प्रसव पीड़ा से राहत पाने के लिए शाबर जल-मन्त्र

निम्नांकित मन्त्र से ताजे शुद्ध जल को 7 बार अभिमन्त्रित करके प्रसव से पूर्व स्त्री को पिला दें तथा कुछ जल का छींटा दे दें, शीघ्र ही सुखपूर्वक प्रसव होगा।

मन्त्रः—"आकाश टले, पर्वत टले, राम-लक्ष्मण दुई लाचा, सुन की कर कोका कोकी रिचा कुण्डली वलिया, बाहरी हब असिया, सिद्ध गुरु कालिका चण्डी, खरे शीघ्र करिया भूमे पे पड़े॥"

परदेश गया हुआ अथवा नाराज होकर घर से गया व्यक्ति शीघ्र ही घर लौटेगा

आस्य यन्त्र
५७५दुनदन३६५६१६

दायीं ओर दिये गये 'आस्य यन्त्र' को घोड़े के खुर के नाल के नीचे काली स्याही से लिखकर अग्नि में तपायें, तो 7 दिन में ही परदेश गया व्यक्ति वापस लौट आता है।

आकर्षण यन्त्र
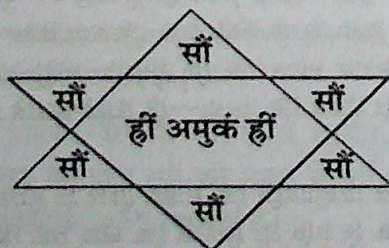
इस षट्कोण यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर पंचोपचार पूजन करके मिट्टी के घड़े में स्थापित करके नित्य कलश का पूजन करता रहे। प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके निम्नांकित मन्त्र का जाप करें। इस यन्त्र एवं मन्त्र में जहां 'अमुकं' शब्द लिखा है, वहां जिस व्यक्ति का वशीकरण (आकर्षण) करना हो, उसका नाम लिखना चाहिए।

मन्त्रः—"ॐ आकर्षय महादेवि अमुकं हि मम प्रियम्। ऐं त्रिपुरे देव-देवे तुभ्यं दास्यामि याचितम्॥"

मनोकामना सिद्धि के लिए यन्त्र

गाय के कच्चे दूध से धोये हुए सफेद कागज़ पर केसर, चन्दन, कपूर, गंगाजल और खस की स्याही बनाकर अनार की कलम से इस यन्त्र को शुक्लपक्ष की द्वितीया से लिखना प्रारम्भ करें। प्रतिदिन कम-से-कम 24 बार लिखकर यन्त्रों को आटे की गोलियों में बन्द कर लें।

ध्यान दें—यन्त्र के नीचे अपना मनोरथ जरूर लिखें। आटे से बनी गोलियों को एक-एक करके नदी में बहा दें।

इस यन्त्र को प्रयोग में लाने से पहले दीपमाला की रात्रि किंवा ग्रहण-वेला में विधिवत् लिखकर सिद्ध कर लेना चाहिए। यन्त्र लिखते समय माता भगवती का ध्यान करके धूपदीप प्रकाशित करके विधिपूर्वक लिखें।

प्रयोग पूर्ण होने पर मुकद्दमे में विजय, परीक्षा में सफलता, नौकरी प्राप्त करना आदि अभीप्सित कार्य-सिद्धि अनुभव की गयी है।

यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४
मनोरथ (यहां लिखें)		

कुछ तान्त्रिक प्रयोग

1. धनलाभार्थ—रामभक्त श्री हनुमान जी की पूजा के समय सरसों का तेल लेकर प्रज्वलित दीपक में डालें और उसमें दो साबुत लौंग डालें एवं दीपक से श्री हनुमान जी से धनलाभार्थ प्रार्थनापूर्वक पूजा करें, शीघ्र ही दरिद्रता से मुक्ति मिलेगी;—अनुभव करें।

2. बुखार (ज्वर) से मुक्ति पाने के लिए—(i) यदि बुखार से परेशान हैं, कोई दवा असर नहीं कर रही, तो अर्क (आक) की जड़ को लेकर उसे किसी शुद्ध (अनलग) कपड़े में जौंर से बांध दें, फिर उस कपड़े को रोगी की बाजू पर बांध दें, ज्वर से शीघ्र मुक्ति मिल जायेगी।

(ii) बीमार व्यक्ति सोते समय सिरहाना पूर्व की ओर रखें। शयन कक्ष में

एक कटोरी में सेंधा नमक के कुछ टुकड़े अवश्य रखें। ऐसा करने से बुखार से मुक्ति मिलेगी।

3. कार्यसिद्धि के लिए—वैसे तो शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है, कि— **"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"**, लेकिन जब हमारे प्रयास कमजोर नज़र आयें, व्यापार किंवा फैक्ट्री में घाटा नज़र आये, तो आप निम्नांकित प्रयोग करें, आश्चर्यजनक लाभ होगा।

शुक्लपक्ष में किसी भी दिन अपनी फैक्ट्री या दुकान के दोनों तरफ बाहर की ओर थोड़ा-सा गेहूं का आटा रख दें। ध्यान रहे, ऐसा करते समय आपको कोई देखे नहीं। व्यापार में वृद्धि होगी एवं चिन्ता से मुक्ति मिलेगी।

4. मानसिक परेशानी से मुक्ति मिले—आजकल प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी कारण परेशान है। इस परेशानी से मुक्ति के लिए आप एक तांबे के पात्र में जल भरकर उसमें थोड़ा-सा लाल चन्दन मिलाकर उस पात्र को सिरहाने की तरफ रख लें। प्रातः उस जल को तुलसी के पौधे में चढ़ा दें। निरन्तर 15 दिन (एक पक्ष) ऐसा करने से सभी प्रकार की परेशानियां स्वतः दूर होंगी, समस्याएं सुलझ जायेंगी।

5. कन्या की शादी शीघ्र हो—कन्या की शादी में यदि बाधा आ रही हो, तो 5 नारियल लेकर शिव-पार्वती जी का ध्यान करके **"ॐ वर-प्रदाय श्री शंकराय नमः ॐ"**—इस मन्त्र की पांच माला करके पांचों नारियलों को शिवमन्दिर में श्रद्धापूर्वक चढ़ा दें, 15 दिन में ही कार्य-सिद्धि होगी।

6. मुकद्दमे में विजयः—मार्गशीर्ष (अगहन) मास में अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ को शुभ नक्षत्र में उखाड़कर पीले या लाल धागे से दायीं भुजा पर बांध कर कोर्ट-कचहरी में जायें तो निश्चित विवाद में विजय होगी।

7. सर्ववशीकरण तिलकः—शुद्ध सिन्दूर, शुद्ध केसर, शुद्ध गोरोचन—बराबर मात्रा में पीसकर साफ डिबिया में रखें। मस्तक पर इसका तिलक लगायें तो सम्मुखस्थ शासक, जज, स्त्री-पुरुष—सब मोहित (वशीभूत) हो जाते हैं, यह प्रयोग अनेकों विद्वानों द्वारा अनुभूत है।

दारिद्र्यनाशक तथा नवग्रहों की शान्ति हेतु एक सरलतम अनुभूत तान्त्रिक विधान

मन्त्रः—"ॐ नमो भास्कराय 'अमुकस्य' सर्वग्रहाणां पीड़ा-नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।"

नोट—इस मन्त्र में जिस व्यक्ति-विशेष के लिए विधान करना है, **'अमुकस्य'** के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें। अपने लिए पाठ करें तो 'अमुकस्य' की जगह 'मम' शब्द का प्रयोग करें।

विधि—आक, धतूरा, अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़, दूब, बड़ व पीपल की जड़ें, शमी (खेजड़ी) आम एवं गूलर के पत्ते—ये सब चीजें एक मिट्टी के बर्तन में रखकर, उस पात्र में घी-दूध डाल दें। चावल, चना, मूंग, गेहूं, तिल, गोमूत्र, सफेद सरसों, कुशा, चन्दन, शहद, छाछ (मट्ठा)—ये सब वस्तुएं भी उसी कुल्हड़ (मिट्टी के बर्तन) में रखें। तत्पश्चात् शनिवार को सायंकाल 108 बार इस कुल्हड़ को उल्लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके एकान्त में किसी पीपल की जड़ के पास गाड़ दें। ऐसा करने से घोर पातक, दरिद्रता, ग्रहजन्य पीड़ा तत्काल समाप्त हो जाती है। इस विधान से अनेकों लाभान्वित हुए हैं—अनुभव करें।

अखण्ड भण्डार हेतु तान्त्रिक प्रयोग

दीपावली, शिवरात्रि के दिन या कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या गुरु-रवि-पुष्यामृग-योग में मयूरशिखा (एक जंगली जड़ी) लाकर, निम्नांकित मन्त्र द्वारा जड़ी को 108 बार अभिमन्त्रित करके सिन्दूर किंवा कस्तूरी का तिलक लगायें। धूप देकर इस जड़ी को तिजोरी में रखें। अखण्ड लाभ, अखण्ड भण्डार बना रहेगा।

मन्त्रः—"ॐ मयूरशिखा महासुखं सर्वकार्यं साधय साधय स्वाहा।"

(पृष्ठ 96 का शेष)

नोट—देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों, सेठों, व्यापारियों की तिजोरियों में इस प्रकार की सिद्ध जड़ी लाल कपड़े में बांध कर रखी रहती है।

कारागार से मुक्ति हेतु शाबर मन्त्र

निम्नांकित मन्त्र से पहले गुड़ एवं आटे का पूड़ा बनाकर, केले के पत्ते पर रख लें। पूड़े पर कुंकुम से कैदी का नाम लिख दें। साधना करते समय केले के पत्ते को सामने रखकर, उस पर पुष्प चढ़ायें। मन्त्र जाप पूरा होने पर, उस पूड़े को रात्रि में ही निर्जन स्थान में रखकर, घर आ जायें। इस प्रकार प्रतिदिन कृष्णपक्ष में 15 दिन साधना करें। 15 दिन में सवालाख मन्त्रजाप पूर्ण होने पर उस आखिरी दिन बनाये हुए पूड़े को किसी कन्या को दिन में खिला दें। यथोचित वस्त्र-दक्षिणा भी दें। 108 हनुमान् चालीसा पढ़ें एवं इस मन्त्र का जाप करें। तुरन्त कैदी से मिलने हेतु प्रयास में सफलता मिलेगी।

रात्रि के समय लालकम्बल के आसन पर बैठकर, दक्षिण की ओर मुंह करके, निम्नांकित मन्त्र का जाप मूंगे की माला से करें। सवा लाख मन्त्रजाप करने पर यह आश्चर्यजनक प्रभाव दिखाता है।

मन्त्रः—"ॐ हनुमन्तवीर, वेग आवो, 'अमुक' बन्दी को बन्धन से छुड़ाओ। बेड़ी तोड़ो, ताला तोड़ो, सारे बन्धन तोड़ो। मोड़ो 'अमुक' बन्दी को बन्धन से छुड़ाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥"

———

(पृष्ठ 96 का शेष)

स्थान पर गणपतिपूजन मन्त्रजाप, यज्ञ, गोदानादिपूर्वक पुनः वाग्दान करके शुभ कार्य करने की आज्ञा है—

"प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासान्तरात्।
शान्तिं विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥"

तुलसी-स्थापना से लाभ

1. अगर बच्चा बहुत जिद्दी किंवा मर्यादा से बाहर हो, पूर्व दिशा में स्थापित तुलसी के पौधे के तीन पत्ते प्रतिदिन उस बच्चे को किसी तरह खिला दें, बच्चा मर्यादा में रहेगा।

2. कन्या के विवाह में अड़चन आ रही हो, तो तुलसी के पौधे को दक्षिण-पूर्व में रखकर उसे कन्या नियमित रूप से जल अर्पित करे। योग्य वर जल्दी मिलेगा।

3. कारोबार ठीक नहीं, तो तुलसी के पौधे को नैर्ऋत्य कोण में स्थापित करके शुक्रवार को कच्चे दूध से सींचें। कारोबार में वृद्धि होने लगेगी।

4. नौकरी में उच्चाधिकारियों से परेशानी हो, तो ऑफिस के किसी भी कोने में तुलसी के 16 बीज किसी सफेद कपड़े में बांधकर दबा दें। आपके सम्बन्ध मधुर होने लगेंगे।

5. तुलसी को घर में लगाने से घर में बुरी आत्माओं का साया परिवार पर नहीं पड़ता।

6. हिन्दु मान्यता के अनुसार तुलसी भाग्योदयकारक है। अतः कुछ लोग कोई भी शुभकार्य करते समय तुलसी की पत्ती मुंह में रखते हैं।

7. तुलसी का पौधा घर में होने से घर वालों को बुरी नज़र से प्रभावित नहीं होने देता। अन्य बुराइयां भी घर वालों से दूर रहती हैं। घर का वातावरण पूरी तरह पवित्र रहता है, देवी-देवताओं की तुलसी वाले घर में विशेष कृपा रहती है।

तुलसी का घर में होना वास्तुदोषों की शान्ति का भी कारक स्पष्ट अनुभव किया गया है।

कुछ अनुभूत तन्त्र प्रयोग

1. सिन्दूर व सफेद आक की जड़ को केले के रस में घिसकर मस्तक पर तिलक रूप में लगाने से मुकद्दमे में विजय एवं शत्रु भी अनुकूल हो जाते हैं।

2. ऋतुस्नान के बाद स्त्री प्रातः एरण्ड का एक बीज निगल ले, तो उस मास गर्भस्थिति नहीं होती।

3. ढाक (पलाश) के बीजों को आक के दूध में अच्छी तरह पीसकर एक गोला बना लें। बिच्छू आदि के लड़ जाने पर डसे हुए स्थान पर पानी से घिसकर लगा लें, तुरन्त आराम मिलेगा।

———

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के जिज्ञासु पण्डितों के लिए कुछ साधारण जानकारी

भद्रा दोष का विचार

शुभ कृत्यों में भद्रा के दोष को भारी कष्टप्रद, हानिकारक किंवा विनाशक माना गया है—

"न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन।
कुर्यन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत्सर्वं नाशतां नयेत्॥"

ध्यान दें—भद्रा दोष का परिहार भी निम्नांकित चार स्थितियों में माना गया है—

1. भद्रा का वास स्वर्ग या पाताल में हो।
2. प्रतिकूल काल वाली भद्रा हो।
3. दिनार्ध के अनन्तर वाली भद्रा हो।
4. भद्रा का पुच्छकाल हो।

1. स्वर्ग या पाताल में भद्रा—यदि भद्रा के समय चन्द्रमा मेष, वृष, मिथुन किंवा वृश्चिक राशियों में हो, तो **भद्रा का वास स्वर्ग में** माना जाता है। यदि भद्रा के समय चन्द्रमा कन्या, तुला, धनु एवं मकर राशियों पर हो, तो **भद्रा का वास पाताल में** कहा गया है।

यदि भद्रा के समय चन्द्रमा कर्क, सिंह, कुम्भ किंवा मीन राशि पर हो, तो उस **भद्रा का वास भूमि पर** माना गया है।

ध्यान दें—वही भद्रा दोषावह है, जिसका भूमि पर वास हो। शेष स्वर्ग एवं पाताल में वास करने वाली भद्रा का काल शास्त्रों के अनुसार शुभ कार्यों में वर्ज्य नहीं। "भूलोकस्था सदा त्याज्या स्वर्ग-पातालगा शुभा।"

2. प्रतिकूल काल वाली भद्रा—तिथि के पूर्वार्ध में रहने वाली भद्रा अर्थात्— कृष्णपक्ष की सप्तमी, चतुर्दशी और शुक्लपक्ष की अष्टमी एवं पूर्णिमा तिथियों वाली भद्राएं दिन की कहलाती हैं। तिथि के उत्तरार्ध में रहने वाली,कृष्णपक्ष की तृतीया-दशमी एवं शुक्लपक्ष में चतुर्थी, एकादशी तिथियों में व्याप्त भद्राएं **रात्रि की भद्राएं** कहलाती हैं।

यदि दिन की भद्राएं रात्रि में एवं रात्रि की भद्राएं दिन में आ जाएं, तो उसे '**प्रतिकूल काल वाली भद्रा**' कहा जाता है। इस प्रतिकूलकालीन भद्रा को आचार्यों ने शुभ माना है।

3. दिनार्ध के अनन्तर वाली भद्रा—यदि भद्रा दिनार्ध (मध्याह्न) से पूर्ववर्ती काल में हो, उसे अशुभ, यदि भद्रा परवर्ती काल (मध्याह्न के बाद) में हो, तो उसे शुभ माना गया है।

4. भद्रा का पुच्छकाल—सभी मुहूर्त्त-ग्रन्थों में '**भद्रामुख काल**' को अशुभ माना है;—"**विष्टेरास्यमसत्**" और '**भद्रापुच्छकाल**' को शुभ लिखा गया है;—"**पुच्छे ध्रुवोजय:**"।

अलग-अलग तिथियों वाली भद्राओं के मुख और पुच्छ का कालबोधक कोष्ठक (मुहूर्त्त-संहिताग्रन्थों के अनुसार)

भद्रा की तिथि	भद्रामुख काल	भद्रापुच्छकाल
कृष्णपक्ष 3	4थे प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	3रे प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
कृष्णपक्ष 7	3रे प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	2रे प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
कृष्णपक्ष 10	2रे प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	1ले प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
कृष्णपक्ष 14	1ले प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	4थे प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
शुक्लपक्ष 4	1ले प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	4थे प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
शुक्लपक्ष 8	2रे प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	1ले प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
शुक्लपक्ष 11	3रे प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	2रे प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य
शुक्लपक्ष 15	4थे प्रहर के प्रारम्भ में भद्रा के षष्ठांश तुल्य	3रे प्रहर के अन्त में भद्रा के दशांशतुल्य

नोट—(*i*) मध्यममानेन भद्रामुख 5 और भद्रापुच्छ 3 घटी की होती है।

(*ii*) अत्यावश्यकता में ही भद्रा के उपरोक्त परिहारों को स्वीकार करें।

यात्रा में दिक्शूल-नक्षत्र एवं चन्द्रस्थिति आदि का विचार

जीवन में यात्रा अनिवार्य है, क्योंकि गतिमत्ता ही जीवन है। यात्रा सुखद रहे, **एतदर्थ** ज्योतिष-शास्त्र में बड़ी गम्भीरता से कुछ दिशा-निर्देश दिये हैं। उन सभी का **विवेचन** साङ्गोपांग शास्त्रानुसार कर देना संक्षेप में उचित समझते हैं।

यात्रा-मुहूर्त्त के लिए दिशाशूल, नक्षत्रशूल, समयशूल, भद्रा, योगिनी, चन्द्र की **दिशा,** शुभतिथि एवं नक्षत्र इत्यादि का विचार शास्त्रकारों ने लिखा है। इनका संक्षिप्त-**विवेचन** ज्योतिष-शिक्षार्थियों के लिए लिख रहे हैं।

1. शुभ तिथि—2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 एवं कृष्णपक्ष की प्रतिपदा—ये शुभ तिथियां कही हैं।

2. शुभ नक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

3. मध्यम नक्षत्र—रोहिणी, तीनों उत्तरा।

उल्लिखित तिथि-नक्षत्र यात्रा में ग्राह्य हैं।

दिशाशूल-विचार

"सोम-शनैश्चर पूर्व न चालू।
मंगल-बुध उत्तर दिशि कालू॥
रवि-शुक्र जो पश्चिम जाय।
हानि होय पथि सुख नहिं पाय॥
बीफै दखिन करै पयाना।
फिर नहिं समझे ताको आना॥"

संक्षेप से दिशाशूल ज्ञान इस प्रकार समझें—

पूर्व दिशा की यात्रा—सोमवार एवं शनिवार को न करें।

आग्नेय दिशा (पूर्व एवं दक्षिण के मध्य की दिशा) की तरफ चन्द्र एवं गुरुवार को न करें।

दक्षिण दिशा की तरफ यात्रा—गुरुवार को न करें।

नैर्ऋत्य कोण (दक्षिण पश्चिम के मध्य की दिशा में) यात्रा इतवार एवं शुक्रवार को न करें।

पश्चिम दिशा की तरफ यात्रा शुक्रवार एवं इतवार को न करें।

वायव्य कोण (पश्चिम एवं उत्तर के मध्य) की तरफ यात्रा मंगलवार को न करें।

उत्तर दिशा की तरफ यात्रा मंगलवार को न करें।

ईशान कोण (उत्तर-पूर्व के मध्य दिशा में) यात्रा बुध-शनिवार को न करें—यह सब दिक्शूल विचार से लिखा गया है।

समय-शूल का विचार

यात्रा में समय शूल भी विचारणीय है। उषःकाल में पूर्व दिशा की तरफ, गोधूलि वेला में पश्चिम दिशा की ओर, अर्ध रात्रि में उत्तर एवं मध्याह्नकाल में दक्षिण दिशा की तरफ यात्रा न करें।

दक्षिण दिशा की तरफ विशेष चिन्त्य—कुम्भ एवं मीन के चन्द्र में (अर्थात् पंचकों में) दक्षिण दिशा की तरफ कदापि न जायें।

यात्रा-विचार में चन्द्रमा की दिशा का शुभाशुभ फल

मेषादि राशि में चन्द्र हो, तो चन्द्रस्थिति पूर्व दिशा में, अर्थात् 1, 5, 9 राशि में चन्द्र पूर्व में; 2, 6, 10 राशि में चन्द्र दक्षिण दिशा में; 3, 7, 11 राशिस्थ चन्द्र पश्चिम दिशा में; 4, 8, 12 राशिस्थ चन्द्र उत्तर दिशा में समझें। चन्द्रमा पीछे व बायें हो, तो धनक्षय करे। सन्मुख हो तो अर्थलाभ करता है। दाहिने हो तो यात्रा में सुखप्रद रहता है। विपरीत स्थिति में विपरीत समझें।

"सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥
सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रेहि सम्मुखे॥"

यात्रा में योगिनी वास-विचार

जिन तिथियों में योगिनी सम्मुख या दाहिनी पड़े, उन तिथियों को तथा कोष्ठक में निर्दिष्ट तिथियों को (जोकि योगिनी वास कोष्ठक में दिशाओं के नीचे कोष्ठक में निर्दिष्ट हैं, उन तिथियों में) यात्रा न करें।

योगिनी वास कोष्ठक

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
तिथि	1, 9	3, 11	5, 13	4, 12	6, 14	7, 15	2, 10	8, 30

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है। पीछे और बायें योगिनी शुभ है। युद्धार्थ यात्रा में बायें एवं सम्मुख योगिनी विशेषरूपेण त्याज्य है।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न

कुम्भ लग्न किंवा कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है, जिसमें 1, 4, 8, 9 स्थानों में शुभ ग्रह हों और 3, 6, 11 भावों में पाप ग्रह हों। **अशुभ लग्न वह है, जिसमें 1, 6, 12वें चन्द्र, 10वें शनि, 7वें शुक्र एवं 12, 6, 8वें भाव में लग्नेश हो, ये अशुभ लग्न हैं।**

यात्रा के लिए प्रस्थान विधान

यदि यात्रा अनिवार्य हो, अत्यावश्यक कारण से उल्लिखित यात्रा मुहूर्त्तों में यात्रा सम्भव न हो, तो गन्तव्य काल में (या एक दिन पहले) ब्राह्मण जनेऊ-माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य घी-शहद एवं शूद्र एक फल को वस्त्र में बांधकर नगर के बाहर जाने वाली दिशा में स्थित किसी परिचित के घर रख दे। जाते समय उसे उठाकर अपने साथ ले जायें।

यात्रा से पहले त्याज्य कर्म

यात्रा से 3 दिन पहले दूध, 5 दिन पहले क्षौरकर्म (हजामत), 3 दिन पहले तेल, 7 दिन पहले स्त्रीसंग (सम्भोग) त्याग देना चाहिए।

यदि इतना सम्भव न हो, तो एक दिन पहले उल्लिखित कार्यों का परित्याग कर देना चाहिए।

मांगलिक कार्यों में विधि-निषेध निर्णय

ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ पुत्र या पुत्री का विवाह

(i) विवाह समय यदि वर-वधू (लड़का-लड़की) दोनों सन्तानें परिवार में बड़े हों, तो ज्येष्ठ मास में जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि में ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ कन्या का विवाह शास्त्रों में वर्जित लिखा है।

'मुहूर्त्तचिन्तामणिकार' ने लिखा है—

"आद्यगर्भ सुत-कन्ययोर्द्वयोर्जन्म मास-भतिथौ करग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय-जनुषोः सुतप्रदः।"

(ii) ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का पाणिग्रहण जन्ममास-नक्षत्रादि में प्रशस्त है।

(iii) ज्येष्ठ पुत्र-ज्येष्ठ कन्या के अतिरिक्त वर-वधू का जन्ममास, जन्मराशि, जन्मनक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह करना शुभ है।

"जन्ममासे हि पुत्राढ्या धनाढ्या च धनोदये।
जन्मभे जन्म-राशौ च कन्या हि ध्रुव सन्ततिः॥"

यही 'बात' भृगु 'एवं 'यवनाचार्य 'ने लिखी है—

"जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्म लग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्॥"
"जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनाढ्या जन्म-भोदये।
जन्मभे वा भवेद्वढ़ा वृद्धा सन्तति-वर्धनी॥"

यदि लड़का या लड़की दोनों में से एक ज्येष्ठ हो, दूसरा कनिष्ठ हो, तो सामान्यतया विवाह की आज्ञा वराहमिहिर के अनुसार दी जा सकती है।

नोट—विवाह विषयक अनिवार्य स्थिति में ज्येष्ठ मास में कृत्तिका नक्षत्र से सूर्य के आगे बढ़ने पर सूर्य मन्त्र जाप,अनुष्ठानादिपूर्वक विवाह किया जा सकता है।

एक ही परिवार में सगे भाई-बहिनों का विवाह 6 मास में वर्जित है—

शास्त्र सगे भाई या बहिन का विवाह करने पर छह मास के अन्तराल से पूर्व दूसरा शुभ कार्य (लड़का या लड़की का विवाह) करने की आज्ञा नहीं देते। यदि संवत् बदल जाये अथवा संवत् के नाम की अवधि पूर्ण हो जाये, तो विवाहादि 6 मास से पूर्व कर सकते हैं। इसी तरह विवाहोपरान्त 6 महीने तक मुण्डन-उपनयनादि भी न करें;—ऐसा नारदीय संहिता का आदेश है।

नोट—(i) कन्या विवाह के बाद 6 मास के अन्तराल में पुत्र का विवाह गणपति पूजनपूर्वक किया जा सकता है।

(ii) दो सगे भाइयों का विवाह दो सगी बहिनों से न करें। अनिवार्य परिस्थिति में पुरोहित एवं मण्डप-भेद करके, अर्थात् दोनों बहिनों के विवाह अलग-अलग स्थानों (मण्डपों) पर करें।

(iii) जुषाणौ (अर्थात् सगे जुड़वें भाई-बहिन) के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप पर किये जा सकते हैं।

(iv) मांगलिक कार्य के बाद 6 मास तक पितृकर्म (श्राद्धादि) न करें।

नोट—श्राद्ध तिथियों में मन्दिर आदि में अन्न-फलादि देना श्रेयस्कर है।

(v) विवाह की तारीख निश्चित हो जाने पर (विवाह चिट्ठी दे देने पर) भी वर किंवा कन्या के परिवार में निकटतम बन्धु (माता-पिता, दादा-दादी, भाई आदि) की मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष बाद ही विवाहादि शुभ कार्य करें। अनिवार्य स्थिति किंवा संकटकाल में एक मास के बाद अथवा पातक-समय निकल जाने पर मन्दिर या अन्य

(शेष पृष्ठ 93 पर)

(शेष पृष्ठ 93 पर)

ग्रहों के नेष्टफल से मुक्ति पाने के लिए कुछ अनुभूत उपाय

आपके जन्मांग में यदि कोई ग्रह नेष्ट फलप्रद है, तो आप निम्नांकित उपायों द्वारा शारीरिक एवं मानसिक शान्तिलाभ प्राप्त कर सकते हैं;—

1. सूर्य ग्रह-शान्ति के लिए—

यदि जन्मांग (किंवा नवांश व प्रश्नाङ्ग) में **सूर्य** नीच किंवा खलग्रहयुत-दृष्ट हो तो शान्त्यर्थ बिल्ववृक्ष की जड़ को पीली धातु में मढ़ाकर लाल या गुलाबी धागे से गले में या दार्यी भुजा में इतवार के दिन धारण करें। मनोबल प्रबल रहेगा, राजपक्ष में जय एवं विपरीत परिस्थिति से निकल जायेंगे।

2. चन्द्र ग्रह-शान्त्यर्थ—

मन का प्रतिनिधि **चन्द्रमा** नीच किंवा नीच नवांश में हो या प्रश्नाङ्ग में अनुकूल न हो तो भारी मानसिक अशान्ति एवं गुप्त चिन्ता से मुक्ति पाने के लिए **"खिरनी की जड़"** लेकर **सोमवार** को सफेद ऊन के धागे से गले या दार्यी भुजा में धारण करें। धारण करने से पहले शिवपूजन एवं गंगाजल दूध से जड़ को धो लें।

3. मंगल ग्रह-शान्त्यर्थ—

मंगल ग्रह नीच, किंवा खलग्रह युत हो तो क्रोध, लड़ाई-झगड़े, चोटभय, रक्तविकार कराता है। शान्त्यर्थ—**अनन्तमूल की जड़ का अंश मंगलवार** को लाकर गंगाजल से धोकर लालचन्दन से सजाकर **मंगलवार** को ही सोना या तांबे में मढ़ाकर लाल धागे से गले में धारण करें। गाय को गुड़ मंगलवार को दें। सभी समस्याएं दूर होकर मन शान्त होगा, दुर्घटना से बचे रहोगे।

मंगलवारी अमावस वाले दिन एक पाव बाजरे में थोड़ा गुड़ मिला दें। फिर इस गुड़-मिश्रित बाजरे की रोटी को लाल (भूरे) रंग के कुत्ते को खिला दें। ऐसा मंगलवारी अमावस से प्रारम्भ करके 11 मंगलवार करें। इससे उदर रोग (विकार) सब ठीक हो जायेंगे।

4. बुध ग्रह-शान्त्यर्थ—

बुध ग्रह नेष्ट हो तो बोलने में दिक्कत, त्वचा रोग एवं वायुजन्य रोगों से मुक्ति हेतु **'विधारा की जड़'** बुधवार को हरे धागे में चांदी के यन्त्र में धारण करें।

5. गुरु ग्रह-शान्त्यर्थ—

विद्या में असफलता, बुद्धि में विकृति, कुसंग एवं रक्त (पीलिया) आदि रोगों से मुक्ति के लिए **'केले की जड़'** को पीले धागे से स्वर्ण ताबीज में धारण करें।

6. शुक्र ग्रह-शान्त्यर्थ—

अशुभ चिन्तन, गुप्त रोग, स्त्रीपक्ष से चिन्ता एवं त्वक्रुजा आदि से परेशान हैं तो शान्त्यर्थ **'सरपुख'** की जड़ या **'शंखपुष्पी'** बूटी को चांदी में मढ़ाकर सफेद धागे से शुक्रवार को धारण करें।

7. शनि ग्रह-शान्त्यर्थ—

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या में घोर परिस्थिति में आप **चन्दन वृक्ष की जड़** खोदकर शनिवार को घर ले आयें, स्नान-पूजा के उपरान्त उस जड़ को शिव भगवान् का ध्यान करके काले धागे से दार्यी भुजा पर धारण करें एवं स्नान के बाद चमेली का तेल सिर पर प्रयोग करें। भगवान् भैरव का मन्त्रजाप कराना भी चामत्कारिक फल देगा।

8. राहु ग्रह-शान्त्यर्थ—

सफेद चन्दन की जड़ बुधवार को लोहे के यन्त्र में धारण करें। चांदी का हाथी घर में रखें। शौचालय में कपूर की एक डली रखें।

9. केतु ग्रह-शान्त्यर्थ—

असगन्ध की जड़ वीरवार या शनिवार को आसमानी रंग के धागे से चांदी के यन्त्र में मढ़ाकर धारण करें। कुत्ते को रोटी दें, कम्बल वितरण करें।

— — —

वास्तुदोष-निवारणार्थ कुछेक शास्त्रीय उपाय

'वास्तुशास्त्र' में लिखित निर्देशों के विपरीत निर्माणकार्य से घर में रोग, कलह-क्लेश एवं दरिद्रता से परेशानी रहती है। अतः इस दोष से मुक्ति-हेतु निम्नांकित उपाय करें, आश्चर्यजनक शुभ परिणाम देखने को मिलेंगे—

1. यदि घर का मुख्यद्वार दक्षिण दिशा की ओर है तो मुख्यद्वार(प्रवेश-स्थल)पर चांदी की पतली सी तार पूरे मुख्यद्वार पर झीरी देकर सफेद सीमेण्ट से दबा दें।

2. भोजन पूर्व की तरफ मुंह करके खायें।

3. दक्षिण की ओर सिरहाना करके शयन करें, सुख-स्वास्थ्यलाभ रहेगा।

4. पूजा प्रातः पूर्वाभिमुख होकर एवं सायं उत्तराभिमुख होकर करें।

5. वंशवृद्धि एवं प्रगतिहेतु वास्तुदोष का परिहार-भवन के तोरण (मुख्यद्वार) पर अन्दर की तरफ एवं बाहरी दीवार पर गणपति, ॐ किंवा स्वस्तिक (卐) आदि मांगलिक चिह्न (मुख्यद्वार के) ऊपरी भाग में स्थापित करें।

6. भोजनालय अग्निकोण में हो। यदि ऐसा न हो तो अग्निकोण में एक बल्ब का प्रकाश कुछ समय के लिए सुबह-सायं अवश्य करें।

7. दुकान या कार्यालय के वास्तुदोष-शान्त्यर्थ प्रवेशद्वार के दोनों (अन्दर-बाहर) ओर गणेशजी की मूर्ति या स्टिकर जरूर लगावें, क्योंकि गणेशजी की दृष्टि बाहर की ओर एवं अन्दर की ओर भी रहे—ऋद्धि-सिद्धि नजर आयेगी।

8. द्वारदोष-विषयक वेधदोष-शान्त्यर्थ शंख, कौड़ी या तांबे या सोने का कुछ अंश लाल या पीले कपड़े में बांधकर मौली से दरवाजे पर अन्दर की ओर लटका दें।

9. दुकान में चोरी, दृष्टिदोष किंवा अग्निकाण्ड से बचने के लिए विधिपूर्वक, भोजपत्र पर लिखित भौमयन्त्र को तांबे की डब्बी में बन्द करके दुकान की गद्दी या दुकान की देहली के दो फुट नीचे दबा दें।

10. घर में सर्वविध वास्तुदोष-शान्त्यर्थ मुख्यद्वार पर एक तरफ केले का छोटा वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमलों में लगा दें,—आनन्द-मंगल रहेगा।

11. यदि वर्षों बीत गये प्लाट पर भवन-निर्माण का योग न बन रहा हो तो प्लाट में तुलसी का पौधा एवं गुरुवार को पुष्यनक्षत्र किंवा इतवार वाले दिन पुष्यनक्षत्र होने पर अनार का पौधा लगा दें, जल्दी ही निर्माणकार्य का मन बनेगा एवं साधन भी प्राप्त होगा।

12. भवन, दुकान या कारखाने का शिलान्यास करते समय नींव में शिलान्यास से पूर्व (गटका आदि जमाकर) एक या दो चांदी के सर्प बनाकर पूर्वदिशा में जमीन में दबा दें, यह कार्य जीवनभर सुख-शान्ति देगा। भूतप्रेत, दृष्टिदोष, सर्पादि से रक्षा भी करेगा।

13. यदि आपका निवासस्थान चारों ओर से मकानों से घिरा हो तो घर के ऊपर बांस से लाल या पीले कपड़े का ध्वज फहरा दें या घर में कोई ऊंचा पेड़ लगावें।

14. **वास्तुदोष-शान्त्यर्थ घर में विद्वान् पण्डित से निम्नांकित सवालाख मन्त्रजाप कराकर हवन करायें एवं गंगाजल डालकर घर को धो दें।**

मन्त्र—"ॐ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोषहरो भव। सुखं देहि यशो देहि सर्वकामान् प्रयच्छ मे। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः॥"

15. **सर्वविध वास्तुदोष-शान्त्यर्थ घर में अखण्ड-भगवन्नाम-कीर्तन या शुभ-दिनों में अखण्ड-पाठ, श्रीरामचरित मानस करायें—निश्चय ही शान्ति, सुख-समृद्धि** प्राप्त होगी।

16. **घर में जहां-जहां भी वास्तुदोष अनुभव हो वहां लाल सिन्दूर से द्वार पर स्वस्तिक-चिह्न बना दें।** मुख्यद्वार पर स्वस्तिक-चिह्न नौ अंगुल लम्बा एवं नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिए। वास्तुदोष-शान्ति के लिए उल्लिखित प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली हैं, अनुभव करें।

— — —

लोक-आस्था का महापर्व–'सूर्यषष्ठी व्रत'

तीन दिन तक चलने वाले इस महापर्व के दिनों में यमुना अपने पिता सूर्य के दर्शन के लिए व्याकुल मानी जाती है। पिता-पुत्री के रूप में यह सूर्य-यमुना का स्नेहिल मिलन का पर्व विशेषत: बिहार के जनसमुदाय (जनता) का महापर्व माना जाता है, लेकिन अब भारत के अनेक प्रान्तों में इस पर्व की मान्यता देखी जा रही है। 'पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश'–इन पंच महाभूतों (पंचतत्त्वों) की सनातन अवधारणा के पूजनार्चन के पर्व को भी 'सूर्यछठ' के रूप में स्वीकार करते हैं। कुछ बुद्धिजीवी वर्ग अग्नि, जल, प्रकाश, ध्वनि, नाद, स्वर और वनस्पतियों (जिन रूपों में प्रकृति की अभिव्यक्ति होती है) का धार्मिक दृष्टि से पूजन करना ही 'सूर्य-षष्ठी' की मूल अवधारणा स्वीकार करते हैं। यह प्रकृति के लिए गहरी चेतना से निकला करुणा का पर्व है। क्योंकि, सूर्य एवं जल प्रकृति के जीवनाधायक हैं, यमुना जल का प्रतीक है, अत: इस दिन यमुना-गंगा या झीलों के किनारे लाखों नर-नारी एकत्र होकर नर अपने स्वास्थ्य,स्त्रियां अपने पति-पुत्र, भाई के स्वास्थ्य की कामना करती हैं।

यह पर्व कार्तिक मास में शुक्ल षष्ठी के दिन सूर्य और षष्ठी देवी (दुर्गा के ही एक रूप) की पूजा के रूप में सम्पन्न होता है। षष्ठीदेवी की मृण्मयी मूर्ति बनायी जाती है। इस मूर्ति की षोडशोपचार पूजा करके धर्मप्राण लोग सम्पूर्ण परिवार (पुत्र, पति, पत्नी आदि) की दीर्घायु-आरोग्य एवं सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। पूजा के बाद समीपस्थ तीर्थ पर नदी या तालाब के तट पर स्त्री-पुरुष विविध पक्वान्न से भरे बांस से बनी टोकरी या छाज लेकर शुभ गान करते हुए यमुना-गंगा या जलाशय की ओर जाते हैं। बच्चों व निर्धनों को पक्वान्न बांटकर मध्याह्न के समय स्वयं श्रद्धा से खाते हैं। इन दिनों धार्मिक आस्थावान् व्यक्ति व्रत रखते हैं। सूर्यास्त तक गाना बजाना-नाचना होता है और अस्त होते सूर्य को निम्नांकित मन्त्र से अर्घ्य देकर सभी अपने घर लौट आते हैं–

"एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥"

दूसरे दिन ब्रह्ममुहूर्त्त में ही अर्घ्य-सामग्री लेकर व्रती लोग सूर्योदय की प्रतीक्षा करते हैं। सूर्योदय होने पर उल्लिखित मन्त्र से अर्घ्य देकर सूर्य एवं षष्ठी देवी की मूर्तियां वस्त्रालंकार दक्षिणासहित किसी ब्राह्मण को दे दी जाती हैं और निम्नांकित मन्त्र द्वारा सूर्य एवं षष्ठीदेवी का विसर्जन कर व्रत की पारणा की जाती है–

"ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥"

अन्तिम (तीसरे) दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल में खड़े होकर अर्घ्य देने के बाद यह महापर्व सम्पन्न होता है। इन दिनों षष्ठीदेवी के इस (निम्न) स्तोत्र का पाठ श्रद्धाभाव सहित अवश्य करते रहें–

षष्ठीदेवी-स्तोत्र

"नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धायै सततं नमः।
शुभायै शुभदायैच षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
वरदायै पुत्रदायैच धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
शक्तेः षष्ठांश-रूपिण्यै सिद्धायैच नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
पारायै पारदायैच षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
सारायै शारदायैच पारगायै तु कर्मणाम्।
बालाधिष्ठातृ-देव्यैच षष्ठी देव्यै नमो नमः॥
पूज्यायै स्कन्द-कान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
शुद्ध-सत्त्व-स्वरूपिण्यै वन्दितायै सदा नृणाम्।
हिंसा-क्रोध-विवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि।
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
भूमिं देहि जलं देहि देहिं विद्यां सुपूजिते।
सर्वकल्याण-कारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥"

षष्ठीदेवी स्तोत्र-महत्त्व

निस्सन्तान दम्पती द्वारा षष्ठीदेवी के स्तोत्र का एकवर्ष पर्यन्त प्रातः, सायं पाठ करने से दीर्घायु पुत्र प्राप्त होता है। बन्ध्या (बांझ) नारी भी भक्ति-श्रद्धापूर्वक एकवर्ष पर्यन्त प्रातः-सायं पाठ करे तो यशस्वी, दीर्घायु सन्तान को प्राप्त करती है। जिनके **पुत्र होकर नष्ट होते रहते हैं, वे वर्षपर्यन्त इस स्तोत्र का पाठ करें** (या इस पाठ का प्रातः-सायं श्रवण करें) तो निश्चय ही माता षष्ठी देवी के अनुग्रह से चिरंजीवि सन्तान प्राप्त होगी। इसके पाठ से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है एवं अपमृत्यु का भी भय नहीं रहता, घर में आनन्दमंगल रहता है।

राहुकाल-विचार

यद्यपि राहुकाल की चर्चा ज्योतिष-शास्त्रों में कहीं भी नहीं मिलती। पुनरपि, **प्राचीनकाल से दक्षिण भारत के दैवज्ञ एवं जनता 'राहुकाल' को अशुभ-फलप्रद किंवा कुयोग के रूप में दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त करते आ रहे हैं और उ.भारत के पंचांग, समाचारपत्र एवं टी.वी. के भविष्यवाणी-चैनलों पर भी इसे अशुभकाल के रूप में प्रसारित किया जा रहा है, अतः हम जनता के आग्रह पर इसकी चर्चा संक्षेप में यहां करना उचित समझते हैं।**

ध्यान दें—प्रचलित राहुकाल रविवार आदि सात वारों में प्रतिदिन भिन्न-भिन्न समय पर दिन में केवल एक बार डेढ़ (1½) घण्टे के लिए ही घटित होता है। तदनुसार प्रत्येक वार के लिए राहुकाल का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल नीचे कोष्ठक में दिया गया है—

प्रचलित राहुकाल-बोधक कोष्ठक

वार	राहुकाल प्रारम्भ (स्टैं.टा.)	राहुकाल समाप्त (स्टैं.टा.)
रवि	16 घं. 30 मि.	18 घं. 00 मि.
चन्द्र	7 घं. 30 मि.	9 घं. 00 मि.
मंगल	15 घं. 00 मि.	16 घं. 30 मि.
बुध	12 घं. 00 मि.	13 घं. 30 मि.
गुरु	13 घं. 30 मि.	15 घं. 00 मि.
शुक्र	10 घं. 30 मि.	12 घं. 00 मि.
शनि	9 घं. 00 मि.	10 घं. 30 मि.

नोट करें कि—राहुकाल का विचार दिन में ही किया जाता है, रात्रि में राहुकाल विचार्य नहीं माना गया।

राहुकाल-विचार में दिन का मान स्थिररूप से 12 घण्टे ही माना गया है। इसके लिए सर्वत्र एवं सर्वदा दिन का प्रारम्भ तद्देशीय स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः 6 घं. 0 मि. एवं समाप्ति 18 घं. 0 मि. पर स्थिर रूप से मानी गयी है।

मकर संक्रान्ति-माहात्म्य

(अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने का संकल्प)

संक्रान्ति एकमात्र खगोलीय घटना न होकर अनेक पौराणिक एवं आधुनिक क्रियाकलापों के प्रतिपादन की तिथि भी है। सूर्य की किरणें संसार को आरोग्य प्रदान करती हैं। निरन्तर प्राणदाता सूर्य परमात्मा का प्रतिनिधि है। इसी कारण सूर्य की पूजा होती है।

मकर संक्रान्ति से पहले सूर्यदेव दक्षिणी गोलार्ध में होते हैं। इस समय सूर्य भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक एवं रात्रि छोटी होने से अन्धकार कम होता है।

अतः मकर राशि में सूर्य के संक्रमण को इस समय अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना गया है।

प्रकाश अधिक होने से प्राणियों में चेतना एवं कार्यक्षमता बढ़ती है। इस समय सम्पूर्ण भारत में जनता श्रद्धापूर्वक सूर्यदेव की उपासना, पूजन करके जीवनाधायक एवं नयी ऊर्जा प्रदान करने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है।

सामान्यतया भारतीय पंचांग-पद्धति की समस्त तिथियां चन्द्रगति के आधार पर निर्णीत होती हैं। परन्तु मकर संक्रान्ति को सूर्य की गति से ही निर्धारित किया जाता है।

मकर संक्रान्ति पर विशेषतः तिल, गुड़दान, दाल, चावल की खिचड़ी के दान का अत्यधिक महत्त्व माना गया है।

समस्त भारत में सूर्य के मकर राशि में संक्रकण को विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। तामिलनाडु में इसे (चार दिनों तक चलने वाले) '**पोंगल**' के रूप में मनाया जाता है। प्रथम दिन में '**भोगी-पोंगल**', दूसरे दिन '**सूर्य-पोंगल**', तीसरे दिन '**मोटू-पोंगल**' एवं चौथे दिन में इसे मकर संक्रान्ति को '**कन्या-पोंगल**' रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

आन्ध्र-कर्णाटक किंवा केरल में इसे मकर-संक्रान्ति, हरियाणा एवं पंजाब में लोहड़ी किंवा नेपाल में मकर-संक्रान्ति को '**माघी-संक्रान्ति**' नाम से जानते हैं।

असम में मकर-संक्रान्ति को **माघ बिहू** नाम से जानते हैं। राजस्थान में सुहागिनें अपनी सास को वायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं एवं 14 ब्राह्मणों को सौभाग्यसूचक वस्तु का दान भी करती हैं।

बिहार एवं उ.प्र. में इस व्रत को खिचड़ी के नाम से जानते हैं। इस दिन खिचड़ी खाने एवं दान का माहात्म्य है। उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गोदान, ऊनी-वस्त्र, कम्बल किंवा स्वर्णदान का विशेष महत्त्व इस संक्रान्ति पर लिखा है। समस्त भारत में और विशेषतः उ.प्र. में तो इसे विशेषतः '**दान का परम पर्व**' माना जाता है।

इलाहाबाद में गंगा-यमुना-सरस्वती के संगमस्थल पर इस दिन एकमास तक चलने वाला '**माघ मेला**' लगता है। इस दिन गंगासागर पर भी स्नान-दानादि का माहात्म्य लिखा है। जनता इन दिनों विशेषतः मकर संक्रान्ति के दिन गंगास्नान करने हरिद्वार आदि तीर्थों पर जाती है।

इस प्रकार यह सूर्यपर्व भारत में 'राष्ट्रव्यापी पर्व' है, जहां भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रूपों में दिखाई देती है। इस पर्व को 'उत्तरायणी' भी कहते हैं। इस पुण्यपर्व का महाभारत में भी वर्णन है। सूर्य के उत्तरायण का महत्त्व भीष्म पितामह की इच्छामृत्यु से जाना गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि सूर्य के उत्तरायण में पृथ्वी प्रकाशमयी रहती है, इस समय जीव शरीर-परित्याग से पुनर्जन्म न पाकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

इस प्रकार '**मकर संक्रान्ति**' के इस राष्ट्रव्यापी पर्व के समय सूर्य की आराधना का मूल उद्देश्य भारतीयों के लिए सचमुच '**आत्मजागृति**' का उद्‌बोधन है।

जैविक लय-वक्र-पद्धति

(एक नया रोचक सिद्धान्त, जो यह स्पष्ट करता है कि-किस दिन हम शारीरिक, भावनात्मक एवं बौद्धिक रूप से स्वस्थ या अस्वस्थ होंगे।)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा,

हम सब अनेक बार ऐसे दिनों से गुजरते हैं,जबकि हमारे सभी काम न जाने क्यों गलत होते जाते हैं, मन चिड़चिड़ा रहता है, सर्वत्र निराशा नज़र आती है, शरीर टूटा-टूटा लगता है, हम अपने आपको अस्वस्थ सा अनुभव करते हैं। दूसरी ओर इसके विपरीत ऐसे दिन भी अक्सर आते हैं,जबकि हर काम स्वयं ठीक होता जाता है, शरीर में शक्ति और स्फूर्ति रहती है, मन प्रफुल्लित एवं सोत्साह होता है। इन बुरे और अच्छे दिनों का रहस्य स्पष्ट करने वाली एक अद्‌भुत पद्धति के बारे में हम अपने पाठकों को बतलाएंगे। इस पद्धति को 'जैविक लय-वक्र-पद्धति' (Biorhythmic Curve Method) के नाम से पुकारा जाता है। यह पद्धति तीन वक्रों (Curves) पर आधारित है, जो निम्नांकित हैं—

(1) शारीरिक वक्र।

(2) भावना वक्र।

(3) बौद्धिक वक्र।

शारीरिक वक्र का चक्र (Cycle) 23 दिन, भावना वक्र का 28 दिन और बौद्धिक वक्र का 33 दिन होता है। ये सभी वक्रचक्र मानव के जन्म-दिन से ही एक साथ प्रारम्भ होते हैं।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

कोष्ठक (1)

आयु के लगभग गत-वर्ष	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	आयु के लगभग गत-वर्ष	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	आयु के लगभग गत-वर्ष	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	आयु के लगभग गत-वर्ष	शारीरिक	भावना	बौद्धिक
0	.23	28	33	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1	43	29	35	25	23	31	56	49	26	33	44	73	29	35	65
2	40	30	37	26	43	32	58	50	23	34	46	74	26	36	34
3	37	31	39	27	40	33	60	51	43	35	48	75	23	37	36
4	35	33	42	28	38	35	63	52	41	37	51	76	44	39	39
5	32	34	44	29	35	36	65	53	38	38	53	77	41	40	41
6	29	35	46	30	32	37	34	54	35	39	55	78	38	41	43
7	26	36	48	31	29	38	36	55	32	40	57	79	35	42	45
8	24	38	51	32	27	40	39	56	30	42	60	80	33	44	48
9	44	39	53	33	24	41	41	57	27	43	62	81	30	45	50
10	41	40	55	34	44	42	43	58	24	44	64	82	27	46	52
11	38	41	57	35	41	43	45	59	44	45	33	83	24	47	54
12	36	43	60	36	39	45	48	60	42	47	36	84	45	49	57
13	33	44	62	37	36	46	50	61	39	48	38	85	42	50	59
14	30	45	64	38	33	47	52	62	36	49	40	86	39	51	61
15	27	46	33	39	30	48	54	63	33	50	42	87	36	52	63
16	25	48	36	40	28	50	57	64	31	52	45	88	34	54	33
17	45	49	38	41	25	51	59	65	28	53	47	89	31	55	35
18	42	50	40	42	45	52	61	66	25	54	49	90	28	28	37
19	39	51	42	43	42	53	63	67	45	55	51	91	25	29	39
20	37	53	45	44	40	55	33	68	43	29	54	92	45	31	42
21	34	54	47	45	37	28	35	69	40	30	56	93	43	32	44
22	31	55	49	46	34	29	37	70	37	31	58	94	40	33	46
23	28	28	51	47	31	30	39	71	34	32	60	95	37	34	48
24	26	30	54	48	[illegible]	[illegible]	[illegible]	72	[illegible]	[illegible]	63	96	35	36	[illegible]

चक्र के पूर्वार्द्ध में ये सभी वक्र 'उन्नत' और उत्तरार्द्ध में 'अवनत' कहलाते हैं। 'उन्नत वक्र' को 'धन वक्र' और 'अवनतवक्र' को '**ऋण वक्र**' भी कहा जाता है।

जब शारीरिक वक्र धन चल रहा हो, तब मनुष्य शरीर में शक्ति, स्फूर्ति एवं उत्साह का अनुभव करता है। जब भावना वक्र धन चल रहा हो, तब वह प्रसन्न, कला-प्रेमी, विनोद- प्रिय होता है। इसी प्रकार जब बौद्धिक वक्र धन हो, तब मनुष्य तर्क-प्रवीण तथा गम्भीर समस्याओं को अनायास ही सुलझाने में समर्थ होता है।

जब शारीरिक वक्र ऋण हो, उन दिनों में व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से अपने आपको बिना कारण ही श्रान्त अनुभव करता है, थोड़े से काम से ही वह थक जाता है, सर्दी-गर्मी आदि से जल्दी ही प्रभावित होने लगता है। जिन दिनों किसी व्यक्ति का भावना वक्र ऋण चल रहा हो, उन दिनों में उसकी मन:स्थिति अकारण ही खिन्न-सी रहती है, थोड़ी-थोड़ी बात पर वह चिड़ने लगता है, निराशा से वह आक्रान्त हो उठता है। जिन दिनों में व्यक्ति का बौद्धिक वक्र ऋण होता है, उन दिनों में वह वाद-विवाद में दूसरे को प्रभावित नहीं कर पाता, समस्याओं के समाधान में वह किसी ठीक निर्णय पर नहीं पहुंच सकता। उसका विवेक उन दिनों शिथिल रहता है।

प्रत्येक वक्र (शारीरिक, भावना एवं बौद्धिक वक्र) अपने-अपने प्रत्येक चक्र में दो बार ऐसी स्थिति में आता है, जबकि वह न तो उन्नत (धन) ही होता है और न अवनत (ऋण) ही। जिस दिन कोई वक्र इस स्थिति में होता है, उस दिन को '**संकटदिन**' (Critical day) कहा जाता है। किसी भी वक्र के 'संकटदिन' में व्यक्ति रोगाक्रान्त हो सकता है, मानसिक दृष्टि से वह स्वस्थ नहीं रहता, जिससे वह दुर्घटना का शिकार हो सकता है। इसलिए अपने 'संकटदिन' में उसे कार, मोटर साइकिल आदि नहीं चलाना चाहिए। चलाना पड़े तो बहुत सावधानी बरतें। विदेश की अनेकों एयरलाइन्स कम्पनियां अपने पायलटों के जैविक-लय-वक्रों के चार्ट तैयार करवाती हैं। किसी भी पायलट को उसके 'संकटदिन' में उड़ान की अनुमति वे नहीं देतीं। उनका अनुभव है कि इससे विमान दुर्घटनाएं पर्याप्त मात्रा में कम हुई हैं।

डॉक्टरों को भी परामर्श दिया जाता है कि वे अपने एवं

(शेष अगले पृष्ठ पर)

कोष्ठक (2)

तारीख	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक
1	1	1	1	9	4	32	14	4	27	22	7	25	6	9	22	14	12	20
2	2	2	2	10	5	33	15	5	28	23	8	26	7	10	23	15	13	21
3	3	3	3	11	6	1	16	6	29	1	9	27	8	11	24	16	14	22
4	4	4	4	12	7	2	17	7	30	2	10	28	9	12	25	17	15	23
5	5	5	5	13	8	3	18	8	31	3	11	29	10	13	26	18	16	24
6	6	6	6	14	9	4	19	9	32	4	12	30	11	14	27	19	17	25
7	7	7	7	15	10	5	20	10	33	5	13	31	12	15	28	20	18	26
8	8	8	8	16	11	6	21	11	1	6	14	32	13	16	29	21	19	27
9	9	9	9	17	12	7	22	12	2	7	15	33	14	17	30	22	20	28
10	10	10	10	18	13	8	23	13	3	8	16	1	15	18	31	23	21	29
11	11	11	11	19	14	9	1	14	4	9	17	2	16	19	32	1	22	30
12	12	12	12	20	15	10	2	15	5	10	18	3	17	20	33	2	23	31
13	13	13	13	21	16	11	3	16	6	11	19	4	18	21	1	3	24	32
14	14	14	14	22	17	12	4	17	7	12	20	5	19	22	2	4	25	33
15	15	15	15	23	18	13	5	18	8	13	21	6	20	23	3	5	26	1
16	16	16	16	1	19	14	6	19	9	14	22	7	21	24	4	6	27	2
17	17	17	17	2	20	15	7	20	10	15	23	8	22	25	5	7	28	3
18	18	18	18	3	21	16	8	21	11	16	24	9	23	26	6	8	1	4
19	19	19	19	4	22	17	9	22	12	17	25	10	1	27	7	9	2	5
20	20	20	20	5	23	18	10	23	13	18	26	11	2	28	8	10	3	6
21	21	21	21	6	24	19	11	24	14	19	27	12	3	1	9	11	4	7
22	22	22	22	7	25	20	12	25	15	20	28	13	4	2	10	12	5	8
23	23	23	23	8	26	21	13	26	16	21	1	14	5	3	11	13	6	9
24	1	24	24	9	27	22	14	27	17	22	2	15	6	4	12	14	7	10
25	2	25	25	10	28	23	15	28	18	23	3	16	7	5	13	15	8	11
26	3	26	26	11	1	24	16	1	19	1	4	17	8	6	14	16	9	12
27	4	27	27	12	2	25	17	2	20	2	5	18	9	7	15	17	10	13
28	5	28	28	13	3	26	18	3	21	3	6	19	10	8	16	18	11	14
29	6	1	29	14	4	27	19	4	22	4	7	20	11	9	17	19	12	15
30	7	2	30				20	5	23	5	8	21	12	10	18	20	13	16
31	8	3	31				21	6	24				13	11	19			

रोगी के 'संकटदिन' में कोई गम्भीर ऑपरेशन न करें। विदेश के अनेक विवाह-परामर्शदाता-मनोवैज्ञानिक दम्पतियों को अपने-अपने संकट के दिनों में विशेष नियन्त्रण से काम लेने का परामर्श देते हैं, अन्यथा उनमें परस्पर भयंकर तनाव हो सकता है।

ध्यान रहे, संकट के दिनों से एक दिन पहले (आगे) का और एक दिन बाद का (इस प्रकार से दो) दिन भी 'संकटदिन' के लगभग समान ही माने जाते हैं। इन दिनों को **'अर्धसंकटदिन'** कहा जाता है। इन अर्धसंकटदिनों में भी वही सावधानी बरतनी आवश्यक है, जो 'संकटदिनों' में बरती जाती है।

जिस दिन दो या तीनों वक्रों के 'संकटदिन' एक साथ आ पड़ें, उस दिन व्यक्ति को विशेष रूप से सावधान रहना बहुत आवश्यक है। यही बात 'अर्धसंकटदिन' के बारे में भी समझनी चाहिए।

जिन दिनों में दो या तीनों वक्र एक साथ ऋण चल रहे हों, वे दिन भी 'संकटदिन' की भान्ति व्यक्ति के लिए अशुभ माने गये हैं। इस स्थिति में भी व्यक्ति दुर्घटना आदि का शिकार हो सकता है।

'धन वक्र', 'ऋण वक्र' एवं 'संकटेदिन' का ज्ञान—कौन सा वक्र किस दिन धन (+), किस दिन ऋण (−) होगा, संकटदिन और अर्धसंकटदिन कब पड़ेंगे—इसकी गणित के लिए विदेशों में Calculator मिलते हैं, जो व्यक्ति की जन्म तारीख के अनुसार यह तुरन्त निर्णय कर देते हैं। क्योंकि इस प्रकार के Calculator सभी लोग खरीद नहीं सकते, भारत में वे सुलभ भी नहीं हैं, अतः अपने पाठकों की सुविधा के लिए हम यहां तीन कोष्ठक (सारणियां) दे रहे हैं, जिनकी सहायता से किसी प्रकार की गणित के बिना ही शारीरिक, भावना, बौद्धिक—तीनों वक्रों की स्थिति (धन वक्र, ऋण वक्र, संकटदिन, अर्धसंकटदिन) सरलता से जानी जा सकती है। ध्यान रहे, इन तीन कोष्ठकों द्वारा वक्रों की स्थिति निकालने में उतना ही टाईम लगता है, जितना Calculator लगाता है। ये कोष्ठक मैंने स्वयं 'जैविक लय-वक्र-पद्धति' के सिद्धान्तानुसार तैयार किये हैं।

इन कोष्ठकों से वक्रों की स्थिति का निर्णय इस प्रकार कीजिए—

अपने जन्म के ईस्वी सन् को अभीष्ट ई. सन् में से घटाने

(शेष अगले पृष्ठ पर)

कोष्ठक (2)

तारीख	जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर		
	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक
1	21	14	17	6	17	15	14	20	13	21	22	10	6	25	8	13	27	5
2	22	15	18	7	18	16	15	21	14	22	23	11	7	26	9	14	28	6
3	23	16	19	8	19	17	16	22	15	23	24	12	8	27	10	15	1	7
4	1	17	20	9	20	18	17	23	16	1	25	13	9	28	11	16	2	8
5	2	18	21	10	21	19	18	24	17	2	26	14	10	1	12	17	3	9
6	3	19	22	11	22	20	19	25	18	3	27	15	11	2	13	18	4	10
7	4	20	23	12	23	21	20	26	19	4	28	16	12	3	14	19	5	11
8	5	21	24	13	24	22	21	27	20	5	1	17	13	4	15	20	6	12
9	6	22	25	14	25	23	22	28	21	6	2	18	14	5	16	21	7	13
10	7	23	26	15	26	24	23	1	22	7	3	19	15	6	17	22	8	14
11	8	24	27	16	27	25	1	2	23	8	4	20	16	7	18	23	9	15
12	9	25	28	17	28	26	2	3	24	9	5	21	17	8	19	1	10	16
13	10	26	29	18	1	27	3	4	25	10	6	22	18	9	20	2	11	17
14	11	27	30	19	2	28	4	5	26	11	7	23	19	10	21	3	12	18
15	12	28	31	20	3	29	5	6	27	12	8	24	20	11	22	4	13	19
16	13	1	32	21	4	30	6	7	28	13	9	25	21	12	23	5	14	20
17	14	2	33	22	5	31	7	8	29	14	10	26	22	13	24	6	15	21
18	15	3	1	23	6	32	8	9	30	15	11	27	23	14	25	7	16	22
19	16	4	2	1	7	33	9	10	31	16	12	28	1	15	26	8	17	23
20	17	5	3	2	8	1	10	11	32	17	13	29	2	16	27	9	18	24
21	18	6	4	3	9	2	11	12	33	18	14	30	3	17	28	10	19	25
22	19	7	5	4	10	3	12	13	1	19	15	31	4	18	29	11	20	26
23	20	8	6	5	11	4	13	14	2	20	16	32	5	19	30	12	21	27
24	21	9	7	6	12	5	14	15	3	21	17	33	6	20	31	13	22	28
25	22	10	8	7	13	6	15	16	4	22	18	1	7	21	32	14	23	29
26	23	11	9	8	14	7	16	17	5	23	19	2	8	22	33	15	24	30
27	1	12	10	9	15	8	17	18	6	1	20	3	9	23	1	16	25	31
28	2	13	11	10	16	9	18	19	7	2	21	4	10	24	2	17	26	32
29	3	14	12	11	17	10	19	20	8	3	22	5	11	25	3	18	27	33
30	4	15	13	12	18	11	20	21	9	4	23	6	12	26	4	19	28	1
31	5	16	14	13	19	12	—	—	—	5	24	7	—	—	—	20	1	2

पर आपकी आयु के लगभग गत-वर्ष प्राप्त होंगे। इन वर्षों के आगे कोष्ठक (1) के शारीरिक, भावना, बौद्धिक वाले स्तम्भों में लिखी संख्याएं उठाकर इन्हें अलग-अलग नोट कर लें। फिर कोष्ठक (2) में अपनी जन्म तारीख द्वारा शारीरिक, भावना, बौद्धिक वाले स्तम्भों में लिखी संख्याएं लेकर इन्हें कोष्ठक (1) से ली गई संख्याओं में से क्रमशः घटा दें (अर्थात् शारीरिक वाली संख्या में से शारीरिक वाली संख्या, भावना वाली संख्या में से भावना वाली और बौद्धिक वाली में से बौद्धिक वाली संख्या घटा दें)। ये तीनों संख्याएं आपके अभीष्ट ई. सन् की 1 जन. को शारीरिक, भावना और बौद्धिक वक्रों के 'वक्रशेष' हैं। आप जिस तारीख को इन वक्रों की स्थिति जानना चाहते हैं, उस तारीख के आगे कोष्ठक (2) में ही लिखी तीन (शारीरिक, भावना, बौद्धिक स्तम्भों वाली) संख्याएं लेकर, उन्हें अभीष्ट ई. सन् की 1 जनवरी के तीनों (शारीरिक, भावना, बौद्धिक) वक्रों के चक्रशेषों में क्रमशः जोड़ दें। इस प्रकार आपकी अभीष्ट तारीख को शारीरिक, भावना एवं बौद्धिक वक्रों के चक्रशेष मिल जाएंगे। इन चक्रशेषों द्वारा कोष्ठक (3) से तीनों वक्रों के फल धन (+) या ऋण (-) जान लीजिए। इस कोष्ठक में फल वाले स्तम्भ में यदि फल शून्य (0) मिले तो 'संकटदिन' समझना चाहिए। यहां 1 संख्या 'अर्धसंकटदिन' बतलाती है।

स्पष्टता के लिए यह उदाहरण लीजिए—

उदाहरण—देवेन्द्र शर्मा का जन्म ई. सन् 1945 की 5 मार्च को हुआ था। सन् 1981 की 15 अप्रैल को इसके शारीरिक, भावना और बौद्धिक वक्रों की स्थिति ज्ञात कीजिए—

जन्म सन् 1945 को अभीष्ट सन् 1981 में से घटाने पर 36 वर्ष (आयु के लगभग गत-वर्ष) मिले। कोष्ठक (1) में 36 वर्ष के आगे शारीरिक 39, भावना 45, बौद्धिक 48 मिले। कोष्ठक (2) में जन्म-तारीख 5 मार्च द्वारा शारीरिक 18, भावना 8, बौद्धिक 31 प्राप्त हुए। इन्हें कोष्ठक (1) से मिली संख्याओं में से क्रमशः घटाने पर शारीरिक 21, भावना 37, बौद्धिक 17 हुए। ये 1 जनवरी 1981 को वक्रों के चक्रशेष हैं। हमारी अभीष्ट तारीख 15 अप्रैल के आगे कोष्ठक (2) में ही शारीरिक 13, भावना 21, बौद्धिक 6 मिले। इन्हें 1 जन. 1981 के चक्रशेषों (शारीरिक 21, भावना 37, बौद्धिक 17) में क्रमशः जोड़ने पर 15 अप्रैल, 1981 ई. को शारीरिक वक्र का चक्रशेष 34, भावना वक्र का चक्रशेष 58 और बौद्धिक वक्र का चक्रशेष 23 हुआ। अब कोष्ठक (3) में शारीरिक वक्र के चक्रशेष 34 से शारीरिकवक्र 0 (अर्थात् संकटदिन), भावनावक्र के चक्रशेष 58 से भावनावक्र + (धन) और बौद्धिकवक्र के चक्रशेष 23 से बौद्धिकवक्र - (ऋण) मिला। इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि देवेन्द्र शर्मा के लिए 15 अप्रैल, 1981 ई. बिल्कुल ठीक नहीं है, क्योंकि शारीरिक वक्र की दृष्टि से यह संकटदिन है और साथ ही बौद्धिकवक्र भी ऋण चल रहा है, भावनावक्र यद्यपि यहां धन है, तथापि यह दिन 'संकटदिन' ही है। अतः इस दिन देवेन्द्रजी को सतर्क रहना होगा। कोष्ठक (3) से पता चलता है कि 15 अप्रैल से आगे-पीछे वाले दिन भी देवेन्द्र के लिए संकटदिन एवं अर्धसंकटदिन हैं। अतः 14, 16, 17 अप्रैल को भी उसे सावधान रहना होगा। ध्यान रहे, तीनों वक्रों में से किसी एक वक्र द्वारा भी यदि 'संकटदिन' या 'अर्धसंकटदिन' सिद्ध हो जाये, तो अन्य धनवक्रों का शुभ प्रभाव लगभग समाप्त ही हो जाता है।

कोष्ठक (3)

शारीरिक				भावना				बौद्धिक			
चक्रशेष			फल	चक्रशेष			फल	चक्रशेष			फल
0	23	46	0	0	28	56	0	0	33	66	0
1	24	47	1	1	29	57	1	1	34	67	1
2	25	48	+	2	30	58	+	2	35	68	+
3	26	49	+	3	31	59	+	3	36	69	+
4	27	50	+	4	32	60	+	4	37	70	+
5	28	51	+	5	33	61	+	5	38	71	+
6	29	52	+	6	34	62	+	6	39	72	+
7	30	53	+	7	35	63	+	7	40	73	+
8	31	54	+	8	36	64	+	8	41	74	+
9	32	55	+	9	37	65	+	9	42	75	+
10	33	56	1	10	38	66	+	10	43	76	+
11	34	57	0	11	39	67	+	11	44	77	+
12	35	58	0	12	40	68	+	12	45	78	+
13	36	59	1	13	41	69	1	13	46	79	+
14	37	60	—	14	42	70	0	14	47	80	+
15	38	61	—	15	43	71	1	15	48	81	1
16	39	62	—	16	44	72	—	16	49	82	0
17	40	63	—	17	45	73	—	17	50	83	0
18	41	64	—	18	46	74	—	18	51	84	1
19	42	65	—	19	47	75	—	19	52	85	—
20	43	66	—	20	48	76	—	20	53	86	—
21	44	67	—	21	49	77	—	21	54	87	—
22	45	68	1	22	50	78	—	22	55	88	—
23	46	69	0	23	51	79	—	23	56	89	—
				24	52	80	—	24	57	90	—
				25	53	81	—	25	58	91	—
				26	54	82	—	26	59	92	—
				27	55	83	1	27	60	93	—
				28	56	84	0	28	61	94	—
								29	62	95	—
								30	63	96	—
								31	64	97	—
								32	65	98	1
								33	66	99	0

\+ = धनवक्र
\- = ऋणवक्र

0 = संकटदिन
1 = अर्धसंकटदिन

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षो में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को; जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे-अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें — वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो— इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा— लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०— तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्— जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः— यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि— वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०— मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्— दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो— प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वमयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"— इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। **स्मरण रहे कि**— पहले उपरोक्त मंत्र तथा **यन्त्र** ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:— **"धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।।** बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः— "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः— "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग— क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग— यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगृ मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुम सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु मृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानै सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नम (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो0– धर्मसदन मे भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– झे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नमगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाम धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनमारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुनिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोडी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता या कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम्	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. गृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध मग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तं	लाजवर्तं

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन हन दुष्टाना ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	4		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	60	40	11	यमायतदेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायेति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करें। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरूआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उडद तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट–निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ **सोमवार** के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही **मंगलव्रत** के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; **बुधव्रत** के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत** के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत** के दिन इलायची, मजीठ तथा **शनिव्रत के दिन** काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार–अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:–

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्वीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध–स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध–धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशिज्ञान-चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशि→	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र→ चरण ↓	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम चरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय चरण	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय चरण	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ चरण	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू

राशि→	धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ज' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। **हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।**

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोतम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि. 1	★मेष	मं.	3 00 00	कर्क पुन. 4	★कर्क	चं.	6 00 00	तुला चित्रा 3	★तुला	शु.	9 00 00	मकर उ.षा. 2	★मकर	श.
0 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	3 03 20	,, पुष्य 1	सिंह	सू.	6 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	9 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
0 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	3 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	6 06 40	,, स्वाती 1	धनु	गु.	9 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
0 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	3 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	6 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	9 10 00	,, श्रव. 1	मेष	मं.
0 13 20	,, भर. 1	सिंह	सू.	3 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	6 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	9 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
0 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	3 16 40	,, आश्ले. 1	धनु	गु.	6 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	9 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
0 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	3 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	6 20 00	,, विशा. 1	मेष	मं.	9 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
0 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	3 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	6 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	9 23 20	,, धनि. 1	सिंह	सू.
0 26 40	,, कृति. 1	धनु	गु.	3 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	6 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	9 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
1 00 00	वृष ,, 2	मकर	श.	4 00 00	सिंह मघा 1	मेष	मं.	7 00 00	वृश्चि. ,, 4	कर्क	चं.	10 00 00	कुम्भ ,, 3	तुला	शु.
1 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	4 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	7 03 20	,, अनु. 1	सिंह	सू.	10 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
1 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	4 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	7 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	10 06 40	,, शत. 1	धनु	गु.
1 10 00	,, रोहि. 1	मेष	मं.	4 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	7 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	10 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
1 13 20	,, ,, 2	★वृष	शु.	4 13 20	,, पू.फा. 1	★सिंह	सू.	7 13 20	,, ,, 4	★वृश्चि.	मं.	10 13 20	,, ,, 3	★कुम्भ	श.
1 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	4 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	7 16 40	,, ज्येष्ठा 1	धनु	गु.	10 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
1 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	4 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	7 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	10 20 00	,, पू.भा. 1	मेष	मं.
1 23 20	,, मृग. 1	सिंह	सू.	4 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	7 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	10 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
1 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	4 26 40	,, उ.फा. 1	धनु	गु.	7 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	10 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
2 00 00	मिथुन ,, 3	तुला	शु.	5 00 00	कन्या ,, 2	मकर	श.	8 00 00	धनु मूल 1	मेष	मं.	11 00 00	मीन ,, 4	कर्क	चं.
2 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	5 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	8 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	11 03 20	,, उ.भा. 1	सिंह	सू.
2 06 40	,, आर्द्रा 1	धनु	गु.	5 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	8 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	11 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
2 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	5 10 00	,, हस्त 1	मेष	मं.	8 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	11 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
2 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	5 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.	8 13 20	,, पू.षा. 1	सिंह	सू.	11 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
2 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	5 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	8 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	11 16 40	,, रेव. 1	धनु	गु.
2 20 00	,, पुन. 1	मेष	मं.	5 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	8 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	11 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
2 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	5 23 20	,, चित्रा 1	सिंह	सू.	8 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	11 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
2 26 40	,, ,, 3	★मिथुन	बु.	5 26 40	,, ,, 2	★कन्या	बु.	8 26 40	,, उ.षा. 1	★धनु	गु.	11 26 40	,, ,, 4	★मीन	गु.

बारह राशियों का मासिक-फलादेश एवं संक्रान्ति-फलादेश (सम्वत् 2076 वि.)

वैशाख मास

मेष संक्रान्ति (14 अप्रैल से 14 मई तक, सन् 2019 ई.)

संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—लग्नस्थ सूर्य पर गुरु की विशेष दृष्टि है, विश्व में पनप रही उग्रवादी गतिविधियों पर नियन्त्रण के प्रावधान बनेंगे। लेकिन मंगल-शनि का षडष्टक ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान ग्रस्त गिलगित-बलूचिस्तान, कश्मीर में उग्रवादजन्य अशान्ति रहेगी। भारत के सरहदी इलाकों में सैन्य गतिविधि की उपस्थिति अप्रत्याशित रहेगी। पाक, चीन एवं भारत में ही पनप रहे प्रच्छन्नरूप से अराजक-देश विरोधी तत्त्वों से शासन को सावधान रहना होगा। ऐसा मंगल-बुध की स्थिति से स्पष्ट है। अनाजों, दालवाना आदि में तेजी से जनता असन्तुष्ट रहे।

वैशाख (मेष) संक्रान्ति कुण्डली

मेष संक्रान्ति प्रवेशकाल=14 अप्रैल, सन् 2019 ई. को 14 घं. 7 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 15, पुण्यकाल 7 घं. 45 मि. बाद,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक रहे, आर्थिक स्थिति स्थिर रहेगी, निजी लोगों से अनबन, सम्पदा लाभ हो, स्त्रीपक्ष से सुख, सन्तान पक्ष से शुभ समाचार, मित्र-बन्धु से लाभ हो। **अप्रैल** 14, 21, 22, 23, **मई** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

वृष—क्रोध बढ़े, आर्थिक संकट से मन परेशान, भ्रातृसुख, मित्र-बन्धु से मदद मिले, सन्तति-सुख, गुप्त शत्रु से भय, रक्त-पित्त विकार, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। **अप्रैल** 15, 16, 23, 24, 25, **मई** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

मिथुन—शारीरिक कष्ट, अर्थलाभ होकर भी वृथा व्यय हो, मित्र-बन्धु से सुख मिले, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त शुभ रहे। **अप्रैल** 17, 18, 26, 27, 28, **मई** 6, 7, 14 अशुभ हैं।

कर्क—सेहत ठीक, गुप्त चिन्ता से परेशानी, मित्र-बन्धु से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, कारोबार में हानि, जगह तबदीली का योग बने। **अप्रैल** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **मई** 8, 9 अशुभ हैं।

सिंह—सेहत ठीक, धनलाभ हो, भाई-बन्धु से अनबन, सम्पदा लाभ हो, सन्तान व स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में प्रगति हो। **अप्रैल** 14, 21, 22, 23, **मई** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

कन्या—अचानक लाभ हो, उत्साह बढ़े, कारोबार में हानिभय, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। भाई-बन्धु से मदद मिले। **अप्रैल** 15, 16, 23, 24, 25, **मई** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

तुला—सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानिभय है, सम्पत्ति-विवाद, स्त्री-पुत्र पक्ष से लाभ, गुप्त शत्रु से सावधान, राजपक्ष से भय रहे। **अप्रैल** 17, 18, 26, 27, 28, **मई** 6, 7, 14 अशुभ हैं।

वृश्चिक—वायुरोग से परेशानी, कारोबार से लाभ, निजीजन विरोध, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से भी लाभ हो। **अप्रैल** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **मई** 8, 9 अशुभ हैं।

धनु—गुप्त चिन्ता, धनलाभ, यात्रा में सुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार में वृद्धि, मासान्त में विशेष खर्च आ पड़े, मन चिन्तित। **अप्रैल** 14, 21, 22, 23, **मई** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

मकर—कफ-वायु विकार, धनलाभ होकर वृथा व्यय हो, भाई से मदद मिले, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, अशुभ समाचार मिले। **अप्रैल** 15, 16, 23, 24, 25, **मई** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

कुम्भ—सेहत ठीक, धनलाभ, सुखद यात्रा, मित्र-बन्धु मिलाप, कारोबार में गड़बड़ एवं रद्दोबदल का योग बने। **अप्रैल** 17, 18, 26, 27, 28, **मई** 6, 7, 14 अशुभ हैं।

मीन—सेहत ठीक, धनलाभ हो, बन्धु सुख-सम्पत्ति विवाद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, आय से व्यय अधिक हो। **अप्रैल** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **मई** 8, 9 अशुभ हैं।

ज्येष्ठ मास

वृष संक्रान्ति (15 मई से 14 जून तक, सन् 2019 ई.)

वृष संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—षष्ठेश एवं लग्नेश शुक्र द्वादशस्थ है। शनि-केतु एवं राहु मंगल का समसप्तक योग अनेकत्र भूकम्प, विस्फोट एवं उग्रवादजन्य परेशानियां बनायेगा। भारत-पाक-चीन में परस्पर टकराव की स्थिति बनेगी। इस मास में कुछ देश भयंकर कष्ट को झेलेंगे। उ. कोरिया भी विश्वशान्ति को चुनौती देगा। भारत की प्रभाव राशि मकर का स्वामी शनि अप्रत्याशित राजनैतिक घटनाक्रम को उपस्थित करेगा। सूर्य, मंगल शनि की स्थिति जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी का संकेत देती है।

ज्येष्ठ (वृष) संक्रान्ति कुण्डली

मं.रा. 3 | 1 बु.शु. | 4 | 2 सू. | 12 | 5 | 11 | 6 चं. | 8 गु. | 10 | 7 | 9 के.श.

वृष संक्रान्ति प्रवेशकाल=15 मई, सन् 2019 ई. को 10 घं. 59 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल 17 घं. 25 मि. तक,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—वायु विकार, आर्थिक संकट, निजीजन से अनबन, सन्तति सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, दुर्घटना में हानिभय, आय से व्यय अधिक हो। **मई** 19, 20, 28, 29, 30, **जून** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

वृष—रक्त-पित्त विकार, बन्धु सुख, सम्पत्ति लाभ, सन्तान पक्ष से सुख, स्त्री हेतु विशेष खर्च हो, मासान्त में विशेष खर्च हो। **मई** 21, 22, 23, 31, **जून** 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मिथुन—सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, बन्धु सुख, अच्छे लोगों से मेल, गुप्त चिन्ता, अपमानभय, मासान्त में विशेष खर्च हो। **मई** 15, 16, 23, 24, 25, **जून** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

कर्क—सेहत गड़बड़, कार्यान्तर का विचार, भाई-बन्धु सुख, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री रुग्णा। **मई** 16, 17, 18, 26, 27, 28, **जून** 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ हैं।

सिंह—वायु विकार, धनलाभ हो, बन्धु सुख, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़, मासान्त में हानिभय रहे। **मई** 19, 20, 28, 29, 30, **जून** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

कन्या—शुभ समाचार मिले, धनलाभ हो, निजी लोगों से अनबन, सन्तान-स्त्री पक्ष शुभ; मासान्त में कारोबार कमजोर रहे। **मई** 21, 22, 23, 31, **जून** 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

तुला—वृथा व्यय हो, नयी योजना से हानिभय, निजीजनों से अनबन, स्त्रीपक्ष से लाभ, वाहन से चोटभय, कारोबार कमजोर। **मई** 15, 16, 23, 24, 25, **जून** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

वृश्चिक—रक्त-पित्त विकार, भाई-बन्धु सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, यात्रा में सुख, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। **मई** 16, 17, 18, 26, 27, 28, **जून** 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ हैं।

धनु—वायु विकार, धनलाभ हो, मित्र-बन्धु सुख, शत्रु हतप्रभ, सुखद यात्रा, कारोबार ठीक रहे। **मई** 19, 20, 28, 29, 30, **जून** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

मकर—शूगर व रक्तचाप से कष्ट, कार्यान्तर से लाभ, भाई-बन्धु से मदद, सन्तान पक्ष से चिन्ता, यात्रा हो, शत्रु पक्ष से विजय हो। **मई** 21, 22, 23, 31, **जून** 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कुम्भ—सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में रद्दोबदल का विचार बने। **मई** 15, 16, 23, 24, 25, **जून** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

मीन—सेहत ठीक रहे, आय से व्यय अधिक हो, निजीजन से विरोध, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीपक्ष से लाभ, राजपक्ष से लाभ। **मई** 16, 17, 18, 26, 27, 28, **जून** 4, 5, 6, 13, 14, अशुभ हैं।

आषाढ़ मास

मिथुन संक्रान्ति (15 जून से 15 जुलाई तक, सन् 2019 ई.)

मिथुन संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—सूर्य-बुध-मंगल एवं राहु के साथ शनि एवं केतु का समसप्तक कहीं अतिवर्षा, कहीं दुर्भिक्ष आदि से जन-जीवन को क्षुब्ध करे। इस कुण्डली में कन्टक एवं आपोक्लिम, इन दो भावों में ही सभी ग्रह हैं, अत: राजनैतिक, सामाजिक दृष्टि से अप्रत्याशित घटनाएं देखनी होंगी। सीमा प्रान्त, विशेषत: कश्मीर, राजस्थान, उ.भारत के सीमा क्षेत्र अतिक्रमण भय, शस्त्रास्त्रों के भय एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से क्षुब्ध रहेंगे। महंगाई बढ़ेगी, व्यापारी वर्ग परेशान रहे।

मिथुन संक्रान्ति प्रवेशकाल—15 जून, सन् 2019 ई. को 17 घं. 36 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल 11 घं. 10 मि. बाद,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—मास में शुभ कार्य हों, शुभ में खर्च होगा, लेकिन आर्थिक स्थिति कमजोर, निजीजन सहयोग रहे। सन्तान पक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। जून 15, 16, 17, 25, 26, जुलाई 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

वृष—मन परेशान रहे, कर्जा सिर चढ़े, सम्पत्ति-विवाद, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में रद्दोबदल का विचार बने। यात्रा में कष्टभय। जून 17, 18, 19, 27, 28, 29, जुलाई 6, 7, 14, 15 अशुभ हैं।

मिथुन—वायु विकार से परेशानी, धन लाभ होकर हानिभय, निजी लोगों से मेल, बंन्धु से मेल-मुलाकात, सन्तति कष्ट, आय से व्यय अधिक हो। जून 19, 20, 21, 29, 30, जुलाई 8, 9 अशुभ हैं।

कर्क—सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ होकर हानि हो, सम्पत्ति-विवाद, निजीजनों से मनमुटाव, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रुकावट आये। जून 22, 23, 24, जुलाई 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

सिंह—कार्यान्तर से लाभ हो, वायुविकार, बन्धु कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में हानि से मन परेशान रहे। जून 15, 16, 17, 25, 26, जुलाई 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

कन्या—गुप्त चिन्ता से मन परेशान, आर्थिक संकट, सम्पत्ति-विवाद, स्त्रीपक्ष से लाभ, स्थानान्तर एवं कार्यान्तर का मन बने। जून 17, 18, 19, 27, 28, 29, जुलाई 6, 7, 14, 15 अशुभ हैं।

तुला—रुधिर विकार, वातरोगभय, मित्र-बन्धु से मदद मिले। शत्रुपक्ष प्रबल, राजपक्ष से विजय, मासान्त शुभ। जून 19, 20, 21, 29, 30, जुलाई 8, 9 अशुभ हैं।

वृश्चिक—शूगर एवं ब्लड प्रेशर से परेशानी, कारोबार में लाभ, भाई-बन्धु से लाभ, सन्तान सुख, नीच व्यक्ति से सावधान, अपमान भय है। जून 22, 23, 24, जुलाई 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

धनु—सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से मदद रहे, कारोबार ठीक, मासान्त शुभ रहे। जून 15, 16, 17, 25, 26, जुलाई 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

मकर—सेहत ठीक, रुके काम बनें, राजपक्ष से विजय, बन्धुसुख, सम्पत्ति सुख, वृथा व्यय, मासान्त में हानिभय। जून 17, 18, 19, 27, 28, 29, जुलाई 6, 7, 14, 15 अशुभ हैं।

कुम्भ—उदर विकार, धनलाभ योग, बन्धु सुख, मित्र से धोखा मिले, सन्तति पक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीसुख, कारोबार में बाधा रहे। जून 19, 20, 21, 29, 30, जुलाई 8, 9 अशुभ हैं।

मीन—वृथा व्यय हो, आर्थिक संकट का सामना करना पड़े, गुप्त चिन्ता, सम्पत्ति विवाद, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार बने, यात्रा में कष्ट रहे। जून 22, 23, 24, जुलाई 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

श्रावण मास

कर्क संक्रान्ति (16 जुलाई से 16 अगस्त तक, सन् 2019 ई.)

कर्क संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—कर्क संक्रान्ति के समय लग्न में नीचस्थ मंगल, सूर्य एवं बुध से प्रभावित है। शत्रुक्षेत्री चन्द्र की इन पर दृष्टि भी है। अत: देश-विदेश की अनेक प्रकार की राजनैतिक विषमताओं के बावजूद भारत की प्रभाव राशि पर बुधादित्य एवं मंगल की उच्च दृष्टि भारत की प्रभुसत्ता को नई दिशा एवं नया मार्ग प्रदर्शित करेगी। देश की प्रगति के लिए नये आयाम उपस्थित होंगे।

कर्क संक्रान्ति प्रवेशकाल=16 जुलाई, सन् 2019 ई. को 28 घं. 32 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—क्रोध बढ़े, सेहत गड़बड़, वृथा व्यय, बन्धु-मित्र से अनबन, सन्तति सुख, शत्रु हतप्रभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। जुलाई 22, 23, 24, 31, **अगस्त** 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

वृष—सिर या नेत्र कष्ट, कार्यान्तर से धनलाभ हो, बन्धु सुख, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से भय। जुलाई 16, 24, 25, 26, **अगस्त** 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ हैं।

मिथुन—रक्तचाप (Blood pressure) से परेशानी, कारोबार ठीक, रुके काम बनें, अच्छे लोगों से मेल हो। सन्तान से चिन्ता, स्त्रीपक्ष शुभ, मासान्त शुभ। जुलाई 17, 18, 19, 27, 28, 29, **अगस्त** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ हैं।

कर्क—सेहत ठीक, आकस्मिक धनलाभ योग है, बन्धु सुख, सन्तान से खुशी, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, यात्रा हो। जुलाई 19, 20, 21, 29, 30, 31, **अगस्त** 6, 7, 8, 16 अशुभ हैं।

सिंह—अचानक कष्ट, वृथा व्यय, सम्पत्ति विवाद, सन्तान पक्ष से खुशी, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। स्त्रीपक्ष से लाभ हो। जुलाई 22, 23, 24, 31, **अगस्त** 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कन्या—उदर विकार, चर्मरोग, आर्थिक संकट, भाई, मित्र से सहयोग, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले। जुलाई 16, 24, 25, 26, **अगस्त** 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ हैं।

तुला—मन परेशान रहे, क्रोध बढ़े, कारोबार में रुकावट, स्त्री कष्ट, स्थानान्तर-कार्यान्तर का विचार बने। जुलाई 17, 18, 19, 27, 28, 29, **अगस्त** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ हैं।

वृश्चिक—सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ, कारोबार ठीक, निजीजन कष्ट, शत्रु कमजोर, उलझे मसले हल हों। जुलाई 19, 20, 21, 29, 30, 31, **अगस्त** 6, 7, 8, 16 अशुभ हैं।

धनु—मित्र-बन्धु की मदद से समस्या हल हो, सेहत ठीक रहे, धनहानि हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान रहें, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जुलाई 22, 23, 24, 31, **अगस्त** 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मकर—समस्याएं उलझें, मन परेशान, धनलाभ, लेकिन वृथा व्यय, निजीजन से. अनबन, नीच व्यक्ति से अपमान, जगह बदले, कारोबार में रद्दोबदल हो। जुलाई 16, 24, 25, 26, **अगस्त** 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ हैं।

कुम्भ—उदर में विकार, धनलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ, चोटभय, मासान्त में आय से व्यय अधिक रहे। जुलाई 17, 18, 19, 27, 28, 29, **अगस्त** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ हैं।

मीन—धोखे से बचें, धनहानि का भय, नेत्र कष्ट, जमीन-जायदाद से लाभ, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में लाभ। जुलाई 19, 20, 21, 29, 30, 31, **अगस्त** 6, 7, 8, 16 अशुभ हैं।

भाद्रपद मास

सिंह संक्रान्ति (17 अग. से 16 सितं. तक, सन् 2019 ई.)

सिंह संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—चन्द्र पर शनि-मंगल की दृष्टि प्रतिष्ठित नेताओं के लिए परेशानी वाली रहेगी। कन्टक-पणफर में ग्रहों की स्थिति 'इत्थशाल' योग का संकेत देती है, जोकि विश्व में अशान्त वातावरण के हल के लिए समर्थ देशों को प्रेरित करेगी। शनि-मंगल का नवपंचम एवं शनि- राहु के समसप्तक से संकेत मिलता है, कि—इण्डोनेशिया, अफगानिस्तान, पाक एवं भारत के कुछ भागों में भूकम्प आदि से इस मासान्त में हानि के योग हैं। अनाज, खाद्य तेल, ग्वार, गुड़, सोना, चांदी आदि धातु महंगे रहेंगे।

भाद्रपद (सिंह) संक्रान्ति कुण्डली

भाव	ग्रह
5	सू. शु. मं.
4	बु.
3	रा.
2	
1	
12	
11	चं.
10	
9	श. के.
8	गु.
7	
6	

सिंह संक्रान्ति प्रवेशकाल=17 अग., सन् 2019 ई. को 13 घं. 0 मि. (I.S.T.),मुहूर्त्ती 15, पुण्यकाल प्रातः 6 घं. 38 मि. बाद,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक, धनलाभ होकर विशेष खर्च हो, मित्र-बन्धु से सहयोग, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रद्दोबदल हो। **अगस्त** 18, 19, 20, 27, 28, 29, **सितम्बर** 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ हैं।

वृष—अचानक लाभ योग, सेहत ठीक, भ्रातृसुख, मित्र-बन्धु कष्ट, सन्तान हेतु विशेष खर्च, यात्रा में कष्टभय। **अगस्त** 21, 22, 23, 30, 31, **सितम्बर** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

मिथुन—वायुरोग से परेशानी, धनलाभ होकर विशेष खर्च हो, भाई-बन्धु सहयोग, सन्तान हेतु खर्च हो, कारोबार ठीक। **अगस्त** 23, 24, 25, 31, **सितम्बर** 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ हैं।

कर्क—नयी योजना से लाभ, अर्थलाभ होकर हानिभय, बन्धुकष्ट, सम्पत्ति विवाद, सन्तान पक्ष से सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। मासान्त में कारोबार में हानि। **अगस्त** 16, 17, 18, 25, 26, 27, **सितम्बर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

सिंह—कफ-वायु विकार, वृथा व्यय, गुप्त चिन्ता, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीकष्ट, मासान्त में लाभ हो। **अगस्त** 18, 19, 20, 27, 28, 29, **सितम्बर** 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ हैं।

कन्या—शारीरिक परेशानी, भाई-बन्धु कष्ट, मित्र से सहयोग मिले, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल हो। **अगस्त** 21, 22, 23, 30, 31, **सितम्बर** 7, 8 अशुभ हैं।

तुला—कर्जा सिर चढ़े, वृथा कलह से बचें, कारोबार ठीक, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **अगस्त** 23, 24, 25, 31, **सितम्बर** 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ हैं।

वृश्चिक—सेहत में सुधार हो, धनलाभ, खर्च अधिक, गुप्त चिन्ता, वंशवृद्धि, गुप्त शत्रु से सावधान, कार्यान्तर से लाभ हो। **अगस्त** 16, 17, 18, 25, 26, 27, **सितम्बर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

धनु—गुप्त चिन्ता, धनलाभ होकर वृथा व्यय, निजी लोगों से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़ रहे। **अगस्त** 18, 19, 20, 27, 28, 29, **सितम्बर** 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ हैं।

मकर—वायु विकार, कर्जा सिर चढ़े, मित्र-बन्धु से मदद, यात्रा में सावधान, चोटभय है, कारोबार में सुधार हो। **अगस्त** 21, 22, 23, 30, 31, **सितम्बर** 7, 8 अशुभ हैं।

कुम्भ—उदर विकार, अचानक धनलाभ हो, निजी लोगों से अनबन, सन्तान पक्ष से खुशी, उलझे काम सुलझें। **अगस्त** 23, 24, 25, 31, **सितम्बर** 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ हैं।

मीन—वायु विकार, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में कुछ रद्दोबदल हो। **अगस्त** 16, 17, 18, 25, 26, 27, **सितम्बर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

आश्विन मास

कन्या संक्रान्ति (17 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2019 ई.)

कन्या संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—लग्नेश बुध का सूर्य के साथ बुधादित्य योग शुभंकर है, परन्तु लग्नस्थ सूर्य-शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि प्रतिष्ठित व्यक्तियों या व्यक्ति विशेष के लिए दुःखद रहेगी। किसी राजनीतिक व्यक्ति का पद रिक्त होगा। विपक्षी दल देश-हितार्थ योजनाओं में बाधा डालेंगे। सीमा प्रान्तों की सुरक्षा के लिए कुछ स्थलों पर सैन्यबलों का प्रयोग विवशता होगी। लेकिन भारत में स्वच्छ पारदर्शी शासन प्रशंसनीय रहेगा। खाद्य तेल, घी, डीजल, पैट्रोल, शक्कर एवं दालवाना तेज रहें।

आश्विन (कन्या) संक्रान्ति कुण्डली

कन्या संक्रान्ति प्रवेशकालं-17 सितम्बर, सन् 2019 ई. को 13 घं. 1 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल प्रातः 6 घं. 39 मि. बाद,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—राजपक्ष से भय, स्थानान्तरण योग, धनलाभ होकर हानिभय, घरेलू झंझट से बचें, नेत्रकष्ट, चोटभय है। **सितम्बर** 24, 25, 26, **अक्तूबर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

वृष—विरोधी पक्ष कमजोर, आय से व्यय अधिक, सेहत गड़बड़, सम्पत्ति विवाद से परेशानी, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। **सितम्बर** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **अक्तूबर** 4, 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ हैं।

मिथुन—मन शान्त रहे, शत्रु कमजोर, अर्थहानि, वृथा व्यय, स्त्रीपक्ष से लाभ, चोटभय, कारोबार में नुक्सान हो। **सितम्बर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

कर्क—क्रोध बढ़े, रक्तपित्त विकार से परेशानी, गुप्त चिन्ता, निजीजन सहयोग, स्त्रीकष्ट, झगड़े-झंझटों से बचें। **सितम्बर** 22, 23, 30, **अक्तूबर** 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ हैं।

सिंह—सेहत ठीक, यात्रा में सुख, नई योजना से हानि, कारोबार कमजोर, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। **सितम्बर** 24, 25, 26, 27, 28, **अक्तूबर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

कन्या—राजपक्ष से भय, मानसिक चिन्ता, कारोबार में सुधार, आय से व्यय अधिक, मित्र-बन्धु से लाभ। **सितम्बर** 17, 18, 19, **अक्तूबर** 4, 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ हैं।

तुला—रक्तपित्त विकार, अर्थलाभ, खर्च अधिक हो, भ्रातृ सुख, मित्र-बन्धु कष्ट, कारोबार में सुधार हो। **सितम्बर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

वृश्चिक—वायु विकार, धनलाभ हो, भाई को कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से मदद, धर्म-कर्म में मन लगे। **सितम्बर** 22, 23, 30, **अक्तूबर** 2, 9, 10, 11 अशुभ हैं।

धनु—सेहत ठीक रहे, कर्जा सिर चढ़े, मित्र-बन्धु साथ न दें, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता, मासान्त में अचानक लाभ हो। **सितम्बर** 24, 25, 26, 27, 28, **अक्तूबर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

मकर—गुप्त चिन्ता, धनहानि योग है, शरीर कष्ट, कारोबार में सुधार के योग, मित्र-बन्धु की मदद से लाभ। **सितम्बर** 17, 18, 19, **अक्तूबर** 4, 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ हैं।

कुम्भ—वायु विकार, धनलाभ होकर विशेष खर्च, मित्र सहयोग, सन्तान से सुख, यात्रा में कष्ट, चोट से बचें। **सितम्बर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

मीन—रक्तचाप से कष्ट, क्रोध बढ़े, मित्र-बन्धु सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, धर्म-कर्म में मन लगे। **सितम्बर** 22, 23, 30, **अक्तूबर** 2, 9, 10, 11 अशुभ हैं।

कार्तिक मास

तुला संक्रान्ति (17 अक्तूबर से 15 नवं. तक, सन् 2019 ई.)

तुला संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—लग्नेश शुक्र, नीचस्थ सूर्य के साथ क्षीण है। शनि की मंगल पर दृष्टि होने से मुस्लिम राष्ट्र, चीन एवं कोरिया आदि राष्ट्रों में स्थिति विषम होगी। भारत के समुद्री एवं भू-भाग के सीमा प्रान्त अशान्त रहेंगे। गुरु-चन्द्र समसप्तक भारत को शान्ति एवं अभ्युदय की दृष्टि से अग्रसर रखेगा। द्वितीयेश मंगल व्यय स्थान में होने से प्रगतिप्रद योजनाओं को क्रियान्वित करने में भारत को आर्थिक संकट झेलना होगा। गुड़, चीनी, खाद्य तेलों एवं धातुओं में तेजी रहेगी।

कार्तिक (तुला) संक्रान्ति कुण्डली

तुला संक्रान्ति प्रवेशकाल=17 अक्तूबर, सन् 2019 ई. को 25 घं. 1 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्त 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

कार्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—गुप्त शत्रु से भय, गुप्त चिन्ता, कर्जा बढ़े, बन्धु व मित्र से मदद सन्तान पक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक हो। **अक्तूबर** 21, 22, 23, 29, 30, 31, **नवम्बर** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

वृष—सेहत ठीक, घरेलू झंझट, मित्र से मदद मिले, स्त्रीपक्ष से लाभ, घर में शुभ कार्य का पुरोगम, मासान्त में मन चिन्तित रहे। **अक्तूबर** 23, 24, 25, 31, **नवम्बर** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

मिथुन—उदर व नेत्र पीड़ा, वृथा व्यय, निजीजन से अनबन, मित्र सहयोग, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक, कारोबार कमजोर। **अक्तूबर** 17, 18, 25, 26, 27, **नवम्बर** 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ हैं।

कर्क—रक्तपित्त विकार, अर्थलाभ हो, भ्रातृपक्ष से शुभ समाचार, स्त्रीकष्ट, अपमान भय, राजपक्ष से विजय, मासान्त में व्यय अधिक। **अक्तूबर** 19, 20, 21, 27, 28, 29, **नवम्बर** 5, 6, 7, 15 अशुभ हैं।

सिंह—सेहत ठीक, आकस्मिक धनलाभ, भ्रातृसुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, मासान्त में हानिभय है। **अक्तूबर** 21, 22, 23, 29, 30, 31, **नवम्बर** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कन्या—सेहत ठीक, घरेलू झंझटों से बचें, कारोबार ठीक, निजीजन कष्ट, गुप्त चिन्ता, मासान्त में विशेष खर्च हो। **अक्तूबर** 23, 24, 25, 31, **नवम्बर** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

तुला—सम्पदा विवाद से बचें, यात्रा सुखद रहे, अर्थलाभ हो, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीकष्ट योग है। **अक्तूबर** 17, 18, 25, 26, 27, **नवम्बर** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ हैं।

वृश्चिक—सेहत ठीक, अर्थहानि, वृथाव्यय हो, निजीजन कष्ट, राजपक्ष से भय, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार गड़बड़ रहे। **अक्तूबर** 19, 20, 21, 27, 28, 29, **नवम्बर** 5, 6, 7, 15 अशुभ हैं।

धनु—मन अशान्त, धनलाभ होकर हानिभय, निजीजन कष्ट, शत्रु प्रबल, धर्म-कर्म में मन लगे, मासान्त में राहत मिले। **अक्तूबर** 21, 22, 23, 29, 30, 31, **नवम्बर** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मकर—कारोबार में प्रगति, निजीजन कष्ट, सन्तान से शुभ समाचार, शत्रु कमजोर, मासान्त में कार्यान्तर से लाभ। **अक्तूबर** 23, 24, 25, 31, **नवम्बर** 1, 9, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

कुम्भ—गुप्त शत्रु प्रबल, वृथा व्यय, निजीजन विरोध, मित्र से मदद, यात्रा हो, स्त्रीपक्ष शुभ। **अक्तूबर** 17, 18, 25, 26, 27, **नवम्बर** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ हैं।

मीन—क्रोध बढ़े, घरेलू झंझट बढ़ेंगे, भाई-बन्धु से सहयोग, कार्यान्तर से लाभ। **अक्तूबर** 19, 20, 21, 27, 28, 29, **नवम्बर** 5, 6, 7, 15 अशुभ हैं।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिक संक्रान्ति (16 नवं. से 15 दिसं. तक, सन् 2019 ई.)

वृश्चिक संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—संक्रान्तिकालीन कुण्डली में गुरु-शनि-केतु का चन्द्र-राहु के साथ समसप्तक देश के लिए विषम समस्यात्मक तो है, लेकिन गुरुक्षेत्र में गुरु-शनि सभी समस्याओं का समाधान करेंगे—**"स्थानहानिकरो जीवःस्थान वृद्धिकरः शनिः।"** देश को आत्मरक्षार्थ शस्त्रास्त्र हेतु अधिक व्यय करना पड़ेगा। प्राकृतिक प्रकोप से पर्वतीय भूभाग में हानि सम्भव है। खाद्य पदार्थ महंगे रहें।

मार्गशीर्ष (वृश्चिक) संक्रान्ति कुण्डली

वृश्चिक संक्रान्ति प्रवेशकाल=16 नवम्बर, सन् 2019 ई. को 24 घं. 49 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—नेत्र कष्ट, मित्र से मदद मिले, स्त्रीकष्ट, वाहन से चोटभय, आय से व्यय अधिक, घरेलू झंझटों से सावधान रहें। **नवम्बर** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **दिसम्बर** 5, 6, 7, 15 अशुभ हैं।

वृष—धनलाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन सहयोग, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ, यात्रा में चोटभय से बचें। **नवम्बर** 20, 21, 28, 29, 30, **दिसम्बर** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मिथुन—सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति सुधरेगी, मित्र-मिलाप, शत्रु कमजोर, कार्यक्षेत्र बढ़े, मासान्त में व्यय अधिक हो। **नवम्बर** 22, 23, 30, **दिसम्बर** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

कर्क—वायु विकार, आर्थिक स्थिति सुधरे, निजीजन से अनबन, नयी योजना से हानि, स्त्रीसुख, कारोबार में बाधा सम्भव। **नवम्बर** 16, 17, 24, 25, **दिसम्बर** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

सिंह—धनलाभ होकर हानि हो, बन्धुकष्ट, राजपक्ष से भय, मन चिन्तित, कार्यान्तर व स्थानान्तर का योग बने। **नवम्बर** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **दिसम्बर** 5, 6, 7, 15 अशुभ हैं।

कन्या—सेहत ठीक, कर्जा बढ़े, निजीजन सहयोग, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान, यात्रा में कष्टभय है। **नवम्बर** 20, 21, 28, 29, 30, **दिसम्बर** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

तुला—वायु विकार, वृथा व्यय हो, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीकष्ट, घरेलू झंझटों से सावधान। **नवम्बर** 22, 23, 30, **दिसम्बर** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

वृश्चिक—उदर विकार, मन अशान्त, बन्धुसुख, मित्र मिलाप, अशुभ समाचार। **नवम्बर** 16, 17, 24, 25, **दिसम्बर** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

धनु—वृथा विवाद से मन अशान्त, आय से व्यय अधिक, भ्रातृ सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु बढ़ें। **नवम्बर** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **दिसम्बर** 5, 6, 7, 15 अशुभ हैं।

मकर—सेहत ठीक, लेकिन मन परेशान रहे, सम्पदा-विवाद बढ़े, सन्तान पक्ष से चिन्ता, आय से व्यय अधिक हो। **नवम्बर** 20, 21, 28, 29, 30, **दिसम्बर** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कुम्भ—वायु विकार, वृथा व्यय, भाई-बन्धु से मदद, स्त्रीपक्ष शुभ, यात्रा में हानि, वाहन से चोटभय है। **नवम्बर** 22, 23, 30, **दिसम्बर** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

मीन—रक्तपित्त विकार, आर्थिक संकट, बन्धु से मदद, सन्तति कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक रहे। **नवम्बर** 16, 17, 24, 25, **दिसम्बर** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ हैं।

पौष मास

धनु संक्रान्ति (16 दिसं. 2019 ई. से 13 जन., सन् 2020 ई.)

धनु संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—केन्द्र में केन्द्रेश गुरु, शनि-सूर्य का एक साथ होना आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से तो ठीक है, लेकिन सूर्य-शनि का एकत्र होना प्रधान नेतृत्व के लिए भारी विषम परिस्थितियों को लेकर आ रहा है। व्यापारिक क्षेत्र में अशान्ति रहे एवं महंगाई सर्वसाधारण के लिए असन्तोषप्रद वातावरण बनाये। चना, दालें, चावल, गुड़ एवं अन्य खाद्य पदार्थों में भारी तेजी रहे।

पौष (धनु) संक्रान्ति कुण्डली

धनु संक्रान्ति प्रवेशकाल-16 दिसम्बर, सन् 2019 ई. को 15 घं. 26 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 15, पुण्यकाल 9 घं. 4 मि. बाद,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—राजपक्ष से भय, स्थानान्तर का योग, आर्थिक लाभ होकर भी खर्च विशेष हो, निजीजनों से सहयोग मिले, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़ रहे। **दिसम्बर** 16, 23, 24, 25, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ हैं।

वृष—सेहत ठीक, घरेलू झंझट, अर्थलाभ, वृथा व्यय, मित्र-बन्धु से मदद, नई योजना से लाभ, कारोबार में बाधा। **दिसम्बर** 17, 18, 25, 26, 27, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 4, 5, 6, 13 अशुभ हैं।

मिथुन—रुधिर विकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, भ्रातृसुख, गुप्त शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से मदद, धर्म-कर्म में मन लगे, कारोबार ठीक रहे। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 7, 8 अशुभ हैं।

कर्क—नेत्र व सिर पीड़ा, मानसिक परेशानी, कारोबार में रद्दोबदल, मित्र से मदद, मासान्त समस्यापूर्ण हो। **दिसम्बर** 21, 22, 23, 28, 29, 30, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 9, 10, 11 अशुभ हैं।

सिंह—सेहत ठीक, धनलाभ हो, नयी योजना किंवा कारोबार से लाभ, शत्रुपक्ष कमजोर, घर में शुभ कार्य हों। **दिसम्बर** 16, 23, 24, 25, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ हैं।

कन्या—सेहत ठीक, कर्जा सिर चढ़े, निजी लोगों से अनबन, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से मदद, आय से व्यय अधिक। **दिसम्बर** 17, 18, 25, 26, 27, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 4, 5, 6, 13 अशुभ हैं।

तुला—उदर विकार, आर्थिक संकट, भाई से मदद, सन्तान कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार में वृद्धि के उपाय हों। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 7, 8 अशुभ हैं।

वृश्चिक—वायु विकार, घरेलू झंझट बढ़ें, मित्र-बन्धु से मदद, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार पूर्ववत्। **दिसम्बर** 21, 22, 23, 28, 29, 30, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 9, 10, 11 अशुभ हैं।

धनु—रक्तपित्त विकार, कार्यान्तर से अर्थलाभ, भाई से मदद, स्त्रीकष्ट, मासान्त में हानिभय। **दिसम्बर** 16, 23, 24, 25, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ हैं।

मकर—सेहत ठीक, आर्थिक संकट, निजीजनों से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, गुप्त शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ। **दिसम्बर** 17, 18, 25, 26, 27, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 4, 5, 6, 13 अशुभ हैं।

कुम्भ—क्रोध बढ़े, भाई-बन्धु से मदद, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक, पार्टनरशिप में बाधा। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 7, 8 अशुभ हैं।

मीन—सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, भाई-बन्धु सुख, शत्रुपक्ष कमजोर, स्त्रीसुख, वाहन से चोटभय। **दिसम्बर** 21, 22, 23, 28, 29, 30, **जनवरी (सन् 2020 ई.)** 9, 10, 11 अशुभ हैं।

माघ मास

मकर संक्रान्ति (14 जनवरी से 12 फरवरी तक, सन् 2020 ई.)

मकर संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—लग्न में शनिक्षेत्री सूर्य प्रतिष्ठित व्यक्ति विशेष के लिए संकटापन्न रहेगा। द्वितीयेश शनि व्यय स्थान में होने पर भी शनिक्षेत्री शुक्र देश की गरिमा को बरकरार रखेगा। विपक्षीदल सत्ता पार्टी को परेशान करें। तिलहन, गुड़, अनाज एवं दालवाना में महंगाई रहे, जनता में असन्तोष रहे।

माघ (मकर) संक्रान्ति कुण्डली

मकर संक्रान्ति प्रवेशकाल=14 जनवरी, सन् 2020 ई. को 26 घं. 6 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल आगामी पूरा दिन,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—मन अशान्त, निजीजन विरोध, सम्पदा-विवाद, मासान्त में चोटभय, कारोबार व जगह बदलने पर मजबूर हों। **जनवरी (2020 ई.)** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **फरवरी** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

वृष—सेहत ठीक, धनलाभ होकर वृथाव्यय, मित्र मिलाप, स्त्रीकष्ट, चोटभय, कारोबार कमजोर हो। **जनवरी (2020 ई.)** 14, 15, 22, 23, 24, 31, **फरवरी** 1, 2, 10, 11 अशुभ हैं।

मिथुन—वायुविकार, घरेलू उलझनें बढ़ें, निजी लोगों से सहयोग, सन्तति चिन्ता, वृथा विवाद से बचें। **जनवरी (2020 ई.)** 15, 16, 17, 24, 25, 26, **फरवरी** 3, 4, 5, 11, 12 अशुभ हैं।

कर्क—रक्तपित्त विकार, भ्रातृकष्ट, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ, कोराबार ठप्प। **जनवरी (2020 ई.)** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **फरवरी** 5, 6, 7 अशुभ हैं।

सिंह—सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, मित्र मिलाप, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। **जनवरी (2020 ई.)** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **फरवरी** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

कन्या—नेत्र कष्ट, धनलाभ, निजी जन सहयोग, गुप्त शत्रु से सावधान, कारोबार में प्रगति हो। **जनवरी (2020 ई.)** 14, 15, 22, 23, 24, 31, **फरवरी** 1, 2, 10, 11 अशुभ हैं।

तुला—वायु विकार, धनलाभ होकर हानि, सन्तान सुख, स्त्रीकष्ट, वाहन से चोटभय। **जनवरी (2020 ई.)** 15, 16, 17, 24, 25, 26, **फरवरी** 3, 4, 5, 11, 12 अशुभ हैं।

वृश्चिक—रोग से परेशानी, आय से व्यय अधिक, अच्छे लोगों से मेल, राजपक्ष से सफलता, स्त्रीपक्ष से लाभ हो। **जनवरी (2020 ई.)** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **फरवरी** 5, 6, 7 अशुभ हैं।

धनु—वायुविकार, कार्यान्तर से लाभ, भाई से मदद, बन्धु कष्ट, स्त्रीसुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शुभ कार्य का आयोजन। **जनवरी (2020 ई.)** 19, 20, 21, 29, 30 ,31, **फरवरी** 7, 8, 9 अशुभ हैं।

मकर—सेहत ठीक, आकस्मिक धन लाभ, बन्धु सुख, सम्पत्ति विवाद से बचें, स्त्रीसुख, मासान्त सुखद रहे। **जनवरी (2020 ई.)** 14, 15, 22, 23, 24, 31, **फरवरी** 1, 2, 10, 11 अशुभ हैं।

कुम्भ—रक्तपित्त विकार, क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, निजीजन विवाद, यात्रा में कष्ट, मासान्त में शुभ समाचार। **जनवरी (2020 ई.)** 15, 16, 17, 24, 25, 26, **फरवरी** 3, 4, 5, 11, 12 अशुभ हैं।

मीन—वायु विकार, चोटभय, कर्जा चढ़े, मित्र-बन्धु से सुख, गुप्त शत्रु से हानिभय, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **जनवरी (2020 ई.)** 17, 18, 19, 26, 27, 28, **फरवरी** 5, 6, 7 अशुभ हैं।

फाल्गुन मास

कुम्भ संक्रान्ति (13 फरवरी से 13 मार्च तक, सन् 2020 ई.)

कुम्भ संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—लग्नस्थ 'बुधादित्य योग' जनता में सुख-समृद्धि का सूचक होगा। राजनीतिक तुष्टीकरण वाली नीति सर्व-साधारण जन-मन में असन्तोष का कारण बनेगी। सीरिया, पाक, रूस, अफगानिस्तान एवं बलूचिस्तान में उपद्रव होंगे। अनाज, चीनी, चांदी एवं तिलहन में तेजी रहे।

फाल्गुन (कुम्भ) संक्रान्ति कुण्डली

कुम्भ संक्रान्ति प्रवेशकाल-13 फरवरी, सन् 2020 ई. को 15 घं. 2 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल 8 घं. 40 मि. बाद,

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—घरेलू समस्याएं सुलझें, अर्थलाभ हो, निजीजन सहयोग, सन्तति चिन्ता, कारोबार में वृद्धि हो। **फरवरी (2020 ई.)** 16, 17, 18, 25, 26, 27, **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

वृष—सेहत ठीक, कार्यान्तर से लाभ, बन्धु-मित्र सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में वृद्धि, मासान्त में विशेष व्यय हो। **फरवरी (2020 ई.)** 18, 19, 20, 28, **मार्च** 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मिथुन—रक्तपित्त विकार, आर्थिक स्थिति सुधरे, भाई-बन्धु से लाभ, यात्रा में कष्ट, चोटभय, स्त्रीसुख। **फरवरी (2020 ई.)** 13, 20, 21, 22, **मार्च** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

कर्क—सेहत ठीक, धनहानि हो, वृथाव्यय, कार्यक्षेत्र में रद्दोबदल करना पड़े। **फरवरी (2020 ई.)** 13, 14, 15, 23, 24, 25, **मार्च** 4, 5, 12, 13 अशुभ हैं।

सिंह—उदर विकार, धनलाभ होकर हानि हो, भ्रातृसुख, मित्र से सहयोग, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार। **फरवरी (2020 ई.)** 16, 17, 18, 25, 26, 27, **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

कन्या—कफ-वायु विकार, आय से व्यय अधिक हो, बन्धु सुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल हो। **फरवरी (2020 ई.)** 18, 19, 20, 28, **मार्च** 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

तुला—क्रोध बढ़े, धनलाभ, भाई-बन्धु से सहयोग, कारोबार ठीक, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट। **फरवरी (2020 ई.)** 13, 20, 21, 22, **मार्च** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

वृश्चिक—गुप्त चिन्ता, धनलाभ होकर हाथ से निकले, बन्धुकष्ट, राजपक्ष से जय, स्त्रीसुख। **फरवरी (2020 ई.)** 13, 14, 15, 23, 24, 25, **मार्च** 4, 5, 12, 13 अशुभ हैं।

धनु—सेहत ठीक, धनलाभ, भाई-बन्धु चिन्ता, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु बढ़ें, यात्रा में कष्ट। **फरवरी (2020 ई.)** 16, 17, 18, 25, 26, 27, **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

मकर—क्रोध बढ़े, आर्थिक संकट, कर्जा सिर चढ़े, भाई से मदद, निजीजन से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, सम्पदा लाभ। **फरवरी (2020 ई.)** 18, 19, 20, 28, **मार्च** 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कुम्भ—रक्तपित्त विकार, वृथा व्यय, अच्छे लोगों से मेल, घरेलू झंझट बढ़ें, वृथा कलह से बचें। **फरवरी (2020 ई.)** 13, 20, 21, 22, **मार्च** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

मीन—सेहत गड़बड़, वृथा व्यय हो, भाई-बन्धु सुख, अच्छे व्यक्ति से मेल हो, गुप्त शत्रु से सावधान, कार्यान्तर का विचार बने। **फरवरी (2020 ई.)** 13, 14, 15, 23, 24, 25, **मार्च** 4, 5, 12, 13 अशुभ हैं।

चैत्र मास

मीन संक्रान्ति (14 मार्च से 12 अप्रैल तक, सन् 2020 ई.)

मीन संक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल—भाग्येश मंगल के साथ दशमेश गुरु की स्थिति शुभ है। इस मास में भारत व्यापारिक क्षेत्र एवं आर्थिक क्षेत्र में प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करने में सफल रहे। इस मास में यान दुर्घटना एवं तूफान, भूकम्प आदि से कहीं हानि के योग भी हैं। खाद्य पदार्थ, धातुओं में महंगाई रहे। कुछ वस्तुओं के निर्यात से लाभ रहेगा।

मीन संक्रान्ति प्रवेशकाल=14 मार्च, सन् 2020 ई. को 11 घं. 52 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 45, पुण्यकाल 18 घं. 18 मि. तक,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक रहे, धनलाभ होकर हानिभय, वाहन से चोटभय, निजीजन से अनबन, कारोबार गड़बड़। **मार्च (2020 ई.)** 14, 15, 16, 24, 25, 26, **अप्रैल** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

वृष—उत्साह बढ़े, रुके काम बनें, राजपक्ष से चिन्ता, सम्पदा लाभ, वाहन सुख। **मार्च (2020 ई.)** 16, 17, 18, 26, 27, 28, **अप्रैल** 4, 5, 6, 12 अशुभ हैं।

मिथुन—उधार से परेशानी, कर्जा चढ़े, बन्धु से सहयोग, सन्तान पक्ष से शुभ समाचार, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार हो। **मार्च (2020 ई.)** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **अप्रैल** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

कर्क—सेहत बिगड़े, धनलाभ होकर हाथ से निकले, भाई-बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़। **मार्च (2020 ई.)** 21, 22, 23, 31, **अप्रैल** 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

सिंह—मन चिन्तित, अर्थलाभ, मित्र से लाभ, राजपक्ष से भय, कारोबार में रद्दोबदल हो। **मार्च (2020 ई.)** 14, 15, 16, 24, 25, 26, **अप्रैल** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

कन्या—सेहत ठीक, गुप्त चिन्ता, सम्पदा लाभ, घरेलू उलझनें बढ़ें, कारोबार में वृद्धि हो। **मार्च (2020 ई.)** 16, 17, 18, 26, 27, 28, **अप्रैल** 4, 5, 6, 12 अशुभ हैं।

तुला—सेहत में सुधार, धनलाभ होकर हानि हो, निजीजन से अनबन, नयी योजना से हानि, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर का विचार। **मार्च (2020 ई.)** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **अप्रैल** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

वृश्चिक—आर्थिक संकट से परेशानी, निजीजनों से मनमुटाव, यात्रा में कष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से लाभ। **मार्च (2020 ई.)** 21, 22, 23, 31, **अप्रैल** 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

धनु—गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर से अर्थलाभ, भ्रातृसुख, शत्रु कमजोर, कारोबार में हानि, राजपक्ष से भय। **मार्च (2020 ई.)** 14, 15, 16, 24, 25, 26, **अप्रैल** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ हैं।

मकर—रक्तपित्त विकार, अचानक अर्थलाभ, भाई-बन्धु सुख, यात्रा सुखद, स्त्रीसुख, वृथा विवाद से बचें। **मार्च (2020 ई.)** 16, 17, 18, 26, 27, 28, **अप्रैल** 4, 5, 6, 12 अशुभ हैं।

कुम्भ—सेहत ठीक, उत्साह बढ़ेगा, अर्थलाभ हो, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु बढ़ें, कारोबार में बाधा आये। **मार्च (2020 ई.)** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **अप्रैल** 6, 7, 8 अशुभ हैं।

मीन—वायुविकार, धनहानि, वृथाव्यय, नई योजना से लाभ, यात्रा में कष्ट, मासान्त में कारोबार में रद्दोबदल हो। **मार्च (2020 ई.)** 21, 22, 23, 31, **अप्रैल** 1, 2, 9, 10 अशुभ हैं।

———

वर्षराजादि फल-विचार (संवत् 2076 वि.)

(सन् २०१९-२० ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१२०, सृष्टि संवत् १९५५८८५१२०, श्रीविक्रम संवत् २०७६, शक संवत् १९४१, श्रीकृष्ण जन्मसंवत् ५२५५, कलि संवत् ५१२०, सप्तर्षि संवत् ५०९५, श्री जैन महावीर-निर्वाण संवत् २५४४-४५, श्रीबुद्ध संवत् २६४१-४२, हिजरी सन् १४४०-४१, फसली सन् १४२६-२७, ईस्वी सन् २०१९-२०।

वर्षारम्भ में गुरुमान से रुद्रविंशति का "परिधावी" नामक संवत्सर है। इसका फल विभिन्न ग्रन्थों में इस प्रकार है—

"धन-धान्य-समृद्धिः स्याद् भयं भूरि प्रजायते।
अन्यथा क्षेममारोग्यं परिधाविनि वत्सरे॥"

अर्थात्—'परिधावी' संवत्सर में धन-धान्य-समृद्धि रहे। (भय एवं शंका के कारण की जानकारी न होने पर भी) जनता में भय एवं आशंकाओं से भरा वातावरण रहे। जनता में आरोग्य एवं कुशलक्षेम रहे।

'भविष्य फल भास्कर' में 'परिधावी संवत्सर' का फल इस प्रकार है—

"भूपाहवो महारोगो मध्य-सस्यार्घ - वृष्टयः।
दुःखिनो जन्तवः सर्वे संवत्सरे परिधाविनि॥"

अर्थात्—शासकों (राजनीतिज्ञों) में शक्ति-परीक्षण, किंवा राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध दृष्टिगोचर हो। वर्षा मध्यम, महंगाई बढ़े, सभी प्राणी दुखी रहें। 'मेघ 'मेघ महोदय' के अनुसार परिधावी संवत्सर का फल इस प्रकार है—

"अभिभूतं जगत्सर्वं क्लेशैश्च विविधैः प्रिये।
मारुतो बहुदाहश्च परिधाविनि वत्सरे॥"

अर्थात्—अनेक प्रकार के क्लेश (कष्ट) से जनजीवन त्रस्त रहे। विश्व में अनेक राष्ट्र उग्रवाद किंवा अन्य परेशानियों से त्रस्त रहें। कहीं वायुवेग, अग्निकाण्ड आदि दुर्घटनाओं से हानि सम्भव है।

संवत् २०७६ वि. के दस पदाधिकारी निम्नांकित हैं—

संवत् २०७६ वि. का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) 'शनि' हैं। इस वर्ष का मन्त्री 'सूर्य', सस्येश 'बुध', धान्येश 'चन्द्र', मेघेश 'शनि', रसेश 'शुक्र', नीरसेश 'बुध', फलेश 'शनि', धनेश 'मंगल' एवं दुर्गेश 'शनि' है।

(१) संवत्सर २०७६ वि. के राजा 'शनि' का फल—

"दुर्भिक्ष-मरकं रोगान् करोति पवनं तथा।
शनैश्चराब्दो दोषांश्च विग्रहांश्चैव भू-भुजाम्॥"

अर्थात्—संवत् २०७६ वि. की ग्रहपरिषद् का प्रधान शनि होने से इस वर्ष उपद्रव, विस्फोट, युद्ध, दंगे एवं मारकाट के लिए कुछ देशों में भयंकर वातावरण बनेगा। कुछ शक्तिसम्पन्न राष्ट्रों में परस्पर युद्धोन्माद विश्वशान्ति को क्षुब्ध करेगा। दूषित जलवायु (पोल्यूशन) की भारी समस्या का सामना करना होगा। रोग आदि से एवं दुर्भिक्ष, तूफान, भूकम्प-ज्वालामुखी-विस्फोट आदि प्राकृतिक आपदाएं भी स्थिति को विषम बनाएंगी। पेयजल-समस्याओं व रोगादि का सामना करना पड़े। राजनीतिक दलों में मतभेद बढ़ेगा, जिससे राजनैतिक स्थिति विकट रहेगी।

(२) मन्त्री 'सूर्य' का फल—

"नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात् प्रचुर-धान्य-धनादि-महीतले।
रसचयं हि समर्धतमं तदा रविरमात्यपदं लभते यदा॥"

अर्थात्—संवत्सर का मन्त्री सूर्य हो तो राजपक्ष (राजनीतिक पार्टियों) में परस्पर विरोध से देश एवं जनता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े। देश में दुर्जनों,

चोर-उचक्कों से हानि, रहे व अनैतिक दुष्कर्मों से जनता अराजकता अनुभव करे। अपराध बढ़ेंगे। धन-धान्य की बहुतायत हो, रस-पदार्थों (गुड़-चीनी आदि) के बाजारों में तेजी रहे।

(३) सस्येश 'बुध' का फल—

"जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुख-समृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणाः स्तुति-पाठरताः सदा प्रथम सस्यपतौ सति बोधने॥"

अर्थात्—बुध सस्येश होने से इस संवत् में वर्षा अच्छी हो, सुख-समृद्धि का वातावरण एवं शान्तिपूर्ण सामाजिक स्थिति बनी रहे। बुद्धिजीवि-वर्ग द्वारा शासकदल के कार्य प्रशंसनीय रहें।

(४) धान्येश 'चन्द्र' का फल—

"चन्द्रे धान्याधिपे जाते तोयपूर्णा वसुन्धरा।
वर्धन्ते सर्व-सस्यानि राजते विविधोत्सवैः॥"

अर्थात्—संवत् का धान्याधिप यदि चन्द्र हो तो वर्षा उत्तम हो, पृथ्वी का जलस्तर अच्छा रहे। चावल आदि धान्यों व सभी अनाजों की फसल अच्छी, अनेकविध उत्सवों से जनता में उत्साह रहे।

(५) मेघेश 'शनि' का फल—

"रविसुते जलदाधिपतौ भवेद् विरल-वृष्टिवती वसुधा तदा।
मनसि तापकरो नृपतिः सदा विविध-रोगयुता जनता तदा॥"

अर्थात्—शनि के मेघेश होने पर वर्षा की कमी रहे, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बने। राजनीतिज्ञों का व्यवहार एवं नीति जनता को परेशान करने वाली रहेगी, जनता अनेक प्रकार के रोगों से क्षुब्ध रहे।

(६) रसेश 'शुक्र' का फल—

"भृगुसुते रस-नायकतां गते जनपदा जलतोषित-मानसाः।
सुख-सुभिक्ष-प्रमोदवती धरा धरणिपा नरपालन-तत्पराः॥"

अर्थात्—शुक्र रसेश हो तो अच्छी वर्षा के कारण सर्वत्र सुभिक्ष रहे। लोगों में सन्तोष व सुख रहे और शासनप्रक्रिया भी अच्छी तरह चलती रहे।

(७) नीरसेश 'बुध' का फल—

"चित्र-वस्त्रादिकं चैव शंख-चन्दन-हाटकाः।
महर्घाः सन्ति वर्षे वै नीरसेशो यदा बुधः॥"

अर्थात्—बुध के नीरसेश होने से कलाकृतियां किंवा रंग-बिरंगे फैशन के कपड़े, शंख, चन्दन एवं स्वर्णादि पदार्थ महंगे होंगे।

(८) फलेश 'शनि' का फल—

"अथ शनौ फलपे कलहो भवेद् वनज-पादप-पुष्पगणो घनः।
अपि च दुष्टजनादि-कृतं भयं जनपदा जनराशि-समाकुलाः॥"

अर्थात्—शनि इस संवत् का फलेश होने से जन-समूह में साम्प्रदायिक-धार्मिक आदि मुद्दों को लेकर परस्पर कलह रहे। जंगली पेड़ों (जड़ी-बूटियों), फल-फूलों की अधिकता हो। दुष्टों (उग्रवादियों आदि) द्वारा जनसाधारण क्षुब्ध रहे। शहरों (निगमों) में जनसंख्या-वृद्धि से भारी दबाव रहे।

(९) धनेश 'मंगल' का फल—

"धरणिजे धन-नायकतां गते शरदि ताम्रकरास्तुष-धान्यहा।
सकल-देश्यजनाश्चलितास्तदा नरपतिर्नर-शोक-विधायकाः॥"

अर्थात्—धनेश मंगल हो तो माघ में मीठी धूप पड़ने से वर्षा का अभाव किंवा अल्पत्व रहे, परिणामस्वरूप गेहूं, चावल, चना आदि अनाज कम हों। राष्ट्र में (विशेष कारणवश) जनता में अस्थिरता रहे किंवा लोग स्थानान्तरण करने को विवश हों। शासकों के (राजनीतिज्ञों की परिस्थितिवश) जन-विरोधी व्यवहार से जनता परेशान रहे।

(१०) दुर्गेश 'शनि' का फल—

"रविसुतो यदि दुर्गपतिर्भवेत् सकल-देश-जनाश्चलितास्तदा।
विविध-वैर-विशेषित-नागराः कृषिधनं लभते न जनः क्वचित्॥"

अर्थात्—संवत् का दुर्गेश शनि होने से सर्वत्र अराजकता से जनता पलायन करे। लोगों में परस्पर वैरभाव दिखाई दे। प्राकृतिक प्रकोप आदि के कारण फसलों से कृषक लोग उचित लाभ प्राप्त न कर सकेंगे।

नोट—यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः **राजा का फल** कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, **मन्त्री का फल** आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में, **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में, **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में, **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में, **नीरसेश** का मालवा व बिहार में, **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में, **फलेश, दुर्गेश** एवं **राजा** का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान सं. २०७६ वि. (शक सं. १९४१)

वर्षाविश्वा १७, धान्य ७, तृण १३, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा १३, निद्रा १३, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ७, पाप ७, पुण्य १३, व्याधि १३, व्याधिनाश ११, आचार ११, अनाचार १७, मृत्यु १५, जन्म ७, देशोपद्रव १, देशस्वास्थ्य ७, चौर १७, चौरनाश १५, अग्नि १, अग्निशान्ति ११, उद्भिज्ज ९, जरायुज ३, अण्डज ११, स्वेदज ५, टिड्डी १५, तोता १५, मूषक ९, सोना ९, तांबा ११, स्वचक्र १३, परचक्र १९, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्-विश्वा ८ हैं।

चतुर्मेघविचार—ध्यान रहे—नवमेघों की अपेक्षा '**मेघ-चतुष्टय**' का विशेष महत्त्व है। इस वर्ष आवर्तकादि चतुर्मेघों में '**द्रोण**' नामक मेघ है।

द्रोण नामक मेघ का फल—

"महीशतः स्व-सम्पत्ति-वृद्ध्या समेताः समस्ता धरा भूरि-धान्येन युक्ता।
यदा जायते 'द्रोण' नामा पयोदस्तदा देवराजो भवेत् सत्पयोदः॥"

अर्थात्—**द्रोण** नामक मेघ होने पर शासक समृद्ध एवं सम्पत्ति-सम्पन्न रहें। देश किंवा विश्व में धन-धान्यसमृद्धि रहे। वर्षा सर्वत्र पर्याप्त हो। किञ्च—"द्रोणो वर्षति सर्वदा"—प्रमाणानुसार इस वर्ष अनेकत्र वर्षा अधिक होने से बाढ़ की स्थिति भी होने की सम्भावना रहेगी।

नवमेघविचार—इस वर्ष नवमेघों में '**नील**' नामक मेघ है।

फल—घी, दूध आदि पर्याप्त हों, रुई, कपास आदि की उपज किंवा उपलब्धता भी पर्याप्त हो। कहीं वर्षा असामयिक, कहीं वर्षा कम एवं कहीं तूफानी वर्षा हो—

"अल्पवृष्टिर्भवेत्काले नीलः क्षिप्रं तु वर्षति।"

आवह आदि सप्तवायु-विचार—इस वर्ष वायुसप्तक में '**संवह**' नामक वायु है।

फल—'**संवह**' नामक वायु इस वर्ष वातावरण एवं जलवायु प्रदूषण-विचार से कुछ लाभप्रद सिद्ध होगी। वन्य औषध, कृषिकर्म एवं प्रदूषण को सुव्यवस्थित करने के लिए शासन-तन्त्र विशेष योजनाओं को वैश्विक रूप से कार्यान्वित करने का प्रयास करेगा। लेकिन '**संवह**' वायु मेघालय, आसाम आदि प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप को रोक न सकेगा। इस प्रकार दक्षिण-पश्चिमी भूभाग एवं उत्तरी प्रान्तों में सभी भयंकर भूकम्प व ग्रहगतिजन्य प्रकोप से त्रस्त रहेंगे।

अनन्तादि अष्टनागविचार—इस वर्ष अष्टनागों में '**अनन्त**' नामक नाग है।

फल—वर्षा अत्यधिक हो, बाढ़ एवं तूफान आदि से जनधनहानि हो। देश की राजनीति में कूटनीतिक चालों से विशुद्ध राजनीति 'छलावा' बनेगी। सर्पदंश एवं वन्यजीवों से नगरों में जनता परेशान रहे। शासनतन्त्र में परिवर्तनार्थ राजनीतिज्ञ संघर्षरत रहें। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में उग्रवाद सशक्त रहे एवं सत्ता-हस्तान्तरण हो।

सुबुध्नादि द्वादशनागविचार—सुबुध्नादि द्वादश नागों में इस वर्ष '**वज्रदंष्ट्र**' नामक नाग है।

फल—"यत्र संवत्सरे नागो वज्रदंष्ट्राभिधानकः।
तदाम्बुवर्षणं नैव सर्व-सस्य-विनाशनम्॥"

अर्थात्—वर्षा आवश्यकतानुसार न हो, अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति बने, खाद्यान्नों की फसलों को हानि पहुंचे। कुछ प्रान्त अकालिक वर्षण किंवा अतिवर्षा से हानिग्रस्त रहें।

संवत् २०७६ वि. का वाहन—संवत्सर २०७६ वि. का **राजा शनि** होने से इस संवत्सर का वाहन **'घोड़ा किंवा भैंसा'** ही लिखा है।

फल—भैंसा किंवा घोड़ा संवत् का वाहन होने से राजनैतिक पार्टियां सत्ता-लाभार्थ संघर्षरत रहेंगी। राजनैतिक दलों में आन्तरिक भेद से सत्ता-परिवर्तन के लक्षण नजर आयेंगे। वर्षा नगण्य होने से एवं अन्य प्राकृतिक प्रकोपों (भूकम्प आदि) से हानि एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई रहे—

"राजानो विग्रहं यान्ति वृष्टिनाशो महर्घता।
भूमिकम्पो भयं घोरं महिषारूढ़े तु वत्सरे॥"

संवत् २०७६ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को **रेवती** नक्षत्र) ६८ प्रतिशत है।

(२) तृणस्तम्भ—(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को **भरणी** नक्षत्र) ५१ प्रतिशत है।

(३) वायुस्तम्भ—(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को **मृगशिरा** नक्षत्र) ६२.२ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ—(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को **पुनर्वसु** नक्षत्र) ७२.८ प्रतिशत है।

नोट—ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम-ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं; क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (खाद्यान्न-जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर करती है। अत: देश की व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन संवत् के शुभारम्भ पर आवश्यक समझा है।

(१) सं. २०७६ वि. में जलस्तम्भ (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र)—६८ प्रतिशत होने से महानगरों में पेयजल की समस्या का समाधान हो। वर्षा एवं अनेकत्र बाढ़ से जन-धन की भारी हानि सम्भव है। समुद्रतटवर्ती भूभाग पर भारत किंवा भारतेतर देशों में भी कहीं समुद्री तूफान आदि से प्रलयंकारी दृश्य भी देखने को मिलेंगे। बहुजल-प्रधान अन्न ग्वार, जीरी, चावल, बाजरा आदि की उपज अच्छी हो। भूजल-स्तर में काफी उठाव हो।

(२) तृणस्तम्भ—इस वर्ष **तृणस्तम्भ (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र)** ५१ प्रतिशत है। अत: इस वर्ष जल तथा तृणस्तम्भ सशक्त है। इस वर्ष घास-भूसे से निकलने वाले अनाज, चावल, ज्वार, ग्वारा आदि कृषि उपज, वनस्पतियां, जड़ी-बूटियां, सब्जियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों। इस साल कुछ प्रान्तों में मानसून अगेती आने किंवा सामयिक मानसून से पशुचारा-कृषिकर्मियों को लाभ रहे।

(३) वायुस्तम्भ—इस वर्ष **ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र)** ६२.२ प्रतिशत होने से **'वायुस्तम्भ' दृढ़** है। अत: भारत व तमाम दक्षिण एशिया तूफान, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, औद्योगिक गैस-उत्सर्जन आदि से प्रभावित हो एवं हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उड़ीसा, तामिलनाडु, महाराष्ट्र आदि में कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो। क्योंकि पृथ्वी के भीतर सीस्मोग्राफिक (वेवस) वायु से आकाश या शून्य में विद्यमान वायु के साथ जब संघर्ष होता है तो भूगर्भान्तर्गत प्लेटें हिलने से ही भूकम्प आदि दुर्घटनाएं घटित होती हैं। अत: यह वर्ष वायुस्तम्भ-मात्रा से अधिक दृढ़ होने से अनेकत्र चिन्तनीय स्थिति बना सकता है।

(४) अन्नस्तम्भ—इस संवत् में **अन्नस्तम्भ ७२.८ प्रतिशत** होने से सुदृढ़ है। घरेलू उत्पाद एवं खड़ी फसलों से लाभार्थ सरकार का प्रयास कृषकों के लिए हितकर रहेगा। व्यापारिक वर्ग एवं कृषक-समाज को सन्तुष्ट करने का सरकार का प्रयास भरपूर रहेगा।

निष्कर्ष—इस वर्ष में चारों स्तम्भ दृढ़ होने से देश में समृद्धि एवं सुरक्षा सुव्यवस्थित रहेगी। लेकिन वायुस्तम्भ अधिक दृढ़ होने से अनेकत्र वायुवेग से हानि, भूकम्प एवं अग्निकाण्ड आदि से हानि के भी योग हैं। जड़ी-बूटी, औषध-निर्माण एवं अन्न आदि की दृष्टि से देश प्रगतिपथ पर रहेगा।

आर्षमान विचार (सं. २०७६ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष—(अक्षय तृतीया को **रोहिणी** नक्षत्र) ५७.४ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—(गत संवत् २०७५ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र)

३९.२ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष—(श्रावण पूर्णिमा को **श्रवण** नक्षत्र) ६१.५ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष—(कार्तिक पूर्णिमा को **कृत्तिका** नक्षत्र) का अभाव है।

नोट—उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध-समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।

(१) प्रथम आर्ष—अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र ५७.४ प्रतिशत है।

फल—देश की समृद्धि एवं सुरक्षा की दृष्टि से यह वर्ष प्रथम आर्ष के अनुसार पूर्ण रूप से सशक्त है। भारत के सैन्यबल विशेषत: जलसेना में नये आयाम उपस्थित होंगे। देश में रक्षा-व्यवस्था भी सुदृढ़ होगी।

(२) द्वितीय आर्ष—गत सं. २०७५ वि. में मूल नक्षत्र ३९.२ प्रतिशत है।

फल—भारत की गरिमा बढ़ेगी। कुछ विरोधी देश भारत की शान्ति को भंग करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन सशक्त सैन्यबल भारत के मनोबल को सीमाप्रान्तों पर सुदृढ़ रखेंगे। जनता में अनेक प्रकार के रोगों से निपटने के लिए शासन को विशेष ध्यान देना होगा।

(३) तृतीय आर्ष—६१.५ प्रतिशत होने से सुदृढ़ स्थिति का संकेत देता है।

फल—देश में आन्तरिक उपद्रवों एवं देशद्रोही तत्त्वों से निपटने के लिए सरकार कठोर पग उठायेगी। कश्मीर एवं भारत के अन्य प्रमुख कुछ प्रान्तों में प्रच्छन्न उग्रवादियों को सरकार नकेल डाल सकेगी।

(४) चतुर्थ आर्ष—इस वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र का अभाव होने से यह स्तम्भ चिन्तनीय है।

फल—देशरक्षार्थ इस वर्ष यह स्तम्भ नगण्य होने से भारत को सैन्यबल सुदृढ़ कर सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना होगा। लेकिन नये कार्यक्रम, नयी योजनाओं से देश समृद्धिपथ पर तो अग्रसर रहेगा। सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से अधिक व्यय करना पड़ेगा।

दोहा—"अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै॥"

संवत् २०७६ वि. में रोहिणी का वास

(वर्षा एवं जलवायुविचार में विशेष)

सं २०७६ वि. में '**मेष-संक्रान्ति**' १४ अप्रैल, सन् २०१९ ई., रविवार, १४ घं ७ मि. पर आशलेषा नक्षत्र, शूल योग एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय लग रही है, अत: रोहिणी का वास '**तट**' पर रहेगा।

फल—"**तटे वृष्टिः सुशोभना**" अर्थात् इस वर्ष वर्षा उत्तम रहे, मरुस्थल में भी वर्षा होने से खाद्यान्न प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होंगे। लेकिन भारत के कुछ प्रान्तों में लोग पर्यावरण-विक्षोभ के कारण रोगग्रस्त किंवा पेयजल-समस्या के कारण चिन्ताग्रस्त भी रहेंगे।

समय किंवा संवत्सर का वास—इस वर्ष रोहिणी का वास तट पर होने से संवत्सर का वास '**रजक**' (**धोबी**) के घर रहेगा।

फल—देश में स्वच्छता, सौन्दर्य एवं अनेक प्रगतिप्रद योजनाओं के प्रति शासन विशेष ध्यान देगा। भ्रष्टाचार-उन्मूलन के लिए शासक विशेष सचेष्ट रहेंगे।

संवत् २०७६ वि. में शनि की दृष्टि

संवत् २०७६ वि. के प्रारम्भ में शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा की तरफ रहेगी। मकर एवं धनु राशि वाले देशों एवं प्रान्तों में हिंसा रहे। **सं. २०७६ वि. में शनि संवत् के आरम्भ में धनु राशि में रहेगा, तत्पश्चात् २४ जनवरी, सन् २०२० ई. को मकर राशि में आकर संवत् २०७६ ई. के अन्त तक मकर राशि में ही रहेगा।** अत: जनवरी २०२० ई. से संवत् के अन्त तक शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ रहेगी। स्पष्ट है कि—संवत् २०७६ वि. में पश्चिमी एवं उत्तरी गोलार्ध के देशों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, हिंसा, शासकों में अस्थिरता एवं राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अक्तूबर २०१९ के बाद गुरु-शनि के एक राशि में रहने से विश्व में व्यापक हिंसा, युद्धात्मक व भारी संकटापन्न स्थिति बन सकती है। धनु-मकर-वृश्चिक नाम राशि वाले शासकों (राजनायिकों) को भारी संकटापन्न स्थिति का सामना करना

पड़ेगा। राजनैतिक हत्याकाण्ड सम्भव है। अतः वृश्चिक-धनु-मकर राशि वाले विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी आवश्यक है। कहीं प्राकृतिक भूकम्पादि प्रकोप से हानि का योग भी है—

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष-देशभंगाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः॥"

संवत् २०७६ वि. में विशेष अमावस्या-योग—

(१) सोमवती अमावस्या दो हैं—

(i) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (३ जून, सन् २०१९ई.)।

(ii) कार्त्तिक कृष्ण पक्ष (२८ अक्तू., सन् २०१९ ई.)।

(२) भौमवती अमावस्याएं तीन हैं—

(i) आषाढ़ कृष्णपक्ष (२ जुलाई, सन् २०१९ ई.)।

(ii) मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (२८ नवम्बर, सन् २०१९ ई.)।

(iii) चैत्र कृष्णपक्ष (२४ मार्च, सन् २०२० ई.)।

(३) शनैश्चरी अमावस्याएं दो हैं—

(i) वैशाख कृष्ण पक्ष (४ मई, सन् २०१९ ई.)।

(ii) आश्विन कृष्ण पक्ष (२८ सितम्बर, सन् २०१९ ई.)।

नोट—सोमवती अमावस्या के दिन चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान-दान का विशेष महत्त्व है।

मंगलवारी अमा को गुड़ गायों को खिलायें एवं इस दिन लाल वस्त्र, स्वर्णादि के दान का भी विशेष महत्त्व है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें—उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्थान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगों का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करना पुण्यप्रद लिखा है। सभी अमावस्याओं पर पूर्वजों को पिण्डदान करने का विधान है।

इस वर्ष की विशेष अमावस्याओं का माहात्म्य

'स्कन्दपुराण' के अनुसार शिव-मन्दिर में जाकर सोमवती अमा के दिन भगवान् शंकर की पंचोपचारपूजा-पूर्वक सोमेश्वर महादेव का ध्यान करके अनन्तकोटि यज्ञों का फल प्राप्त करें—

"अमा सोमेन संयुक्ता कदाचिद्यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं पूज्य कोटियज्ञ-फलं लभेत॥"

तथा च—

"सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्।
तदाऽनन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षणम्॥"

सोमवती अमावस्या को गंगा आदि नदियों किंवा तीर्थों पर स्नान, जप, होम, ब्रह्म-भोजन, पितृतर्पण आदि से कुटुम्ब में वृद्धि एवं सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

'मुहूर्त चिन्तामणिकार' ने सोम-मंगलवारी अमाओं को **'पुष्कर योग'** की उपमा दी है। इन दिनों किये गये दान, यज्ञ एवं मन्त्रजाप सूर्यग्रहण में किये गये दान के बराबर महत्त्वपूर्ण लिखे हैं। **मंगलवारी अमावस** में जपदान आदि का फल सहस्र गोदान के बराबर लिखा है—

"अमावस्या भवेद् वारे यदा भूमिसुतस्य वै।
जाह्नवीस्नान-मात्रेण गोसहस्र-फलं लभेत॥"

—(हेमाद्रौ शातातपः)

'शनैश्चरी अमा' पूर्वजन्म पापनाशार्थ एवं ग्रहरोग-शान्त्यर्थ उपयोगी मानी गई है। इस दिन तेलदान, कम्बलादि का दान करें।

संवत् २०७६ वि. में शरत् सस्य-जातकविचार

ध्यान रहे—गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, ग्वार, गन्ना, मक्का आदि **"खरीफ फसलों"** को **'शरत्सस्य'** कहा जाता है। शरत्सस्य का विचार वृषस्थ सूर्य से ही किया जाता है।

सं. २०७६ वि. में वैशाख शुक्ल पक्ष बुधवार, तदनुसार १५ मई, सन् २०१९ ई. को एकादशी (तात्कालिकी द्वादशी) को हस्त नक्षत्र, वज्र योग एवं **कन्यास्थ** चन्द्र के समय **सूर्यदेव ११ घं. ०१ मि. पर वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।**

शरत्सस्यजातक कुण्डली
(१५ मई, सन् २०१९ ई., ११ घं. ०१ मि.)

५ | ४ | रा. मं. ३ | ६ चं. | २ सू. | ७ | १ शु. बु. | ८ गु. | ९ श.के. | १० | ११ | १२

नोट—सस्य जातक कुण्डलियों में तात्कालीन औदयिक लग्न से फलादेश-विचार उचित नहीं, **सस्य जातक विचारार्थ सूर्य को ही लग्न मानकर विभिन्न भावों के आधार पर फलविचार युक्तियुक्त माना है।** अत: सूर्य को लग्न मानकर ही यहां फल-प्रतिपादन किया गया है।

फल—वृषस्थ सूर्य पर गुरु की दृष्टि है, अत: शारदन्नों की उपज प्रथम दृष्ट्या तो अच्छी नजर आयेगी। लेकिन सूर्य मंगल-राहु एवं शुक्र ग्रह से घिरा हुआ है तथा मंगल-राहु पर शनि की पूर्ण दृष्टि भी है, अत: कुछ प्रान्तों में अतिवर्षण किंवा अवर्षण से फसलों को हानि पहुंचेगी। चन्द्र पर भी शनि की विशेष दृष्टि है, जोकि **'जलशोषक'** है। सूर्य से अष्टम शनि और इसके साथ राहु-मंगल का समसप्तक सं. २०७६ वि. में शरत्सस्य-जातक के लिए शुभ संकेत नहीं देता, अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति भी सम्भव है।

पहले स्टॉक करें। मिथुन में सूर्य के आने पर इसका शनि के साथ समसप्तक एवं मंगल के साथ राशि योग बनेगा तो महंगाई और जोर पकड़ेगी।

"वृषप्रवेशे सवितुर्नृयुग्म-मेषालि-संस्थैरशुभ-ग्रहेन्दैः।
सौम्यैग्रहिन्द्रैर्न युतेक्षितैर्वा जातं विशुष्येत् खलु शारदन्नम्॥"

तथा च—मंगल-राहु एवं शुक्र से आक्रान्त सूर्य भी शारदन्नों के लिए शुभ नहीं—

"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृषस्थोऽपि नाशयति सस्यम्॥"

अर्थात्—शरत्सस्य-जातक कुण्डली में जब मंगल-राहु से अभिभूत सूर्य से **अष्टम** शनि आदि क्रूर ग्रह भी हों तो बाजरा, ज्वार, अरहर, तेल, तिलहन, कपास की **उपज औसत से कम होती है।** अनेकत्र अवर्षण/अतिवर्षण से खड़ी फसलें नष्ट भी हो **जाती हैं। इस समय स्टॉकिस्ट लाभ लेते हैं।** यह योग इस वर्ष २०७६ वि. में घटित होने को है।

संवत् २०७६ वि. में ग्रीष्मसस्य-जातकविचार

सं. २०७६ वि. में मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्थी (तात्कालिकी पंचमी) शनि/रविवार, तदनुसार १६/१७ नवम्बर, सन् २०१९ ई. को पुनर्वसु नक्षत्र, साध्य योग एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्र के समय ० घं. ५० मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली
(१७ नवं., २०१९ ई.) ० घं.५० मि. (I.S.T.)

६ | ४ | मं. ७ बु. | ५ | ३ चं. रा. | ८ सू. शु. | २ | गु. के. ९ श. | ११ | १ | १० | १२

फल—वृश्चिकस्थ सूर्य का शत्रु ग्रह शुक्र के साथ मेल है एवं सूर्य-शुक्र दोनों मंगल-बुध एवं शनि-केतु—इन क्रूर ग्रहों से आक्रान्त हैं। अत: गेहूं, जौ आदि की खड़ी फसलों को हानि होगी—

"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृश्चिकसंस्थो विनाशयति सस्यम्।"

ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली में ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य से द्वितीय भाव में शनि-केतु पर मिथुनस्थ चन्द्र-राहु की दृष्टि होने से पहले (अगेती) बोई गयी फसलें नष्ट हो जाती हैं और बाद में बोयी गयी फसलें ठीक रहें—ऐसा योग है—

"अर्थस्थाने क्रूरः सौम्यैरनीक्षितः प्रथमजातम्।
सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद् व्यक्तम्॥"

स्पष्ट है कि—इस वर्ष खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। ग्रीष्मान्न महंगे होंगे।

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

सं. २०७६ वि. में आषाढ़ कृष्ण पक्ष पंचमी शनिवार, तदनुसार २२ जून, सन् २०१९ ई. को धनिष्ठा नक्षत्र, विष्कम्भ योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव १७ घं. १८ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य-आर्द्रा प्रवेशकाल—इस वर्ष सूर्यास्त से पूर्व ही सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, अत: खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी—**"सयायाह्नकाले कृषि-नाशनाय**

धान्यं महर्घं च तृणस्य नाशः।" शनिवार को सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश भी शुभंकर नहीं,— **"मन्दे न शुभदः प्रोक्तः"।**

सूर्य आर्द्रा-प्रवेशकालिक कुण्डली
२२ जून, सन् २०१९ ई.,
१७ घं.१८ मि. (I.S.T.)

९श.के. | ७ | १० | ८ गु. | ६ | ११ चं. | ५ | १२ | २ शु. | ४ बु. | १ | ३ सू.मं.रा.

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में सूर्य राहु मंगल का शनि के साथ समसप्तक एवं शनि की चन्द्र पर दृष्टि कुछ प्रान्तों में अतिवर्षा से कहीं भयंकर हानि, कहीं अवर्षण से दुर्भिक्ष करे। शासनतन्त्र भी इस स्थिति से अनेकत्र निपटने में असमर्थ प्रतीत होगा। पर्यावरण-विक्षोभ से जनता परेशान रहे। लेकिन पंचमी तिथि में आर्द्राप्रवेश होने से जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता के लिए शासनतन्त्र पूर्णरूप से सहयोगी सिद्ध होगा।

आर्द्रा नक्षत्र वेला में सूर्य की स्थिति मंगल-राहु के साथ है एवं शनि-केतु के साथ समसप्तक बन रहा है, अतः देश के प्रमुख नेतृत्व के समक्ष उग्रवादजन्य भय एवं राजनैतिक विषम परिस्थितियां लेकर इस संवत् का यह चरण उपस्थित होगा। जो राजनैतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से आश्चर्यजनक परिणामों वाला सिद्ध होगा।

शुभ संवत् २०७६ वि. का शुभारम्भ

सं. २०७५ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, शुक्रवार, तदनुसार ५ अप्रैल, सन् २०१९ ई. को रेवती नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय १४ घं. २० मि. (भा. स्टैं. टा.) पर कर्क लग्न में सं. २०७६ वि. का शुभारम्भ होगा।

शुभ संवत् २०७६ वि. की प्रवेश-कालीन कुण्डली

५ | ३ रा. | ६ | ४ | २ मं. | ७ | १ | ८ | १० | १२ सू.चं. | ९ गु.श.के. | ११ शु.बु.

५ अप्रैल, सन् २०१९ ई., १४ घं.२० मि. (I.S.T.)

नव संवत्-प्रवेशफल—संवत् २०७६ वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में होने से पूर्वी प्रान्तों में स्थिति ठीक रहे, सुख-समृद्धि रहे। उत्तर दिशा में प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादजन्य परेशानी से युद्धात्मक वातावरण रहे। देश में कहीं सत्तासंघर्ष की स्थिति किंवा पश्चिम में अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना करना पड़े—

> **"कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरस्यां तु विग्रहः।**
> **यच्चासन-बलं यावद दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि॥"**

वर्षप्रवेश-कुण्डली में **शनि-मंगल का षडष्टक एवं राहु-शनि का समसप्तक देश में विशेषतः देश की राजनीति में विशेष उथल-पुथल करायेंगे।** लग्नेश चन्द्र, सूर्य के साथ बृहस्पति के क्षेत्र में होने से देश में शासनतन्त्र स्थिति को सामान्य बनाने में नये आयाम स्थापित करेगा।

संवत्-प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि—भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि मकर से द्वादश भाव में गुरुक्षेत्र में गुरु की सन्निधि में ही है, अतः विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लेकिन राजनैतिक परिदृश्य में कुछ परिवर्तन सम्भव है। मंगल-शनि का षडष्टक भारत की पश्चिमी-उत्तरी सीमाओं एवं दक्षिणी भूभाग में अशान्ति करे। कहीं प्राकृतिक आपदा, तूफान, भूकम्प आदि से जनधनहानि हो। कश्मीर एवं सीमाप्रान्तों पर उग्रवादजन्य कृत्यों से भारी अशान्ति हो। किसी मुस्लिम राष्ट्र की कुनीति शक्तिसम्पन्न राष्ट्र के साथ विरोधप्रदर्शन से युद्धात्मिका परिस्थिति बना सकती है—

> "मारिर्दक्षिण-देशे स्यात्तथा बंगेष्वुपद्रवः।
> लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

२०७६ वि. में वर्षेश(जगत्)लग्नप्रवेश

जब सूर्य निरयण मेष राशि में प्रवेश करता है तो तात्कालिक लग्न ही 'जगत् लग्न' कहलाता है। संवत् २०७६ वि. में चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी, रविवार (तात्कालिकी दशमी तिथि), तदनुसार १४ अप्रैल, सन् २०१९ ई. को आश्लेषा नक्षत्र, शूल योग एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव १४ घं. ९ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल—इस संवत् में सिंह लग्न में जगत् लग्न का उदय हुआ है। लग्न पर मंगल

की विशेष दृष्टि है। मंगल एवं शनि का षडष्टकयोग एवं वृष-मिथुन में क्रूर ग्रह-स्थिति के परिणामस्वरूप मुस्लिम राष्ट्रविशेष का अणुशास्त्र संग्रह एवं युद्धोन्माद विश्वशान्ति को भंग कर सकता है। उग्रवाद, मारक शस्त्र-संग्रह एवं प्रभुसत्ता-प्रदर्शनजन्य उन्माद को शान्त करने के लिए भारत की भूमिका एवं प्रयास प्रशंसनीय रहेंगे, क्योंकि मकर राशि का स्वामी शनि गुरु के सन्निकर्ष में है।

वर्षेश लग्न में राहु-शनि की परिधि में ही सभी प्रभावी ग्रह हैं, अतः मुस्लिम राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (समुद्री तूफान, भूकम्प, उग्रवाद आदि) से भारी जनधनहानि के योग दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

वर्षेश कुण्डली में लग्नेश सूर्य एवं बुध, शुक्र, गुरु की स्थिति से भारत का प्रभाव-क्षेत्र बढ़ेगा एवं विदेशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। चीन-पाक के साथ सीमासम्बन्धी विवाद उठेंगे, लेकिन लग्न पर गुरु की दृष्टि होने व लग्नेश के स्वभावतः उच्च होने पर सभी समस्याओं को पार कर शान्तिपथ कुछ हद तक बनेगा—

"निजोच्चे निजवर्गे वा शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्॥"

इस वर्ष जगत् लग्नानुसार—भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिये—

(१) प्रथम भाव से शरीर सुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्री-सुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म-कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख-साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें—

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु-पराजयःस्यात्॥
स्त्री-सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः॥
लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने॥"

यदि 'जगत् लग्न' अपने 'जन्मलग्न' से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा, ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आये, वह भाग शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश(जगत्)लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

गुर्रा-फल (सन् २०१८-१९ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार (उसी वार से सम्बन्धित ग्रह ही) साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

वि.सं. २०७५ में भाद्रपद शुक्ल तृतीया, तदनुसार १२ सितम्बर, सन् २०१८ ई. को 'यकम-मुहर्रम' के दिन मुस्लिम हिजरी सन् १४४० का आगाज हुआ था। अतः इस हिजरी सन् (१४४०) का बादशाह बुध ग्रह ही है।

बुधवारी गुर्रा का फल—महंगाई उत्तरोत्तर असह्य हो जायेगी। गुड़, खाण्ड, घी आदि में विशेष तेजी रहे। साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा। जनता उपद्रवों के कारण स्थानान्तरण के लिए विवश हो। रोगों एवं आकाल आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जनजीवन

त्रस्त रहे।

वि. सं. २०७६ में भाद्रपद शुक्ल पक्ष द्वितीया, रविवार, तदनुसार १ सितम्बर, सन् २०१९ ई. को 'यकम-मुहर्रम' के दिन मुस्लिम हिजरी सन् १४४१ का आगाज होगा। अतः इस हिजरी सन् (१४४१) का बादशाह सूर्य है।

फल—वर्षा पर्याप्त, अनाज सस्ते हों। शासक देशहितार्थ काम करें। लेकिन जनता में रोग-विशेष से हानि हो। विशेषतः स्त्री-रोगों से जनता परेशान हो।

अग्निकाण्ड आदि से अनेकत्र हानि के योग भी बनें।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

(संवत्सर २०७६ वि. का राजा शनि है)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ-व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के लाभ-व्यय-अंकों को जोड़कर उनमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १ बचे तो आमदन, २ बचे तो सुख-लाभ, ३ बचने पर क्लेश, ४ शेष रहने पर बीमारी से परेशानी, ५ शेष आने पर अपयश, ६ शेष बचने पर इज्जत, ७ शेष आने पर सफलता और ० (शून्य) शेष रहने पर हानि होगी—ऐसा जानें।

**"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"**

विशेष—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सेंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल—ये सब कूट-पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से मुक्ति मिलती है।

— — —

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (मोहाली) पंजाब के इन युवा-कर्मठ विद्वान् कार्यकर्ताओं का पंचाग-प्रकाशन में भारी सहयोग वस्तुतः प्रशंसनीय है—

"श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली" के प्रबन्धक, हमारे पूज्यपिता जी के प्रिय शिष्य चि. प्रेमचन्द शर्मा; ग्राम सुन्हाड़—सौर (सोलन) (हि.प्र.) निवासी श्रीकृष्ण शर्मा शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) निवासी चि. सुरेशानन्द शर्मा B.A. एवं चि. रविसन्धु (सुपुत्र राणा रणजीत सिंह जी), श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (हिन्दी) की पाण्डुलिपि-लेखन एवं प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी और आदरभाव से करते हैं। पंचांग के प्रकाशन-कार्य में हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व से भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय परम-उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

—प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा
सम्पादक—श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(६ से १९ अप्रैल, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु ।

प्रातः बुध, शुक्र पूर्व में, शनि याम्योत्तरवृत्त में और गुरु इससे पश्चिम की ओर होगा। सायं मंगल पश्चिम में दिखाई देगा। ९ अप्रैल को सायं पश्चिम में चन्द्रमा के समीप मंगल को देखिये।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें अं. अप्रैल	तारीखें श. चैत्र	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	१६	१	श.	२३	३	रेव.	२	५७	वै.	३१	०	ब.	२३	३	२४	६	१६	२९	मेष	२	५७	६	१०	१८	४०	११	२१	४७	१७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक समाप्त २/५७, मंगल रोहि. में २७/५७,(A)
३१	२०	२	र.	२४	४१	अश्वि.	६	२७	वि.	३७	२५	कौ.	२४	४१	२५	७	१७	शा.१	मेष			६	९	१८	४१	११	२२	४६	२१	शुक्र पू.भा. में ३०/४५, शाबान मु. प्रारम्भ,
३१	२५	३	चं.	२५	११	भर.	८	५७	प्री.	३५	५	ग.	२५	११	२६	८	१८	२	वृष	२४	२५	६	८	१८	४२	११	२३	४५	२४	भ. ५५/७ बाद, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, (B)
३१	२९	४	मं.	२५	१	कृत्ति.	१०	३०	आ.	३२	१	वि.	२५	०१	२७	९	१९	३	वृष			६	६	१८	४२	११	२४	४४	२४	भ. २५/१ तक, श्री(लक्ष्मी) पंचमी (देखें पृ. 13) (C)
३१	३४	५	बु.	२३	४६	रोहि.	११	९	सौ.	२८	१३	बा.	२३	४६	२८	१०	२०	४	मिथुन	४१	६	६	५	१८	४३	११	२५	४३	२१	गुरु वक्री ४१/६, नाग पंचमी (देखें पृ 13), स्कन्द (D)
३१	३८	६	गु.	२१	३४	मृग.	१०	५२	शो.	२३	३९	तै.	२१	३४	२९	११	२१	५	मिथुन			६	४	१८	४३	११	२६	४२	१७	बुध मीन में ५५/४२, नेप्च्यून पू.भा. २ में ४३/७,
३१	४३	७	शु.	१८	२१	आर्द्रा	९	३६	अ.	१८	१७	व.	१८	२१	३०	१२	२२	६	कर्क	५२	५८	६	३	१८	४४	११	२७	४१	१०	भ. १८/२१ से ४६/१२ तक,
३१	४७	८	श.	१४	९	पुन.	७	२१	सु.	१२	७	ब.	१४	९	३१	१३	२३	७	कर्क			६	२	१८	४५	११	२८	४०	१	श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, श्री रामनवमी (देखें पृ 13),
३१	५२	९	र.	८	५७	पुष्य आश्ले.	४ ५९	७ ५६	धृ. शू.	५ ५७	९ २५	कौ.	८	५७	वै.१	१४	२४	८	सिंह	५९	५६	६	१	१८	४५	११	२९	३८	५०	सं. सूर्य अश्वि. मेष में २०/१९, मु. १५, पुण्यकाल (E) **परिधावी संवत्सर**
३१	५६	१०	चं.	२	४८	मघा	५५	३	गं.	४९	६	ग.	२	४८	२	१५	२५	९	सिंह			६	०	१८	४६	०	०	३७	३६	भ. २९/२२ से ५५/५९ तक, बुध उ.भा. में ३/४०, (F)
अवम		११	चं.	५५	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३२	१	१२	मं.	४८	३८	पू.फा.	४९	३९	वृ.	४०	२०	ब.	२२	१८	३	१६	२६	१०	सिंह			५	५८	१८	४७	०	१	३६	२१	श्रीविष्णु दमनोत्सव, कामदा एकादशी व्रत (वै.)(देखें पृ.13),
३२	५	१३	बु.	४१	७	उ.फा.	४४	५	ध्रु.	३१	२२	कौ.	१४	५३	४	१७	२७	११	कन्या	३	१५	५	५७	१८	४७	०	२	३५	३	अनंग त्रयोदशी, ⟷ महावीर जयन्ती (जैन), (G)
३२	९	१४	गु.	३३	४५	हस्त	३८	४२	व्या.	२२	३०	ग.	७	२६	५	१८	२८	१२	कन्या			५	५६	१८	४८	०	३	३३	४३	भ. ३३/४५ बाद, शुक्र उ.भा. में ३३/१०, दमनक चतुर्दशी (H)
३२	१४	१५	शु.	२६	५७	चित्रा	३३	५५	ह.	१४	१	वि.	०	२१	६	१९	२९	१३	तुला	६	१३	५	५५	१८	४९	०	४	३२	२१	भ. ०/२१ तक, चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारम्भ,

(A) चान्द्र-संवत्सर २०७६ वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, (B) श्री मत्स्य जयन्ती, (C) हयव्रत (चतुर्थी विद्धा पंचमी में), (D) षष्ठी (देखें पृ. 13), (E) प्रातः ७ घं. ४५ मि. बाद, नवमी नवरात्रव्रत, नवरात्र समाप्त, वैशाखी (पं.), (F) शुक्र मीन में ४७/४०, कामदा एकादशी व्रत(स्मा.) (देखें पृ. 13), नवरात्र पारणा, दोलोत्सव, (G) प्रदोष व्रत, ⟷ (H) श्री हनुमान् जयन्ती (द.भा.) (देखें पृ. 13), श्री सत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 14), श्री शिव दमनोत्सव,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	१	११	८	१०	८	२	८
२८	१	१४	१	०	२६	२६	२८	२८
४०	१८	१७	४	१३	३५	९	२	२
१	४८	११	२	१३	४७	३६	५६	५६
५८	८४	३९	६३	०	७२	१	३	३
४९	३१	२६	५४	३२	३१	३७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	२	४	१	२	४	३	१
रेव.	पुन.	रोहि.	पू.भा.	मूल	पू.भा.	पू.षा.	पुन.	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदय (१३ अप्रै.)

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार, पांच शुक्रवार एवं शनिवारी प्रतिपदा किंवा शनि-गुरु के एकत्र होने से यावन देशों किंवा अन्य पश्चिमी देशों में आन्तरिक अशान्ति से कहीं युद्धात्मक स्थिति बने,—"विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।" इस मास के लगभग भारत के राजनैतिक पटल पर भी विशेष सुधारात्मक संशोधन किंवा परिवर्तन के आसार सम्भव होंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, कपास, सूत, सण, रेशम, सरसों, तेल, लालमिर्च तेज रहें। ११ अप्रैल से जौ, चना, १५ अप्रैल से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी आदि धातुएं तेज हों। १४ को तेल, तिलहन, धातुएं, मेथी, लौंग एवं इलायची में तेजी बने।

आकाशलक्षण—अप्रैल ६, ७, ११, १५, १६ एवं १८ के लगभग मुम्बई, पश्चिमी राजस्थान, आसाम एवं उड़ीसा के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१९ अप्रै.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	५	१	११	८	११	८	२	८
४	२८	१८	८	०	३	२६	२७	२७
३२	१४	१३	३	७	५१	१७	४३	४३
२०	२४	२८	४७	१५	९	४९	५१	५१
५८	८६४	३९	७८	१	७२	१	३	३
३६	१२	१८	५२	३८	३६	२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	३	३	१	१	४	३	१
अश्वि.	चित्रा	रोहि.	उ.भा.	मूल	उ.भा.	पू.षा.	पुन.	उ.षा.

(२० अप्रैल से ४ मई, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः बुध, शुक्र पूर्व में, शनि याम्योत्तर वृत्त में और गुरु इससे पश्चिम की ओर होगा। सायं मंगल पश्चिम में दिखाई देगा। ३ मई को प्रातः अरुणोदय-काल में बुध, शुक्र, चन्द्र को पूर्व में एक साथ देख सकते हैं।

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, वैशाख कृष्ण पक्ष २															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	अप्रैल	चैत्र	शाबान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१८	१	श.	२१	७	स्वा.	३०	९	व. सि.	६ ५९	१५ २९	कौ.	२१	७	७	२०	३०	१४	तुला			५	५४	१८	४९	०	५	३०	५७	सूर्य सायन वृष में २१/१७, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
३२	२२	२	र.	१६	३८	विशा.	२७	४८	व्य.	५४	३	ग.	१६	३८	८	२१	वै.१	१५	वृश्चिक	१३	१५	५	५३	१८	५०	०	६	२९	३१	भ. ४५/१३ बाद, शक वैशाख प्रारम्भ, अगस्त्य अस्त,
३२	२६	३	च.	१३	५२	अनु.	२७	१२	व.	५०	७	वि.	१३	५२	९	२२	२	१६	वृश्चिक			५	५२	१८	५०	०	७	२८	३	भ. १३/५२ तक, वक्री गुरु ज्ये. ४ वृश्चिक में ४८/१६, (A)
३२	३१	४	मं.	१३	२	ज्येष्ठा	२८	३४	प.	४७	४७	बा.	१३	२	१०	२३	३	१७	धनु	२८	३४	५	५१	१८	५१	०	८	२६	३३	
३२	३५	५	बु.	१४	१५	मूल	३१	५२	शि.	४७	२	तै.	१४	१५	११	२४	४	१८	धनु			५	५०	१८	५२	०	९	२५	२	प्लूटो वक्री ४६/३,
३२	३९	६	गु.	१७	२३	पू.षा.	३७	०	सि.	४७	४०	ब.	१७	२३	१२	२५	५	१९	मकर	५३	३१	५	४९	१८	५२	०	१०	२३	२९	भ. १७/२३ से ४१/५५ तक, बुध रेवती में ११/४६,
३२	४३	७	शु.	२२	१०	उ.षा.	४३	३४	सा.	४९	२३	ब.	२२	१०	१३	२६	६	२०	मकर			५	४८	१८	५३	०	११	२१	५४	मंगल मृग. में ४८/७,
३२	४७	८	श.	२८	५	श्रव.	५१	३	शु.	५१	४७	कौ.	२८	५	१४	२७	७	२१	मकर			५	४७	१८	५४	०	१२	२०	१८	
३२	५१	९	र.	३४	३०	धनि.	५८	४८	शु.	५४	२३	तै.	१	१७	१५	२८	८	२२	कुम्भ	२४	५८	५	४६	१८	५४	०	१३	१८	४०	पंचक प्रारम्भ २४/५८, सूर्य भरणी में ०/४२,
३२	५५	१०	चं.	४०	४७	शत.	६०	०	ब्र.	५६	४५	व.	७	३८	१६	२९	९	२३	कुम्भ			५	४५	१८	५५	०	१४	१७	१	भ. ७/३८ से ४०/४७ तक, शुक्र रेव. में ३४/३,
३२	५९	११	मं.	४६	२४	शत.	६	१५	ऐं.	५८	३१	ब.	१३	३५	१७	३०	१०	२४	मीन	५६	१६	५	४४	१८	५६	०	१५	१५	२०	शनि वक्री १/४०, वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), (B)
३३	३	१२	बु.	५०	५४	पू.भा.	१२	५१	वै.	५९	२६	कौ.	१८	३९	१८	म.१	११	२५	मीन			५	४३	१८	५६	०	१६	१३	३८	मई प्रारम्भ,
३३	७	१३	गु.	५४	६	उ.भा.	१८	१८	वि.	५९	११	ग.	२२	३०	१९	२	१२	२६	मीन			५	४२	१८	५७	०	१७	११	५४	भ. ५४/७ बाद, प्रदोष व्रत,
३३	११	१४	शु.	५५	५६	रेव.	२२	२६	प्री.	५८	८	वि.	२५	०१	२०	३	१३	२७	मेष	२२	२६	५	४१	१८	५८	०	१८	१०	८	भ. २५/०१ तक, पंचक समाप्त २२/२६, बुध अश्वि. (C)
३३	१५	३०	श.	५६	२७	अश्वि.	२५	१५	आ.	५५	५६	च.	२६	११	२१	४	१४	२८	मेष			५	४०	१८	५८	०	१९	८	२१	शनैश्चरी अमा,

(A) श्री गणेशचतुर्थी व्रत, (B) श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, (C) मेष में २८/१५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१	११	७	११	८	२	८
१२	१३	२३	१९	२९	१३	२६	२७	२७
२०	६	२७	२२	४९	३२	२३	१८	१८
१७	४४	१५	२४	२	२८	२०	२६	२६
५८	७१०	३९	९३	३	७२	०	३	३
२३	४४	८	२३	६	४४	१५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२७ अप्रै.)

भाव	ग्रह
१	सू.
२	मं.
३	रा.
४	
५	
६	
७	
८	गु.
९	के. श.
१०	चं.
११	
१२	बु. शु.

लोकभविष्य—इस चन्द्रमास में पांच शनिवार हैं। शनि-मंगल का षडष्टक एवं वक्री शनि का राहु के साथ समसप्तक भी है। राजनीतिज्ञों को अपनी पार्टी की प्रतिष्ठा के लिए विशेष प्रलोभन एवं प्रयत्न करने होंगे। कहीं उत्तर-दक्षिणी भूभाग पर भूकम्प किंवा अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो –

"शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी ।
ईशान – देश – भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२३ अप्रैल को अनाज, घी, कपास के स्टॉक से आगे लाभ रहे। २५ से २७ अप्रैल तक केसर, मजीठ, चांदी सोना, तांबा, घी, तेल, तिलहन तेज हों। गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी रहे, लेकिन २७, २९ अप्रैल को सभी बाजार मन्दे रहें। १ मई के लगभग सभी व्यापारिक वस्तुओं पर जोरदार तेजी का झटका आयेगा। चांदी, घी, तिलहन में ३ मई को मन्दी सम्भव है।

आकाशलक्षण—२३ से २७ अप्रैल तक एवं २५, २९ अप्रैल एवं १, २ मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, नेपाल, जम्मू-कश्मीर, उ. खण्ड, बिहार एवं हि.प्रदेश में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

भौम—[illegible] के पूर्वार्ध में [illegible] से वर्षा, आग किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (४ मई)

भाव	ग्रह
१	सू. चं. बु.
२	मं.
३	रा.
४	
५	
६	
७	
८	गु.
९	के. श.
१०	
११	
१२	शु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ४ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१	०	७	११	८	२	८
११	७	२८	०	२९	२२	२६	२६	२६
८	५०	०	५४	२३	१	२३	५६	५६
२१	४५	४७	२५	४७	५०	१	१०	१०
५८	७६३	३९	१०६	४	७२	०	३	३
११	१८	०	९	१७	४९	२६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ — (५ से १८ मई, सन् २०१९ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः पूर्व में दिखाई दे रहा बुध १० मई को लुप्त हो जायेगा। शुक्र प्रातः पूर्व में, शनि याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम में और गुरु इससे भी पश्चिम की ओर होगा। सायं मंगल पश्चिम में क्षितिज की ओर होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु. शाबान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल (भा.स्टैं.टा.) घ.	प.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य (प्रातः ५घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	१९	१	र.	५५	४७	भर.	२६	५१	सौ.	५२	४९	किं.	२६	७	२२	५	१५	२९	वृष	४२	४	५	४०	१८	५९	०	२०	६	३२	
३३	२२	२	चं.	५४	७	कृत्ति.	२७	२३	शो.	४८	५४	बा.	२४	५७	२३	६	१६	३०	वृष			५	३९	१९	०	०	२१	४	४२	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, श्री शिवाजी जयन्ती,
३३	२६	३	मं.	५१	३७	रोहि.	२७	२	अ.	४४	१९	तै.	२२	५२	२४	७	१७	र.१	मिथुन	५६	३२	५	३८	१९	०	०	२२	२	४९	मंगल मिथुन में ३/१०, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया, (A)
३३	३०	४	बु.	४८	२५	मृग.	२५	५५	सु.	३९	८	व.	२०	१	२५	८	१८	२	मिथुन			५	३७	१९	१	०	२३	०	५५	भ. २०/१ से ४८/२४ तक,
३३	३३	५	गु.	४४	३६	आर्द्रा	२४	११	धृ.	३३	२८	ब.	१६	३१	२६	९	१९	३	मिथुन			५	३६	१९	२	०	२३	५८	५९	राहु पुन. २, केतु पू.षा. ४ में ४/५५, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	३७	६	शु.	४०	१४	पुन.	२१	५३	शू.	२७	२१	कौ.	१२	२५	२७	१०	२०	४	कर्क	७	३१	५	३६	१९	२	०	२४	५७	१	बुध भर. में ४१/१८, शुक्र अश्वि. मेष में ३३/४२, (B)
३३	४०	७	श.	३५	२४	पुष्य	१९	५	गं.	२०	५०	ग.	७	४९	२८	११	२१	५	कर्क			५	३५	१९	३	०	२५	५५	१	भ. ३५/२२ बाद, सूर्य कृत्ति. में ४६/२१, श्रीगंगा जन्म,
३३	४४	८	र.	३०	७	आश्ले.	१५	५०	वृ.	१३	५७	वि.	२	४६	२९	१२	२२	६	सिंह	१५	५०	५	३४	१९	४	०	२६	५२	५९	भ. २/४६ तक,
३३	४७	९	चं.	२४	२९	मघा	१२	१३	ध्रु. व्या.	६ ५९	४६ १८	कौ.	२४	२९	३०	१३	२३	७	सिंह			५	३३	१९	४	०	२७	५०	५६	श्री जानकी जयन्ती,
३३	५०	१०	मं.	१८	३६	पू.फा.	८	१९	ह.	५१	४६	ग.	१८	३६	३१	१४	२४	८	कन्या	२२	१८	५	३३	१९	५	०	२८	४८	५०	भ. ४५/३४ बाद,
३३	५४	११	बु.	१२	३८	उ.फा.	४	१७	व.	४४	१६	वि.	१२	३८	ज्ये.१	१५	२५	९	कन्या			५	३२	१९	६	०	२९	४६	४३	भ. १२/३८ तक, सं. सूर्य वृष में १३/४३, मु. ३०, (C)
३३	५७	१२	गु.	६	४९	हस्त चित्रा	० ५६	२३ ५१	सि.	३७	१	बा.	६	४९	२	१६	२६	१०	तुला	२८	३२	५	३२	१९	६	१	०	४४	३४	प्रदोष व्रत,
३४	०	१३	शु.	१	२२	स्वाती	५३	५९	व्य	३०	१३	तै.	१	२२	३	१७	२७	११	तुला			५	३१	१९	७	१	१	४२	२४	भ. ५६/३९ बाद, मंगल आर्द्रा में २१/१२, बुध कृत्ति. (D)
अवम		१४	शु.	५६	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	३	१५	श.	५२	५६	विशा.	५२	७	व.	२४	७	वि.	२४	४७	४	१८	२८	१२	वृश्चिक	३७	२८	५	३०	१९	८	१	२	४०	१२	भ. २४/४७ तक, बुध वृष में ४५/७, वैशाखी पूर्णिमा, (E)

(A) रमजान मु. प्रारम्भ, (B) बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ३५ मि., श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, (C) पुण्यकाल १७ घं. २५ मि. तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (D) में ११/५२, श्री नृसिंह जयन्ती, (E) श्री बुद्ध पूर्णिमा (श्री बुद्ध जयन्ती), श्री कूर्म जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	०	७	०	८	२	८
२६	२६	३	१५	२८	१	२६	२६	२६
५२	१३	१२	५४	४५	४४	१६	३०	३०
५९	३४	१६	५९	१३	२७	४९	४४	४४
५७	८५०	३८	१२०	५	७२	१	३	३
५७	३३	५०	४१	२८	५१	१३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	आश्ले. ३	मृग. ३	भर. १	ज्ये. ४	अश्वि. १	पू.षा. ४	पुन. २	पू.षा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१२ मई)

२. | १२ | रा. ३ मं. | १ सू. बु.शु. | ११ | ४ चं. | १० | ५ | ७ | ९ के. श. | ६ | ८ गु.

लोकभविष्य—राहु-मंगल का वक्री-शनि-केतु के साथ समसप्तक एवं सूर्य-बुध-शुक्र का एकत्र होना कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाए एवं महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ने से जनता परेशान रहे—

"एक-राशौ यदा ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः।
सर्वधान्य-महर्घत्वं मेघा स्वल्प जलप्रदाः॥"

भारत की प्रभाव राशि के स्वामी शनि का मंगल के साथ दृष्टि-सम्बन्ध भारत की राजनीति में भारी उथल-पुथल का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—मई ६, ७ को गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, सोना, कुसुम्भ, मजीठ में जोरदार तेजी बनेगी। ८, १० मई को रुई, अनाज तेज हों। १० मई के लगभग जोरदार तेजी या मन्दी बनेगी। ११, १५, १७, १८ मई को वायदा व्यापार एवं हाजर में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

आकाशलक्षण—मई ५, ६, ७, ८, १०, ११, १५, १७ एवं १८ मई को हि. प्रदेश, उ. खण्ड, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर एवं भारत के दक्षिण-पश्चिमी प्रान्तों में अनेकत्र वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१८ मई)

रा.मं. ३ | २ सू. | १शु.बु. | १२ | ४ | ५ | ११ | ६ | ८ गु. | १० | ७ चं. | ९ श.के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	२	०	७	०	८	२	८
२	२१	७	२८	२८	९	२६	२६	२६
४०	२२	५	२२	१०	१	८	११	११
११	५३	१	४४	२४	३९	१३	३९	३९
५७	८२४	३८	१२९	६	७२	१	३	३
४७	६	४४	१९	१४	५३	४५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. २	विशा. १	आर्द्रा १	कृत्ति. १	ज्ये. ४	अश्वि. ३	पू.षा. ४	पुन. २	पू.षा. ४

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१९ मई से ३ जून, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

पक्षान्त में बुध पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में, शनि याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम में और गुरु पश्चिम कपाल में होगा। सायं मंगल पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर होगा। २० मई को अर्धरात्रि के बाद चन्द्र, गुरु को परस्पर समीपस्थ देख सकते हैं।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. वैशाख	मु. रमजान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	६	१	र.	५०	३२	अनु.	५१	३२	प.	१८	५८	बा.	२१	४४	५	१९	२९	१३	वृश्चिक			५	३०	१९	८	१	३	३७	५८	
३४	९	२	चं.	४९	४०	ज्येष्ठा	५२	२९	शि.	१४	५८	तै.	२०	६	६	२०	३०	१४	धनु	५२	२९	५	२९	१९	९	१	४	३५	४३	
३४	१२	३	मं.	५०	२९	मूल	५५	५	सि.	१२	१५	व.	२०	४	७	२१	३१	१५	धनु			५	२९	१९	९	१	५	३३	२७	भ. २०/४ से ५०/२९ तक, शुक्र भर. में ३२/४०, यूरेनस (A)
३४	१५	४	बु.	५३	१	पू.षा.	५९	२०	सा.	१०	५३	ब.	२१	४५	८	२२	ज्ये.१	१६	धनु			५	२८	१९	१०	१	६	३१	९	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ
३४	१७	५	गु.	५७	६	उ.षा.	६०	०	शु.	१०	५०	कौ.	२५	४	९	२३	२	१७	मकर	१५	४१	५	२८	१९	११	१	७	२८	५०	बुधा रोहि. में २०/००
३४	२०	६	शु.	६०	०	उ.षा.	५	५	शु.	११	५५	ग.	२९	४५	१०	२४	३	१८	मकर			५	२७	१९	११	१	८	२६	३०	
३४	२३	६	श.	२	२४	श्रव.	११	५८	ब्र.	१३	५२	व.	२	२४	११	२५	४	१९	कुम्भ	४५	४१	५	२७	१९	१२	१	९	२४	९	भ. २/२४ से ३५/२६ तक, पंचक प्रारम्भ ४५/४१, सूर्य (B)
३४	२५	७	र.	८	२७	धनि.	१९	२६	ऐं.	१६	१७	ब.	८	२७	१२	२६	५	२०	कुम्भ			५	२६	१९	१३	१	१०	२१	४७	
३४	२८	८	चं.	१४	३५	शत.	२६	५५	वै.	१८	४४	कौ.	१४	३५	१३	२७	६	२१	कुम्भ			५	२६	१९	१३	१	११	१९	२४	
३४	३०	९	मं.	२०	१३	पू.भा.	३३	५०	वि.	२०	४७	ग.	२०	१३	१४	२८	७	२२	मीन	१७	१२	५	२६	१९	१४	१	१२	१७	१	भ. ५२/३० बाद,
३४	३२	१०	बु.	२४	४९	उ.भा.	३९	३९	प्री.	२२	३	वि.	२४	४९	१५	२९	८	२३	मीन			५	२५	१९	१४	१	१३	१४	३६	भ. २४/४९ तक, बुध मृग. में ३१/१२,
३४	३४	११	गु.	२८	२	रेव.	४४	५	आ.	२२	१५	बा.	२८	२	१६	३०	९	२४	मेष	४४	५	५	२५	१९	१५	१	१४	१२	१०	पंचक समाप्त ४४/५, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली (C)
३४	३६	१२	शु.	२९	३९	अश्वि.	४६	५६	सौ.	२१	१३	तै.	२९	३९	१७	३१	१०	२५	मेष			५	२५	१९	१५	१	१५	९	४४	वक्री गुरु ज्ये. ३ में १४/९, प्रदोष व्रत,
३४	३८	१३	श.	२९	४०	भर.	४८	१४	शो.	१८	५५	व.	२९	४०	१८	जू.१	११	२६	मेष			५	२५	१९	१६	१	१६	७	१७	भ. २९/४० से ५८/५४ तक, बुध मिथुन में ४७/१५, शुक्र (D)
३४	४०	१४	र.	२८	९	कृत्ति.	४८	५	अ.	१५	२३	श.	२८	९	१९	२	१२	२७	वृष	३	१९	५	२४	१९	१६	१	१७	४	४८	बुध पश्चिम में उदित १९ घं. १७ मि.,
३४	४२	३०	चं.	२५	१९	रोहि.	४६	४२	सु.	१०	४१	ना.	२५	१९	२०	३	१३	२८	वृष			५	२४	१९	१७	१	१८	२	१९	वट सावित्री व्रत (अमा-पक्ष) (देखें पृ.14), सोमवती अमा, (E)

(A) अश्वि. ४ में २८/५८, सूर्य सायन मिथुन में १९/५७, (B) रोहि. में ३७/२७, (C) एकादशी (पं.), (D) कृत्ति. में ३०/३०, जून प्रारम्भ, (E) भावुका अमा, शनैश्चर जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	१	७	०	८	२	८
११	१४	१२	१७	२७	१९	२५	२५	२५
१९	४२	५२	५९	१०	५८	४९	४३	४३
२४	११	५५	२५	३३	३	२२	२	२
५७	८१४	३८	१२८	७	७२	२	३	३
३६	३	३५	३४	६	५९	३१	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (२७ मई)

मं.रा. ३ | १ शु. | २ सू. बु. | १२ | ४ | ५ | ११ चं. | ६ | ८ गु. | १० | ७ | ९ के.श.

लोकभविष्य—इस चान्द्रमासमें पांच रविवार एवं पांच सोमवार होने से देश में महंगाई पर काबू पाने के उपाय एवं जनता के हित में शासन के प्रयास प्रशस्य रहेंगे। किसी देश विशेष में सत्ता में परिवर्तन किंवा अप्रिय घटना घटित हो-"दुर्भिक्षं छत्रभंगं च तत्र निर्दिशेद्धि महद्भयम्।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रूख—पक्षारम्भ में सोना, चांदी, तिलहन, उड़द मन्दे रहें। चना, मूंग, मोठ, ज्वार, अरहर में घटाबढ़ी एवं रुई तेज रहे। २३ मई के लगभग रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिलहन, गुड़, खाण्ड तेज हों। २५ से २८ मई के अन्दर सभी बाजारों में तेजी का झटका आते ही लाभ लें। २९, ३० मई को बाजार मन्दे रहें। ३१ मई से पक्षान्त तक बाजार ऊपर-नीचे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (३ जून)

म.बु.रा. ३ | १ शु. | २ सू.चं. | १२ | ४ | ५ | ११ | ६ | ८ गु. | १० | ७ | ९ के.श.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	२	२	७	०	८	२	८
१८	१२	१७	२	२६	२८	२५	२५	२५
२	४४	२२	२३	१९	२९	३०	२०	२०
१९	३९	४१	१५	२७	१२	८	४७	४७
५७	८२२	३८	११५	७	७३	३	३	३
२९	१६	२९	१	३१	३	३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाशलक्षण—मई २१, २३, २५, २९, ३० एवं जून १, २ के लगभग हि.प्र., उ.खण्ड, उ.प्र., उत्तरी भारत, दिल्ली, कश्मीर एवं भारत के दक्षिणी-पश्चिमी भागों में अनेकत्र वर्षा के योग हैं। गर्मी भयंकर पड़ेगी; भारत के कुछ क्षेत्र अकालग्रस्त रहें।

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(४ से १७ जून, सन् २०१९ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. रमजान				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज के पास, शनि याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम में और गुरु पश्चिम क्षितिज के पास होगा। सायं मंगल-बुध पश्चिम क्षितिजासन्न होंगे। ५ जून को सायं पश्चिम क्षितिज में बालचन्द्र के समीपस्थ मंगल को देखिये।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४४	१	मं.	२१	२३	मृग.	४४	२०	धृ. शू.	५ ५८	१२ ५४	ब.	२१	२३		२१	४	१४	२९	मिथुन	१५	३७	५	२४	१९	१८	१	१८	५१	४९	शुक्र वृष में १४/४९, चन्द्रदर्शन, मु. ३०.
३४	४६	२	बु.	१६	३८	आर्द्रा	४१	१५	गं.	५२	५	कौ.	१६	३८		२२	५	१५	श.१	मिथुन			५	२४	१९	१८	१	१९	५७	१७	बुध आर्द्रा में १६/७, रम्भा तृतीया (देखें पृ. 14), (A)
३४	४७	३	गु.	११	१८	पुन.	३७	४१	वृ.	४४	५३	ग.	११	१८		२३	६	१६	२	कर्क	२३	३६	५	२४	१९	१८	१	२०	५४	४५	भ. ३८/२५ बाद, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),
३४	४९	४	शु.	५	३६	पुष्य	३३	५०	ध्रु.	३७	३०	वि.	५	३६		२४	७	१७	३	कर्क			५	२३	१९	१९	१	२१	५२	११	भ. ५/३६ तक, मंगल पुन. में ५/४३, बलिदान दिन (B)
अवम		५	शु.	५९	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
३४	५०	६	श.	५३	४८	आश्ले.	२९	५४	व्या.	३०	३	कौ.	२६	४५		२५	८	१८	४	सिंह	२९	५४	५	२३	१९	१९	१	२२	४९	३६	सूर्य मृग. में ३२/६, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
३४	५१	७	र.	४८	२	मघा	२६	३	ह.	२२	३९	ग.	२०	५५		२६	९	१९	५	सिंह			५	२३	१९	२०	१	२३	४७	०	भ. ४८/२ बाद,
३४	५३	८	चं.	४२	३०	पू.फा.	२२	२३	व.	१५	२४	वि.	१५	२६		२७	१०	२०	६	कन्या	३६	३०	५	२३	१९	२०	१	२४	४४	२३	भ. १५/१६ तक, मेला क्षीरभवानी (क.),
३४	५४	९	मं.	३७	२०	उ.फा.	१९	२	सि.	८	२५	बा.	९	५५		२८	११	२१	७	कन्या			५	२३	१९	२१	१	२५	४१	४५	
३४	५५	१०	बु.	३२	३९	हस्त	१६	८	व्य. व.	१ ५५	४६ ३४	तै.	४	५१		२९	१२	२२	८	तुला	४४	५३	५	२३	१९	२१	१	२६	३९	६	शुक्र रोहि. में २७/२२, श्रीगंगा दशहरा,
३४	५५	११	गु.	२८	३५	चित्रा	१३	४८	प.	४९	५५	व.	०	३७		३०	१३	२३	९	तुला			५	२३	१९	२१	१	२७	३६	२६	भ. ०/३७ से २८/३५ तक, बुध पुन. में १५/७, (C)
३४	५६	१२	शु.	२५	१७	स्वाती	१२	१२	शि.	४४	५७	बा.	२५	१७		३१	१४	२४	१०	वृश्चिक	५६	३३	५	२३	१९	२२	१	२८	३३	४५	चम्पक द्वादशी, प्रदोष व्रत,
३४	५७	१३	श.	२२	५८	विशा.	११	२८	सि.	४०	४५	तै.	२२	५८		आ.१	१५	२५	११	वृश्चिक			५	२३	१९	२२	१	२९	३१	३	सं. सूर्य मिथुन में ३०/३७, मु. ३०, पुण्यकाल प्रातः (D)
३४	५८	१४	र.	२१	३६	अनु.	११	४७	सा.	३७	२८	व.	२१	३६		२	१६	२६	१२	वृश्चिक			५	२३	१९	२३	२	०	२८	२१	भ. २१/३६ से ५१/३६ तक, वट सावित्री व्रत (E)
३४	५८	१५	चं.	२१	३१	ज्येष्ठा	१३	१७	शु.	३५	१२	ब.	२१	३१		३	१७	२७	१३	धनु	१३	१७	५	२४	१९	२३	२	१	२५	३७	

(A) शव्वाल मु. प्रारम्भ, (B) श्रीगुरु अर्जुन देव जी, (C) निर्जला एकादशी व्रत (स.), (D) ११ घं. १० मि. बाद, (E) (पूर्णिमा-पक्ष), (देखें पृ. 14), श्री सत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	२	७	१	८	२	८
२४	२१	२४	१४	२५	७	२५	२४	२४
४४	२६	५१	५५	२६	०	७	५८	५८
२३	३३	४७	१८	१५	४६	२२	३१	३१
५७	८४१	३८	९६	७	७३	३	३	३
२२	११	२३	५७	३१	७	३१	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. १	पू.फा. ३	पुन. १	आर्द्रा ३	ज्ये. ३	कृत्ति. ४	पू.षा. ४	पुन. २	पू.षा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१० जून)

स्थान	भाव
२	सू., शु.
३	मं., बु., रा.
५	चं.
८	गु.
९	के., श.
शेष अंक	१, ४, ६, ७, १०, ११, १२

लोकभविष्य—राहु-मंगल-बुध का शनि-केतु के साथ समसप्तक, पाप की प्रभावराशि कन्या पर शनि-मंगल की विशेष दृष्टि, यावन राष्ट्रों के लिए भयावह है। प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद एवं राजनैतिक विक्षोभ से स्थिति चिन्तनीय बनेगी। पक्षान्त में चतुर्ग्रही योग भी कहीं अत्यधिक वर्षा व कहीं आन्तरिक कलह से हानि का संकेत देता है—"एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः।

धनावर्यन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में बाजारों में उठा-पटक हो, रुई, कपास, सूत, अनाज मन्द, ७, ८, ९ जून के लगभग कपास, रुई, चांदी, नमक, तिलहन तेज हों। १२, १३ जून को सभी बाजार मन्दे हों। माल स्टॉक करें। १५ जून के बाद वायदा-हाजर बाजारों में अच्छी तेजी का झटका आयेगा।

आकाशलक्षण—जून ४ से ७, ८, १२, १५, १६ को भारत के अनेक प्रान्तों में, विशेषतः हि.प्र., कश्मीर, उ. भारत में अच्छी वर्षा के योग हैं। नोट—इस वर्ष कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

कुण्डली सूर्योदय (१७ जून)

स्थान	भाव
२	शु.
३	सू., बु., मं., रा.
८	चं., गु.
९	श., के.
शेष अंक	१, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	२	२	७	१	८	२	८
१	२७	२६	२५	२४	१५	२४	२४	२४
२५	११	२०	१६	३२	३२	४१	३६	३६
३७	५८	११	२४	५२	४६	३८	१५	१५
५७	७६८	३८	७७	७	७३	३	३	३
१५	१	१७	२९	३२	११	५३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. ३	ज्ये. ४	पुन. २	पुन. २	ज्ये. ३	रोहि. २	पू.षा. ४	पुन. २	पू.षा. ४

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(१८ जून से २ जुलाई, सन् २०१९ ई.)
उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षाऋतु।

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिजासन्न और शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं गुरु पूर्व क्षितिज पर और मंगल-बुध पश्चिम क्षितिजासन्न दीखेंगे। १९ जून को प्रातःकाल चन्द्र-शनि परस्पर समीपस्थ होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जून	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	मं.	२२	४७	मूल	१६	५	शु.	३३	५९	कौ.	२२	४७	४	१८	२८	१४	धनु			५	२४	१९	२३	२	२	२२	५३	
३४	५९	२	बु.	२५	२५	पू.षा.	२०	१३	ब्र.	३३	५०	ग.	२५	२५	५	१९	२९	१५	मकर	३६	२८	५	२४	१९	२३	२	३	२०	८	भ. ५७/२२ बाद,
३४	५९	३	गु.	२९	२०	उ.षा.	२५	३६	ऐं.	३४	४०	वि.	२९	२०	६	२०	३०	१६	मकर			५	२४	१९	२४	२	४	१७	२३	भ. २९/२० तक, बुध कर्क में ५२/४५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	५९	४	शु.	३४	२०	श्रवण	३२	४	वै.	३६	२०	ब.	१	५०	७	२१	३१	१७	मकर			५	२४	१९	२४	२	५	१४	३८	नेप्च्यून वक्री ३६/५२, सूर्य सायन कर्क में ४०/००, (A)
३४	५९	५	श.	४०	६	धनि.	३९	१६	वि.	३८	३३	कौ.	७	१३	८	२२	आ.१	१८	कुम्भ	५	३६	५	२४	१९	२४	२	६	११	५२	पंचक प्रारम्भ ५/३६, सूर्य आर्द्रा में २९/४५, मंगल (B)
३४	५९	६	र.	४६	९	शत.	४६	४५	प्री.	४१	१	ग.	१३	७	९	२३	२	१९	कुम्भ			५	२५	१९	२४	२	७	९	६	भ. ४६/९ बाद, शुक्र मृग. में २३/१,
३४	५९	७	चं.	५१	५८	पू.भा.	५४	०	आ.	४३	२०	वि.	१९	४	१०	२४	३	२०	मीन	३७	१६	५	२५	१९	२४	२	८	६	१९	भ. १९/०४ तक, बुध पुष्य में ५/१५,
३४	५८	८	मं.	५७	०	उ.भा.	६०	०	सौ.	४५	५	बा.	२४	२९	११	२५	४	२१	मीन			५	२५	१९	२५	२	९	३	३३	
३४	५८	९	बु.	६०	०	उ.भा.	०	२९	शो.	४५	५७	तै.	२८	५३	१२	२६	५	२२	मीन			५	२६	१९	२५	२	१०	०	४७	वक्री गुरु ज्ये. २ में ५८/६,
३४	५७	९	गु.	०	४६	रेव.	५	४३	अ.	४५	३६	ग.	०	४६	१३	२७	६	२३	मेष	५	४३	५	२६	१९	२५	२	१०	५८	१	भ. ३१/५१ बाद, पंचक समाप्त ५/४३, मंगल पुष्य में (C)
३४	५७	१०	शु.	२	५६	अश्वि.	९	२२	सु.	४३	५३	वि.	२	५६	१४	२८	७	२४	मेष			५	२६	१९	२५	२	११	५५	१४	भ. २/५६ तक, शुक्र मिथुन में ५०/१८,
३४	५६	११	श.	३	१८	भर.	११	१७	धृ.	४०	४३	बा.	३	१८	१५	२९	८	२५	वृष	२६	२८	५	२६	१९	२५	२	१२	५२	२८	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५५	१२	र.	१	५२	कृत्ति.	११	२४	शू.	३६	९	तै.	१	५२	१६	३०	९	२६	वृष			५	२७	१९	२५	२	१३	४९	४२	भ. ५८/४३ बाद, प्रदोष व्रत,
अवम		१३	र.	५८	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३४	५४	१४	चं.	५४	६	रोहि.	९	५३	गं.	३०	१८	वि.	२६	२५	१७	जु.१	१०	२७	मिथुन	३८	३३	५	२७	१९	२५	२	१४	४६	५५	भ. २६/२५ तक, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	३०	मं.	४८	१६	मृग.	६	५५	वृ.	२३	२२	च.	२१	११	१८	२	११	२८	मिथुन			५	२८	१९	२५	२	१५	४४	९	भौमवती अमा,

(A) दक्षिण अयन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ, (B) कर्क में ४४/५७, शक आषाढ़ प्रारम्भ, (C) ५८/५१,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	३	३	७	१	८	२	८
९	४	१	४	२३	२५	२४	२४	२४
३	३४	२६	१०	३३	१८	९	१०	१०
३३	६	१३	५९	५३	४१	२३	४९	४९
५७	७२२	३८	५२	७	७३	४	३	३
१३	२२	१३	१४	६	११	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	४	१	३	१	४	२	४
आर्द्रा	उ.भा.	पुन.	पुष्य	ज्ये.	मृग.	पू.षा.	पुन.	पू.षा.

कुण्डली सूर्योदय (२५ जून)

- १: —
- २: शु.
- ३: सू. रा.
- ४: बु. मं.
- ५: —
- ६: —
- ७: —
- ८: गु.
- ९: श. के.
- १०: —
- ११: —
- १२: चं.

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं। कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो—"मंगले भ्रियते राजा।" जल राशिस्थ मंगल-बुध पर गुरु की दृष्टि है एवं शनि-मंगल का षडष्टक भी बन रहा है, अतः कुछ प्रान्त भयंकर दुर्भिक्षग्रस्त, कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ से हानि भी होगी। क्योंकि आर्द्रा नक्षत्रस्थ-सूर्ययुत राहु पर शनि की पूर्ण दृष्टि है, अतः कुछ प्रतिष्ठित राष्ट्र शस्त्रास्त्र परीक्षण में अग्रेसर होंगे। कुछ प्रान्तों में उग्रवाद एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में बाजार तेज रहें, लेकिन २० जून से रुई और चांदी में घटाबढ़ी रहे। तेल, तिलहन, गेहूं, चावल, चना, जौ, चांदी, गुड़, शक्कर में २३ जून तक जोरदार तेजी के झटके आयेंगे। २६, २७ जून के लगभग चांदी, रुई में घटाबढ़ी, सोने में तेजी रहे। २८ जून के लगभग तेल, तिलहन, ग्वार, गुड़, घी में अच्छी मन्दी, अनाज तेज रहें।

आकाशलक्षण—जून २०, २२, २३, २६ से २९ तक एवं जुलाई के प्रारम्भ में भी पंजाब, हि.प्र., उ.खण्ड, उ.प्र., हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर आदि में अनेकत्र वर्षा के योग हैं। शनि मंगल शुक्र की ग्रहस्थिति कहीं भयंकर सूखा, कहीं अतिवर्षा (बाढ़) से हानि के योग भी बनाती है।

कुण्डली सूर्योदय (२ जुलाई)

- १: —
- २: —
- ३: सू. चं. शु. रा.
- ४: बु. मं.
- ५: —
- ६: —
- ७: —
- ८: गु.
- ९: श. के.
- १०: —
- ११: —
- १२: —

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	३	७	२	८	२	८
१५	५	५	८	२२	३	२३	२३	२३
४४	३	५३	५८	४५	५२	३९	४८	४८
८	२१	[illegible]	७	५७	१५	२५	३३	३३
५७	८५७	३८	२४	६	७३	४	३	३
१४	३	११	५६	२८	२६	२२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	१	२	२	४	४	२	४
आर्द्रा	मृग.	पुष्य	पुष्य	ज्ये.	मृग.	पू.षा.	पुन.	पू.षा.

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७ — **(३ से १६ जुलाई, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।**

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (आषाढ़)	अं. (जुलाई)	श. (आषाढ़)	मु. (शव्वाल)
३४	५२	१	बु.	४१	३२	आर्द्रा पुन.	२ ५७	५० ५६	ध्रु.	१५	३३	किं.	१४	५४	१९	३	१२	२९
३४	५१	२	गु.	३४	१३	पुष्य	५२	३३	व्या. ह.	७ ५८	८ २४	बा.	७	५२	२०	४	१३	३०
३४	५०	३	शु.	२६	४०	आश्ले.	४७	२	व.	४९	३३	तै.	०	२६	२१	५	१४	ज़ि.१
३४	४८	४	श.	११	११	मघा	४१	४१	सि.	४०	५२	वि.	११	११	२२	६	१५	२
३४	४७	५	र.	१२	२	पू.फा.	३६	४८	व्य.	३२	३३	बा.	१२	२	२३	७	१६	३
३४	४५	६	चं.	५	२९	उ.फा.	३२	३७	व.	२४	४१	तै.	५	२९	२४	८	१७	४
अवम		७	चं.	५१	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	४४	८	मं.	५४	५१	हस्त	२१	२०	प.	१७	४७	वि.	२७	२२	२५	९	१८	५
३४	४२	९	बु.	५१	१८	चित्रा	२७	५	शि.	११	३६	बा.	२३	८	२६	१०	१९	६
३४	४०	१०	गु.	४८	४६	स्वाती	२५	५८	सि.	६	१९	तै.	२०	०२	२७	११	२०	७
३४	३८	११	शु.	४७	२७	विशा.	२६	१	सा. शु.	२ ५८	० ३७	व.	१८	०७	२८	१२	२१	८
३४	३६	१२	श.	४७	११	अनु.	२७	१५	शु.	५६	१३	ब.	१७	२३	२९	१३	२२	९
३४	३४	१३	र.	४८	२३	ज्ये.	२९	४१	ब्र.	५४	४४	कौ.	१७	५१	३०	१४	२३	१०
३४	३२	१४	चं.	५०	३६	मूल	३३	१३	ऐं.	५४	९	ग.	११	२९	३१	१५	२४	११
३४	३०	१५	मं.	५३	५३	पू.षा.	३७	५१	वै.	५४	२४	वि.	२२	१४	श्रा.१	१६	२५	१२

तिथि	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	मंगल एवं बुध क्रमशः ११ और १३ जुलाई को पश्चिम में अस्त होंगे। प्रातः शुक्र अत्यल्प समय के लिए पूर्वक्षितिज पर दृष्टिगोचर होगा। शनि इस समय पश्चिम क्षितिज के समीन देखा जा सकता है। सायं गुरु पूर्व में दिखाई देगा। १६ जुलाई को चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।
१	कर्क	४४	११	५	२८	१९	२५	२	१६	४१	२२	आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
२	कर्क			५	२८	१९	२५	२	१७	३८	३५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र आर्द्रा में १७/७, रथयात्रा (A)
३	सिंह	४७	२	५	२९	१९	२५	२	१८	३५	४८	भ. ५२/५८ बाद, जिल्काद मु. प्रारम्भ,
४	सिंह			५	२९	१९	२५	२	१९	३३	१	भ. ११/११ तक, सूर्य पुन. में २८/२१, वक्री शनि (B)
५	कन्या	५०	४१	५	३०	१९	२५	२	२०	३०	१४	बुध वक्री ५८/१०, कुमार षष्ठी (देखें पृ. 14),
६	कन्या			५	३०	१९	२४	२	२१	२७	२७	भ. ५१/४६ बाद, विवस्वत् सप्तमी (देखें पृ. 14),
७	०	०	०	५	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय, **चन्द्रग्रहण १६ जुलाई**
८	तुला	५८	५	५	३१	१९	२४	२	२२	२४	३९	भ. २७/२२ तक,
९	तुला			५	३१	१९	२४	२	२३	२१	५१	राहु पुन. १, केतु पू.षा. ३ में ५८/४२, गुप्त नवरात्र समाप्त,
१०	तुला			५	३२	१९	२४	२	२४	१९	३	मंगल पश्चिम में अस्त १९ घं. २४ मि., नवरात्र पारणा,
११	वृश्चिक	१०	५३	५	३२	१९	२३	२	२५	१६	१५	भ. १८/७ से ४७/२७ तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.) (C)
१२	वृश्चिक			५	३३	१९	२३	२	२६	१३	२७	बुध पश्चिम में अस्त १९ घं. २३ मि.,
१३	धन	२९	४१	५	३३	१९	२३	२	२७	१०	४०	प्रदोष व्रत,
१४	धन			५	३४	१९	२३	२	२८	७	५२	भ. ५०/३६ बाद, शुक्र पुन. में ९/३७, ग्रहणवेध,
१५	मकर	५४	१०	५	३४	१९	२२	२	२९	५	४	भ. २२/१४ तक, सं. सूर्य कर्क में ५७/२७, मु. ४५, (D)

(A) (श्री जगदीश रथोत्सव) पुरी, (B) पू.षा. ३ में २५/१८, (C) (देखें पृ 14), विष्णुशयनोत्सव, (D) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ५ घं. ३६ मि., गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, श्री शिव शयनोत्सव, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ 20),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	३	७	२	८	२	८
२२	१६	१०	१०	२२	१२	२३	२३	२३
२४	२७	२०	१७	३	२६	८	२६	२६
३१	३७	३९	४९	९	३४	३६	१८	१८
५७	८३८	३८	७	५	७३	४	३	३
१२	२८	७	१२	३७	३२	२६	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (९ जुला.)

४ मं.बु.; ३ सू. रा.शु.; २; १; ५; ६ चं.; १२; ७; ९ श. के.; ११; ८ गु.; १०

लोकभविष्य—सूर्य-शुक्र-राहु पर शनि की पूर्ण दृष्टि है, जल राशिस्थ मंगल-बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है, अतः अनेक प्रान्तों में वर्षा पर्याप्त हो, उपज अच्छी होने से खाद्य वस्तुएं सहज उपलब्ध हों। महाराष्ट्र, उ.खण्ड आदि में अतिवृष्टि से हानि भी सम्भव है—"वृष्टिः सुवृष्टिरतिवृष्टि"रूर्ध्वं वातः प्रवातः प्रलयंकरः स्यात्।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में चांदी, गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में मन्दा बने। ५/६ जुलाई से सभी अनाज, तांबा, लोहा, पीतल, दालें, जीरा, तिलहन, जौ, ज्वार, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, मजीठ, सौंठ, गुग्गुल में अच्छी तेजी बने। १० से १२ जुलाई को बाजार मन्दे रहें। लेकिन गेहूं, अलसी, जौ, चना, गुड़ तेज रहें। १३ से १६ तक वायदा बाजार मन्दे रहें।

आकाशलक्षण—जुलाई ४,५,६,१० से १२ जुलाई एवं १५/१६ जुलाई को भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं पर्याप्त वर्षा हो, कहीं अतिवर्षा (बाढ़ आदि) से हानि भी सम्भव है। राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, म.प्र. एवं बुन्देलखण्ड में अनेकत्र सूखे से भारी जनधनहानि हो।

कुण्डली सूर्योदय (१६ जुला.)

४ मं.बु.; ३ सू. शु.रा.; २; १; ५; ६; १२; ७; ९ चं. के.श.; ११; ८ गु.; १०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	३	३	७	२	८	२	८
२९	१८	१४	७	२१	२१	२२	२३	२३
५	५०	४७	५६	२६	१	३७	४	४
३	५७	२२	१४	५०	३६	४३	२	२
५७	७३८	३८	३५	४	७३	४	३	३
१३	५	५	१	३५	३८	२३	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(१७ जुलाई से १ अगस्त, सन् २०१९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

मंगल अस्त है। शुक्र भी ११ जुलाई को पूर्व में लुप्त हो जायेगा। ३० जुलाई से बुध प्रातः पूर्व में दृश्य हो जायेगा। सायं शनि पूर्व में और इससे ऊपर गुरु होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. जिल्काद	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२७	१	बु.	५८	११	उ.षा.	४३	२७	वि.	५५	२५	बा.	२६	२	२	१७	२६	१३	मकर			५	३५	१९	२२	३	०	२	१६	ग्रहणवेध,
३४	२५	२	गु.	६०	०	श्रव.	४९	५५	प्री.	५७	६	तै.	३०	४५	३	१८	२७	१४	मकर			५	३५	१९	२१	३	०	५९	२९	मंगल आश्ले. में ५७/१८, अशून्य शयनव्रत, ग्रहणवेध,
३४	२२	२	शु.	३	१९	धनि.	५७	१	आ.	५९	१५	ग.	३	१९	४	१९	२८	१५	कुम्भ	२३	२५	५	३६	१९	२१	३	१	५६	४२	भ. ३६/१० बाद, पंचक प्रारम्भ २३/२५, शुक्र पूर्व में (A)
३४	२०	३	श.	९	२	शत.	६०	०	सौ.	६०	०	वि.	९	२	५	२०	२९	१६	कुम्भ			५	३७	१९	२०	३	२	५३	५६	भ. ९/२ तक, सूर्य पुष्य में २७/१, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	१७	४	र.	१५	५	शत.	४	२९	सौ.	१	४२	बा.	१५	५	६	२१	३०	१७	मीन	५५	६	५	३७	१९	२०	३	३	५१	१०	
३४	१४	५	चं.	२१	५	पू.भा.	११	५५	शो.	४	८	तै.	२१	५	७	२२	३१	१८	मीन			५	३८	१९	२०	३	४	४८	२५	
३४	१२	६	मं.	२६	३४	उ.भा.	१८	५७	अ.	६	१६	व.	२६	३४	८	२३	श्रा.१	१९	मीन			५	३८	१९	१९	३	५	४५	४१	भ. २६/३४ से ५८/५१ तक, वक्री बुध पुन. में २/१३, (B)
३४	९	७	बु.	३१	५	रेव.	२५	७	सु.	७	४७	ब.	३१	५	९	२४	२	२०	मेष	२५	७	५	३९	१९	१८	३	६	४२	५८	पंचक समाप्त २५/७,
३४	६	८	गु.	३४	१३	अश्वि.	२९	५७	धृ.	८	२०	बा.	२	३९	१०	२५	३	२१	मेष			५	४०	१९	१८	३	७	४०	१६	शुक्र अस्त ११ जुलाई
३४	३	९	शु.	३५	४०	भर.	३३	१०	शू.	७	४०	तै.	४	५६	११	२६	४	२२	वृष	४८	४२	५	४०	१९	१७	३	८	३७	३४	शुक्र पुष्य में ०/३०,
३४	०	१०	श.	३५	१३	कृत्ति.	३४	३२	गं.	५	३४	व.	५	२६	१२	२७	५	२३	वृष			५	४१	१९	१७	३	९	३४	५४	भ. ५/२६ से ३५/१३ तक,
३३	५७	११	र.	३२	५०	रोहि.	३४	०	वृ. ध्रु.	१ ५६	५७ ४६	ब.	४	१	१३	२८	६	२४	वृष			५	४१	१९	१६	३	१०	३२	१४	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३३	५३	१२	चं.	२८	३७	मृग.	३१	३९	व्या.	५०	१०	कौ.	०	४३	१४	२९	७	२५	मिथुन	३	३	५	४२	१९	१५	३	११	२९	३५	सोमप्रदोष व्रत,
३३	५०	१३	मं.	२२	४६	आर्द्रा.	२७	४०	ह.	४२	१८	व.	२२	४६	१५	३०	८	२६	मिथुन			५	४३	१९	१५	३	१२	२६	५७	भ. २२/४६ से ४९/१२ तक, वक्री बुध मिथुन में १९/२४, (C)
३३	४७	१४	बु.	१५	३५	पुन.	२२	२३	व.	३३	२५	श.	१५	३५	१६	३१	९	२७	कर्क	८	४७	५	४३	१९	१४	३	१३	२४	२०	
३३	४४	३०	गु.	७	२४	पुष्य	१६	८	सि.	२३	४९	ना.	७	२४	१७	अ.१	१०	२८	कर्क			५	४४	१९	१३	३	१४	२१	४४	बुध मार्गी ९/२१, हरियाली अमा, अगस्त प्रारम्भ,

(A) अस्त ५ घं. ३६ मि., ग्रहणवेध, (B) शुक्र कर्क में १७/५८, सूर्य सायन सिंह में ६/४२, शक श्रावण प्रारम्भ, (C) बुध पूर्व में उदित ५ घं. ४३ मि., श्रावण शिवरात्रि,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	३	३	७	३	८	२	८
७	७	२०	२	२०	२	२१	२२	२२
४०	३	३०	७	५९	५	५९	३५	३५
१५	२३	१	४	१५	४	६	२५	२५
५७	७४८	३८	३३	३	७३	४	३	३
११	५१	४	७	७	४९	९	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२ पुष्य	३ आश्वि.	२ आश्ले.	४ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]	३ [illegible]	१ [illegible]	३ [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२५ जुला.)

५ | ३ रा. | ४ सू. मं.बु.शु. | २ | ६ | ७ | १ चं. | ८ गु. | १० | १२ | ९ के. श. | ११

लोकभविष्य—शुक्र, बुध, सूर्य एवं मंगल पर वक्री गुरु की क्षीण दृष्टि है। लेकिन नीच एवं अस्त मंगल, अस्त शुक्र, वक्री बुध के साथ शनि का षडष्टक अफगानिस्तान, सीरिया, कोरिया एवं पाक में उग्रवादजन्य अपराधों से जनधनहानि के कारण बनेंगे। इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में कहीं भारी हानि हो—"विग्रहः पश्चिमे देशे षड्गयुद्धं तथा भवेत्।" भारत की प्रजा के लिए शासक प्रगतिप्रद योजनाएं कार्यान्वित करें।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़ादि, सरसों, सोना, चांदी में तेजी से लाभ रहे। २२ से २९ जुलाई तक बाजार मन्दे रहें, सावधान। लेकिन अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में कुछ तेजी रहे। ३० जुलाई को तिल, घी, लालमिर्च आदि में तेजी बने। 1 अगस्त के लगभग अनाज तेज होंगे।

कुण्डली सूर्योदय (१ अग.)

५ | बु.रा. ३ | ४ सू. चं.मं. शु. | २ | ६ | ७ | १ | ८ गु. | १० | १२ | ९ के.श. | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	२	७	३	८	२	८
१४	१२	२४	२९	२०	१०	२१	२२	२२
२१	३०	५६	४९	३३	४२	३०	१३	१३
४४		३१	२४	७	१४	५०	९	९
५७	८११	३८	२	१	७३	३	३	३
२५	५७	५	३	५२	५७	५९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४ [illegible]	३ [illegible]	३ आश्ले.	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]

आकाशलक्षण—जुलाई १८ से ३० एवं १ अगस्त को अनेकत्र वर्षा एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि सम्भव है। २२ जुलाई को यदि वर्षा हो तो शुभंकर है, अन्यथा हवा से हानि व दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। २३ से २८ जुलाई के मध्य कुछ प्रान्त प्राकृतिक आपदाग्रस्त होंगे।

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, श्रावण शुक्ल पक्ष १ | **(२ से १५ अगस्त, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।**

मंगल-शुक्र अस्त हैं। प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में होगा। सायं शनि पूर्व कपाल में और गुरु भी इससे ऊपर याम्योत्तर वृत्त से पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	गु.	५८	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३३	४०	२	शु.	४९	३१	आश्ले.	९	२१	व्य.	१३	४८	बा.	२४	९	१८	२	११	२१	सिंह	९	२१	५	४४	११	१३	३	१५	११	९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३३	३७	३	श.	४०	५१	मघा	२	२७	व.	३	४४	तै.	१५	१५	१९	३	१२	जि.१	सिंह			५	४५	११	१२	३	१६	१६	३४	सूर्य आश्ले. में २५/३०, बुध कर्क में ०/१८, मधुस्रवा (A)
						पू.फा.	५५	५०	प.	५३	५४																			
३३	३३	४	र.	३२	३७	उ.फा.	४९	५४	शि.	४४	३८	व.	६	४३	२०	४	१३	२	कन्या	९	१५	५	४६	११	११	३	१७	१४	०	भ. ६/४३ से ३२/३७ तक,
३३	३०	५	चं.	२५	२०	हस्त	४५	१	सि.	३६	१२	बा.	२५	२०	२१	५	१४	३	कन्या			५	४६	११	१०	३	१८	११	२७	शुक्र आश्ले. में ४९/२७, नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती (B)
३३	२६	६	मं.	१९	१७	चित्रा	४१	२१	सा.	२८	५१	तै.	१९	१७	२२	६	१५	४	तुला	१३	४	५	४७	११	९	३	१९	८	५५	
३३	२२	७	बु.	१४	४३	स्वाती	३९	२९	शु.	२२	४३	व.	१४	४३	२३	७	१६	५	तुला			५	४८	११	८	३	२०	६	२४	भ. १४/४३ से ४३/१५ तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
३३	१९	८	गु.	११	४५	विशा.	३९	७	शु.	१७	५५	ब.	११	४५	२४	८	१७	६	वृश्चिक	२४	३	५	४८	११	८	३	२१	३	५३	मंगल मघा सिंह में ५७/२५, श्रीदुर्गाष्टमी,
३३	१५	९	शु.	१०	२८	अनु.	४०	२२	ब्र.	१४	२७	कौ.	१०	२८	२५	९	१८	७	वृश्चिक			५	४९	११	७	३	२२	१	२३	बुध पुष्य में १५/२२,
३३	११	१०	श.	१०	४७	ज्ये.	४३	१०	ऐं.	१२	१५	ग.	१०	४७	२६	१०	१९	८	धनु	४३	१०	५	४९	११	६	३	२२	५८	५४	भ. ४१/४२ बाद,
३३	७	११	र.	१२	३५	मूल	४७	१६	वै.	११	१२	वि.	१२	३५	२७	११	२०	९	धनु			५	५०	११	५	३	२३	५६	२५	भ. १२/३५ तक, गुरु मार्गी ३३/१८, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३३	३	१२	चं.	१५	४०	पू.षा.	५२	३१	वि.	११	९	बा.	१५	४०	२८	१२	२१	१०	धनु			५	५१	११	४	३	२४	५३	५८	यूरेनस वक्री ५/१८, सोम-प्रदोष व्रत,
३३	०	१३	मं.	१९	४७	उ.षा.	५८	३८	प्री.	११	५६	तै.	१९	४७	२९	१३	२२	११	मकर	८	५७	५	५१	११	३	३	२५	५१	३१	
३२	५६	१४	बु.	२४	४४	श्रव.	६०	०	आ.	१३	२१	व.	२४	४४	३०	१४	२३	१२	मकर			५	५२	११	२	३	२६	४९	५	भ. २४/४४ से ५७/३० तक, ऋग्वेद उपाकर्म, (C)
३२	५२	१५	गु.	३०	१६	श्रव.	५	२२	सौ.	१५	१५	ब.	३०	१६	३१	१५	२४	१३	कुम्भ	३८	५७	५	५२	११	१	३	२७	४६	४१	पंचक प्रारम्भ ३८/५७, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, (D)

(A) तृतीया (संधारा तीजें), जिल्हिज मु. प्रारम्भ, (B) (देखें पृ. 14), (C) श्री सत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 14), (D) रक्षाबन्धन (राखी), श्री अमरनाथ यात्रा (क.), श्रावणी पूर्णिमा, भारत स्वतन्त्रता दिवस,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.), ८ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	३	७	३	८	२	८
२१	२४	२१	२	२०	१९	२१	२१	२१
३	२६	२३	१८	२३	२०	४	५०	५०
५३	४६	५	२५	५४	१६	५४	५४	५४
५७	७१४	३८	४७	०	७४	३	३	३
३०	१५	५	१०	३५	३	२८	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	विशा. २	आश्ले. ४	पुन. ४	ज्ये. २	आश्ले. २	पू.षा. ३	पुन. २	पू.षा. ३

कुण्डली सूर्योदय (८ अग.)

५; रा. ३; ६; ४ सू. बु.मं.शु.; २; ७ चं.; १; ८ गु.; १०; १२; ९ श.के.; ११

लोकभविष्य—गुरु वक्रगति में है। सूर्य एवं नीच मंगल-शुक्र-बुध की भारत की प्रभावराशि मकर पर पूर्ण दृष्टि है। इस शुक्ल पक्ष में तिथिक्षय से आगामी कार्तिक मास के लगभग (अक्तू., नवं.) तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होने का संकेत मिलता है—

"श्रावणे शुक्ल-पक्षे यदि जायते वेत्तिथिक्षयः।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगोपि जायते॥"

कहीं दक्षिण, छत्तीसगढ़ आदि में उग्रवादजन्य क्षति भी सम्भव है। ८ अगस्त से शनि-मंगल का नवपंचम एवं इससे पहले शनि-मंगल का षडष्टक होने से कहीं उग्रवादजन्य भारी क्षति सम्भव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—३ अगस्त को सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, घी, तिलहन, मिर्च में तेजी बनकर अचानक मन्दी बने। ८ अगस्त के लगभग धातुएं, गुड़, गेहूं, अलसी, रुई, लालमिर्च तेज रहें। ९/१० अगस्त को बाजार ऊपर-नीचे रहेंगे।

आकाशलक्षण—अगस्त ३, ५ एवं ८ से १५ अगस्त तक दार्जिलिंग, उ.खण्ड, उ.प्र., पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हि.प्र., हरियाणा आदि में बादलवाल और वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१५ अग.)

५ मं.; ३ रा.; ६; ४ सू. शु. बु.; २; ७; १; ८ गु.; १० चं.; १२; ९ श.के.; ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.), १५ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	३	७	३	८	२	८
२७	२२	३	१	२०	२७	२०	२१	२१
४६	४	४१	५५	२३	५९	४१	२८	२८
४१	४३	४१	४५	४७	०	५६	३९	३९
५७	७१४	३८	८७	०	७४	३	३	३
३७	२३	६	३७	४३	१०	१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ४	श्रव. ४	मघा ३	पुष्य ३	ज्ये. ३	आश्ले. ४	पू.षा. ३	पुन. २	पू.षा. ३

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(१६ से ३० अगस्त, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।

मंगल-शुक्र अस्त हैं। बुध भी २२ अगस्त को पूर्व में अस्त हो जायेगा। सायंकाल शनि याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (श्रावण)	अं. (अगस्त)	श. (श्रावण)	मु. (ज़िलहिज्ज)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३२	४८	१	शु.	३६	११	धनि.	१२	३५	शो.	१७	२८	बा.	३	१३	३२	१६	२५	१४	कुम्भ			५	५३	१९	०	३	२८	४४	१७	शुक्र मघा सिंह में ३६/५५,
३२	४४	२	श.	४२	१७	शत.	२०	२	अ.	१९	५२	तै.	९	१४	भा.१	१७	२६	१५	कुम्भ			५	५४	१८	५९	३	२९	४१	५५	सं. सूर्य मघा सिंह में १७/४९, मु. १५, पुण्यकाल प्रातः (A)
३२	४०	३	र.	४८	१८	पू.भा.	२७	३०	सु.	२२	१७	व.	१५	१७	२	१८	२७	१६	मीन	१०	३९	५	५४	१८	५८	४	०	३९	३४	भ. १५/१७ से ४८/१८ तक, कज्जली तृतीया,
३२	३५	४	चं.	५३	५७	उ.भा.	३४	४२	धृ.	२४	३०	ब.	२१	७	३	१९	२८	१७	मीन			५	५५	१८	५७	४	१	३७	१५	बुध आश्ले. में १४/१५, बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश (संकष्ट) (B)
३२	३१	५	मं.	५८	५७	रेव.	४१	२२	शू.	२६	११	कौ.	२६	२७	४	२०	२९	१८	मेष	४१	२२	५	५५	१८	५६	४	२	३४	५७	पंचक समाप्त ४१/२२,
३२	२७	६	बु.	६०	०	अश्वि.	४७	७	ग.	२७	२९	ग.	३०	५६	५	२१	३०	१९	मेष			५	५६	१८	५५	४	३	३२	४१	
३२	२३	६	गु.	२	५५	भर.	५१	३७	वृ.	२७	४४	व.	२	५५	६	२२	३१	२०	मेष			५	५७	१८	५४	४	४	३०	२६	भ. २/५५ से ३४/१२ तक, बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ५७ मि.
३२	१९	७	शु.	५	२९	कृत्ति.	५४	३४	ध्रु.	२६	४९	ब.	५	२९	७	२३	भा.१	२१	वृष	७	३०	५	५७	१८	५३	४	५	२८	१४	सूर्य सायन कन्या में २३/५७, शरद् ऋतु प्रारम्भ, (C)
३२	१५	८	श.	६	२५	रोहि.	५५	४४	व्या.	२४	३३	कौ.	६	२५	८	२४	२	२२	वृष			५	५८	१८	५२	४	६	२६	२	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.),
३२	१०	९	र.	५	३०	मृग.	५५	०	ह.	२०	४६	ग.	५	३०	९	२५	३	२३	मिथुन	२५	३६	५	५८	१८	५०	४	७	२३	५३	भ. ३४/४ बाद, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), श्रीगुग्गा नवमी,
३२	६	१०	चं.	२	४०	आर्द्रा	५२	२३	व.	१५	२६	वि.	२	४०	१०	२६	४	२४	मिथुन			५	५९	१८	४९	४	८	२१	४५	भ. २/४० तक, बुध मघा सिंह में २०/१८, अजा (D)
अवम		११	चं.	५७	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३२	२	१२	मं.	५१	३१	पुन.	४८	३	सि.	८	३६	कौ.	२४	४४	११	२७	५	२५	कर्क	३४	१५	५	५९	१८	४८	४	९	१९	३९	शुक्र पू.फा. में २३/००, अजा एकादशी व्रत (वै.),
३१	५७	१३	बु.	४३	४१	पुष्य	४२	१६	व्य. व.	० ५१	२५ ६	ग.	१७	३६	१२	२८	६	२६	कर्क			६	०	१८	४७	४	१०	१७	३५	भ. ४३/४१ बाद, प्रदोष व्रत,
३१	५३	१४	गु.	३४	४७	आश्ले.	३५	२५	प.	४०	५६	वि.	९	१४	१३	२९	७	२७	सिंह	३५	२५	६	१	१८	४६	४	११	१५	३३	भ. ९/१४ तक, मंगल पू.फा. में ५५/४६,
३१	४९	३०	शु.	२५	१४	मघा	२७	५४	शि.	३०	१५	च.	२५	१४	१४	३०	८	२८	सिंह			६	१	१८	४५	४	१२	१३	३२	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठौरी अमा,

(A) ६ घं. ३८ मि. बाद, (B) चतुर्थी (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (C) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी (देखें पृ 15), शक भाद्रपद प्रारम्भ, (D) एकादशी व्रत (स्मा.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	३	७	४	८	२	८
६	१०	९	२५	२०	९	२०	२१	२१
२६	५५	३२	२३	३६	७	१७	०	०
३	२०	४७	४४	५३	२	३४	२	२
५७	८४५	३८	११६	२	७४	२	३	३
५०	५७	१०	२१	२२	१९	१९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मघा २	रोहि. २	मघा ३	आश्ले. ३	ज्ये. २	मघा ३	पू.षा. ३	पुन. २	पू.षा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२४ अग.)

६ | ४ बु. | ७ | ५ सू. मं.शु. | ३ रा. | ८ गु. | २ चं. | ९ श. के. | ११ | १ | १० | १२

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में 5 शनिवार एवं 5 शुक्रवार होने से "दुर्भिक्षं शनैश्चरे ज्ञेयं प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे"- प्रमाणानुसार कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से सरकार चिन्तित रहे। कहीं सुख-शान्ति रहे। अमावस के लगभग पंचग्रही योग जनता में नानाविध रोगों से जनजीवन को त्रस्त कर सकता है।

नोट—राहु का केतु-शनि से समसप्तक एवं सूर्य-मंगल-शुक्र के एक राशिस्थ होने से कहीं भूकम्प कहीं उग्रवाद से हानि होने के योग हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में १७ से २० अगस्त तक तेल, तिलहन, सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, गुड़, शक्कर, खाण्ड में तेजी का झटका आयेगा। रुई, चांदी मन्दे रहें। २२ अगस्त के लगभग सोना तेज, तिल, घी, चीनी तेज रहे। २६ अगस्त को वायदा बाजार तेज। २९/३० अगस्त को कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार, तिलहन, घी, खाण्ड में अच्छी तेजी रहे।

आकाशलक्षण—अगस्त १६, १७, १९, २२, २३, २६, २७, २९ एवं ३० अगस्त को उ.प्र., जम्मू-कश्मीर, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा आदि में कहीं बादलवास, कहीं खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (३० अग.)

६ | ४ | ७ | ५ चं. सू.बु. शु.मं. | ३ रा. | ८ गु. | २ | ९ श. के. | ११ | १ | १० | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	४	७	४	८	२	८
१२	५	१३	७	२०	१६	२०	२०	२०
१३	५४	२१	१२	५३	३३	४	४०	४०
३२	१८	५२	४१	४५	६	५८	५८	५८
५८	११६	३८	११८	३	७४	१	३	३
१	४२	१३	४०	२६	२३	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मघा ४	मघा २	पू.फा. २	मघा ३	ज्ये. २	पू.फा. २	पू.षा. ३	पुन. २	पू.षा. ३

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (३१ अगस्त से १४ सितम्बर, सन् २०१९ ई.) 151

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(३१ अगस्त से १४ सितम्बर, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद ऋतु।

मंगल, बुध, शुक्र अस्त हैं। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और गुरु इससे पश्चिम में दिखाई देगा। ८ सितं. को सायं चन्द्र-शनि परस्पर समीपस्थ होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीख प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. ज़िलहिज्ज	चन्द्रराशि- प्रवेशकाल			चण्डांशु (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	४४	१	श.	१५	२९	पू.फा.	२०	१३	सि	११	२७	ब.	१५	२९	१५	३१	१	२९	कन्या	३३	१७	६	२	१८	४३	४	१३	११	३२	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सूर्य पू.फा. में ७/२५,
३१	४०	२	र.	६	०	उ.फा.	१२	५०	सा. शु.	८ ५८	५४ ५९	कौ.	६	०	१६	सि.१	१०	मु.१	कन्या			६	२	१८	४२	४	१४	९	३४	वक्री शनि पू.षा. २ में ५३/२१, साम उपाकर्म, गौरी तृतीया,(A)
अवम		३	र.	५७	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३१	३५	४	च.	४९	३६	हस्त	६	१३	शु.	५०	०	व.	२३	२५	१७	२	११	२	तुला	३३	२१	६	३	१८	४१	४	१५	७	३८	भ. २३/२५ से ४९/३६ तक, बुध पू.फा. में ५/१५, (B)
३१	३१	५	मं.	४३	२९	चित्रा स्वाती	० ५७	५२ ३	ब्र.	४२	१६	ब.	१६	३२	१८	३	१२	३	तुला			६	३	१८	४०	४	१६	५	४३	ऋषि पंचमी, अगस्त्य उदित,
३१	२६	६	बु.	३९	११	विशा.	५५	७	ऐं.	३६	१	कौ.	११	२०	१९	४	१३	४	वृश्चिक	४०	२५	६	४	१८	३९	४	१७	३	५०	वक्री नेप्च्यून पू.भा. १ में ४९/३९, सूर्य-षष्ठी व्रत,
३१	२२	७	गु.	३६	५१	अनु.	५५	१	वै.	३१	२२	ग.	८	१	२०	५	१४	५	वृश्चिक			६	५	१८	३७	४	१८	१	५८	भ. ३६/५१ बाद, मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत,
३१	१८	८	शु.	३६	३४	ज्ये.	५७	१०	वि.	२८	११	वि.	६	४३	२१	६	१५	६	धनु	५७	१०	६	५	१८	३६	४	१९	०	८	भ. ६/४३ तक, वक्री प्लूटो पू.षा. ४ में ३१/२२, (C)
३१	१३	९	श.	३८	१०	मूल	६०	०	प्री.	२६	४७	बा.	७	२२	२२	७	१६	७	धनु			६	६	१८	३५	४	१९	५८	१९	शुक्र उ.फा. में ७/४८, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३१	८	१०	र.	४१	२६	मूल	०	५७	आ.	२६	३४	तै.	१	४८	२३	८	१७	८	धनु			६	६	१८	३४	४	२०	५६	३२	
३१	४	११	च.	४५	५९	पू.षा.	६	११	सौ.	२७	२६	व.	१३	४२	२४	९	१८	९	मकर	२२	४३	६	७	१८	३२	४	२१	५४	४६	भ. १३/४२ से ४५/५९ तक, बुध उ.फा. में ७/१, शुक्र (D)
३०	५९	१२	मं.	५१	२७	उ.षा.	१२	३३	शो.	२९	३	ब.	१८	४३	२५	१०	१९	१०	मकर			६	७	१८	३१	४	२२	५३	१	बुध कन्या में ५७/७, श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी,
३०	५५	१३	बु.	५७	२५	श्रव.	१९	३७	अ.	३१	१	कौ.	२४	२६	२६	११	२०	११	कुम्भ	५३	२०	६	८	१८	३०	४	२३	५१	१८	पंचक प्रारम्भ ५३/२०, राहु आर्द्रा ४, केतु पू.षा. २ में (E)
३०	५०	१४	गु.	६०	०	धनि.	२७	३	सु.	३३	२९	ग.	३०	२९	२७	१२	२१	१२	कुम्भ			६	८	१८	२९	४	२४	४९	३७	अनन्त चतुर्दशी व्रत,
३०	४६	१४	शु.	३	३४	शत.	३४	३२	धृ.	३५	५१	व.	३	३४	२८	१३	२२	१३	कुम्भ			६	९	१८	२७	४	२५	४७	५७	भ. ३/३४ से ३६/४१ तक, सूर्य उ.फा. में ५१/५२, (F)
३०	४१	१५	श.	१	४१	पू.भा.	४१	५३	शू.	३८	६	ब.	१	४१	२९	१४	२३	१४	मीन	२५	४	६	१०	१८	२६	४	२६	४६	१९	प्रतिपदा का महालय श्राद्ध (देखें पृ. 15)

(A) हरितालिका तृतीया, श्री वराह जयन्ती, मुहर्रम (हि. सन् १४४१) मु. प्रारम्भ, मेला डेरा बाबा गोसाईं आणां (कुराली) पं., सितम्बर प्रारम्भ, (B) विनायक चतुर्थी, श्रीसिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध), चन्द्रास्त २१ घं. ५ मि., (C) श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (D) कन्या में ४८/५४, पद्मा एकादशी व्रत (स.), (E) ५१/३३ प्रदोषव्रत, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा का महालय श्राद्ध, (देखें पृ. 15), पितृपक्ष (महालय) प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	४	७	४	८	२	८
१९	१७	१७	२०	२१	२५	११	२०	२०
०	२४	४९	४८	२९	१४	५४	१८	१८
९	२८	३१	५९	२३	१	२०	४२	४२
५८	७७३	३८	११२	४	७४	१	३	३
११	५५	१६	५६	३८	२७	८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	ज्ये. १	पू.फा. २	पू.फा. ३	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.षा. २	पुन. १	पू.षा. ३

कुण्डली सूर्योदय (६ सितं.)

६ | ४
७ | ५ सू. मं.शु. बु. | ३ रा.
८ चं. गु. | २
९ के. श. | ११ | १
१० | १२

लोकभविष्य—पक्ष के पूर्वार्ध में चतुर्ग्रही योग है—"प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा"-प्रमाणानुसार किसी देश विशेष में आन्तरिक क्रान्ति किंवा रक्तपात सम्भव है। इस पक्ष में शनिवारी प्रतिपदा एवं शनिवारी पूर्णिमा होने से कहीं छत्रभंग, राजनैतिक हत्याकाण्ड किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त हो—

"अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद्यदि।
छत्रभंगं प्रजानाशं दुर्भिक्षं वा समादिशेत्।"

किसी प्रान्त में प्राकृतिक प्रकोप, अग्निकाण्ड, भूकम्प व दुर्भिक्ष की स्थिति भी सम्भव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—३१ अगस्त को जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, चावल, ऊनी वस्त्र, रुई, सूत तेज हों। ९ सितं. के लगभग दालवाना में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी, गुड़, खाण्ड, ऊनी, रेशमी वस्त्र एवं चावलों में तेजी का झटका आता है। यह तेजी उत्तम-मध्यम रूप से १४ सितं. तक चलेगी।

आकाशलक्षण—सितम्बर ९, १०, ११, १४ को पश्चिमी प्रान्तों में कहीं बादलचाल किंवा वायुवेग से वर्षा हो। उत्तरी भारत का तापमान घटने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१४ सितं.)

बु.शु. ६ | ४
७ | ५ सू. मं. | ३ रा.
८ गु. | २
९ श.के. | ११ चं. | १
१० | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	४	५	७	५	८	२	८
२६	२४	२२	५	२२	५	११	११	११
४६	४२	५५	२०	२	९	४७	५३	५३
२१	४१	५३	५४	५६	४७	५१	१७	१७
५८	७१३	३८	१०३	५	७४	०	३	३
२४	२१	२०	५७	५५	२९	२३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. १	पू.भा. २	पू.फा. ३	उ.फा. ३	ज्ये. २	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४	पू.षा. २

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(१५ से २८ सितम्बर, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु ।

मंगल-शुक्र अस्त रहेंगे। बुध २० सितं. को पश्चिम में उदित होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न और गुरु पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.
३०	३७	१	र.	१५	३३	उ.भा.	४८	५४	गं.	४०	६	कौ.	१५	३३
३०	३२	२	चं.	२१	१	रेव.	५५	२७	वृ.	४१	४४	ग.	२१	१
३०	२७	३	मं.	२५	५३	अश्वि.	६०	०	ध्रु.	४२	५२	वि.	२५	५३
३०	२३	४	बु.	२९	५९	अश्वि.	१	२०	व्या.	४३	२२	बा.	२९	५९
३०	१८	५	गु.	३३	४	भर.	६	२०	ह.	४३	४	कौ.	१	३१
३०	१४	६	शु.	३४	५५	कृत्ति.	१०	१५	व.	४१	४५	ग.	३	५९
३०	९	७	श.	३५	१७	रोहि.	१२	४९	सि.	३९	१६	वि.	५	६
३०	४	८	र.	३४	०	मृग.	१३	४९	व्य.	३५	२७	बा.	४	३८
३०	०	९	चं.	३०	५६	आर्द्रा	१३	६	व.	३०	१३	तै.	२	२८
२९	५५	१०	मं.	२६	७	पुन.	१०	३८	प.	२३	३५	वि.	२६	७
२९	५१	११	बु.	१९	४२	पुष्य	६	३१	शि.	१५	३७	बा.	१९	४२
२९	४६	१२	गु.	११	५५	आश्ले मघा	० ५४	५९ २०	सि. सा.	६ ५६	३० ३२	तै.	११	५५
२९	४१	१३	शु.	३	७	पू.फा.	४६	५८	शु.	४५	५८	व.	३	७
अवम		१४	शु.	५३	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	३७	३०	श.	४४	६	उ.फा.	३९	२१	शु.	३५	११	च.	१८	५४

तिथि	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितम्बर	श. भाद्रपद	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
१	३०	१५	२४	१५	मीन			६	१०	१८	२५	४	२७	४४	४३	द्वितीया श्राद्ध (देखें पृ. 15),
२	३१	१६	२५	१६	मेष	५५	२७	६	११	१८	२४	४	२८	४३	९	भ. ५३/२५ बाद, पंचक समाप्त ५५/२७, बुध हस्त में ४०/५५,(A)
३	आ.१	१७	२६	१७	मेष			६	११	१८	२२	४	२९	४१	३७	भ. २५/५३ तक, सं. सूर्य कन्या में १७/७, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
४	२	१८	२७	१८	मेष			६	१२	१८	२१	५	०	४०	७	शनि मार्गी २०/१५, चतुर्थी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
५	३	१९	२८	१९	वृष	२२	२७	६	१२	१८	२०	५	१	३८	३९	मंगल उ.फा. में ४८/४२, पंचमी श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत (देखें पृ 15)
६	४	२०	२९	२०	वृष			६	१३	१८	१८	५	२	३७	१३	भ. ३४/५५ बाद, बुध पश्चिम में उदित १८ घं. १८ मि., षष्ठी श्राद्ध,
७	५	२१	३०	२१	मिथुन	४३	३३	६	१४	१८	१७	५	३	३५	५०	भ. ५/६ तक, सप्तमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समापन,
८	६	२२	३१	२२	मिथुन			६	१४	१८	१६	५	४	३४	२९	अष्टमी श्राद्ध,
९	७	२३	आ.१	२३	कर्क	५६	२६	६	१५	१८	१५	५	५	३३	१०	भ. ५८/३३ बाद, सूर्य सायन तुला में १७/४०, दक्षिणगोल प्रारम्भ,(C)
१०	८	२४	२	२४	कर्क			६	१५	१८	१३	५	६	३१	५३	भ. २६/७ तक, बुध चित्रा में ५३/४५, दशमी श्राद्ध,
११	९	२५	३	२५	कर्क			६	१६	१८	१२	५	७	३०	३८	मंगल कन्या में ०/३७, गुरु ज्ये. ३ में २९/२७, एकादशी श्राद्ध, (D)
१२	१०	२६	४	२६	सिंह	०	५९	६	१६	१८	११	५	८	२९	२६	त्रयोदशी श्राद्ध, मघा श्राद्ध (देखें पृ 16), प्रदोष व्रत,
१३	११	२७	५	२७	सिंह			६	१७	१८	१०	५	९	२८	१६	भ. ३/७ से २८/२५ तक, सूर्य हस्त में ३०/२२, अपमृत्यु वालों (E)
१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३०	१२	२८	६	२८	कन्या	०	४	६	१८	१८	८	५	१०	२७	८	शुक्र चित्रा में ३५/३३, अमा श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात (F)

(A) (इस दिन कोई महालय श्राद्ध नहीं होगा) (देखें पृ 15), (B) प्रातः ६ घं. ३९ मि. बाद, शुक्र हस्त में ५२/००, तृतीया श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) विषुव दिन, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, ⟷ शक अश्विन प्रारम्भ, (D) द्वादशी श्राद्ध (देखें पृ 15), संन्यासियों का श्राद्ध, ⟷ इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (E) का श्राद्ध (देखें पृ.15), (F) मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, ⟷ शनैश्चरी अमा, महालय (पितृपक्ष) समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	४	५	७	५	८	२	८
४	३	२८	१८	२२	१५	११	११	११
३४	१२	२	४२	५४	५	४७	२७	२७
३०	३७	५८	४६	२३	५६	३३	५१	५१
५८	८०३	३८	९५	७	७४	०	३	३
४१	१७	२७	३९	६	२३	२५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ३	मृग. ३	उ.फा. १	हस्त ३	ज्ये. १	हस्त १	पू.षा. १	आर्द्रा ४	पू.षा. १

कुण्डली सूर्योदय (२२ सित.)

६ सू. बु. शु.; ५ मं.; ४; ३ रा. चं.; २; १; १२; ११; १०; ९ श. के.; ८ गु.; ७

लोकभविष्य—सूर्य संक्रान्ति के लगभग ही शनि का मार्गी होना, पक्ष के उत्तरार्ध में शनि-मंगल की परस्पर दशम-चतुर्थ दृष्टि, सूर्य- शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि कहीं धार्मिक एवं साम्प्रदायिक उन्माद अशान्ति का कारण बनेंगे। इस समय सरकार को जनमन को जीतने का प्रयास भी कठिन होगा। राजनैतिक पार्टियां अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए देशहित का चिन्तन भूल जायेंगी। इस मास में बुध का उदय कहीं तूफान, प्राकृतिक प्रकोप से हानि करे—"नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में अनाज कुछ मन्दे रहें। लेकिन लगभग १७ से १९ सितम्बर के मध्य सुपारी, नारियल, सरसों, तिल, तेल, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, लालमिर्च, हींग एवं शेयर बाजारों में उठापटक से तेजी का उछाला आये।

नोट—यदि इन दिनों १७ सितं. के लगभग अनाज मन्दे हों, तो स्टॉक करें, आगे लाभ होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२८ सित.)

६ सू. मं. बु. शु.; ५ चं.; ४; ३ रा.; २; १; १२; ११; १०; ९ के. श.; ८ गु.; ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	५	७	५	८	२	८
१०	२९	१	२८	२३	२२	११	११	११
२७	२९	५३	२	३९	३३	५१	८	८
९	०	५४	२५	३	१९	२८	४७	४७
५८	११५	३८	८९	७	७४	१	३	३
५४	१२	३२	५९	५५	३५	०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
१	१	१	१	३	४	१	४	१

आकाशलक्षण—सितं. १६ से २० तक एवं २४, २५, २७ को पश्चिमी प्रान्तों में बादलचाल कहीं खण्डवृष्टि हो। पर्वतीय भूभाग पर यदाकदा वर्षा एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। आश्विन अमा शनिवारी है, अतः किसी प्रान्त विशेष में अकाल पड़े—"आश्विनस्याप्यमावस्यां शनिवारो भवेद्यदि। मध्यमं वर्षमादेश्यं दुष्काल: खण्डमण्डले ॥"

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(१९ सितम्बर से १३ अक्तूबर, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

पक्षारम्भ में ही शुक्र पश्चिम में दृश्य हो जायेगा। मंगल अस्त है। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में, गुरु पश्चिम कपाल में और बुध पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	तारीखें अं. सितम्बर	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	३२	१	र.	३४	४८	हस्त	३२	०	ब्र	२४	३५	किं.	९	२७	१३	२९	७	२९	तुला	५८	३५	६	१८	१८	७	५	११	२६	१	बुध तुला में १६/३४, शुक्र पश्चिम में उदित १८ घं. ७ मि.,(A)
२९	२७	२	चं.	२६	१६	चित्रा	२५	२४	ऐं.	१४	३३	बा.	०	३२	१४	३०	८	३०	तुला			६	१९	१८	६	५	१२	२४	५७	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२९	२३	३	मं.	१८	५८	स्वा.	२०	२	वै. वि.	५ ५७	२७ ३९	ग.	१८	५८	१५	अ.१	९	स.१	तुला			६	१९	१८	४	५	१३	२३	५५	भ. ४६/९ बाद, सफर मु. प्रारम्भ, अक्तूबर प्रारम्भ,
२९	१८	४	बु.	१३	१९	विशा.	१६	१८	प्री.	५१	२१	वि.	१३	१९	१६	२	१०	२	वृश्चिक	२	५	६	२०	१८	३	५	१४	२२	५५	भ. १३/१९ तक, शुक्र बाल्य समाप्त १८ घं. ७ मि., (B)
२९	१४	५	गु.	९	३७	अनु.	१४	३२	आ.	४६	४३	बा.	९	३७	१७	३	११	३	वृश्चिक			६	२१	१८	२	५	१५	२१	५७	बुध स्वाती में ५२/७, शुक्र तुला में ५७/१२, प्लूटो मार्गी १४/२५,
२९	९	६	शु.	८	४	ज्येष्ठा	१४	५४	सौ.	४३	४९	तै.	८	४	१८	४	१२	४	धनु	१४	५४	६	२१	१८	१	५	१६	२१	०	शनि पू.षा. ३ में ३८/१२, सरस्वती आवाहन,
२९	४	७	श.	८	४१	मूल	१७	२०	शो.	४२	३३	व.	८	४१	१९	५	१३	५	धनु			६	२२	१८	०	५	१७	२०	६	भ. ८/४१ से ४०/०० तक, सरस्वती पूजन,
२९	०	८	र.	११	१९	पू.षा.	२१	४१	अ.	४२	४०	ब.	११	१९	२०	६	१४	६	मकर	३८	४	६	२२	१७	५८	५	१८	१९	१३	सरस्वती के लिए बलिदान, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, (C)
२८	५५	९	चं.	१५	३६	उ.षा.	२७	३४	सु.	४३	५४	कौ.	१५	३६	२१	७	१५	७	मकर			६	२३	१७	५७	५	१९	१८	२२	सरस्वती विसर्जन (देखें पृ. 16), महानवमी बलिदान के लिए,(D)
२८	५१	१०	मं.	२१	५	श्रव.	३४	२९	धृ.	४५	५१	ग.	२१	५	२२	८	१६	८	मकर			६	२४	१७	५६	५	२०	१७	३२	भ. ५४/१० बाद, नवरात्र पारणा, विजयादशमी (दशहरा), (E)
२८	४६	११	बु.	२७	१५	धनि.	४१	५८	शू.	४८	१०	वि.	२७	१५	२३	९	१७	९	कुम्भ	८	११	६	२४	१७	५५	५	२१	१६	४५	भ. २७/१५ तक, पंचक प्रारम्भ ८/११, शुक्र स्वाती में (F)
२८	४१	१२	गु.	३३	३६	शत.	४९	३१	गं.	५०	३१	ब.	०	२५	२४	१०	१८	१०	कुम्भ			६	२५	१७	५४	५	२२	१५	५९	मंगल हस्त में ३२/५७,
२८	३७	१३	शु.	३९	४५	पू.भा.	५६	४८	वृ.	५२	३९	कौ.	६	४०	२५	११	१९	११	मीन	४०	१	६	२६	१७	५२	५	२३	१५	१५	सूर्य चित्रा में २/२८, प्रदोष व्रत,
२८	३२	१४	श.	४५	२५	उ.भा.	६०	०	ध्रु.	५४	२३	ग.	१२	३५	२६	१२	२०	१२	मीन			६	२६	१७	५१	५	२४	१४	३२	भ. ४५/२५ बाद,
२८	२८	१५	र.	५०	२६	उ.भा.	३	३३	व्या.	५५	३६	वि.	१७	५५	२७	१३	२१	१३	मीन			६	२७	१७	५०	५	२५	१३	५२	भ. १७/५५ तक, बुध विशा. में ५८/३०, शरत् पूर्णिमा,(G)

शुक्र उदित २९ सितं.

(A) नाना-नानी का श्राद्ध, शारदीय (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, (B) उपांगललिता व्रत, जन्मदिन श्री महात्मा गांधी, (C) महानवमी उपवासार्थ (देखें पृ. 16), (D) नवरात्र समाप्त, (E) (श्रवण योग), आयुध पूजन, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, श्री माध्वाचार्य जयन्ती, (F) १८/४९, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप, (G) कोजागारी (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा), महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,कार्तिकस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	६	७	६	८	२	८
१८	२१	७	९	२४	२	२०	१८	१८
११	४५	२	३५	४६	३०	२	४३	४३
१४	४७	३५	३६	५	२	१३	२१	२१
५९	७३४	३८	८२	८	७४	१	३	३
९	४१	३१	९	५७	२५	४७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ हस्त	३ पू.षा.	४ उ.फा.	१ स्वाती	३ ज्ये.	३ चित्रा	३ पू.षा.	४ आर्द्रा	२ पू.षा.

कुण्डली सूर्योदय (६ अक्तू.)

७ शु. बु. | ८ गु. | ६ मं. सू. | ५ | ४ | ९ श. चं. के. | ३ रा. | १० | १२ | २ | ११ | १

लोकभविष्य—शनि-मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध चल रहा है। तृतीया एवं दशमी को मंगलवार, सप्तमी को शनिवार होने से ग्रहस्थिति विश्व में भारी अशान्ति का वातावरण बना सकती है। कुछ देश युद्धपरक वातावरण बनायेंगे। रसायनिक परीक्षण नानाविध बीमारियों को जन्म देंगे। कहीं अग्निकाण्ड से हानि, कहीं भूकम्प आदि से भी जन-धनहानि बने—"आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम-शनैश्चरौ। तदात्वग्निभयं भूम्यामन्नादीनां महर्घता॥" किंच—"आश्विने दशमी भौमे भूम्यां व्याधिर्विशेषतः।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२९ सितं. को रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, सूत, सण, चांदी, तिल, चावल तेज होकर मन्दे हों। ३ से ७ अक्तूबर तक सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, जीरा, जौ, ज्वार, बाजरा तेज रहें। १०, ११ अक्तूबर को भी अनाज, सोना-चांदी, घी आदि तेज रहें, बाद में मन्दे।

आकाशलक्षण—सितं. २९, ३०, अक्तूबर ३, ४, ७, ९, १०, ११ एवं १३ को आसाम, बंगाल एवं मं.प्र., उ.प्र. के कुछ भागों में पेयजल की समस्या आ सकती है। यहां बादल कहीं खण्डवृष्टि करें। २२ से ३० अक्तूबर के मध्य कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (१३ अक्तू.)

शु. बु. ७ | ८ गु. | ६ मं. सू. | ५ | ४ | ९ के. श. | ३ रा. | १० | १२ चं. | २ | ११ | १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	५	६	७	६	८	२	८
२५	१५	११	१८	२५	११	२०	१८	१८
१३	२८	३३	४५	५१	१२	१६	२१	२१
५४	४३	२५	४७	८	५	४०	६	६
५९	७२४	३८	७३	९	७४	२	३	३
२२	३६	४५	१२	४५	३४	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ चित्रा	४ उ.भा.	१ हस्त	४ स्वाती	३ ज्ये.	२ स्वाती	३ पू.षा.	४ आर्द्रा	२ पू.षा.

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

(१४ से २८ अक्तूबर, सन् २०१९ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

२२ अक्तू. को मंगल पूर्व में उदित हो जायेगा। साथं शनि पश्चिम कपाल में, गुरु इससे नीचे और बुध शुक्र इससे नीचे क्षितिज की ओर दिखाई देंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (आश्विन)	तारीखें अं. (अक्तूबर)	तारीखें श. (आश्विन)	तारीखें मु. (सफ़र)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२८	२३	१	चं.	५४	४२	रेव.	९	४०	ह.	५६	१५	बा.	२२	३४	२८	१४	२२	१४	मेष	९	४०	६	२८	१७	४९	५	२६	१३	१४	पंचक समाप्त ९/४०,
२८	१९	२	मं.	५८	११	अश्वि.	१५	३	व.	५६	१७	तै.	२६	२६	२९	१५	२३	१५	मेष			६	२८	१७	४८	५	२७	१२	३८	
२८	१४	३	बु.	६०	०	भर.	१९	३९	सि.	५५	४०	व.	२९	२९	३०	१६	२४	१६	वृष	३५	४१	६	२९	१७	४७	५	२८	१२	४	भ. २९/२९ बाद,
२८	१०	३	गु.	०	४७	कृत्ति.	२३	२४	व्य.	५४	१८	वि.	०	४७	का.१	१७	२५	१७	वृष			६	३०	१७	४६	५	२९	११	३२	भ. ०/४७ तक, सं.सूर्य तुला में ४६/१९, मु. ४५, पुण्यकाल (A)
२८	५	४	शु.	२	२७	रोहि.	२६	१०	व.	५२	८	बा.	२	२७	२	१८	२६	१८	मिथुन	५७	११	६	३०	१७	४४	६	०	११	२	
२८	१	५	श.	३	१	मृग.	२७	५२	प.	४९	३	तै.	३	१	३	१९	२७	१९	मिथुन			६	३१	१७	४३	६	१	१०	३५	
२७	५६	६	र.	२	२७	आर्द्रा	२८	२०	शि.	४४	५६	व.	२	२७	४	२०	२८	२०	मिथुन			६	३२	१७	४२	६	२	१०	१०	भ. २/२७ से ३१/२९ तक, शुक्र विशा. में २/१३,
२७	५२	७	च.	०	३१	पुन.	२७	२८	सि.	३९	४३	ब.	०	३१	५	२१	२९	२१	कर्क	१२	४८	६	३२	१७	४१	६	३	९	४७	अहोई अष्टमी (पंजाब),
अवम		८	चं.	५७	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२७	४८	९	मं.	५२	२८	पुष्य	२५	१२	सा.	३३	२३	तै.	२४	५०	६	२२	३०	२२	कर्क			६	३३	१७	४०	६	४	९	२७	मंगल पूर्व में उदित ६ घं. ३३ मि.,
२७	४३	१०	बु.	४६	२७	आश्ले.	२१	३६	शु.	२५	५७	व.	११	२७	७	२३	का.१	२३	सिंह	२१	३६	६	३४	१७	३९	६	५	९	९	भ. १९/२७ से ४६/२७ तक, बुध वृश्चिक में ४२/००,(B)
२७	३९	११	गु.	३९	११	मघा	१६	४७	शु.	१७	३२	ब.	१२	५३	८	२४	२	२४	सिंह			६	३५	१७	३८	६	६	८	५३	सूर्य स्वाती में २८/३०, रमा एकादशी व्रत (स.),
२७	३५	१२	शु.	३१	२२	पू.फा.	११	१	ब्र. ऐं.	८ ५८	२० ३९	कौ.	५	२०	९	२५	३	२५	कन्या	२४	२६	६	३५	१७	३७	६	७	८	३९	गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत,
२७	३०	१३	श.	२२	५५	उ.फा. हस्त	४ ५८	३७ २	वै.	४८	४२	व.	२२	५५	१०	२६	४	२६	कन्या			६	३६	१७	३६	६	८	८	२८	भ. २२/५५ से ४८/४१ तक, धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान् (C)
२७	२६	१४	र.	१४	२५	चित्रा	५१	३८	वि.	३८	५२	श.	१४	२५	११	२७	५	२७	तुला	२४	४३	६	३७	१७	३५	६	९	८	१८	नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी(D)
२७	२२	३०	चं.	६	१६	स्वाती	४५	५६	प्री.	२९	३०	ना.	६	१६	१२	२८	६	२८	तुला			६	३८	१७	३४	६	१०	८	११	शुक्र वृश्चिक में ४/४३, गोवर्धन पूजा, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, (E)

(A) अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु ज्ये. ४ में ५२/३, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ), (चन्द्रोदय देखें पृ.11), (B) सूर्य सायन वृश्चिक में ४०/४०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ, (C) जयन्ती (उ.भा.), यमार्थ दीपदान, ←——→ (D) पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (E) अन्नकूट, सोमवती अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	५	६	७	६	८	२	८
३	२६	१६	२७	२७	२१	२०	१७	१७
९	३१	४३	३६	१२	८	३८	५५	५५
४९	२	५७	५०	२	३८	४३	४०	४०
५९	८२१	३८	५५	१०	७४	३	३	३
४०	०	५४	१७	३५	३४	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
चित्रा	[illegible]	हस्त	विशा.	[illegible]	विशा.	[illegible]	आर्द्रा	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२१ अक्तू.)

७ बु. सू. शु. | ८ गु. | ६ मं. | ५ | ४ | ३ रा. चं. | २ | १ | १२ | ११ | १० | ९ श. के.

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच मंगल एवं पांच बुधवार हैं। यद्यपि पक्ष के पूर्वार्ध में सूर्य, शुक्र, बुध एकत्र होने से धान्य की फसलों को हानि होने से महंगाई की भयंकर मार रहेगी, पुनरपि भारत में शासनतन्त्र प्रजा हितार्थ जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता करायेगा—

"एक राशिंगता ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः।
सर्वधान्य-महर्घत्वं तथा भयविवर्धनाः॥"

पश्चिमी देशों किंवा भारत के उत्तर-दक्षिणी प्रान्तों में वातावरण अशान्त रहे। कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१८ से १९ अक्तूबर तक गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, सुपारी, मजीठ आदि तेज रहें। २० से २३ अक्तू. के मध्य चांदी, सोना, रुई, उड़द, तिलहन, घी तेज रहें, अनाज मन्दे रहें। २४ अक्तू. से २७ अक्तू. तक सोना, चांदी कुछ मन्दे, रुई, रेशम, घी, तेल, तिलहन, हींग तेज हों। २८ अक्तू. को प्रत्येक बाजार में मन्दी का रुख रहे।

आकाशलक्षण—१७ से २० अक्तूबर एवं २२, २४, २८ अक्तूबर को आसाम, बंगाल एवं उ.प्र. के कुछ भागों में खण्डवृष्टि हो। कश्मीर, हि.प्र. एवं उत्तराखण्ड में कहीं हिमपात हो। शनि-मंगल एवं शनि-राहु की स्थिति कहीं तूफान, भूकम्प तथा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देती है।

कुण्डली सूर्योदय (२८ अक्तू.)

७ सू. चं. शु. | ८ बु. गु. | ६ मं. | ५ | ४ | ३ रा. | २ | १ | १२ | ११ | १० | ९ श. के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	५	७	७	६	८	२	८
१०	८	२१	२	२८	२९	२१	१७	१७
८	२	१६	४०	२८	५०	२	३३	३३
१३	३९	४०	९	९	३८	४०	२४	२४
५९	८८१	३९	२३	११	७४	३	३	३
५५	१२	२	८	१३	३४	४५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ — (२९ अक्तूबर से १२ नवम्बर, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

५ नवं. को बुध पश्चिम में अस्त हो जायेगा। प्रातः मंगल पूर्व क्षितिज में होगा। सायं शनि पश्चिम कपाल में, इससे नीचे गुरु और शुक्र पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	अक्तूबर	कार्तिक	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५८	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२७	१७	२	मं.	५२	५३	विशा.	४१	२१	आ.	२०	५७	बा.	२५	५५	१३	२९	७	२९	वृश्चिक	२७	२०	६	३८	१७	३३	६	११	८	५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध अनु. में ५८/५५, प्लूटो उ.षा. १ में (A)
२७	१३	३	बु.	४८	२५	अनु.	३८	१८	सौ.	१३	३३	तै.	२०	३९	१४	३०	८	र.१	वृश्चिक			६	३९	१७	३२	६	१२	८	२	शुक्र अनु. में ४५/३४, रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२७	९	४	गु.	४५	५२	ज्येष्ठा	३७	७	शो.	७	३४	व.	१७	८	१५	३१	९	२	धनु	३७	७	६	४०	१७	३२	६	१३	८	०	भ. १७/८ से ४५/५२ तक, मंगल चित्रा में ६/३१, (B)
२७	५	५	शु.	४५	२५	मूल	३७	५७	अ.	३	९	ब.	१५	३८	१६	न.१	१०	३	धनु			६	४१	१७	३१	६	१४	८	०	ज्ञान पंचमी (जैन), नवम्बर प्रारम्भ,
२७	१	६	श.	४७	३	पू.षा.	४०	४८	सु. धृ.	० ५९	२४ १३	कौ.	१६	१४	१७	२	११	४	मकर	५६	५०	६	४२	१७	३०	६	१५	८	२	वक्री बुध विशा. में ७/३३, सूर्य-षष्ठी (छठ-बिहार),
२६	५७	७	र.	५०	३४	उ.षा.	४५	३०	शू.	५९	२४	ग.	१८	४८	१८	३	१२	५	मकर			६	४२	१७	२९	६	१६	८	६	भ. ५०/३४ बाद,
२६	५३	८	चं.	५५	३४	श्रव.	५१	३९	गं.	६०	०	वि.	२३	४	१९	४	१३	६	मकर			६	४३	१७	२८	६	१७	८	११	भ. २३/४ तक, गुरु मूल १ धनु में ५६/३०, गोपाष्टमी,
२६	४९	९	मं.	६०	०	धनि.	५८	४५	गं.	०	४०	बा.	२८	३३	२०	५	१४	७	कुम्भ	२५	८	६	४४	१७	२८	६	१८	८	१८	पंचक प्रारम्भ २५/८, बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. २७ मि.,(C)
२६	४५	९	बु.	१	३३	शत.	६०	०	वृ.	२	३५	कौ.	१	३३	२१	६	१५	८	कुम्भ			६	४५	१७	२७	६	१९	८	२६	सूर्य विशा. में ४८/१५,
२६	४१	१०	गु.	७	५२	शत.	६	१३	ध्रु.	४	४९	ग.	७	५२	२२	७	१६	९	मीन	५६	४७	६	४६	१७	२६	६	२०	८	३६	भ. ४१/०० बाद, वक्री बुध तुला में २१/५७,
२६	३७	११	शु.	१४	४	पू.भा.	१३	३३	व्या.	६	५५	वि.	१४	४	२३	८	१७	१०	मीन			६	४६	१७	२५	६	२१	८	४७	भ. १४/४ तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), (D)
२६	३३	१२	श.	१९	४०	उ.भा.	२०	२०	ह.	८	३७	बा.	१९	४०	२४	९	१८	११	मीन			६	४७	१७	२५	६	२२	९	०	वक्री यूरेनस अश्वि. ३ में ३/४३, शनिप्रदोष व्रत, (E)
२६	३०	१३	र.	२४	२२	रेव.	२६	१५	व.	९	४०	तै.	२४	२२	२५	१०	१९	१२	मेष	२६	१५	६	४८	१७	२४	६	२३	९	१४	पंचक समाप्त २६/१५, मंगल तुला में १८/५५, शुक्र ज्ये. (F)
२६	२६	१४	चं.	२८	१	अश्वि.	३१	१०	सि.	९	५६	व.	२८	१	२६	११	२०	१३	मेष			६	४९	१७	२३	६	२४	९	३०	भ. २८/१ से ५९/१७ तक,
२६	२२	१५	मं.	३०	३५	भर.	३५	२	व्य.	९	२४	ब.	३०	३५	२७	१२	२१	१४	वृष	५०	५१	६	५०	१७	२३	६	२५	९	४८	श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानक (G)

(A) १७/५१, यम द्वितीया (भाई दूज), विश्वकर्मा दिवस, (B) बुध वक्री ३६/१५, (C) अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, (D) हरिप्रबोधोत्सव, भीष्म पंचक प्रारम्भ, (E) चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, तुलसी विवाह, (F) में २९/१५, वैकुण्ठ चतुर्दशी, (G) जयन्ती, त्रिपुरोत्सव, भीष्म पंचक समाप्त, मेला पुष्करराज (राज.), कार्तिक स्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १७ ८ १३	९ १२ ११ ५६	५ २५ ५० १७	७ २ ४० ५०	७ २९ ४८ १८	७ ८ ३२ ३२	८ २१ ३० ४१	२ १७ ११ ९	८ १७ ११ ९
६० ७	७२३ ३०	३९ ९	३५ २३	११ ४८	७४ ३३	४ ११	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वाती ४	श्रव. १	चित्रा १	विशा. ४	ज्ये. ४	अनु. २	पू.षा. ३	आर्द्रा ४	पू.षा. २

कुण्डली सूर्योदय (४ नवं.)

- ७ सू.
- ८ बु.गु.शु.
- ९ श. के.
- १० चं.
- ११
- १२
- १
- २
- ३ रा.
- ४
- ५
- ६ मं.

लोकभविष्य—धनु राशिस्थ शुक्र-शनि-केतु पर मंगल की दृष्टि है। यह ग्रहस्थिति कहीं रोगोपद्रव तथा अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भयकारक है—

"यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्न-परिक्षयः॥"

धनु राशिस्थ गुरु-शनि से महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, कुछ प्रान्त अकालग्रस्त रहेंगे—"धनुराशिस्थिते जीवे गोधूमादि-महर्घता।" म.प्र., उत्तर प्रदेश का कुछ भाग एवं बिहार आदि में कहीं वर्षा के अभाव से शासनतन्त्र चिन्तित रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में ही कुलथ, मूंग, मोठ, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन में उठापटक के बाद जोरदार मन्दी का झटका आयेगा। ३१ अक्तूबर को चना, गेहूं, चावल, सोना, चांदी, तांबा तेज रहें। ६ एवं १० नवं. को सभी बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आयेंगे, व्यापारी सावधान।

आकाशलक्षण—२९ से ३१ अक्तूबर एवं ५, ६, १०, ११ नवम्बर को उ. भारत में भयंकर शीत लहर चलेगी। हि.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड आदि में अनेकत्र भारी हिमपात होगा। अक्तू. २९ से ११ नवं. के मध्य प्राकृतिक प्रकोप से कहीं हानि के योग बनेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (१२ नवं.)

- ७ सू.मं.बु.
- ८ शु.
- ९ गु.के.श
- १०
- ११
- १२
- १ चं.
- २
- ३ रा.
- ४
- ५
- ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २५ ९ ५०	० १८ ३८ १२	६ १ ४ ३	६ २४ १९ १८	८ १ २४ ३७	७ १८ २८ ३८	८ २२ ७ १८	२ १६ ४५ ४३	८ १६ ४५ ४३
६० १९	७५५ ३४	३९ १८	७४ २४	१२ २०	७४ २९	५ ५४	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. २	भर. २	चित्रा ३	विशा. २	मूल १	ज्ये. १	पू.षा. ३	आर्द्रा ४	पू.षा. २

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(१३ से २६ नवम्बर, सन् २०१९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

१८ नवं. को बुध पूर्व में उदित होगा। प्रातः मंगल पूर्व में होगा। सायं शनि पश्चिम कपाल में और गुरु, शुक्र पश्चिम क्षितिज में दिखाई देंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	नवम्बर	कार्तिक	र.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१९	१	बु.	३२	६	कृत्ति.	३७	५४	व.	८	१	बा.	१	२०	२८	१३	२२	१५	वृष			६	५१	१७	२२	६	२६	१०	७	राहु आर्द्रा ३, केतु पू.षा. १ में ४४/३०, पद्मक योग (A)
२६	१५	२	गु.	३२	३८	रोहि.	३९	४८	प.	५	५२	तै.	२	२२	२९	१४	२३	१६	वृष			६	५१	१७	२२	६	२७	१०	२८	बाल दिवस,
२६	१२	३	शु.	३२	१३	मृग.	४०	४८	शि. सि.	२ ५९	५८ २३	व.	२	२५	३०	१५	२४	१७	मिथुन	१०	२३	६	५२	१७	२१	६	२८	१०	५१	भ. २/२५ से ३२/१३ तक, वक्री बुध स्वाती में ३५/५४,
२६	८	४	श.	३०	५४	आर्द्रा	४०	५५	सा.	५५	४	ब.	१	३२	मा.१	१६	२५	१८	मिथुन			६	५३	१७	२१	६	२९	११	१५	सं. सूर्य वृश्चिक में ४४/५२, मु. ४५, पुण्यकाल अगले दिन (B)
२६	५	५	र.	२८	४२	पुन.	४०	१०	शु.	५०	३	तै.	२८	४२	२	१७	२६	१९	कर्क	२५	२६	६	५४	१७	२०	७	०	११	४२	
२६	२	६	चं.	२५	३६	पुष्य	३८	३४	शु.	४४	१९	व.	२५	३६	३	१८	२७	२०	कर्क			६	५५	१७	२०	७	१	१२	१०	भ. २५/३६ से ५३/३९ तक, बुध पूर्व में उदित ६ घं. ५५ मि.,
२५	५९	७	मं.	२१	३९	आश्ले.	३६	५	ब्र.	३७	५५	ब.	२१	३९	४	१९	२८	२१	सिंह	३६	५	६	५६	१७	१९	७	२	१२	४१	श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
२५	५५	८	बु.	१६	५१	मघा	३२	४८	ऐं.	३०	५०	कौ.	१६	५१	५	२०	२९	२२	सिंह			६	५७	१७	१९	७	३	१३	१३	सूर्य अनु. में ३/४, मंगल स्वाती में २८/७, बुध मार्गी ४४/२२,
२५	५२	९	गु.	११	१७	पू.फा.	२८	४८	वै.	२३	१०	ग.	११	१७	६	२१	३०	२३	कन्या	४२	४३	६	५७	१७	१८	७	४	१३	४६	भ. ३८/१२ बाद, गुरु मूल २ में ६/२२, शुक्र मूल धनु (C)
२५	४९	१०	शु.	५	७	उ.फा.	२४	१५	वि.	१५	२	वि.	५	७	७	२२	मा.१	२४	कन्या			६	५८	१७	१८	७	५	१४	२२	भ. ५/७ तक, सूर्य सायन धनु में ३३/४५, उत्पन्ना (D)
अवम		११	शु.	५८	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५	४६	१२	श.	५१	४९	हस्त	१९	२२	प्री. आ.	६ ५८	३६ ७	कौ.	२५	११	८	२३	२	२५	तुला	४६	५४	६	५९	१७	१८	७	६	१४	५९	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी,
२५	४४	१३	र.	४५	१४	चित्रा	१४	२७	सौ.	४९	४४	ग.	१८	३१	९	२४	३	२६	तुला			७	०	१७	१७	७	७	१५	३८	भ. ४५/१४ बाद, प्रदोष व्रत,
२५	४१	१४	चं.	३९	८	स्वाती	९	५०	शो.	४१	४७	वि.	१२	११	१०	२५	४	२७	वृश्चिक	५१	४७	७	१	१७	१७	७	८	१६	१९	भ. १२/११ तक, शनि पू.षा. ४ में ३७/४६,
२५	३८	३०	मं.	३३	५३	विशा.	५	५१	अ.	३४	३२	च.	६	३०	११	२६	५	२८	वृश्चिक			७	२	१७	१७	७	९	१७	१	बुध विशा. में २२/१५, भौमवती अमा,

(A) (पुष्कर, राजस्थान) (देखें पृ. 16), (B) मध्याह्न तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) में १३/३३, (D) एकादशी व्रत (स्मा.), शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	६	६	८	७	८	२	८
३	४	६	१७	३	२८	२२	१६	१६
१३	४५	११	३१	५	२४	४८	२०	२०
१५	२२	६	०	३	१७	२१	१७	१७
६०	८५०	३१	३	१२	७४	५	३	३
३४	१	२१	२०	४१	२६	२५	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. ४	मघा २	चित्रा ४	स्वाती ४	मूल १	ज्ये. ४	पू.षा. ३	आर्द्रा ३	पू.षा. १

कुण्डली सूर्योदय (२० नवं.)

गु.के.श. ९, १०, ८ सू. शु., मं.बु. ७, ६, ११, ५ चं., १२, २, ४, १, ३ रा.

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच गुरु और पांच बुधवार हैं। अतः पश्चिमी देशों में कहीं युद्धभय एवं घातक शस्त्रों से जन-धनहानि हो—**"विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।"** व्यय स्थान में बुध की स्थिति महंगाई करेगी, लेकिन शासन जनजीवनोपयोग वस्तुओं को उपलब्ध करायेगा। राजनैतिक दलों में समीकरण बदलेंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में अनाज, अलसी, सरसों आदि तिलहन, घी एवं रुई में अच्छी तेजी बने। १७, १८ नवं. को बाजार मन्दे रहें। २०, २१ को जौ, चना, गेहूं, तिल, तेल तेज रहें। चांदी, तांबा, सोने में घटाबढ़ी, रुई एवं शेयरों में तेजी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२६ नवं.)

गु.शु.के.श. ९, १०, ८ सू.चं., ७ बु. मं., ६, ११, ५, १२, २, ४, १, ३ रा.

आकाशलक्षण—२१, २२, २६ नवम्बर को उ.भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। १३, १७ नवम्बर को कहीं वायुवेग के साथ राजस्थान, उ.प्रदेश आदि में कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड में भयंकर हिमपात एवं धुन्ध से यातायात बाधित होगा।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	६	८	८	८	२	८
९	१	१०	१९	४	५	२३	१६	१६
१७	२	१६	३८	२२	५०	२१	१	१
३	४८	११	२४	४२	४६	४६	१२	१२
६०	८४३	३९	४९	१३	७४	५	३	३
४४	३५	३७	३९	६	२४	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. २	विशा. ४	स्वाती १	स्वाती ४	मूल २	मूल २	पू.षा. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(२७ नवं. से १२ दिसम्बर, सन् २०१९ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

प्रातः मंगल-बुध पूर्व में क्षितिज के समीप होंगे। सायं गुरु पश्चिम-क्षितिजासन्न तथा शुक्र-शनि उत्तरोत्तर क्षितिज से ऊपर उठे होंगे। २८ नवं. को सायं चन्द्रदर्शन के समय चन्द्र, गुरु, शुक्र परस्पर समीप दिखाई देंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३५	१	बु.	२९	५०	अनु.	२	५३	सु.	२८	१४	किं.	१	५१	१२	२७	६	२९	वृश्चिक			७	३	१७	१७	७	१०	१७	४४	नेप्च्यून मार्गी २७/४०,
२५	३३	२	गु.	२७	१७	ज्येष्ठा	१	१५	धृ.	२३	६	कौ.	२७	१७	१३	२८	७	३०	धनु	१	१५	७	३	१७	१७	७	११	१८	२९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२५	३०	३	शु.	२६	२८	मूल	१	१२	शू.	११	११	ग.	२६	२८	१४	२९	८	र.१	धनु			७	४	१७	१६	७	१२	१९	१५	भ. ५७/०० बाद, रवि-उल-सानी मु. प्रारम्भ,
२५	२८	४	श.	२७	२१	पू.षा.	२	५५	गं.	१६	५७	वि.	२७	२१	१५	३०	९	२	मकर	१८	३९	७	५	१७	१६	७	१३	२०	३	भ. २७/२१ तक,
२५	२६	५	र.	३०	१७	उ.षा.	६	२४	वृ.	१५	५९	बा.	३०	१७	१६	दि.१	१०	३	मकर			७	६	१७	१६	७	१४	२०	५१	शुक्र पू.षा. में ५८/२७, दिसम्बर प्रारम्भ, बलिदान दिन (A)
२५	२४	६	चं.	३४	४१	श्रव.	११	२१	ध्रु.	१६	१५	कौ.	२	२१	१७	२	११	४	कुम्भ	४४	३४	७	७	१७	१६	७	१५	२१	४१	पंचक प्रारम्भ ४४/३४, गुह षष्ठी, स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
२५	२२	७	मं.	४०	१५	धनि.	१७	५१	व्या.	१७	२९	ग.	७	२८	१८	३	१२	५	कुम्भ			७	८	१७	१६	७	१६	२२	३१	भ. ४०/१५ बाद, सूर्य ज्ये. में १३/७, मित्र सप्तमी,
२५	२०	८	बु.	४६	२९	शत.	२५	१	ह.	१९	२१	वि.	१३	२२	१९	४	१३	६	कुम्भ			७	८	१७	१६	७	१७	२३	२२	भ. १३/२२ तक,
२५	१८	९	गु.	५२	४५	पू.भा.	३२	२४	व.	२१	२६	बा.	१९	३७	२०	५	१४	७	मीन	१५	३४	७	९	१७	१६	७	१८	२४	१४	बुध वृश्चिक में ८/२५,
२५	१६	१०	शु.	५८	३०	उ.भा.	३९	२७	सि.	२३	११	तै.	२५	३७	२१	६	१५	८	मीन			७	१०	१७	१६	७	१९	२५	७	गुरु मूल ३ में १५/२७,
२५	१४	११	श.	६०	०	रेव.	४५	४२	व्य.	२४	३९	व.	३०	५२	२२	७	१६	९	मेष	४५	४२	७	११	१७	१६	७	२०	२६	१	भ. ३०/५२ बाद, पंचक समाप्त ४५/४२, बुध अनु. में ३३/१०,
२५	१३	११	र.	३	१४	अश्वि.	५०	४६	व.	२५	८	वि.	३	१४	२३	८	१७	१०	मेष			७	११	१७	१६	७	२१	२६	५५	भ. ३/१४ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.) (B)
२५	११	१२	चं.	६	४३	भर.	५४	३०	प.	२४	३६	बा.	६	४३	२४	९	१८	११	मेष			७	१२	१७	१७	७	२२	२७	५०	सोमप्रदोष व्रत,
२५	१०	१३	मं.	८	४६	कृत्ति.	५६	४९	शि.	२२	५८	तै.	८	४६	२५	१०	१९	१२	वृष	१०	११	७	१३	१७	१७	७	२३	२८	४६	मंगल विशा. में ३६/५४,
२५	९	१४	बु.	९	२३	रोहि.	५७	५०	सि.	२०	१४	व.	९	२३	२६	११	२०	१३	वृष			७	१४	१७	१७	७	२४	२९	४३	भ. ९/२३ से ३९/०० तक, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ (C)
२५	७	१५	गु.	८	३९	मृग.	५७	३९	सा.	१६	२९	ब.	८	३९	२७	१२	२१	१४	मिथुन	२७	५१	७	१४	१७	१७	७	२५	३०	४०	शुक्र उ.षा. में ४४/५१,

(A) श्री गुरु तेगबहादुर जी, (B) (देखें पृ.16), श्रीगीता जयन्ती, (C) १७ घं. १८ मि., श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	६	६	८	८	८	२	८
१३	१४	१५	२८	६	१५	२४	१५	१५
२३	१४	३३	२३	८	४५	१	३५	३५
२४	७	४४	१५	४३	३४	२३	४६	४६
६०	७१२	३९	७९	१३	७४	६	३	३
५२	१८	४६	४२	२५	१७	११	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	३	३	३	१	४	३	१
ज्ये.	शत.	स्वाती	विशा.	मूल	पू.षा.	पू.षा.	आर्द्रा	पू.षा.

कुण्डली सूर्योदय (४ दिसं.)

शु.के.श. गु. ९ | ७ मं.बु. | १० | ८ सू. | ६ | ११ चं. | ५ | १२ | २ | ४ | १ | ३ रा.

लोकभविष्य—इस मास में शनि-शुक्र-गुरु एवं केतु के साथ राहु का समसप्तक छत्तीसगढ़, राजस्थान, म.प्र., जम्मू-कश्मीर में पाक द्वारा उग्रवादजन्य हानि हो। एकादशी रविवारी होने से राजनैतिक पार्टियों का सत्ता-परीक्षण का समय कठिन होगा, कहीं सत्ता परिवर्तन भय की राजनीति से जनता को लुभाने के लिए वायदे होंगे—

"मार्गशुक्ल-एकादश्यां शनिवारो भवेद्यदि।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगं विनिर्दिशेत्॥"

कहीं दुर्भिक्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी सम्भव है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में २ दिसम्बर तक सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, तिलहन, दालें, नमक आदि में कुछ बाजार कमजोर रहेंगे। ३ से ५ दिसम्बर के मध्य घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी, सोना, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड तेज रहें। ६ से ८ दिसं. तक बाजार मन्दे, १० से १२ दिसं. तक बाजार तेज रहेंगे।

आकाशलक्षण—नवम्बर २८, दिसम्बर १, ३, ५, ६, ७, १०, १२ को बर्फीली हवाएं उ.भारत को शीतलहर में रखेंगी। कहीं खण्डवृष्टि, धुन्ध रहे। हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड में भारी हिमपात से या हिमस्खलन से यातायात बाधित होगा।

कुण्डली सूर्योदय (१२ दिसं.)

श.के.शु. गु. ९ | मं. ७ | १० | ८ सू. बु. | ६ | ११ | ५ | १२ | २ चं. | ४ | १ | ३ रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	६	७	८	८	८	२	८
२५	२२	२०	१	७	२५	२४	१५	१५
३०	५१	५२	३९	५६	३९	५९	१०	१०
४३	३३	२४	५	५३	१६	५९	११	११
६०	८०१	३९	८८	१३	७४	६	३	३
५८	३२	५५	३८	३९	७	३१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	१	२	३	४	४	३	१
ज्ये.	रोहि.	विशा.	अनु.	मूल	पू.षा.	पू.षा.	आर्द्रा	पू.षा.

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, पौष कृष्ण पक्ष १८ | **(१३ से २६ दिसं. २०१९ ई.)**

दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.
२५	६	१	शु.	६	४३	आर्द्रा	५६	२८	शु.	११	४९	कौ.	६	४३	२८	१३	२२	१५	मिथुन			७	१५	१७	१७	७	२६	३१	३९
२५	५	२	श.	३	४८	पुन.	५४	२८	शु.	६	२३	ग.	३	४८	२९	१४	२३	१६	कर्क	४०	१	७	१६	१७	१८	७	२७	३२	३८
२५	५	३	र.	०	६	पुष्य	५१	५०	ब्र. ऐं.	० ५३	२० ४६	वि.	०	६	३०	१५	२४	१७	कर्क			७	१६	१७	१८	७	२८	३३	३८
अवम		४	र.	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	४	५	चं.	५०	५६	आश्ले.	४८	४४	वै.	४६	५०	कौ.	२३	२०	पौ.१	१६	२५	१८	सिंह	४८	४४	७	१७	१७	१८	७	२९	३४	४०
२५	३	६	मं.	४५	४९	मघा	४५	२०	वि.	३९	३८	ग.	१८	२२	२	१७	२६	१९	सिंह			७	१८	१७	१९	८	०	३५	४२
२५	३	७	बु.	४०	३१	पू.फा.	४१	४५	प्री.	३२	१७	वि.	१३	१०	३	१८	२७	२०	कन्या	५५	५१	७	१८	१७	१९	८	१	३६	४५
२५	२	८	गु.	३५	१०	उ.फा.	३८	७	आ.	२४	५२	बा.	७	५०	४	१९	२८	२१	कन्या			७	१९	१७	२०	८	२	३७	४९
२५	२	९	शु.	२९	५३	हस्त	३४	३३	सौ.	१७	३०	तै.	२	३१	५	२०	२९	२२	कन्या			७	१९	१७	२०	८	३	३८	५४
२५	२	१०	श.	२४	४८	चित्रा	३१	१२	शो.	१०	१५	वि.	२४	४८	६	२१	३०	२३	तुला	२	४९	७	२०	१७	२१	८	४	४०	०
२५	२	११	र.	२०	४	स्वाती	२८	१२	अ. सु.	३ ५६	१६ ४०	बा.	२०	४	७	२२	पौ.१	२४	तुला			७	२०	१७	२१	८	५	४१	७
२५	२	१२	चं.	१५	५२	विशा.	२५	४६	धृ.	५०	३३	तै.	१५	५२	८	२३	२	२५	वृश्चिक	११	१८	७	२१	१७	२२	८	६	४२	१४
२५	२	१३	मं.	१२	२३	अनु.	२४	३	शू.	४५	७	व.	१२	२३	९	२४	३	२६	वृश्चिक			७	२१	१७	२२	८	७	४३	२२
२५	२	१४	बु.	९	४८	ज्येष्ठा	२३	१७	गं.	४०	२९	श.	९	४८	१०	२५	४	२७	धनु	२३	१७	७	२२	१७	२३	८	८	४४	३१
२५	३	३०	गु.	८	२१	मूल	२३	३९	वृ.	३६	४८	ना.	८	२१	११	२६	५	२८	धनु			७	२२	१७	२३	८	९	४५	४०

१४ दिसं. को गुरु पश्चिम में अदृश्य हो जायेगा। बुध १८ दिसं. को पूर्व में लुप्त होगा। प्रातः मंगल पूर्व कपाल में और सायं शुक्र-शनि पश्चिम क्षितिज में दिखाई देंगे। २६ दिसं. को कंकण सूर्यग्रहण भारत में दिखाई देगा।

(१) —
(२) भ. ३१/५४ बाद, गुरु पश्चिम में अस्त १७ घं. १८ मि.,
(३) भ. ०/६ तक, शुक्र मकर में २६/४५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
(अवम) चतुर्थी तिथिक्षय,
(५) सं. सूर्य मूल धनु में २०/२५, मु. १५, पुण्यकाल प्रातः (A)
(६) भ. ४५/४९ बाद,
(७) भ. १३/१० तक, बुध पूर्व में अस्त ७ घं. १८ मि.,
(८) —
(९) भ. ५७/२२ बाद, गुरु मूल ४ में ५४/४,
(१०) भ. २४/४८ तक, सूर्य सायन मकर में ६/१३, उत्तरायण (B)
(११) सफला एकादशी व्रत (स.), शक पौष प्रारम्भ,
(१२) शुक्र श्रव. में ३३/२२, सोमप्रदोष व्रत,
(१३) भ. १२/२३ से ४१/४ तक,
(१४) मंगल वृश्चिक में ३५/१५, बुध मूल धनु में २०/५७, (C)
(३०) शनि उ.षा. १ में ४७/२२, कंकण सूर्यग्रहण (भारत में (D)

गुरु अस्त १४ दिसं.

कंकण सूर्यग्रहण २६ दिसम्बर

(A) ९ घं. ०४ मि. बाद, बुध ज्येष्ठा में ३७/३७, (B) एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (C) ग्रहणवेध, (D) दृश्य) (देखें पृ. 20), जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	६	७	८	९	८	२	८
२	२९	२५	२०	१	४	२५	१४	१४
३७	५४	३२	८	३२	१७	४६	४८	४८
५१	५९	२२	४५	४६	३६	१५	३	३
६१	८५१	४०	११	१३	७३	६	३	३
७	९	६	११	४६	५७	४५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल १	उ.फा. १	विशा. २	ज्ये. २	मूल ३	उ.षा. ३	पू.षा. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १

कुण्डली सूर्योदय (१९ दिसं.)

१० शु. | बु. ८ | ९ सू. के. गु. श. | ७ मं. | ११ | १२ | ६ चं. | १ | ३ रा. | ५ | २ | ४

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार हैं, अतः प्रजा में सुख-शान्ति, सुभिक्ष किंवा समृद्धि रहे—

"शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्।
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥"

पक्षान्त में मंगल वृश्चिक में आकर राजनैतिक पार्टियों में संघष की स्थिति एवं बाजारों में महंगाई भी करता है—"महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१५ दिसं. के लगभग से १७ दिसं. तक शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चावल, चना आदि अनाज, दालें, रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, अलसी, तिलहन तेज रहें। तुरन्त लाभ लें, जल्दी ही मन्दा बने। २० से २४ दिसं. तक बाजार ऊपर-नीचे किंवा मन्दे रहें। २५ दिसं. को बाजार तेज रहेंगे।

आकाशलक्षण—दिसम्बर १५, १६, १७, १८, २०, २३ एवं २५ से २७ दिसं. तक धुन्ध, कहीं बादलचाल, खण्डवृष्टि हो। हि. प्र., कश्मीर आदि पर्वतीय क्षेत्र हिमाच्छादित हों। उत्तरी भारत में शीत जोर पकड़ेगा।

कुण्डली सूर्योदय (२६ दिसं.)

१० शु. | मं. ८ | ९ सू.बु. श.चं.के. गु. | ७ | ११ | १२ | ६ | १ | ३ रा. | ५ | २ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	८	८	९	८	२	८
९	७	०	०	११	१२	२६	१४	१४
४५	६	१३	५३	९	५४	३४	२५	२५
४२	४७	२७	१०	२१	४५	०	४८	४८
६१	७८६	४०	१३	१३	७३	६	३	३
९	२६	१५	१	५०	४६	५५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ३	मूल ३	विशा. ४	मूल १	मूल ४	श्रव. १	पू.षा. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, पौष शुक्ल पक्ष १९ (२७ दिसं., २०१९ से १० जन., २०२० ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

बुध अस्त है। शनि २८ दिसं. को पश्चिम में अस्त होगा। गुरु १० जनवरी से पूर्व में दिखाई देने लगेगा। प्रातः मंगल पूर्वकपाल में और सायं शुक्र पश्चिम में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															पौष	दिसम्बर	पौष	र.उ.सा.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३	१	शु.	८	१२	पू.षा.	२५	१७	धु.	३४	९	ब.	८	१२	१२	२७	६	२९	मकर	४०	५५	७	२२	१७	२४	८	१०	४६	४९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, ग्रहणवेध,
२५	४	२	श.	९	२७	उ.षा.	२८	१९	व्या.	३२	३७	कौ.	९	२७	१३	२८	७	ज.१	मकर			७	२३	१७	२४	८	११	४७	५९	शनि पश्चिम में अस्त १७ घं. २५ मि., ग्रहणवेध, जमद- (A)
२५	५	३	र.	१२	१०	श्रव.	३२	४५	ह.	३२	१२	ग.	१२	१०	१४	२९	८	२	मकर			७	२३	१७	२५	८	१२	४९	९	भ. ४४/१३ बाद, सूर्य पू.षा. में २५/३०, ग्रहणवेध,
२५	६	४	चं.	१६	१७	धनि.	३८	२६	व.	३२	४६	वि.	१६	१७	१५	३०	९	३	कुम्भ	५	२७	७	२४	१७	२६	८	१३	५०	११	भ. १६/१७ तक, पंचक प्रारम्भ ५/२७, मंगल अनु. में ३३/१०,
२५	७	५	मं.	२१	३३	शत.	४५	८	सि.	३४	९	बा.	२१	३३	१६	३१	१०	४	कुम्भ			७	२४	१७	२६	८	१४	५१	३०	
२५	८	६	बु.	२७	३७	पू.भा.	५२	२५	व्य.	३६	३	तै.	२७	३७	१७	ज.१	११	५	मीन	३५	३५	७	२४	१७	२७	८	१५	५२	४०	जनवरी (इंगलिश नववर्ष २०२० ई.) प्रारम्भ,
२५	९	७	गु.	३३	५९	उ.भा.	५९	४७	व.	३८	७	ग.	०	४८	१८	२	१२	६	मीन			७	२४	१७	२८	८	१६	५३	५०	भ. ३३/५९ बाद, बुध पू.षा. में ५२/१५, जन्मदिन गुरु (B)
२५	१०	८	शु.	४०	४	रेव.	६०	०	प.	३९	५८	वि.	७	२	१९	३	१३	७	मीन			७	२५	१७	२९	८	१७	५४	५९	भ. ७/२ तक, शुक्र धनि. में २४/५२,
२५	१२	९	श.	४५	१९	रेव.	६	४१	शि.	४१	११	बा.	१२	४१	२०	४	१४	८	मेष	६	४१	७	२५	१७	२९	८	१८	५६	९	पंचक समाप्त ६/४१, गुरु पू.षा. १ में २२/२२,
२५	१३	१०	र.	४९	१५	अश्वि.	१२	३४	सि.	४१	२६	तै.	१७	१७	२१	५	१५	९	मेष			७	२५	१७	३०	८	१९	५७	१८	
२५	१५	११	चं.	५१	३२	भर.	१७	५	सा.	४०	२९	व.	२०	२३	२२	६	१६	१०	वृष	३२	५८	७	२५	१७	३१	८	२०	५८	२७	भ. २०/२३ से ५१/३२ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	१६	१२	मं.	५२	३	कृत्ति.	१९	५६	शु.	३८	१२	ब.	२१	४७	२३	७	१७	११	वृष			७	२५	१७	३२	८	२१	५९	३५	गुरु उदित १० जनवरी
२५	१८	१३	बु.	५०	४७	रोहि.	२१	३	शु.	३४	३१	कौ.	२१	२५	२४	८	१८	१२	मिथुन	५०	५९	७	२५	१७	३२	८	२३	०	४३	शुक्र कुम्भ में ५२/२२, प्रदोषव्रत,
२५	२०	१४	गु.	४७	५३	मृग.	२०	३०	ब्र.	२९	३१	ग.	१९	२०	२५	९	१९	१३	मिथुन			७	२५	१७	३३	८	२४	१	५१	भ. ४७/५३ बाद,
२५	२२	१५	शु.	४३	३४	आर्द्रा	१८	२७	ऐं.	२३	२१	वि.	१५	४३	२६	१०	२०	१४	मिथुन			७	२५	१७	३४	८	२५	२	५९	भ. १५/४३ तक, यूरेनस मार्गी ५९/४५, गुरु पूर्व में (C)

(A) उल-अव्वल मु. प्रारम्भ, (B) गोबिन्द सिंह जी, (C) उदित ७ घं. २५ मि., पौषी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	८	८	९	८	२	८
१७	१५	५	१३	१२	२२	२७	१४	१४
५५	४५	३५	२४	५१	४३	२१	०	०
१	४१	५४	४५	५७	४१	५१	२१	२१
६१	७१६	४०	१५	१३	७३	७	३	३
१	३१	२३	१७	४८	२५	३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
२	४	१	१	४	४	१	३	१
पू.षा.	उ.भा.	अनु.	पू.षा.	मूल	श्रव.	उ.षा.	आर्द्रा	पू.षा.

कुण्डली सूर्योदय (३ जन.)

९ सू. श.बु. के.गु.; १० शु.; ११; १२ चं.; १; २; ३ रा.; ४; ५; ६; ७; ८ मं.

लोकभविष्य—मंगल-राहु का षडष्टक चल रहा है। सूर्य-शनि गुरु-केतु-बुध का राहु के साथ समसप्तक कहीं हिमस्खलन, भूकम्प एवं जम्मू-कश्मीर में उग्रवादजन्य कार्य से जन-धनहानि सम्भव है। जनता में रोग से परेशानी हो एवं पक्षान्त में कुम्भस्थ शुक्र पर शनि-मंगल की दृष्टि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए विशेष कष्टप्रद है। सुरक्षा का प्रबन्ध पूर्ण रहना आवश्यक है। दिसं. के अन्तिम सप्ताह में राहु-मंगल एवं ८ जनं. तक केतु, सूर्य, शनि, बुध की स्थिति उग्रवाद व प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देती है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२७ से ३० दिसम्बर तक अनाज, रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारे, अलसी, सरसों आदि तिलहन, तेल, सोना, चांदी, तांबा, दालबाना, ऊन, गुड़, खाण्ड, लालमिर्च आदि में तेजी से लाभ मिले। २ से ४ जन. (२०२० ई.) को बाजार ऊपर-नीचे रहें। ८ से १० जन. तक सभी अनाज, दालें, गुड़, खाण्ड, रुई, चांदी तेज रहें।

आकाशलक्षण—दिसम्बर २७ से ३१ तक, जनवरी (२०२० ई.) २ से ५ एवं ८, १० जन. को कश्मीर, हि.प्र., उ.खण्ड, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब आदि में भयंकर शीतलहर चलेगी। पर्वतीय भूभागों में जोरदार बर्फबारी एवं उ.भारत के अन्य अनेक प्रान्तों में धुन्ध से यातायात बाधित होंगे। धुन्ध से दुर्घटनाएं भी सम्भव हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१० जन.)

९ सू. के.बु. श.गु.; १०; ११ शु.; १२; १; २; ३ चं. रा.; ४; ५; ६; ७; ८ मं.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	८	८	१०	८	२	८
२५	१४	१०	२४	१४	१	२८	१३	१३
३	३६	१९	३९	३६	१६	१९	३८	३८
१	३८	३	३१	२३	३२	२३	६	६
६१	८३१	४०	९८	१३	७३	७	३	३
७	४४	३२	०	४३	२	६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४	३	३	४	१	३	१	३	१
पू.षा.	आर्द्रा	अनु.	पू.षा.	पू.षा.	धनि.	उ.षा.	आर्द्रा	पू.षा.

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, माघ कृष्ण पक्ष २० | **तारीखें** | **चन्द्रराशि-प्रवेशकाल** | **चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)** | **स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)** | **(११ से २४ जनवरी, सन् २०२० ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।**

बुध-शनि अस्त हैं। प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज में और मंगल पूर्वकपाल में दिखाई देगा। सायं शुक्र को पश्चिम में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. ज.उ.ऊ.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२४	१	श.	३८	९	पुन.	१५	११	वै.	१६	१२	बा.	१०	५२	२७	११	२१	१५	कर्क	१	६	७	२५	१७	३५	८	२६	४	६	सूर्य उ.षा. में ३०/२४, बुध उ.षा. में ८/५४,
२५	२६	२	र.	३१	५७	पुष्य	११	०	वि. प्री.	८ ५९	१९ ५८	तै.	५	३	२८	१२	२२	१६	कर्क			७	२५	१७	३६	८	२७	५	१४	भ. ५८/३७ बाद,
२५	२९	३	चं.	२५	१८	आश्ले	६	१४	आ.	५१	२२	वि.	२५	१८	२९	१३	२३	१७	सिंह	६	१४	७	२५	१७	३७	८	२८	६	२१	भ. २५/१८ तक, बुध मकर में १०/२२, गुरुबाल्य समाप्त (A)
२५	३१	४	मं.	१८	३१	मघा पू.फा.	१ ५६	१४ १८	सौ.	४२	४८	बा.	१८	३१	मा.१	१४	२४	१८	सिंह			७	२५	१७	३७	८	२९	७	२८	सं. सूर्य मकर में ४६/४५, मु. ३०, पुण्यकाल आगामी पूरा (B)
२५	३४	५	बु.	११	५४	उ.फा.	५१	४४	शो.	३४	२८	तै.	११	५४	२	१५	२५	१९	कन्या	१०	७	७	२५	१७	३८	९	०	८	३४	राहु आर्द्रा २, केतु मूल ४ में ३६/३४,
२५	३६	६	गु.	५	४२	हस्त	४७	४४	अ.	२६	३२	व.	५	४२	३	१६	२६	२०	कन्या			७	२५	१७	३९	९	१	९	४१	भ. ५/४२ से ३२/५७ तक, मट्टु पोंगल,
२५	३९	७	शु.	०	८	चित्रा	४४	२९	सु.	१९	११	ब.	०	८	४	१७	२७	२१	तुला	१६	०	७	२५	१७	४०	९	२	१०	४७	जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी,
अवम		८	शु.	५५	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२५	४२	९	श.	५१	३१	स्वा.	४२	७	धृ.	१२	३१	तै.	२३	२६	५	१८	२८	२२	तुला			७	२४	१७	४१	९	३	११	५३	गुरु पू.षा. २ में ५९/३,
२५	४४	१०	र.	४८	३७	विशा.	४०	४१	शू.	६	३४	व.	२०	४	६	१९	२९	२३	वृश्चिक	२५	५८	७	२४	१७	४२	९	४	१२	५९	भ. २०/४ से ४८/३७ तक, मंगल ज्ये. में १७/४१, बुध (C)
२५	४७	११	चं.	४६	४५	अनु.	४०	१५	गं. वृ.	१ ५७	२४ १	ब.	१७	४१	७	२०	३०	२४	वृश्चिक			७	२४	१७	४३	९	५	१४	५	सूर्य सायन कुम्भ में ३२/३०, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२५	५०	१२	मं.	४५	५३	ज्येष्ठा	४०	४८	ध्रु.	५३	२७	कौ.	१६	११	८	२१	मा.१	२५	धनु	४०	४८	७	२३	१७	४४	९	६	१५	१०	शक माघ प्रारम्भ,
२५	५३	१३	बु.	४६	३	मूल	४२	२०	व्या.	५०	४०	ग.	१५	५८	९	२२	२	२६	धनु			७	२३	१७	४५	९	७	१६	१५	भ. ४६/३ बाद, प्रदोषव्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
२५	५७	१४	गु.	४७	१६	पू.षा.	४४	५३	ह.	४८	४२	वि.	१६	३९	१०	२३	३	२७	धनु			७	२३	१७	४५	९	८	१७	१९	भ. १६/३९ तक,
२६	०	३०	शु.	४९	३२	उ.षा.	४८	२७	व.	४७	३२	च.	१८	२४	११	२४	४	२८	मकर	०	४२	७	२२	१७	४६	९	९	१८	२३	सूर्य श्रव. में ३६/१२, शनि उ.षा. २ मकर में ६/१९, मौनी अमा,

(A) ७ घं. २५ मि., लोहड़ी (पं., हरि., ज.क.), श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी (देखें पृ 17) (चन्द्रोदय देखें पृ 11), (B) दिन, शुक्र शत. में २१/१९, मकर संक्रान्ति, (C) श्रव. में ८/१२,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २ १० ४९	५ २५ ६ ९	७ १५ ३ १५	९ ६ १५ ६	८ १६ १२ २	१० ९ ४६ २८	८ २९ ९ ८	२ १३ १५ ५०	८ १३ १५ ५०
६१ ६	८४३ ५१	४० ४२	१०१ १२	१३ ३४	७२ ३६	७ ६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
उ.षा. २	चित्रा १	ज्ये. ४	उ.षा. ३	पू.षा. १	श्रव. १	उ.षा. १	आर्द्रा १	मूल ४

कुण्डली सूर्योदय (१७ जन.)

भाव	ग्रह
११	शु.
१२	
१०	सू. बु.
९	गु.श.के.
८	मं.
१	
७	
२	
४	
६	चं.
३	रा.
५	

लोकभविष्य—शत्रुक्षेत्री सूर्य, शनि-राहु का समसप्तक राजनीतिक पार्टियों में विशेष हलचल पैदा करें। सत्तारूढ़ दल को अपनी गरिमा को यथावत् बनाये रखने के लिए भारी चिन्तित रहना होगा। इस मास में पांच शनि एवं पांच रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं अग्निकाण्ड, कहीं भूकम्प आदि से हानि के योग भी बनते हैं—

"दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च बह्निदाहो महर्घता।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में ११ जनवरी से दालवाना आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, लालमिर्च, शक्कर, कपास, सोना-चांदी, १४ जनवरी तक उत्तम-मध्यम रूप से तेज रहें। १४ जनवरी से १७ जनवरी तक घी, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, शक्कर, रुई, खाण्ड, सोना, चांदी में तेजी का झटका आये। १५/१६ को तेजी का झटका आये, तो तुरन्त लाभ लें। १८/१९ जनवरी को बाजार मन्दे रहें। २४ जनवरी के लगभग भी तेजी से लाभ लें।

कुण्डली सूर्योदय (२४ जन.)

भाव	ग्रह
११	शु.
१२	
१०	सू.बु.
९	चं.के.गु.श.
८	मं.
१	
७	
२	
४	
६	
३	रा.
५	

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ९ १८ २५	८ २८ ५१ ५४	७ १९ ४८ ३२	९ १८ ११ ३४	८ १७ ४६ २७	१० १८ १३ ५	८ २९ ५८ ४२	२ १२ ५३ ३४	८ १२ ५३ ३४
६१ ३	७५३ ३९	४० ५०	१०३ २७	१३ २१	७२ ३	७ ३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	उ.षा. १	ज्ये. १	श्रव. ३	पू.षा. १	धनि. ४	उ.षा. १	आर्द्रा १	मूल ४

आकाशलक्षण—जनवरी ११ से १६ तक, १८ से २०, २४ जनवरी को पर्वतीय भूभागों पर शिलांग, आसाम, तमिलनाडु, उ.खण्ड आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी होगी। उ.भारत में शीत के साथ वायुवेग रहे। शीत का प्रभाव कुछ क्षीण होने लगे।

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, माघ शुक्ल पक्ष २१

(२५ जनवरी से ९ फरवरी, सन् २०२० ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

३० जनवरी को शनि पूर्व में और इसी दिन बुध पश्चिम में दृश्य हो जायेगा। प्रातः गुरु पूर्व में और मंगल पूर्वकपाल में होगा। सायं शुक्र पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३	१	श.	५२	५२	श्रव.	५३	२	सि.	४७	१०	किं.	२१	१२	१२	२५	५	२९	मकर			७	२२	१७	४७	९	१०	१९	२६	शुक्र पू.भा. में २४/२२, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
२६	६	२	र.	५७	१४	धनि.	५८	३६	व्य.	४७	३५	बा.	२५	३	१३	२६	६	३०	कुम्भ	२५	४३	७	२२	१७	४८	९	११	२०	२९	पंचक प्रारम्भ २५/४३, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध धनि. में (A)
२६	१०	३	चं.	६०	०	शत.	६०	०	व.	४८	४३	तै.	२९	५३	१४	२७	७	ज.१	कुम्भ			७	२१	१७	४९	९	१२	२१	३०	जमद-उल-सानी मु. प्रारम्भ,
२६	१३	३	मं.	२	३३	शत.	५	४	प.	५०	२६	ग.	२	३३	१५	२८	८	२	मीन	५५	२१	७	२१	१७	५०	९	१३	२२	३१	भ. ३५/३३ बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी) (देखें पृ 17), (B)
२६	१७	४	बु.	८	३४	पू.भा.	१२	१२	शि.	५२	३१	वि.	८	३४	१६	२९	९	३	मीन			७	२०	१७	५१	९	१४	२३	३१	भ. ८/३४ तक, श्री(लक्ष्मी)पंचमी/वसन्त पंचमी (देखें पृ 17)(C)
२६	२०	५	गु.	१४	५९	उ.भा.	११	४०	सि.	५४	४२	बा.	१४	५९	१७	३०	१०	४	मीन			७	२०	१७	५२	९	१५	२४	२९	बुध कुम्भ में ४८/५२, बुध पश्चिम में उदित १७ घं. ५२ मि.,(D)
२६	२४	६	शु.	२१	२१	रेव.	२७	७	सा.	५६	३८	तै.	२१	२१	१८	३१	११	५	मेष	२७	७	७	१९	१७	५३	९	१६	२५	२७	पंचक समाप्त २७/७,
२६	२८	७	श.	२७	१०	अश्वि.	३३	५६	शु.	५७	५६	व.	२७	१०	१९	फ.१	१२	६	मेष			७	१८	१७	५४	९	१७	२६	२३	भ. २७/१० से ५९/३३ तक, रथ सप्तमी (पूर्व अरुणोदय (E)
२६	३१	८	र.	३१	५४	भर.	३९	४२	शु.	५८	१५	ब.	३१	५४	२०	२	१३	७	वृष	५५	५५	७	१८	१७	५४	९	१८	२७	१७	शुक्र मीन में ४७/२७, भीष्माष्टमी,
२६	३५	९	चं.	३५	५	कृत्ति.	४३	५६	ब्र.	५७	१७	बा.	३	२९	२१	३	१४	८	वृष			७	१७	१७	५५	९	१९	२८	१०	बुध शत. में ५५/२१, गुरु पू.षा. ३ में ४/३, गुप्त नवरात्र समाप्त,
२६	३९	१०	मं.	३६	२२	रोहि.	४६	२०	ऐं.	५४	५०	तै.	५	४३	२२	४	१५	९	वृष			७	१७	१७	५६	९	२०	२९	२	नवरात्र पारणा (देखें पृ 18),
२६	४३	११	बु.	३५	३८	मृग.	४६	४६	वै.	५०	४७	व.	६	०	२३	५	१६	१०	मिथुन	१६	४९	७	१६	१७	५७	९	२१	२९	५३	भ. ६/०० से ३५/३८ तक, शुक्र उ.भा. में ३६/३७, (F)
२६	४७	१२	गु.	३२	५१	आर्द्रा	४५	१३	वि.	४५	९	ब.	४	१४	२४	६	१७	११	मिथुन			७	१५	१७	५८	९	२२	३०	४२	सूर्य धनि. में ४४/१५, भीष्म द्वादशी,
२६	५१	१३	शु.	२८	१३	पुन.	४१	५५	प्री.	३८	६	कौ.	०	३२	२५	७	१८	१२	कर्क	२७	५३	७	१४	१७	५९	९	२३	३१	३०	मंगल मूल धनु में ५१/३६, प्रदोष व्रत,
२६	५५	१४	श.	२२	०	पुष्य	३७	७	आ.	२१	४१	व.	२२	०	२६	८	१९	१३	कर्क			७	१४	१८	०	९	२४	३२	१७	भ. २२/०० से ४८/१५ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
२६	५९	१५	र.	१४	३५	आश्ले.	३१	१५	सौ.	२०	३७	ब.	१४	३५	२७	९	२०	१४	सिंह	३१	१५	७	१३	१८	१	९	२५	३३	२	गुरु रविदास जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त,

(A) ५४/१५, भारत गणतन्त्र दिवस, (B) तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी, (C) श्री(लक्ष्मी)/सरस्वती पूजन, (D) शनि पूर्व में उदित ७ घं. १९ मि., (E) वाली), आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन), फरवरी प्रारम्भ, (F) जया एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	७	१०	८	१०	९	२	८
१८	१७	२५	३	११	२८	१	१२	१२
२७	४०	५६	२९	४५	५८	१	२४	२४
१८	२५	३७	३३	१२	२०	३२	५७	५७
६०	७३४	४०	९६	१२	७१	६	३	३
५३	३२	५९	३४	५८	११	५३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ३	भर. २	ज्ये. ३	धनि. ४	पू.षा. २	पू.भा. ३	उ.षा. २	आर्द्रा २	मूल ४

कुण्डली सूर्योदय (२ फर.)

- १० सू. श.
- ११ शु. बु.
- १२
- १ चं.
- २
- ३ रा.
- ४
- ५
- ६
- ७
- ८ मं.
- ९ गु. के.

लोकभविष्य—शनि-सूर्य का मकर राशि में योग सत्तारूढ़ पार्टी के लिए जनता को सन्तुष्ट करने में परेशानी अनुभव करायें। राजनीतिज्ञ परस्पर उलझते रहेंगे, क्योंकि सूर्य के साथ स्थित शनि उदय के लगभग है—"सौरे मृगेऽभ्युदये नृप-युद्ध-बुद्धिः।" इस पक्ष में बुध का उदय भी कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जन-धनहानि का संकेत देता है। पक्षान्त में मंगल धनु राशि में आकर घी, तेल, कपास आदि में महंगाई करेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में लगभग २७ जनवरी तक सोना, चांदी, रुई, अनाजों में उठापटक रहेगी। २९/३० जनवरी को सोना, चांदी में तेजी; घी, तेल, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें। १ से ५ फरवरी तक सभी बाजार कमजोर रहेंगे। ६ एवं ७ फरवरी को चावल, चना, जौ, मूंग, चांदी, सोना, रुई, तांबा, गुड़, घी, तेल, ऊन, अनाज मन्दे हों।

आकाशलक्षण—जन. २५, २६, ३० एवं फरवरी १, २, ३, ५, ६, ७, ८ को आसाम, शिलांग, तमिलनाडु, उ.खाण्ड आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उ.भारत में हवा का जोर रहे। ऋतु परिवर्तन अनुभव हो, शीत का प्रभाव क्षीण हो।

कुण्डली सूर्योदय (९ फर.)

- १० सू. श.
- ११ बु.
- १२ शु.
- १
- २
- ३ रा.
- ४ चं.
- ५
- ६
- ७
- ८
- ९ मं. के. गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	८	१०	८	११	९	२	८
२५	२१	०	१३	२१	७	१	१२	१२
३२	१२	४३	३६	१४	१४	४९	२	२
३	५४	५३	२१	५२	५	१२	४२	४२
६०	८९१	४१	६७	१२	७०	६	३	३
४४	३२	७	३६	३५	१९	४९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. १	आश्ले. २	मूल १	शत. ३	पू.षा. ३	उ.भा. २	उ.षा. २	आर्द्रा २	मूल ४

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(१० से २३ फरवरी, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

१९ फर. को वक्री बुध पश्चिम में लुप्त हो जायेगा। प्रातः शनि पूर्व क्षितिज में, गुरु पूर्वकपाल में और मंगल इससे ऊपर होगा। सायं शुक्र पश्चिम में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. माघ	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. माघ	तारीखें मु. ज.उ.मा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३	१	चं.	६	२२	मघा	२४	४३	शो.	१०	४८	कौ.	६	२२	२८	१०	२१	१५	सिंह			७	१२	१८	१	९	२६	३३	४६	
अवम		२	चं.	५७	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२७	७	३	मं.	४९	१४	पू.फा.	१७	५९	अ. सु.	० ५०	४० ४०	व.	२३	२९	२९	११	२२	१६	कन्या	३१	१६	७	११	१८	२	९	२७	३४	२९	भ. २३/२९ से ४९/१४ तक,
२७	१२	४	बु.	४१	१२	उ.फा.	११	२८	धृ.	४१	४	ब.	१५	१३	३०	१२	२३	१७	कन्या			७	१०	१८	३	९	२८	३५	१०	नेप्च्यून पू.भा. २ में २३/५४, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२७	१६	५	गु.	३४	२	हस्त	५	३७	शू.	३२	१०	कौ.	७	३७	फा.१	१३	२४	१८	तुला	३३	१	७	१०	१८	४	९	२९	३५	५१	सं. सूर्य कुम्भ में १९/४२, मु. ३०, पुण्यकाल ८ घं. ४० मि. बाद,
२७	२०	६	शु.	२८	१	चित्रा स्वाती	० ५७	४४ ९	गं.	२४	१२	ग.	१	२	२	१४	२५	१९	तुला			७	९	१८	५	१०	०	३६	३०	भ. २८/१ से ५५/४० तक,
२७	२४	७	श.	२३	२३	विशा.	५५	२	वृ.	१७	२१	ब.	२३	२३	३	१५	२६	२०	वृश्चिक	४०	२६	७	८	१८	६	१०	१	३७	८	
२७	२९	८	र.	२०	१७	अनु.	५४	२६	ध्रु.	११	४३	कौ.	२०	१७	४	१६	२७	२१	वृश्चिक			७	७	१८	६	१०	२	३७	४५	बुध वक्री ५७/४६,
२७	३३	९	चं.	१८	४४	ज्येष्ठा	५५	१८	व्या.	७	१७	ग.	१८	४४	५	१७	२८	२२	धनु	५५	१८	७	६	१८	७	१०	३	३८	२१	भ. ४८/४० बाद, शुक्र रेवती में २/२२,
२७	३७	१०	मं.	१८	३९	मूल	५७	३२	ह.	४	३	वि.	१८	३९	६	१८	२९	२३	धनु			७	५	१८	८	१०	४	३८	५५	भ. १८/३९ तक,
२७	४२	११	बु.	१९	५५	पू.षा.	६०	०	व.	१	५२	बा.	१९	५५	७	१९	३०	२४	धनु			७	४	१८	९	१०	५	३९	२९	सूर्य शत. में ५६/१, गुरु पू.षा. ४ में ६/३७, सूर्य सायन (A)
२७	४६	१२	गु.	२२	२१	पू.षा.	०	५८	सि.	०	३६	तै.	२२	२१	८	२०	फा.१	२५	मकर	१७	२	७	३	१८	१०	१०	६	४०	१	प्रदोषव्रत, शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५१	१३	शु.	२५	४७	उ.षा.	५	२७	व्य.	०	१०	व.	२५	४७	९	२१	२	२६	मकर			७	२	१८	१०	१०	७	४०	३१	भ. २५/४७ से ५७/५६ तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
२७	५५	१४	श.	३०	४	श्रव.	१०	४४	व.	०	२६	श.	३०	४	१०	२२	३	२७	कुम्भ	४३	३९	७	१	१८	११	१०	८	४१	१	पंचक प्रारम्भ ४३/३९, शनि उ.षा. ३ में ५८/५२,
२८	०	३०	र.	३५	३	धनि.	१६	४५	प.	१	१८	च.	२	३३	११	२३	४	२८	कुम्भ			७	०	१८	१२	१०	९	४१	२८	

(A) मीन में ८/२५, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. ९ मि., विजया एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	८	१०	८	११	९	२	८
२	३	५	१८	२२	१५	२	११	११
३७	३२	३२	३९	४१	२३	३५	४०	४०
४६	५	७	४८	४१	२१	२३	२७	२७
६०	८०८	४१	५	१२	६१	६	३	३
३६	१६	१५	३५	९	१९	२७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ३	अनु. १	मूल २	शत. ४	पू.षा. ३	उ.भा. ४	उ.षा. २	आर्द्रा २	मूल ४

कुण्डली सूर्योदय (१६ फर.)

लोकभविष्य—इस चन्द्रमास में पांच चन्द्रवार होने से देश में सुख-समृद्धिप्रद योजनाएं कार्यान्वित होंगी—

"सोमस्य पंचवारास्तु यस्मिन् मासे भवन्ति हि।
धन-धान्य-समृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा॥"

लेकिन राहु-मंगल का समसप्तक योग छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर, उ.खण्ड एवं सरहदी इलाकों में उग्रवाद किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जन-धनहानि का भय भी बनाता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१३ से १६ फरवरी तक घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, राई, गुड़, शक्कर, सोना, चांदी तेज रहें। अलसी, जवाहरात, चावल, रुई मन्दे रहें। १८ फरवरी को बाजार मन्दे रहें। १९ फरवरी को तेल, तिलहन, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़ तेज रहें। रुई एवं शेयर मन्दे रहें। २३/२४ फरवरी के लगभग वायदा बाजारों में तेजी से लाभ रहे।

आकाशलक्षण—फरवरी १३, १७, १८, १९, २३ को दक्षिणी भारत एवं उत्तरी भारत के कुछ प्रान्तों में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो। उ.भारत के प्रान्तों में हवा का जोर रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२३ फर.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ फर.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	८	१०	८	११	९	२	८
९	२	१०	१५	२४	२३	३	११	११
४१	३२	२१	५२	५	२५	१९	१८	१८
२९	७	१४	३०	९	८	४३	११	११
६०	७२३	४२	५६	११	६८	६	३	३
२५	१०	२२	१७	३७	९	१०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. १	धनि. ३	मूल ४	शत. ३	पू.षा. ४	रे. ३	उ.षा. २	आर्द्रा २	मूल ४

163

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(२४ फरवरी से ९ मार्च, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

बुध ३ मार्च को पूर्व में उदित हो जायेगा। प्रातः शनि पूर्व में, गुरु मंगल पूर्वकपाल में और सायं शुक्र पश्चिम में होगा। २७ फर. को चन्द्र-शुक्र परस्पर समीप होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. फाल्गुन	मु. ज.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४	१	चं.	४०	३९	शत.	२३	२३	शि.	२	३९	किं.	७	५१	१२	२४	५	२९	कुम्भ			६	५९	१८	१३	१०	१०	४१	५५	
२८	९	२	मं.	४६	४४	पू.भा.	३०	३०	सि.	४	२५	बा.	१३	४१	१३	२५	६	३०	मीन	१३	४२	६	५८	१८	१३	१०	११	४२	१९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, प्लूटो उ.षा. २ मकर में १/४६, (A)
२८	१३	३	बु.	५३	७	उ.भा.	३७	५६	सा.	६	३०	तै.	१९	५५	१४	२६	७	र.१	मीन			६	५७	१८	१४	१०	१२	४२	४२	रजब मु. प्रारम्भ,
२८	१८	४	गु.	५९	३१	रेव.	४५	३०	शु.	८	४५	व.	२६	१९	१५	२७	८	२	मेष	४५	३०	६	५६	१८	१५	१०	१३	४३	३	भ. २६/१९ से ५९/३१ तक, पंचक समाप्त ४५/३०, (B)
२८	२२	५	शु.	६०	०	अश्वि.	५२	४९	शु.	१०	५९	ब.	३२	३५	१६	२८	९	३	मेष			६	५५	१८	१६	१०	१४	४३	२२	शुक्र अश्वि. मेष में ४६/३१,
२८	२७	५	श.	५	३९	भर.	५९	३०	ब्र.	१२	५५	बा.	५	३९	१७	२९	१०	४	मेष			६	५४	१८	१६	१०	१५	४३	३९	**होलाष्टक २ से ९ मार्च**
२८	३१	६	र.	१०	५८	कृत्ति.	६०	०	ऐं.	१४	१६	तै.	१०	५८	१८	मा.१	११	५	वृष	१६	४	६	५३	१८	१७	१०	१६	४३	५४	मार्च प्रारम्भ,
२८	३६	७	चं.	१५	३	कृत्ति.	५	८	वै.	१४	४०	व.	१५	३	१९	२	१२	६	वृष			६	५१	१८	१८	१०	१७	४४	७	भ. १५/३ से ४६/१८ तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	४१	८	मं.	१७	२९	रोहि.	९	१२	वि.	१३	४८	ब.	१७	२९	२०	३	१३	७	मिथुन	४०	३३	६	५०	१८	१९	१०	१८	४४	१८	वक्री बुध धनि. में १६/१८, बुध पूर्व में उदित ६ घं. ५१ मि.,
२८	४५	९	बु.	१७	५७	मृग.	११	२४	प्री.	११	२८	कौ.	१७	५७	२१	४	१४	८	मिथुन			६	४९	१८	१९	१०	१९	४४	२७	सूर्य पू.भा. में १२/१२,
२८	५०	१०	गु.	१६	१७	आर्द्रा	११	३४	आ.	७	२८	ग.	१६	१७	२२	५	१५	९	कर्क	५५	१६	६	४८	१८	२०	१०	२०	४४	३४	भ. ४४/२२ बाद,
२८	५५	११	शु.	१२	३१	पुन.	९	३८	सौ. शो.	१ ५४	४८ ३०	वि.	१२	३१	२३	६	१६	१०	कर्क			६	४७	१८	२१	१०	२१	४४	३८	भ. १२/३१ तक, गोविन्द द्वादशी, आमलकी एकादशी (C)
२८	५९	१२	श.	६	४८	पुष्य	५	४७	अ.	४५	५१	बा.	६	४८	२४	७	१७	११	कर्क			६	४६	१८	२१	१०	२२	४४	४१	गुरु उ.षा. १ में ५८/२२, शनि प्रदोष व्रत,
अवम		१३	श.	५९	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२९	४	१४	र.	५०	४८	आश्ले. मघा	० ५३	१५ ३२	सु.	३६	५	ग.	२५	६	२५	८	१८	१२	सिंह	०	१५	६	४४	१८	२२	१०	२३	४४	४१	भ. ५०/४८ बाद,
२९	९	१५	चं.	४१	२५	पू.फा.	४६	२	धृ.	२५	३३	वि.	१६	६	२६	९	१९	१३	कन्या	५९	५	६	४३	१८	२३	१०	२४	४४	४०	भ. १६/६ तक, होलिका दहन (प्रदोष में), होलाष्टक (D)

(A) जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, (B) मंगल पू.षा. में १५/३७, (C) व्रत (स.), (D) समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	८	१०	८	०	९	२	८
१८	२०	१६	६	२५	३	४	१०	१०
४४	४१	३३	५४	४६	३१	१३	४९	४९
११	२७	५६	२८	३६	११	२४	३५	३५
६०	७६६	४१	४४	१०	६६	५	३	३
८	५४	२८	१२	४९	१४	४२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	१	१	४	२	३	२	४
शत.	रोहि.	पू.षा.	शत.	पू.षा.	अश्वि.	उ.षा.	आर्द्रा	मूल

कुण्डली सूर्योदय (३ मार्च)

लोकभविष्य—मेषस्थ शुक्र जन-जीवनोपयोगी चीजों में तेजी करे—"दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य-महर्घता।" सरकार को सभी आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता के लिए विवश करे, क्योंकि शुक्र पर गुरु की दृष्टि है। शनि-राहु का षडष्टक एवं मंगल-राहु का समसप्तक भी आकालिक वर्षा किंवा अनेकत्र दुर्भिक्ष आदि की स्थिति से परेशान करे। प्राकृतिक प्रकोप उग्रवादजन्य परेशानी का भी सामना करना पड़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में वायदा व्यापारिक चीजों में तेजी बनेगी। चांदी में घटाबढ़ी, पशमीना, ऊन, रुई, कपास, गुड़ तेज रहें। २७ फरवरी को बाजार मन्दे रहें, स्टॉक करें। २८ फरवरी को सभी अनाज, घी तेज हों, सोना, चांदी में अच्छी तेजी का झटका आयेगा। गुड़, शक्कर, ऊन, तेल, घी, तिलहन में कुछ मन्दी के बाद ३ मार्च के लगभग अच्छी तेजी बने। ४ से ८ मार्च के बाद लगभग तक गुड़, खाण्ड, तिल एवं दालवाना आदि में तेजी रहेगी।

आकाशलक्षण—फरवरी २७, २८, मार्च २, ३, ४, ७ एवं ८, ९ मार्च को आसाम, महाराष्ट्र, प. राजस्थान, कश्मीर, हि.प्र. में हवा के जोर के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में ग़र्मी अनुभव होने लगेगी।

कुण्डली सूर्योदय (९ मार्च)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	८	१०	८	०	९	२	८
२४	१४	२०	४	२६	१०	४	१०	१०
४४	११	४२	८	५०	४	४६	३०	३०
४०	१	५७	५७	४	४७	४४	३०	३०
५९	१०६	४१	४	१०	६४	५	३	३
५७	०	३३	१०	१३	३९	२१	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	१	३	४	१	४	३	२	४
पू.भा.	पू.फा.	पू.षा.	धनि.	उ.षा.	अश्वि.	उ.षा.	आर्द्रा	मूल

श्री वि.सं. २०७६, शाक १९४१, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(१० से २४ मार्च, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः बुध पूर्व क्षितिज से ऊपर, शनि पूर्वकपाल में और मंगल-गुरु इससे ऊपर उठे होंगे। सायं शुक्र पश्चिम में होगा। १९ मार्च की प्रातः चन्द्र-शनि को परस्पर समीपस्थ देखिये।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	मार्च	फाल्गुन	रज्जब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	१३	१	मं.	३१	४३	उ.फा.	३८	१७	शू.	१४	३९	बा.	६	३४	२७	१०	२०	१४	कन्या			६	४२	१८	२३	१०	२५	४४	३७	बुध मार्गी ६/३३, वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
२९	१८	२	बु.	२२	११	हस्त	३०	४६	गं. वृ.	३ ५३	४५ १२	ग.	२२	११	२८	११	२१	१५	तुला	५७	१३	६	४१	१८	२४	१०	२६	४४	३१	भ. ४७/४३ बाद, शुक्र भर. में ५९/३, यूरेनस अश्वि. (A)
२९	२३	३	गु.	१३	१८	चित्रा	२३	५८	ध्रु.	४३	२८	वि.	१३	१८	२९	१२	२२	१६	तुला			६	४०	१८	२५	१०	२७	४४	२४	भ. १३/१८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, मेला श्री शीतला (B)
२९	२७	४	शु.	५	३०	स्वा.	१८	२१	व्या.	३४	४८	बा.	५	३०	३०	१३	२३	१७	तुला			६	३९	१८	२५	१०	२८	४४	१५	
अवम		५	शु.	५९	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२९	३२	६	श.	५४	३०	विशा.	१४	१६	ह.	२७	२८	ग.	२६	४८	चै.१	१४	२४	१८	वृश्चिक	०	५	६	३७	१८	२६	१०	२९	४४	५	भ. ५४/३० बाद, सं. सूर्य मीन में १३/९, मु. ४५, (C)
२९	३७	७	र.	५१	४८	अनु.	११	५७	व.	२१	३८	वि.	२३	९	२	१५	२५	१९	वृश्चिक			६	३६	१८	२७	११	०	४३	५२	भ. २३/९ तक,
२९	४१	८	चं.	५१	२	ज्येष्ठा	११	३३	सि.	१७	२०	बा.	२१	२५	३	१६	२६	२०	धनु	११	३३	६	३५	१८	२७	११	१	४३	३८	शीतला पूजन, श्रीशीतलाष्टमी,
२९	४६	९	मं.	५२	५	मूल	१३	०	व्य.	१४	३१	तै.	२१	३३	४	१७	२७	२१	धनु			६	३४	१८	२८	११	२	४३	२२	सूर्य उ.भा. में ३४/७, मंगल उ.षा. में ३२/१६, बुध शत. (D)
२९	५१	१०	बु.	५४	४४	पू.षा.	१६	१०	व.	१३	४	व.	२३	२४	५	१८	२८	२२	मकर	३२	११	६	३२	१८	२९	११	३	४३	५	भ. २३/२४ से ५४/४४ तक, राहु आर्द्रा १, केतु मूल ३ (E)
२९	५६	११	गु.	५८	४१	उ.षा.	२०	४५	प.	१२	४६	ब.	२६	४२	६	१९	२९	२३	मकर			६	३१	१८	२९	११	४	४२	४५	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ 18),
३०	०	१२	शु.	६०	०	श्रव.	२६	२६	शि.	१३	२३	कौ.	३१	९	७	२०	३०	२४	कुम्भ	५९	३५	६	३०	१८	३०	११	५	४२	२५	पंचक प्रारम्भ ५९/३५, सूर्य सायन मेष में ७/३, उत्तरगोल (F)
३०	५	१२	श.	३	३७	धनि.	३२	५६	सि.	१४	४१	तै.	३	३७	८	२१	चै.१	२५	कुम्भ			६	२९	१८	३१	११	६	४२	२	महावारुणी पर्व (१९ घं. ४० मि. बाद), शनि प्रदोष व्रत, (G)
३०	१०	१३	र.	९	११	शत.	३९	५७	सा.	१६	२६	व.	९	११	९	२२	२	२६	कुम्भ			६	२७	१८	३१	११	७	४१	३७	भ. ९/११ से ४२/११ तक, मंगल मकर में २०/३३, (H)
३०	१४	१४	चं.	१५	१०	पू.भा.	४७	१६	शु.	१८	२९	श.	१५	१०	१०	२३	३	२७	मीन	३०	२६	६	२६	१८	३२	११	८	४१	११	
३०	१९	३०	मं.	२१	२२	उ.भा.	५४	४३	शु.	२०	४३	ना.	२१	२२	११	२४	४	२८	मीन			६	२५	१८	३३	११	९	४०	४३	शुक्र कृत्ति. में ५७/३४, भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर (I)

(A) ४ में २३/४५, (B) माता कुराली (पंजाब), (C) पुण्यकाल १८ घं. १८ मि. तक, (D) में ३६/३०, (E) में ३३/१५, (F) प्रारम्भ, महाविषुव दिन, पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.), (G) शक चैत्र (संवत् १९४२) प्रारम्भ, (H) वारुणी पर्व (१० घं. ०८ मि. तक), मेला पिहोवातीर्थ (हरि.), (I) २०७६ वि. पूर्ण,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	८	१०	८	०	९	२	८
१	२६	२५	५	२७	१७	५	१०	१०
४३	५०	३४	४१	५९	३१	२२	८	८
३८	५१	६	३१	२३	४	५१	१५	१५
५९	७८	४१	३३	९	६२	४	३	३
४५	२२	३८	३८	२७	२९	५३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१६ मार्च)

१ शु. | बु. ११ | १२ सू. | १० श. | २ | ३ रा. | ९ मं. गु. के. | ४ | ६ | ८ चं. | ५ | ७

लोकभविष्य—इस चन्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार हैं। अतः कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो, पश्चिमी देशों में कहीं युद्धात्मक स्थिति बने। संवतान्त में शनि-मंगल की मकर राशि में स्थिति कहीं दुर्भिक्ष, प्राकृतिक प्रकोप किंवा कहीं यान-दुर्घटना व हत्याकाण्ड से हानि करे—"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष-कारकौ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—११ से १३ मार्च तक रुई, रेशम, तेल, तिलहन, कपूर, सोना, चांदी, घी, दालवाना में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। १४, १७, १८ मार्च के लगभग तेल, घी, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावलादि सभी अनाज तेजी के बाद मन्दे हों।

नोट—इस समय मन्दी में माल पकड़ें, आगे लाभ होगा।

आगे २४ मार्च के लगभग वायदा एवं हाजर व्यापार में तेजी से उत्तम लाभ होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२४ मार्च)

१ शु. | बु. ११ | १२ सू. चं. | १० मं. श. | २ | ३ रा. | ९ गु. के. | ४ | ६ | ८ | ५ | ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	९	१०	८	०	९	२	८
९	५	९	११	२९	२५	६	९	९
४०	२३	७	५५	११	४०	०	४२	४२
४३	२२	२७	२१	४१	४२	२	५०	५०
५९	[illegible]	४४	६०	८	५९	४	३	३
२१	०	४२	५९	२९	२६	१९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाशलक्षण—मार्च ११, १४, १७, १८, १९, २२, २३, २४, २८, २९ एवं ३१ मार्च को कश्मीर, हि.प्र., प. राजस्थान, पाण्डीचेरी एवं महाराष्ट्र के कुछ भागों में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा सम्भव है। उत्तरी भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगेगा।

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	11	मं.	25	28	स्वाती	8	43	धृ.	26	40	वृश्चिक	27	22	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	बुध मूल धनु में 9/50, शुक्र वृश्चिक में 20/41, सफला एकादशी (A)
	2	12	बु.	26	10	विशा.	9	39	शू.	26	3	वृश्चिक			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	नेप्च्यून पू.भा. 1 में 24/0,
	3	13	गु.	27	21	अनु.	11	3	गं.	25	46	वृश्चिक			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	भ. 27/21 बाद, राहु पुन. 4, केतु उ.षा. 2 में 11/54, प्रदोष व्रत,
	4	14	शु.	28	57	ज्येष्ठा	12	53	वृ.	25	50	धनु	12	53	7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	भ. 16/09 तक, शुक्र अनु. में 28/46,
	5	30	श.	30	58	मूल	15	7	ध्रु.	26	11	धनु			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	शनैश्चरी अमा,
पौष शुक्ल	6	1	र.	—	—	पू.षा.	17	42	व्या.	26	48	मकर	24	24	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, यूरेनस मार्गी 25/58, प्लूटो उ.षा. 1 में 19/43,
	7	1	चं.	9	18	उ.षा.	20	35	ह.	27	37	मकर			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	चन्द्रदर्शन, मु. 45,
	8	2	मं.	11	54	श्रवण	23	40	व.	28	34	मकर			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	3	बु.	14	38	धनि.	26	49	सि.	29	34	कुम्भ	13	14	7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 28/00 बाद, पंचक प्रारम्भ 13/14, बुध पू.षा. में 31/9, (B)
	10	4	गु.	17	22	शत.	29	54	व्य.	30	29	कुम्भ			7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 17/22 तक,
	11	5	शु.	19	54	पू.भा.	—	—	व.	31	12	मीन	26	2	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 13/20,
	12	6	श.	22	5	पू.भा.	8	43	प.	—	—	मीन			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	गुरु ज्येष्ठा 2 में 16/37,
	13	7	र.	23	42	उ.भा.	11	5	प.	7	34	मीन			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 23/42 बाद, अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, लोहड़ी (C)
	14	8	चं.	24	37	रेवती	12	52	शि./ सि.	7 30	30 52	मेष	12	52	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	4°	17	24	14	भ. 12/10 तक, पंचक समाप्त 12/52, सं. सूर्य मकर में 19/51, (D)
	15	9	मं.	24	45	अश्वि.	13	55	सा.	29	37	मेष			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	पोंगल (द.भा.),
	16	10	बु.	24	3	भरणी	14	12	शु.	27	43	वृष	20	8	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	52	6	49	17	26	16	मंगल रेवती में 31/19,
	17	11	गु.	22	34	कृत्ति.	13	40	शु.	25	13	वृष			7	24	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 11/18 से 22/34 तक, शुक्र ज्येष्ठा में 21/55, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	18	12	शु.	20	22	रोहि.	12	25	ब्र.	22	9	मिथुन	23	32	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	बुध उ.षा. में 19/24, प्रदोष व्रत,
	19	13	श.	17	34	मृग.	10	31	ऐं.	18	36	मिथुन			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	शनि उदित 7/24,
	20	14	र.	14	19	आर्द्रा/ पुन.	8 29	7 22	वै.	14	42	कर्क	24	5	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	भ. 14/19 से 24/33 तक, बुध मकर में 21/5, सूर्य सायन कुम्भ (E)
	21	15/ 1	चं.	10 31	46 5	पुष्य	26	27	वि./ प्री.	10 30	33 17	कर्क			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	22	2	मं.	27	26	आश्ले.	23	31	आ.	26	3	सिंह	23	31	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	23	3	बु.	23	59	मघा	20	46	सौ.	21	58	सिंह			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 13/42 से 23/59 तक,
	24	4	गु.	20	54	पू.फा.	18	21	शो.	18	11	कन्या	23	49	7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रवण में 15/41, शनि पू.षा. 3 में 17/25, श्रीगणेश(संकष्ट) (F)
	25	5	शु.	18	18	उ.फा.	16	24	अ.	14	46	कन्या			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	6	श.	16	19	हस्त	15	4	सु.	11	51	तुला	26	39	7	21	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भ. 16/19 से 27/41 तक, बुध श्रवण में 22/35, भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	7	र.	15	2	चित्रा	14	24	धृ.	9	28	तुला			7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	
	28	8	चं.	14	29	स्वाती	14	28	शू./ गं.	7 30	40 26	तुला			7	21	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	
	29	9	मं.	14	41	विशा.	15	14	वृ.	29	45	वृश्चिक	8	58	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 27/07 बाद, शुक्र मूल धनु में 23/28,
	30	10	बु.	15	33	अनु.	16	40	ध्रु.	29	34	वृश्चिक			7	19	17	52	7	15	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	भ. 15/33 तक गुरु ज्येष्ठा 3 में 9/55,
	31	11	गु.	17	2	ज्येष्ठा	18	40	व्या.	29	46	धनु	18	40	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	45	17	37	31	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),

(A) व्रत (स.), इंग्लिश नववर्ष सन् 2019 ई. प्रारम्भ, **(B)** बुध पूर्व में अस्त 7/25, **(C)** (पं., हरि., ज.क.), **(D)** मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद और अगले दिन मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, **(E)** में 14/29, श्रीसत्यनारायण व्रत, **(F)** चतुर्थी व्रत,

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	12	शु.	18	59	मूल	21	7	ह.	30	18	धनु			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	
	2	13	श.	21	19	पू.षा.	23	54	व.	31	3	मकर	30	38	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	भ. 21/19 बाद, शनिप्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
	3	14	र.	23	52	उ.षा.	26	54	सि.	—	—	मकर			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 10/36 तक, बुध धनि. में 16/21,
	4	30	चं.	26	33	श्रवण	30	1	सि.	7	57	मकर			7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	मौनी अमा, सोमवती अमा., अर्धकुम्भ (प्रयागराज) (A)
माघ शुक्ल	5	1	मं.	29	15	धनि.	—	—	व्य.	8	55	कुम्भ	19	34	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 19/34, मंगल अश्विनी मेष (B)
	6	2	बु.	—	—	धनि.	9	7	व.	9	53	कुम्भ			7	15	17	58	7	10	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	चन्द्रदर्शन, मु. 15, सूर्य धनि. में 18/47, [अर्द्धकुम्भ पर्व- प्रयागराज-4 फरवरी]
	7	2	गु.	7	52	शत.	12	8	प.	10	47	कुम्भ			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	बुध कुम्भ में 10/10,
	8	3	शु.	10	18	पू.भा.	14	58	शि.	11	31	मीन	8	17	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 23/22 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी), वरद/तिल/कुन्द चतुर्थी,
	9	4	श.	12	26	उ.भा.	17	30	सि.	12	3	मीन			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 12/26 तक, श्री(लक्ष्मी) पंचमी, वसन्त पंचमी, (C)
	10	5	र.	14	9	रेवती	19	37	सा.	12	16	मेष	19	37	7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	पंचक समाप्त 19/37, बुध शत. में 26/46, शुक्र पू.षा. में 15/52,
	11	6	चं.	15	20	अश्वि.	21	12	शु.	12	5	मेष			7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	
	12	7	मं.	15	54	भरणी	22	10	शु.	11	27	वृष	28	18	7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 15/54 से 27/50 तक, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (D)
	13	8	बु.	15	46	कृत्ति.	22	27	ब्र.	10	17	वृष			7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 8/48, मु. 30, पुण्यकाल 14/48 तक, भीष्माष्टमी,
	14	9	गु.	14	54	रोहि.	22	1	ऐं./	8	33	वृष			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	नवरात्र समाप्त,
									वै.	30	14																					
	15	10	शु.	13	18	मृग.	20	52	वि.	27	22	मिथुन	9	31	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	भ. 24/10 बाद, बुध पश्चिम में उदित 18/6, नवरात्र-पारणा,
	16	11	श.	11	2	आर्द्रा	19	5	प्री.	24	0	मिथुन			7	7	18	7	7	3	18	8	7	7	18	15	6	36	17	48	16	भ. 11/02 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
	17	12/	र.	8	10	पुन.	16	45	आ.	20	12	कर्क	11	23	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	प्रदोष व्रत,
		13		28	50																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	18	14	चं.	25	11	पुष्य	14	1	सौ.	16	6	कर्क			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	76	34	17	49	18	भ. 25/11 बाद, बुध पू.भा. में 15/20, सूर्य सायन मीन में 28/34, (E)
	19	15	मं.	21	23	आश्ले.	11	2	शो.	11	48	सिंह	11	2	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	भ. 11/17 तक, सूर्य शत. में 23/18, माघी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण (F)
फाल्गुन कृष्ण	20	1	बु.	17	36	मघा/	7	59	अ./	7	27	सिंह			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु ज्येष्ठा 4 में 15/40,
						पू.फा.	29	3	सु.	27	12																					
	21	2	गु.	14	2	उ.फा.	26	26	धृ.	23	11	कन्या	10	22	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 24/26 बाद, शुक्र उ.षा. में 26/42,
	22	3	शु.	10	50	हस्त	24	17	शू.	19	32	कन्या			7	1	18	11	6	58	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	भ. 10/50 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	23	4/	श.	8	11	चित्रा	22	47	गं.	16	24	तुला	11	26	7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	
		5		30	13																											पंचमी तिथिक्षय,
	24	6	र.	29	4	स्वाती	22	2	वृ.	13	51	तुला			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	भ. 29/4 बाद, शुक्र मकर में 22/45,
	25	7	चं.	28	47	विशा.	22	7	ध्रु.	11	58	वृश्चिक	16	1	6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 16/56 तक, मंगल भरणी में 17/37, बुध मीन में 8/59, (G)
	26	8	मं.	29	21	अनु.	23	3	व्या.	10	45	वृश्चिक			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	
	27	9	बु.	30	41	ज्येष्ठा	24	45	ह.	10	12	धनु	24	45	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	
	28	10	गु.	—	—	मूल	27	6	व.	10	13	धनु			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 19/40 बाद, बुध उ.भा. में 16/8,

(A) महोदय योग (7/57 बाद), (B) में 23/49, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, ⟵⟶ (C) श्री लक्ष्मी/सरस्वती-पूजन, (D) आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव, (E) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (F) व्रत, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त, (G) शनि पू.भा. 4 में 23/50.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन कृष्ण	1	10	शु.	8	39	पू.षा.	29	54	सि.	10	42	धनु			6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	भ. 8/39 तक,
	2	11	श.	11	4	उ.षा.	—	—	व्य.	11	30	मकर	12	39	6	52	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	विजया एकादशी व्रत (स.),
	3	12	र.	13	44	उ.षा.	8	59	व.	12	29	मकर			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	प्रदोष व्रत,
	4	13	चं.	16	28	श्रवण	12	10	प.	13	32	कुम्भ	25	44	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 16/28 से 29/48 तक, पंचक प्रारम्भ 25/44, सूर्य पू.भा. में 29/36, (A)
	5	14	मं.	19	7	धनि.	15	16	शि.	14	31	कुम्भ			6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	बुध वक्री 23/49, शुक्र श्रवण में 9/41,
	6	30	बु.	21	34	शत.	18	12	सि.	15	22	कुम्भ			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	
फाल्गुन शुक्ल	7	1	गु.	23	44	पू.भा.	20	53	सा.	16	2	मीन	14	15	6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, राहु पुन. 3 मिथुन, केतु उ.षा. 1 धनु में (B)
	8	2	शु.	25	34	उ.भा.	23	16	शु.	16	27	मीन			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	चन्द्रदर्शन, मु. 45, अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	9	3	श.	27	2	रेवती	25	18	शु.	16	37	मेष	25	18	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	पंचक समाप्त 25/18,
	10	4	र.	28	6	अश्वि.	26	57	ब्र.	16	30	मेष			6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	16	18	0	10	भ. 15/34 से 28/06 तक,
	11	5	चं.	28	43	भरणी	28	9	ऐं.	16	2	मेष			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	वक्री बुध पू.भा. में 12/44,
	12	6	मं.	28	50	कृत्ति.	28	53	वै.	15	13	वृष	10	23	6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	14	18	1	12	
	13	7	बु.	28	23	रोहि.	29	4	वि.	13	59	वृष			6	39	18	25	6	37	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	भ. 28/23 बाद,
	14	8	गु.	27	21	मृग.	28	42	प्री.	12	19	मिथुन	16	57	6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	2	14	भ. 15/52 तक, सं. सूर्य मीन में 29/40, मु. 15, पुण्यकाल अगले (C)
	15	9	शु.	25	44	आर्द्रा	27	44	आ.	10	11	मिथुन			6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	वक्री बुध कुम्भ में 8/58,
	16	10	श.	23	33	पुन.	26	13	सौ./	7	34	कर्क	20	38	6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	शुक्र धनिष्ठा में 14/10,
									शो.	28	31																					
	17	11	र.	20	51	पुष्य	24	11	अ.	25	4	कर्क			6	35	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	भ. 10/12 से 20/51 तक, मंगल कृत्तिका में 15/0, आमला एकादशी व्रत (स.),
	18	12	चं.	17	43	आश्ले.	21	46	सु.	21	17	सिंह	21	46	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 14/0, गोविन्द द्वादशी, सोमप्रदोष व्रत,
	19	13	मं.	14	18	मघा	19	4	धृ.	17	16	सिंह			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	
	20	14	बु.	10	45	पू.फा.	16	17	शू.	13	10	कन्या	21	35	6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 10/45 से 20/58 तक, सूर्य सायन मेष में 27/28, उत्तरगोल (D)
	21	15/	गु.	7	12	उ.फा.	13	33	गं./	9	6	कन्या			6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	शुक्र कुम्भ में 27/45, होलाष्टक समाप्त, वसन्तोत्सव, होला महल्ला (E)
चैत्र कृष्ण		1		27	52				वृ.	29	13																					चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	22	2	शु.	24	55	हस्त	11	6	ध्रु.	25	40	तुला	22	1	6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	मंगल वृष में 15/6, यूरेनस अश्विनी 3 में 20/58, बुध पूर्व में उदित (F)
	23	3	श.	22	32	चित्रा	9	5	व्या.	22	35	तुला			6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	23	भ. 11/43 से 22/32 तक,
	24	4	र.	20	51	स्वाती	7	41	ह.	20	4	वृश्चिक	25	8	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	24	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	25	5	चं.	20	0	विशा.	7	3	व.	18	12	वृश्चिक			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	25	
	26	6	मं.	20	2	अनु.	7	15	सि.	17	3	वृश्चिक			6	23	18	33	6	23	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	भ. 20/2 बाद,
	27	7	बु.	20	55	ज्येष्ठा	8	18	व्य.	16	34	धनु	8	18	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	भ. 8/29 तक, शुक्र शत. में 16/57,
	28	8	गु.	22	34	मूल	10	10	व.	16	41	धनु			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	बुध मार्गी 19/29, श्री शीतलाष्टमी, मेला शीतला माता (कुराली) पं.,
	29	9	शु.	24	48	पू.षा.	12	40	प.	17	17	मकर	19	22	6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	गुरु मूल 1 धनु में 20/5,
	30	10	श.	27	23	उ.षा.	15	37	शि.	18	11	मकर			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	भ. 14/05 से 27/23 तक,
	31	11	र.	30	4	श्रवण	18	46	सि.	19	14	मकर			6	17	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	सूर्य रेवती में 24/53, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.),

होलाष्टक 14 से 21 मार्च

(A) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग 13/32 बाद), (B) 9/36, बुध पश्चिम में अस्त 18/21, (C) दिन मध्याह्न तक, होलाष्टक प्रारम्भ, (D) प्रारम्भ, महाविषुव दिन, होलिकादहन (20/58 बाद), श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (F) 6/28, शक संवत्सर 1941 प्रारम्भ,

श्री वि. सं. 2075-76 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अप्रैल, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	12	चं.	—	—	धनि.	21	54	सा.	20	17	कुम्भ	8	21	6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	पंचक प्रारम्भ 8/21, पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
	2	12	मं.	8	38	शत.	24	49	शु.	21	9	कुम्भ			6	15	18	38	6	14	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	2	वारुणी योग (08/38 से सूर्यास्त तक), भौमप्रदोष व्रत,
	3	13	बु.	10	56	पू.भा.	27	24	शु.	21	47	मीन	20	47	6	14	18	38	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	भ. 10/56 से 23/53 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	4	14	गु.	12	51	उ.भा.	29	36	ब्र.	22	6	मीन			6	12	18	39	6	12	18	37	6	19	18	41	5	51	18	12	4	
	5	30	शु.	14	20	रेवती	—	—	ऐं.	22	6	मीन			6	11	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	5	चान्द्र संवत्सर 2075 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	6	1	श.	15	23	रेवती	7	22	वै.	21	46	मेष	7	22	6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	49	18	13	6	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक समाप्त 7/22, (A)
	7	2	र.	16	1	अश्वि.	8	44	वि.	21	7	मेष			6	9	18	41	6	9	18	38	6	15	18	43	5	48	18	13	7	शुक्र पू.भा. में 18/27,
	8	3	चं.	16	16	भरणी	9	42	प्री.	20	10	वृष	15	53	6	8	18	42	6	8	18	39	6	14	18	43	5	47	18	13	8	भ. 28/11 बाद, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,
	9	4	मं.	16	7	कृत्ति.	10	19	आ.	18	55	वृष			6	6	18	42	6	7	18	39	6	13	18	44	5	46	18	14	9	भ. 16/07 तक, श्री/लक्ष्मी पंचमी (देखें पृ. 13), हय-व्रत, (B)
	10	5	बु.	15	36	रोहि.	10	33	सौ.	17	22	मिथुन	22	32	6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	44	5	45	18	14	10	गुरु वक्री 22/31, नागपंचमी (देखें पृ. 13), स्कन्द षष्ठी (देखें पृ.13)
	11	6	गु.	14	42	मृग.	10	25	शो.	15	32	मिथुन			6	4	18	43	6	4	18	40	6	11	18	45	5	44	18	15	11	बुध मीन में 28/21, नेप्च्यून पू.भा. 2 में 23/19,
	12	7	शु.	13	24	आर्द्रा	9	53	अ.	13	22	कर्क	27	14	6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	12	भ. 13/24 से 24/32 तक,
	13	8	श.	11	41	पुन.	8	58	सु.	10	53	कर्क			6	2	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	42	18	16	13	श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, रामनवमी (देखें पृ. 13),
	14	9	र.	9	36	पुष्य/	7	39	धृ./	8	4	सिंह	29	59	6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	14	सं. सूर्य अश्वि. मेष में 14/9, मु. 15, पुण्यकाल प्रात: 7 घं. 45 मि. (C)
						आश्ले.	29	59	शू.	28	59																					
	15	10/	चं.	7	8	मघा	28	1	गं.	25	38	सिंह			6	0	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	17	15	भ. 17/45 से 28/23 तक, बुध उ.भा. में 7/28, शुक्र मीन में 25/4, (D)
		11		28	23																											एकादशी तिथिक्षय,
	16	12	मं.	25	26	पू.फा.	25	50	वृ.	22	7	सिंह			5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	श्रीविष्णु दमनोत्सव, कामदा एकादशी व्रत (वै.)(देखें पृ. 13)
	17	13	बु.	22	24	उ.फा.	23	35	ध्रु.	18	30	कन्या	7	16	5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	अनंग त्रयोदशी, ←→ श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), प्रदोष (E)
	18	14	गु.	19	26	हस्त	21	25	व्या.	14	56	कन्या			5	56	18	48	5	57	18	44	6	4	18	48	5	37	18	18	18	भ. 19/26 बाद, शुक्र उ.भा. में 19/12, दमनक चतुर्दशी, (F)
	19	15	शु.	16	42	चित्रा	19	29	ह.	11	32	तुला	8	24	5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	18	19	भ. 6/4 तक, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ,
वैशाख कृष्ण	20	1	श.	14	21	स्वाती	17	58	व./	8	24	तुला			5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	49	5	35	18	19	20	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन वृष में 14/25, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
									सि.	29	42																					
	21	2	र.	12	32	विशा.	17	0	व्य.	27	30	वृश्चिक	11	11	5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	19	21	भ. 23/58 बाद, अगस्त्य अस्त,
	22	3	चं.	11	25	अनु.	16	45	व.	25	55	वृश्चिक			5	52	18	50	5	53	18	47	6	0	18	50	5	33	18	20	22	भ. 11/25 तक, वक्री गुरु ज्येष्ठा 4/वृश्चिक में 25/11, (G)
	23	4	मं.	11	4	ज्येष्ठा	17	16	प.	24	58	धनु	17	16	5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	32	18	20	23	
	24	5	बु.	11	32	मूल	18	35	शि.	24	39	धनु			5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	24	प्लूटो वक्री 24/15,
	25	6	गु.	12	46	पू.षा.	20	37	सि.	24	53	मकर	27	13	5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	25	भ. 12/46 से 25/43 तक, बुध रेवती में 10/32,
	26	7	शु.	14	40	उ.षा.	23	14	सा.	25	33	मकर			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	मंगल मृग. में 25/3,
	27	8	श.	17	1	श्रव.	26	12	शु.	26	30	मकर			5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	
	28	9	र.	19	34	धनि.	29	17	शु.	27	31	कुम्भ	15	45	5	46	18	54	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	पंचक प्रारम्भ 15/45, सूर्य भरणी में 6/3,
	29	10	चं.	22	4	शत.	—	—	ब्र.	28	27	कुम्भ			5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	28	18	23	29	भ. 8/49 से 22/04 तक, शुक्र रेवती में 19/22,
	30	11	मं.	24	18	शत.	8	14	ऐं.	29	9	मीन	28	14	5	44	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	27	18	24	30	शनि वक्री 6/24, वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्री वल्लभाचार्य (H)

(A) मंगल रोहिणी में 17/21, चान्द्र संवत्सर 2076 वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, (B) (चतर्थीविद्धा पंचमी में), (C) बाद, नवमी-नवरात्र व्रत, नवरात्र समाप्त, वैशाखी (पं., हरि., हि.प्र.), (D) कामदा एकादशी व्रत (स्मा.)(देखें पृ. 13), दोलोत्सव, नवरात्र-पारणा, (E) व्रत, ←——→ (F) श्री हनुमान जयन्ती (द.भा.) (देखें पृ. 13), श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 14), श्रीशिव-दमनोत्सव, (G) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (H) जयन्ती

श्री वि. सं. 2076 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **मई, सन् 2019 ई.**

मास पक्ष	मु.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा.कृ.	1	12	बु.	26	5	पू.भा.	10	52	वै.	29	29	मीन			5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	
	2	13	गु.	27	21	उ.भा.	13	1	वि.	29	26	मीन			5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	भ. 27/21 बाद, प्रदोष व्रत,
	3	14	शु.	28	4	रेवती	14	39	प्री.	28	57	मेष	14	39	5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	3	भ. 15/43 तक, पंचक समाप्त 14/39, बुध अश्वि. मेष में 16/59,
	4	30	श.	28	15	अश्वि.	15	46	आ.	28	3	मेष			5	40	18	58	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	शनैश्चरी अमा,
वैशाख शुक्ल	5	1	र.	27	59	भरणी	16	24	सौ.	26	47	वृष	22	29	5	40	18	59	5	41	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	5	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	6	2	चं.	27	18	कृत्ति.	16	36	शो.	25	13	वृष			5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	6	चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीशिवाजी जयन्ती,
	7	3	मं.	26	17	रोहि.	16	27	अ.	23	21	मिथुन	28	15	5	38	19	0	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	मंगल मिथुन में 6/54, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया,
	8	4	बु.	24	59	मृग.	15	59	सु.	21	17	मिथुन			5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	8	भ. 13/38 से 24/59 तक,
	9	5	गु.	23	27	आर्द्रा	15	17	धृ.	19	0	मिथुन			5	36	19	2	5	39	18	57	5	47	19	0	5	21	18	28	9	राहु पुन. 2, केतु पू.षा. 4 में 7/34, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	10	6	शु.	21	41	पुन.	14	21	शू.	16	32	कर्क	8	36	5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	10	बुध भर. में 22/7, शुक्र अश्वि. मेष में 19/5, बुध पूर्व में अस्त (A)
	11	7	श.	19	44	पुष्य	13	13	गं.	13	55	कर्क			5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	19	18	29	11	भ. 19/44 बाद, सूर्य कृत्तिका में 24/7, श्रीगंगा जन्म,
	12	8	र.	17	37	आश्ले.	11	54	वृ.	11	9	सिंह	11	54	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	भ. 6/41 तक,
	13	9	चं.	15	21	मघा	10	27	धृ./	8	16	सिंह			5	33	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	श्रीजानकी जयन्ती,
									व्या.	29	17																					
	14	10	मं.	12	59	पू.फा.	8	52	ह.	26	15	कन्या	14	28	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	14	भ. 23/47 बाद,
	15	11	बु.	10	36	उ.फा.	7	16	व.	23	15	कन्या			5	32	19	6	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	15	भ. 10/36 तक, सं. सूर्य वृष में 11/1, मु. 30, पुण्यकाल 17/25 (B)
	16	12	गु.	8	15	हस्त/	5	41	सि.	20	20	तुला	16	57	5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	प्रदोष व्रत,
						चित्रा	28	16																								
	17	13/	शु.	6	5	स्वाती	27	7	व्य.	17	36	तुला			5	31	19	7	5	34	19	2	5	42	19	4	5	16	18	32	17	भ. 28/11 बाद, मंगल आर्द्रा में 14/0, बुध कृत्ति. में 10/16, (C)
		14		28	11																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	18	15	श.	26	41	विशा.	26	21	व.	15	9	वृश्चिक	20	30	5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	भ. 15/26 तक, बुध वृष में 23/33, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध (D)
ज्येष्ठ कृष्ण	19	1	र.	25	43	अनु.	26	7	प.	13	5	वृश्चिक			5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	19	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	20	2	चं.	25	21	ज्येष्ठा	26	29	शि.	11	28	धनु	26	29	5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	20	
	21	3	मं.	25	40	मूल	27	31	सि.	10	23	धनु			5	29	19	9	5	31	19	4	5	40	19	6	5	15	18	34	21	भ. 13/31 से 25/40 तक, शुक्र भरणी में 18/33, यूरेनस अश्वि. (E)
	22	4	बु.	26	41	पू.षा.	29	12	सा.	9	50	धनु			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	23	5	गु.	28	18	उ.षा.	—	—	शु.	9	48	मकर	11	44	5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	23	बुध रोहिणी में 13/28,
	24	6	शु.	—	—	उ.षा.	7	30	शु.	10	14	मकर			5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	
	25	6	श.	6	25	श्रव.	10	14	ब्र.	11	0	कुम्भ	23	43	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	25	भ. 6/25 से 19/37 तक, पंचक प्रारम्भ 23/43, सूर्य रोहि. में 20/26,
	26	7	र.	8	49	धनि.	13	13	ऐं.	11	58	कुम्भ			5	26	19	13	5	29	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	26	
	27	8	चं.	11	16	शत.	16	12	वै.	12	56	कुम्भ			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	27	
	28	9	मं.	13	31	पू.भा.	18	58	वि.	13	45	मीन	12	18	5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 26/26 बाद,
	29	10	बु.	15	21	उ.भा.	21	17	प्री.	14	15	मीन			5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	29	भ. 15/21 तक, बुध मृग. में 17/54,
	30	11	गु.	16	38	रेवती	23	3	आ.	14	19	मेष	23	3	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	पंचक समाप्त 23/3, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली (F)
	31	12	शु.	17	17	अश्वि.	24	11	सौ.	13	54	मेष			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	31	वक्री गुरु ज्येष्ठा 3 में 11/5, प्रदोष व्रत,

(A) 5/35, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, (B) तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीनृसिंह जयन्ती, (D) पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीकूर्म जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) 4 में 17/4, सूर्य सायन मिथुन में 13/28, (F) एकादशी (पं.),

श्री वि. सं. 2076 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जून, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	दि.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्ये.कृ.	1	13	श.	17	17	भरणी	24	42	शो.	12	59	मेष			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	1	भ. 17/17 से 28/59 तक, बुध मिथुन में 24/19, शुक्र कृत्ति. में 17/37,
	2	14	र.	16	40	कृत्ति.	24	38	अ.	11	34	वृष	6	44	5	24	19	16	5	28	19	11	5	37	19	12	5	11	18	40	2	बुध पश्चिम में उदित 19/16,
	3	30	चं.	15	32	रोहि.	24	5	सु.	9	42	वृष			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	वटसावित्री व्रत (अमापक्ष) (देखें पृ. 14), सोमवती अमा, (A)
ज्येष्ठ शुक्ल	4	1	मं.	13	57	मृग.	23	8	धृ./	7	29	मिथुन	11	39	5	24	19	18	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	4	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र वृष में 11/20,
									शू.	28	58																					
	5	2	बु.	12	3	आर्द्रा	21	54	गं.	26	14	मिथुन			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	बुध आर्द्रा में 11/51, रम्भा तृतीया (देखें पृ. 14),
	6	3	गु.	9	55	पुन.	20	28	वृ.	23	21	कर्क	14	50	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	भ. 20/46 बाद, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),
	7	4/	शु.	7	38	पुष्य	18	56	ध्रु.	20	24	कर्क			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	7	भ. 7/38 तक, मंगल पुन. में 7/40, बलिदान दिन श्री गुरु अर्जुनदेव जी,
		5		29	17																											पंचमी तिथिक्षय,
	8	6	श.	26	55	आश्ले.	17	22	व्या.	17	25	सिंह	17	22	5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	सूर्य मृग. में 18/13, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
	9	7	र.	24	36	मघा	15	48	ह.	14	27	सिंह			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	9	भ. 24/36 बाद,
	10	8	चं.	22	23	पू.फा.	14	20	व.	11	33	कन्या	20	0	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 11/29 तक,
	11	9	मं.	20	19	उ.फा.	13	0	सि.	8	45	कन्या			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	
	12	10	बु.	18	27	हस्त	11	51	व्य./	6	6	तुला	23	21	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	शुक्र रोहिणी में 16/20, श्रीगंगा दशहरा,
									व.	27	37																					
	13	11	गु.	16	49	चित्रा	10	55	प.	25	22	तुला			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 5/38 से 16/49 तक, बुध पुन. में 11/26, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
	14	12	शु.	15	30	स्वाती	10	16	शि.	23	22	वृश्चिक	28	1	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	प्रदोष व्रत,
	15	13	श.	14	33	विशा.	9	59	सि.	21	42	वृश्चिक			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	सं. सूर्य मिथुन में 17/38, मु. 30 पुण्यकाल 11/10 बाद,
	16	14	र.	14	2	अनु.	10	6	सा.	20	23	वृश्चिक			5	23	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 14/2 से 26/1 तक, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा-पक्ष) (देखें पृ.14), (B)
	17	15	चं.	14	0	ज्येष्ठा	10	42	शु.	19	28	धनु	10	42	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	
आषाढ़ कृष्ण	18	1	मं.	14	31	मूल	11	50	शु.	18	59	धनु			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	18	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	19	2	बु.	15	34	पू.षा.	13	29	ब्र.	18	56	मकर	19	59	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	19	भ. 28/21 बाद,
	20	3	गु.	17	8	उ.षा.	15	39	ऐं.	19	16	मकर			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 17/8 तक, बुध कर्क में 26/30, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	21	4	शु.	19	8	श्रव.	18	14	वै.	19	56	मकर			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	नेप्च्यून वक्री 20/9, सूर्य सायन कर्क में 21/24, दक्षिणायन/वर्षा ऋतु प्रा.,
	22	5	श.	21	27	धनि.	21	7	वि.	20	50	कुम्भ	7	39	5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	22	पंचक प्रारम्भ 7/39, सूर्य आर्द्रा में 17/18, मंगल कर्क में 23/23,
	23	6	र.	23	53	शत.	24	7	प्री.	21	49	कुम्भ			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 23/53 बाद, शुक्र मृग. में 14/38,
	24	7	चं.	26	12	पू.भा.	27	1	आ.	22	45	मीन	20	19	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	24	भ. 13/2 तक, बुध पुष्य में 7/31,
	25	8	मं.	28	13	उ.भा.	—	—	सौ.	23	27	मीन			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	
	26	9	बु.	—	—	उ.भा.	5	37	शो.	23	48	मीन			5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	वक्री गुरु ज्येष्ठा 2 में 28/40,
	27	9	गु.	5	44	रेवती	7	43	अ.	23	40	मेष	7	43	5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 18/10 बाद, पंचक समाप्त 7/43, मंगल पुष्य में 28/58,
	28	10	शु.	6	36	अश्वि.	9	11	सु.	23	0	मेष			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 6/36 तक, शुक्र मिथुन में 25/39,
	29	11	श.	6	45	भरणी	9	57	धृ.	21	44	वृष	16	2	5	26	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	30	12/	र.	6	11	कृत्ति.	10	1	शू.	19	55	वृष			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	भ. 28/56 बाद, प्रदोष व्रत,
		13		28	56																											त्रयोदशी तिथिक्षय,

(A) भावुका अमा, शनैश्चर जयन्ती, (B) श्रीसत्यनारायण व्रत,

श्री वि. सं. 2076 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जुलाई, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आ. कृष्ण	1	14	चं.	27	6	रोहि.	9	24	गं.	17	35	मिथुन	20	53	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	1	भ. 16/1 तक,
	2	30	मं.	24	46	मृग.	8	14	वृ.	14	48	मिथुन			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	भौमवती अमा,
आषाढ़ शुक्ल	3	1	बु.	22	5	आर्द्रा/	6	36	ध्रु.	11	41	कर्क	23	9	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
						पुन.	28	38																								
	4	2	गु.	19	10	पुष्य	26	30	व्या./	8	20	कर्क			5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र आर्द्रा में 12/19, रथयात्रा (पुरी), (A)
									ह.	28	50																					
	5	3	शु.	16	9	आश्ले.	24	18	व.	25	18	सिंह	24	18	5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	भ. 26/40 बाद,
	6	4	श.	13	10	मघा	22	10	सि.	21	50	सिंह			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 13/10 तक, सूर्य पुन. में 16/49, वक्री शनि पू.षा. 3 में 15/36,
	7	5	र.	10	19	पू.फा.	20	13	व्य.	18	31	कन्या	25	46	5	30	19	25	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	बुध वक्री 28/46, कुमार षष्ठी (देखें पृ. 14),
	8	6/	चं.	7	42	उ.फा.	18	33	व.	15	26	कन्या			5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 29/25 बाद, विवस्वत् सप्तमी (देखें पृ. 14),
		7		29	25																											सप्तमी तिथिक्षय,
	9	8	मं.	27	30	हस्त	17	15	प.	12	38	तुला	28	45	5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	9	भ. 16/28 तक,
	10	9	बु.	26	2	चित्रा	16	21	शि.	10	10	तुला			5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	10	राहु पुन. 1, केतु पू.षा. 3 में 29/0, गुप्त नवरात्र-समाप्त,
	11	10	गु.	25	2	स्वाती	15	55	सि.	8	3	तुला			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	मंगल पश्चिम में अस्त 19/24, नवरात्र-पारणा,
	12	11	शु.	24	31	विशा.	15	57	सा./	6	20	वृश्चिक	9	53	5	32	19	23	5	35	19	18	5	45	19	19	5	19	18	47	12	भ. 12/46 से 24/31 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.) (B)
									शु.	28	59																					
	13	12	श.	24	28	अनु.	16	27	शु.	28	2	वृश्चिक			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	बुध पश्चिम में अस्त 19/23, **चन्द्रग्रहण 16 जुलाई**
	14	13	र.	24	55	ज्येष्ठा	17	25	ब्र.	27	27	धनु	17	25	5	33	19	23	5	36	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	प्रदोष व्रत,
	15	14	चं.	25	48	मूल	18	51	ऐं.	27	13	धनु			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	भ. 25/48 बाद, शुक्र पुन. में 9/25, ग्रहण-वेध,
	16	15	मं.	27	8	पू.षा.	20	43	वै.	27	20	मकर	27	14	5	34	19	22	5	37	19	16	5	47	19	18	5	21	18	47	16	भ. 14/28 तक, सं. सूर्य कर्क में 28/33, मु.45, पुण्यकाल अगले (C)
श्रावण कृष्ण	17	1	बु.	28	51	उ.षा.	22	58	वि.	27	45	मकर			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	17	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, ग्रहण-वेध
	18	2	गु.	—	—	श्रव.	25	34	प्री.	28	26	मकर			5	35	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	मंगल आश्ले. में 28/30, ग्रहणवेध, अशून्य शयन व्रत,
	19	2	शु.	6	55	धनि.	28	25	आ.	29	18	कुम्भ	14	58	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	22	18	46	19	भ. 20/4 बाद, पंचक प्रारम्भ 14/58, शुक्र पूर्व में अस्त 5/36, ग्रहणवेध,
	20	3	श.	9	13	शत.	—	—	सौ.	—	—	कुम्भ			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	भ. 9/13 तक, सूर्य पुष्य में 16/26, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	21	4	र.	11	39	शत.	7	24	सौ.	6	17	मीन	27	39	5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	23	18	45	21	**शुक्र अस्त 19 जुलाई**
	22	5	चं.	14	4	पू.भा.	10	24	शो.	7	17	मीन			5	38	19	20	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	45	22	
	23	6	मं.	16	16	उ.भा.	13	13	अ.	8	9	मीन			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	23	भ. 16/16 से 29/10 तक, वक्री बुध पुन. में 6/31, शुक्र कर्क में (D)
	24	7	बु.	18	5	रेवती	15	41	सु.	8	46	मेष	15	41	5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	पंचक समाप्त 15/41,
	25	8	गु.	19	21	अश्वि.	17	39	धृ.	9	0	मेष			5	40	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	25	
	26	9	शु.	19	56	भरणी	18	56	शू.	8	44	वृष	25	9	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	शुक्र पुष्य में 5/52,
	27	10	श.	19	46	कृत्ति.	19	30	गं.	7	54	वृष			5	41	19	17	5	43	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	भ. 7/51 से 19/46 तक,
	28	11	र.	18	50	रोहि.	19	17	वृ./	6	28	वृष			5	41	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	कामिका एकादशी व्रत (स.),
									ध्रु.	28	24																					
	29	12	चं.	17	9	मृग.	18	22	व्या.	25	46	मिथुन	6	55	5	42	19	15	5	44	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	सोमप्रदोष व्रत,
	30	13	मं.	14	49	आर्द्रा	16	47	ह.	22	38	मिथुन			5	43	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	28	18	41	30	भ. 14/49 से 25/24 तक, वक्री बुध मिथुन में 13/29, बुध पूर्व (E)
	31	14	बु.	11	57	पुन.	14	40	व.	19	5	कर्क	9	14	5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	31	

(A) श्रीजगदीश रथोत्सव, (B) (देखें पृ. 14), श्रीविष्णु-शयनोत्सव, (C) दिन मध्याह्न तक, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 5/36, गुरु-पूर्णिमा (व्यास पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, श्रीशिव-शयनोत्सव, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 20), (D) 12/49, सूर्य सायन सिंह में 8/20, (E) में उदित 5/43, श्रावण-शिवरात्रि,

श्री वि. सं. 2076 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अगस्त, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
श्रा.कृ.	1	30/	गु.	8	42	पुष्य	12	11	सि.	15	15	कर्क			5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	40	1	बुध मार्गी 9/28, हरियाली अमा,
श्रावण शुक्ल		1		29	11																											श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	2	2	शु.	25	36	आश्ले.	9	29	व्या.	11	16	सिंह	9	29	5	44	19	13	5	47	19	8	5	55	19	10	5	29	18	39	2	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	3	3	श.	22	5	मघा/	6	43	व./	7	14	सिंह			5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	29	18	38	3	सूर्य आश्ले. में 15/57, बुध कर्क में 5/52, मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज),
						पू.फा.	28	5	प.	27	18																					
	4	4	र.	18	49	उ.फा.	25	43	शि.	23	37	कन्या	9	28	5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	4	भ. 8/27 से 18/49 तक,
	5	5	चं.	15	54	हस्त	23	47	सि.	20	15	कन्या			5	46	19	10	5	48	19	5	5	57	19	8	5	30	18	37	5	शुक्र आश्ले. में 25/33, नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती (देखें पृ. 14),
	6	6	मं.	13	30	चित्रा	22	23	सा.	17	19	तुला	11	0	5	47	19	9	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	36	6	
	7	7	बु.	11	41	स्वाती	21	35	शु.	14	53	तुला			5	48	19	8	5	50	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	7	भ. 11/41 से 23/6, तक, गोस्वामी श्रीतुलसी जयन्ती,
	8	8	गु.	10	30	विशा.	21	27	शु.	12	58	वृश्चिक	15	25	5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	8	मंगल मघा सिंह में 28/46, श्रीदुर्गाष्टमी,
	9	9	शु.	10	0	अनु.	21	58	ब्र.	11	35	वृश्चिक			5	49	19	7	5	51	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	9	बुध पुष्य में 11/58,
	10	10	श.	10	8	ज्येष्ठा	23	5	ऐं.	10	43	धनु	23	5	5	49	19	6	5	51	19	1	5	59	19	4	5	33	18	33	10	भ. 22/30 बाद,
	11	11	र.	10	52	मूल	24	45	वै.	10	19	धनु			5	50	19	5	5	52	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	11	भ. 10/52 तक, गुरु मार्गी 19/9, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	12	12	चं.	12	7	पू.षा.	26	51	वि.	10	18	धनु			5	51	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	34	18	32	12	यूरेनस वक्री 7/58, सोमप्रदोष व्रत,
	13	13	मं.	13	46	उ.षा.	29	18	प्री.	10	38	मकर	9	26	5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	13	
	14	14	बु.	15	45	श्रव.	—	—	आ.	11	12	मकर			5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	35	18	30	14	भ. 15/45 से 28/52 तक, ऋक् उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत (A)
	15	15	गु.	17	59	श्रव.	8	1	सौ.	11	58	कुम्भ	21	27	5	52	19	1	5	54	18	57	6	2	19	0	5	35	18	30	15	पंचक प्रारम्भ 21/27, शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म, रक्षाबन्धन (B)
भाद्रपद कृष्ण	16	1	शु.	20	22	धनि.	10	55	शो.	12	52	कुम्भ			5	53	19	0	5	54	18	56	6	2	18	59	5	35	18	29	16	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र मघा सिंह में 20/39,
	17	2	श.	22	48	शत.	13	55	अ.	13	51	कुम्भ			5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	59	5	36	18	28	17	सं. सूर्य मघा सिंह में 13/2, मु. 15, पुण्यकाल 6/38 बाद,
	18	3	र.	25	13	पू.भा.	16	54	सु.	14	49	मीन	10	10	5	54	18	58	5	55	18	54	6	3	18	58	5	36	18	27	18	भ. 12/1 से 25/13 तक, कज्जली तृतीया,
	19	4	चं.	27	30	उ.भा.	19	48	धृ.	15	43	मीन			5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	57	5	37	18	26	19	बुध आश्ले. में 11/37, बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी (C)
	20	5	मं.	29	30	रेवती	22	28	शू.	16	27	मेष	22	28	5	55	18	56	5	57	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	20	पंचक समाप्त 22/28,
	21	6	बु.	—	—	अश्वि.	24	47	गं.	16	56	मेष			5	56	18	55	5	57	18	51	6	5	18	55	5	37	18	24	21	
	22	6	गु.	7	6	भरणी	26	36	वृ.	17	2	मेष			5	57	18	54	5	58	18	50	6	5	18	54	5	38	18	23	22	भ. 7/6 से 19/38 तक, बुध पूर्व में अस्त 5/57,
	23	7	शु.	8	9	कृत्ति.	27	47	ध्रु.	16	41	वृष	8	57	5	57	18	53	5	58	18	49	6	5	18	53	5	38	18	22	23	सूर्य सायन कन्या में 15/32, शरद ऋतु प्रारम्भ, श्रीकृष्ण (D)
	24	8	श.	8	32	रोहि.	28	15	व्या.	15	47	वृष			5	58	18	52	5	59	18	48	6	6	18	52	5	39	18	22	24	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),
	25	9	र.	8	10	मृग.	27	58	ह.	14	17	मिथुन	16	12	5	58	18	50	5	59	18	47	6	6	18	51	5	39	18	21	25	भ. 19/36 बाद, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), गुग्गा नवमी,
	26	10/	चं.	7	2	आर्द्रा	26	56	व.	12	9	मिथुन			5	59	18	49	6	0	18	46	6	7	18	50	5	40	18	20	26	भ. 7/2 तक, बुध मघा सिंह में 14/6, अजा एकादशी व्रत (स्मा.),
		11		29	10																											एकादशी तिथिक्षय,
	27	12	मं.	26	36	पुन.	25	13	सि.	9	26	कर्क	19	42	5	59	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	27	शुक्र पू.फा. में 15/11, अजा एकादशी व्रत (वै.), पर्युषण पर्व प्रारम्भ,
	28	13	बु.	23	28	पुष्य	22	55	व्य./	6	10	कर्क			6	0	18	47	6	1	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	28	भ. 23/28 बाद, प्रदोष व्रत,
									व.	26	26																					
	29	14	गु.	19	55	आश्ले.	20	10	प.	22	23	सिंह	20	10	6	1	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	29	भ. 9/42 तक, मंगल पू.फा. में 28/20,
	30	30	श.	16	7	मघा	17	11	शि.	18	7	सिंह			6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	30	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,
भा.शु.	31	1	श.	12	14	पू.फा.	14	7	सि.	13	49	कन्या	19	22	6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	45	5	42	18	15	31	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य पू.फा. में 9/0.

(A) (देखें पृ. 14), (B) (राखी), श्री अमरनाथयात्रा (क.), श्रावणी पूर्णिमा, भारत स्वतन्त्रता दिवस, (C) व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (D) जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), दुर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 15).

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भाद्रपद शुक्ल	1	2/	र.	8	26	उ.फा.	11	10	सा./	9	36	कन्या			6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	44	5	42	18	14	1	वक्री शनि पू.षा. 2 में 27/22, हिज़री सन् 1441 प्रारम्भ, (A)
		3		28	56				शु.	29	38																					तृतीया तिथिक्षय,
	2	4	चं.	25	54	हस्त	8	32	शु.	26	3	तुला	19	24	6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	43	5	42	18	13	2	भ. 15/25 से 25/54 तक, बुध पू.फा. में 8/9, श्रीविनायक चतुर्थी (B)
	3	5	मं.	23	27	चित्रा/	6	24	ब्र.	22	58	तुला			6	3	18	40	6	4	18	37	6	10	18	41	5	43	18	12	3	ऋषि पंचमी, अगस्त्य उदित, संवत्सरी महापर्व,
						स्वाती	28	53																								
	4	6	बु.	21	44	विशा.	28	7	ऐं.	20	28	वृश्चिक	22	14	6	4	18	39	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	11	4	वक्री नेप्च्यून पू.भा. 1 में 25/56, सूर्य षष्ठी व्रत,
	5	7	गु.	20	49	अनु.	28	8	वै.	18	37	वृश्चिक			6	5	18	37	6	5	18	35	6	11	18	39	5	43	18	10	5	भ. 20/49 बाद, मुक्ताभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत,
	6	8	शु.	20	43	ज्येष्ठा	28	57	वि.	17	25	धनु	28	57	6	5	18	36	6	5	18	34	6	12	18	38	5	44	18	8	6	भ. 8/46 तक, वक्री प्लूटो पू.षा. 4 में 18/38, श्रीराधाष्टमी, (C)
	7	9	श.	21	22	मूल	—	—	प्री.	16	49	धनु			6	6	18	35	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	शुक्र उ.फा. में 9/13, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	8	10	र.	22	41	मूल	6	29	आ.	16	44	धनु			6	6	18	34	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	
	9	11	चं.	24	31	पू.षा.	8	35	सौ.	17	5	मकर	15	12	6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	भ. 11/36 से 24/31 तक, बुध उ.फा. में 8/56, शुक्र कन्या में (D)
	10	12	मं.	26	42	उ.षा.	11	9	शो.	17	45	मकर			6	7	18	31	6	7	18	29	6	13	18	34	5	45	18	4	10	बुध कन्या में 28/58, श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी,
	11	13	बु.	29	6	श्रवण	13	59	अ.	18	36	कुम्भ	27	28	6	8	18	30	6	8	18	28	6	14	18	33	5	46	18	3	11	पंचक प्रारम्भ 27/28, राहु आर्द्रा 4, केतु पू.षा. 2 में 26/45, प्रदोष व्रत,
	12	14	गु.	—	—	धनि.	16	58	सु.	19	32	कुम्भ			6	8	18	29	6	8	18	26	6	14	18	31	5	46	18	2	12	श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत,
	13	14	शु.	7	35	शत.	19	58	धृ.	20	30	कुम्भ			6	9	18	27	6	8	18	25	6	15	18	30	5	46	18	1	13	भ. 7/35 से 20/49 तक, सूर्य उ.फा. में 26/54, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)
	14	15	श.	10	2	पू.भा.	22	55	शू.	21	24	मीन	16	11	6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	प्रतिपदा का महालय श्राद्ध (देखें पृ. 15),
आश्विन कृष्ण	15	1	र.	12	24	उ.भा.	25	44	गं.	22	13	मीन			6	10	18	25	6	9	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, द्वितीया-श्राद्ध (देखें पृ. 15)
	16	2	चं.	14	35	रेवती	28	21	वृ.	22	52	मेष	28	21	6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	48	17	58	16	भ. 27/33 बाद, पंचक समाप्त 28/21, बुध हस्त में 22/33, (F)
	17	3	मं.	16	32	अश्वि.	—	—	ध्रु.	23	20	मेष			6	11	18	22	6	10	18	20	6	16	18	26	5	48	17	57	17	भ. 16/32 तक, सं. सूर्य कन्या में 13/2, मु. 30, पुण्यकाल, (G)
	18	4	बु.	18	11	अश्वि.	6	43	व्या.	23	33	मेष			6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	25	5	48	17	56	18	शनि मार्गी 14/18, चतुर्थी-श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
	19	5	गु.	19	26	भरणी	8	45	ह.	23	26	वृष	15	11	6	12	18	20	6	11	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	मंगल उ.फा. में 25/41, पंचमी-श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत (देखें पृ.15),
	20	6	शु.	20	11	कृत्ति.	10	19	व.	22	55	वृष			6	13	18	18	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	53	20	भ. 20/11 बाद, बुध पश्चिम में उदित 18/18, षष्ठी-श्राद्ध,
	21	7	श.	20	21	रोहि.	11	21	सि.	21	56	मिथुन	23	38	6	14	18	17	6	12	18	16	6	18	18	21	5	49	17	52	21	भ. 8/17 तक, सप्तमी-श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	22	8	र.	19	50	मृग.	11	46	व्य.	20	25	मिथुन			6	14	18	16	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	अष्टमी-श्राद्ध,
	23	9	चं.	18	37	आर्द्रा	11	29	व.	18	20	कर्क	28	49	6	15	18	15	6	13	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	भ. 29/40 बाद, सूर्य सायन तुला में 13/19, दक्षिण गोल प्रारम्भ, (H)
	24	10	मं.	16	42	पुन.	10	31	प.	15	41	कर्क			6	15	18	13	6	14	18	12	6	19	18	18	5	51	17	49	24	भ. 16/42 तक, बुध चित्रा में 27/45, दशमी-श्राद्ध,
	25	11	बु.	14	9	पुष्य	8	52	शि.	12	31	कर्क			6	16	18	12	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	25	मंगल कन्या में 6/31, गुरु ज्येष्ठा 3 में 18/3, एकादशी-श्राद्ध, (I)
	26	12	गु.	11	3	आश्ले./	6	40	सि./	8	53	सिंह	6	40	6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	15	5	51	17	47	26	त्रयोदशी श्राद्ध, मघा श्राद्ध (देखें पृ. 16), प्रदोष व्रत,
						मघा	28	0	सा.	28	53																					शुक्र उदित 29 सितम्बर
	27	13/	शु.	7	32	पू.फा.	25	4	शु.	24	40	सिंह			6	17	18	10	6	15	18	8	6	21	18	14	5	52	17	46	27	भ. 7/32 से 17/39 तक, सूर्य हस्त में 18/26, अपमृत्यु वालों यानी (J)
		14		27	46																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	28	30	श.	23	56	उ.फा.	22	2	श.	20	22	कन्या	6	19	6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	45	28	शुक्र चित्रा में 20/31, अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, (K)
आ.शु.	29	1	र.	20	13	हस्त	19	6	ब्र.	16	8	तुला	29	44	6	18	18	7	6	16	18	6	6	22	18	12	5	53	17	44	29	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध तुला में 12/56, शुक्र पश्चिम में (L)
	30	2	चं.	16	49	चित्रा	16	29	ऐं.	12	8	तुला			6	19	18	6	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	43	30	चन्द्रदर्शन, मु. 15,

(A) साम उपाकर्म, श्री वराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, मेला डेरा बाबा श्री गोसाई आणां (कुराली) पं., (B) श्रीसिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 21/5), (C) श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (D) 25/41, पद्मा एकादशी व्रत (स.), (E) प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा का महालय श्राद्ध (देखें पृ. 15), पितृपक्ष (महालय) प्रारम्भ, (F) (इस दिन कोई महालय श्राद्ध न होगा (देखें पृ. 15), (G) प्रातः 6/38 बाद, शुक्र हस्त में 26/59, तृतीया-श्राद्ध, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (H) विषुवदिन, नवमी-श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, ⟵⟶ (I) द्वादशी-श्राद्ध (देखें पृ 15), संन्यासियों का श्राद्ध, ⟵⟶ इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (J) शस्त्र-विषादि से मृतों का श्राद्ध (देखें पृ. 15), ⟵⟶ (K) सर्वपितृ श्राद्ध, महालय (पितृपक्ष) समाप्त, शनैश्चरी अमा, (L) उदित 18/7, नाना-नानी का श्राद्ध, शारदीय (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती,

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.
आश्विन शुक्ल	1	3	मं.	13	55	स्वाती	14	20	वै./	8	30	तुला		
									वि.	29	23			
	2	4	बु.	11	39	विशा.	12	51	प्री.	26	52	वृश्चिक	7	10
	3	5	गु.	10	12	अनु.	12	10	आ.	25	2	वृश्चिक		
	4	6	शु.	9	35	ज्येष्ठा	12	19	सौ.	23	53	धनु	12	19
	5	7	श.	9	50	मूल	13	18	शो.	23	23	धनु		
	6	8	र.	10	54	पू.षा.	15	3	अ.	23	27	मकर	21	35
	7	9	चं.	12	38	उ.षा.	17	25	सु.	23	57	मकर		
	8	10	मं.	14	50	श्रवण	20	12	धृ.	24	44	मकर		
	9	11	बु.	17	18	धनि.	23	11	शू.	25	40	कुम्भ	9	41
	10	12	गु.	19	51	शत.	26	13	गं.	26	37	कुम्भ		
	11	13	शु.	22	20	पू.भा.	29	9	वृ.	27	29	मीन	22	26
	12	14	श.	24	36	उ.भा.	—	—	ध्रु.	28	11	मीन		
	13	15	र.	26	37	उ.भा.	7	52	व्या.	28	41	मीन		
कार्तिक कृष्ण	14	1	चं.	28	21	रेवती	10	20	ह.	28	58	मेष	10	20
	15	2	मं.	29	45	अश्वि.	12	30	व.	28	59	मेष		
	16	3	बु.	—	—	भरणी	14	21	सि.	28	45	वृष	20	45
	17	3	गु.	6	48	कृत्ति.	15	51	व्य.	28	13	वृष		
	18	4	शु.	7	29	रोहि.	16	59	व.	27	22	मिथुन	29	23
	19	5	श.	7	44	मृग.	17	40	प.	26	8	मिथुन		
	20	6	र.	7	30	आर्द्रा	17	52	शि.	24	30	मिथुन		
	21	7/	चं.	6	44	पुन.	17	32	सि.	22	26	कर्क	11	40
		8		29	25									
	22	9	मं.	27	33	पुष्य	16	38	सा.	19	54	कर्क		
	23	10	बु.	25	9	आश्ले.	15	12	शु.	16	57	सिंह	15	12
	24	11	गु.	22	18	मघा	13	18	शु.	13	36	सिंह		
	25	12	शु.	19	8	पू.फा.	11	0	ब्र./	9	56	कन्या	16	22
									ऐं.	30	3			
	26	13	श.	15	46	उ.फा./	8	27	वै.	29	5	कन्या		
						हस्त	29	49						
	27	14	र.	12	23	चित्रा	27	16	वि.	22	10	तुला	16	31
	28	30/	चं.	9	8	स्वाती	25	0	प्री.	18	26	तुला		
कार्ति. शु.		1		30	13									
	29	2	मं.	27	48	विशा.	23	11	आ.	15	1	वृश्चिक	17	35
	30	3	बु.	26	1	अनु.	21	59	सौ.	12	5	वृश्चिक		
	31	4	गु.	25	1	ज्येष्ठा	21	31	शो.	9	41	धनु	21	31

तारीख	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
1	6	19	18	4	6	17	18	4	6	23	18	10	5	53	17	42	भ. 24/47 बाद,
2	6	20	18	3	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	40	भ. 11/39 तक, शुक्रबाल्य समाप्त 18/7, उपांगललिता व्रत,
3	6	21	18	2	6	19	18	1	6	24	18	8	5	54	17	39	बुध स्वाती में 27/12, शुक्र तुला में 29/14, प्लूटो मार्गी 12/7,
4	6	21	18	1	6	19	18	0	6	24	18	7	5	55	17	38	शनि पू.षा. 3 में 21/38, सरस्वती आवाहन,
5	6	22	18	0	6	20	17	59	6	24	18	5	5	55	17	37	भ. 9/50 से 22/22 तक, सरस्वती-पूजन,
6	6	22	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	55	17	36	सरस्वती के लिए बलिदान, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (A)
7	6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	3	5	56	17	35	सरस्वती विसर्जन (देखें पृ. 16), महानवमी (बलिदान के लिए), (B)
8	6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	56	17	34	भ. 28/4 बाद, नवरात्र पारणा, विजयादशमी (दशहरा), (श्रवण-योग) (C)
9	6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	1	5	57	17	33	भ. 17/18 तक, पंचक प्रारम्भ 9/41, शुक्र स्वाती में 13/56, भरत- (D)
10	6	25	17	54	6	22	17	53	6	27	18	0	5	57	17	32	मंगल हस्त में 19/36,
11	6	26	17	52	6	23	17	52	6	27	17	59	5	58	17	31	सूर्य चित्रा में 7/25, प्रदोष व्रत,
12	6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	भ. 24/36 बाद,
13	6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	भ. 13/37 तक, बुध विशा. में 29/51, शरत्पूर्णिमा, कोजागरी (E)
14	6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	कार्त्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 10/20,
15	6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	
16	6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	भ. 18/16 बाद,
17	6	30	17	46	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26	भ. 6/48 तक, सं. सूर्य तुला में 25/2, मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन (F)
18	6	30	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	
19	6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	
20	6	32	17	42	6	28	17	43	6	32	17	50	6	2	17	23	भ. 7/30 से 19/7 तक, शुक्र विशा. में 7/25,
21	6	32	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	अहोई अष्टमी (पं.),
																	अष्टमी तिथिक्षय,
22	6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	मंगल पूर्व में उदित 6/33,
23	6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	भ. 14/21 से 25/9 तक, बुध वृश्चिक में 23/22, सूर्य सायन वृश्चिक (G)
24	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	19	सूर्य स्वाती में 17/59, रमा एकादशी व्रत (स.),
25	6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	5	17	19	गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत,
26	6	36	17	36	6	32	17	37	6	36	17	45	6	5	17	18	भ. 15/46 से 26/4 तक, धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (H)
27	6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी-पूजन, (I)
28	6	38	17	34	6	34	17	36	6	37	17	43	6	7	17	16	शुक्र वृश्चिक में 8/31, गोवर्धन पूजा, गोक्रीडा, बलिपूजा, अन्नकूट (J)
																	कार्त्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
29	6	38	17	33	6	34	17	35	6	38	17	42	6	7	17	16	चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध अनु. में 30/12, प्लूटो उ.षा. 1 में 13/46,(K)
30	6	39	17	32	6	35	17	34	6	39	17	42	6	8	17	15	शुक्र अनु. में 24/53,
31	6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	भ. 13/31 से 25/1 तक, मंगल चित्रा में 9/17, बुध वक्री 21/10,

(A) (उपवास के लिए) (देखें पृ. 16), (B) नवरात्र समाप्त, (C) श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, आयुधपूजा, अपराजिता-पूजन, सीमोल्लंघन, (D) मिलाप, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (E) (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा) व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ, (F) मध्याह्न तक, गुरु ज्येष्ठा 4 में 27/19, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (G) में 22/50, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (H) यम-प्रीत्यर्थ दीपदान, ⟵⟶ (I) श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (J) सोमवती अमा, (K) यम द्वितीया, भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा,

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक शुक्ल	1	5	शु.	24	51	मूल	21	51	अ.	7	56	धनु			6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	ज्ञान पंचमी (जैन),
	2	6	श.	25	31	पू.षा.	23	1	सु./	6	51	मकर	29	25	6	42	17	30	6	37	17	32	6	41	17	39	6	10	17	13	2	वक्री बुध विशा. में 9/43, सूर्य षष्ठी (बिहार),
									धृ.	30	23																					
	3	7	र.	26	56	उ.षा.	24	54	शू.	30	28	मकर			6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	भ. 26/56 बाद,
	4	8	चं.	28	57	श्रव.	27	23	गं.	—	—	मकर			6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	4	भ. 15/53 तक, गुरु मूल 1 धनु में 29/19, गोपाष्टमी,
	5	9	मं.	—	—	धनि.	30	14	गं.	6	59	कुम्भ	16	46	6	44	17	28	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	पंचक प्रारम्भ 16/46, बुध पश्चिम में अस्त 17/28, अक्षय नवमी, (A)
	6	9	बु.	7	21	शत.	—	—	वृ.	7	47	कुम्भ			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	10	6	सूर्य विशा. में 26/3,
	7	10	गु.	9	55	शत.	9	15	ध्रु.	8	41	कुम्भ			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 23/10 बाद, वक्री बुध तुला में 15/33,
	8	11	शु.	12	24	पू.भा.	12	12	व्या.	9	33	मीन	5	28	6	46	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	9	8	भ. 12/24 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), भीष्मपंचक (B)
	9	12	श.	14	39	उ.भा.	14	55	ह.	10	14	मीन			6	47	17	25	6	43	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	9	वक्री यूरेनस अश्वि. 3 में 8/16, शनिप्रदोष व्रत, चातुर्मास्य व्रत- (C)
	10	13	र.	16	33	रेवती	17	18	व.	10	40	मेष	17	18	6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	34	6	15	17	8	10	पंचक समाप्त 17/18, मंगल तुला में 14/22, शुक्र ज्येष्ठा में 18/30, (D)
	11	14	चं.	18	1	अश्वि.	19	17	सि.	10	48	मेष			6	49	17	23	6	44	17	26	6	47	17	34	6	16	17	8	11	भ. 18/1 से 30/32 तक,
	12	15	मं.	19	4	भरणी	20	51	व्य.	10	35	वृष	27	10	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	16	17	7	12	श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती, (E)
मार्गशीर्ष कृष्ण	13	1	बु.	19	41	कृत्ति.	22	0	व.	10	3	वृष			6	51	17	22	6	46	17	24	6	48	17	33	6	17	17	7	13	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, राहु आर्द्रा 3, केतु पू.षा. 1 में 24/39, (F)
	14	2	गु.	19	55	रोहि.	22	47	प.	9	12	वृष			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	32	6	18	17	6	14	
	15	3	शु.	19	45	मृग.	23	12	शि./	8	4	मिथुन	11	2	6	52	17	21	6	47	17	23	6	50	17	32	6	18	17	6	15	भ. 7/50 से 19/45 तक, वक्री बुध स्वाती में 21/14,
									सि.	30	38																					
	16	4	श.	19	15	आर्द्रा	23	15	सा.	28	55	मिथुन			6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 24/50, मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न (G)
	17	5	र.	18	23	पुन.	22	58	शु.	26	55	कर्क	17	4	6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	17	
	18	6	चं.	17	10	पुष्य	22	20	शु.	24	39	कर्क			6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	भ. 17/10 से 28/23 तक, बुध पूर्व में उदित 6/55,
	19	7	मं.	15	35	आश्ले.	21	22	ब्र.	22	6	सिंह	21	22	6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
	20	8	बु.	13	41	मघा	20	4	ऐं.	19	17	सिंह			6	57	17	19	6	51	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	सूर्य अनु. में 8/11, मंगल स्वाती में 18/12, बुध मार्गी 24/42,
	21	9	गु.	11	28	पू.फा.	18	29	वै.	16	14	कन्या	24	3	6	57	17	18	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	21	भ. 22/14 बाद, गुरु मूल 2 में 9/30, शुक्र मूल धनु में 12/22,
	22	10/	शु.	9	1	उ.फा.	16	41	वि.	12	59	कन्या			6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	22	भ. 9/1 तक, सूर्य सायन धनु में 20/29, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.),
		11		30	24																											एकादशी तिथिक्षय,
	23	12	श.	27	43	हस्त	14	44	प्री./	9	38	तुला	25	45	6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	23	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी,
									आ.	30	14																					
	24	13	र.	25	6	चित्रा	12	47	सौ.	26	54	तुला			7	0	17	17	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ. 25/6 बाद, प्रदोष व्रत,
	25	14	चं.	22	40	स्वाती	10	57	शो.	23	44	वृश्चिक	27	44	7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	26	17	3	25	भ. 11/54 तक, शनि पू.षा. 4 में 22/8,
	26	30	मं.	20	35	विशा.	9	22	अ.	20	51	वृश्चिक			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	26	बुध विशा. में 15/56, भौमवती अमा,
मार्ग. शुक्ल	27	1	बु.	18	59	अनु.	8	12	सु.	18	20	वृश्चिक			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, नेप्च्यून मार्गी 18/7,
	28	2	गु.	17	58	ज्येष्ठा	7	33	धृ.	16	18	धनु	7	33	7	3	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	29	3	शु.	17	39	मूल	7	33	शू.	14	48	धनु			7	4	17	16	6	58	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	भ. 29/52 बाद,
	30	4	श.	18	5	पू.षा.	8	15	गं.	13	52	मकर	14	32	7	5	17	16	6	59	17	19	7	1	17	29	6	29	17	3	30	भ. 18/5 तक,

(A) कूष्माण्ड नवमी, (B) प्रारम्भ, देव-प्रबोधोत्सव, (C) नियमादि समाप्त, तुलसी-विवाह, (D) वैकुण्ठ चतुर्दशी, (E) त्रिपुरोत्सव, भीष्मपंचक समाप्त, मेला पुष्करराज (राज.), कार्तिकस्नान समाप्त, (F) पद्मक योग (पुष्करराज)(राज.) (देखें पृ. 16), (G) तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

श्री वि. सं. 2076 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **दिसम्बर, सन् 2019 ई.**

मास पक्ष	दिनांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष शुक्ल	1	5	र.	19	13	उ.षा.	9	40	वृ.	13	29	मकर			7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	शुक्र पू.षा. में 30/29, बलिदान दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी,
	2	6	चं.	20	59	श्रवण	11	43	ध्रु.	13	37	कुम्भ	24	56	7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	पंचक प्रारम्भ 24/56, स्कन्द/गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र),
	3	7	मं.	23	14	धनि.	14	16	व्या.	14	7	कुम्भ			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	31	17	3	3	भ. 23/14 बाद, सूर्य ज्येष्ठा में 12/23, मित्र सप्तमी,
	4	8	बु.	25	44	शत.	17	9	ह.	14	53	कुम्भ			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	4	भ. 12/29 तक,
	5	9	गु.	28	15	पू.भा.	20	7	व.	15	44	मीन	13	22	7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	बुध वृश्चिक में 10/31,
	6	10	शु.	30	34	उ.भा.	22	57	सि.	16	30	मीन			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	गुरु मूल 3 में 13/21,
	7	11	श.	—	—	रेवती	25	27	व्य.	17	2	मेष	25	27	7	11	17	16	7	5	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	7	भ. 19/31 बाद, पंचक समाप्त 25/27, बुध अनु. में 20/27,
	8	11	र.	8	29	अश्वि.	27	30	व.	17	15	मेष			7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	भ. 8/29 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ. 76), श्रीगीता जयन्ती,
	9	12	चं.	9	54	भरणी	29	0	प.	17	3	मेष			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	29	6	36	17	4	9	सोमप्रदोष व्रत,
	10	13	मं.	10	44	कृत्ति.	29	57	शि.	16	24	वृष	11	17	7	13	17	17	7	7	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	10	मंगल विशा. में 21/59,
	11	14	बु.	10	59	रोहि.	30	22	सि.	15	19	वृष			7	14	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	5	11	भ. 10/59 से 22/50 तक, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ 17/18, (A)
	12	15	गु.	10	42	मृग.	30	18	सा.	13	50	मिथुन	18	23	7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	शुक्र उ.षा. में 25/10,
पौष कृष्ण	13	1	शु.	9	56	आर्द्रा	29	50	शु.	11	59	मिथुन			7	15	17	17	7	9	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	13	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	14	2	श.	8	47	पुन.	29	3	शु.	9	49	कर्क	23	16	7	16	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	14	भ. 20/2 बाद, गुरु पश्चिम में अस्त 17/18,
	15	3/	र.	7	18	पुष्य	28	0	ब्र./	7	24	कर्क			7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	39	17	6	15	भ. 7/18 तक, शुक्र मकर में 17/58, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
		4		29	34				ऐं.	28	47																					चतुर्थी तिथिक्षय, गुरु अस्त 14 दिसम्बर
	16	5	चं.	27	40	आश्ले.	26	47	वै.	26	1	सिंह	26	47	7	17	17	18	7	11	17	22	7	12	17	32	6	40	17	6	16	सं. सूर्य मूल धनु में 15/27, मु. 15, पुण्यकाल 9/3 बाद, (B)
	17	6	मं.	25	37	मघा	25	26	वि.	23	9	सिंह			7	18	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	41	17	7	17	भ. 25/37 बाद,
	18	7	बु.	23	31	पू.फा.	24	0	प्री.	20	13	कन्या	29	38	7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	7	18	भ. 12/34 तक, बुध पूर्व में अस्त 7/18,
	19	8	गु.	21	23	उ.फा.	22	33	आ.	17	16	कन्या			7	19	17	20	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	19	
	20	9	शु.	19	16	हस्त	21	8	सौ.	14	19	कन्या			7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	20	भ. 30/16 बाद, गुरु मूल 4 में 28/57,
	21	10	श.	17	15	चित्रा	19	48	शो.	11	26	तुला	8	27	7	20	17	21	7	13	17	24	7	15	17	34	6	43	17	8	21	भ. 17/15 तक, सूर्य सायन मकर में 9/49, उत्तरायण एवं शिशिर (C)
	22	11	र.	15	22	स्वाती	18	37	अ./	8	39	तुला			7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	22	सफला एकादशी व्रत (स.),
									सु.	30	0																					
	23	12	चं.	13	42	विशा.	17	39	धृ.	27	34	वृश्चिक	11	52	7	21	17	22	7	14	17	25	7	16	17	35	6	44	17	9	23	शुक्र श्रवण में 20/42, सोमप्रदोष व्रत, कंकण सूर्यग्रहण 26 दिसम्बर
	24	13	मं.	12	18	अनु.	16	59	शू.	25	24	वृश्चिक			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	24	भ. 12/18 से 23/47 तक,
	25	14	बु.	11	17	ज्येष्ठा	16	41	गं.	23	33	धनु	16	41	7	22	17	23	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	25	मंगल वृश्चिक में 21/28, बुध मूल धनु में 15/45, ग्रहणवेध, क्रिसमस डे,
	26	30	गु.	10	43	मूल	16	50	वृ.	22	5	धनु			7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	36	6	45	17	11	26	शनि उ.षा. 1 में 26/19, कंकण सूर्य ग्रहण (भारत में दृश्य) (D)
पौष शुक्ल	27	1	शु.	10	39	पू.षा.	17	30	ध्रु.	21	2	मकर	23	45	7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	46	17	12	27	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, ग्रहणवेध,
	28	2	श.	11	10	उ.षा.	18	43	व्या.	20	26	मकर			7	23	17	24	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	शनि पश्चिम में अस्त 17/24, ग्रहणवेध,
	29	3	र.	12	15	श्रवण	20	29	ह.	20	16	मकर			7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	29	भ. 25/4 बाद, सूर्य पू.षा. में 17/35, ग्रहणवेध,
	30	4	चं.	13	54	धनि.	22	46	व.	20	30	कुम्भ	9	34	7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	13	30	भ. 13/54 तक, पंचक प्रारम्भ 9/34, मंगल अनु. में 20/40,
	31	5	मं.	16	1	शत.	25	27	सि.	21	3	कुम्भ			7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	31	

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती, (B) बुध ज्येष्ठा में 22/20, (C) ऋतु प्रारम्भ, (D) (देखें पृ. 20), जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),

श्री वि. सं. 2076 | **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** | **जनवरी, सन् 2020 ई.**

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शुक्ल	1	6	बु.	18	27	पू.भा.	28	22	व्य.	21	49	मीन	21	38	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	इंग्लिश नववर्ष (सन् 2020 ई.) प्रारम्भ,
	2	7	गु.	21	0	उ.भा.	31	19	व.	22	39	मीन			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	2	भ. 21/0 बाद, बुध पू.षा. में 28/18, जन्मदिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी,
	3	8	शु.	23	26	रेवती	—	—	प.	23	24	मीन			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	3	भ. 10/13 तक, शुक्र धनि. में 17/22,
	4	9	श.	25	32	रेवती	10	5	शि.	23	53	मेष	10	5	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	पंचक समाप्त 10/5, गुरु पू.षा. 1 में 16/22,
	5	10	र.	27	7	अश्वि.	12	27	सि.	23	59	मेष			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	17	5	
	6	11	चं.	28	2	भरणी	14	15	सा.	23	37	वृष	20	36	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 15/34 से 28/2 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	7	12	मं.	28	14	कृत्ति.	15	24	शु.	22	42	वृष			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	गुरु उदित 10 जनवरी
	8	13	बु.	27	44	रोहि.	15	51	शु.	21	14	मिथुन	27	49	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	शुक्र कुम्भ में 28/22, प्रदोष व्रत,
	9	14	गु.	26	34	मृग.	15	37	ब्र.	19	14	मिथुन			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	भ. 26/34 बाद,
	10	15	शु.	24	51	आर्द्रा	14	48	ऐं.	16	46	मिथुन			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 13/43 तक, युरेनस मार्गी 31/19, गुरु पूर्व में उदित 7/25, (A)
माघ कृष्ण	11	1	श.	22	41	पुन.	13	30	वै.	13	54	कर्क	7	52	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य उ.षा. में 19/35, बुध उ.षा. में 10/59,
	12	2	र.	20	12	पुष्य	11	49	वि./	10	45	कर्क			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 30/52 बाद,
									प्री.	31	24																					
	13	3	चं.	17	32	आश्ले.	9	55	आ.	27	58	सिंह	9	55	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	भ. 17/32 तक, बुध मकर में 11/34, गुरुबाल्य समाप्त 7/25, (B)
	14	4	मं.	14	49	मघा/	7	55	सौ.	24	32	सिंह			7	25	17	37	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 26/7, मु. 30, पुण्यकाल अगला सारा दिन, (C)
						पू.फा.	29	56																								
	15	5	बु.	12	10	उ.फा.	28	6	शो.	21	12	कन्या	11	28	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	15	राहु आर्द्रा 2, केतु मूल 4 में 22/3,
	16	6	गु.	9	42	हस्त	26	30	अ.	18	2	कन्या			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 9/42 से 20/36 तक, मट्टु पोंगल,
	17	7/	शु.	7	28	चित्रा	25	12	सु.	15	5	तुला	13	49	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	17	जन्मदिन स्वामी श्रीविवेकानन्द जी,
		8		29	33																											अष्टमी तिथिक्षय,
	18	9	श.	23	1	स्वाती	24	15	धृ.	12	25	तुला			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	गुरु पू.षा. 2 में 31/1,
	19	10	र.	26	51	विशा.	23	41	शू.	10	2	वृश्चिक	17	47	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 15/26 से 26/51 तक, मंगल ज्येष्ठा में 14/32, बुध श्रव. में 10/41,
	20	11	चं.	26	6	अनु.	23	30	गं./	7	58	वृश्चिक			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 20/24, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
									वृ.	30	12																					
	21	12	मं.	25	45	ज्येष्ठा	23	43	ध्रु.	28	46	धनु	23	43	7	23	17	44	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	21	
	22	13	बु.	25	49	मूल	24	19	व्या.	27	39	धनु			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	भ. 25/49 बाद, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
	23	14	गु.	26	17	पू.षा.	25	20	ह.	26	52	धनु			7	23	17	45	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 14/3 तक,
	24	30	श.	27	12	उ.षा.	26	45	व.	26	23	मकर	7	39	7	22	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 21/51, शनि उ.षा. 2 मकर में 9/54, मौनी अमा,
माघ शुक्ल	25	1	श.	28	31	श्रवण	28	35	सि.	26	14	मकर			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	25	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पू.भा. में 17/7, माघ गुप्त नवरात्र प्रा.,
	26	2	र.	30	15	धनि.	30	48	व्य.	26	24	कुम्भ	17	39	7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ 17/39, बुध धनि. में 29/4, (D)
	27	3	चं.	—	—	शत.	—	—	व.	26	51	कुम्भ			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	27	
	28	3	मं.	8	22	शत.	9	22	प.	27	31	मीन	29	29	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 21/34 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी) (देखें पृ.17), तिल- (E)
	29	4	बु.	10	46	पू.भा.	12	13	शि.	28	21	मीन			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	35	29	भ. 10/46 तक, श्रीलक्ष्मी पंचमी/वसन्त पंचमी (देखें पृ 17), (F)
	30	5	गु.	13	19	उ.भा.	15	12	सि.	29	12	मीन			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	30	बुध कुम्भ में 26/53, बुध पश्चिम में उदित 17/52, शनि पूर्व (G)
	31	6	शु.	15	52	रेवती	18	9	सा.	29	58	मेष	18	9	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	पंचक समाप्त 18/9,

(A) पौषी पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, (B) लोहड़ी (पं., हि.प्र., हरि., ज. क.), श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 17) (चन्द्रोदय देखें पृ 11), (C) शुक्र शत. में 15/57, मकरसंक्रान्ति, (D) भारत गणतन्त्र दिवस, (E) कुन्द-वरद चतुर्थी, (F) श्री लक्ष्मी/सरस्वती-पूजन, (G) में उदित 7/20,

श्री वि. सं. 2076 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **फरवरी, सन् 2020 ई.**

मास पक्ष	फ़रवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	7	श.	18	11	अश्वि.	20	53	शु.	30	29	मेष			7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 18/11 से 31/7 तक, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (A)
	2	8	र.	20	4	भरणी	23	11	शु.	30	36	वृष	29	40	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	शुक्र मीन में 26/17, भीष्माष्टमी,
	3	9	चं.	21	19	कृत्ति.	24	52	ब्र.	30	12	वृष			7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	बुध शत. में 29/25, गुरु पू.षा. 3 में 8/54, नवरात्र समाप्त,
	4	10	मं.	21	50	रोहि.	25	49	ऐं.	29	13	वृष			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	नवरात्र-पारणा (देखें पृ. 18),
	5	11	बु.	21	31	मृग.	25	58	वै.	27	35	मिथुन	13	59	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	भ. 9/40 से 21/31 तक, शुक्र उ.भा. में 21/55, जया एकादशी व्रत (स.),
	6	12	गु.	20	24	आर्द्रा	25	21	वि.	25	19	मिथुन			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	सूर्य धनि. में 24/57, भीष्म द्वादशी,
	7	13	शु.	18	32	पुन.	24	0	प्री.	22	29	कर्क	18	24	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	मंगल मूल धनु में 27/52, प्रदोष व्रत,
	8	14	श.	16	2	पुष्य	22	5	आ.	19	10	कर्क			7	14	18	0	7	9	18	1	7	12	18	9	6	41	17	43	8	भ. 16/2 से 26/32 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	9	15	र.	13	3	आश्ले.	19	43	सौ.	15	28	सिंह	19	43	7	13	18	1	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	श्री गुरु रविदास जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त,
फाल्गुन कृष्ण	10	1/	चं.	9	45	मघा	17	5	शो.	11	31	सिंह			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
		2		30	18																											द्वितीया तिथिक्षय,
	11	3	मं.	26	53	पू.फा.	14	23	अ./	7	28	कन्या	19	43	7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	40	17	45	11	भ. 16/35 से 26/53 तक,
									सु.	27	27																					
	12	4	बु.	23	39	उ.फा.	11	46	धृ.	23	36	कन्या			7	10	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	नेप्च्यून पू.भा. 2 में 16/44, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	13	5	गु.	20	46	हस्त	9	25	शू.	20	2	तुला	20	22	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 15/3, मु. 30, पुण्यकाल 8/39 बाद,
	14	6	शु.	18	21	चित्रा/	7	27	गं.	16	50	तुला			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 18/21 से 29/25 तक,
						स्वाती	30	1																								
	15	7	श.	16	29	विशा.	29	9	वृ.	14	4	वृश्चिक	23	18	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	14	6	37	17	47	15	
	16	8	र.	15	14	अनु.	28	53	ध्रु.	11	48	वृश्चिक			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	बुध वक्री 30/23,
	17	9	चं.	14	35	ज्येष्ठा	29	13	व्या.	10	1	धनु	29	13	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 26/34 बाद, शुक्र रेवती में 8/3,
	18	10	मं.	14	33	मूल	30	6	ह.	8	42	धनु			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	भ. 14/33 तक,
	19	11	बु.	15	2	पू.षा.	—	—	व.	7	49	धनु			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 29/29, गुरु पू.षा.4 में 9/43, सूर्य सायन मीन में (B)
	20	12	गु.	16	0	पू.षा.	7	27	सि.	7	19	मकर	13	52	7	3	18	10	7	0	18	10	7	3	18	18	6	33	17	50	20	प्रदोष व्रत,
	21	13	शु.	17	21	उ.षा.	9	13	व्य.	7	7	मकर			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	भ. 17/21 से 30/12 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	22	14	श.	19	3	श्रवण	11	19	व.	7	12	कुम्भ	24	28	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	पंचक प्रारम्भ 24/28, शनि उ.षा. 3 में 30/34,
	23	30	र.	21	2	धनि.	13	42	प.	7	32	कुम्भ			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	31	17	52	23	
फाल्गुन शु.	24	1	चं.	23	15	शत.	16	20	शि.	8	3	कुम्भ			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	25	2	मं.	25	40	पू.भा.	19	10	सि.	8	44	मीन	12	26	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	चन्द्रदर्शन, मु. 30, प्लूटो उ.षा. 2 मकर में 7/41, जन्मदिन (C)
	26	3	बु.	28	12	उ.भा.	22	8	सा.	9	33	मीन			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	
	27	4	गु.	30	44	रेवती	25	8	शु.	10	26	मेष	25	8	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 17/28 से 30/44 तक, पंचक समाप्त 25/8, मंगल पू.षा. में 13/11,
	28	5	शु.	—	—	अश्वि.	28	2	शु.	11	18	मेष			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	शुक्र अश्वि. मेष में 25/32,
	29	5	श.	9	9	भरणी	30	42	ब्र.	12	4	मेष			6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	

(A) आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव, (B) 10/26, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, बुध पश्चिम में अस्त 18/9, विजया एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीरामकृष्ण परमहंस,

श्री वि. सं. 2076 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — मार्च, सन् 2020 ई.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन शुक्ल	1	6	र.	11	16	कृत्ति.	—	—	ऐं.	12	35	वृष	13	18	6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	1	
	2	7	चं.	12	53	कृत्ति.	8	55	वै.	12	43	वृष			6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	2	भ. 12/53 से 25/22 तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
	3	8	मं.	13	50	रोहि.	10	31	वि.	12	22	मिथुन	23	3	6	50	18	19	6	48	18	19	6	52	18	25	6	23	17	57	3	वक्री बुध धनि. में 13/21, बुध पूर्व में उदित 6/50,
	4	9	बु.	14	0	मृग.	11	23	प्री.	11	24	मिथुन			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पू.भा. में 11/42,
	5	10	गु.	13	19	आर्द्रा	11	26	आ.	9	47	कर्क	28	54	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 24/33 बाद,
	6	11	शु.	11	47	पुन.	10	38	सौ./	7	30	कर्क			6	47	18	21	6	44	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 11/47 तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी,
									शो.	28	35																					
	7	12/	श.	9	29	पुष्य	9	5	अ.	25	6	कर्क			6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	शुक्र उ.षा. 1 में 30/7, शनिप्रदोष व्रत,
		13		30	31																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	8	14	र.	27	4	आश्ले./	6	52	सु.	21	11	सिंह	6	52	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	8	भ. 27/4 बाद,
						मघा	28	9																								
	9	15	चं.	23	17	पू.फा.	25	8	धृ.	16	57	कन्या	30	21	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	भ. 13/10 तक, होलिका-दहन (प्रदोष में), होलाष्टक समाप्त, (A)
चैत्र कृष्ण	10	1	मं.	19	23	उ.फा.	22	1	शू.	12	34	कन्या			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध मार्गी 9/19, वसन्तोत्सव, होला (B)
	11	2	बु.	15	33	हस्त	18	59	गं./	8	11	तुला	29	34	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	1	11	भ. 25/46 बाद, शुक्र भर. में 30/18, यूरेनस अश्वि. 4 में 16/11,
									वृ.	27	58																					
	12	3	गु.	11	59	चित्रा	16	15	ध्रु.	24	3	तुला			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	भ. 11/59 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, मेला श्रीशीतला माता (कुराली) पं.,
	13	4/	शु.	8	51	स्वाती	13	59	व्या.	20	34	तुला			6	39	18	25	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	2	13	
		5		30	17																											पंचमी तिथिक्षय,
	14	6	श.	28	25	विशा.	12	20	ह.	17	37	वृश्चिक	6	41	6	37	18	26	6	35	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	भ. 28/25 बाद, स. सूर्य मीन में 11/53, मु. 45, पुण्यकाल 18/17 तक,
	15	7	र.	27	19	अनु.	11	23	व.	15	15	वृश्चिक			6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ. 15/52 तक,
	16	8	चं.	27	0	ज्येष्ठा	11	12	सि.	13	31	धनु	11	12	6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	4	16	श्रीशीतला पूजन, श्रीशीतलाष्टमी,
	17	9	मं.	27	24	मूल	11	46	व्य.	12	22	धनु			6	34	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. में 20/13, मंगल उ.षा. में 19/29, बुध शत. में 21/10,
	18	10	बु.	28	26	पू.षा.	13	0	व.	11	46	मकर	19	24	6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	18	भ. 15/55 से 28/26 तक, राहु आर्द्रा 1, केतु मूल 3 में 19/50,
	19	11	गु.	29	59	उ.षा.	14	49	प.	11	38	मकर			6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	19	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 18),
	20	12	शु.	—	—	श्रव.	17	5	शि.	11	51	कुम्भ	30	20	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	5	18	5	20	पंचक प्रारम्भ 30/20, सूर्य सायन मेष में 9/20, उत्तरगोल प्रारम्भ, (C)
	21	12	श.	7	56	धनि.	19	39	सि.	12	21	कुम्भ			6	29	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	21	महावारुणी पर्व (19/40 बाद), शनि प्रदोष व्रत, शक संवत्सर 1942 प्रा.,
	22	13	र.	10	8	शत.	22	26	सा.	13	2	कुम्भ			6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	22	भ. 10/8 से 23/19 तक, मंगल मकर में 14/40, वारुणी पर्व (D)
	23	14	चं.	12	30	पू.भा.	25	21	शु.	13	50	मीन	18	36	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	
	24	30	मं.	14	58	उ.भा.	28	18	शु.	14	42	मीन			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	शुक्र कृत्ति. में 29/27, भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर 2076 वि. पूर्ण,

होलाष्टक
2 से 9 मार्च

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (B) महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (C) महाविषुव-दिन, पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.), (D) (10/8 तक), मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	स्वाती	8	18	14	21	20	27	2	34
1/2	विशा.	8	43	14	54	21	7	3	22
2/3	अनु.	9	39	15	57	22	17	4	39
3/4	ज्येष्ठा	11	3	17	28	23	54	6	23
4/5	मूल	12	53	19	24	1	57	8	31
5/6	पू.षा.	15	7	21	44	4	22	11	2
6/7	उ.षा.	17	42	0	24	7	7	13	51
7/8	श्रव.	20	35	3	20	10	6	16	53
8/9	धनि.	23	40	6	27	13	14	20	2
10	शत.	2	49	9	36	16	23	23	8
11/12	पू.भा.	5	53	12	38	19	21	2	2
12/13	उ.भा.	8	43	15	21	21	58	4	33
13/14	रेव.	11	5	17	36	0	4	6	29
14/15	अश्वि.	12	52	19	12	1	29	7	44
15/16	भर.	13	55	20	4	2	9	8	12
16/17	कृत्ति.	14	11	20	8	2	2	7	52
17/18	रोहि.	13	40	19	25	1	7	6	47
18/19	मृग.	12	24	17	59	23	32	5	2
19/20	आर्द्रा	10	31	15	57	21	22	2	45
20/21	पुन.	8	7	13	27	18	46	0	5
21	पुष्य	5	22	10	39	15	55	21	11
22	आश्ले.	2	27	7	42	12	58	18	15
22/23	मघा	23	31	4	49	10	7	15	26
23/24	पू.फा.	20	46	2	8	7	30	12	55
24/25	उ.फा.	18	21	23	49	5	19	10	50
25/26	हस्त	16	24	22	1	3	39	9	20
26/27	चित्रा	15	4	20	50	2	39	8	30
27/28	स्वाती	14	24	20	21	2	20	8	23
28/29	विशा.	14	28	20	35	2	45	8	58
29/30	अनु.	15	14	21	32	3	52	10	15
30/31	ज्येष्ठा	16	40	23	7	5	36	12	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	मूल	18	39	1	14	7	50	14	28
1/2	पू.षा.	21	7	3	47	10	28	17	11
2/3	उ.षा.	23	54	6	38	13	23	20	8
4	श्रव.	2	54	9	40	16	27	23	14
5/6	धनि.	6	1	12	47	19	34	2	21
6/7	शत.	9	7	15	53	22	39	5	24
7/8	पू.भा.	12	8	18	52	1	35	8	17
8/9	उ.भा.	14	58	21	38	4	16	10	54
9/10	रेव.	17	30	0	4	6	37	13	8
10/11	अश्वि.	19	36	2	4	8	29	14	51
11/12	भर.	21	12	3	30	9	46	15	59
12/13	कृत्ति.	22	10	4	18	10	24	16	27
13/14	रोहि.	22	27	4	24	10	19	16	11
14/15	मृग.	22	1	3	47	9	31	15	13
15/16	आर्द्रा	20	52	2	29	8	3	13	35
16/17	पुन.	19	5	0	33	5	59	11	23
17/18	पुष्य	16	45	22	6	3	26	8	44
18/19	आश्ले.	14	1	19	17	0	33	5	48
19/20	मघा	11	2	16	16	21	31	2	45
20	पू.फा.	7	59	13	14	18	30	23	46
21	उ.फा.	5	3	10	22	15	41	21	3
22	हस्त	2	26	7	50	13	17	18	46
23	चित्रा	0	17	5	50	11	26	17	5
23/24	स्वाती	22	47	4	31	10	18	16	9
24/25	विशा.	22	2	3	59	9	58	16	1
25/26	अनु.	22	7	4	17	10	29	16	44
26/27	ज्येष्ठा	23	3	5	24	11	49	18	15
28	मूल	0	45	7	17	13	51	20	27

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पू.षा.	3	5	9	45	16	27	23	10
2/3	उ.षा.	5	54	12	39	19	25	2	12
3/4	श्रव.	8	59	15	46	22	34	5	22
4/5	धनि.	12	9	18	57	1	44	8	30
5/6	शत.	15	16	22	1	4	46	11	29
6/7	पू.भा.	18	12	0	54	7	35	14	15
7/8	उ.भा.	20	53	3	31	10	7	16	42
8/9	रेव.	23	16	5	48	12	20	18	49
10	अश्वि.	1	18	7	45	14	10	20	34
11	भर.	2	57	9	17	15	36	21	54
12	कृत्ति.	4	9	10	23	16	35	22	45
13	रोहि.	4	53	10	59	17	3	23	4
14	मृग.	5	4	11	2	16	57	22	50
15	आर्द्रा	4	41	10	30	16	17	22	1
16	पुन.	3	44	9	24	15	2	20	38
17	पुष्य	2	12	7	45	13	15	18	44
18	आश्ले.	0	11	5	37	11	1	16	24
18/19	मघा	21	46	3	7	8	26	13	46
19/20	पू.फा.	19	4	0	23	5	41	10	58
20/21	उ.फा.	16	17	21	35	2	54	8	13
21/22	हस्त	13	33	18	54	0	17	5	40
22/23	चित्रा	11	5	16	32	22	1	3	32
23/24	स्वाती	9	5	14	40	20	18	1	58
24/25	विशा.	7	41	13	27	19	16	1	8
25/26	अनु.	7	2	13	1	19	2	1	7
26/27	ज्येष्ठा	7	15	13	26	19	40	1	58
27/28	मूल	8	18	14	42	21	9	3	38
28/29	पू.षा.	10	10	16	44	23	21	6	0
29/30	उ.षा.	12	40	19	22	2	6	8	51
30/31	श्रव.	15	37	22	24	5	11	11	58

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	धनि.	18	46	1	33	8	21	15	7
1/2	शत.	21	53	4	39	11	23	18	6
3	पू.भा.	0	49	7	30	14	9	20	47
4	उ.भा.	3	24	9	59	16	33	23	5
5/6	रेव.	5	35	12	4	18	32	0	58
6/7	अश्वि.	7	22	13	45	20	6	2	25
7/8	भर.	8	44	15	1	21	16	3	30
8/9	कृत्ति.	9	42	15	53	22	3	4	12
9/10	रोहि.	10	19	16	24	22	29	4	31
10/11	मृग.	10	33	16	33	22	32	4	29
11/12	आर्द्रा	10	25	16	19	22	12	4	3
12/13	पुन.	9	53	15	42	21	29	3	14
13/14	पुष्य	8	58	14	41	20	22	2	1
14/15	आश्ले.	7	39	13	16	18	52	0	26
15	मघा	5	59	11	31	17	2	22	31
16	पू.फा.	4	1	9	29	14	56	20	23
17	उ.फा.	1	50	7	16	12	43	18	9
17/18	हस्त	23	35	5	2	10	29	15	56
18/19	चित्रा	21	25	2	54	8	24	13	56
19/20	स्वाती	19	29	1	4	6	40	12	18
20/21	विशा.	17	58	23	40	5	24	11	11
21/22	अनु.	17	0	22	52	4	47	10	44
22/23	ज्येष्ठा	16	45	22	48	4	54	11	4
23/24	मूल	17	16	23	31	5	49	12	11
24/25	पू.षा.	18	35	1	1	7	31	14	3
25/26	उ.षा.	20	37	3	13	9	52	16	32
26/27	श्रव.	23	13	5	57	12	41	19	26
28	धनि.	2	12	8	58	15	45	22	31
29/30	शत.	5	17	12	3	18	47	1	31

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	पू.भा.	8	14	14	56	21	36	4	14
1/2	उ.भा.	10	51	17	27	0	0	6	32
2/3	रेव.	13	1	19	29	1	54	8	18
3/4	अश्वि.	14	39	20	59	3	17	9	32
4/5	भर.	15	46	21	58	4	9	10	17
5/6	कृत्ति.	16	24	22	29	4	33	10	35
6/7	रोहि.	16	36	22	36	4	34	10	31
7/8	मृग.	16	27	22	21	4	15	10	8
8/9	आर्द्रा	15	59	21	50	3	40	9	29
9/10	पुन.	15	17	21	4	2	50	8	36
10/11	पुष्य	14	21	20	5	1	48	7	31
11/12	आश्ले.	13	13	18	54	0	35	6	15
12/13	मघा	11	54	17	33	23	11	4	49
13/14	पू.फा.	10	26	16	3	21	40	3	16
14/15	उ.फा.	8	52	14	28	20	4	1	40
15/16	हस्त	7	16	12	51	18	28	0	4
16	चित्रा	5	41	11	19	16	57	22	36
17	स्वाती	4	16	9	57	15	39	21	22
18	विशा.	3	7	8	53	14	40	20	30
19	अनु.	2	21	8	14	14	10	20	7
20	ज्येष्ठा	2	7	8	9	14	13	20	20
21	मूल	2	29	8	40	14	55	21	11
22	पू.षा.	3	31	9	52	16	17	22	43
23/24	उ.षा.	5	12	11	44	18	17	0	52
24/25	श्रव.	7	30	14	9	20	49	3	31
25/26	धनि.	10	14	16	58	23	43	6	28
26/27	शत.	13	13	19	58	2	43	9	28
27/28	पू.भा.	16	12	22	55	5	37	12	18
28/29	उ.भा.	18	58	1	35	8	11	14	45
29/30	रेव.	21	17	3	47	10	15	16	40
30/31	अश्वि.	23	3	5	24	11	42	17	58

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	भर.	0	11	6	22	12	31	18	38
2	कृत्ति.	0	42	6	44	12	44	18	42
3	रोहि.	0	38	6	32	12	25	18	16
4	मृग.	0	5	5	53	11	39	17	24
4/5	आर्द्रा	23	8	4	51	10	33	16	14
5/6	पुन.	21	54	3	33	9	12	14	50
6/7	पुष्य	20	28	2	5	7	42	13	19
7/8	आश्ले.	18	56	0	32	6	8	11	45
8/9	मघा	17	21	22	58	4	34	10	11
9/10	पू.फा.	15	48	21	26	3	4	8	42
10/11	उ.फा.	14	20	19	59	1	39	7	19
11/12	हस्त	13	0	18	42	0	24	6	7
12/13	चित्रा	11	50	17	35	23	21	5	7
13/14	स्वाती	10	55	16	43	22	33	4	24
14/15	विशा.	10	16	16	10	22	4	4	1
15/16	अनु.	9	59	15	58	21	59	4	2
16/17	ज्येष्ठा	10	6	16	13	22	21	4	31
17/18	मूल	10	42	16	56	23	12	5	30
18/19	पू.षा.	11	50	18	12	0	35	7	1
19/20	उ.षा.	13	29	19	59	2	30	9	4
20/21	श्रव.	15	39	22	15	4	53	11	33
21/22	धनि.	18	14	0	56	7	39	14	23
22/23	शत.	21	7	3	52	10	37	17	22
24	पू.भा.	0	7	6	51	13	36	20	19
25	उ.भा.	3	1	9	42	16	22	23	0
26/27	रेव.	5	37	12	12	18	44	1	15
27/28	अश्वि.	7	43	14	9	20	32	2	53
28/29	भर.	9	11	15	27	21	39	3	50
29/30	कृत्ति.	9	57	16	2	22	4	4	4

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	रोहि.	10	00	15	55	21	47	3	37
1/2	मृग.	9	24	15	10	20	53	2	34
2/3	आर्द्रा	8	14	13	51	19	28	1	2
3	पुन.	6	36	12	8	17	39	23	9
4	पुष्य	4	38	10	7	15	35	21	2
5	आश्ले.	2	30	7	57	13	23	18	50
6	मघा	0	18	5	45	11	13	16	41
6/7	पू.फा.	22	10	3	39	9	10	14	41
7/8	उ.फा.	20	13	1	46	7	21	12	56
8/9	हस्त	18	33	0	11	5	51	11	32
9/10	चित्रा	17	15	22	59	4	45	10	32
10/11	स्वाती	16	21	22	12	4	5	9	59
11/12	विशा.	15	55	21	53	3	52	9	53
12/13	अनु.	15	57	22	1	4	8	10	17
13/14	ज्येष्ठा	16	27	22	39	4	53	11	8
14/15	मूल	17	25	23	44	6	5	12	27
15/16	पू.षा.	18	51	1	17	7	44	14	12
16/17	उ.षा.	20	43	3	14	9	48	16	22
17/18	श्रव.	22	58	5	35	12	13	18	53
19	धनि.	1	34	8	15	14	58	21	41
20/21	शत.	4	25	11	9	17	54	0	39
21/22	पू.भा.	7	24	14	10	20	55	3	39
22/23	उ.भा.	10	24	17	8	23	50	6	32
23/24	रेव.	13	13	19	53	2	31	9	7
24/25	अश्वि.	15	41	22	14	4	44	11	13
25/26	भर.	17	38	0	2	6	23	12	41
26/27	कृत्ति.	18	56	1	9	7	19	13	25
27/28	रोहि.	19	30	1	31	7	29	13	25
28/29	मृग.	19	17	1	7	6	55	12	39
29/30	आर्द्रा	18	21	0	1	5	39	11	14
30/31	पुन.	16	47	22	18	3	47	9	14

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पुष्य	14	40	20	5	1	28	6	50
1/2	आश्ले.	12	11	17	31	22	51	4	10
2/3	मघा	9	29	14	47	20	6	1	25
3	पू.फा.	6	43	12	3	17	23	22	44
4	उ.फा.	4	5	9	28	14	52	20	17
5	हस्त	1	44	7	12	12	42	18	13
5/6	चित्रा	23	47	5	23	11	00	16	40
6/7	स्वाती	22	23	4	7	9	54	15	43
7/8	विशा.	21	35	3	29	9	26	15	25
8/9	अनु.	21	27	3	31	9	38	15	46
9/10	ज्येष्ठा	21	58	4	11	10	27	16	45
10/11	मूल	23	5	5	27	11	51	18	17
12	पू.षा.	0	45	7	14	13	45	20	17
13	उ.षा.	2	51	9	26	16	2	22	40
14/15	श्रव.	5	18	11	58	18	38	1	19
15/16	धनि.	8	1	14	44	21	27	4	11
16/17	शत.	10	55	17	40	0	24	7	9
17/18	पू.भा.	13	55	20	40	3	25	10	10
18/19	उ.भा.	16	54	23	38	6	22	13	5
19/20	रेव.	19	48	2	29	9	10	15	50
20/21	अश्वि.	22	28	5	5	11	41	18	14
22	भर.	0	47	7	17	13	45	20	11
23	कृत्ति.	2	35	8	57	15	16	21	33
24	रोहि.	3	47	9	58	16	7	22	12
25	मृग.	4	15	10	15	16	12	22	7
26	आर्द्रा	3	58	9	47	15	32	21	16
27	पुन.	2	56	8	34	14	9	19	42
28	पुष्य	1	13	6	41	12	7	17	32
28/29	आश्ले.	22	54	4	15	9	35	14	53
29/30	मघा	20	10	1	27	6	42	11	56
30/31	पू.फा.	17	11	22	25	3	39	8	53

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितम्बर 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	उ.फा.	14	7	19	22	0	37	5	53
1/2	हस्त	11	10	16	29	21	48	3	10
2/3	चित्रा	8	32	13	57	19	24	0	53
3	स्वाती	6	24	11	57	17	33	23	12
4	विशा.	4	53	10	37	16	24	22	14
5	अनु.	4	7	10	3	16	2	22	4
6	ज्येष्ठा	4	8	10	16	16	27	22	41
7/8	मूल	4	57	11	16	17	38	0	2
8/9	पू.षा.	6	28	12	57	19	28	2	1
9/10	उ.षा.	8	35	15	12	21	49	4	28
10/11	श्रव.	11	9	17	50	0	32	7	15
11/12	धनि.	13	59	20	43	3	28	10	13
12/13	शत.	16	58	23	43	6	28	13	13
13/14	पू.भा.	19	58	2	43	9	27	16	11
14/15	उ.भा.	22	55	5	38	12	21	19	2
16	रेव.	1	44	8	24	15	4	21	43
17/18	अश्वि.	4	21	10	59	17	55	0	10
18/19	भर.	6	43	13	16	19	47	2	16
19/20	कृत्ति.	8	45	15	11	21	35	3	58
20/21	रोहि.	10	19	16	38	22	55	5	9
21/22	मृग.	11	21	17	31	23	38	5	43
22/23	आर्द्रा	11	46	17	45	23	43	5	37
23/24	पुन.	11	29	17	18	23	5	4	49
24/25	पुष्य	10	30	16	9	21	46	3	20
25/26	आश्ले.	8	52	14	22	19	50	1	16
26	मघा	6	40	12	2	17	23	22	42
27	पू.फा.	4	0	9	17	14	33	19	49
28	उ.फा.	1	4	6	19	11	33	16	47
28/29	हस्त	22	2	3	17	8	33	13	49
29/30	चित्रा	19	6	0	25	5	44	11	6

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	स्वाती	16	29	21	54	3	20	8	49
1/2	विशा.	14	20	19	54	1	31	7	10
2/3	अनु.	12	52	18	37	0	24	6	15
3/4	ज्येष्ठा	12	10	18	7	0	8	6	11
4/5	मूल	12	19	18	29	0	42	6	59
5/6	पू.षा.	13	18	19	40	2	5	8	33
6/7	उ.षा.	15	3	21	35	4	10	10	46
7/8	श्रव.	17	25	0	4	6	46	13	28
8/9	धनि.	20	11	2	56	9	41	16	26
9/10	शत.	23	11	5	57	12	43	19	28
11	पू.भा.	2	13	8	58	15	42	22	26
12/13	उ.भा.	5	9	11	51	18	32	1	13
13/14	रेव.	7	52	14	31	21	8	3	44
14/15	अश्वि.	10	20	16	54	23	27	5	59
15/16	भर.	12	30	18	59	1	28	7	55
16/17	कृत्ति.	14	21	20	45	3	9	9	31
17/18	रोहि.	15	51	22	10	4	28	10	44
18/19	मृग.	16	59	23	11	5	23	11	32
19/20	आर्द्रा	17	40	23	46	5	50	11	52
20/21	पुन.	17	52	23	50	5	46	11	40
21/22	पुष्य	17	32	23	21	5	9	10	55
22/23	आश्ले.	16	38	22	20	3	59	9	37
23/24	मघा	15	12	20	46	2	18	7	49
24/25	पू.फा.	13	17	18	45	0	11	5	36
25/26	उ.फा.	11	00	16	22	21	45	3	6
26/27	हस्त	8	27	13	47	19	8	0	28
27	चित्रा	5	49	11	10	16	31	21	53
28.	स्वाती	3	16	8	40	14	5	19	32
29	विशा.	1	0	6	30	12	1	17	35
29/30	अनु.	23	11	4	49	10	30	16	13
30/31	ज्येष्ठा	21	59	3	47	9	39	15	33

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवम्बर 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	मूल	21	31	3	31	9	35	15	42
1/2	पू.षा.	21	51	4	4	10	20	16	39
2/3	उ.षा.	23	1	5	25	11	53	18	22
4	श्रव.	0	54	7	29	14	5	20	43
5	धनि.	3	23	10	4	16	46	23	30
6/7	शत.	6	14	12	59	19	44	2	29
7/8	पू.भा.	9	15	16	00	22	44	5	28
8/9	उ.भा.	12	12	18	54	1	36	8	16
9/10	रेव.	14	55	21	33	4	9	10	44
10/11	अश्वि.	17	18	23	50	6	21	12	49
11/12	भर.	19	17	1	43	8	7	14	30
12/13	कृत्ति.	20	51	3	10	9	28	15	45
13/14	रोहि.	22	00	4	14	10	26	16	37
14/15	मृग.	22	47	4	55	11	2	17	7
15/16	आर्द्रा	23	11	5	14	11	16	17	16
16/17	पुन.	23	15	5	13	11	9	17	4
17/18	पुष्य	22	58	4	15	10	42	16	32
18/19	आश्ले.	22	20	4	8	9	54	15	38
19/20	मघा	21	22	3	4	8	45	14	25
20/21	पू.फा.	20	4	1	42	7	18	12	54
21/22	उ.फा.	18	29	0	3	5	36	11	8
22/23	हस्त	16	40	22	12	3	43	9	14
23/24	चित्रा	14	44	20	15	1	45	7	16
24/25	स्वाती	12	47	18	18	23	51	5	23
25/26	विशा.	10	57	16	31	22	7	3	44
26/27	अनु.	9	22	15	2	20	43	2	27
27/28	ज्येष्ठा	8	12	13	59	19	48	1	40
28/29	मूल	7	33	13	29	19	28	1	29
29/30	पू.षा.	7	33	13	40	19	49	2	1

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसम्बर 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	उ.षा.	8	15	14	32	20	52	3	15
1/2	श्रव.	9	40	16	7	22	37	5	8
2/3	धनि.	11	43	18	18	0	56	7	35
3/4	शत.	14	16	20	58	3	41	10	24
4/5	पू.भा.	17	9	23	53	6	38	13	22
5/6	उ.भा.	20	7	2	50	9	34	16	16
6/7	रेव.	22	57	5	37	12	15	18	52
8	अश्वि.	1	27	8	1	14	32	21	2
9	भर.	3	30	9	55	16	19	22	40
10	कृत्ति.	5	00	11	17	17	32	23	46
11/12	रोहि.	5	57	12	6	18	13	0	18
12/13	मृग.	6	21	12	23	18	23	0	21
13	आर्द्रा	6	18	12	13	18	7	23	59
14	पुन.	5	50	11	40	17	29	23	16
15	पुष्य	5	3	10	48	16	33	22	17
16	आश्ले.	4	0	9	43	15	25	21	6
17	मघा	2	47	8	27	14	7	19	46
18	पू.फा.	1	26	7	4	12	43	18	22
19	उ.फा.	0	00	5	38	11	17	16	55
19/20	हस्त	22	33	4	12	9	50	15	29
20/21	चित्रा	21	8	2	48	8	27	14	8
21/22	स्वाती	19	48	1	30	7	11	12	54
22/23	विशा.	18	37	0	21	6	6	11	52
23/24	अनु.	17	39	23	27	5	16	11	7
24/25	ज्येष्ठा	16	59	22	52	4	46	10	43
25/26	मूल	16	41	22	40	4	41	10	45
26/27	पू.षा.	16	50	22	57	5	5	11	16
27/28	उ.षा.	17	30	23	45	6	2	12	21
28/29	श्रव.	18	43	1	6	7	32	14	00
29/30	धनि.	20	29	3	1	9	34	16	8
30/31	शत.	22	46	5	24	12	4	18	45

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पू.भा.	1	27	8	10	14	54	21	38
2/3	उ.भा.	4	22	11	7	17	51	0	35
3/4	रेव.	7	19	14	2	20	44	3	25
4/5	अश्वि.	10	5	16	43	23	19	5	54
5/6	भर.	12	27	18	57	1	25	7	51
6/7	कृत्ति.	14	15	20	36	2	54	9	10
7/8	रोहि.	15	23	21	34	3	42	9	48
8/9	मृग.	15	50	21	51	3	49	9	44
9/10	आर्द्रा	15	37	21	28	3	17	9	3
10/11	पुन.	14	48	20	31	2	12	7	52
11/12	पुष्य	13	30	19	6	0	42	6	16
12/13	आश्ले.	11	49	17	22	22	53	4	24
13/14	मघा	9	55	15	25	20	55	2	25
14/15	पू.फा.	7	55	13	25	18	55	0	26
15	उ.फा.	5	56	11	28	17	0	22	33
16	हस्त	4	6	9	41	15	16	20	53
17	चित्रा	2	30	8	9	13	49	19	30
18	स्वाती	1	12	6	56	12	41	18	27
19	विशा.	0	15	6	4	11	55	17	47
19/20	अनु.	23	41	5	36	11	32	17	30
20/21	ज्येष्ठा	23	30	5	31	11	33	17	37
21/22	मूल	23	43	5	49	11	58	18	8
23	पू.षा.	0	19	6	32	12	47	19	3
24	उ.षा.	1	20	7	39	14	0	20	22
25	श्रव.	2	45	9	10	15	37	22	5
26/27	धनि.	4	35	11	6	17	39	0	13
27/28	शत.	6	48	13	25	20	3	2	42
28/29	पू.भा.	9	22	16	4	22	46	5	29
29/30	उ.भा.	12	13	18	57	1	42	8	27
30/31	रेव.	15	12	21	57	4	41	11	26

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	अश्वि.	18	9	0	52	7	34	14	14
1/2	भर.	20	53	3	30	10	6	16	39
2/3	कृत्ति.	23	11	5	40	12	6	18	30
4	रोहि.	0	52	7	10	13	26	19	39
5	मृग.	1	49	7	56	13	59	20	0
6	आर्द्रा	1	58	7	53	13	45	19	34
7	पुन.	1	20	7	4	12	45	18	24
8	पुष्य	0	0	5	34	11	6	16	36
8/9	आश्ले.	22	5	3	31	8	56	14	20
9/10	मघा	19	43	1	5	6	25	11	45
10/11	पू.फा.	17	5	22	25	3	44	9	3
11/12	उ.फा.	14	23	19	43	1	3	6	24
12/13	हस्त	11	46	17	9	22	33	3	58
13/14	चित्रा	9	24	14	53	20	22	1	54
14/15	स्वाती	7	27	13	2	18	40	0	19
15	विशा.	6	0	11	44	17	30	23	18
16	अनु.	5	9	11	1	16	56	22	54
17	ज्येष्ठा	4	53	10	55	16	59	23	5
18	मूल	5	13	11	23	17	36	23	50
19/20	पू.षा.	6	6	12	24	18	43	1	4
20/21	उ.षा.	7	27	13	52	20	17	2	44
21/22	श्रव.	9	13	15	43	22	13	4	46
22/23	धनि.	11	19	17	53	0	28	7	5
23/24	शत.	13	42	20	20	2	59	9	39
24/25	पू.भा.	16	20	23	2	5	44	12	26
25/26	उ.भा.	19	10	1	54	8	38	15	23
26/27	रेव.	22	8	4	53	11	38	18	23
28	अश्वि.	1	8	7	52	14	36	21	20

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
29/1	भर.	4	2	10	44	17	24	0	4
1/2	कृत्ति.	6	42	13	18	19	52	2	24
2/3	रोहि.	8	55	15	22	21	48	4	11
3/4	मृग.	10	31	16	48	23	3	5	14
4/5	आर्द्रा	11	23	17	28	23	30	5	30
5/6	पुन.	11	25	17	18	23	8	4	54
6/7	पुष्य	10	38	16	19	21	57	3	32
7/8	आश्ले.	9	4	14	34	20	2	1	28
8	मघा	6	52	12	13	17	33	22	52
9	पू.फा.	4	9	9	25	14	40	19	55
10	उ.फा.	1	8	6	21	11	34	16	48
10/11	हस्त	22	1	3	15	8	29	13	43
11/12	चित्रा	18	59	0	16	5	34	10	54
12/13	स्वाती	16	15	21	38	3	3	8	30
13/14	विशा.	13	59	19	31	1	4	6	41
14/15	अनु.	12	20	18	1	23	46	5	33
15/16	ज्येष्ठा	11	23	17	16	23	12	5	10
16/17	मूल	11	12	17	16	23	23	5	33
17/18	पू.षा.	11	46	18	1	0	18	6	38
18/19	उ.षा.	13	0	19	24	1	51	8	19
19/20	श्रव.	14	49	21	21	3	54	10	29
20/21	धनि.	17	4	23	42	6	20	12	59
21/22	शत.	19	39	2	20	9	1	15	43
22/23	पू.भा.	22	26	5	9	11	53	18	36
24	उ.भा.	1	20	8	5	14	49	21	34
25/26	रेव.	4	18	11	3	17	47	0	32
26/27	अश्वि.	7	16	14	0	20	43	3	26
27/28	भर.	10	9	16	51	23	32	6	12
28/29	कृत्ति.	12	52	19	30	2	7	8	43
29/30	रोहि.	15	17	21	50	4	21	10	50
30/31	मृग.	17	17	23	42	6	5	12	25

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जनवरी 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 6"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	41	27	8	16	8	20	6	18	15	17	11	5	48	58	7	29	44	9	7	17	39	5	6	29	22	41	8	17	15	31	3	3	27	13	3	2	45	43	-23	2	-10	42	5	5
2	6	45	23	8	17	9	30	7	1	7	53	11	6	29	17	8	1	12	6	7	17	51	40	7	0	21	47	8	17	22	36	3	3	24	2	3	2	43	28	-22	57	-14	34	4	38
3	6	49	20	8	18	10	40	7	13	46	33	11	7	9	38	8	2	40	36	7	18	4	11	7	1	21	22	8	17	29	42	3	3	20	51	3	2	41	5	-22	52	-17	42	3	59
4	6	53	16	8	19	11	51	7	26	12	49	11	7	50	1	8	4	9	38	7	18	16	40	7	2	21	23	8	17	36	47	3	3	17	40	3	2	38	57	-22	46	-19	57	3	8
5	6	57	13	8	20	13	1	8	8	28	8	11	8	30	25	8	5	39	9	7	18	29	5	7	3	21	51	8	17	43	52	3	3	14	29	3	2	37	19	-22	40	-21	15	2	10
6	7	1	10	8	21	14	12	8	20	33	57	11	9	10	51	8	7	9	9	7	18	41	28	7	4	22	43	8	17	50	58	3	3	11	18	3	2	36	21	-22	33	-21	32	1	6
7	7	5	6	8	22	15	23	9	2	31	53	11	9	51	19	8	8	39	37	7	18	53	47	7	5	23	59	8	17	58	3	3	3	8	8	3	2	36	2	-22	26	-20	49	0	0
8	7	9	3	8	23	16	33	9	14	23	47	11	10	31	48	8	10	10	31	7	19	6	2	7	6	25	39	8	18	5	7	3	3	4	57	3	2	36	17	-22	18	-19	11	-1	5
9	7	12	59	8	24	17	43	9	26	11	55	11	11	12	18	8	11	41	53	7	19	18	14	7	7	27	40	8	18	12	11	3	3	1	46	3	2	36	55	-22	10	-16	44	-2	7
10	7	16	56	8	25	18	53	10	7	59	0	11	11	52	50	8	13	13	40	7	19	30	22	7	8	30	3	8	18	19	15	3	2	58	35	3	2	37	44	-22	2	-13	35	-3	4
11	7	20	52	8	26	20	3	10	19	48	19	11	12	33	22	8	14	45	55	7	19	42	27	7	9	32	46	8	18	26	18	3	2	55	24	3	2	38	33	-21	53	-9	55	-3	54
12	7	24	49	8	27	21	12	11	1	43	38	11	13	13	56	8	16	18	35	7	19	54	27	7	10	35	49	8	18	33	21	3	2	52	14	3	2	39	11	-21	43	-5	50	-4	33
13	7	28	45	8	28	22	20	11	13	49	6	11	13	54	30	8	17	51	43	7	20	6	24	7	11	39	11	8	18	40	22	3	2	49	3	3	2	39	35	-21	34	-1	28	-5	1
14	7	32	42	8	29	23	28	11	26	9	11	11	14	35	6	8	19	25	18	7	20	18	17	7	12	42	52	8	18	47	23	3	2	45	52	3	2	39	44	-21	23	3	2	-5	16
15	7	36	39	9	0	24	35	0	8	48	17	11	15	15	42	8	20	59	20	7	20	30	5	7	13	46	51	8	18	54	24	3	2	42	41	3	2	39	44	-21	13	7	31	-5	16
16	7	40	35	9	1	25	41	0	21	50	24	11	15	56	18	8	22	33	52	7	20	41	50	7	14	51	7	8	19	1	23	3	2	39	31	3	2	39	39	-21	2	11	49	-5	1
17	7	44	32	9	2	26	47	1	5	18	35	11	16	36	55	8	24	8	52	7	20	53	30	7	15	55	41	8	19	8	21	3	2	36	20	3	2	39	36	-20	50	15	40	-4	28
18	7	48	28	9	3	27	52	1	19	14	17	11	17	17	32	8	25	44	23	7	21	5	6	7	17	0	30	8	19	15	19	3	2	33	9	3	2	39	39	-20	38	18	47	-3	39
19	7	52	25	9	4	28	56	2	3	36	43	11	17	58	10	8	27	20	24	7	21	16	37	7	18	5	36	8	19	22	15	3	2	29	58	3	2	39	49	-20	26	20	50	-2	35
20	7	56	21	9	5	29	59	2	18	22	23	11	18	38	47	8	28	56	58	7	21	28	4	7	19	10	57	8	19	29	10	3	2	26	47	3	2	40	1	-20	14	21	33	-1	19
21	8	0	18	9	6	31	2	3	3	24	59	11	19	19	25	9	0	34	4	7	21	39	26	7	20	16	33	8	19	36	4	3	2	23	37	3	2	40	7	-20	1	20	43	0	4
22	8	4	14	9	7	32	5	3	18	36	2	11	20	0	3	9	2	11	44	7	21	50	44	7	21	22	24	8	19	42	56	3	2	20	26	3	2	40	2	-19	47	18	23	1	28
23	8	8	11	9	8	33	6	4	3	45	57	11	20	40	41	9	3	49	58	7	22	1	56	7	22	28	28	8	19	49	47	3	2	17	15	3	2	39	39	-19	34	14	47	2	45
24	8	12	8	9	9	34	7	4	18	45	25	11	21	21	20	9	5	28	48	7	22	13	4	7	23	34	47	8	19	56	37	3	2	14	4	3	2	38	59	-19	20	10	15	3	49
25	8	16	4	9	10	35	7	5	3	26	49	11	22	1	58	9	7	8	14	7	22	24	7	7	24	41	19	8	20	3	25	3	2	10	53	3	2	38	7	-19	5	5	13	4	38
26	8	20	1	9	11	36	7	5	17	45	2	11	22	42	36	9	8	48	18	7	22	35	5	7	25	48	3	8	20	10	12	3	2	7	43	3	2	37	15	-18	50	0	1	5	7
27	8	23	57	9	12	37	7	6	1	37	41	11	23	23	14	9	10	29	0	7	22	45	58	7	26	55	0	8	20	16	57	3	2	4	32	3	2	36	36	-18	35	-5	1	5	18
28	8	27	54	9	13	38	5	6	15	4	50	11	24	3	53	9	12	10	20	7	22	56	45	7	28	2	9	8	20	23	41	3	2	1	21	3	2	36	22	-18	20	-9	39	5	10
29	8	31	50	9	14	39	3	6	28	8	22	11	24	44	31	9	13	52	19	7	23	7	27	7	29	9	29	8	20	30	22	3	1	58	10	3	2	36	40	-18	4	-13	42	4	47
30	8	35	47	9	15	40	1	7	10	51	16	11	25	25	9	9	15	34	59	7	23	18	4	8	0	17	0	8	20	37	2	3	1	55	0	3	2	37	30	-17	48	-17	2	4	10
31	8	39	43	9	16	40	58	7	23	17	1	11	26	5	48	9	17	18	17	7	23	28	34	8	1	24	42	8	20	43	40	3	1	51	49	3	2	38	44	-17	31	-19	30	3	22

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 फरवरी 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 11"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	8	43	40	9	17	41	54	8	5	29	14	11	26	46	26
2	8	47	37	9	18	42	49	8	17	31	18	11	27	27	4
3	8	51	33	9	19	43	43	8	29	26	14	11	28	7	43
4	8	55	30	9	20	44	37	9	11	16	41	11	28	48	21
5	8	59	26	9	21	45	29	9	23	4	55	11	29	28	59
6	9	3	23	9	22	46	20	10	4	53	0	0	0	9	37
7	9	7	19	9	23	47	10	10	16	42	56	0	0	50	15
8	9	11	16	9	24	47	59	10	28	36	47	0	1	30	52
9	9	15	12	9	25	48	46	11	10	36	53	0	2	11	29
10	9	19	9	9	26	49	31	11	22	45	56	0	2	52	5
11	9	23	6	9	27	50	16	0	5	7	1	0	3	32	41
12	9	27	2	9	28	50	58	0	17	43	33	0	4	13	16
13	9	30	59	9	29	51	39	1	0	39	2	0	4	53	51
14	9	34	55	10	0	52	18	1	13	56	46	0	5	34	25
15	9	38	52	10	1	52	55	1	27	39	23	0	6	14	58
16	9	42	48	10	2	53	31	2	11	48	9	0	6	55	30
17	9	46	45	10	3	54	5	2	26	22	13	0	7	36	1
18	9	50	41	10	4	54	38	3	11	17	55	0	8	16	32
19	9	54	38	10	5	55	9	3	26	28	35	0	8	57	1
20	9	58	35	10	6	55	38	4	11	45	1	0	9	37	30
21	10	2	31	10	7	56	6	4	26	56	43	0	10	17	57
22	10	6	28	10	8	56	32	5	11	53	40	0	10	58	23
23	10	10	24	10	9	56	57	5	26	27	47	0	11	38	49
24	10	14	21	10	10	57	20	6	10	34	7	0	12	19	14
25	10	18	17	10	11	57	42	6	24	10	58	0	12	59	37
26	10	22	14	10	12	58	2	7	7	19	30	0	13	40	0
27	10	26	10	10	13	58	22	7	20	2	54	0	14	20	22
28	10	30	7	10	14	58	39	8	2	25	33	0	15	0	43

फरवरी	बुध				गुरु				शुक्र				शनि			
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	9	19	2	15	7	23	39	0	8	2	32	35	8	20	50	16
2	9	20	46	53	7	23	49	19	8	3	40	37	8	20	56	50
3	9	22	32	8	7	23	59	32	8	4	48	48	8	21	3	22
4	9	24	18	1	7	24	9	40	8	5	57	9	8	21	9	52
5	9	26	4	28	7	24	19	41	8	7	5	39	8	21	16	19
6	9	27	51	29	7	24	29	36	8	8	14	16	8	21	22	44
7	9	29	38	59	7	24	39	25	8	9	23	2	8	21	29	7
8	10	1	26	56	7	24	49	7	8	10	31	56	8	21	35	27
9	10	3	15	12	7	24	58	42	8	11	40	57	8	21	41	45
10	10	5	3	44	7	25	8	11	8	12	50	6	8	21	48	0
11	10	6	52	22	7	25	17	33	8	13	59	22	8	21	54	13
12	10	8	40	57	7	25	26	48	8	15	8	44	8	22	0	22
13	10	10	29	19	7	25	35	57	8	16	18	13	8	22	6	29
14	10	12	17	13	7	25	44	58	8	17	27	49	8	22	12	33
15	10	14	4	26	7	25	53	52	8	18	37	31	8	22	18	34
16	10	15	50	38	7	26	2	39	8	19	47	19	8	22	24	32
17	10	17	35	29	7	26	11	18	8	20	57	14	8	22	30	27
18	10	19	18	37	7	26	19	50	8	22	7	14	8	22	36	19
19	10	20	59	34	7	26	28	15	8	23	17	20	8	22	42	8
20	10	22	37	53	7	26	36	32	8	24	27	32	8	22	47	54
21	10	24	13	1	7	26	44	41	8	25	37	49	8	22	53	36
22	10	25	44	23	7	26	52	42	8	26	48	12	8	22	59	15
23	10	27	11	24	7	27	0	36	8	27	58	40	8	23	4	51
24	10	28	33	26	7	27	8	22	8	29	9	14	8	23	10	23
25	10	29	49	49	7	27	15	59	9	0	19	52	8	23	15	51
26	11	0	59	56	7	27	23	28	9	1	30	35	8	23	21	17
27	11	2	3	9	7	27	30	49	9	2	41	22	8	23	26	38
28	11	2	58	53	7	27	38	2	9	3	52	15	8	23	31	56

फरवरी	मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	3	1	48	38	3	2	40	4	-17	15	-21	1	2	25
2	3	1	45	27	3	2	41	13	-16	57	-21	33	1	23
3	3	1	42	16	3	2	41	47	-16	40	-21	5	0	18
4	3	1	39	6	3	2	41	32	-16	22	-19	41	-0	47
5	3	1	35	55	3	2	40	14	-16	4	-17	26	-1	50
6	3	1	32	44	3	2	37	54	-15	46	-14	27	-2	49
7	3	1	29	33	3	2	34	40	-15	28	-10	53	-3	40
8	3	1	26	23	3	2	30	50	-15	9	-6	53	-4	21
9	3	1	23	12	3	2	26	49	-14	50	-2	35	-4	52
10	3	1	20	1	3	2	23	9	-14	31	1	51	-5	10
11	3	1	16	50	3	2	20	15	-14	11	6	18	-5	14
12	3	1	13	40	3	2	18	30	-13	52	10	34	-5	3
13	3	1	10	29	3	2	18	0	-13	32	14	29	-4	37
14	3	1	7	18	3	2	18	38	-13	11	17	47	-3	55
15	3	1	4	7	3	2	19	59	-12	51	20	12	-2	59
16	3	1	0	57	3	2	21	26	-12	30	21	28	-1	50
17	3	0	57	46	3	2	22	20	-12	10	21	20	-0	33
18	3	0	54	35	3	2	22	1	-11	49	19	42	0	49
19	3	0	51	24	3	2	20	0	-11	27	16	39	2	8
20	3	0	48	14	3	2	16	38	-11	6	12	26	3	19
21	3	0	45	3	3	2	11	48	-10	44	7	26	4	15
22	3	0	41	52	3	2	6	14	-10	23	2	5	4	52
23	3	0	38	41	3	2	0	44	-10	1	-3	15	5	10
24	3	0	35	31	3	1	56	3	-9	39	-8	15	5	8
25	3	0	32	20	3	1	52	47	-9	17	-12	39	4	48
26	3	0	29	9	3	1	51	12	-8	54	-16	18	4	14
27	3	0	25	58	3	1	51	12	-8	32	-19	3	3	28
28	3	0	22	48	3	1	52	20	-8	9	-20	50	2	33

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मार्च 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 14"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	34	4	10	15	58	55	8	14	32	19	0	15	41	3	11	3	46	35	7	27	45	6	9	5	3	11	8	23	37	10	3	0	19	37	3	1	53	54	-7	47	-21	36	1	33
2	10	38	0	10	16	59	10	8	26	28	4	0	16	21	22	11	4	25	46	7	27	52	1	9	6	14	12	8	23	42	20	3	0	16	26	3	1	55	2	-7	24	-21	22	0	30
3	10	41	57	10	17	59	23	9	8	17	17	0	17	1	40	11	4	56	4	7	27	58	47	9	7	25	16	8	23	47	26	3	0	13	16	3	1	54	57	-7	1	-20	11	-0	34
4	10	45	53	10	18	59	35	9	20	3	55	0	17	41	58	11	5	17	12	7	28	5	25	9	8	36	24	8	23	52	28	3	0	10	5	3	1	52	58	-6	38	-18	7	-1	37
5	10	49	50	10	19	59	45	10	1	51	14	0	18	22	14	11	5	29	0	7	28	11	53	9	9	47	36	8	23	57	26	3	0	6	54	3	1	48	42	-6	15	-15	17	-2	35
6	10	53	46	10	20	59	53	10	13	41	47	0	19	2	30	11	5	31	27	7	28	18	13	9	10	58	52	8	24	2	20	3	0	3	43	3	1	42	8	-5	52	-11	49	-3	26
7	10	57	43	10	21	59	59	10	25	37	34	0	19	42	45	11	5	24	40	7	28	24	23	9	12	10	10	8	24	7	10	3	0	0	33	3	1	33	35	-5	28	-7	52	-4	8
8	11	1	39	10	23	0	4	11	7	40	4	0	20	22	58	11	5	8	56	7	28	30	24	9	13	21	32	8	24	11	56	2	29	57	22	3	1	23	41	-5	5	-3	35	-4	40
9	11	5	36	10	24	0	6	11	19	50	31	0	21	3	11	11	4	44	43	7	28	36	16	9	14	32	57	8	24	16	37	2	29	54	11	3	1	13	20	-4	42	0	54	-5	0
10	11	9	33	10	25	0	7	0	2	10	10	0	21	43	22	11	4	12	40	7	28	41	58	9	15	44	24	8	24	21	14	2	29	51	0	3	1	3	32	-4	18	5	24	-5	6
11	11	13	29	10	26	0	5	0	14	40	26	0	22	23	33	11	3	33	35	7	28	47	30	9	16	55	55	8	24	25	47	2	29	47	50	3	0	55	12	-3	55	9	44	-4	57
12	11	17	26	10	27	0	1	0	27	23	5	0	23	3	42	11	2	48	27	7	28	52	53	9	18	7	28	8	24	30	15	2	29	44	39	3	0	49	4	-3	31	13	44	-4	34
13	11	21	22	10	27	59	55	1	10	20	15	0	23	43	50	11	1	58	22	7	28	58	6	9	19	19	3	8	24	34	39	2	29	41	28	3	0	45	23	-3	8	17	10	-3	56
14	11	25	19	10	28	59	47	1	23	34	20	0	24	23	57	11	1	4	33	7	29	3	10	9	20	30	42	8	24	38	58	2	29	38	18	3	0	43	58	-2	44	19	47	-3	5
15	11	29	15	10	29	59	36	2	7	7	42	0	25	4	2	11	0	8	17	7	29	8	3	9	21	42	23	8	24	43	13	2	29	35	7	3	0	44	7	-2	20	21	23	-2	3
16	11	33	12	11	0	59	23	2	21	2	14	0	25	44	6	10	29	10	51	7	29	12	47	9	22	54	6	8	24	47	23	2	29	31	56	3	0	44	48	-1	57	21	43	-0	52
17	11	37	8	11	1	59	8	3	5	18	41	0	26	24	9	10	28	13	32	7	29	17	20	9	24	5	51	8	24	51	28	2	29	28	45	3	0	44	50	-1	33	20	40	0	24
18	11	41	5	11	2	58	51	3	19	55	46	0	27	4	10	10	27	17	33	7	29	21	44	9	25	17	40	8	24	55	28	2	29	25	35	3	0	43	9	-1	9	18	13	1	41
19	11	45	2	11	3	58	32	4	4	49	32	0	27	44	10	10	26	23	58	7	29	25	57	9	26	29	30	8	24	59	24	2	29	22	24	3	0	39	2	-0	45	14	31	2	51
20	11	48	58	11	4	58	10	4	19	53	15	0	28	24	9	10	25	33	46	7	29	30	0	9	27	41	23	8	25	3	15	2	29	19	13	3	0	32	19	-0	22	9	50	3	51
21	11	52	55	11	5	57	47	5	4	57	52	0	29	4	6	10	24	47	45	7	29	33	53	9	28	53	18	8	25	7	1	2	29	16	3	3	0	23	24	0	2	4	33	4	34
22	11	56	51	11	6	57	21	5	19	53	31	0	29	44	2	10	24	6	34	7	29	37	35	10	0	5	15	8	25	10	42	2	29	12	52	3	0	13	11	0	26	-0	57	4	58
23	12	0	48	11	7	56	53	6	4	31	5	1	0	23	56	10	23	30	43	7	29	41	7	10	1	17	15	8	25	14	18	2	29	9	41	3	0	2	48	0	49	-6	17	5	2
24	12	4	44	11	8	56	24	6	18	43	48	1	1	3	49	10	23	0	34	7	29	44	29	10	2	29	17	8	25	17	50	2	29	6	30	2	29	53	26	1	13	-11	8	4	47
25	12	8	41	11	9	55	53	7	2	28	0	1	1	43	41	10	22	36	18	7	29	47	39	10	3	41	21	8	25	21	16	2	29	3	20	2	29	46	0	1	37	-15	15	4	16
26	12	12	37	11	10	55	19	7	15	43	13	1	2	23	31	10	22	18	3	7	29	50	40	10	4	53	27	8	25	24	37	2	29	0	9	2	29	40	58	2	0	-18	26	3	31
27	12	16	34	11	11	54	45	7	28	31	38	1	3	3	20	10	22	5	48	7	29	53	29	10	6	5	35	8	25	27	53	2	28	56	58	2	29	38	19	2	24	-20	37	2	37
28	12	20	31	11	12	54	8	8	10	57	14	1	3	43	8	10	21	59	30	7	29	56	8	10	7	17	45	8	25	31	4	2	28	53	47	2	29	37	30	2	47	-21	43	1	38
29	12	24	27	11	13	53	29	8	23	5	5	1	4	22	55	10	21	59	1	7	29	58	36	10	8	29	57	8	25	34	9	2	28	50	37	2	29	37	38	3	11	-21	45	0	35
30	12	28	24	11	14	52	49	9	5	0	38	1	5	2	41	10	22	4	10	8	0	0	52	10	9	42	11	8	25	37	9	2	28	47	26	2	29	37	37	3	34	-20	48	-0	29
31	12	32	20	11	15	52	7	9	16	49	19	1	5	42	25	10	22	14	45	8	0	2	58	10	10	54	27	8	25	40	4	2	28	44	15	2	29	36	21	3	57	-18	56	-1	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अप्रैल 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 17"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	36	17	11	16	51	23	9	28	36	4	1	6	22	8	10	22	30	33	8	0	4	53	10	12	6	44	8	25	42	54	2	28	41	5	2	29	32	57	4	21	-16	15	-2	27
2	12	40	13	11	17	50	38	10	10	25	12	1	7	1	50	10	22	51	19	8	0	6	36	10	13	19	2	8	25	45	38	2	28	37	54	2	29	26	52	4	43	-12	55	-3	18
3	12	44	10	11	18	49	50	10	22	20	11	1	7	41	31	10	23	16	50	8	0	8	9	10	14	31	23	8	25	48	17	2	28	34	43	2	29	17	57	5	7	-9	2	-4	1
4	12	48	6	11	19	49	1	11	4	23	36	1	8	21	10	10	23	46	50	8	0	9	30	10	15	43	44	8	25	50	50	2	28	31	32	2	29	6	31	5	30	-4	46	-4	33
5	12	52	3	11	20	48	10	11	16	37	7	1	9	0	49	10	24	21	6	8	0	10	40	10	16	56	7	8	25	53	17	2	28	28	22	2	28	53	20	5	53	-0	15	-4	53
6	12	56	0	11	21	47	16	11	29	1	37	1	9	40	26	10	24	59	24	8	0	11	39	10	18	8	31	8	25	55	40	2	28	25	11	2	28	39	28	6	16	4	21	-5	0
7.	12	59	56	11	22	46	21	0	11	37	23	1	10	20	2	10	25	41	32	8	0	12	26	10	19	20	56	8	25	57	56	2	28	22	0	2	28	26	8	6	38	8	50	-4	52
8	13	3	53	11	23	45	23	0	24	24	22	1	10	59	37	10	26	27	17	8	0	13	2	10	20	33	22	8	26	0	7	2	28	18	50	2	28	14	33	7	1	13	1	-4	30
9	13	7	49	11	24	44	23	1	7	22	34	1	11	39	10	10	27	16	27	8	0	13	27	10	21	45	49	8	26	2	12	2	28	15	39	2	28	5	34	7	23	16	39	-3	53
10	13	11	46	11	25	43	21	1	20	32	16	1	12	18	42	10	28	8	52	8	0	13	40	10	22	58	17	8	26	4	12	2	28	12	28	2	27	59	37	7	46	19	31	-3	4
11	13	15	42	11	26	42	17	2	3	54	11	1	12	58	13	10	29	4	22	8	0	13	42	10	24	10	46	8	26	6	5	2	28	9	17	2	27	56	34	8	8	21	22	-2	3
12	13	19	39	11	27	41	10	2	17	29	19	1	13	37	43	11	0	2	48	8	0	13	33	10	25	23	16	8	26	7	54	2	28	6	7	2	27	55	38	8	30	22	1	-0	55
13	13	23	35	11	28	40	1	3	1	18	48	1	14	17	11	11	1	4	2	8	0	13	13	10	26	35	47	8	26	9	36	2	28	2	56	2	27	55	39	8	52	21	21	0	18
14	13	27	32	11	29	38	50	3	15	23	19	1	14	56	37	11	2	7	56	8	0	12	41	10	27	48	18	8	26	11	13	2	27	59	45	2	27	55	16	9	13	19	20	1	31
15	13	31	29	0	0	37	36	3	29	42	32	1	15	36	2	11	3	14	22	8	0	11	58	10	29	0	50	8	26	12	43	2	27	56	34	2	27	53	13	9	35	16	5	2	40
16	13	35	25	0	1	36	20	4	14	14	23	1	16	15	26	11	4	23	16	8	0	11	4	11	0	13	24	8	26	14	9	2	27	53	24	2	27	48	38	9	57	11	49	3	39
17	13	39	22	0	2	35	2	4	28	54	41	1	16	54	48	11	5	34	31	8	0	9	59	11	1	25	58	8	26	15	28	2	27	50	13	2	27	41	15	10	18	6	48	4	24
18	13	43	18	0	3	33	42	5	13	37	12	1	17	34	9	11	6	48	3	8	0	8	43	11	2	38	33	8	26	16	41	2	27	47	2	2	27	31	26	10	39	1	24	4	52
19	13	47	15	0	4	32	20	5	28	14	24	1	18	13	28	11	8	3	47	8	0	7	15	11	3	51	9	8	26	17	49	2	27	43	51	2	27	20	4	11	0	-4	3	5	1
20	13	51	11	0	5	30	56	6	12	38	36	1	18	52	46	11	9	21	39	8	0	5	37	11	5	3	45	8	26	18	51	2	27	40	41	2	27	8	23	11	21	-9	12	4	50
21	13	55	8	0	6	29	30	6	26	43	16	1	19	32	2	11	10	41	35	8	0	3	47	11	6	16	23	8	26	19	47	2	27	37	30	2	26	57	37	11	41	-13	45	4	22
22	13	59	4	0	7	28	2	7	10	24	4	1	20	11	18	11	12	3	33	8	0	1	47	11	7	29	2	8	26	20	37	2	27	34	19	2	26	48	47	12	1	-17	27	3	39
23	14	3	1	0	8	26	32	7	23	39	18	1	20	50	31	11	13	27	30	7	29	59	36	11	8	41	41	8	26	21	22	2	27	31	9	2	26	42	30	12	22	-20	8	2	45
24	14	6	58	0	9	25	1	8	6	29	43	1	21	29	44	11	14	53	23	7	29	57	13	11	9	54	22	8	26	22	0	2	27	27	58	2	26	38	47	12	42	-21	41	1	45
25	14	10	54	0	10	23	28	8	18	58	8	1	22	8	55	11	16	21	11	7	29	54	40	11	11	7	3	8	26	22	33	2	27	24	47	2	26	37	14	13	1	-22	7	0	41
26	14	14	51	0	11	21	54	9	1	8	46	1	22	48	6	11	17	50	52	7	29	51	56	11	12	19	45	8	26	22	59	2	27	21	36	2	26	36	59	13	21	-21	28	-0	24
27	14	18	47	0	12	20	17	9	13	6	44	1	23	27	15	11	19	22	24	7	29	49	2	11	13	32	28	8	26	23	20	2	27	18	26	2	26	37	2	13	40	-19	51	-1	26
28	14	22	44	0	13	18	40	9	24	57	28	1	24	6	23	11	20	55	47	7	29	45	56	11	14	45	12	8	26	23	35	2	27	15	15	2	26	36	18	13	59	-17	23	-2	25
29	14	26	40	0	14	17	1	10	6	46	21	1	24	45	29	11	22	31	0	7	29	42	40	11	15	57	57	8	26	23	44	2	27	12	4	2	26	33	54	14	18	-14	13	-3	16
30	14	30	37	0	15	15	20	10	18	38	24	1	25	24	35	11	24	8	3	7	29	39	14	11	17	10	42	8	26	23	47	2	27	8	53	2	26	29	14	14	37	-10	27	-4	0

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मई 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 20"

तिथि	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	34	33	0	16	13	38	11	0	37	57	1	26	3	40	11	25	46	55	7	29	35	38	11	18	23	29	8	26	23	45	2	27	5	43	2	26	22	4	14	55	-6	15	-4	33
2	14	38	30	0	17	11	54	11	12	48	25	1	26	42	43	11	27	27	35	7	29	31	51	11	19	36	15	8	26	23	36	2	27	2	32	2	26	12	39	15	13	-1	45	-4	54
3	14	42	27	0	18	10	8	11	25	12	15	1	27	21	45	11	29	10	5	7	29	27	54	11	20	49	3	8	26	23	21	2	26	59	21	2	26	1	34	15	31	2	54	-5	2
4	14	46	23	0	19	8	21	0	7	50	45	1	28	0	47	0	0	54	25	7	29	23	47	11	22	1	50	8	26	23	1	2	26	56	10	2	25	49	45	15	49	7	31	-4	56
5	14	50	20	0	20	6	32	0	20	44	3	1	28	39	47	0	2	40	34	7	29	19	30	11	23	14	39	8	26	22	35	2	26	52	59	2	25	38	18	16	6	11	55	-4	34
6	14	54	16	0	21	4	41	1	3	51	25	1	29	18	46	0	4	28	33	7	29	15	4	11	24	27	27	8	26	22	3	2	26	49	49	2	25	28	18	16	24	15	50	-3	58
7	14	58	13	0	22	2	49	1	17	11	25	1	29	57	44	0	6	18	23	7	29	10	28	11	25	40	16	8	26	21	25	2	26	46	38	2	25	20	35	16	40	19	2	-3	8
8	15	2	9	0	23	0	55	2	0	42	28	2	0	36	41	0	8	10	3	7	29	5	43	11	26	53	6	8	26	20	41	2	26	43	27	2	25	15	35	16	57	21	13	-2	7
9	15	6	6	0	23	58	59	2	14	23	8	2	1	15	36	0	10	3	33	7	29	0	49	11	28	5	56	8	26	19	51	2	26	40	16	2	25	13	11	17	13	22	12	-0	58
10	15	10	2	0	24	57	1	2	28	12	20	2	1	54	31	0	11	58	54	7	28	55	46	11	29	18	46	8	26	18	56	2	26	37	6	2	25	12	50	17	29	21	51	0	16
11	15	13	59	0	25	55	1	3	12	9	21	2	2	33	24	0	13	56	3	7	28	50	34	0	0	31	36	8	26	17	55	2	26	33	55	2	25	13	31	17	45	20	9	1	29
12	15	17	56	0	26	52	59	3	26	13	34	2	3	12	16	0	15	54	59	7	28	45	13	0	1	44	27	8	26	16	49	2	26	30	44	2	25	14	5	18	0	17	12	2	38
13	15	21	52	0	27	50	56	4	10	24	7	2	3	51	6	0	17	55	40	7	28	39	45	0	2	57	18	8	26	15	36	2	26	27	33	2	25	13	27	18	15	13	13	3	37
14	15	25	49	0	28	48	50	4	24	39	28	2	4	29	56	0	19	58	3	7	28	34	8	0	4	10	9	8	26	14	19	2	26	24	23	2	25	10	50	18	30	8	29	4	24
15	15	29	45	0	29	46	43	5	8	57	5	2	5	8	44	0	22	2	3	7	28	28	23	0	5	23	1	8	26	12	56	2	26	21	12	2	25	5	59	18	45	3	16	4	54
16	15	33	42	1	0	44	34	5	23	13	16	2	5	47	31	0	24	7	34	7	28	22	31	0	6	35	53	8	26	11	27	2	26	18	1	2	24	59	7	18	59	-2	6	5	6
17	15	37	38	1	1	42	24	6	7	23	30	2	6	26	17	0	26	14	31	7	28	16	31	0	7	48	46	8	26	9	53	2	26	14	50	2	24	50	58	19	13	-7	20	4	59
18	15	41	35	1	2	40	11	6	21	22	53	2	7	5	1	0	28	22	44	7	28	10	24	0	9	1	39	8	26	8	13	2	26	11	39	2	24	42	28	19	26	-12	7	4	34
19	15	45	31	1	3	37	58	7	5	6	59	2	7	43	45	1	0	32	3	7	28	4	10	0	10	14	32	8	26	6	28	2	26	8	29	2	24	34	38	19	39	-16	11	3	53
20	15	49	28	1	4	35	43	7	18	32	29	2	8	22	27	1	2	42	18	7	27	57	49	0	11	27	26	8	26	4	38	2	26	5	18	2	24	28	17	19	52	-19	20	3	1
21	15	53	25	1	5	33	26	8	1	37	41	2	9	1	8	1	4	53	15	7	27	51	21	0	12	40	21	8	26	2	42	2	26	2	7	2	24	23	55	20	5	-21	23	1	59
22	15	57	21	1	6	31	9	8	14	22	37	2	9	39	49	1	7	4	40	7	27	44	48	0	13	53	16	8	26	0	42	2	25	58	56	2	24	21	39	20	17	-22	16	0	54
23	16	1	18	1	7	28	50	8	26	48	58	2	10	18	28	1	9	16	17	7	27	38	8	0	15	6	12	8	25	58	36	2	25	55	46	2	24	21	11	20	29	-22	2	-0	13
24	16	5	14	1	8	26	30	9	8	59	45	2	10	57	6	1	11	27	51	7	27	31	22	0	16	19	9	8	25	56	25	2	25	52	35	2	24	21	58	20	40	-20	44	-1	18
25	16	9	11	1	9	24	9	9	20	59	1	2	11	35	43	1	13	39	5	7	27	24	31	0	17	32	6	8	25	54	9	2	25	49	24	2	24	23	15	20	51	-18	31	-2	19
26	16	13	7	1	10	21	47	10	2	51	28	2	12	14	20	1	15	49	41	7	27	17	35	0	18	45	4	8	25	51	48	2	25	46	13	2	24	24	17	21	2	-15	32	-3	13
27	16	17	4	1	11	19	24	10	14	42	11	2	12	52	55	1	17	59	25	7	27	10	33	0	19	58	3	8	25	49	22	2	25	43	2	2	24	24	23	21	12	-11	57	-3	59
28	16	21	0	1	12	17	0	10	26	36	14	2	13	31	30	1	20	7	59	7	27	3	27	0	21	11	2	8	25	46	51	2	25	39	52	2	24	23	4	21	23	-7	53	-4	35
29	16	24	57	1	13	14	36	11	8	38	25	2	14	10	4	1	22	15	9	7	26	56	16	0	22	24	2	8	25	44	15	2	25	36	41	2	24	20	9	21	32	-3	28	-4	59
30	16	28	54	1	14	12	10	11	20	52	58	2	14	48	37	1	24	20	43	7	26	49	1	0	23	37	3	8	25	41	35	2	25	33	30	2	24	15	42	21	41	1	9	-5	9
31	16	32	50	1	15	9	44	0	3	23	17	2	15	27	9	1	26	24	28	7	26	41	43	0	24	50	4	8	25	38	50	2	25	30	19	2	24	10	5	21	50	5	49	-5	6

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जून 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 25"

तिथि	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	16	36	47	1	16	7	16	0	16	11	38	2	16	5	40
2	16	40	43	1	17	4	48	0	29	18	56	2	16	44	11
3	16	44	40	1	18	2	19	1	12	44	39	2	17	22	41
4	16	48	36	1	18	59	48	1	26	26	55	2	18	1	10
5	16	52	33	1	19	57	17	2	10	22	49	2	18	39	38
6	16	56	29	1	20	54	44	2	24	28	51	2	19	18	6
7	17	0	26	1	21	52	11	3	8	41	24	2	19	56	32
8	17	4	23	1	22	49	36	3	22	57	5	2	20	34	58
9	17	8	19	1	23	47	0	4	7	12	57	2	21	13	23
10	17	12	16	1	24	44	23	4	21	26	33	2	21	51	47
11	17	16	12	1	25	41	45	5	5	35	44	2	22	30	10
12	17	20	9	1	26	39	6	5	19	38	35	2	23	8	32
13	17	24	5	1	27	36	26	6	3	33	10	2	23	46	53
14	17	28	2	1	28	33	45	6	17	17	34	2	24	25	14
15	17	31	58	1	29	31	3	7	0	49	53	2	25	3	34
16	17	35	55	2	0	28	20	7	14	8	25	2	25	41	53
17	17	39	52	2	1	25	37	7	27	11	58	2	26	20	11
18	17	43	48	2	2	22	52	8	9	59	59	2	26	58	28
19	17	47	45	2	3	20	8	8	22	32	45	2	27	36	45
20	17	51	41	2	4	17	23	9	4	51	29	2	28	15	1
21	17	55	38	2	5	14	37	9	16	58	17	2	28	53	16
22	17	59	34	2	6	11	51	9	28	56	6	2	29	31	31
23	18	3	31	2	7	9	5	10	10	48	31	3	0	9	45
24	18	7	27	2	8	6	19	10	22	39	41	3	0	47	59
25	18	11	24	2	9	3	33	11	4	34	6	3	1	26	13
26	18	15	21	2	10	0	46	11	16	36	28	3	2	4	26
27	18	19	17	2	10	58	0	11	28	51	19	3	2	42	38
28	18	23	14	2	11	55	14	0	11	22	50	3	3	20	50
29	18	27	10	2	12	52	27	0	24	14	25	3	3	59	2
30	18	31	7	2	13	49	41	1	7	28	14	3	4	37	14

तिथि	बुध				गुरु				शुक्र				शनि			
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	1	28	26	14	7	26	34	20	0	26	3	6	8	25	36	0
2	2	0	25	52	7	26	26	55	0	27	16	9	8	25	33	6
3	2	2	23	15	7	26	19	27	0	28	29	12	8	25	30	8
4	2	4	18	16	7	26	11	56	0	29	42	15	8	25	27	5
5	2	6	10	51	7	26	4	23	1	0	55	19	8	25	23	58
6	2	8	0	55	7	25	56	48	1	2	8	24	8	25	20	46
7	2	9	48	27	7	25	49	11	1	3	21	29	8	25	17	31
8	2	11	33	22	7	25	41	33	1	4	34	34	8	25	14	12
9	2	13	15	39	7	25	33	55	1	5	47	40	8	25	10	48
10	2	14	55	18	7	25	26	15	1	7	0	46	8	25	7	22
11	2	16	32	15	7	25	18	36	1	8	13	53	8	25	3	51
12	2	18	6	31	7	25	10	56	1	9	27	0	8	25	0	17
13	2	19	38	3	7	25	3	17	1	10	40	8	8	24	56	40
14	2	21	6	50	7	24	55	39	1	11	53	17	8	24	52	59
15	2	22	32	50	7	24	48	2	1	13	6	26	8	24	49	15
16	2	23	56	3	7	24	40	26	1	14	19	35	8	24	45	28
17	2	25	16	24	7	24	32	52	1	15	32	46	8	24	41	38
18	2	26	33	53	7	24	25	20	1	16	45	57	8	24	37	45
19	2	27	48	27	7	24	17	50	1	17	59	9	8	24	33	50
20	2	29	0	1	7	24	10	22	1	19	12	22	8	24	29	51
21	3	0	8	34	7	24	2	58	1	20	25	36	8	24	25	50
22	3	1	14	1	7	23	55	36	1	21	38	51	8	24	21	47
23	3	2	16	17	7	23	48	18	1	22	52	7	8	24	17	41
24	3	3	15	18	7	23	41	3	1	24	5	24	8	24	13	33
25	3	4	10	59	7	23	33	53	1	25	18	41	8	24	9	23
26	3	5	3	13	7	23	26	47	1	26	32	0	8	24	5	11
27	3	5	51	54	7	23	19	45	1	27	45	20	8	24	0	58
28	3	6	36	56	7	23	12	49	1	28	58	41	8	23	56	42
29	3	7	18	12	7	23	5	57	2	0	12	3	8	23	52	25
30	3	7	55	34	7	22	59	11	2	1	25	26	8	23	48	6

तिथि	मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	25	27	8	2	24	3	51	21	59	10	21	-4	47
2	2	25	23	58	2	23	57	44	22	7	14	32	-4	13
3	2	25	20	47	2	23	52	24	22	15	18	5	-3	25
4	2	25	17	36	2	23	48	26	22	22	20	43	-2	23
5	2	25	14	25	2	23	46	8	22	29	22	9	-1	12
6	2	25	11	14	2	23	45	28	22	36	22	13	0	4
7	2	25	8	4	2	23	46	5	22	42	20	50	1	21
8	2	25	4	53	2	23	47	24	22	48	18	9	2	33
9	2	25	1	42	2	23	48	45	22	53	14	21	3	36
10	2	24	58	31	2	23	49	29	22	58	9	46	4	25
11	2	24	55	20	2	23	49	9	23	3	4	40	4	58
12	2	24	52	10	2	23	47	36	23	7	-0	38	5	13
13	2	24	48	59	2	23	44	58	23	11	-5	50	5	9
14	2	24	45	48	2	23	41	37	23	14	-10	42	4	47
15	2	24	42	37	2	23	38	5	23	17	-14	57	4	10
16	2	24	39	26	2	23	34	52	23	20	-18	24	3	20
17	2	24	36	15	2	23	32	24	23	22	-20	50	2	20
18	2	24	33	5	2	23	30	56	23	23	-22	9	1	14
19	2	24	29	54	2	23	30	31	23	25	-22	19	0	5
20	2	24	26	43	2	23	30	59	23	26	-21	23	-1	2
21	2	24	23	32	2	23	32	5	23	26	-19	28	-2	6
22	2	24	20	21	2	23	33	28	23	26	-16	43	-3	3
23	2	24	17	11	2	23	34	49	23	26	-13	18	-3	53
24	2	24	14	0	2	23	35	49	23	25	-9	23	-4	32
25	2	24	10	49	2	23	36	18	23	24	-5	6	-4	59
26	2	24	7	38	2	23	36	12	23	22	-0	34	-5	14
27	2	24	4	27	2	23	35	32	23	20	4	3	-5	15
28	2	24	1	17	2	23	34	27	23	18	8	37	-5	1
29	2	23	58	6	2	23	33	9	23	15	12	56	-4	32
30	2	23	54	55	2	23	31	54	23	12	16	45	-3	48

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जुलाई 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 30"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	18	35	3	2	14	46	55	1	21	4	56	3	5	15	25	3	8	28	54
2	18	39	0	2	15	44	8	2	5	3	21	3	5	53	35	3	8	58	7
3	18	42	56	2	16	41	22	2	19	20	24	3	6	31	46	3	9	23	3
4	18	46	53	2	17	38	35	3	3	51	21	3	7	9	56	3	9	43	37
5	18	50	50	2	18	35	48	3	18	30	17	3	7	48	5	3	9	59	43
6	18	54	46	2	19	33	1	4	3	10	51	3	8	26	14	3	10	11	15
7	18	58	43	2	20	30	14	4	17	47	3	3	9	4	23	3	10	18	8
8	19	2	39	2	21	27	27	5	2	13	51	3	9	42	31	3	10	20	20
9	19	6	36	2	22	24	39	5	16	27	37	3	10	20	39	3	10	17	49
10	19	10	32	2	23	21	51	6	0	26	5	3	10	58	46	3	10	10	37
11	19	14	29	2	24	19	3	6	14	8	18	3	11	36	53	3	9	58	47
12	19	18	25	2	25	16	15	6	27	34	13	3	12	15	0	3	9	42	26
13	19	22	22	2	26	13	27	7	10	44	26	3	12	53	6	3	9	21	44
14	19	26	19	2	27	10	39	7	23	39	53	3	13	31	11	3	8	56	55
15	19	30	15	2	28	7	51	8	6	21	39	3	14	9	17	3	8	28	18
16	19	34	12	2	29	5	3	8	18	50	57	3	14	47	22	3	7	56	14
17	19	38	8	3	0	2	16	9	1	9	2	3	15	25	27	3	7	21	13
18	19	42	5	3	0	59	29	9	13	17	24	3	16	3	31	3	6	43	44
19	19	46	1	3	1	56	42	9	25	17	47	3	16	41	36	3	6	4	22
20	19	49	58	3	2	53	56	10	7	12	19	3	17	19	40	3	5	23	47
21	19	53	54	3	3	51	10	10	19	3	34	3	17	57	44	3	4	42	39
22	19	57	51	3	4	48	25	11	0	54	35	3	18	35	48	3	4	1	42
23	20	1	48	3	5	45	41	11	12	48	52	3	19	13	52	3	3	21	37
24	20	5	44	3	6	42	58	11	24	50	23	3	19	51	56	3	2	43	11
25	20	9	41	3	7	40	15	0	7	3	23	3	20	30	1	3	2	7	4
26	20	13	37	3	8	37	34	0	19	32	14	3	21	8	5	3	1	33	57
27	20	17	34	3	9	34	53	1	2	21	3	3	21	46	9	3	1	4	29
28	20	21	30	3	10	32	13	1	15	33	15	3	22	24	13	3	0	39	13
29	20	25	27	3	11	29	35	1	29	11	4	3	23	2	18	3	0	18	40
30	20	29	23	3	12	26	57	2	13	14	52	3	23	40	22	3	0	3	17
31	20	33	20	3	13	24	20	2	27	42	45	3	24	18	27	2	29	53	25

जुलाई	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	7	22	52	31	2	2	38	50	8	23	43	46	2	23	51	44	2	23	30	52	23	8	19	48	-2	50
2	7	22	45	57	2	3	52	15	8	23	39	25	2	23	48	33	2	23	30	12	23	4	21	46	-1	40
3	7	22	39	29	2	5	5	41	8	23	35	3	2	23	45	22	2	23	29	56	23	0	22	22	-0	23
4	7	22	33	8	2	6	19	7	8	23	30	40	2	23	42	12	2	23	30	1	22	55	21	30	0	57
5	7	22	26	53	2	7	32	35	8	23	26	16	2	23	39	1	2	23	30	18	22	50	19	10	2	14
6	7	22	20	46	2	8	46	3	8	23	21	52	2	23	35	50	2	23	30	39	22	44	15	35	3	23
7	7	22	14	46	2	9	59	33	8	23	17	27	2	23	32	39	2	23	30	55	22	38	11	4	4	18
8	7	22	8	54	2	11	13	3	8	23	13	1	2	23	29	28	2	23	31	3	22	32	5	58	4	56
9	7	22	3	9	2	12	26	34	8	23	8	36	2	23	26	18	2	23	31	3	22	25	0	38	5	15
10	7	21	57	32	2	13	40	6	8	23	4	10	2	23	23	7	2	23	30	59	22	18	-4	38	5	15
11	7	21	52	4	2	14	53	38	8	22	59	45	2	23	19	56	2	23	30	57	22	10	-9	34	4	57
12	7	21	46	44	2	16	7	12	8	22	55	19	2	23	16	45	2	23	31	2	22	2	-13	57	4	23
13	7	21	41	32	2	17	20	47	8	22	50	54	2	23	13	34	2	23	31	16	21	54	-17	34	3	36
14	7	21	36	29	2	18	34	22	8	22	46	30	2	23	10	24	2	23	31	37	21	45	-20	15	2	38
15	7	21	31	35	2	19	47	58	8	22	42	6	2	23	7	13	2	23	32	0	21	36	-21	52	1	34
16	7	21	26	50	2	21	1	36	8	22	37	43	2	23	4	2	2	23	32	16	21	26	-22	22	0	26
17	7	21	22	15	2	22	15	14	8	22	33	20	2	23	0	51	2	23	32	17	21	17	-21	46	-0	42
18	7	21	17	48	2	23	28	54	8	22	28	59	2	22	57	40	2	23	31	56	21	6	-20	9	-1	47
19	7	21	13	31	2	24	42	35	8	22	24	39	2	22	54	30	2	23	31	10	20	56	-17	38	-2	47
20	7	21	9	24	2	25	56	17	8	22	20	19	2	22	51	19	2	23	30	1	20	45	-14	25	-3	39
21	7	21	5	26	2	27	10	0	8	22	16	2	2	22	48	8	2	23	28	36	20	34	-10	37	-4	21
22	7	21	1	38	2	28	23	44	8	22	11	45	2	22	44	57	2	23	27	6	20	22	-6	27	-4	52
23	7	20	58	1	2	29	37	29	8	22	7	31	2	22	41	46	2	23	25	44	20	10	-2	0	-5	11
24	7	20	54	33	3	0	51	16	8	22	3	18	2	22	38	36	2	23	24	43	19	58	2	33	-5	16
25	7	20	51	15	3	2	5	4	8	21	59	6	2	22	35	25	2	23	24	15	19	45	7	5	-5	7
26	7	20	48	8	3	3	18	53	8	21	54	57	2	22	32	14	2	23	24	24	19	33	11	25	-4	44
27	7	20	45	11	3	4	32	44	8	21	50	50	2	22	29	3	2	23	25	7	19	19	15	22	-4	6
28	7	20	42	25	3	5	46	36	8	21	46	45	2	22	25	53	2	23	26	14	19	6	18	42	-3	14
29	7	20	39	49	3	7	0	29	8	21	42	43	2	22	22	42	2	23	27	26	18	52	21	6	-2	10
30	7	20	37	24	3	8	14	23	8	21	38	43	2	22	19	31	2	23	28	20	18	38	22	18	-0	56
31	7	20	35	10	3	9	28	18	8	21	34	45	2	22	16	20	2	23	28	34	18	23	22	3	0	23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अगस्त 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 35"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्रक्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 37 17	3 14 21 44	3 12 30 9	3 24 56 31	2 29 49 24	7 20 33 7	3 10 42 14	8 21 30 50	2 22 13 9	2 23 27 53	18 8	20 16	1 43
2	20 41 13	3 15 19 9	3 27 30 6	3 25 34 36	2 29 51 27	7 20 31 15	3 11 56 11	8 21 26 59	2 22 9 59	2 23 26 13	17 53	17 5	2 57
3	20 45 10	3 16 16 34	4 12 33 58	3 26 12 41	2 29 59 46	7 20 29 33	3 13 10 10	8 21 23 10	2 22 6 48	2 23 23 43	17 38	12 44	3 58
4	20 49 6	3 17 14 0	4 27 32 40	3 26 50 45	3 0 14 29	7 20 28 3	3 14 24 9	8 21 19 24	2 22 3 37	2 23 20 46	17 22	7 38	4 43
5	20 53 3	3 18 11 27	5 12 18 8	3 27 28 50	3 0 35 42	7 20 26 44	3 15 38 9	8 21 15 41	2 22 0 26	2 23 17 52	17 6	2 10	5 8
6	20 56 59	3 19 8 55	5 26 44 20	3 28 6 55	3 1 3 25	7 20 25 36	3 16 52 11	8 21 12 2	2 21 57 16	2 23 15 30	16 50	-3 18	5 13
7	21 0 56	3 20 6 24	6 10 47 52	3 28 45 0	3 1 37 40	7 20 24 39	3 18 6 13	8 21 8 26	2 21 54 5	2 23 14 7	16 33	-8 27	4 59
8	21 4 52	3 21 3 53	6 24 27 46	3 29 23 5	3 2 18 25	7 20 23 54	3 19 20 16	8 21 4 54	2 21 50 54	2 23 13 51	16 17	-13 3	4 29
9	21 8 49	3 22 1 23	7 7 45 1	4 0 1 10	3 3 5 35	7 20 23 19	3 20 34 19	8 21 1 26	2 21 47 43	2 23 14 40	16 0	-16 52	3 44
10	21 12 46	3 22 58 54	7 20 41 56	4 0 39 15	3 3 59 5	7 20 22 56	3 21 48 24	8 20 58 1	2 21 44 33	2 23 16 10	15 42	-19 46	2 49
11	21 16 42	3 23 56 25	8 3 21 26	4 1 17 20	3 4 58 46	7 20 22 44	3 23 2 29	8 20 54 40	2 21 41 22	2 23 17 50	15 25	-21 38	1 47
12	21 20 39	3 24 53 58	8 15 46 41	4 1 55 25	3 6 4 29	7 20 22 43	3 24 16 36	8 20 51 23	2 21 38 11	2 23 19 2	15 7	-22 23	0 41
13	21 24 35	3 25 51 31	8 28 0 37	4 2 33 30	3 7 16 2	7 20 22 53	3 25 30 43	8 20 48 10	2 21 35 0	2 23 19 11	14 49	-22 2	-0 26
14	21 28 32	3 26 49 5	9 10 5 52	4 3 11 36	3 8 33 12	7 20 23 15	3 26 44 51	8 20 45 1	2 21 31 49	2 23 17 50	14 31	-20 40	-1 30
15	21 32 28	3 27 46 41	9 22 4 43	4 3 49 41	3 9 55 45	7 20 23 47	3 27 59 0	8 20 41 56	2 21 28 39	2 23 14 48	14 12	-18 22	-2 30
16	21 36 25	3 28 44 18	10 3 59 6	4 4 27 47	3 11 23 22	7 20 24 30	3 29 13 10	8 20 38 55	2 21 25 28	2 23 10 6	13 54	-15 18	-3 23
17	21 40 21	3 29 41 55	10 15 50 52	4 5 5 53	3 12 55 45	7 20 25 25	4 0 27 20	8 20 35 59	2 21 22 17	2 23 4 3	13 35	-11 38	-4 7
18	21 44 18	4 0 39 35	10 27 41 52	4 5 44 0	3 14 32 33	7 20 26 30	4 1 41 32	8 20 33 7	2 21 19 6	2 22 57 11	13 15	-7 32	-4 40
19	21 48 15	4 1 37 15	11 9 34 8	4 6 22 7	3 16 13 23	7 20 27 47	4 2 55 45	8 20 30 20	2 21 15 56	2 22 50 9	12 56	-3 8	-5 1
20	21 52 11	4 2 34 58	11 21 30 5	4 7 0 14	3 17 57 52	7 20 29 14	4 4 9 58	8 20 27 37	2 21 12 45	2 22 43 39	12 37	1 23	-5 9
21	21 56 8	4 3 32 41	0 3 32 35	4 7 38 21	3 19 45 34	7 20 30 53	4 5 24 13	8 20 24 59	2 21 9 34	2 22 38 19	12 17	5 55	-5 4
22	22 0 4	4 4 30 27	0 15 45 1	4 8 16 29	3 21 36 3	7 20 32 42	4 6 38 28	8 20 22 26	2 21 6 23	2 22 34 37	11 57	10 16	-4 45
23	22 4 1	4 5 28 14	0 28 11 14	4 8 54 38	3 23 28 55	7 20 34 42	4 7 52 45	8 20 19 57	2 21 3 13	2 22 32 44	11 37	14 17	-4 12
24	22 7 57	4 6 26 3	1 10 55 20	4 9 32 47	3 25 23 44	7 20 36 53	4 9 7 2	8 20 17 34	2 21 0 2	2 22 32 29	11 16	17 46	-3 26
25	22 11 54	4 7 23 53	1 24 1 17	4 10 10 57	3 27 20 5	7 20 39 15	4 10 21 21	8 20 15 15	2 20 56 51	2 22 33 21	10 56	20 27	-2 28
26	22 15 50	4 8 21 46	2 7 32 28	4 10 49 7	3 29 17 36	7 20 41 47	4 11 35 40	8 20 13 1	2 20 53 41	2 22 34 34	10 35	22 5	-1 20
27	22 19 47	4 9 19 40	2 21 30 56	4 11 27 17	4 1 15 56	7 20 44 31	4 12 50 0	8 20 10 53	2 20 50 30	2 22 35 13	10 14	22 25	-0 6
28	22 23 44	4 10 17 35	3 5 56 36	4 12 5 28	4 3 14 45	7 20 47 25	4 14 4 21	8 20 8 49	2 20 47 19	2 22 34 30	9 53	21 18	1 11
29	22 27 40	4 11 15 33	3 20 46 30	4 12 43 40	4 5 13 45	7 20 50 29	4 15 18 43	8 20 6 51	2 20 44 8	2 22 31 50	9 32	18 41	2 26
30	22 31 37	4 12 13 32	4 5 54 18	4 13 21 52	4 7 12 41	7 20 53 45	4 16 33 6	8 20 4 58	2 20 40 58	2 22 27 6	9 11	14 45	3 32
31	22 35 33	4 13 11 33	4 21 10 50	4 14 0 5	4 9 11 21	7 20 57 11	4 17 47 29	8 20 3 10	2 20 37 47	2 22 20 36	8 49	9 49	4 23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 सितम्बर 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 39"

सितम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	22	39	30	4	14	9	35	5	6	25	18	4	14	38	18	4	11	9	32
2	22	43	26	4	15	7	39	5	21	27	8	4	15	16	32	4	13	7	6
3	22	47	23	4	16	5	44	6	6	7	42	4	15	54	46	4	15	3	55
4	22	51	19	4	17	3	51	6	20	21	36	4	16	33	0	4	16	59	52
5	22	55	16	4	18	1	59	7	4	6	52	4	17	11	15	4	18	54	52
6	22	59	13	4	19	0	9	7	17	24	28	4	17	49	31	4	20	48	51
7	23	3	9	4	19	58	20	8	0	17	23	4	18	27	47	4	22	41	47
8	23	7	6	4	20	56	33	8	12	49	46	4	19	6	3	4	24	33	38
9	23	11	2	4	21	54	47	8	25	6	6	4	19	44	20	4	26	24	21
10	23	14	59	4	22	53	2	9	7	10	47	4	20	22	37	4	28	13	56
11	23	18	55	4	23	51	19	9	19	7	46	4	21	0	55	5	0	2	23
12	23	22	52	4	24	49	38	10	1	0	25	4	21	39	14	5	1	49	41
13	23	26	48	4	25	47	58	10	12	51	22	4	22	17	33	5	3	35	51
14	23	30	45	4	26	46	21	10	24	42	41	4	22	55	53	5	5	20	54
15	23	34	42	4	27	44	45	11	6	36	2	4	23	34	13	5	7	4	51
16	23	38	38	4	28	43	11	11	18	32	48	4	24	12	34	5	8	47	42
17	23	42	35	4	29	41	38	0	0	34	26	4	24	50	56	5	10	29	28
18	23	46	31	5	0	40	8	0	12	42	39	4	25	29	19	5	12	10	11
19	23	50	28	5	1	38	41	0	24	59	37	4	26	7	42	5	13	49	51
20	23	54	24	5	2	37	15	1	7	28	2	4	26	46	7	5	15	28	29
21	23	58	21	5	3	35	51	1	20	11	10	4	27	24	32	5	17	6	7
22	0	2	17	5	4	34	30	2	3	12	37	4	28	2	58	5	18	42	46
23	0	6	14	5	5	33	11	2	16	35	54	4	28	41	25	5	20	18	25
24	0	10	11	5	6	31	54	3	0	23	52	4	29	19	53	5	21	53	7
25	0	14	7	5	7	30	40	3	14	37	54	4	29	58	22	5	23	26	51
26	0	18	4	5	8	29	27	3	29	16	53	5	0	36	52	5	24	59	39
27	0	22	0	5	9	28	17	4	14	16	29	5	1	15	22	5	26	31	30
28	0	25	57	5	10	27	9	4	29	29	0	5	1	53	54	5	28	2	25
29	0	29	53	5	11	26	3	5	14	44	12	5	2	32	26	5	29	32	24
30	0	33	50	5	12	24	59	5	29	50	55	5	3	10	59	6	1	1	27

सितम्बर	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	7	21	0	47	4	19	1	53	8	20	1	28	2	20	34	36	2	22	13	4	8	28	4	17	4	55
2	7	21	4	34	4	20	16	18	8	19	59	52	2	20	31	25	2	22	5	29	8	6	-1	25	5	6
3	7	21	8	31	4	21	30	43	8	19	58	20	2	20	28	15	2	21	58	49	7	44	-6	55	4	57
4	7	21	12	38	4	22	45	9	8	19	56	55	2	20	25	4	2	21	53	51	7	22	-11	53	4	30
5	7	21	16	56	4	23	59	35	8	19	55	35	2	20	21	53	2	21	50	57	7	0	-16	4	3	47
6	7	21	21	23	4	25	14	1	8	19	54	20	2	20	18	42	2	21	49	59	6	38	-19	18	2	54
7	7	21	26	1	4	26	28	28	8	19	53	12	2	20	15	32	2	21	50	24	6	15	-21	26	1	53
8	7	21	30	48	4	27	42	56	8	19	52	9	2	20	12	21	2	21	51	17	5	53	-22	27	0	48
9	7	21	35	46	4	28	57	23	8	19	51	11	2	20	9	10	2	21	51	35	5	30	-22	21	-0	17
10	7	21	40	53	5	0	11	51	8	19	50	20	2	20	6	0	2	21	50	20	5	8	-21	11	-1	21
11	7	21	46	10	5	1	26	20	8	19	49	34	2	20	2	49	2	21	46	48	4	45	-19	5	-2	20
12	7	21	51	36	5	2	40	48	8	19	48	54	2	19	59	38	2	21	40	34	4	22	-16	10	-3	13
13	7	21	57	11	5	3	55	17	8	19	48	19	2	19	56	27	2	21	31	43	3	59	-12	36	-3	57
14	7	22	2	56	5	5	9	47	8	19	47	51	2	19	53	17	2	21	20	41	3	36	-8	34	-4	30
15	7	22	8	51	5	6	24	16	8	19	47	28	2	19	50	6	2	21	8	16	3	13	-4	11	-4	52
16	7	22	14	54	5	7	38	47	8	19	47	11	2	19	46	55	2	21	55	29	2	50	0	23	-5	1
17	7	22	21	7	5	8	53	17	8	19	47	0	2	19	43	44	2	20	43	26	2	27	4	57	-4	57
18	7	22	27	28	5	10	7	48	8	19	46	55	2	19	40	34	2	20	33	8	2	4	9	23	-4	40
19	7	22	33	59	5	11	22	19	8	19	46	56	2	19	37	23	2	20	25	18	1	41	13	30	-4	9
20	7	22	40	38	5	12	36	51	8	19	47	3	2	19	34	12	2	20	20	15	1	18	17	7	-3	26
21	7	22	47	26	5	13	51	23	8	19	47	15	2	19	31	2	2	20	17	47	0	54	20	0	-2	32
22	7	22	54	23	5	15	5	56	8	19	47	33	2	19	27	51	2	20	17	11	0	31	21	55	-1	29
23	7	23	1	29	5	16	20	29	8	19	47	58	2	19	24	40	2	20	17	24	0	8	22	41	-0	20
24	7	23	8	43	5	17	35	2	8	19	48	28	2	19	21	29	2	20	17	9	-0	16	22	5	0	53
25	7	23	16	5	5	18	49	36	8	19	49	4	2	19	18	19	2	20	15	17	-0	39	20	5	2	5
26	7	23	23	36	5	20	4	10	8	19	49	46	2	19	15	8	2	20	10	57	-1	2	16	43	3	11
27	7	23	31	15	5	21	18	45	8	19	50	34	2	19	11	57	2	20	3	54	-1	26	12	12	4	4
28	7	23	39	3	5	22	33	19	8	19	51	28	2	19	8	47	2	19	54	30	-1	49	6	51	4	42
29	7	23	46	58	5	23	47	54	8	19	52	28	2	19	5	36	2	19	43	37	-2	13	1	4	4	59
30	7	23	55	2	5	25	2	29	8	19	53	34	2	19	2	25	2	19	32	29	-2	36	-4	43	4	56

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अक्टूबर 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 41"

अक्टूबर	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्रक्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 37 46	5 13 23 57	6 14 39 5	5 3 49 33	6 2 29 33	7 24 3 13	5 26 17 5	8 19 54 46	2 18 59 14	2 19 22 22	-2 59	-10 7	4 32
2	0 41 43	5 14 22 57	6 29 1 24	5 4 28 8	6 3 56 43	7 24 11 32	5 27 31 40	8 19 56 4	2 18 56 4	2 19 14 18	-3 22	-14 49	3 52
3	0 45 40	5 15 21 58	7 12 54 12	5 5 6 44	6 5 22 55	7 24 19 59	5 28 46 16	8 19 57 27	2 18 52 53	2 19 8 48	-3 46	-18 33	2 59
4	0 49 36	5 16 21 2	7 26 17 15	5 5 45 20	6 6 48 9	7 24 28 34	6 0 0 51	8 19 58 57	2 18 49 42	2 19 5 52	-4 9	-21 8	1 57
5	0 53 33	5 17 20 7	8 9 13 3	5 6 23 57	6 8 12 23	7 24 37 16	6 1 15 26	8 20 0 32	2 18 46 31	2 19 4 52	-4 32	-22 32	0 52
6	0 57 29	5 18 19 14	8 21 45 47	5 7 2 35	6 9 35 36	7 24 46 5	6 2 30 2	8 20 2 13	2 18 43 21	2 19 4 49	-4 55	-22 43	-0 14
7	1 1 26	5 19 18 23	9 4 0 28	5 7 41 14	6 10 57 45	7 24 55 2	6 3 44 37	8 20 4 0	2 18 40 10	2 19 4 29	-5 18	-21 48	-1 18
8	1 5 22	5 20 17 34	9 16 2 18	5 8 19 54	6 12 18 49	7 25 4 5	6 4 59 12	8 20 5 52	2 18 36 59	2 19 2 44	-5 41	-19 54	-2 17
9	1 9 19	5 21 16 46	9 27 56 13	5 8 58 34	6 13 38 45	7 25 13 16	6 6 13 47	8 20 7 50	2 18 33 49	2 18 58 39	-6 4	-17 9	-3 10
10	1 13 15	5 22 16 0	10 9 46 37	5 9 37 16	6 14 57 29	7 25 22 34	6 7 28 22	8 20 9 54	2 18 30 38	2 18 51 43	-6 27	-13 42	-3 54
11	1 17 12	5 23 15 17	10 21 37 5	5 10 15 58	6 16 14 57	7 25 31 59	6 8 42 56	8 20 12 4	2 18 27 27	2 18 41 55	-6 49	-9 44	-4 27
12	1 21 8	5 24 14 34	11 3 30 27	5 10 54 41	6 17 31 5	7 25 41 30	6 9 57 31	8 20 14 19	2 18 24 16	2 18 29 40	-7 12	-5 22	-4 50
13	1 25 5	5 25 13 54	11 15 28 43	5 11 33 25	6 18 45 47	7 25 51 8	6 11 12 5	8 20 16 40	2 18 21 6	2 18 15 49	-7 35	-0 47	-4 59
14	1 29 2	5 26 13 16	11 27 33 19	5 12 12 10	6 19 58 59	7 26 0 53	6 12 26 39	8 20 19 6	2 18 17 55	2 18 1 27	-7 57	3 53	-4 56
15	1 32 58	5 27 12 40	0 9 45 11	5 12 50 57	6 21 10 32	7 26 10 44	6 13 41 13	8 20 21 38	2 18 14 44	2 17 47 49	-8 19	8 26	-4 38
16	1 36 55	5 28 12 6	0 22 5 5	5 13 29 44	6 22 20 19	7 26 20 42	6 14 55 47	8 20 24 16	2 18 11 33	2 17 35 59	-8 41	12 44	-4 8
17	1 40 51	5 29 11 34	1 4 33 56	5 14 8 32	6 23 28 11	7 26 30 46	6 16 10 21	8 20 26 58	2 18 8 23	2 17 26 50	-9 4	16 32	-3 25
18	1 44 48	6 0 11 5	1 17 12 57	5 14 47 22	6 24 33 59	7 26 40 56	6 17 24 55	8 20 29 47	2 18 5 12	2 17 20 44	-9 25	19 38	-2 32
19	1 48 44	6 1 10 37	2 0 3 55	5 15 26 12	6 25 37 30	7 26 51 12	6 18 39 29	8 20 32 40	2 18 2 1	2 17 17 33	-9 47	21 49	-1 30
20	1 52 41	6 2 10 12	2 13 9 7	5 16 5 4	6 26 38 32	7 27 1 34	6 19 54 4	8 20 35 39	2 17 58 50	2 17 16 37	-10 9	22 52	-0 22
21	1 56 37	6 3 9 49	2 26 31 2	5 16 43 57	6 27 36 50	7 27 12 2	6 21 8 38	8 20 38 43	2 17 55 40	2 17 16 48	-10 30	22 39	0 49
22	2 0 34	6 4 9 29	3 10 12 2	5 17 22 51	6 28 32 7	7 27 22 37	6 22 23 12	8 20 41 53	2 17 52 29	2 17 16 50	-10 52	21 5	1 58
23	2 4 31	6 5 9 11	3 24 13 41	5 18 1 46	6 29 24 4	7 27 33 17	6 23 37 46	8 20 45 8	2 17 49 18	2 17 15 29	-11 13	18 13	3 3
24	2 8 27	6 6 8 55	4 8 35 55	5 18 40 43	7 0 12 21	7 27 44 2	6 24 52 20	8 20 48 28	2 17 46 7	2 17 11 53	-11 34	14 11	3 57
25	2 12 24	6 7 8 41	4 23 16 17	5 19 19 41	7 0 56 33	7 27 54 54	6 26 6 55	8 20 51 53	2 17 42 57	2 17 5 40	-11 55	9 13	4 37
26	2 16 20	6 8 8 30	5 8 9 37	5 19 58 39	7 1 36 15	7 28 5 51	6 27 21 29	8 20 55 24	2 17 39 46	2 16 57 7	-12 16	3 39	4 59
27	2 20 17	6 9 8 20	5 23 8 9	5 20 37 39	7 2 10 57	7 28 16 53	6 28 36 3	8 20 58 59	2 17 36 35	2 16 47 3	-12 36	-2 9	5 0
28	2 24 13	6 10 8 13	6 8 2 39	5 21 16 40	7 2 40 9	7 28 28 1	6 29 50 38	8 21 2 40	2 17 33 24	2 16 36 35	-12 56	-7 49	4 42
29	2 28 10	6 11 8 8	6 22 43 51	5 21 55 42	7 3 3 17	7 28 39 14	7 1 5 12	8 21 6 25	2 17 30 14	2 16 26 59	-13 17	-12 58	4 4
30	2 32 6	6 12 8 4	7 7 4 8	5 22 34 46	7 3 19 44	7 28 50 33	7 2 19 46	8 21 10 16	2 17 27 3	2 16 19 13	-13 36	-17 15	3 12
31	2 36 3	6 13 8 3	7 20 58 36	5 23 13 50	7 3 28 54	7 29 1 56	7 3 34 20	8 21 14 11	2 17 23 52	2 16 13 55	-13 56	-20 27	2 10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 नवम्बर 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 45"

नवम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	2	40	0	6	14	8	3	8	4	25	27	5	23	52	55	7	3	30	8
2	2	43	56	6	15	8	5	8	17	25	41	5	24	32	1	7	3	22	52
3	2	47	53	6	16	8	8	9	0	2	22	5	25	11	9	7	3	6	34
4	2	51	49	6	17	8	13	9	12	19	56	5	25	50	17	7	2	40	50
5	2	55	46	6	18	8	20	9	24	23	26	5	26	29	26	7	2	5	27
6	2	59	42	6	19	8	28	10	6	18	8	5	27	8	37	7	1	20	28
7	3	3	39	6	20	8	38	10	18	9	4	5	27	47	48	7	0	26	14
8	3	7	35	6	21	8	49	11	0	0	45	5	28	27	1	6	29	23	33
9	3	11	32	6	22	9	2	11	11	56	59	5	29	6	15	6	28	13	38
10	3	15	29	6	23	9	16	11	24	0	42	5	29	45	29	6	26	58	10
11	3	19	25	6	24	9	32	0	6	14	1	6	0	24	45	6	25	39	15
12	3	23	22	6	25	9	50	0	18	38	12	6	1	4	3	6	24	19	18
13	3	27	18	6	26	10	9	1	1	13	46	6	1	43	21	6	23	0	54
14	3	31	15	6	27	10	31	1	14	0	46	6	2	22	41	6	21	46	38
15	3	35	11	6	28	10	53	1	26	59	4	6	3	2	2	6	20	38	51
16	3	39	8	6	29	11	18	2	10	8	35	6	3	41	24	6	19	39	36
17	3	43	4	7	0	11	44	2	23	29	31	6	4	20	47	6	18	50	23
18	3	47	1	7	1	12	13	3	7	2	17	6	5	0	12	6	18	12	16
19	3	50	58	7	2	12	43	3	20	47	29	6	5	39	39	6	17	45	47
20	3	54	54	7	3	13	15	4	4	45	22	6	6	19	6	6	17	31	0
21	3	58	51	7	4	13	49	4	18	55	31	6	6	58	35	6	17	27	40
22	4	2	47	7	5	14	24	5	3	16	20	6	7	38	5	6	17	35	13
23	4	6	44	7	6	15	2	5	17	44	42	6	8	17	37	6	17	52	56
24	4	10	40	7	7	15	41	6	2	15	54	6	8	57	10	6	18	19	58
25	4	14	37	7	8	16	21	6	16	44	3	6	9	36	44	6	18	55	25
26	4	18	33	7	9	17	3	7	1	2	48	6	10	16	19	6	19	38	24
27	4	22	30	7	10	17	47	7	15	6	23	6	10	55	56	6	20	28	3
28	4	26	27	7	11	18	32	7	28	50	25	6	11	35	34	6	21	23	34
29	4	30	23	7	12	19	18	8	12	12	24	6	12	15	13	6	22	24	13
30	4	34	20	7	13	20	5	8	25	11	57	6	12	54	53	6	23	29	18

नवम्बर	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	7	29	13	24	7	4	48	53	8	21	18	11	2	17	20	41	2	16	11	8	-14	16	-22	23	1	2
2	7	29	24	58	7	6	3	27	8	21	22	16	2	17	17	31	2	16	10	25	-14	35	-23	3	-0	7
3	7	29	36	36	7	7	18	0	8	21	26	26	2	17	14	20	2	16	10	56	-14	54	-22	29	-1	13
4	7	29	48	18	7	8	32	32	8	21	30	41	2	17	11	9	2	16	11	40	-15	12	-20	50	-2	15
5	8	0	0	6	7	9	47	5	8	21	35	0	2	17	7	58	2	16	11	34	-15	31	-18	17	-3	10
6	8	0	11	57	7	11	1	36	8	21	39	23	2	17	4	48	2	16	9	50	-15	49	-14	59	-3	55
7	8	0	23	53	7	12	16	8	8	21	43	52	2	17	1	37	2	16	5	55	-16	7	-11	7	-4	30
8	8	0	35	54	7	13	30	39	8	21	48	24	2	16	58	26	2	15	59	43	-16	25	-6	49	-4	54
9	8	0	47	58	7	14	45	9	8	21	53	1	2	16	55	15	2	15	51	30	-16	42	-2	15	-5	5
10	8	1	0	7	7	15	59	39	8	21	57	42	2	16	52	5	2	15	41	53	-16	59	2	27	-5	2
11	8	1	12	20	7	17	14	9	8	22	2	28	2	16	48	54	2	15	31	43	-17	16	7	8	-4	46
12	8	1	24	37	7	18	28	38	8	22	7	18	2	16	45	43	2	15	21	57	-17	33	11	36	-4	16
13	8	1	36	57	7	19	43	7	8	22	12	12	2	16	42	32	2	15	13	30	-17	49	15	39	-3	33
14	8	1	49	21	7	20	57	35	8	22	17	10	2	16	39	21	2	15	7	4	-18	5	19	3	-2	39
15	8	2	1	49	7	22	12	3	8	22	22	12	2	16	36	11	2	15	3	1	-18	21	21	33	-1	36
16	8	2	14	21	7	23	26	30	8	22	27	18	2	16	33	0	2	15	1	17	-18	36	22	56	-0	26
17	8	2	26	56	7	24	40	57	8	22	32	28	2	16	29	49	2	15	1	24	-18	51	23	2	0	46
18	8	2	39	35	7	25	55	24	8	22	37	42	2	16	26	38	2	15	2	35	-19	6	21	47	1	56
19	8	2	52	17	7	27	9	51	8	22	42	59	2	16	23	28	2	15	3	52	-19	20	19	15	3	1
20	8	3	5	3	7	28	24	17	8	22	48	21	2	16	20	17	2	15	4	19	-19	34	15	33	3	57
21	8	3	17	52	7	29	38	43	8	22	53	46	2	16	17	6	2	15	3	17	-19	48	10	57	4	39
22	8	3	30	44	8	0	53	8	8	22	59	15	2	16	13	55	2	15	0	28	-20	1	5	41	5	4
23	8	3	43	39	8	2	7	33	8	23	4	47	2	16	10	44	2	14	56	1	-20	14	0	4	5	10
24	8	3	56	37	8	3	21	58	8	23	10	23	2	16	7	34	2	14	50	26	-20	26	-5	35	4	56
25	8	4	9	38	8	4	36	22	8	23	16	3	2	16	4	23	2	14	44	29	-20	38	-10	54	4	23
26	8	4	22	42	8	5	50	46	8	23	21	46	2	16	1	12	2	14	39	1	-20	50	-15	35	3	35
27	8	4	35	48	8	7	5	10	8	23	27	32	2	15	58	1	2	14	34	42	-21	1	-19	18	2	33
28	8	4	48	57	8	8	19	33	8	23	33	21	2	15	54	50	2	14	31	58	-21	12	-21	51	1	25
29	8	5	2	9	8	9	33	55	8	23	39	14	2	15	51	40	2	14	30	56	-21	23	-23	4	0	13
30	8	5	15	23	8	10	48	16	8	23	45	10	2	15	48	29	2	14	31	20	-21	33	-23	0	-0	58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 दिसम्बर 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 49''

दिसम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	38	16	7	14	20	53	9	7	50	29	6	13	34	34	6	24	38	15	8	5	28	40	8	12	2	37	8	23	51	9	2	15	45	18	2	14	32	44	-21	43	-21	44	-2	4
2	4	42	13	7	15	21	43	9	20	10	55	6	14	14	16	6	25	50	32	8	5	41	59	8	13	16	57	8	23	57	11	2	15	42	7	2	14	34	31	-21	52	-19	27	-3	3
3	4	46	9	7	16	22	33	10	2	17	15	6	14	54	0	6	27	5	40	8	5	55	20	8	14	31	16	8	24	3	16	2	15	38	56	2	14	36	5	-22	1	-16	21	-3	52
4	4	50	6	7	17	23	24	10	14	14	7	6	15	33	44	6	28	23	15	8	6	8	43	8	15	45	34	8	24	9	23	2	15	35	46	2	14	36	55	-22	10	-12	37	-4	31
5	4	54	2	7	18	24	16	10	26	6	25	6	16	13	30	6	29	42	57	8	6	22	8	8	16	59	51	8	24	15	34	2	15	32	35	2	14	36	41	-22	18	-8	26	-4	58
6	4	57	59	7	19	25	9	11	7	59	4	6	16	53	17	7	1	4	26	8	6	35	35	8	18	14	7	8	24	21	47	2	15	29	24	2	14	35	18	-22	25	-3	56	-5	12
7	5	1	56	7	20	26	3	11	19	56	40	6	17	33	5	7	2	27	29	8	6	49	4	8	19	28	21	8	24	28	3	2	15	26	13	2	14	32	50	-22	33	0	45	-5	13
8	5	5	52	7	21	26	57	0	2	3	16	6	18	12	54	7	3	51	50	8	7	2	35	8	20	42	35	8	24	34	21	2	15	23	2	2	14	29	35	-22	39	5	27	-4	59
9	5	9	49	7	22	27	52	0	14	22	11	6	18	52	44	7	5	17	20	8	7	16	7	8	21	56	47	8	24	40	42	2	15	19	52	2	14	25	58	-22	46	10	2	-4	32
10	5	13	45	7	23	28	48	0	26	55	50	6	19	32	36	7	6	43	47	8	7	29	41	8	23	10	58	8	24	47	6	2	15	16	41	2	14	22	26	-22	52	14	17	-3	52
11	5	17	42	7	24	29	45	1	9	45	33	6	20	12	29	7	8	11	5	8	7	43	17	8	24	25	7	8	24	53	31	2	15	13	30	2	14	19	25	-22	57	18	0	-2	59
12	5	21	38	7	25	30	43	1	22	51	33	6	20	52	24	7	9	39	5	8	7	56	53	8	25	39	16	8	24	59	59	2	15	10	19	2	14	17	16	-23	2	20	53	-1	55
13	5	25	35	7	26	31	41	2	6	13	5	6	21	32	19	7	11	7	43	8	8	10	32	8	26	53	23	8	25	6	30	2	15	7	8	2	14	16	7	-23	6	22	42	-0	44
14	5	29	31	7	27	32	41	2	19	48	31	6	22	12	16	7	12	36	53	8	8	24	11	8	28	7	28	8	25	13	2	2	15	3	57	2	14	15	57	-23	10	23	13	0	31
15	5	33	28	7	28	33	41	3	3	35	44	6	22	52	15	7	14	6	31	8	8	37	52	8	29	21	32	8	25	19	37	2	15	0	47	2	14	16	34	-23	14	22	20	1	45
16	5	37	25	7	29	34	42	3	17	32	21	6	23	32	14	7	15	36	34	8	8	51	34	9	0	35	35	8	25	26	13	2	14	57	36	2	14	17	37	-23	17	20	4	2	54
17	5	41	21	8	0	35	44	4	1	35	56	6	24	12	16	7	17	6	58	8	9	5	17	9	1	49	37	8	25	32	52	2	14	54	25	2	14	18	43	-23	20	16	35	3	53
18	5	45	18	8	1	36	47	4	15	44	13	6	24	52	18	7	18	37	43	8	9	19	1	9	3	3	37	8	25	39	33	2	14	51	14	2	14	19	33	-23	22	12	9	4	38
19	5	49	14	8	2	37	51	4	29	54	59	6	25	32	22	7	20	8	45	8	9	32	46	9	4	17	36	8	25	46	15	2	14	48	3	2	14	19	53	-23	24	7	3	5	7
20	5	53	11	8	3	38	56	5	14	6	8	6	26	12	28	7	21	40	4	8	9	46	32	9	5	31	33	8	25	53	0	2	14	44	53	2	14	19	40	-23	25	1	35	5	17
21	5	57	7	8	4	40	2	5	28	15	28	6	26	52	34	7	23	11	38	8	10	0	19	9	6	45	28	8	25	59	46	2	14	41	42	2	14	18	58	-23	26	-3	57	5	7
22	6	1	4	8	5	41	9	6	12	20	37	6	27	32	42	7	24	43	28	8	10	14	6	9	7	59	23	8	26	6	34	2	14	38	31	2	14	17	59	-23	26	-9	16	4	40
23	6	5	0	8	6	42	16	6	26	18	58	6	28	12	52	7	26	15	32	8	10	27	54	9	9	13	15	8	26	13	23	2	14	35	20	2	14	16	57	-23	26	-14	4	3	56
24	6	8	57	8	7	43	24	7	10	7	46	6	28	53	2	7	27	47	50	8	10	41	43	9	10	27	6	8	26	20	14	2	14	32	9	2	14	16	4	-23	25	-18	5	2	58
25	6	12	54	8	8	44	33	7	23	44	27	6	29	33	14	7	29	20	23	8	10	55	32	9	11	40	55	8	26	27	6	2	14	28	58	2	14	15	28	-23	24	-21	2	1	51
26	6	16	50	8	9	45	42	8	7	6	47	7	0	13	27	8	0	53	10	8	11	9	21	9	12	54	42	8	26	34	0	2	14	25	48	2	14	15	12	-23	23	-22	46	0	40
27	6	20	47	8	10	46	51	8	20	13	13	7	0	53	42	8	2	26	11	8	11	23	11	9	14	8	28	8	26	40	55	2	14	22	37	2	14	15	12	-23	21	-23	13	-0	33
28	6	24	43	8	11	48	1	9	3	3	7	7	1	33	57	8	3	59	27	8	11	37	1	9	15	22	11	8	26	47	51	2	14	19	26	2	14	15	22	-23	18	-22	24	-1	42
29	6	28	40	8	12	49	11	9	15	36	53	7	2	14	14	8	5	32	58	8	11	50	51	9	16	35	52	8	26	54	49	2	14	16	15	2	14	15	33	-23	15	-20	28	-2	45
30	6	32	36	8	13	50	21	9	27	55	56	7	2	54	32	8	7	6	45	8	12	4	41	9	17	49	31	8	27	1	48	2	14	13	4	2	14	15	40	-23	12	-17	37	-3	39
31	6	36	33	8	14	51	31	10	10	2	45	7	3	34	51	8	8	40	49	8	12	18	30	9	19	3	7	8	27	8	47	2	14	9	54	2	14	15	41	-23	8	-14	3	-4	23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जनवरी 2020 ई. को अयनांश 24° 7' 55"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT (घं. मि. से.)	सूर्य (रा. अं. क. वि.)	चन्द्र (रा. अं. क. वि.)	मंगल (रा. अं. क. वि.)	बुध (रा. अं. क. वि.)	गुरु (रा. अं. क. वि.)	शुक्र (रा. अं. क. वि.)	शनि (रा. अं. क. वि.)	मध्यम राहु (रा. अं. क. वि.)	स्पष्ट राहु (रा. अं. क. वि.)	सूर्य क्रां. (अं. क.)	चन्द्रक्रां. (अं. क.)	चन्द्रशर (अं. क.)
1	6 40 29	8 15 52 41	10 22 0 36	7 4 15 11	8 10 15 9	8 12 32 18	9 20 16 41	8 27 15 48	2 14 6 43	2 14 15 35	-23 4	-9 58	-4 54
2	6 44 26	8 16 53 51	11 3 53 28	7 4 55 32	8 11 49 48	8 12 46 8	9 21 30 12	8 27 22 49	2 14 3 32	2 14 15 27	-22 59	-5 33	-5 12
3	6 48 23	8 17 55 1	11 15 45 49	7 5 35 54	8 13 24 45	8 12 59 57	9 22 43 41	8 27 29 51	2 14 0 21	2 14 15 23	-22 53	-0 56	-5 17
4	6 52 19	8 18 56 10	11 27 42 20	7 6 16 17	8 15 0 2	8 13 13 45	9 23 57 6	8 27 36 54	2 13 57 10	2 14 15 29	-22 48	3 44	-5 8
5	6 56 16	8 19 57 19	0 9 47 45	7 6 56 42	8 16 35 40	8 13 27 33	9 25 10 28	8 27 43 58	2 13 54 0	2 14 15 50	-22 41	8 20	-4 46
6	7 0 12	8 20 58 28	0 22 6 32	7 7 37 7	8 18 11 40	8 13 41 21	9 26 23 48	8 27 51 2	2 13 50 49	2 14 16 27	-22 35	12 41	-4 11
7	7 4 9	8 21 59 37	1 4 42 34	7 8 17 34	8 19 48 2	8 13 55 7	9 27 37 4	8 27 58 7	2 13 47 38	2 14 17 15	-22 28	16 36	-3 22
8	7 8 5	8 23 0 45	1 17 38 48	7 8 58 3	8 21 24 47	8 14 8 53	9 28 50 17	8 28 5 12	2 13 44 27	2 14 18 6	-22 20	19 51	-2 22
9	7 12 2	8 24 1 53	2 0 56 50	7 9 38 32	8 23 1 56	8 14 22 38	10 0 3 26	8 28 12 17	2 13 41 16	2 14 18 47	-22 12	22 7	-1 13
10	7 15 58	8 25 3 1	2 14 36 38	7 10 19 3	8 24 39 31	8 14 36 23	10 1 16 32	8 28 19 23	2 13 38 6	2 14 19 4	-22 4	23 11	0 2
11	7 19 55	8 26 4 8	2 28 36 22	7 10 59 35	8 26 17 31	8 14 50 6	10 2 29 34	8 28 26 29	2 13 34 55	2 14 18 47	-21 55	22 48	1 18
12	7 23 52	8 27 5 15	3 12 52 24	7 11 40 8	8 27 55 58	8 15 3 48	10 3 42 32	8 28 33 35	2 13 31 44	2 14 17 50	-21 46	20 58	2 32
13	7 27 48	8 28 6 22	3 27 19 38	7 12 20 43	8 29 34 52	8 15 17 29	10 4 55 27	8 28 40 42	2 13 28 33	2 14 16 17	-21 36	17 45	3 36
14	7 31 45	8 29 7 29	4 11 52 9	7 13 1 19	9 1 14 14	8 15 31 9	10 6 8 18	8 28 47 48	2 13 25 22	2 14 14 21	-21 26	13 26	4 27
15	7 35 41	9 0 8 36	4 26 24 0	7 13 41 56	9 2 54 4	8 15 44 48	10 7 21 6	8 28 54 55	2 13 22 12	2 14 12 23	-21 15	8 21	5 1
16	7 39 38	9 1 9 42	5 10 49 59	7 14 22 35	9 4 34 21	8 15 58 26	10 8 33 49	8 29 2 1	2 13 19 1	2 14 10 45	-21 5	2 51	5 15
17	7 43 34	9 2 10 49	5 25 6 9	7 15 3 15	9 6 15 6	8 16 12 2	10 9 46 28	8 29 9 8	2 13 15 50	2 14 9 47	-20 53	-2 45	5 10
18	7 47 31	9 3 11 55	6 9 10 0	7 15 43 57	9 7 56 18	8 16 25 36	10 10 59 4	8 29 16 14	2 13 12 39	2 14 9 40	-20 41	-8 7	4 46
19	7 51 27	9 4 13 1	6 23 0 17	7 16 24 40	9 9 37 57	8 16 39 9	10 12 11 35	8 29 23 20	2 13 9 28	2 14 10 24	-20 29	-13 1	4 6
20	7 55 24	9 5 14 6	7 6 36 43	7 17 5 24	9 11 20 0	8 16 52 40	10 13 24 2	8 29 30 25	2 13 6 18	2 14 11 44	-20 17	-17 10	3 13
21	7 59 21	9 6 15 12	7 19 59 33	7 17 46 9	9 13 2 26	8 17 6 10	10 14 36 24	8 29 37 30	2 13 3 7	2 14 13 14	-20 4	-20 21	2 10
22	8 3 17	8 7 16 17	8 3 9 21	7 18 26 55	9 14 45 13	8 17 19 37	10 15 48 42	8 29 44 35	2 12 59 56	2 14 14 23	-19 51	-22 24	1 1
23	8 7 14	9 8 17 21	8 16 6 38	7 19 7 43	9 16 28 17	8 17 33 3	10 17 0 56	8 29 51 39	2 12 56 45	2 14 14 42	-19 37	-23 13	-0 10
24	8 11 10	9 9 18 25	8 28 51 54	7 19 48 32	9 18 11 34	8 17 46 27	10 18 13 5	8 29 58 42	2 12 53 34	2 14 13 46	-19 23	-22 47	-1 19
25	8 15 7	9 10 19 28	9 11 25 33	7 20 29 22	9 19 55 1	8 17 59 48	10 19 25 8	9 0 5 45	2 12 50 24	2 14 11 25	-19 9	-21 12	-2 24
26	8 19 3	9 11 20 30	9 23 48 9	7 21 10 13	9 21 38 29	8 18 13 7	10 20 37 7	9 0 12 47	2 12 47 13	2 14 7 42	-18 54	-18 37	-3 20
27	8 23 0	9 12 21 32	10 6 0 29	7 21 51 5	9 23 21 52	8 18 26 24	10 21 49 1	9 0 19 48	2 12 44 2	2 14 2 54	-18 39	-15 16	-4 6
28	8 26 56	9 13 22 32	10 18 3 56	7 22 31 58	9 25 5 1	8 18 39 39	10 23 0 49	9 0 26 48	2 12 40 51	2 13 57 31	-13 23	-11 18	-4 41
29	8 30 53	8 14 23 32	11 0 0 26	7 23 12 51	9 26 47 45	8 18 52 51	10 24 12 31	9 0 33 47	2 12 37 40	2 13 52 6	-18 8	-6 58	-5 3
30	8 34 50	9 15 24 30	11 11 52 40	7 23 53 46	9 28 29 50	8 19 6 0	10 25 24 8	9 0 40 45	2 12 34 30	2 13 47 17	-17 52	-2 23	-5 12
31	8 38 46	9 16 25 28	11 23 43 58	7 24 34 42	10 0 11 2	8 19 19 7	10 26 35 38	9 0 47 42	2 12 31 19	2 13 43 33	-17 35	2 16	-5 7

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 फरवरी 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 0"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	42	43	9	17	26	24	0	5	38	23	7	25	15	39	10	1	51	3	8	19	32	11	10	27	47	2	9	0	54	38	2	12	28	8	2	13	41	14	-17	19	6	52	-4	49
2	8	46	39	9	18	27	18	0	17	40	25	7	25	56	37	10	3	29	33	8	19	45	12	10	28	58	20	9	1	1	32	2	12	24	57	2	13	40	27	-17	2	11	16	-4	19
3	8	50	36	9	19	28	11	0	29	54	57	7	26	37	36	10	5	6	7	8	19	58	10	11	0	9	31	9	1	8	25	2	12	21	47	2	13	41	0	-16	44	15	17	-3	36
4	8	54	32	9	20	29	3	1	12	26	47	7	27	18	36	10	6	40	19	8	20	11	5	11	1	20	35	9	1	15	17	2	12	18	36	2	13	42	25	-16	27	18	45	-2	42
5	8	58	29	9	21	29	54	1	25	20	22	7	27	59	37	10	8	11	39	8	20	23	57	11	2	31	32	9	1	22	7	2	12	15	25	2	13	44	1	-16	9	21	23	-1	38
6	9	2	25	9	22	30	43	2	8	39	9	7	28	40	40	10	9	39	34	8	20	36	46	11	3	42	22	9	1	28	56	2	12	12	14	2	13	45	1	-15	51	22	57	-0	28
7	9	6	22	9	23	31	31	2	22	24	58	7	29	21	43	10	11	3	26	8	20	49	31	11	4	53	4	9	1	35	43	2	12	9	4	2	13	44	43	-15	32	23	11	0	47
8	9	10	19	9	24	32	18	3	6	37	20	8	0	2	48	10	12	22	36	8	21	2	13	11	6	3	38	9	1	42	28	2	12	5	53	2	13	42	36	-15	14	21	57	2	1
9	9	14	15	9	25	33	3	3	21	12	54	8	0	43	53	10	13	36	21	8	21	14	52	11	7	14	5	9	1	49	12	2	12	2	42	2	13	38	31	-14	55	19	14	3	9
10	9	18	12	9	26	33	47	4	6	5	26	8	1	25	0	10	14	43	57	8	21	27	27	11	8	24	24	9	1	55	53	2	11	59	31	2	13	32	44	-14	36	15	13	4	5
11	9	22	8	9	27	34	30	4	21	6	24	8	2	6	8	10	15	44	37	8	21	39	59	11	9	34	35	9	2	2	33	2	11	56	20	2	13	25	53	-14	16	10	12	4	45
12	9	26	5	9	28	35	11	5	6	6	21	8	2	47	18	10	16	37	38	8	21	52	27	11	10	44	37	9	2	9	11	2	11	53	10	2	13	18	52	-13	56	4	35	5	6
13	9	30	1	9	29	35	52	5	20	56	26	8	3	28	28	10	17	22	17	8	22	4	52	11	11	54	31	9	2	15	47	2	11	49	59	2	13	12	38	-13	37	-1	14	5	5
14	9	33	58	10	0	36	31	6	5	29	45	8	4	9	40	10	17	57	53	8	22	17	12	11	13	4	17	9	2	22	21	2	11	46	48	2	13	7	58	-13	16	-6	53	4	45
15	9	37	54	10	1	37	9	6	19	42	7	8	4	50	53	10	18	23	52	8	22	29	29	11	14	13	53	9	2	28	53	2	11	43	37	2	13	5	17	-12	56	-12	3	4	8
16	9	41	51	10	2	37	46	7	3	32	5	8	5	32	7	10	18	39	48	8	22	41	41	11	15	23	21	9	2	35	23	2	11	40	27	2	13	4	32	-12	35	-16	27	3	17
17	9	45	48	10	3	38	22	7	17	0	21	8	6	13	22	10	18	45	23	8	22	53	50	11	16	32	40	9	2	41	50	2	11	37	16	2	13	5	11	-12	15	-19	52	2	16
18	9	49	44	10	4	38	56	8	0	9	1	8	6	54	38	10	18	40	32	8	23	5	54	11	17	41	49	9	2	48	15	2	11	34	5	2	13	6	22	-11	54	-22	10	1	9
19	9	53	41	10	5	39	30	8	13	0	52	8	7	35	56	10	18	25	21	8	23	17	54	11	18	50	49	9	2	54	38	2	11	30	54	2	13	7	1	-11	33	-23	14	0	1
20	9	57	37	10	6	40	2	8	25	38	46	8	8	17	14	10	18	0	13	8	23	29	50	11	19	59	39	9	3	0	58	2	11	27	44	2	13	6	9	-11	11	-23	5	-1	7
21	10	1	34	10	7	40	32	9	8	5	17	8	8	58	33	10	17	25	44	8	23	41	41	11	21	8	19	9	3	7	16	2	11	24	33	2	13	3	0	-10	50	-21	46	-2	10
22	10	5	30	10	8	41	2	9	20	22	32	8	9	39	53	10	16	42	47	8	23	53	27	11	22	16	49	9	3	13	31	2	11	21	22	2	12	57	11	-10	28	-19	26	-3	6
23	10	9	27	10	9	41	29	10	2	32	7	8	10	21	14	10	15	52	30	8	24	5	9	11	23	25	8	9	3	19	43	2	11	18	11	2	12	48	47	-10	6	-16	16	-3	52
24	10	13	23	10	10	41	56	10	14	35	17	8	11	2	36	10	14	56	13	3	24	16	46	11	24	33	17	9	3	25	53	2	11	15	1	2	12	38	18	-9	44	-12	26	-4	28
25	10	17	20	10	11	42	20	10	26	33	9	8	11	43	58	10	13	55	27	8	24	28	18	11	25	41	14	9	3	32	0	2	11	11	50	2	12	26	32	-9	22	-8	9	-4	52
26	10	21	17	10	12	42	43	11	8	26	59	8	12	25	22	10	12	51	46	8	24	39	45	11	26	49	0	9	3	38	4	2	11	8	39	2	12	14	31	-9	0	-3	36	-5	2
27	10	25	13	10	13	43	4	11	20	18	24	8	13	6	45	10	11	46	51	8	24	51	7	11	27	56	34	9	3	44	5	2	11	5	28	2	12	3	18	-8	37	1	5	-5	0
28	10	29	10	10	14	43	23	0	2	9	39	8	13	48	10	10	10	42	15	8	25	2	24	11	29	3	55	9	3	50	3	2	11	2	18	2	11	53	48	-8	15	5	43	-4	45
29	10	33	6	10	15	43	40	0	14	3	36	8	14	29	35	10	9	39	29	8	25	13	35	0	0	11	4	9	3	55	58	2	10	59	7	2	11	46	41	-7	52	10	11	-4	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मार्च 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 3''

मार्च	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	37	3	10	16	43	55	0	26	3	56	8	15	11	1	10	8	39	52	8	25	24	41	0	1	18	0	9	4	1	50	2	10	55	56	2	11	42	12	-7	29	14	18	-3	38
2	10	40	59	10	17	44	8	1	8	14	57	8	15	52	28	10	7	44	34	8	25	35	41	0	2	24	43	9	4	7	38	2	10	52	46	2	11	40	7	-7	7	17	54	-2	48
3	10	44	56	10	18	44	19	1	20	41	27	8	16	33	56	10	6	54	28	8	25	46	36	0	3	31	11	9	4	13	24	2	10	49	35	2	11	39	48	-6	44	20	46	-1	49
4	10	48	52	10	19	44	27	2	3	28	21	8	17	15	24	10	6	10	16	8	25	57	25	0	4	37	25	9	4	19	6	2	10	46	24	2	11	40	14	-6	21	22	42	-0	43
5	10	52	49	10	20	44	34	2	16	40	12	8	17	56	53	10	5	32	29	8	26	8	9	0	5	43	25	9	4	24	44	2	10	43	13	2	11	40	15	-5	57	23	26	0	27
6	10	56	46	10	21	44	39	3	0	20	31	8	18	38	23	10	5	1	23	8	26	18	47	0	6	49	9	9	4	30	20	2	10	40	3	2	11	38	43	-5	34	22	49	1	37
7	11	0	42	10	22	44	41	3	14	30	45	8	19	19	53	10	4	37	7	8	26	29	18	0	7	54	38	9	4	35	51	2	10	36	52	2	11	34	49	-5	11	20	45	2	45
8	11	4	39	10	23	44	42	3	29	9	20	8	20	1	25	10	4	19	40	8	26	39	44	0	8	59	51	9	4	41	19	2	10	33	41	2	11	28	15	-4	47	17	16	3	44
9	11	8	35	10	24	44	40	4	14	11	1	8	20	42	57	10	4	8	57	8	26	50	4	0	10	4	47	9	4	46	44	2	10	30	30	2	11	19	16	-4	24	12	36	4	28
10	11	12	32	10	25	44	37	4	29	27	1	8	21	24	30	10	4	4	47	8	27	0	17	0	11	9	26	9	4	52	5	2	10	27	20	2	11	8	42	-4	0	7	3	4	55
11	11	16	28	10	26	44	32	5	14	46	15	8	22	6	4	10	4	6	54	8	27	10	24	0	12	13	48	9	4	57	22	2	10	24	9	2	10	57	44	-3	37	1	4	5	0
12	11	20	25	10	27	44	25	5	29	57	13	8	22	47	39	10	4	15	3	8	27	20	25	0	13	17	53	9	5	2	36	2	10	20	58	2	10	47	38	-3	13	-4	56	4	45
13	11	24	21	10	28	44	16	6	14	50	3	8	23	29	14	10	4	28	54	8	27	30	19	0	14	21	39	9	5	7	45	2	10	17	47	2	10	39	30	-2	50	-10	32	4	10
14	11	28	18	10	29	44	5	6	29	18	6	8	24	10	51	10	4	48	9	8	27	40	7	0	15	25	7	9	5	12	51	2	10	14	37	2	10	33	56	-2	26	-15	25	3	19
15	11	32	15	11	0	43	53	7	13	18	18	8	24	52	28	10	5	12	31	8	27	49	48	0	16	28	15	9	5	17	53	2	10	11	26	2	10	30	59	-2	2	-19	16	2	19
16	11	36	11	11	1	43	38	7	26	50	51	8	25	34	6	10	5	41	39	8	27	59	23	0	17	31	4	9	5	22	51	2	10	8	15	2	10	30	3	-1	39	-21	56	1	12
17	11	40	8	11	2	43	23	8	9	58	13	8	26	15	44	10	6	15	17	8	28	8	50	0	18	33	33	9	5	27	44	2	10	5	5	2	10	30	7	-1	15	-23	20	0	3
18	11	44	4	11	3	43	5	8	22	44	11	8	26	57	23	10	6	53	9	8	28	18	11	0	19	35	41	9	5	32	34	2	10	1	54	2	10	29	53	-0	51	-23	26	-1	4
19	11	48	1	11	4	42	46	9	5	12	58	8	27	39	3	10	7	34	57	8	28	27	24	0	20	37	28	9	5	37	19	2	9	58	43	2	10	28	6	-0	28	-22	21	-2	7
20	11	51	57	11	5	42	25	9	17	28	41	8	28	20	43	10	8	20	28	8	28	36	31	0	21	38	53	9	5	42	1	2	9	55	32	2	10	23	50	-0	4	-20	13	-3	2
21	11	55	54	11	6	42	2	9	29	34	57	8	29	2	24	10	9	9	29	8	28	45	30	0	22	39	56	9	5	46	37	2	9	52	22	2	10	16	33	0	20	-17	12	-3	48
22	11	59	50	11	7	41	38	10	11	34	43	8	29	44	5	10	10	1	45	8	28	54	21	0	23	40	36	9	5	51	10	2	9	49	11	2	10	6	16	0	44	-13	30	-4	24
23	12	3	47	11	8	41	11	10	23	30	17	9	0	25	46	10	10	57	6	8	29	3	5	0	24	40	51	9	5	55	38	2	9	46	0	2	9	53	28	1	7	-9	17	-4	47
24	12	7	44	11	9	40	43	11	5	23	23	9	1	7	27	10	11	55	21	8	29	11	41	0	25	40	42	9	6	0	2	2	9	42	50	2	9	39	5	1	31	-4	45	-4	58
25	12	11	40	11	10	40	12	11	17	15	23	9	1	49	9	10	12	56	20	8	29	20	10	0	26	40	8	9	6	4	21	2	9	39	39	2	9	24	14	1	55	-0	2	-4	56
26	12	15	37	11	11	39	40	11	29	7	35	9	2	30	51	10	13	59	54	8	29	28	31	0	27	39	7	9	6	8	35	2	9	36	28	2	9	10	10	2	18	4	40	-4	42
27	12	19	33	11	12	39	5	0	11	1	27	9	3	12	32	10	15	5	55	8	29	36	43	0	28	37	38	9	6	12	45	2	9	33	17	2	8	57	58	2	42	9	14	-4	14
28	12	23	30	11	13	38	28	0	22	58	54	9	3	54	14	10	16	14	16	8	29	44	48	0	29	35	41	9	6	16	50	2	9	30	7	2	8	48	27	3	5	13	29	-3	36
29	12	27	26	11	14	37	49	1	5	2	29	9	4	35	56	10	17	24	50	8	29	52	45	1	0	33	15	9	6	20	50	2	9	26	56	2	8	41	58	3	28	17	15	-2	47
30	12	31	23	11	15	37	8	1	17	15	25	9	5	17	38	10	18	37	32	9	0	0	33	1	1	30	18	9	6	24	46	2	9	23	45	2	8	38	24	3	52	20	19	-1	50
31	12	35	19	11	16	38	24	1	29	41	35	9	5	59	20	10	19	52	16	9	0	8	13	1	2	26	50	9	6	28	36	2	9	20	34	2	8	37	8	4	15	22	31	-0	47

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2076 वि.)

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)
+ 5°	6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	31 अग.	30 सितं.	29 अक्तू.	28 नवं.	27 दिसं.	26 जन.	25 फर.
+ 15°	6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	31 अग.	30 सितं.	29 अक्तू.	28 नवं.	27 दिसं.	26 जन.	25 फर.
+ 25°	6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	31 अग.	30 सितं.	29 अक्तू.	28 नवं.	27 दिसं.	26 जन.	25 फर.
+ 35°	❁6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	❁31 अग.	30 सितं.	✲29 अक्तू.	28 नवं.	28 दिसं.	26 जन.	25 फर.

❁ उ.कश्मीर में 6 अप्रैल को चन्द्रदर्शन नहीं होगा। ❁ पंजाब, हि.प्र. में 31 अग. को चन्द्रदर्शन सम्भव नहीं है। ✲ कश्मीर के उत्तरी छोर पर चन्द्रदर्शन की कम सम्भावना है।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

तारीख	जनवरी 2019				फरवरी 2019				मार्च 2019				अप्रैल 2019				मई 2019				जून 2019				जुलाई 2019				अगस्त 2019				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	2	47	14	14	4	29	15	2	3	16	13	47	4	9	15	10	3	49	15	42	3	57	17	16	3	53	18	5	5	33	19	43	1
2	3	46	14	52	5	20	15	51	4	5	14	38	4	44	16	4	4	21	16	37	4	34	18	17	4	44	19	8	6	43	20	31	2
3	4	43	15	33	6	7	16	42	4	50	15	30	5	17	16	57	4	52	17	32	5	16	19	19	5	42	20	9	7	53	21	14	3
4	5	39	16	17	6	51	17	35	5	31	16	23	5	49	17	51	5	25	18	30	6	3	20	22	6	47	21	4	9	2	21	54	4
5	6	33	17	5	7	31	18	28	6	8	17	16	6	20	18	46	6	00	19	29	6	57	21	23	7	54	21	54	10	9	22	32	5
6	7	23	17	55	8	7	19	22	6	43	18	10	6	52	19	41	6	38	20	30	7	57	22	20	9	3	22	38	11	14	23	8	6
7	8	10	18	47	8	41	20	15	7	15	19	3	7	25	20	38	7	22	21	31	9	1	23	12	10	10	23	18	12	17	23	46	7
8	8	52	19	40	9	13	21	8	7	47	19	57	8	1	21	37	8	11	22	32	10	7	23	58	11	16	23	56	13	19	—	—	8
9	9	31	20	34	9	45	22	1	8	18	20	51	8	41	22	37	9	6	23	30	11	14	—	—	12	19	—	—	14	19	0	25	9
10	10	7	21	27	10	16	22	56	8	50	21	47	9	25	23	37	10	6	—	—	12	19	0	39	13	22	0	32	15	18	1	7	10
11	10	40	22	20	10	48	23	51	9	24	22	43	10	15	—	—	11	10	0	24	13	23	1	17	14	24	1	8	16	14	1	53	11
12	11	12	23	13	11	23	—	—	10	1	23	42	11	11	0	37	12	15	1	13	14	26	1	54	15	25	1	45	17	6	2	42	12
13	11	43	—	—	12	2	0	49	10	41	—	—	12	13	1	33	13	21	1	57	15	28	2	30	16	25	2	25	17	54	3	33	13
14	12	15	0	7	12	46	1	50	11	28	0	42	13	17	2	26	14	26	2	38	16	30	3	6	17	23	3	9	18	36	4	27	14
15	12	49	1	3	13	36	2	52	12	21	1	43	14	24	3	14	15	30	3	16	17	32	3	45	18	18	3	55	19	15	5	21	15
16	13	26	2	2	14	33	3	55	13	20	2	42	15	32	3	58	16	35	3	53	18	33	4	27	19	10	4	46	19	50	6	16	16
17	14	9	3	3	15	38	4	56	14	24	3	39	16	39	4	39	17	38	4	30	19	31	5	12	19	56	5	38	20	23	7	9	17
18	14	57	4	6	16	47	5	53	15	33	4	32	17	45	5	18	18	42	5	8	20	25	6	1	20	38	6	33	20	53	8	2	18
19	15	53	5	11	17	58	6	45	16	42	5	21	18	51	5	56	19	44	5	49	21	15	6	53	21	15	7	28	21	23	8	55	19
20	16	56	6	15	19	8	7	33	17	52	6	5	19	55	6	34	20	45	6	33	22	0	7	47	21	50	8	22	21	53	9	48	20
21	18	4	7	16	20	17	8	16	19	0	6	46	20	59	7	15	21	42	7	20	22	40	8	41	22	21	9	15	22	25	10	41	21
22	19	14	8	11	21	23	8	56	20	6	7	25	22	1	7	57	22	35	8	10	23	16	9	36	22	52	10	8	22	59	11	36	22
23	20	24	9	1	22	28	9	34	21	12	8	4	22	59	8	42	23	22	9	3	23	49	10	30	23	22	11	1	23	37	12	33	23
24	21	32	9	44	23	30	10	12	22	15	8	43	23	53	9	31	—	—	9	57	—	—	11	23	23	53	11	54	—	—	13	32	24
25	22	37	10	24	—	—	10	50	23	16	9	24	—	—	10	22	0	4	10	52	0	21	12	16	—	—	12	49	0	20	14	33	25
26	23	40	11	2	0	30	11	30	—	—	10	7	0	43	11	14	0	43	11	46	0	51	13	9	0	25	13	45	1	9	15	33	26
27	—	—	11	38	1	28	12	13	0	15	10	52	1	27	12	8	1	17	12	39	1	22	14	4	1	2	14	45	2	6	16	32	27
28	0	41	12	15	2	24	12	59	1	10	11	41	2	7	13	2	1	50	13	32	1	54	15	1	1	43	15	46	3	10	17	28	28
29	1	40	12	53					2	1	12	31	2	44	13	55	2	21	14	26	2	29	16	0	2	30	16	49	4	18	18	19	29
30	2	38	13	33					2	48	13	23	3	17	14	49	2	51	15	21	3	8	17	2	3	24	17	51	5	40	19	5	30
31	3	34	14	16					3	30	14	17					3	23	16	17					4	26	18	50	6	40	19	47	31

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2076 वि.)

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2019 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)
+ 5°	6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	31 अग.	30 सितं.	29 अक्तू.	28 नवं.	27 दिसं.	26 जन.	25 फर.
+ 15°	6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	31 अग.	30 सितं.	29 अक्तू.	28 नवं.	27 दिसं.	26 जन.	25 फर.
+ 25°	6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	31 अग.	30 सितं.	29 अक्तू.	28 नवं.	27 दिसं.	26 जन.	25 फर.
+ 35°	✱6 अप्रै.	6 मई	4 जून	4 जुला.	2 अग.	✱31 अग.	30 सितं.	✱29 अक्तू.	28 नवं.	2[illegible] दिसं.	26 जन.	25 फर.

✱ उ.कश्मीर में 6 अप्रैल को चन्द्रदर्शन नहीं होगा। ✱ पंजाब, हि.प्र. में 31 अग. को चन्द्रदर्शन सम्भव नहीं है। ✱ कश्मीर के उत्तरी छोर पर चन्द्रदर्शन की कम सम्भावना है।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

तारीख	जनवरी 2019				फरवरी 2019				मार्च 2019				अप्रैल 2019			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	2	47	14	14	4	29	15	2	3	16	13	47	4	9	15	10
2	3	46	14	52	5	20	15	51	4	5	14	38	4	44	16	4
3	4	43	15	33	6	7	16	42	4	50	15	30	5	17	16	57
4	5	39	16	17	6	51	17	35	5	31	16	23	5	49	17	51
5	6	33	17	5	7	31	18	28	6	8	17	16	6	20	18	46
6	7	23	17	55	8	7	19	22	6	43	18	10	6	52	19	41
7	8	10	18	47	8	41	20	15	7	15	19	3	7	25	20	38
8	8	52	19	40	9	13	21	8	7	47	19	57	8	1	21	37
9	9	31	20	34	9	45	22	1	8	18	20	51	8	41	22	37
10	10	7	21	27	10	16	22	56	8	50	21	47	9	25	23	37
11	10	40	22	20	10	48	23	51	9	24	22	43	10	15	—	—
12	11	12	23	13	11	23	—	—	10	1	23	42	11	11	0	37
13	11	43	—	—	12	2	0	49	10	41	—	—	12	13	1	33
14	12	15	0	7	12	46	1	50	11	28	0	42	13	17	2	26
15	12	49	1	3	13	36	2	52	12	21	1	43	14	24	3	14
16	13	26	2	2	14	33	3	55	13	20	2	42	15	32	3	58
17	14	9	3	3	15	38	4	56	14	24	3	39	16	39	4	39
18	14	57	4	6	16	47	5	53	15	33	4	32	17	45	5	18
19	15	53	5	11	17	58	6	45	16	42	5	21	18	51	5	56
20	16	56	6	15	19	8	7	33	17	52	6	5	19	55	6	34
21	18	4	7	16	20	17	8	16	19	0	6	46	20	59	7	15
22	19	14	8	11	21	23	8	56	20	6	7	25	22	1	7	57
23	20	24	9	1	22	28	9	34	21	12	8	4	22	59	8	42
24	21	32	9	44	23	30	10	12	22	15	8	43	23	53	9	31
25	22	37	10	24	—	—	10	50	23	16	9	24	—	—	10	22
26	23	40	11	2	0	30	11	30	—	—	10	7	0	43	11	14
27	—	—	11	38	1	28	12	13	0	15	10	52	1	27	12	8
28	0*	41	12	15	2	24	12	59	1	10	11	41	2	7	13	2
29	1	40	12	53					2	1	12	31	2	44	13	55
30	2	38	13	33					2	48	13	23	3	17	14	49
31	3	34	14	16					3	30	14	17				

तारीख	मई 2019				जून 2019				जुलाई 2019				अगस्त 2019			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	3	49	15	42	3	57	17	16	3	53	18	5	5	33	19	43
2	4	21	16	37	4	34	18	17	4	44	19	8	6	43	20	31
3	4	52	17	32	5	16	19	19	5	42	20	9	7	53	21	14
4	5	25	18	30	6	3	20	22	6	47	21	4	9	2	21	54
5	6	00	19	29	6	57	21	23	7	54	21	54	10	9	22	32
6	6	38	20	30	7	57	22	20	9	3	22	38	11	14	23	8
7	7	22	21	31	9	1	23	12	10	10	23	18	12	17	23	46
8	8	11	22	32	10	7	23	58	11	16	23	56	13	19	—	—
9	9	6	23	30	11	14	—	—	12	19	—	—	14	19	0	25
10	10	6	—	—	12	19	0	39	13	22	0	32	15	18	1	7
11	11	10	0	24	13	23	1	17	14	24	1	8	16	14	1	53
12	12	15	1	13	14	26	1	54	15	25	1	45	17	6	2	42
13	13	21	1	57	15	28	2	30	16	25	2	25	17	54	3	33
14	14	26	2	38	16	30	3	6	17	23	3	9	18	36	4	27
15	15	30	3	16	17	32	3	45	18	18	3	55	19	15	5	21
16	16	35	3	53	18	33	4	27	19	10	4	46	19	50	6	16
17	17	38	4	30	19	31	5	12	19	56	5	38	20	23	7	9
18	18	42	5	8	20	25	6	1	20	38	6	33	20	53	8	2
19	19	44	5	49	21	15	6	53	21	15	7	28	21	23	8	55
20	20	45	6	33	22	0	7	47	21	50	8	22	21	53	9	48
21	21	42	7	20	22	40	8	41	22	21	9	15	22	25	10	41
22	22	35	8	10	23	16	9	36	22	52	10	8	22	59	11	36
23	23	22	9	3	23	49	10	30	23	22	11	1	23	37	12	33
24	—	—	9	57	—	—	11	23	23	53	11	54	—	—	13	32
25	0	4	10	52	0	21	12	16	—	—	12	49	0	20	14	33
26	0	43	11	46	0	51	13	9	0	25	13	45	1	9	15	33
27	1	17	12	39	1	22	14	4	1	2	14	45	2	6	16	32
28	1	50	13	32	1	54	15	1	1	43	15	46	3	10	17	28
29	2	21	14	26	2	29	16	0	2	30	16	49	4	18	18	19
30	2	51	15	21	3	8	17	2	3	24	17	51	5	40	19	5
31	3	23	16	17					4	26	18	50	6	40	19	47

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019–20 ई.

तारीख	सितम्बर 2019				अक्तूबर 2019				नवम्बर 2019				दिसम्बर 2019				जनवरी 2020				फरवरी 2020				मार्च 2020				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	7	50	20	26	8	50	20	15	10	46	21	12	11	9	21	45	11	31	23	12	11	29	—	—	10	33	—	—	1
2	8	58	21	5	9	56	20	58	11	41	22	6	11	51	22	41	12	1	—	—	12	1	0	35	11	10	0	17	2
3	10	4	21	43	11	0	21	43	12	31	23	1	12	27	23	35	12	30	0	5	12	36	1	30	11	53	1	14	3
4	11	8	22	23	12	1	22	32	13	15	23	57	13	0	—	—	12	59	0	57	13	16	2	28	12	41	2	13	4
5	12	11	23	5	12	58	23	23	13	53	—	—	13	31	0	29	13	31	1	51	14	2	3	27	13	37	3	11	5
6	13	12	23	50	13	49	—	—	14	28	0	51	14	1	1	22	14	4	2	46	14	56	4	27	14	39	4	7	6
7	14	10	—	—	14	35	0	16	15	0	1	45	14	30	2	15	14	43	3	44	15	56	5	24	15	46	5	00	7
8	15	3	0	38	15	16	1	10	15	30	2	38	15	1	3	8	15	26	4	44	17	2	6	23	16	55	5	48	8
9	15	52	1	29	15	53	2	5	16	0	3	31	15	33	4	3	16	17	5	45	18	11	7	14	18	6	6	32	9
10	16	36	2	22	16	27	2	59	16	30	4	25	16	9	5	1	17	14	6	46	19	22	8	1	19	16	7	13	10
11	17	16	3	16	16	58	3	52	17	1	5	19	16	50	6	0	18	17	7	44	20	31	8	43	20	26	7	52	11
12	17	52	4	11	17	28	4	45	17	35	6	15	17	37	7	1	19	24	8	37	21	39	9	22	21	35	8	31	12
13	18	25	5	5	17	58	5	38	18	13	7	12	18	30	8	1	20	32	9	25	22	45	9	59	22	42	9	10	13
14	18	56	5	58	18	29	6	32	18	56	8	12	19	29	9	0	21	40	10	8	23	50	10	36	23	48	9	51	14
15	19	26	6	50	19	1	7	26	19	44	9	12	20	32	9	55	22	46	10	48	—	—	11	14	—	—	10	35	15
16	19	56	7	43	19	36	8	22	20	38	10	10	21	38	10	45	23	51	11	24	0	55	11	55	0	52	11	23	16
17	20	27	8	37	20	14	9	19	21	37	11	6	22	44	11	29	—	—	12	0	1	58	12	39	1	52	12	14	17
18	20	59	9	31	20	58	10	18	22	40	11	58	23	49	12	9	0	54	12	36	2	59	13	27	2	47	13	9	18
19	21	35	10	27	21	48	11	17	23	45	12	45	—	—	12	47	1	58	13	15	3	56	14	19	3	36	14	4	19
20	22	15	11	24	22	43	12	14	—	—	13	28	0	53	13	22	3	1	13	56	4	49	15	13	4	20	15	1	20
21	23	1	12	23	23	44	13	9	0	51	14	8	1	57	13	58	4	4	14	41	5	37	16	9	4	58	15	56	21
22	23	53	13	22	—	—	14	0	1	56	14	45	3	1	14	35	5	4	15	31	6	19	17	6	5	33	16	51	22
23	—	—	14	20	0	48	14	47	3	2	15	22	4	5	15	15	6	1	16	24	6	57	18	1	6	4	17	44	23
24	0	52	15	15	1	55	15	30	4	7	15	59	5	10	15	59	6	53	17	20	7	31	18	56	6	34	18	37	24
25	1	57	16	6	3	3	16	10	5	14	16	38	6	13	16	46	7	39	18	17	8	2	19	49	7	3	19	29	25
26	3	5	16	53	4	11	16	48	6	20	17	21	7	14	17	39	8	21	19	13	8	32	20	42	7	32	20	22	26
27	4	15	17	37	5	19	17	26	7	26	18	7	8	10	18	34	8	57	20	9	9	0	21	34	8	2	21	16	27
28	5	25	18	17	6	27	18	6	8	29	18	58	9	0	19	31	9	30	21	3	9	30	22	27	8	34	22	11	28
29	6	34	18	56	7	34	18	47	9	28	19	52	9	45	20	28	10	1	21	56	10	0	23	21	9	9	23	7	29
30	7	43	19	35	8	41	19	32	10	22	20	48	10	24	21	24	10	30	22	48					9	49	—	—	30
31					9	45	20	20					10	59	22	19	10	59	23	41					10	34	0	4	31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2019 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु			
										क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर	
2019 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
जनवरी 1	0	4	30	10	19	58	8	26	29	-0	18	-0	18	-23	10	0	7	-21	34	0	38
4	0	4	29	10	20	2	8	26	35	-0	34	-0	14	-23	40	-0	15	-21	39	0	38
7	0	4	29	10	20	6	8	26	41	1	26	-0	10	-24	0	-0	35	-21	44	0	38
10	0	4	29	10	20	10	8	26	47	2	17	-0	6	-24	8	-0	55	-21	49	0	37
13	0	4	30	10	20	15	8	26	53	3	9	-0	3	-24	5	-1	12	-21	53	0	37
16	0	4	31	10	20	19	8	26	59	4	0	0	1	-23	50	-1	27	-21	57	0	37
19	0	4	33	10	20	24	8	27	5	4	51	0	4	-23	23	-1	41	-22	1	0	37
22	0	4	35	10	20	30	8	27	11	5	41	0	8	-22	42	-1	51	-22	5	0	37
25	0	4	37	10	20	35	8	27	17	6	31	0	11	-21	49	-1	59	-22	8	0	37
28	0	4	40	10	20	41	8	27	23	7	20	0	14	-20	42	-2	4	-22	11	0	37
31	0	4	44	10	20	46	8	27	29	8	9	0	17	-19	21	-2	5	-22	14	0	37
फरवरी 1	0	4	45	10	20	48	8	27	31	8	25	0	17	-18	51	-2	5	-22	15	0	37
4	0	4	49	10	20	54	8	27	37	9	14	0	20	-17	13	-2	0	-22	18	0	37
7	0	4	54	10	21	1	8	27	42	10	1	0	23	-15	21	-1	52	-22	21	0	37
10	0	4	59	10	21	7	8	27	48	10	48	0	25	-13	17	-1	38	-22	23	0	37
13	0	5	4	10	21	13	8	27	53	11	33	0	28	-11	2	-1	18	-22	25	0	37
16	0	5	10	10	21	20	8	27	58	12	18	0	30	-8	38	-0	52	-22	27	0	37
19	0	5	16	10	21	26	8	28	4	13	3	0	32	-6	11	-0	20	-22	29	0	37
22	0	5	22	10	21	33	8	28	8	13	46	0	35	-3	45	0	17	-22	31	0	37
25	0	5	29	10	21	40	8	28	13	14	28	0	37	-1	30	0	59	-22	32	0	37
28	0	5	36	10	21	46	8	28	18	15	9	0	39	0	26	1	43	-22	33	0	37
मार्च 1	0	5	39	10	21	49	8	28	19	15	22	0	39	0	58	1	58	-22	34	0	37
4	0	5	47	10	21	56	8	28	24	16	2	0	41	2	12	2	39	-22	35	0	37
7	0	5	54	10	22	2	8	28	28	16	40	0	43	2	45	3	12	-22	36	0	38
10	0	6	3	10	22	9	8	28	32	17	18	0	45	2	36	3	33	-22	37	0	38
13	0	6	11	10	22	16	8	28	36	17	53	0	46	1	46	3	37	-22	38	0	38
16	0	6	20	10	22	23	8	28	39	18	28	0	48	0	28	3	24	-22	38	0	38
19	0	6	29	10	22	30	8	28	42	19	1	0	49	-1	5	2	54	-22	39	0	38
22	0	6	38	10	22	36	8	28	45	19	33	0	51	-2	36	2	14	-22	40	0	38
25	0	6	47	10	22	43	8	28	48	20	4	0	52	-3	53	1	28	-22	40	0	38
28	0	6	57	10	22	49	8	28	51	20	33	0	53	-4	49	0	43	-22	40	0	38
31	0	7	7	10	22	56	8	28	53	21	0	0	55	-5	23	-0	1	-22	41	0	38

तारीख सन्	शुक्र				शनि				यूरेनस				नेप्च्यून				प्लूटो			
	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर	
2019 ई.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
जनवरी 1	-15	19	3	26	-22	28	0	29	10	29	-0	32	-7	9	-0	58	-21	58	-0	6
4	-16	0	3	27	-22	26	0	29	10	29	-0	32	-7	8	-0	58	-21	57	-0	6
7	-16	41	3	26	-22	25	0	29	10	29	-0	32	-7	6	-0	58	-21	56	-0	7
10	-17	21	3	24	-22	23	0	28	10	29	-0	32	-7	5	-0	58	-21	56	-0	7
13	-17	59	3	20	-22	21	0	28	10	29	-0	32	-7	3	-0	58	-21	55	-0	7
16	-18	34	3	16	-22	19	0	28	10	30	-0	31	-7	1	-0	58	-21	54	-0	8
19	-19	7	3	10	-22	17	0	28	10	31	-0	31	-6	59	-0	58	-21	54	-0	8
22	-19	37	3	3	-22	16	0	28	10	31	-0	31	-6	57	-0	58	-21	53	-0	8
25	-20	3	2	55	-22	14	0	27	10	32	-0	31	-6	55	-0	58	-21	52	-0	8
28	-20	26	2	47	-22	12	0	27	10	34	-0	31	-6	52	-0	58	-21	52	-0	9
31	-20	44	2	38	-22	10	0	27	10	35	-0	31	-6	50	-0	58	-21	51	-0	9
फरवरी 1	-20	49	2	35	-22	9	0	27	10	35	-0	31	-6	49	-0	58	-21	51	-0	9
4	-21	1	2	25	-22	7	0	27	10	37	-0	31	-6	47	-0	58	-21	50	-0	9
7	-21	9	2	14	-22	5	0	27	10	39	-0	31	-6	45	-0	58	-21	49	-0	10
10	-21	12	2	4	-22	3	0	27	10	40	-0	31	-6	42	-0	58	-21	49	-0	10
13	-21	10	1	52	-22	1	0	27	10	42	-0	31	-6	40	-0	58	-21	48	-0	10
16	-21	2	1	41	-21	59	0	26	10	45	-0	30	-6	37	-0	58	-21	48	-0	10
19	-20	50	1	29	-21	57	0	26	10	47	-0	30	-6	35	-0	58	-21	47	-0	11
22	-20	32	1	18	-21	55	0	26	10	49	-0	30	-6	32	-0	58	-21	47	-0	11
25	-20	9	1	6	-21	53	0	26	10	52	-0	30	-6	29	-0	58	-21	46	-0	11
28	-19	41	0	54	-21	51	0	26	10	54	-0	30	-6	27	-0	58	-21	46	-0	12
मार्च 1	-19	30	0	50	-21	50	0	26	10	55	-0	30	-6	26	-0	58	-21	46	-0	12
4	-18	55	0	39	-21	48	0	26	10	58	-0	30	-6	23	-0	58	-21	45	-0	12
7	-18	16	0	27	-21	46	0	26	11	1	-0	30	-6	21	-0	58	-21	45	-0	12
10	-17	31	0	16	-21	45	0	25	11	4	-0	30	-6	18	-0	58	-21	44	-0	12
13	-16	42	0	5	-21	43	0	25	11	7	-0	30	-5	15	-0	58	-21	44	-0	13
16	-15	49	-0	6	-21	41	0	25	11	10	-0	30	-6	13	-0	58	-21	44	-0	13
19	-14	52	-0	16	-21	40	0	25	11	13	-0	30	-6	10	-0	58	-21	43	-0	13
22	-13	51	-0	26	-21	38	0	25	11	16	-0	30	-6	8	-0	58	-21	43	-0	14
25	-12	47	-0	35	-21	37	0	25	11	20	-0	30	-6	5	-0	58	-21	43	-0	14
28	-11	39	-0	44	-21	35	0	25	11	23	-0	30	-6	3	-0	58	-21	43	-0	14
31	-10	28	-0	52	-21	34	0	25	11	26	-0	30	-6	0	-0	58	-21	43	-0	15

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2019 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2019 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	0	7	10	10	22	58	8	28	54	21 9	0 55	-5 30	-0 14	-22 41	0 38	-10 4	-0 54	-21 34	0 25	11 28	-0 29	-5 59	-0 58	-21 43	-0 15
4	0	7	20	10	23	4	8	28	56	21 34	0 56	-5 34	-0 51	-22 41	0 38	-8 50	-1 2	-21 33	0 25	11 31	-0 29	-5 57	-0 58	-21 43	-0 15
7	0	7	30	10	23	11	8	28	57	21 58	0 57	-5 19	-1 23	-22 41	0 38	-7 33	-1 9	-21 32	0 24	11 35	-0 29	-5 55	-0 58	-21 43	-0 15
10	0	7	40	10	23	17	8	28	59	22 20	0 58	-4 45	-1 50	-22 41	0 38	-6 15	-1 15	-21 31	0 24	11 38	-0 29	-5 52	-0 58	-21 43	-0 16
13	0	7	50	10	23	22	8	29	00	22 41	0 59	-3 55	-2 11	-22 41	0 38	-4 55	-1 20	-21 30	0 24	11 42	-0 29	-5 50	-0 58	-21 43	-0 16
16	0	8	0	10	23	28	8	29	1	23 0	1 0	-2 50	-2 27	-22 41	0 38	-3 33	-1 25	-21 30	0 24	11 45	-0 29	-5 48	-0 58	-21 43	-0 16
19	0	8	11	10	23	34	8	29	1	23 17	1 1	-1 32	-2 38	-22 41	0 38	-2 10	-1 29	-21 29	0 24	11 49	-0 29	-5 46	-0 59	-21 43	-0 16
22	0	8	21	10	23	39	8	29	2	23 33	1 2	-0 2	-2 43	-22 40	0 38	-0 47	-1 33	-21 29	0 24	11 52	-0 29	-5 44	-0 59	-21 44	-0 17
25	0	8	31	10	23	44	8	29	2	23 46	1 3	1 38	-2 43	-22 40	0 38	0 37	-1 36	-21 29	0 24	11 56	-0 29	-5 42	-0 59	-21 44	-0 17
28	0	8	42	10	23	49	8	29	2	23 58	1 4	3 29	-2 39	-22 40	0 38	2 1	-1 38	-21 29	0 24	11 59	-0 29	-5 40	-0 59	-21 44	-0 17
मई 1	0	8	52	10	23	54	8	29	1	24 9	1 4	5 28	-2 30	-22 39	0 38	3 25	-1 39	-21 29	0 23	12 3	-0 29	-5 38	-0 59	-21 45	-0 18
4	0	9	2	10	23	59	8	29	0	24 17	1 5	7 35	-2 16	-22 39	0 38	4 49	-1 40	-21 29	0 23	12 6	-0 29	-5 37	-0 59	-21 45	-0 18
7	0	9	12	10	24	3	8	29	0	24 24	1 6	9 48	-1 57	-22 38	0 38	6 12	-1 40	-21 30	0 23	12 10	-0 29	-5 35	-0 59	-21 45	-0 18
10	0	9	22	10	24	7	8	28	58	24 29	1 6	12 4	-1 34	-22 38	0 38	7 34	-1 39	-21 30	0 23	12 13	-0 29	-5 34	-0 59	-21 46	-0 19
13	0	9	32	10	24	11	8	28	57	24 32	1 7	14 23	-1 8	-22 37	0 37	8 54	-1 38	-21 31	0 23	12 17	-0 29	-5 32	-0 59	-21 46	-0 19
16	0	9	42	10	24	15	8	28	55	24 33	1 7	16 39	-0 38	-22 36	0 37	10 13	-1 36	-21 31	0 23	12 20	-0 29	-5 31	-0 59	-21 47	-0 19
19	0	9	52	10	24	18	8	28	53	24 33	1 8	18 49	-0 7	-22 35	0 37	11 30	-1 34	-21 32	0 23	12 23	-0 29	-5 30	-1 0	-21 48	-0 20
22	0	10	2	10	24	21	8	28	51	24 31	1 8	20 48	0 25	-22 34	0 37	12 45	-1 31	-21 33	0 22	12 27	-0 29	-5 29	-1 0	-21 48	-0 20
25	0	10	11	10	24	24	8	28	49	24 27	1 9	22 30	0 55	-22 33	0 37	13 57	-1 27	-21 34	0 22	12 30	-0 29	-5 28	-1 0	-21 49	-0 20
28	0	10	20	10	24	26	8	28	46	24 22	1 9	23 51	1 21	-22 32	0 36	15 6	-1 23	-21 36	0 22	12 33	-0 29	-5 27	-1 0	-21 50	-0 20
31	0	10	29	10	24	28	8	28	43	24 15	1 9	24 47	1 42	-22 31	0 36	16 12	-1 18	-21 37	0 22	12 36	-0 29	-5 26	-1 0	-21 51	-0 21
जून 1	0	10	32	10	24	29	8	28	42	24 12	1 9	25 1	1 48	-22 31	0 36	16 33	-1 17	-21 38	0 22	12 37	-0 29	-5 26	-1 0	-21 51	-0 21
4	0	10	41	10	24	31	8	28	39	24 2	1 10	25 26	2 0	-22 29	0 36	17 35	-1 11	-21 39	0 22	12 40	-0 29	-5 25	-1 0	-21 52	-0 21
7	0	10	49	10	24	33	8	28	36	23 51	1 10	25 28	2 6	-22 28	0 35	18 32	-1 6	-21 41	0 22	12 43	-0 29	-5 25	-1 0	-21 52	-0 21
10	0	10	58	10	24	34	8	28	33	23 38	1 10	25 12	2 5	-22 27	0 35	19 25	-1 0	-21 42	0 21	12 45	-0 29	-5 24	-1 1	-21 53	-0 22
13	0	11	6	10	24	35	8	28	29	23 24	1 10	24 40	1 57	-22 25	0 35	20 13	-0 53	-21 44	0 21	12 48	-0 29	-5 24	-1 1	-21 54	-0 22
16	0	11	13	10	24	36	8	28	25	23 8	1 10	23 54	1 42	-22 24	0 34	20 56	-0 47	-21 46	0 21	12 50	-0 29	-5 24	-1 1	-21 55	-0 22
19	0	11	21	10	24	36	8	28	22	22 51	1 11	22 59	1 21	-22 22	0 34	21 35	-0 40	-21 47	0 21	12 53	-0 29	-5 24	-1 1	-21 56	-0 23
22	0	11	28	10	24	36	8	28	18	22 32	1 11	21 58	0 55	-22 21	0 33	22 8	-0 33	-21 49	0 21	12 55	-0 29	-5 24	-1 1	-21 57	-0 23
25	0	11	34	10	24	36	8	28	14	22 11	1 11	20 52	0 23	-22 19	0 33	22 35	-0 26	-21 51	0 20	12 57	-0 30	-5 24	-1 1	-21 58	-0 23
28	0	11	41	10	24	35	8	28	9	21 49	1 11	19 46	-0 14	-22 18	0 32	23 [illegible]	-0 [illegible]	-21 53	0 20	12 59	-0 30	-5 24	-1 1	-21 59	-0 24

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2019 ई.) (प्रात: 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेप्च्यून				प्लूटो			
										क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर	
2019 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
जुलाई 1	0	11	47	10	24	35	8	28	5	21	26	1	11	18	41	-0	55	-22	16	0	32	23	13	-0	11	-21	55	0	20	13	1	-0	30	-5	25	-1	1	-22	0	-0	24
4	0	11	53	10	24	34	8	28	1	21	1	1	11	17	41	-1	39	-22	15	0	31	23	22	-0	4	-21	57	0	20	13	3	-0	30	-5	25	-1	2	-22	1	-0	24
7	0	11	58	10	24	32	8	27	57	20	35	1	11	16	49	-2	25	-22	14	0	31	23	26	0	4	-21	59	0	19	13	5	-0	30	-5	26	-1	2	-22	2	-0	24
10	0	12	3	10	24	31	8	27	52	20	8	1	11	16	6	-3	10	-22	12	0	30	23	23	0	11	-22	1	0	19	13	6	-0	30	-5	27	-1	2	-22	3	-0	25
13	0	12	7	10	24	29	8	27	48	19	39	1	11	15	37	-3	51	-22	11	0	30	23	14	0	18	-22	3	0	19	13	8	-0	30	-5	27	-1	2	-22	4	-0	25
16	0	12	11	10	24	27	8	27	43	19	9	1	10	15	23	-4	26	-22	10	0	29	22	59	0	25	-22	5	0	19	13	9	-0	30	-5	28	-1	2	-22	5	-0	25
19	0	12	15	10	24	24	8	27	39	18	39	1	10	15	24	-4	49	-22	9	0	29	22	38	0	32	-22	7	0	18	13	10	-0	30	-5	29	-1	2	-22	6	-0	26
22	0	12	18	10	24	21	8	27	35	18	7	1	10	15	40	-4	58	-22	9	0	28	22	11	0	38	-22	8	0	18	13	11	-0	30	-5	31	-1	2	-22	7	-0	26
25	0	12	21	10	24	19	8	27	30	17	33	1	10	16	7	-4	52	-22	8	0	28	21	38	0	44	-22	10	0	18	13	12	-0	30	-5	32	-1	2	-22	8	-0	26
28	0	12	24	10	24	15	8	27	26	16	59	1	10	16	44	-4	31	-22	8	0	27	20	59	0	50	-22	12	0	17	13	13	-0	30	-5	33	-1	2	-22	9	-0	26
31	0	12	26	10	24	12	8	27	22	16	24	1	9	17	24	-3	58	-22	7	0	26	20	15	0	56	-22	14	0	17	13	14	-0	30	-5	34	-1	3	-22	10	-0	27
अगस्त 1	0	12	26	10	24	11	8	27	21	16	12	1	9	17	38	-3	44	-22	7	0	26	19	59	0	58	-22	14	0	17	13	14	-0	30	-5	35	-1	3	-22	10	-0	27
4	0	12	28	10	24	7	8	27	16	15	36	1	9	18	17	-3	0	-22	7	0	26	19	8	1	3	-22	16	0	17	13	14	-0	30	-5	36	-1	3	-22	11	-0	27
7	0	12	29	10	24	4	8	27	12	14	58	1	9	18	49	-2	13	-22	7	0	25	18	12	1	7	-22	17	0	16	13	15	-0	30	-5	38	-1	3	-22	12	-0	27
10	0	12	29	10	24	00	8	27	9	14	20	1	8	19	10	-1	24	-22	8	0	25	17	12	1	11	-22	19	0	16	13	15	-0	30	-5	40	-1	3	-22	13	-0	28
13	0	12	29	10	23	55	8	27	5	13	41	1	8	19	15	-0	37	-22	8	0	24	16	7	1	15	-22	20	0	16	13	15	-0	30	-5	41	-1	3	-22	13	-0	28
16	0	12	29	10	23	51	8	27	1	13	1	1	8	18	58	0	5	-22	9	0	23	14	58	1	18	-22	22	0	15	13	14	-0	30	-5	43	-1	3	-22	14	-0	28
19	0	12	28	10	23	47	8	26	58	12	21	1	7	18	18	0	41	-22	10	0	23	13	45	1	21	-22	23	0	15	13	14	-0	30	-5	45	-1	3	-22	15	-0	28
22	0	12	27	10	23	42	8	26	54	11	39	1	7	17	14	1	10	-22	11	0	22	12	29	1	23	-22	24	0	15	13	14	-0	31	-5	47	-1	3	-22	16	-0	29
25	0	12	25	10	23	38	8	26	51	10	57	1	6	15	46	1	30	-22	12	0	22	11	10	1	24	-22	25	0	15	13	13	-0	31	-5	49	-1	3	-22	17	-0	29
28	0	12	23	10	23	33	8	26	48	10	15	1	6	13	59	1	42	-22	14	0	21	9	48	1	25	-22	26	0	14	13	12	-0	31	-5	51	-1	3	-22	17	-0	29
31	0	12	21	10	23	28	8	26	45	9	32	1	5	11	56	1	46	-22	16	0	21	8	24	1	25	-22	27	0	14	13	11	-0	31	-5	52	-1	3	-22	18	-0	29
सितम्बर 1	0	12	20	10	23	26	8	26	44	9	17	1	5	11	13	1	46	-22	16	0	21	7	56	1	25	-22	27	0	14	13	11	-0	31	-5	53	-1	3	-22	18	-0	30
4	0	12	17	10	23	21	8	26	42	8	34	1	5	8	58	1	43	-22	18	0	20	6	29	1	25	-22	28	0	14	13	10	-0	31	-5	55	-1	3	-22	19	-0	30
7	0	12	13	10	23	16	8	26	40	7	49	1	4	6	39	1	34	-22	20	0	19	5	0	1	23	-22	29	0	13	13	9	-0	31	-5	57	-1	3	-22	19	-0	30
10	0	12	9	10	23	12	8	26	38	7	5	1	4	4	16	1	21	-22	22	0	19	3	30	1	22	-22	29	0	13	13	8	-0	31	-5	59	-1	3	-22	20	-0	30
13	0	12	5	10	23	7	8	26	36	6	20	1	3	1	54	1	5	-22	24	0	18	2	0	1	20	-22	30	0	13	13	6	-0	31	-6	1	-1	4	-22	20	-0	31
16	0	12	0	10	23	2	8	26	34	5	34	1	2	-0	26	0	47	-22	26	0	18	0	28	1	17	-22	30	0	12	13	5	-0	31	-6	3	-1	4	-22	21	-0	31
19	0	11	55	10	22	57	8	26	33	4	48	1	2	-2	44	0	27	-22	29	0	18	-1	4	1	13	-22	31	0	12	13	3	-0	31	-6	5	-1	4	-22	21	-0	31
22	0	11	50	10	22	52	8	26	32	4	2	1	1	-4	58	0	6	-22	31	0	17	-2	35	1	10	-22	31	0	12	13	1	-0	31	-6	7	-1	4	-22	22	-0	31
25	0	11	45	10	22	47	8	26	31	3	16	1	0	-7	8	-0	15	-22	34	0	17	-4	7	1	5	-22	31	0	11	12	59	-0	31	-6	9	-1	4	-22	22	-0	31
28	0	11	39	10	22	42	8	26	30	2	29	1	0	-9	13	-0	37	-22	36	0	16	-5	38	1	0	-22	31	0	11	12	57	-0	31	-6	10	-1	4	-22	23	-0	32

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2019 ई.) (प्रात: 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2019 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तूबर 1	0	11	33	10	22	38	8	26	30	1 43	0 59	-11 12	-1 0	-22 39	0 16
4	0	11	26	10	22	33	8	26	30	0 56	0 58	-13 4	-1 21	-22 42	0 15
7	0	11	20	10	22	29	8	26	30	0 9	0 57	-14 50	-1 43	-22 44	0 15
10	0	11	13	10	22	25	8	26	31	-0 38	0 57	-16 27	-2 2	-22 47	0 14
13	0	11	6	10	22	21	8	26	31	-1 24	0 56	-17 56	-2 21	-22 49	0 14
16	0	10	59	10	22	17	8	26	32	-2 11	0 55	-19 16	-2 37	-22 52	0 14
19	0	10	52	10	22	13	8	26	34	-2 58	0 54	-20 24	-2 50	-22 55	0 13
22	0	10	44	10	22	10	8	26	35	-3 44	0 53	-21 20	-3 0	-22 57	0 13
25	0	10	37	10	22	6	8	26	37	-4 31	0 52	-22 0	-3 4	-22 59	0 12
28	0	10	30	10	22	3	8	26	39	-5 17	0 51	-22 22	-3 1	-23 2	0 12
31	0	10	22	10	22	0	8	26	41	-6 3	0 50	-22 22	-2 49	-23 4	0 12
नवम्बर 1	0	10	20	10	22	0	8	26	42	-6 18	0 50	-22 16	-2 42	-23 5	0 12
4	0	10	12	10	21	57	8	26	45	-7 3	0 49	-21 36	-2 13	-23 7	0 11
7	0	10	5	10	21	55	8	26	48	-7 48	0 48	-20 21	-1 29	-23 8	0 11
10	0	9	58	10	21	53	8	26	51	-8 33	0 46	-18 33	-0 32	-23 10	0 11
13	0	9	51	10	21	51	8	26	54	-9 17	0 45	-16 29	0 29	-23 12	0 10
16	0	9	44	10	21	50	8	26	58	-10 1	0 44	-14 39	1 24	-23 13	0 10
19	0	9	37	10	21	49	8	27	2	-10 44	0 43	-13 28	2 2	-23 15	0 10
22	0	9	31	10	21	48	8	27	6	-11 26	0 42	-13 5	2 23	-23 16	0 9
25	0	9	24	10	21	48	8	27	10	-12 8	0 40	-13 23	2 29	-23 17	0 9
28	0	9	18	10	21	48	8	27	14	-12 49	0 39	-14 11	2 24	-23 17	0 9
दिसम्बर 1	0	9	12	10	21	48	8	27	19	-13 29	0 38	-15 18	2 12	-23 18	0 8
4	0	9	7	10	21	49	8	27	24	-14 8	0 36	-16 33	1 54	-23 18	0 8
7	0	9	2	10	21	49	8	27	29	-14 47	0 35	-17 52	1 34	-23 18	0 8
10	0	8	57	10	21	50	8	27	34	-15 24	0 34	-19 8	1 13	-23 18	0 7
13	0	8	52	10	21	52	8	27	39	-16 1	0 32	-20 21	0 50	-23 18	0 7
16	0	8	48	10	21	54	8	27	45	-16 37	0 31	-21 27	0 28	-23 17	0 7
19	0	8	45	10	21	56	8	27	50	-17 11	0 29	-22 24	0 6	-23 17	0 7
22	0	8	41	10	21	58	8	27	56	-17 44	0 27	-23 13	-0 15	-23 16	0 6
25	0	8	39	10	22	1	8	28	2	-18 17	0 26	-23 51	-0 35	-23 14	0 6
28	0	8	36	10	22	4	8	28	7	-18 48	0 24	-24 19	-0 54	-23 13	0 6
31	0	8	34	10	22	7	8	28	13	-19 17	0 22	-24 35	-1 11	-23 11	0 5

तारीख सन्	शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2019 ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तूबर 1	-7 7	0 55	-22 31	0 11	12 55	-0 31	-6 12	-1 4	-22 23	-0 32
4	-8 36	0 49	-22 31	0 11	12 53	-0 31	-6 14	-1 4	-22 23	-0 32
7	-10 3	0 43	-22 31	0 10	12 51	-0 31	-6 16	-1 3	-22 23	-0 32
10	-11 27	0 37	-22 30	0 10	12 49	-0 31	-6 17	-1 3	-22 23	-0 33
13	-12 50	0 30	-22 30	0 10	12 46	-0 31	-6 19	-1 3	-22 23	-0 33
16	-14 9	0 23	-22 29	0 9	12 44	-0 31	-6 20	-1 3	-22 24	-0 33
19	-15 26	0 15	-22 29	0 9	12 42	-0 31	-6 22	-1 3	-22 24	-0 33
22	-16 39	0 8	-22 28	0 9	12 39	-0 31	-6 23	-1 3	-22 24	-0 34
25	-17 48	0 0	-22 27	0 9	12 37	-0 31	-6 24	-1 3	-22 24	-0 34
28	-18 53	-0 8	-22 26	0 8	12 34	-0 31	-6 25	-1 3	-22 23	-0 34
31	-19 54	-0 15	-22 25	0 8	12 32	-0 31	-6 26	-1 3	-22 23	-0 34
नवम्बर 1	-20 13	-0 18	-22 25	0 8	12 31	-0 31	-6 27	-1 3	-22 23	-0 34
4	-21 7	-0 26	-22 24	0 8	12 29	-0 31	-6 28	-1 3	-22 23	-0 35
7	-21 56	-0 34	-22 22	0 7	12 26	-0 31	-6 28	-1 3	-22 23	-0 35
10	-22 39	-0 41	-22 21	0 7	12 24	-0 31	-6 29	-1 3	-22 23	-0 35
13	-23 16	-0 49	-22 19	0 7	12 22	-0 31	-6 30	-1 3	-22 22	-0 35
16	-23 47	-0 56	-22 18	0 7	12 19	-0 31	-6 30	-1 3	-22 22	-0 35
19	-24 12	-1 3	-22 16	0 6	12 17	-0 31	-6 30	-1 3	-22 22	-0 36
22	-24 30	-1 10	-22 14	0 6	12 15	-0 31	-6 31	-1 3	-22 21	-0 36
25	-24 42	-1 16	-22 12	0 6	12 13	-0 31	-6 31	-1 3	-22 21	-0 36
28	-24 47	-1 22	-22 10	0 6	12 11	-0 31	-6 31	-1 2	-22 20	-0 36
दिसम्बर 1	-24 45	-1 28	-22 8	0 5	12 9	-0 30	-6 30	-1 2	-22 20	-0 37
4	-24 37	-1 33	-22 6	0 5	12 7	-0 30	-6 30	-1 2	-22 19	-0 37
7	-24 21	-1 37	-22 4	0 5	12 5	-0 30	-6 30	-1 2	-22 19	-0 37
10	-24 0	-1 41	-22 1	0 5	12 4	-0 30	-6 29	-1 2	-22 18	-0 37
13	-23 31	-1 45	-21 59	0 5	12 2	-0 30	-6 29	-1 2	-22 17	-0 38
16	-22 57	-1 48	-21 56	0 4	12 1	-0 30	-6 28	-1 2	-22 17	-0 38
19	-22 16	-1 50	-21 54	0 4	12 0	-0 30	-6 27	-1 2	-22 16	-0 38
22	-21 29	-1 51	-21 51	0 4	11 59	-0 30	-6 26	-1 2	-22 16	-0 38
25	-20 37	-1 52	-21 48	0 4	11 58	-0 30	-6 25	-1 2	-22 15	-0 39
28	-19 40	-1 52	-21 45	0 3	11 57	-0 30	-6 24	-1 2	-22 14	-0 39
31	-18 38	-1 51	-21 42	0 3	11 57	-0 30	-6 22	-1 2	-22 13	-0 39

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2020 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2020 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी 1	0	8	34	10	22	8	8	28	15	-19 27	0 22	-24 38	-1 16	-23 11	0 5	-18 16	-1 50	-21 41	0 3	11 57	-0 30	-6 22	-1 2	-22 13	-0 39
4	0	8	32	10	22	12	8	28	21	-19 55	0 20	-24 38	-1 31	-23 9	0 5	-17 8	-1 48	-21 38	0 3	11 56	-0 30	-6 20	-1 2	-22 12	-0 39
7	0	8	32	10	22	15	8	28	27	-20 21	0 18	-24 26	-1 44	-23 7	0 5	-15 55	-1 46	-21 35	0 3	11 56	-0 29	-6 19	-1 1	-22 12	-0 40
10	0	8	31	10	22	20	8	28	33	-20 46	0 16	-24 0	-1 54	-23 4	0 4	-14 39	-1 42	-21 32	0 2	11 56	-0 29	-6 17	-1 1	-22 11	-0 40
13	0	8	31	10	22	24	8	28	39	-21 9	0 14	-23 21	-2 1	-23 2	0 4	-13 20	-1 38	-21 28	0 2	11 56	-0 29	-6 15	-1 1	-22 10	-0 40
16	0	8	32	10	22	29	8	28	45	-21 31	0 12	-22 28	-2 5	-22 59	0 4	-11 57	-1 33	-21 25	0 2	11 56	-0 29	-6 14	-1 1	-22 10	-0 40
19	0	8	33	10	22	33	8	28	51	-21 52	0 10	-21 21	-2 6	-22 56	0 4	-10 32	-1 27	-21 22	0 2	11 57	-0 29	-6 12	-1 1	-22 9	-0 41
22	0	8	34	10	22	38	8	28	57	-22 10	0 8	-20 0	-2 2	-22 53	0 3	-9 5	-1 20	-21 18	0 2	11 57	-0 29	-6 10	-1 1	-22 8	-0 41
25	0	8	36	10	22	44	8	29	3	-22 27	0 6	-18 26	-1 54	-22 50	0 3	-7 35	-1 13	-21 15	0 1	11 58	-0 29	-6 8	-1 1	-22 7	-0 41
28	0	8	38	10	22	49	8	29	9	-22 43	0 4	-16 39	-1 40	-22 46	0 3	-6 4	-1 5	-21 11	0 1	11 59	-0 29	-6 5	-1 1	-22 7	-0 42
31	0	8	41	10	22	55	8	29	15	-22 56	0 1	-14 41	-1 20	-22 43	0 3	-4 32	-0 56	-21 8	0 1	12 0	-0 29	-6 3	-1 1	-22 6	-0 42
फरवरी 1	0	8	42	10	22	57	8	29	17	-23 0	0 1	-13 59	-1 12	-22 42	0 2	-4 1	-0 53	-21 6	0 1	12 0	-0 29	-6 2	-1 1	-22 6	-0 42
4	0	8	46	10	23	3	8	29	23	-23 11	-0 2	-11 52	-0 43	-22 38	0 2	-2 27	-0 43	-21 3	0 1	12 2	-0 29	-6 0	-1 1	-22 5	-0 42
7	0	8	50	10	23	9	8	29	28	-23 21	-0 4	-9 43	-0 7	-22 34	0 2	-0 53	-0 32	-20 59	0 0	12 3	-0 28	-5 58	-1 1	-22 4	-0 42
10	0	8	54	10	23	15	8	29	34	-23 28	-0 7	-7 42	0 35	-22 30	0 2	0 41	-0 21	-20 56	0 0	12 5	-0 28	-5 55	-1 1	-22 4	-0 43
13	0	8	59	10	23	21	8	29	39	-23 34	-0 9	-5 59	1 22	-22 26	0 1	2 16	-0 9	-20 52	0 0	12 6	-0 28	-5 53	-1 1	-22 3	-0 43
16	0	9	4	10	23	28	8	29	45	-23 38	-0 12	-4 45	2 10	-22 22	0 1	3 49	0 3	-20 49	-0 0	12 8	-0 28	-5 50	-1 1	-22 2	-0 43
19	0	9	10	10	23	34	8	29	50	-23 40	-0 14	-4 10	2 54	-22 17	0 1	5 22	0 16	-20 45	-0 0	12 10	-0 28	-5 48	-1 1	-22 2	-0 44
22	0	9	16	10	23	41	8	29	55	-23 40	-0 17	-4 18	3 27	-22 13	0 0	6 54	0 29	-20 42	-0 1	12 12	-0 28	-5 45	-1 1	-22 1	-0 44
25	0	9	22	10	23	47	9	0	0	-23 38	-0 20	-5 6	3 42	-22 9	0 0	8 25	0 43	-20 38	-0 1	12 15	-0 28	-5 42	-1 1	-22 1	-0 44
28	0	9	29	10	23	54	9	0	5	-23 35	-0 23	-6 21	3 38	-22 4	-0 0	9 54	0 57	-20 35	-0 1	12 17	-0 28	-5 40	-1 1	-22 0	-0 45
मार्च 1	0	9	33	10	23	59	9	0	8	-23 31	-0 25	-7 17	3 25	-22 1	-0 0	10 52	1 7	-20 33	-0 1	12 19	-0 28	-5 38	-1 1	-22 0	-0 45
4	0	9	41	10	24	5	9	0	12	-23 24	-0 28	-8 39	2 54	-21 57	-0 1	12 18	1 21	-20 30	-0 1	12 21	-0 28	-5 35	-1 1	-21 59	-0 45
7	0	9	48	10	24	12	9	0	16	-23 16	-0 31	-9 49	2 14	-21 52	-0 1	13 41	1 36	-20 26	-0 2	12 24	-0 28	-5 33	-1 1	-21 59	-0 45
10	0	9	56	10	24	19	9	0	20	-23 5	-0 34	-10 40	1 32	-21 48	-0 1	15 1	1 51	-20 23	-0 2	12 26	-0 28	-5 30	-1 1	-21 59	-0 46
13	0	10	4	10	24	26	9	0	24	-22 53	-0 37	-11 11	0 50	-21 43	-0 2	16 19	2 6	-20 20	-0 2	12 29	-0 27	-5 27	-1 1	-21 58	-0 46
16	0	10	13	10	24	33	9	0	27	-22 39	-0 40	-11 22	0 10	-21 39	-0 2	17 33	2 20	-20 17	-0 2	12 32	-0 27	-5 25	-1 1	-21 58	-0 46
19	0	10	21	10	24	39	9	0	31	-22 23	-0 43	-11 15	-0 25	-21 35	-0 2	18 44	2 35	-20 15	-0 3	12 35	-0 27	-5 22	-1 1	-21 58	-0 47
22	0	10	30	10	24	46	9	0	34	-22 6	-0 47	-10 52	-0 57	-21 31	-0 3	19 51	2 50	-20 12	-0 3	12 38	-0 27	-5 20	-1 1	-21 57	-0 47
25	0	10	40	10	24	53	9	0	37	-21 46	-0 50	-10 12	-1 23	-21 27	-0 3	20 54	3 4	-20 9	-0 3	12 41	-0 27	-5 17	-1 1	-21 57	-0 47
28	0	10	49	10	24	59	9	0	39	-21 26	-0 54	-9 19	-1 46	-21 23	-0 3	21 54	3 18	-20 7	-0 3	12 45	-0 27	-5 15	-1 1	-21 57	-0 48
31	0	10	58	10	25	6	9	0	42	-21 3	-0 57	-8 12	-2 4	-21 19	-0 4	22 49	3 31	-20 5	-0 4	12 48	-0 27	-5 12	-1 1	-21 57	-0 48

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2019 से 25 मार्च, 2020 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2019-2020 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	17	56
5		पू.षा.	3	0	23
8		पू.षा.	4	6	51
11		उ.षा.	1	13	20
14	मकर	उ.षा.	2	19	51
18		उ.षा.	3	2	25
21		उ.षा.	4	9	01
24		श्रवण	1	15	41
27		श्रवण	2	22	.23
31		श्रवण	3	5	7
फरवरी 3		श्रवण	4	11	55
6		धनिष्ठा	1	18	47
10		धनिष्ठा	2	1	44
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	8	48
16		धनिष्ठा	4	15	59
19		शत.	1	23	18
23		शत.	2	6	43
26		शत.	3	14	14
मार्च 1		शत.	4	21	52
5		पू.भा.	1	5	36
8		पू.भा.	2	13	28
11		पू.भा.	3	21	29
15	मीन	पू.भा.	4	5	40
18		उ.भा.	1	14	00
21		उ.भा.	2	22	31
25		उ.भा.	3	7	10
28		उ.भा.	4	15	57
अप्रैल 1		रेवती	1	0	53
4		रेवती	2	9	57
7		रेवती	3	19	11
11		रेवती	4	4	34
14	मेष	अश्वि.	1	14	9

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 17		अश्वि.	2	23	54
21		अश्वि.	3	9	48
24		अश्वि.	4	19	52
28		भरणी	1	6	3
मई 1		भरणी	2	16	22
5		भरणी	3	2	48
8		भरणी	4	13	23
12		कृत्तिका	1	0	7
15	वृष	कृत्तिका	2	11	1
18		कृत्तिका	3	22	2
22		कृत्तिका	4	9	11
25		रोहिणी	1	20	26
29		रोहिणी	2	7	45
जून 1		रोहिणी	3	19	9
5		रोहिणी	4	6	38
8		मृग.	1	18	13
12		मृग.	2	5	53
15	मिथुन	मृग.	3	17	38
19		मृग.	4	5	27
22		आर्द्रा	1	17	18
26		आर्द्रा	2	5	11
29		आर्द्रा	3	17	3
जुलाई 3		आर्द्रा	4	4	56
6		पुन.	1	16	49
10		पुन.	2	4	43
13		पुन.	3	16	38
17	कर्क	पुन.	4	4	33
20		पुष्य	1	16	26
24		पुष्य	2	4	16
27		पुष्य	3	16	01
31		पुष्य	4	3	41
अगस्त 3		आश्ले.	1	15	17

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 7		आश्ले.	2	2	50
10		आश्ले.	3	14	18
14		आश्ले.	4	1	43
17	सिंह	मघा	1	13	2
21		मघा	2	0	14
24		मघा	3	11	17
27		मघा	4	22	13
31		पू.फा.	1	9	00
सितम्बर 3		पू.फा.	2	19	39
7		पू.फा.	3	6	11
10		पू.फा.	4	16	36
14		उ.फा.	1	2	54
17	कन्या	उ.फा.	2	13	2
20		उ.फा.	3	23	1
24		उ.फा.	4	8	49
27		हस्त	1	18	26
अक्तूबर 1		हस्त	2	3	54
4		हस्त	3	13	12
7		हस्त	4	22	23
11		चित्रा	1	7	25
14		चित्रा	2	16	18
18	तुला	चित्रा	3	1	2
21		चित्रा	4	9	36
24		स्वाती	1	17	59
28		स्वाती	2	2	12
31		स्वाती	3	10	17
नवम्बर 3		स्वाती	4	18	14
7		विशा.	1	2	3
10		विशा.	2	9	46
13		विशा.	3	17	22
17	वृश्चिक	विशा.	4	0	50
20		अनु.	1	8	11

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवम्बर 23		अनु.	2	15	23
26		अनु.	3	22	28
30		अनु.	4	5	28
दिसम्बर 3		ज्येष्ठा	1	12	23
6		ज्येष्ठा	2	19	14
10		ज्येष्ठा	3	2	2
13		ज्येष्ठा	4	8	46
16	धनु	मूल	1	15	27
19		मूल	2	22	4
23		मूल	3	4	37
26		मूल	4	11	7
29		पू.षा.	1	17	35
(सन् 2020 ई.)					
जनवरी 2		पू.षा.	2	0	4
5		पू.षा.	3	6	33
8		पू.षा.	4	13	3
11		उ.षा.	1	19	35
15	मकर	उ.षा.	2	2	7
18		उ.षा.	3	8	41
21		उ.षा.	4	15	15
24		श्रवण	1	21	51
28		श्रवण	2	4	30
31		श्रवण	3	11	14
फरवरी 3		श्रवण	4	18	2
7		धनिष्ठा	1	0	57
10		धनिष्ठा	2	7	57
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	15	3
16		धनिष्ठा	4	22	14
20		शत.	1	5	29
23		शत.	2	12	51
26		शत.	3	20	20

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2019 से 25 मार्च, 2020 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 1		शत.	4	3	56
4		पू.भा.	1	11	42
7		पू.भा.	2	19	37
11		पू.भा.	3	3	41
14	मीन	पू.भा.	4	11	53
17		उ.भा.	1	20	13
21		उ.भा.	2	4	41
24		उ.भा.	3	13	17

मंगल-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 2		उ.भा.	2	11	52
7		उ.भा.	3	10	39
12		उ.भा.	4	9	5
17		रेवती	1	7	19
22		रेवती	2	5	28
27		रेवती	3	3	35
फरवरी 1		रेवती	4	1	42
5	मेष	अश्वि.	1	23	49
10		अश्वि.	2	22	00
15		अश्वि.	3	20	19
20		अश्वि.	4	18	51
25		भरणी	1	17	37
मार्च 2		भरणी	2	16	36
7		भरणी	3	15	48
12		भरणी	4	15	15
17		कृत्तिका	1	15	00
22	वृष	कृत्तिका	2	15	6
27		कृत्तिका	3	15	33
अप्रैल 1		कृत्तिका	4	16	18
6		रोहिणी	1	17	21
11		रोहिणी	2	18	44
16		रोहिणी	3	20	29
21		रोहिणी	4	22	36

मंगल-चार (सन् 2019-2020 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 27		मृग.	1	1	03
मई 2		मृग.	2	3	50
7	मिथुन	मृग.	3	6	54
12		मृग.	4	10	17
17		आर्द्रा	1	14	00
22		आर्द्रा	2	18	2
27		आर्द्रा	3	22	21
जून 2		आर्द्रा	4	2	54
7		पुन.	1	7	40
12		पुन.	2	12	40
17		पुन.	3	17	55
22	कर्क	पुन.	4	23	23
28		पुष्य	1	4	58
जुलाई 3		पुष्य	2	10	41
8		पुष्य	3	16	30
13		पुष्य	4	22	27
19		आश्ले.	1	4	30
24		आश्ले.	2	10	35
29		आश्ले.	3	16	40
अगस्त 3		आश्ले.	4	22	43
9	सिंह	मघा	1	4	46
14		मघा	2	10	48
19		मघा	3	16	46
24		मघा	4	22	37
30		पू.फा.	1	4	20
सितम्बर 4		पू.फा.	2	9	53
9		पू.फा.	3	15	19
14		पू.फा.	4	20	36
20		उ.फा.	1	1	41
25	कन्या	उ.फा.	2	6	31
30		उ.फा.	3	11	7
अक्तूबर 5		उ.फा.	4	15	28

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 10		हस्त	1	19	36
15		हस्त	2	23	29
21		हस्त	3	3	4
26		हस्त	4	6	20
31		चित्रा	1	9	17
नवम्बर 5		चित्रा	2	11	58
10	तुला	चित्रा	3	14	22
15		चित्रा	4	16	27
20		स्वाती	1	18	12
25		स्वाती	2	19	36
30		स्वाती	3	20	42
दिसम्बर 5		स्वाती	4	21	29
10		विशा.	1	21	59
15		विशा.	2	22	9
20		विशा.	3	21	59
25	वृश्चिक	विशा.	4	21	28
30		अनु.	1	20	40
(सन् 2020 ई.)					
जनवरी 4		अनु.	2	19	35
9		अनु.	3	18	13
14		अनु.	4	16	32
19		ज्येष्ठा	1	14	32
24		ज्येष्ठा	2	12	15
29		ज्येष्ठा	3	9	41
फरवरी 3		ज्येष्ठा	4	6	54
8	धनु	मूल	1	3	52
13		मूल	2	0	34
17		मूल	3	20	59
22		मूल	4	17	11
27		पू.षा.	1	13	11
मार्च 3		पू.षा.	2	9	01
8		पू.षा.	3	4	41

मंगल-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 13		पू.षा.	4	0	10
17		उ.षा.	1	19	29
22	मकर	उ.षा.	2	14	40

बुध-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1	धनु	मूल	1	9	50
3		मूल	2	16	7
5		मूल	3	21	44
8		मूल	4	2	43
10		पू.षा.	1	7	9
12		पू.षा.	2	11	1
14		पू.षा.	3	14	21
16		पू.षा.	4	17	9
18		उ.षा.	1	19	24
20	मकर	उ.षा.	2	21	5
22		उ.षा.	3	22	11
24		उ.षा.	4	22	41
26		श्रवण	1	22	33
28		श्रवण	2	21	54
30		श्रवण	3	20	36
फरवरी 1		श्रवण	4	18	45
3		धनि.	1	16	21
5		धनि.	2	13	28
7	कुम्भ	धनि.	3	10	10
9		धनि.	4	6	34
11		शत.	1	2	46
12		शत.	2	23	0
14		शत.	3	19	33
16		शत.	4	16	48
18		पू.भा.	1	15	20
20		पू.भा.	2	16	8
22		पू.भा.	3	20	50

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2019 से 25 मार्च, 2020 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 25	मीन	पू.भा.	4	8	59
28		उ.भा.	1	16	8
मार्च 5	वक्री			23	49
11		पू.भा.	4	12	44
15	कुम्भ	पू.भा.	3	8	58
18		पू.भा.	2	22	19
23		पू.भा.	1	14	2
28	मार्गी			19	29
अप्रैल 3		पू.भा.	2	8	2
8		पू.भा.	3	11	42
12	मीन	पू.भा.	4	4	21
15		उ.भा.	1	7	28
18		उ.भा.	2	2	52
20		उ.भा.	3	17	1
23		उ.भा.	4	3	21
25		रेवती	1	10	32
27		रेवती	2	15	10
29		रेवती	3	17	37
मई 1		रेवती	4	18	9
3	मेष	अश्वि.	1	16	59
5		अश्वि.	2	14	16
7		अश्वि.	3	10	9
9		अश्वि.	4	4	45
10		भरणी	1	22	7
12		भरणी	2	14	27
14		भरणी	3	5	53
15		भरणी	4	20	24
17		कृत्तिका	1	10	16
18	वृष	कृत्तिका	2	23	33
20		कृत्तिका	3	12	25
22		कृत्तिका	4	1	00
23		रोहिणी	1	13	28

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मई 25		रोहिणी	2	2	1
26		रोहिणी	3	14	48
28		रोहिणी	4	4	1
29		मृग.	1	17	54
31		मृग.	2	8	34
जून 2	मिथुन	मृग.	3	0	19
3		मृग.	4	17	20
5		आर्द्रा	1	11	51
7		आर्द्रा	2	8	9
9		आर्द्रा	3	6	33
11		आर्द्रा	4	7	28
13		पुन.	1	11	26
15		पुन.	2	19	6
18		पुन.	3	7	28
21	कर्क	पुन.	4	2	30
24		पुष्य	1	7	31
28		पुष्य	2	7	17
जुलाई 5		पुष्य	3	6	5
8	वक्री			4	46
11		पुष्य	2	3	2
18		पुष्य	1	7	46
23		पुन.	4	6	31
30	मिथुन	पुन.	3	13	29
अगस्त 1	मार्गी			9	28
3	कर्क	पुन.	4	5	52
9		पुष्य	1	11	58
12		पुष्य	2	17	25
15		पुष्य	3	6	40
17		पुष्य	4	11	31
19		आश्ले.	1	11	37
21		आश्ले.	2	8	38
23		आश्ले.	3	3	36

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 24		आश्ले.	4	21	14
26	सिंह	मघा	1	14	6
28		मघा	2	6	34
29		मघा	3	22	54
31		मघा	4	15	23
सितम्बर 2		पू.फा.	1	8	9
4		पू.फा.	2	1	23
5		पू.फा.	3	19	13
7		पू.फा.	4	13	42
9		उ.फा.	1	8	56
11	कन्या	उ.फा.	2	4	58
13		उ.फा.	3	1	55
14		उ.फा.	4	23	46
16		हस्त	1	22	33
18		हस्त	2	22	19
20		हस्त	3	23	5
23		हस्त	4	0	53
25		चित्रा	1	3	45
27		चित्रा	2	7	45
29	तुला	चित्रा	3	12	56
अक्टूबर 1		चित्रा	4	19	23
4		स्वाती	1	3	12
6		स्वाती	2	12	38
8		स्वाती	3	23	52
11		स्वाती	4	13	24
14		विशा.	1	5	51
17		विशा.	2	2	36
20		विशा.	3	6	6
23	वृश्चिक	विशा.	4	23	22
30		अनु.	1	6	12
31	वक्री			21	10
नवम्बर 2		विशा.	4	9	43

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवम्बर 7	तुला	विशा.	3	15	33
10		विशा.	2	11	1
12		विशा.	1	23	39
15		स्वाती	4	21	14
21	मार्गी			0	42
26		विशा.	1	15	56
30		विशा.	2	2	4
दिसम्बर 2		विशा.	3	21	18
5	वृश्चिक	विशा.	4	10	31
7		अनु.	1	20	27
10		अनु.	2	4	27
12		अनु.	3	11	10
14		अनु.	4	17	3
16		ज्येष्ठा	1	22	20
19		ज्येष्ठा	2	3	12
21		ज्येष्ठा	3	7	41
23		ज्येष्ठा	4	11	52
25	धनु	मूल	1	15	45
27		मूल	2	19	21
29		मूल	3	22	39
(सन् 2020 ई.)					
जनवरी 1		मूल	4	1	39
3		पू.षा.	1	4	18
5		पू.षा.	2	6	35
7		पू.षा.	3	8	28
9		पू.षा.	4	9	57
11		उ.षा.	1	10	59
13	मकर	उ.षा.	2	11	34
15		उ.षा.	3	11	42
17		उ.षा.	4	11	24
19		श्रवण	1	10	41
21		श्रवण	2	9	36

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2019 से 25 मार्च, 2020 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 23		श्रवण	3	8	13
25		श्रवण	4	6	39
27		धनिष्ठा	1	5	4
29		धनिष्ठा	2	3	41
31	कुम्भ	धनिष्ठा	3	2	53
फरवरी 2		धनिष्ठा	4	3	10
4		शत.	1	5	25
6		शत.	2	11	21
9		शत.	3	0	11
12		शत.	4	6	46
17	वक्री			6	23
22		शत.	3	6	50
25		शत.	2	18	52
28		शत.	1	21	39
मार्च 3		धनि.	4	13	21
10	मार्गी			9	19
17		शत.	1	21	10
22		शत.	2	4	42
25		शत.	3	14	26

गुरु-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 12		ज्येष्ठा	2	16	37
30		ज्येष्ठा	3	9	55
फरवरी 20		ज्येष्ठा	4	15	40
मार्च 29	धनु	मूल	1	20	5
अप्रैल 10	वक्री			22	31
23	वृश्चिक	ज्येष्ठा	4	1	11
मई 31		ज्येष्ठा	3	11	5
जून 27		ज्येष्ठा	2	4	40
अगस्त 11	मार्गी			19	9
सितम्बर 25		ज्येष्ठा	3	18	3
अक्तूबर 18		ज्येष्ठा	4	3	19
नवम्बर 5	धनु	मूल	1	5	19

गुरु-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख 2019-20 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
नवम्बर 21		मूल	2	9	30
दिसम्बर 6		मूल	3	13	21
21		मूल	4	4	57
जनवरी 4		पू.षा.	1	16	22
19		पू.षा.	2	7	1
फरवरी 3		पू.षा.	3	8	54
19		पू.षा.	4	9	43
मार्च 8		उ.षा.	1	6	7

शुक्र-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 1	वृश्चिक	विशा.	4	20	41
5		अनु.	1	4	46
8		अनु.	2	11	4
11		अनु.	3	15	53
14		अनु.	4	19	26
17		ज्येष्ठा	1	21	55
20		ज्येष्ठा	2	23	27
24		ज्येष्ठा	3	0	9
27		ज्येष्ठा	4	0	8
29	धनु	मूल	1	23	28
फरवरी 1		मूल	2	22	14
4		मूल	3	20	31
7		मूल	4	18	23
10		पू.षा.	1	15	52
13		पू.षा.	2	13	1
16		पू.षा.	3	9	51
19		पू.षा.	4	6	25
22		उ.षा.	1	2	42
24	मकर	उ.षा.	2	22	45
27		उ.षा.	3	18	35
मार्च 2		उ.षा.	4	14	13
5		श्रवण	1	9	41
8		श्रवण	2	4	59

शुक्र-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
मार्च 11		श्रवण	3	0	10
13		श्रवण	4	19	13
16		धनिष्ठा	1	14	10
19		धनिष्ठा	2	9	00
22	कुम्भ	धनिष्ठा	3	3	45
24		धनिष्ठा	4	22	24
27		शत.	1	16	57
30		शत.	2	11	25
अप्रैल 2		शत.	3	5	49
5		शत.	4	0	9
7		पू.भा.	1	18	27
10		पू.भा.	2	12	41
13		पू.भा.	3	6	54
16	मीन	पू.भा.	4	1	4
18		उ.भा.	1	19	12
21		उ.भा.	2	13	18
24		उ.भा.	3	7	22
27		उ.भा.	4	1	23
29		रेवती	1	19	22
मई 2		रेवती	2	13	20
5		रेवती	3	7	16
8		रेवती	4	1	11
10	मेष	अश्वि.	1	19	5
13		अश्वि.	2	12	59
16		अश्वि.	3	6	51
19		अश्वि.	4	0	43
21		भरणी	1	18	33
24		भरणी	2	12	22
27		भरणी	3	6	8
29		भरणी	4	23	54
जून 1		कृत्तिका	1	17	37
4	वृष	कृत्तिका	2	11	20
7		कृत्तिका	3	5	1

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जून 9		कृत्तिका	4	22	41
12		रोहिणी	1	16	20
15		रोहिणी	2	9	57
18		रोहिणी	3	3	33
20		रोहिणी	4	21	7
23		मृग.	1	14	38
26		मृग.	2	8	7
29	मिथुन	मृग.	3	1	33
जुलाई 1		मृग.	4	18	58
4		आर्द्रा	1	12	19
7		आर्द्रा	2	5	39
9		आर्द्रा	3	22	57
12		आर्द्रा	4	16	12
15		पुन.	1	9	25
18		पुन.	2	2	36
20		पुन.	3	19	44
23	कर्क	पुन.	4	12	49
26		पुष्य	1	5	52
28		पुष्य	2	22	51
31		पुष्य	3	15	47
अगस्त 3		पुष्य	4	8	41
6		आश्ले.	1	1	33
8		आश्ले.	2	18	23
11		आश्ले.	3	11	10
14		आश्ले.	4	3	56
16	सिंह	मघा	1	20	39
19		मघा	2	13	21
22		मघा	3	6	0
24		मघा	4	22	36
27		पू.फा.	1	15	11
30		पू.फा.	2	7	44
सितम्बर 2		पू.फा.	3	0	15
4		पू.फा.	4	16	44

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण--चार (1 जनवरी, 2019 से 25 मार्च, 2020 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2019-2020 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितम्बर 7		उ.फा.	1	9	13
10	कन्या	उ.फा.	2	1	41
12		उ.फा.	3	18	8
15		उ.फा.	4	10	34
18		हस्त	1	2	59
20		हस्त	2	19	24
23		हस्त	3	11	47
26		हस्त	4	4	9
28		चित्रा	1	20	31
अक्टूबर 1		चित्रा	2	12	52
4	तुला	चित्रा	3	5	14
6		चित्रा	4	21	35
9		स्वाती	1	13	56
12		स्वाती	2	6	18
14		स्वाती	3	22	40
17		स्वाती	4	15	2
20		विशा.	1	7	25
22		विशा.	2	23	47
25		विशा.	3	16	9
28	वृश्चिक	विशा.	4	8	31
31		अनु.	1	0	53
नवम्बर 2		अनु.	2	17	16
5		अनु.	3	9	40
8		अनु.	4	2	4
10		ज्येष्ठा	1	18	30
13		ज्येष्ठा	2	10	57
16		ज्येष्ठा	3	3	24
18		ज्येष्ठा	4	19	53
21	धनु	मूल	1	12	22
24		मूल	2	4	52
26		मूल	3	21	23
29		मूल	4	13	55

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
दिसम्बर 2		पू.षा.	1	6	29
4		पू.षा.	2	23	5
7		पू.षा.	3	15	44
10		पू.षा.	4	8	25
13		उ.षा.	1	1	10
15	मकर	उ.षा.	2	17	58
18		उ.षा.	3	10	49
21		उ.षा.	4	3	43
23		श्रवण	1	20	42
26		श्रवण	2	13	44
29		श्रवण	3	6	51
(सन् 2020 ई.)					
जनवरी 1		श्रवण	4	0	3
3		धनिष्ठा	1	17	22
6		धनिष्ठा	2	10	48
9	कुम्भ	धनिष्ठा	3	4	22
11		धनिष्ठा	4	22	5
14		शत.	1	15	57
17		शत.	2	9	58
20		शत.	3	4	10
22		शत.	4	22	33
25		पू.भा.	1	17	7
28		पू.भा.	2	11	55
31		पू.भा.	3	6	58
फरवरी 3	मीन	पू.भा.	4	2	17
5		उ.भा.	1	21	55
8		उ.भा.	2	17	53
11		उ.भा.	3	14	12
14		उ.भा.	4	10	55
17		रेवती	1	8	3
20		रेवती	2	5	37
23		रेवती	3	3	42

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 26		रेवती	4	2	19
29	मेष	अश्वि.	1	1	32
मार्च 3		अश्वि.	2	1	27
6		अश्वि.	3	2	9
9		अश्वि.	4	3	44
12		भरणी	1	6	18
15		भरणी	2	9	59
18		भरणी	3	14	56
21		भरणी	4	21	20
25		कृत्तिका	1	5	27

शनि-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 24		पू.षा.	3	17	25
फरवरी 25		पू.षा.	4	23	50
अप्रैल 30	वक्री			6	24
जुलाई 6		पू.षा.	3	15	36
सितम्बर 2		पू.षा.	2	3	22
18	मार्गी			14	18
अक्तूबर 4		पू.षा.	3	21	38
नवम्बर 25		पू.षा.	4	22	8
दिसम्बर 27		उ.षा.	1	2	19
जनवरी 24	मकर	उ.षा.	2	9	54
फरवरी 23		उ.षा.	3	6	34

राहु-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 3		पुन.	4	11	54
मार्च 7	मिथुन	पुन.	3	9	36
मई 9		पुन.	2	7	34
जुलाई 11		पुन.	1	5	00
सितम्बर 12		आर्द्रा	4	2	45
नवम्बर 14		आर्द्रा	3	0	39
जनवरी 15		आर्द्रा	2	22	3
मार्च 18		आर्द्रा	1	19	50

केतु-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख 2019-20 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 3		उ.षा.	2	11	54
मार्च 7	धनु	उ.षा.	1	9	36
मई 9		पू.षा.	4	7	34
जुलाई 11		पू.षा.	3	5	00
सितम्बर 12		पू.षा.	2	2	45
नवम्बर 14		पू.षा.	1	0	39
जनवरी 15		मूल	4	22	3
मार्च 18		मूल	3	19	50

यूरेनस-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 7	मार्गी			1	58
मार्च 22		अश्वि.	3	20	58
मई 21		अश्वि.	4	17	4
अगस्त 12	वक्री			7	58
नवम्बर 9		अश्वि.	3	8	16
जनवरी 11	मार्गी			7	19
मार्च 11		अश्वि.	4	16	11

नेप्च्यून-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 2		पू.भा.	1	24	00
अप्रैल 11		पू.भा.	2	23	19
जून 21	वक्री			20	9
सितम्बर 5		पू.भा.	1	1	56
नवम्बर 27	मार्गी			18	7
फरवरी 12		पू.भा.	2	16	44

प्लूटो-चार (सन् 2019-20 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 6		उ.षा.	1	19	43
अप्रैल 25	वक्री			0	15
सितम्बर 6		पू.षा.	4	18	38
अक्तूबर 3	मार्गी			12	7
29		उ.षा.	1	13	46
फरवरी 12	मकर	उ.षा.	2	7	41

ग्रहों के वक्र/मार्ग उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखिये।

ग्रहों के वक्र-मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, 2019 से 25 मार्च, 2020 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	मंगल वि. सं. 2076 में साल-भर मार्गी रहेगा।		मंगल	प. में अस्त	11 जुलाई, 2019 ई.
			मंगल	पूर्व में उदित	22 अक्तू., 2019 ई.
बुध	वक्री	5 मार्च, 2019 ई.			
बुध	मार्गी	28 मार्च, 2019 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	9 जनवरी, 2019 ई.
बुध	वक्री	8 जुलाई, 2019 ई.	बुध	प. में उदित	15 फरवरी, 2019 ई.
बुध	मार्गी	1 अगस्त, 2019 ई.	बुध	प. में अस्त	7 मार्च, 2019 ई.
बुध	वक्री	31 अक्तू., 2019 ई.	बुध	पूर्व में उदित	22 मार्च, 2019 ई.
बुध	मार्गी	21 नवम्बर, 2019 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	10 मई, 2019 ई.
बुध	वक्री	17 फरवरी, 2020 ई.	बुध	प. में उदित	2 [illegible] 2019 ई.
बुध	मार्गी	10 मार्च, 2020 ई.	बुध	प. में अस्त	1[illegible] [illegible]लाई, 2019 ई.
			बुध	पूर्व में उदित	30 जुलाई, 2019 ई.
गुरु	वक्री	10 अप्रैल, 2019 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	22 अगस्त, 2019 ई.
गुरु	मार्गी	11 अगस्त, 2019 ई.	बुध	प. में उदित	20 सितम्बर, 2019 ई.
			बुध	प. में अस्त	5 नवम्बर, 2019 ई.
शुक्र	शुक्र वि. सं. 2076 में वर्ष-भर मार्गी रहेगा।		बुध	पूर्व में उदित	18 नवम्बर, 2019 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	1[illegible] दिसम्बर, 2019 ई.
शनि	वक्री	30 अप्रैल, 2019 ई.	बुध	प. में उदित	2[illegible] जनवरी, 2020 ई.
शनि	मार्गी	18 सितम्बर, 2019 ई.	बुध	प. में अस्त	1[illegible] फरवरी, 2020 ई.
			बुध	पूर्व में उदित	[illegible] मार्च, 2020 ई.
यूरेनस	मार्गी	7 जनवरी, 2019 ई.			
यूरेनस	वक्री	12 अगस्त, 2019 ई.	गुरु	प. में अस्त	14 दिसम्बर, 2019 ई.
यूरेनस	मार्गी	11 जनवरी, 2020 ई.	गुरु	पूर्व में उदित	10 जनवरी, 2020 ई.
			शुक्र	पूर्व में अस्त	19 जुलाई, 2019 ई.
नेप्च्यून	वक्री	21 जून, 2019 ई.	शुक्र	प. में उदित	29 सितम्बर, 2019 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	27 नवम्बर, 2019 ई.			
			शनि	पूर्व में उदित	19 जनवरी, 2019 ई.
प्लूटो	वक्री	25 अप्रैल, 2019 ई.	शनि	प. में अस्त	28 दिसम्बर, 2019 ई.
प्लूटो	मार्गी	3 अक्तू., 2019 ई.	शनि	पूर्व में उदित	30 जनवरी, 2020 ई.

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12	अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00	आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52	अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20	आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40	अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40	आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00	अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32	आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00	अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32	आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28	अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00	आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16	अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48	आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04	अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12	आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48	अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40	आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48	अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20	आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12	अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08	इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40	अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48	इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04	अररिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36	इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20	अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20	इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36	अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28	इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40	अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16	इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36	अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40	इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	—
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56	अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20	ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16	अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56	ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00	अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20	उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52	अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04	उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00	अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08	उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40	अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04	उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48	अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20	उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04	अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16	उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48	आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56	उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 8 40
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04	आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44	उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56
एर्णाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24
एलेप्पी	(के.)	9 30	76 22	−24 32
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28
करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00
कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52
करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52
करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08
कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12
करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48
कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08
काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00
करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00
करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36
करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56
कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40
कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16
कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28
कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00
कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00
कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12
काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08
कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52
कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48
कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04
काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52
काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00
कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28
कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36
कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56
कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04
कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08
कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24
कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40
कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16
कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम	(उ.)	19 28	85 05	+10 [illegible]

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गोंदिया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चुरू	(रा.)	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	—	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	दुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	टयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्डियाला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमुई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	दुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुर	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08	टूटीकोरिन	(ता.)	8 48	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40	पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52	फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00	पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24	फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44	पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32	पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00	फ़तेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16	पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16	फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20	पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04	फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24	पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48	फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04	पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40	फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12	पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40	फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12	पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56	फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00	पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32	फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04	पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20	फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
नौंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04	पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08	फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56	पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28	फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00	पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32	बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36	पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48	बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36	बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16	पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00	बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	पुदुकोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44	बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52	पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04	बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20	पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28	बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36	पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28	बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48	पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48	बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12	पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28	बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24	पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36	बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04	पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52	बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
परभनी	(म.)	19 16	76 51	−22 36	पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00	बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52	बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40	प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04	बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40	प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52	बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36	प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24	बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24	प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40	बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36	फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56	बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधेपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसौर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
म्हेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12	सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44	हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20	सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32	हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04	सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00	हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00	सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24	हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32	सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16	हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12	सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08	हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20	सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32	हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20	सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28	हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00	सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08	हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48	सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28	हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40	सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48	हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12	सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24	हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32	सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16	हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44	सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44	हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40	सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40	हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28	सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12	हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08	सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08	हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04	सैरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24	हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40	सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44	हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12	सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12	हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40	सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08	हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40	सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48	हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08	सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52	हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
सिकटी	(बि.)	26 24	87 33	+20 12	सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00	हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00	सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48	हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12	सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56	हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20	सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16	हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48	सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24	हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12	हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40	होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44	हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48	होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24	हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36	होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08	हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08	होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04	हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24					

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

मास	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये १	५ ३४											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ४३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ १	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

	अंग्रेज़ी तारीख	प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
जून	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
जुलाई	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

	अंग्रेज़ी तारीख	प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
अगस्त	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त १६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर १	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर १६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर १	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

कार्तिक

मास	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३४	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

मास	अंग्रेज़ी तारीख	पौष तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

मास	अंग्रेज़ी तारीख	माघ तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० [illegible]	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०४
	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
मार्च	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

मास	अंग्रेज़ी तारीख	प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
मार्च	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५ २९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
अप्रैल	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३४	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२					

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	[illegible]
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए. नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी ज़रूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को "सहायक सारणी" (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन मे जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी–पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोडे तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घडी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	[illegible]
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	[illegible]
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	[illegible]
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	[illegible]
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	[illegible]
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	[illegible]
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	[illegible]
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	[illegible]
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	[illegible]
मी घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	[illegible]
११ प.	१४	२१	२८	३५	४३	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	[illegible]

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	[illegible]
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	[illegible]
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	[illegible]
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	[illegible]
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	५	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन प	२२	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह प	४०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या प	३१	४३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला प	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुंभ घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुंभ प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
मेष प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
वृष प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
मिथुन प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
कर्क प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
सिंह प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
कन्या प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
तुला प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
वृश्चिक प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
धनु प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
मकर प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुंभ घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुंभ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
मीन प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरण:– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का 'सारणीस्थ अन्तर' हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१ क.	१ वि.	२ क.	२ वि.	३ क.	३ वि.	४ क.	४ वि.	५ क.	५ वि.	६ क.	६ वि.	७ क.	७ वि.	८ क.	८ वि.	९ क.	९ वि.	१० क.	१० वि.	११ क.	११ वि.	१२ क.	१२ वि.	१३ क.	१३ वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	– ७	२०४७	– १३	२०५५	– २०	२०६३	–२६	२०७१	–३३
२०२४	+ ६	२०३२	– १	२०४०	– ८	२०४८	– १४	२०५६	– २१	२०६४	–२७	२०७२	–३४
२०२५	+ ५	२०३३	– २	२०४१	– ९	२०४९	– १५	२०५७	– २२	२०६५	–२८	२०७३	–३५
२०२६	+ ४	२०३४	– ३	२०४२	– ९	२०५०	– १६	२०५८	–२२	२०६६	–२९	२०७४	–३६
२०२७	+ ३	२०३५	– ४	२०४३	–१०	२०५१	– १७	२०५९	–२३	२०६७	–३०	२०७५	–३६
२०२८	+ २	२०३६	– ४	२०४४	–११	२०५२	– १८	२०६०	–२४	२०६८	–३१	२०७६	–३७
२०२९	+ १	२०३७	– ५	२०४५	–१२	२०५३	– १८	२०६१	–२५	२०६९	–३१	२०७७	–३८
२०३०	+ १	२०३८	– ६	२०४६	– १२	२०५४	– १९	२०६२	–२६	२०७०	–३२	२०७८	–३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये ।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखा अंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकत्ता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं अन्तर +२३ मि. ३६ से. है । स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६ से. हुए यह २४ घ. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्ठक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त –८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. . २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२) सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अत:-यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४) का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३) जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल) में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च) फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.) ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)'' से १० फर. के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में मां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न'' है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश–कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न) दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा। इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:- चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न'' है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५३
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४३	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)	साम्पातिक काल	सभीस्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न		दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. कं.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. कं.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४	१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३	१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७	१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७	१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५	१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२	१४ ३०,	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०	१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०	१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १	१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ,५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४	१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८	१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४	१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६	१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२	१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६	१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९	२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०	२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०	२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८	२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५	२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३	२२ ३०	३३५ ४२	७८ ४१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३	२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७	२३ ३०	३५१ ५०	९२ ४०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६	२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

ता. ↓	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता. ↓
	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	
१	० ० ०	२ २ १३	३ ५२ ३७	५ ५४ ५१	७ ५३ ७	९ ५५ २१	११ ५३ ३८	१३ ५५ ५०	१५ [illegible] ४	१७ ५६ २१	११ ५८ ३४	२१ ५६ ५०	१
२	० ३ ५७	२ ६ ९	३ ५६ ३३	५ ५८ ४७	७ ५७ ४	९ ५९ १७	११ ५७ ३४	१३ ५९ ४७	१६ २ ०	१८ ० १७	२० २ ३१	२२ ० ४७	२
३	० ७ ५३	२ १० ६	४ ० ३०	६ २ ४३	८ १ ०	१० ३ १४	१२ १ ३१	१४ ३ ४४	१६ ५ ५७	१८ ४ १४	२० ६ २७	२२ ४ ४३	३
४	० ११ ५०	२ १४ २	४ ४ २६	६ ६ ४०	८ ४ ५७	१० ७ १०	१२ ५ २७	१४ ७ ४०	१६ ९ ५३	१८ ८ १	२० १० २४	२२ ८ ४०	४
५	० १५ ४६	२ १७ ५९	४ ८ २३	६ १० ३६	८ ८ ५३	१० ११ ७	१२ ९ २४	१४ ११ ३६	१६ १३ ५०	१८ १२ ७	२० १४ २०	२२ १२ ३६	५
६	० १९ ४३	२ २१ ५५	४ १२ १९	६ १४ ३३	८ १२ ५०	१० १५ ३	१२ १३ २१	१४ १५ ३३	१६ १७ ४६	१८ १६ ३	२० १८ १७	२२ १६ ३३	६
७	० २३ ३९	२ २५ ५२	४ १६ १६	६ १८ २९	८ १६ ४६	१० १९ ०	१२ १७ १७	१४ १९ २९	१६ २१ ४३	१८ २० ०	२० २२ १३	२२ २० ३०	७
८	० २७ ३६	२ २९ ४८	४ २० १२	६ २२ २६	८ २० ४३	१० २२ ५६	१२ २१ १४	१४ २३ २६	१६ २५ ४०	१८ २३ ५७	२० २६ १०	२२ २४ २७	८
९	० ३१ ३२	२ ३३ ४५	४ २४ ९	६ २६ २२	८ २४ ३९	१० २६ ५३	१२ २५ १०	१४ २७ २३	१६ २९ ३७	१८ २७ ५४	२० ३० ६	२२ २८ २३	९
१०	० ३५ २९	२ ३७ ४२	४ २८ ५	६ ३० १९	८ २८ ३६	१० ३० ४९	१२ २९ ६	१४ ३१ २०	१६ ३३ ३३	१८ ३१ ५०	२० ३४ ३	२२ ३२ २०	१०
११	० ३९ २५	२ ४१ ३१	४ ३२ २	६ ३४ १६	८ ३२ ३२	१० ३४ ४६	१२ ३३ ३	१४ ३५ १६	१६ ३७ ३०	१८ ३५ ४७	२० ३८ ०	२२ ३६ १६	११
१२	० ४३ २२	२ ४५ ३५	४ ३५ ५९	६ ३८ १३	८ ३६ २९	१० ३८ ४२	१२ ३६ ५९	१४ ३९ १३	१६ ४१ २६	१८ ३९ ४३	२० ४१ ५६	२२ ४० १३	१२
१३	० ४७ १८	२ ४९ ३२	४ ३९ ५६	६ ४२ ९	८ ४० २५	१० ४२ ३९	१२ ४० ५६	१४ ४३ ९	१६ ४५ २३	१८ ४३ ४०	२० ४५ ५२	२२ ४४ ९	१३
१४	० ५१ १५	२ ५३ २८	४ ४३ ५२	६ ४६ ६	८ ४४ ४२	१० ४६ ३५	१२ ४४ ५२	१४ ४७ ६	१६ ४९ १९	१८ ४७ ३७	२० ४९ ४९	२२ ४८ ६	१४
१५	० ५५ १२	२ ५७ २५	४ ४७ ४९	६ ५० २	८ ४८ १८	१० ५० ३२	१२ ४८ ४९	१४ ५१ २	१६ ५३ १६	१८ ५१ ३३	२० ५३ ४५	२२ ५२ २	१५
१६	० ५९ ८	३ १ २१	४ ५१ ४५	६ ५३ ५९	८ ५२ १५	१० ५४ २८	१२ ५२ ४५	१४ ५४ ५९	१६ ५७ १२	१८ ५५ ३०	२० ५७ ४२	२२ ५५ ५९	१६
१७	१ ३ ४	३ ५ १८	४ ५५ ४२	६ ५७ ५५	८ ५६ ११	१० ५८ २५	१२ ५६ ४२	१४ ५८ ५५	१७ १ ९	१८ ५९ २६	२१ १ ३९	२२ ५९ ५६	१७
१८	१ ७ १	३ ९ १४	४ ५९ ३८	७ १ ५२	९ ० ८	११ २ २१	१३ ० ३८	१५ २ ५२	१७ ५ ५	१९ ३ २२	२१ ५ ३६	२३ ३ ५३	१८
१९	१ १० ५७	३ १३ ११	५ ३ ३५	७ ५ ४८	९ ४ ४	११ ६ १८	१३ ४ ३५	१५ ६ ४८	१७ ९ २	१९ ७ १९	२१ ९ ३२	२३ ७ ४९	१९
२०	१ १४ ५४	३ १७ ८	५ ७ ३१	७ ९ ४५	९ ८ १	११ १० १५	१३ ८ ३२	१५ १० ४५	१७ १२ ५८	१९ ११ १५	२१ १३ २९	२३ ११ ४६	२०
२१	१ १८ ५१	३ २१ ५	५ ११ २८	७ १३ ४१	९ ११ ५८	११ १४ १२	१३ १२ २९	१५ १४ ४१	१७ १६ ५५	१९ १५ १२	२१ १७ २५	२३ १५ ४२	२१
२२	१ २२ ४८	३ २५ १	५ १५ २५	७ १७ ३८	९ १५ ५५	११ १८ ८	१३ १६ २५	१५ १८ ३८	१७ २० ५१	१९ १९ ८	२१ २१ २२	२३ १९ ३९	२२
२३	१ २६ ४४	३ २८ ५८	५ १९ २२	७ २१ ३४	९ १९ ५१	११ २२ ५	१३ २० २२	१५ २२ ३४	१७ २४ ४८	१९ २३ ५	२१ २५ १८	२३ २३ ३५	२३
२४	१ ३० ४१	३ ३२ ५४	५ २३ १८	७ २५ ३१	९ २३ ४८	११ २६ १	१३ २४ १८	१५ २६ ३१	१७ २८ ४४	१९ २७ १	२१ २९ १५	२३ २७ ३२	२४
२५	१ ३४ ३७	३ ३६ ५१	५ २७ १५	७ २९ २८	९ २७ ४४	११ २९ ५८	१३ २८ १५	१५ ३० २७	१७ ३२ ४१	१९ ३० ५८	२१ ३३ ११	२३ ३१ २८	२५
२६	१ ३८ ३४	३ ४० ४७	५ ३१ ११	७ ३३ २४	९ ३१ ४१	११ ३३ ५४	१३ ३२ ११	१५ ३४ २४	१७ ३६ ३७	१९ ३४ ५४	२१ ३७ ८	२३ ३५ २५	२६
२७	१ ४२ ३०	३ ४४ ४४	५ ३५ ८	७ ३७ २०	९ ३५ ३७	११ ३७ ५१	१३ ३६ ८	१५ ३८ २०	१७ ४० ३४	१९ ३८ ५१	२१ ४१ ४	२३ ३९ २१	२७
२८	१ ४६ २७	३ ४८ ४०	५ ३९ ५	७ ४१ १७	९ ३९ ३४	११ ४१ ४७	१३ ४० ४	१५ ४२ १७	१७ ४४ ३१	१९ ४२ ४८	२१ ४५ १	२३ ४३ १८	२८
२९	१ ५० २३	३ ५२ ३७	५ ४३ १	७ ४५ १३	९ ४३ ३०	११ ४५ ४४	१३ ४४ १	१५ ४६ १४	१७ ४८ २८	१९ ४६ ४५	२१ ४८ ५७	२३ ४७ १४	२९
३०	१ ५४ २०		५ ४६ ५८	७ ४९ १०	९ ४७ २७	११ ४९ ४१	१३ ४८ ५७	१५ ५० ११	१७ ५२ २४	१९ ५० ४१	२१ ५२ ५४	२३ ५१ ११	३०
३१	१ ५८ १६		५ ५० ५४		९ ५१ २४		१३ ५१ ५४	१५ ५४ ७		१९ ५४ ३८		२३ ५५ ७	३१
												२३ ५९ ३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१९१	+१५५	+१४२	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७६	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि. / घं.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश (अं. क. वि.)	ई. सन्	अयनांश (अं. क. वि.)	ई. सन्	अयनांश (अं. क. वि.)
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पू.षा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पि. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पि. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	कलेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन-प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि- मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घडी, पल जोडने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हो तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोडकर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोडकर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री-ग्रह-बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल**–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४-१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बडी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश-नवमेश एक घर में हों या एक-दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि-- सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ? मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे-- मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे-- इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश--रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश--रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश--रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश--रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न--भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब--जब जातक के जन्म--कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब--तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ-- यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा-- इसका निर्णय सूर्य की मास--प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास--प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास--प्रवेशकाल" पढ़ें।)

--प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	२०	२०

गर्भयोग–

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–** तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू भुर्वः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें; इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन—मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि— इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०— इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र— " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी—किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्मं वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल--शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है; लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, भ., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है-- पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)-- यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे-- आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य--वृद्धत्त्व--अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है--ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाईं ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ $\frac{१}{२}$ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों को एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है ! यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' -वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्' (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है ।कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ ½ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के	अ, इ,	क, ख, ग,	च,छ,ज,	ट,ठ,ड,	त,थ,द,	प, फ,ब,	य,र,	श,ष,
वर्ण	उ,ए	घ,ङ	झ,ञ	ढ,ण	ध,न	भ,म	ल,व	स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अवकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों)-में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है-सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का हीनि है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.

राशि	कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

राशि	मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	न.	वा.	सिं.	सिं.	अ.	सिं.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू. = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग द भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ द ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	20 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व य	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	18 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ य
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र य व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तन्भ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग द	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 ब त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ बवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पूषा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ भ ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत वनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ १/२ मास, कुल वालों के मरण से २२ १/२ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र	हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	योगान्त नक्षत्र	

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र →	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र →	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	रो.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्.योः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। –*कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ – (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११		लग्नं शुभं विवाहे स्याद दशविंशोपकाधिकंम्।
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि. चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना– **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधू प्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समय

वधूप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य– स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधू द्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मू., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये–भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश–योनि–मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने–बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्हिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्हिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यमं
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२. लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान	पूर्व	आग्ने.
अश्विनी, भरणी, कृत्तिका	पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा	मघा, पू.फा., उ.षा.
मध्यजलम्	जलाभावः	मध्यजलम्
उत्तर	मध्य	दक्षिण
पू.भा., उ.भा., रेवती	रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा	हस्त, चित्रा., स्वाती
मिष्ठजलम्	शीघ्रजलम्	जलाभाव
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्यां
श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा.	मूल, ,पू.,षा., उ.षा.	विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा
क्षारजलम्	अमृतजलम्	बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ले देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– **स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टमिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।**(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्मादिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या फल	६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त–विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि				
दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषानुभुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्							
सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्								
दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी **रात रहे** तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्				एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्									घट्यात्मक चन्द्रवास
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे										जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।
मेष	वृष	मिथुन	कर्क										
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	
धनु	मकर	कुम्भ	मीन	घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	

चन्द्रफलम्:– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो **मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥**

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—*भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥*

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु:— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहिन चन्द–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कु.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	आषा.	पौ.	ज्ये.	भाद्र.	माघ	आश्वि.	श्राव.	वैशा.	चैत्र	फाल्गु.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– **अतोऽन्यदभेषु निन्द्याः।**

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य–पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– **"मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह–
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तैल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तैल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र इस वर्ष श्राव. कृ. २ शु. से आश्वि. शु. १ र. (१९ जुला. से २९ सितं., २०१९ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष पौष कृ. २ श. से पौष शु. १५ शु. (१४ दिसं., २०१९ से १० जन., २०२० ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिये गये कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०७६ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	२० जुला., '१९	२० जुला., '१९	२० जुला., '१९	१८ जुला., '१९
शुक्र पश्चिम में उदित	१२ सितं., '१९	१६ सितं., '१९	२३ सितं., '१९	५ अक्तू., '१९
गुरु अस्त	१६ दिसं., '१९	१६ दिसं., '१९	१५ दिसं., '१९	१३ दिसं., '१९
गुरु उदित	७ जन., '२०	८ जन., '२०	९ जन., '२०	१० जन., '२०

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किये जाते। **ध्यान दें :-** मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि—इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें।

दैवज्ञ ध्यान दें—

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिये जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों को देखने से आपको ज्ञात होगा कि—शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गयी है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवं अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाये तब संहिताकारों का कहना है कि—उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। **ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरी तरह निवारण करते हैं। यह भी इन परिहार वाक्यों से सुस्पष्ट है।** संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर अब हम लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का निर्णय करते हैं, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है।

ध्यान दें—पहले शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया रहता था, जिनका वहां परिहार हुआ है। अब यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक **"मुहूर्त्तगजानन"** के पृष्ठ १५१ पर दिया लेख **'लग्नभंगपरिहार (एक संशोधन)'** अवश्य पढ़िये। इस लेख का सारांश ४-५ वर्ष पूर्व पंचांग में भी मैंने दिया था। **—प्रियव्रतशर्मा**

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र शु. १० चं.	वैशा. २	अप्रै. १५	मघा	सिंह	मेष	धनु	दि.ल. २, ३, ६ (१७/४५ तक), (मृत्यु-परिहार),
चैत्र शु. १२ मं.	वैशा. ३	अप्रै. १६	उ.फा.	सिंह	मेष	धनु	ल. ११, १२,
चैत्र शु. १३ बु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	उ.फा.	कन्या	मेष	धनु	दि.ल. २, ३, ४, ५, ६ (१८/३० तक), रा.ल. ८ (२२/०६ बाद), ९ (२३/३५ तक),
चैत्र शु. १३ बु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	हस्त	कन्या	मेष	धनु	ल. ९ (२३/३५ बाद), ११, १२, (बुध पादवेधाभाव),
चैत्र शु. १४ गु.	वैशा. ५	अप्रै. १८	हस्त	कन्या	मेष	धनु	दि.ल. २, ६, गोधू., (१०/२९ से १५/५६ तक बुध पादवेध),
चैत्र शु. १५ शु.	वैशा. ६	अप्रै. १९	चित्रा	कन्या/तुला	मेष	धनु	दि.ल. २, ३, ४, ५, ६,
चैत्र शु. १५ शु.	वैशा. ६	अप्रै. १९	स्वा.	तुला	मेष	धनु	ल. ८, ९, ११, १२,
वैशा. कृ. १ श.	वैशा. ७	अप्रै. २०	स्वा.	तुला	मेष	धनु	दि.ल. २, ३, ४, ५, ६ (१७/५८ तक),
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. ९	अप्रै. २२	अनु.	वृश्चिक	मेष	धनु	दि.ल. ४ (११/२५ बाद), ५, ६, (१६/४५ तक),
वैशा. कृ. ७ शु.	वैशा. १३	अप्रै. २६	श्रव.	मकर	मेष	वृश्चिक	ल. ९ (२३/१४ बाद), ११, १२,
वैशा. कृ. ८ श.	वैशा. १४	अप्रै. २७	श्रव.	मकर	मेष	वृश्चिक	दि.ल. २, ३, ४, ५, गोधू., ८, ९,
वैशा. कृ. ८ श.	वैशा. १४	अप्रै. २७	धनि.	मकर	मेष	वृश्चिक	ल. ११, १२,
वैशा. कृ. ९ र.	वैशा. १५	अप्रै. २८	धनि.	मकर/कुम्भ	मेष	वृश्चिक	दि.ल. २, ३, ४, ५, गोधू., ८, ९, (२५/३६ बाद क्रान्तिसाम्य),
वैशा. शु. २ चं.	वैशा. २३	मई ६	रोहि.	वृष	मेष	वृश्चिक	ल. ८, ९, १२ (२७/३७ बाद),
वैशा. शु. ३ मं.	वैशा. २४	मई ७	रोहि.	वृष	मेष	वृश्चिक	दि.ल. २, ३, ४, ५,
वैशा. शु. ८ र.	वैशा. २९	मई १२	मघा	सिंह	मेष	वृश्चिक	दि.ल. ४ (११/५४ बाद), ५, गोधू., ८, ९, १०, ११, १२,
वैशा. शु. ९ चं.	वैशा. ३०	मई १३	मघा	सिंह	मेष	वृश्चिक	दि.ल. ३ (८/१६ तक),
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. २	मई १६	चित्रा	कन्या/तुला	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, गोधू., (मृत्यु-परिहार),
वैशा. शु. १३ शु.	ज्ये. ३	मई १७	स्वा.	तुला	वृष	वृश्चिक	ल.गोधू., ९, १०, ११, १२ (२७/०७ तक),
वैशा. शु. १५ श.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	वृश्चिक	वृष	वृश्चिक	ल. १२ (२६/२१ बाद), १,
ज्ये. कृ. ५ गु.	ज्ये. ९	मई २३	उ.षा.	धनु/मकर	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, गोधू., ९, (२३/३५ बाद क्रान्तिसाम्य),
ज्ये. कृ. ६ शु.	ज्ये. १०	मई २४	श्रव.	मकर	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ५ (१२/०७ बाद), गोधू., ९, १०, ११, १२, १, (१२/०७ तक क्रान्तिसाम्य),
ज्ये. कृ. ६ श.	ज्ये. ११	मई २५	धनि.	मकर/कुम्भ	वृष	वृश्चिक	ल. ९, १०, ११, १२, १, (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. ७ र.	ज्ये. १२	मई २६	धनि.	कुम्भ	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५ (१३/१३ तक), (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. ९ मं.	ज्ये. १४	मई २८	उ.भा.	मीन	वृष	वृश्चिक	ल. गोधू., ९, १०, ११, १२ (२६/२६ तक),
ज्ये. कृ. १० बु.	ज्ये. १५	मई २९	उ.भा.	मीन	वृष	वृश्चिक	ल. गोधू., ९ (२१/१७ तक),
ज्ये. कृ. १० बु.	ज्ये. १५	मई २९	रेव.	मीन	वृष	वृश्चिक	ल. ९ (२१/१७ बाद), १०, ११, १२, १,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्ये. कृ. ११ गु.	ज्ये. १६	मई ३०	रेव.	मीन	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, गोधू., ९, १० (२३/०३ तक),
ज्ये. कृ. ११ गु.	ज्ये. १६	मई ३०	अश्वि.	मेष	वृष	वृश्चिक	ल. १० (२३/०३ बाद), ११, १२, १,
ज्ये. कृ. १२ शु.	ज्ये. १७	मई ३१	अश्वि.	मेष	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५,
ज्ये. शु. १ मं.	ज्ये. २१	जून ४	मृग.	मिथुन	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ६, गोधू., १० (२३/०८ तक), (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. शु. ६ श.	ज्ये. २५	जून ८	मघा	सिंह	वृष	वृश्चिक	ल. गोधू., १०, ११, १२,
ज्ये. शु. ७ र.	ज्ये. २६	जून ९	मघा	सिंह	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६ (१४/२७ तक),
ज्ये. शु. ८ चं.	ज्ये. २७	जून १०	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ६ (१४/२० बाद), गोधू., १०, ११, १२,
ज्ये. शु. ९ मं.	ज्ये. २८	जून ११	उ.फा.	कन्या	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४ (८/४५ तक),
ज्ये. शु. १० बु.	ज्ये. २९	जून १२	हस्त	कन्या	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५ (११/५१ तक),
ज्ये. शु. १० बु.	ज्ये. २९	जून १२	चित्रा	कन्या/तुला	वृष	वृश्चिक	दि.ल. ५ (११/५१ बाद), ६, गोधू., १०, ११, १२,
ज्ये. शु. ११ गु.	ज्ये. ३०	जून १३	स्वा.	तुला	वृष	वृश्चिक	ल. गोधू., १०, ११, १२, (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. शु. १४ र.	आषा. २	जून १६	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५ (१०/०६ तक),
आषा. कृ. २ बु.	आषा. ५	जून १९	उ.षा.	धनु/मकर	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ६ (१३/२९ बाद), ८, रा.ल. १०, ११, १२, २ (२८/२१ तक),
आषा. कृ. ३ गु.	आषा. ६	जून २०	श्रव.	मकर	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ८ (१७/०८ बाद), गोधू.,
आषा. कृ. ४ शु.	आषा. ७	जून २१	धनि.	मकर	मिथुन	वृश्चिक	ल. १० (२१/०८ बाद), ११, १२, २,
आषा. कृ. ५ श.	आषा. ८	जून २२	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ८, गोधू., १० (२१/०७ तक),
आषा. कृ. ७ चं.	आषा. १०	जून २४	उ.भा.	मीन	मिथुन	वृश्चिक	ल. २ (२७/०१ बाद),
आषा. कृ. ८ मं.	आषा. ११	जून २५	उ.भा.	मीन	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ८, गोधू., १०, ११, १२, २,
आषा. कृ. ९ गु.	आषा. १३	जून २७	रेव.	मीन	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४ (७/४३ तक),
आषा. कृ. ९ गु.	आषा. १३	जून २७	अश्वि.	मेष	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४ (७/४३ बाद), ५, ६, ८ (१८/०० तक),
आषा. कृ. १० शु.	आषा. १४	जून २८	अश्वि.	मेष	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५ (९/११ तक),
आषा. शु. ३ शु.	आषा. २१	जुला. ५	मघा	सिंह	मिथुन	वृश्चिक	ल. १२ (२४/१८ बाद), (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. ४ श.	आषा. २२	जुला. ६	मघा	सिंह	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ६ (१३/१० बाद), ७, ८, गोधू., ११ (२१/५० तक), (मृत्यु-परिहार)
आषा. शु. ५ र.	आषा. २३	जुला. ७	उ.फा.	सिंह	मिथुन	वृश्चिक	ल. ११, १२,
आषा. शु. ६ चं.	आषा. २४	जुला. ८	उ.फा.	कन्या	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ७ (१५/२६ तक),
आषा. शु. ८ मं.	आषा. २५	जुला. ९	हस्त	कन्या	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ८ (१६/२८ से १७/१५ तक),
आषा. शु. ८ मं.	आषा. २५	जुला. ९	चित्रा	कन्या	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ८ (१७/१५ बाद), गोधू., ११, १२,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
आषा. शु. ९ बु.	आषा. २६	जुला. १०	चित्रा	तुला	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८ (१६/२१ तक),
आषा. शु. ९ बु.	आषा. २६	जुला. १०	स्वा.	तुला	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ८ (१६/२१ बाद), गोधू., ११, १२,
आषा. शु. १० गु.	आषा. २७	जुला. ११	स्वा.	तुला	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८ (१५/५५ तक),
आषा. शु. १२ श.	आषा. २९	जुला. १३	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८ (१६/२७ तक),
आश्वि. शु. ४ बु.	आश्वि. १६	अक्तू. २	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	ल. गोधू., १, २, ३, ४, ५,
आश्वि. शु. ५ गु.	आश्वि. १७	अक्तू. ३	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ८, ९ (१२/१० तक),
आश्वि. शु. ६ शु.	आश्वि. १८	अक्तू. ४	मूल	धनु	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. १०,११, गोधू., ३, ४, ५,
आश्वि. शु. ७ श.	आश्वि. १९	अक्तू. ५	मूल	धनु	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ७, ८ (९/५० तक),
आश्वि. शु. ९ चं.	आश्वि. २१	अक्तू. ७	श्रव.	मकर	कन्या	वृश्चिक	ल. गोधू., ३, ४, ५, (मृत्यु-परिहार),
आश्वि. शु. १० मं.	आश्वि. २२	अक्तू. ८	श्रव.	मकर	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ७, ८, १०, ११, गोधू.,
आश्वि. शु. १० मं.	आश्वि. २२	अक्तू. ८	धनि.	मकर	कन्या	वृश्चिक	ल. ३, ४ (२४/०४ तक), ५ (२६/४४ से २८/०४ तक),
आश्वि. शु. ११ बु.	आश्वि. २३	अक्तू. ९	धनि.	कुम्भ	कन्या	वृश्चिक	ल. गोधू., ३ (२३/११ तक),
आश्वि. शु. १५ र.	आश्वि. २७	अक्तू. १३	रेव.	मीन	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. १० (१३/३७ बाद), ११, रा.ल. ३, ४, ५,
कार्त्ति. कृ. १ चं.	आश्वि. २८	अक्तू. १४	रेव.	मीन	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ७, ८ (१०/२० तक),
कार्त्ति. कृ. १ च.	आश्वि. २८	अक्तू. १४	अश्वि.	मेष	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ८ (१०/२० बाद), १०, ११, गोधू., ३, ४, ५,
कार्त्ति. कृ. २ मं.	आश्वि. २९	अक्तू. १५	अश्वि.	मेष	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ७, ८,
कार्त्ति. कृ. ४ शु.	कार्त्ति. २	अक्तू. १८	रोहि.	वृष	तुला	वृश्चिक	दि.ल. ८, १०, ११, १२ (१६/५९ तक),
कार्त्ति. कृ. ४ शु.	कार्त्ति. २	अक्तू. १८	मृग.	वृष	तुला	वृश्चिक	दि.ल. १२ (१६/५९ बाद), गोधू., ३, ४, ५ (२७/२२ तक), (मृत्यु-परिहार),
कार्त्ति. कृ. ५ श.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	मृग.	मिथुन	तुला	वृश्चिक	दि.ल. १० (१४/३७ बाद), ११, १२, गोधू., (मृत्यु-परिहार),
कार्त्ति. कृ. १० बु.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २३	मघा	सिंह	तुला	वृश्चिक	ल. ४ (२५/०९ बाद), ५,
कार्त्ति. कृ. ११ गु.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	मघा	सिंह	तुला	वृश्चिक	दि.ल. ८, १० (१३/१८ तक),
कार्त्ति. कृ. १२ शु.	कार्त्ति. ९	अक्तू. २५	उ.फा.	सिंह/कन्या	तुला	वृश्चिक	दि.ल. १०, ११, १२,
कार्त्ति. शु. २ मं.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	अनु.	वृश्चिक	तुला	वृश्चिक	ल. ४ (२३/११ बाद), ५,
कार्त्ति. शु. ३ बु.	कार्त्ति. १४	अक्तू. ३०	अनु.	वृश्चिक	तुला	वृश्चिक	दि.ल. ८, ११, १२,
कार्त्ति. शु. ४ गु.	कार्त्ति. १५	अक्तू. ३१	मूल	धनु	तुला	वृश्चिक	ल. ५ (२५/०१ बाद),
कार्त्ति. शु. ५ शु.	कार्त्ति. १६	नवं. १	मूल	धनु	तुला	वृश्चिक	दि.ल. ८, ११, १२, गोधू.,
कार्त्ति. शु. ९ मं.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	धनु	दि.ल. ८, ९, ११, १२, गोधू., ६ (२७/३१ बाद), (मृत्यु-परिहार), (२०/५८ से २७/३१ तक क्रां.सा.),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१९-२० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
कार्त्ति. शु. ११ शु.	कार्त्ति. २३	नवं. ८	उ.भा.	मीन	तुला	धनु	ल. ११, १२, गोधू., ४, ५, ६,
कार्त्ति. शु. १२ श.	कार्त्ति. २४	नवं. ९	उ.भा.	मीन	तुला	धनु	दि.ल. ८, ९ (१०/१४ तक, ११/२६ बाद), ११, १२ (१४/५५ तक),
कार्त्ति. शु. १२ श.	कार्त्ति. २४	नवं. ९	रेव.	मीन	तुला	धनु	दि.ल.१२ (१४/५५ बाद), गोधू., ४, ५, ६,
कार्त्ति. शु. १३ र.	कार्त्ति. २५	नवं. १०	रेव.	मीन	तुला	धनु	दि.ल. ८, ९, ११, १२,
कार्त्ति. शु. १३ र.	कार्त्ति. २५	नवं. १०	अश्वि.	मेष	तुला	धनु	ल. ४, ५, ६,
कार्त्ति. शु. १४ चं.	कार्त्ति. २६	नवं. ११	अश्वि.	मेष	तुला	धनु	दि.ल. ८, ९ (१०/४८ तक),
मार्ग. कृ. १ बु.	कार्त्ति. २८	नवं. १३	रोहि.	वृष	तुला	धनु	ल. ४ (२२/०० बाद), ५, ६,
मार्ग. कृ. २ गु.	कार्त्ति. २९	नवं. १४	रोहि.	वृष	तुला	धनु	दि.ल. ८, ९, ११, १२, गोधू., ४ (२२/४७ तक),
मार्ग. कृ. २ गु.	कार्त्ति. २९	नवं. १४	मृग.	वृष	तुला	धनु	ल. ४ (२२/४७ बाद), ५, ६, (मृत्यु-परिहार),
मार्ग. कृ. ७ मं.	मार्ग. ४	नवं. १९	मघा	सिंह	वृश्चिक	धनु	ल. ४ (२१/२२ बाद), ५ (२५/०५ तक), (२५/०५ बाद क्रान्तिसाम्य),
मार्ग. कृ. ८ बु.	मार्ग. ५	नवं. २०	मघा	सिंह	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, ११, १२, १, गोधू.,
मार्ग. कृ. ९ गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.फा.	सिंह	वृश्चिक	धनु	ल. ४ (२२/१४ तक) (निर्बल लग्न),
मार्ग. कृ. १० शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९ (९/०१ बाद), ११, १२, १ (१६/४१ तक),
मार्ग. कृ. १० शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	हस्त	कन्या	वृश्चिक	धनु	दि.ल.१ (१६/४१ बाद), गोधू. ५, ६,
मार्ग. कृ. १२ श.	मार्ग. ८	नवं. २३	हस्त	कन्या	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, १०, ११, १२ (१४/४४ तक),
मार्ग. कृ. १२ श.	मार्ग. ८	नवं. २३	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	धनु	दि.ल. १२ (१४/४४ बाद), १, गोधू., ५, ६ (२७/४३ तक),
मार्ग. शु. २ गु.	मार्ग. १३	नवं. २८	मूल	धनु	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, १०, ११, १२, १ (१६/१८ तक), रा.ल. ५, ६,
मार्ग. शु. ५ र.	मार्ग. १६	दिसं. १	श्रव.	मकर	वृश्चिक	धनु	दि.ल. १० (११/४० बाद), ११, १२, १, गोधू., ५, ६, (११/४० तक क्रान्तिसाम्य),
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. १७	दिसं. २	श्रव.	मकर	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, १० (११/४३ तक),
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. १७	दिसं. २	धनि.	मकर/कुम्भ	वृश्चिक	धनु	ल. गोधू., ५, ६,
मार्ग. शु. ७ मं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, १०, ११, १२ (१४/१६ तक),
मार्ग. शु. ९ गु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	धनु	ल. ५, ६, (मृत्यु-परिहार),
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. २१	दिसं. ६	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	धनु	दि. ल. ९, १०, ११, १२, १, (मृत्यु-परिहार),
मार्ग. शु. ११ श.	मार्ग. २२	दिसं. ७	रेव.	मीन	वृश्चिक	धनु	ल. गोधू.,
मार्ग. शु. ११ र.	मार्ग. २३	दिसं. ८	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९ (८/२९ बाद), १०, ११, १२, १, गोधू.,
मार्ग. शु. १४ बु.	मार्ग. २६	दिसं. ११	रोहि.	वृष	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, १० (१०/५९ तक),
माघ कृ. ५ बु.	माघ २	जन. १५	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	धनु	दिल ११, १२, १, २, ३, गोधू., ५ (२१/१२ तक), ६ (२३/२६ तक), ७ (२५/४१ तक), (२५/४१ बाद मृत्युबाण),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृ. ६ गु.	माघ ३	जन. १६	हस्त	कन्या	मकर	धनु	दि.ल. ११ (९/४२ तक), ५ (२०/३६ बाद), ६, ७ (२६/३० तक), (मृत्यु-परिहार),
माघ कृ. ६ गु.	माघ ३	जन. १६	चित्रा	कन्या	मकर	धनु	ल. ७ (२६/३० बाद), ८, ९,
माघ कृ. ७ शु.	माघ ४	जन. १७	चित्रा	कन्या/तुला	मकर	धनु	दि.ल. ११, १२, १, २, ३, गोधू., ५, ६, ७ (२५/१२ तक),
माघ कृ. ७ शु.	माघ ४	जन. १७	स्वा.	तुला	मकर	धनु	ल. ७ (२५/१२ बाद), ८, ९,
माघ कृ. ९ श.	माघ ५	जन. १८	स्वा.	तुला	मकर	धनु	दि.ल. ११, १२, १ (१२/२५ तक), ५, ६ (२४/१५ तक), (१२/४१ से १८/२७ तक शुक्र पादवेध),
माघ कृ. १० र.	माघ ६	जन. १९	अनु.	वृश्चिक	मकर	धनु	ल. ८ (२६/५१ बाद), ९,
माघ कृ. ११ चं.	माघ ७	जन. २०	अनु.	वृश्चिक	मकर	धनु	दि.ल. ११, १२, १, २, ३, गोधू., ५, ६ (२३/०८ तक), (२३/०८ बाद क्रा.सा.),
माघ शु. २ र.	माघ १३	जन. २६	धनि.	कुम्भ	मकर	धनु	ल. ८ (२६/२४ बाद), ९,
माघ शु. ४ बु.	माघ १६	जन. २९	उ.भा.	मीन	मकर	धनु	दि.ल. १ (१२/१३ बाद), २, ३, गोधू., ५, ६, ७, ८, ९,
माघ शु. ५ गु.	माघ १७	जन. ३०	उ.भा.	मीन	मकर	धनु	दि.ल. ११, १२, १, २, ३ (१५/१२ तक),
माघ शु. ५ गु.	माघ १७	जन. ३०	रेव.	मीन	मकर	धनु	दि.ल. ३ (१५/१२ बाद), गोधू., ५, ६, ७, ८, ९,
माघ शु. ६ शु.	माघ १८	जन. ३१	रेव.	मीन	मकर	धनु	दि.ल. ११, १२, १, २, ३, गोधू.,
माघ शु. ६ शु.	माघ १८	जन. ३१	अश्वि.	मेष	मकर	धनु	ल. ५, ६, ७, ८, ९,
माघ शु. ७ श.	माघ १९	फर. १	अश्वि.	मेष	मकर	धनु	दि.ल. ११, १२, १, २, ३, गोधू.,
माघ शु. ९ चं.	माघ २१	फर. ३	रोहि.	वृष	मकर	धनु	ल. ८, ९,
माघ शु. १० मं.	माघ २२	फर. ४	रोहि.	वृष	मकर	धनु	दि.ल. १२, १, २, ३, गोधू., ५, ६, ८ (२५/४९ तक),
माघ शु. १५ र.	माघ २७	फर. ९	मघा	सिंह	मकर	धनु	ल. ५ (१९/४३ बाद), ६, ८, ९,
फाल्गुन कृ. १ चं.	माघ २८	फर. १०	मघा	सिंह	मकर	धनु	दि.ल. १२, १ (११/३१ तक), ३ (१३/५५ बाद),
फाल्गुन कृ. ३ मं.	माघ २९	फर. ११	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	धनु	दि.ल. ३ (१४/२३ बाद), ८ (२६/५३ से २७/२७ तक), (वृश्चिक लग्न में मृत्यु-परिहार),
फाल्गुन कृ. ६ शु.	फाल्गु. २	फर. १४	स्वा.	तुला	कुम्भ	धनु	दि.ल. २(१३/०२ बाद), ३, ४, गोधू., (मृत्यु-परिहार), (७/२७ से १३/०२ तक बुध-पादवेध),
फाल्गुन कृ. ७ श.	फाल्गु. ३	फर. १५	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	धनु	ल. ९ (२९/०९ बाद),
फाल्गुन कृ. ८ र.	फाल्गु. ४	फर. १६	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	धनु	दि.ल. १२, १, २, (११/४८ तक), ४ (१५/२४ बाद), गोधू., ६, ८, ९ (२८/५३ तक),
फाल्गुन शु. २ मं.	फाल्गु. १३	फर. २५	उ.भा.	मीन	कुम्भ	धनु	ल. ६, ८, ९,
फाल्गुन शु. ३ बु.	फाल्गु. १४	फर. २६	उ.भा.	मीन	कुम्भ	धनु	दि.ल. १२, १, २, ३, ४, रा.ल. ६,
फाल्गुन शु. ३ बु.	फाल्गु. १४	फर. २६	रेव.	मीन	कुम्भ	धनु	ल. ८, ९,
फाल्गुन शु. ४ गु.	फाल्गु. १५	फर. २७	रेव.	मीन	कुम्भ	धनु	दि.ल. १२, १, २, ३, ४,
फाल्गुन शु. ५ शु.	फाल्गु. १६	फर. २८	अश्वि.	मेष	कुम्भ	धनु	दि.ल. १२, १, २, ३, ४ (१५/१७ तक), ६ (२०/२५ बाद), ८, ९ (२८/०२ तक), (१५/१७ से २०/२५ तक क्रांतिसाम्य),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२०ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
चैत्र कृ. १ मं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	हस्त	कन्या	कुम्भ	धनु	ल. ९, १०,
चैत्र कृ. २ बु.	फाल्गु. २८	मार्च ११	हस्त	कन्या	कुम्भ	धनु	द्वि.ल. १२, १, ४, गोधू., ६ (१८/५९ तक),
चैत्र कृ. ३ गु.	फाल्गु. २९	मार्च १२	स्वा.	तुला	कुम्भ	धनु	ल. गोधू., ६, १० (२७/३१ बाद),

आगामी सं. २०७७ वि. में गुरु-शुक्रास्त—आगामी सं. २०७७ वि. में गुरु लगभग १६ जन., २०२१ से १५ फर., २०२१ तक और शुक्र ३१ मई, २०२० से ८ जून, २०२० तक एवम् ९ फर., २०२१ से २०७७ के अन्त तक अस्त रहेगा। किंच—इस वर्ष १८ सितम्बर, २०२० से १६ अक्तू. २०२० तक आश्विन अधिकमास रहेगा।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में मृत्युबाण-वेध-युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिये जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिये जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गये हैं—*मृत्युबाण का परिहार*—यहां विवाहमुहूर्त्तों में मृत्युबाण को तभी दोषकारक (त्याज्य) माना गया है, जबकि वह बुधवार को घटित हो, क्योंकि मुहूर्त्तकारों ने इसे इसी वार को त्याज्य लिखा है—"बुधे मृत्युं परित्यजेत्।" *सौम्यग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के दोष का परिहार*—मुहूर्त्तकारों ने क्रूरग्रह का वेध होने पर पूर्णनक्षत्र को त्याज्य लिखा है, लेकिन शुभ ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध माना गया है। जैसे—वेधक नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में स्थित शुभ ग्रह विद्ध नक्षत्र के क्रमशः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरण को ही वेधता है। लेकिन 'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड' कार एवं वशिष्ठ का मत है कि—यदि लग्नेश एकादश में हो, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, लग्न में चन्द्ररहित कोई शुभग्रह हो या कालहोरा शुभग्रह की हो तो वेधदोष समाप्त हो जाता है—"**लग्नेशे भवगेऽथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वांऽगगे। होरायां च शुभस्य वा व्यधमयं नास्तीति पूर्वे जगुः॥**" हमने शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के मुहूर्त्तशोधन में इस मत का भी प्रयोग किया है। वैसे तो क्रूरग्रह-विद्ध नक्षत्र-दोष का भी परिहार इस मतानुसार युक्तिसंगत सिद्ध होता है। *युतिदोष का परिहार*—नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार*—मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कत्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार*—मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार*—नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार*—मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार*—शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे—उपरोक्त लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में लाते रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक "**मुहूर्त्तगजानन**" में दिया "**लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)**" लेख पढ़ना चाहिए। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

वि. सं. 2077 में (25 मार्च, 2020 ई. से 12 अप्रै., 2021 ई. तक) सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि—आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन-किन दिनों में सम्भावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि—आगमी वर्ष के किन-किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* सम्भावित हैं और किन-किन दिनों में नहीं। **यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त सम्भावना है।** —प्रियव्रत शर्मा

तारीख	मार्च 20	अप्रै.'20	मई '20	जून '20	जुला. '20	अग.'20	सितं.'20	अक्तू.'20	नवं.'20	दिसं.'20	जन.'21	फर. '21	मार्च '21	अप्रै. '21	तारीख
1	—	×		×			×	×			×	×	×	×	1
2	—	×		×			×	×			×	×	×	×	2
3	—	×		×			×	×		×	×	×	×	×	3
4	—	×		×			×	×		×	×	×	×	×	4
5	—	×		×	×		×	×	×	×	×	×	×	×	5
6	—	×		×	×		×	×	×		×	×	×	×	6
7	—	×	×	×			×	×	×		×	×	×	×	7
8	—	×		×			×	×	×		×	×	×	×	8
9	—	×		×			×	×			×	×	×	×	9
10	—	×		×			×	×			×	×	×	×	10
11	—	×		×			×	×			×	×	×	×	11
12	—	×		×			×	×		×	×	×	×	×	12
13	—	×	×	×			×	×	×	×	×	×	×	—	13
14	—		×	×			×	×	×	×	×	×	×	—	14
15	—				×	×	×	×	×	×	×	×	×	—	15
16	—				×	×	×	×	×	×	×	×	×	—	16
17	—					×	×	×		×	×	×	×	—	17
18	—				×	×	×			×	×	×	×	—	18
19	—			×	×	×	×			×	×	×	×	—	19
20	—	×	×	×	×		×			×	×	×	×	—	20
21	—	×	×	×	×		×			×	×	×	×	—	21
22	—	×	×	×			×			×	×	×	×	—	22
23	—	×		×			×			×	×	×	×	—	23
24	—			×			×			×	×	×	×	—	24
25	×						×			×	×	×	×	—	25
26	×		×			×	×			×	×	×	×	—	26
27	×		×				×			×	×	×	×	—	27
28	×	×	×				×			×	×	×	×	—	28
29	×	×	×				×			×	×	—	×	—	29
30	×	×	×				×			×	×	—	×	—	30
31	×	—	×				—		—	×	×	—	×	—	31

इस वर्ष (सं. 2077 वि. में) इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य तथा अन्य सभी मंगलकृत्यों में स्पष्टरूप में सर्वथा वर्जित होंगी—

मीनस्थ सूर्यदोष
(25 मार्च से 13 अप्रैल, 2020 ई. तक)

शुक्र पश्चिम लोप दोष
(29 मई से 11 जून, 2020 ई. तक)

श्राद्ध(महालय) पक्ष दोष
(2 से 17 सितंबर, 2020 ई. तक)

आश्विन अधिमास दोष
(18 सितं. से 16 अक्तू., 2020 ई. तक)

धनु:स्थ सूर्यदोष
(14 दिसं., 2020 से 13 जन., 2021 ई. तक)

गुरुलोप दोष
(14 जन. से 18 फर., 2021 ई. तक)

शुक्रपूर्वलोप दोष
(5 फर. से 12 अप्रैल, 2021 ई. तक)

मीनस्थ सूर्यदोष
(13 मार्च से 12 अप्रै., 2021 ई. तक

ध्यान दें—इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बायीं ओर दिये कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

सं. २०७६ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७६ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाहमुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७६ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ 270 पर दिये गये हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिये गये 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—**वृषराशि वाले लड़के** और **कन्याराशि वाली लड़की** का विवाह सं. २०७६ वि. में जुलाई (२०१९ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है?—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,—लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि **वृष** के आगे जुलाई, २०१९ ई. की ८, ९, १०, ११, १३ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि **कन्या** के आगे जुलाई की ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि जुलाई, २०१९ ई. में वृष राशि वाले लड़के और कन्या राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल ८, ९, १०, ११, १३ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (वृष-कन्या) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिये। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें—लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है। इस वर्ष गुरु स्वराशि धनु एवं मित्रराशि वृश्चिक में विचररण करेगा, जो कि किसी भी राशि वाली कन्या के लिए पूज्य नहीं होगा।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७६ वि.) (६ अप्रैल, सन् २०१९ ई. से २४ मार्च, सन् २०२० ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	
मेष	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११; अक्तू. ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १८, १९, २३, २४, २५, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १०, ११, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १८, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२,	ज्येष्ठ, कार्त्तिक,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११; अक्तू. ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १८, १९, २३, २४, २५, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १०, ११, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७, १८, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२,	---
वृष	मई १६, १७, १८, २३ (११/४४ बाद), २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ४, १० (२०/०० बाद), ११, १२, १३, १६, १९ (१९/५९ बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १८, १९, २५ (१६/२२ बाद), २९, ३०; नवं. ५, ८, ९, १०, ११, १३, १४, २२, २३; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५ (११/२८ बाद), १६, १७, १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ११ (१९/४३ बाद), १४, १५, १६, ३५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२,	ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,	अप्रैल १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १६, १७, १८, २३ (११/४४ बाद), २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ४, १० (२०/०० बाद), ११, १२, १३, १६, १९ (१९/५९ बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १८, १९, २५ (१६/२२ बाद), २९, ३०; नवं. ५, ८, ९, १०, ११, १३, १४, २२, २३; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५ (११/२८ बाद), १६, १७, १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ११ (१९/४३ बाद), १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२,	---

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७६ वि.) (६ अप्रैल, सन् २०१९ ई. से २४ मार्च, सन् २०२० ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
मिथुन	अप्रैल १५, १६, १९ (८/२४ बाद), २०, २२, २८ (१५/४५ बाद); मई ६, ७, १२, १३; जून १६, १९ (१९/५९ तक), २२ (७/३९ बाद), २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, १०, ११, १३; अक्तू. १८, १९, २३, २४, २५ (१६/२२ तक), २९, ३०, ३१; नवं. १, ५ (१६/४६ बाद), ८, ९, १०, ११, १३, १४, १९, २०, २१, २३ (२५/४५ बाद), २८; दिसं. २ (२४/५६ बाद), ३, ५, ६, ७, ८, ११; फर. १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १२,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६, १९ (८/२४ बाद), २०, २२, २८ (१५/४५ बाद); मई ६, ७, १२, १३, १६ (१६/५७ बाद), १७, १८, २३ (११/४४ तक), २५ (२३/४३ बाद), २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १० (२०/०० तक), १२ (२३/२१ बाद), १३, १६, १९ (१९/५९ तक), २२ (७/३९ बाद), २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ९, १३, १४, १५, १८, १९, २३, २४, २५ (१६/२२ तक), २९, ३०, ३१; नवं. १, ५ (१६/४६ बाद), ८, ९, १०, ११, १३, १४, १९, २०, २१, २३ (२५/४५ बाद), २८; दिसं. २ (२४/५६ बाद), ३, ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५ (११/२८ तक), १७ (१३/४९ बाद), १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११ (१९/४३ तक), १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १२,	- - -
कर्क	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९ (८/२४ तक), २२, २६, २७, २८ (१५/४५ तक); मई ६, ७, १२, १३, १६ (१६/५७ तक), १८, २३, २४, २५ (२३/४३ तक), २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२ (२३/२१ तक); अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, १३, १४, १५; नवं. १९, २०, २१, २२, २३ (२५/४५ तक), २८; दिसं. १, २ (२४/५६ तक), ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७ (१३/४९ तक), १९, २०, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११,	माघ,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९ (८/२४ तक), २२, २६, २७, २८ (१५/४५ तक); मई ६, ७, १२, १३, १६ (१६/५७ तक), १८, २३, २४, २५ (२३/४३ तक), २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२ (२३/२१ तक), १६, १९, २०, २१, २२ (७/३९ तक), २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, १३, १४, १५, १८, १९, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५ (१६/४६ तक), ८, ९, १०, ११, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३ (२५/४५ तक), २८; दिसं. १, २ (२४/५६ तक), ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७ (१३/४९ तक), १९, २०, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११,	- - -
सिंह	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, २३, २४, २५, ३० (२३/०३ बाद), ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १९, २०, २१, २२, २७ (७/४३ बाद), २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११; अक्तू. ४, ५, ७, ८, ९, १४ (१०/२० बाद), १५, १८, १९, २३, २४, २५, ३१; नवं. १, ५, १० (१७/१८ बाद), ११, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १८, २६, ३१ (१८/०९ बाद); फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, २७ (२५/०८ बाद), २८; मार्च १०, ११, १२.	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, २३, २४, २५, ३० (२३/०३ बाद), ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १९, २०, २१, २२, २७ (७/४३ बाद), २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११; अक्तू. ४, ५, ७, ८, ९, १४ (१०/२० बाद), १५, १८, १९, २३, २४, २५, ३१; नवं. १, ५, १० (१७/१८ बाद), ११, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. १, २, ३, ८, ११; जन. १५, १६, १७, १८, २६, ३१ (१८/०९ बाद); फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, २७ (२५/०८ बाद), २८; मार्च १०, ११, १२,	- - -
कन्या	मई १६, १७, १८, २३ (११/४४ बाद), २४, २५, २८, २९, ३० (२३/०३ तक); जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १९ (१९/५९ बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २७ (७/४३ तक); जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ७, ८, ९, १३, १४ (१०/२० तक), १८, १९, २३, २४, २५, २९, ३०; नवं. ५, ८, ९, १० (१७/१८ तक), १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ११; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१ (१८/०९ तक); फर. ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १६, २५, २६, २७ (२५/०८ तक); मार्च १०, ११, १२,	ज्येष्ठ, आश्विन, कार्त्तिक, माघ,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, १८, २३ (११/४४ बाद), २४, २५, २८, २९, ३० (२३/०३ तक); जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १९ (१९/५९ बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २७ (७/४३ तक); जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ७, ८, ९, १३, १४ (१०/२० तक), १८, १९, २३, २४, २५, २९, ३०; नवं. ५, ८, ९, १० (१७/१८ तक), १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ११; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१ (१८/०९ तक); फर. ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १६, २५, २६, २७ (२५/०८ तक); मार्च १०, ११, १२,	- - -
तुला	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २८ (१५/४५ बाद); मई १२, १३; जून १६, १९ (१९/५९ तक), २२ (७/३९ बाद), २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. १९, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५ (१६/४६ बाद), ८, ९, १०, ११, १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. २ (२४/५६ बाद), ३, ५, ६, ७, ८; फर. १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २८ (१५/४५ बाद); मई १२, १३, १६, १७, १८, २३ (११/४४ तक), २५ (२३/४३ बाद), २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १९ (१९/५८ तक), २२ (७/३९ बाद), २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ९, १३, १४, १५, १९, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५ (१६/४६ बाद), ८, ९, १०, ११, १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. २ (२४/५६ बाद), ३, ५, ६, ७, ८; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६ २९, ३०, ३१; फर. १, ९, १०, ११, १४; १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२.	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७६ वि.) (६ अप्रैल, सन् २०१९ ई. से २४ मार्च, सन् २०२० ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
वृश्चिक	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८ (१५/४५ तक); मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, १८, २३, २४, २५ (२३/४३ तक), २८, २९, ३०, ३१; जून ८, ९, १०, ११, १२, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, १३, १४, १५; नवं. १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. १, २ (२४/५६ तक), ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११,	ज्येष्ठ,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८ (१५/४५ तक); मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, १८, २३, २४, २५ (२३/४३ तक), २८, २९, ३०, ३१; जून ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १९, २०, २१, २२ (७/३९ तक), २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, १३, १४, १५, १८, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५ (१६/४६ तक), ८, ९, १०, ११, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. १, २ (२४/५६ तक), ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११, १२,	- - -
धनु	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, १८, २३, २४, २५, ३० (२३/०३ बाद), ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १९, २०, २१, २२, २७ (७/४३ बाद), २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४ (१०/२० बाद), १५, १८, १९, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, १० (१७/१८ बाद), ११, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, ३१ (१८/०९ बाद); फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १६, २७ (२५/०८ बाद), २८; मार्च १०, ११, १२,	आषाढ़, माघ,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६, १७, १८, २३, २४, २५, ३० (२३/०३ बाद), ३१; जून ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १९, २०, २१, २२, २७ (७/४३ बाद), २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४ (१०/२० बाद), १५, १८, १९, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, १० (१७/१८ बाद), ११, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३, २८; दिसं. १, २, ३, ८, ११; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २०, २६, ३१ (१८/०९ बाद); फर. १, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १६, २७ (२५/०८ बाद), २८; मार्च १०, ११, १२,	- - -
मकर	मई १६, १७, १८, २३, २४, २५, २८, २९, ३० (२३/०३ तक); जून ४, १० (२०/०० बाद), ११, १२, १३, १६, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७ (७/४३ तक); जुला. ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४ (१०/२० तक), १८, १९, २५ (१६/२२ बाद), २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १० (१७/१८ तक), १३, १४, २२, २३, २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ११; जन. १५ (११/२८ बाद), १६, १७, १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१ (१८/०९ तक); फर. ३, ४, ११ (१९/४३ बाद), १४, १५, १६, २५, २६, २७ (२५/०८ तक); मार्च १०, ११, १२,	ज्येष्ठ, आश्विन, माघ, फाल्गुन,	अप्रैल १७, १८, १९, २०, २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १६, १७, १८, २३, २४, २५, २८, २९, ३० (२३/०३ तक); जून ४, १० (२०/०० बाद), ११, १२, १३, १६, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७ (७/४३ तक); जुला. ८, ९, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४ (१०/२० तक), १८, १९, २५ (१६/२२ बाद), २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १० (१७/१८ तक), १३, १४, २२, २३, २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ११; जन. १५ (११/२८ बाद), १६, १७, १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१ (१८/०९ तक); फर. ३, ४, ११ (१९/४३ बाद), १४, १५, १६, २५, २६, २७ (२५/०८ तक); मार्च १०, ११, १२,	- - -
कुम्भ	अप्रैल १५, १६, १९ (८/२४ बाद), २०, २२, २६, २७, २८; मई १२, १३; जून १६, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, १०, ११, १३; अक्तू. १९, २३, २४, २५ (१६/२२ तक), २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १०, ११, १९, २०, २१, २३ (२५/४५ बाद), २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८; फर. १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १२,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६, १९ (८/२४ बाद), २०, २२, २६, २७, २८; मई १२, १३, १६ (१६/५७ बाद), १७, १८, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ४, ८, ९, १० (२०/०० तक), १२ (२३/२१ बाद), १३, १६, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, १०, ११, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १९, २३, २४, २५ (१६/२२ तक), २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १०, ११, १९, २०, २१, २३ (२५/४५ बाद), २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८; जन. १५ (११/२८ तक), १७ (१३/४९ बाद), १८, १९, २०, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ९, १०, ११ (१९/४३ तक), १४, १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १२,	- - -
मीन	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९ (८/२४ तक), २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६ (१६/५७ तक), १८, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ८, ९, १०, ११, १२ (२३/२१ तक); अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४, १५; नवं. १९, २०, २१, २२, २३ (२५/४५ तक), २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७ (१३/४९ तक), १९, २०, २६, २९, ३०, ३१; फर. १, ३, ४, ९, १०, ११,	आश्विन,	अप्रैल १५, १६, १७, १८, १९ (८/२४ तक), २२, २६, २७, २८; मई ६, ७, १२, १३, १६ (१६/५७ तक), १८, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; जून ८, ९, १०, ११, १२ (२३/२१ तक), १६, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २७, २८; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १३; अक्तू. २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १८, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; नवं. १, ५, ८, ९, १०, ११, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३ (२५/४५ तक), २८; दिसं. १, २, ३, ५, ६, ७, ८, ११; जन. १५, १६, १७ (१३/४९ तक), १९, २०, २६, २९, ३०, ३१; [illegible] १५, १६, २५, २६, २७, २८; मार्च १०, ११,	- - -

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाये होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि—अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सकता, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*—यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७६ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।— प्रियव्रत शर्मा।

तिथि-वार				तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ (६ अप्रै., २०१९) से १३ अप्रै., २०१९ ई. तक सूर्य मीनस्थ।						
चैत्र	शु.	९	र.	अप्रैल १४	मघा	संक्रान्तिदिन,
चैत्र	शु.	१४	गु.	अप्रैल १८	चित्रा	भद्रा,
वैशा.	कृ.	२	र.	अप्रैल २१	अनु.	व्यतीपात, भद्रा,
वैशा.	कृ.	४	मं.	अप्रैल २३	मूल	राहुवेध,
वैशा.	कृ.	५	बु.	अप्रैल २४	मूल	राहुवेध,
वैशा.	कृ.	६	गु.	अप्रैल २५	उ.षा.	केतुयुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	७	शु.	अप्रैल २६	उ.षा.	केतुयुति अपरिहार्य,
वैशा.	शु.	३	मं.	मई ७	मृग.	केतुवेध,
वैशा.	शु.	४	बु.	मई ८	मृग.	केतुवेध,
वैशा.	शु.	१०	मं.	मई १४	उ.फा.	मासान्त,
वैशा.	शु.	११	बु.	मई १५	उ.फा.	संक्रान्तिदिन,
वैशा.	शु.	११	बु.	मई १५	हस्त	संक्रान्तिदिन,
वैशा.	शु.	१२	गु.	मई १६	हस्त	कालाल्पता,
वैशा.	शु.	१२	गु.	मई १६	स्वा.	व्यतीपात,
ज्ये.	कृ.	२	चं.	मई २०	मूल	राहुवेध,
ज्ये.	कृ.	३	मं.	मई २१	मूल	राहुवेध,
ज्ये.	कृ.	४	बु.	मई २२	उ.षा.	लग्नाभाव,

तिथि-वार				तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये.	कृ.	६	शु.	मई २४	उ.षा.	लग्नाभाव,
ज्ये.	कृ.	६	श.	मई २५	श्रव.	लग्नाभाव,
ज्ये.	शु.	९	मं.	जून ११	हस्त	व्यतीपात,
ज्ये.	शु.	११	गु.	जून १३	चित्रा	लग्नाभाव,
ज्ये.	शु.	१२	शु.	जून १४	स्वा.	मासान्त,
ज्ये.	शु.	१३	श.	जून १५	अनु.	संक्रान्तिदिन,
ज्ये.	शु.	१५	चं.	जून १७	मूल	भौम-राहुवेध,
आषा.	कृ.	१	मं.	जून १८	मूल	भौम-राहुवेध,
आषा.	कृ.	३	गु.	जून २०	उ.षा.	भद्रा,
आषा.	कृ.	४	शु.	जून २१	श्रव.	वैधृति,
आषा.	कृ.	९	बु.	जून २६	उ.भा.	कालाल्पता,
आषा.	कृ.	९	बु.	जून २६	रेव.	मृत्युबाण,
आषा.	कृ.	१२	र.	जून ३०	रोहि.	क्षीणचन्द्र, भुजंगपात,
आषा.	शु.	६	चं.	जुला. ८	हस्त.	लग्नाभाव,
आषा.	शु.	११	शु.	जुला. १२	अनु.	लग्नाभाव,
आषा.	शु.	१३	र.	जुला. १४	मूल	सूर्य-शनिवेध,
आषा.	शु.	१४	चं.	जुला. १५	मूल	मासान्त, सूर्य-शनिवेध, ग्रहणवेध,

तिथि-वार				तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा.	शु.	१५	मं.	जुला. १६	उ.षा.	संक्रान्तिदिन, चन्द्रग्रहण, शुक्र-वार्धक्य,
श्राव.	कृ.	१	बु.	जुला. १७	उ.षा.	ग्रहणवेध, शुक्र — वार्धक्य,
श्राव.	कृ.	१	बु.	जुला. १७	श्रव.	ग्रहणवेध, शुक्र — वार्धक्य,
श्राव.	कृ.	२	गु.	जुला. १८	श्रव.	ग्रहणवेध, शुक्र - वार्धक्य,
शुक्र अस्त—श्राव. कृ. २ शु. से आश्वि. कृ. ३० श. (१९ जुला. से २८ सितं., २०१९ ई.) तक शुक्र अस्तदोष।						
आश्वि.	शु.	१	र.	सितं. २९	हस्त	क्षीणचन्द्र,
आश्वि.	शु.	१	र.	सितं. २९	चित्रा	नाना-नानी का श्राद्ध-दिन, शुक्रबाल्य,
आश्वि.	शु.	२	चं.	सितं. ३०	चित्रा	शुक्रबाल्य,
आश्वि.	शु.	२	चं.	सितं. ३०	स्वा.	वैधृति, शुक्रबाल्य,
आश्वि.	शु.	३	मं.	अक्तु. १	स्वा.	शुक्रबाल्य,
आश्वि.	शु.	८	र.	अक्तु. ६	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र,

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.)

तिथि-वार				तारीख २०१९-२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
आश्वि.	शु.	९	चं.	अक्तू.	७	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र,
आश्वि.	शु.	१३	शु.	अक्तू.	११	उ.भा.	भौमवेध,
आश्वि.	शु.	१४	श.	अक्तू.	१२	उ.भा.	भौमवेध,
आश्वि.	शु.	१५	र.	अक्तू.	१३	उ.भा.	भद्रा,
कार्त्ति.	कृ.	३	गु.	अक्तू.	१७	रोहि.	संक्रान्ति-दिन,
कार्त्ति.	शु.	६	श.	नवं.	२	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र,
कार्त्ति.	शु.	७	र.	नवं.	३	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र,
कार्त्ति.	शु.	७	र.	नवं.	३	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति.	शु.	८	चं.	नवं.	४	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति.	शु.	८	चं.	नवं.	४	धनि.	लग्नाभाव,
मार्ग.	कृ.	३	शु.	नवं.	१५	मृग.	मासान्त,
मार्ग.	शु.	१	बु.	नवं.	२७	अनु.	क्षीणचन्द्र,
मार्ग.	शु.	३	शु.	नवं.	२९	मूल	लग्नाभाव,
मार्ग.	शु.	४	श.	नवं.	३०	उ.षा.	क्रान्तिसाम्य,
मार्ग.	शु.	५	र.	दिसं.	१	उ.षा.	क्रान्तिसाम्य,
मार्ग.	शु.	१०	शु.	दिसं.	६	रेव.	व्यतीपात,
मार्ग.	शु.	१३	मं.	दिसं.	१०	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग.	शु.	१४	बु.	दिसं.	११	मृग.	गुरुवार्धक्य,

गुरु अस्त–मार्ग. शु. १५ गु. से माघ कृ. ३ चं. (१२ दिसं., '१९ से १३ जन., '२० ई.) तक गुरु-वार्धक्य, अस्त, बाल्य एवं धनु:स्थ सूर्यदोष।

तिथि-वार				तारीख		विवाह नक्षत्र	दोष
माघ	कृ.	४	मं.	जन.	१४	मघा	संक्रान्तिदिन,
माघ	कृ.	४	मं.	जन.	१४	उ.फा.	संक्रान्तिदिन,
माघ	कृ.	५	बु.	जन.	१५	हस्त	मृत्युबाण,

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
माघ	शु.	१	श.	जन.	२५	श्रव.	क्षीणचन्द्र,
माघ	शु.	१	श.	जन.	२५	धनि.	व्यतीपात,
माघ	शु.	१०	मं.	फर.	४	मृग.	शनिवेध,
माघ	शु.	११	बु.	फर.	५	मृग.	वैधृति, शनिवेध,
फाल्गु.	कृ.	४	बु.	फर.	१२	उ.फा.	मासान्त,
फाल्गु.	कृ.	४	बु.	फर.	१२	हस्त	मासान्त,
फाल्गु.	कृ.	५	गु.	फर.	१३	हस्त	संक्रान्तिदिन,
फाल्गु.	कृ.	५	गु.	फर.	१३	चित्रा	संक्रान्तिदिन,
फाल्गु.	कृ.	६	शु.	फर.	१४	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु.	कृ.	९	चं.	फर.	१७	मूल	भद्रा, ग्रहणनक्षत्र,
फाल्गु.	कृ.	१०	मं.	फर.	१८	मूल	ग्रहणनक्षत्र,
फाल्गु.	कृ.	१२	गु.	फर.	२०	उ.षा.	व्यतीपात, शनियुति–अपरिहार्य,
फाल्गु.	शु.	४	गु.	फर.	२७	अश्वि.	लग्नाभाव,

होलाष्टक–फाल्गु. शु. ७ चं. से फाल्गु. शु. १५ चं. (२ से ९ मार्च, २०२० ई.) तक होलाष्टक।

तिथि-वार				तारीख		विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र	कृ.	१	मं.	मार्च	१०	उ.फा.	भुजंगपात,
चैत्र	कृ.	२	बु.	मार्च	११	चित्रा	सूर्यवेध,
चैत्र	कृ.	३	गु.	मार्च	१२	चित्रा	सूर्यवेध,
चैत्र	कृ.	४	शु.	मार्च	१३	स्वा.	मासान्त,
चैत्र	कृ.	६	श.	मार्च	१४	अनु.	संक्रान्ति,

चैत्र कृ. ६ श. से वर्षान्त (१४ मार्च से २४ मार्च, २०२० ई.) तक मीनस्थ सूर्य।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिये हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिये, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिये गये शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं, उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है। ध्यान रहे—मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अतः दैवज्ञों को चाहिए कि—आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिये गये शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवं लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्-मुहूर्त्त' भी उपलब्ध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर 'अभिजित्-मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए; क्योंकि 'अभिजित्-मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गयी है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र. शु. १५ शु.	अप्रै. १९	चित्रा	६/०४ बाद,
वैशा. कृ. १० चं.	अप्रै. २९	शत.	८/४९ तक,
वैशा. कृ. ११ मं.	अप्रै. ३०	शत.	८/१४ तक,
वैशा. शु. ७ श.	मई ११	पुष्य	गुरु पादवेधाभाव,
ज्ये. कृ. ७ र.	मई २६	धनि.	८/४९ तक,
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई ३०	रेव.	
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	राहुयुति परिहार,
ज्ये. शु. ४ शु.	जून ७	पुष्य	७/३८ बाद, गुरुपादवेध विचार्य,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	हस्त	६/०६ बाद,
माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	
माघ शु. ३ चं.	जन. २७	शत.	
माघ शु. ३ मं.	जन. २८	शत.	८/२२ तक,
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	रेव.	१५/१२ बाद,
माघ शु. ७ श.	फर. १	अश्वि.	१८/११ तक,

मुण्डन में विशेष—किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ. ९ चं.	फर. १७	ज्ये.	१४/३५ बाद,
फाल्गु. कृ. १३ शु.	फर. २१	श्रव.	९/१३ से १७/२१ तक.
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	१५/१७ तक,
चैत्र कृ. २ बु.	मार्च ११	हस्त	

ध्यान दें—मुण्डन मुहूर्त्तों में दिए गए क्रूर एवं सौम्य दोनों प्रकार के वार चारों वर्णों के मुण्डन के लिए शुभ हैं। लेकिन रविवार ब्राह्मणों के लिए, भौमवार क्षत्रियों के लिए और शनिवार वैश्य एवं शूद्रों के लिए विशेष माने गए हैं।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ श.	मई १०	पुन.	१६/३२ तक, राहुयुति परिहार,
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	ह./चि.	८/१५ तक,
ज्ये. कृ. २ चं.	मई २०	ज्ये.	
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई ३०	रेव.	
ज्ये. कृ. १२ शु.	मई ३१	अश्वि.	
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	राहुयुति परिहार,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	हस्त	६/०६ बाद,
माघ कृ. ६ गु.	जन. १६	हस्त	९/४२ तक,
माघ कृ. ११ चं.	जन. २०	अनु.	

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	रेव.	१५/१२ बाद,
माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	रेव.	१५/५२ तक,
फाल्गु. कृ. ६ शु.	फर. १४	चि./स्वा.	स्वाती में बुध पादवेध विचार्य,
फाल्गु. कृ. ९ चं.	फर. १७	ज्ये.	१४/३५ बाद,
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	१५/१७ तक,
चैत्र कृ. २ बु.	मार्च ११	हस्त	

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ गु.	मई ९	पुन.	१६/१७ बाद, राहुयुति परिहार,
वैशा. शु. ६ शु.	मई १०	पुष्य	१४/२१ बाद, गुरुपादवेध विचार्य,
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	हस्त	५/४१ तक,
ज्ये. कृ. ५ गु	मई २३	उ.षा.	
ज्ये. कृ. १० बु.	मई २९	उ.भा.	१५/२१ बाद,
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई ३०	रेव.	
ज्ये. कृ. १२ शु.	मई ३१	अश्वि.	१७/१७ तक,
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	९/५५ तक, राहुयुति परिहार,
ज्ये. शु. ४ शु.	जून ७	पुष्य	७/३८ बाद, गुरुपादवेध विचार्य,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	हस्त	६/०६ से ११/५१ तक,

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ५ बु.	जन. १५	उ.फा.	
माघ कृ. ६ गु.	जन. १६	हस्त	९/४२ तक,
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	उ.भा.	१५/१२ तक,
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	रेव.	१५/१२ बाद,
माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	रेव.	१५/५२ तक,
माघ शु. १२ गु.	फर. ६	आर्द्रा	
फाल्गु. कृ. ६ शु.	फर. १४	चि./स्वा.	स्वाती में बुध पादवेध-विचार्य,
फाल्गु. कृ. ११ बु.	फर. १९	पू.षा.	
फाल्गु. कृ. १२ गु.	फर. २०	पू.षा.	७/१९ तक,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	१५/१७ तक,
चैत्र कृ. २ बु.	मार्च ११	हस्त	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग—बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ मं.	मई ७	रोहि.	
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	चित्रा	८/१५ तक,
ज्ये. कृ. ५ गु.	मई २३	उ.षा.	
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	राहुयुति परिहार,
ज्ये. शु. ५ शु.	जून ७	पुष्य	७/३८ बाद,
*ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	हस्त	६/०६ बाद,
माघ कृ. ५ बु.	जन. १५	उ.फा.	
माघ शु. ३ चं.	जन. २७	शत.	
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	उ.भा.	

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. १० मं.	फर. ४	रोहि.	
माघ शु. १२ गु.	फर. ६	आर्द्रा	राहुयुति परिहार,
फाल्गु. कृ. ३ मं.	फर. ११	पू.फा.	
फाल्गु. शु. २ मं.	फर. २५	पू.भा.	
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	
*चैत्र कृ. २ बु.	मार्च ११	हस्त	

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में मुहूर्त्तों में रोगबाण है। लेकिन रोगबाण रात्रि के समय ही विशेषरूप से वर्जित माना गया है।

द्विरागमन-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
चैत्र शु. १३ बु.	अप्रै. १७	उ.फा.	१८/३० तक,
वैशा. शु. ५ गु.	मई ९	पुन.	१५/१७ से १९/०० तक, राहुयुति परिहार,
वैशा. शु. ६ शु.	मई १०	पुन.	१४/२१ तक, राहुयुति, परिहार,
वैशा. शु. ६ शु.	मई १०	पुष्य	१४/२१ से १६/३२ तक, गुरुपादवेध विचार्य,
मार्ग. शु. ६ चं.	दिसं. २	श्रव.	११/४३ तक,
मार्ग. शु. १० शु.	दिसं. ६	उ.भा.	१६/३० तक,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	२२/०८ तक,
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	१५/१७ तक,

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १ श.	अप्रै. २०	स्वा.	
*वैशा. कृ. १० चं.	अप्रै. २९	शत.	८/४९ तक,
कार्त्ति. कृ. १ चं.	अक्तू. १४	रेव.	१०/२० तक,
*कार्त्ति. कृ. ४ शु.	अक्तू. १८	रोहि.	७/२९ से १६/५९ तक,
*कार्त्ति. कृ. ७ चं.	अक्तू. २१	पुष्य	१७/३२ बाद, गुरुपादवेध-विचार्य,
*कार्त्ति. कृ. १२ शु.	अक्तू. २५	उ.फा.	११/०० बाद,
*कार्त्ति. शु. ३ बु.	अक्तू. ३०	अनु.	
कार्त्ति. शु. ९ बु.	नवं. ६	शत.	७/२१ बाद,
कार्त्ति. शु. १० गु.	नवं. ७	शत.	८/४१ तक, अग्निबाण-परिहार,
कार्त्ति. शु. ११ शु.	नवं. ८	उ.भा.	१२/२४ बाद,
कार्त्ति. शु. १२ श.	नवं. ९	उ.भा.	१०/१४ तक, ११/२६ से १४/५५ तक,
मार्ग. कृ. २ गु.	नवं. १४	रोहि.	
*मार्ग. कृ. ६ चं.	नवं. १८	पुष्य	१७/१० तक,
*मार्ग. कृ. ९ गु.	नवं. २१	उ.फा.	१८/२९ बाद,
*मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २२	उ.फा.	९/०१ से १६/४१ तक,
*मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २२	हस्त	१६/४१ बाद,
*मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. २३	हस्त	१४/४४ तक,
*मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. २३	चित्रा	१४/४४ बाद,
*माघ कृ. ६ गु.	जन. १६	हस्त	९/४२ तक,
*माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	अग्निबाण परिहार,
*माघ कृ. ११ चं.	जन. २०	अनु.	
*माघ शु. ३ चं.	जन. २७	शत.	
*माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	रेव.	१५/१२ बाद,
*माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	रेव.	१८/०९ तक,
*फाल्गु. कृ. ६ शु.	फर. १४	स्वा.	७/२७ से १८/२१ तक, बुधपादवेध विचार्य,
*फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में केवल वृष-वास्तुचक्र शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये मुहूर्त्त सर्वथा शुद्ध हैं।

गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. कृ. ३ चं.	अप्रै. २२	अनु.	११/२५ से १६/४५ तक,
वैशा. कृ. १३ गु.	मई २	रेव.	१५/४३ बाद,
*वैशा. शु. २ चं.	मई ६	रोहि.	१६/३६ बाद,
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	चित्रा	५/४१ बाद,
*ज्ये. कृ. ५ गु.	मई २३	उ.षा.	२३/३५ तक,
ज्ये. कृ. १० बु.	मई २९	उ.भा.	१५/२१ बाद,
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई ३०	रेव.	
ज्ये. शु. ८ चं.	जून १०	उ.फा.	१४/२० बाद,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	चित्रा	११/५१ बाद,
*माघ कृ. ५ बु.	जन. १५	उ.फा.	
*माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	
माघ कृ. ११ चं.	जन. २०	अनु.	२३/०८ तक,
*माघ शु. ४ बु.	जन. २९	उ.भा.	१२/१३ बाद,
*माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	उ.भा.	१५/१२ तक,
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	रेव.	१५/१२ बाद,

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में कलशचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१९ ई.)

(उत्तरायणकाल)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १३ बु.	अप्रै. १७	उ.फा.	
चैत्र शु. १५ शु.	अप्रै. १९	चित्रा	११/३२ तक,
वैशा. कृ. १ श.	अप्रै. २०	स्वा.	
वैशा. कृ. ८ श.	अप्रै. २७	श्र.	
वैशा. कृ. १० चं.	अप्रै. २९	शत.	८/४९ तक,
वैशा. कृ. १३ गु.	मई २	उ.भा.	१३/०१ तक,
वैशा. शु. ६ शु.	मई १०	पुन.	राहुयुति परिहार,
वैशा. शु. ७ श.	मई ११	पुष्य	गुरुपादवेध विचार्य,

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	चित्रा	
ज्ये. कृ. १ र.	मई १९	अनु.	
ज्ये. कृ. ५ गु.	मई २३	उ.षा.	
ज्ये. कृ. ७ र.	मई २६	धनि.	११/५८ तक,
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई ३०	रेव.	
ज्ये. कृ. १२ शु.	मई ३१	अश्वि.	
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	९/५५ तक, राहुयुति परिहार,
ज्ये. शु. ४ शु.	जून ७	पुष्य	७/३८ बाद, गुरुपादवेध विचार्य,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	हस्त	६/०६ से ११/५१ तक,
माघ कृ. ५ बु.	जन. १५	उ.फा.	
माघ कृ. ६ गु.	जन. १६	हस्त	९/४२ तक,
माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	
माघ कृ. ११ चं.	जन. २०	अनु.	
माघ शु. १ श.	जन. २५	श्रव.	
माघ शु. ३ चं.	जन. २७	शत.	
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	उ.भा.	
माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	रेव.	
माघ शु. ७ श.	फर. १	अश्वि.	
फाल्गु. कृ. ६ शु.	फर. १४	स्वा.	७/२७ बाद, बुधपादवेध विचार्य,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. १६	अनु.	११/४८ तक,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	
चैत्र कृ. २ बु.	मार्च १४	हस्त	

तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(दक्षिणायनकाल)			
आषा. कृ. ५ श.	जून २२	धनि.	
आषा. कृ. ६ र.	जून २३	शत.	
आषा. कृ. ९ गु.	जून २७	अश्वि.	७/४३ बाद,
आषा. कृ. १० शु.	जून २८	अश्वि.	६/३६ से ९/११ तक,
आषा. शु. १ बु.	जुला. ३	पुन.	६/३६ से ११/४१ तक, राहुयुति परिहार,
आषा. शु. २ गु.	जुला. ४	पुष्य	भौमयुति परिहार, गुरुपादवेध विचार्य,
आषा. शु. ६ चं.	जुला. ८	उ.फा.	
आषा. शु. १० गु.	जुला. ११	स्वा.	
कार्त्ति. शु. १२ श.	नवं. ९	उ.भा.	
कार्त्ति. शु. १३ र.	नवं. १०	रेव.	
मार्ग. कृ. २ गु.	नवं. १४	रोहि.	
मार्ग. कृ. ५ र.	नवं. १७	पुन.	गुरुपादवेध विचार्य,
मार्ग. कृ. ६ चं.	नवं. १८	पुष्य	
मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २२	उ.फा.	९/०१ बाद,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. २३	हस्त	
मार्ग. कृ. १३ र.	नवं. २४	चित्रा	
मार्ग. शु. १ बु.	नवं. २७	अनु.	८/१२ तक,
मार्ग. शु. ५ र.	दिसं. १	उ.षा.	९/४० तक,
मार्ग. शु. ५ र.	दिसं. १	श्रव.	९/४० बाद,
मार्ग. शु. ६ चं.	दिसं. २	श्रव.	
मार्ग. शु. १० शु.	दिसं. ६	उ.भा.	
मार्ग. शु. ११ र.	दिसं. ८	अश्वि.	८/२९ बाद,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १३ बु.	अप्रै. १७	उ.फा.	१८/३० तक,
चैत्र शु. १५ शु.	अप्रै. १९	चित्रा	६/०४ बाद,
वैशा. शु. २ चं.	मई ६	रोहि.	१६/३६ बाद,
वैशा. शु. ६ शु.	मई १०	पुष्य	१४/२१ से १६/३२ तक,
			गुरुपादवेध विचार्य,
वैशा. शु. ७ श.	मई ११	पुष्य	१३/१३ तक,
			गुरुपादवेध विचार्य,
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	चित्रा	५/४१ बाद,
ज्ये. कृ. १ र.	मई १९	अनु.	
ज्ये. कृ. ५ गु.	मई २३	उ.षा.	
ज्ये. कृ. १० बु.	मई २९	उ.भा.	१५/२१ बाद,
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई ३०	रेव.	
ज्ये. शु. ४ शु.	जून ७	पुष्य.	८/३८ से १८/५६ तक,
			गुरुपादवेध विचार्य,
ज्ये. शु. ८ चं.	जून १०	उ.फा.	१४/२० बाद,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १२	हस्त	६/०६ से ११/५१ तक,
आषा. कृ. २ बु.	जून १९	उ.षा.	१३/२९ बाद,
आषा. कृ. ९ गु.	जून २७	रेव.	५/४४ से ७/४३ तक,
आषा. कृ. १२ र.	जून ३०	रोहि.	१०/०१ से १९/५५ तक,
आषा. शु. ६ चं.	जुला. ८	उ.फा.	१५/२६ तक,
आषा. शु. १२ श.	जुला. १३	अनु.	१६/२७ तक,
आश्वि. शु. ५ गु.	अक्तू. ३	अनु.	१२/१० तक,
आश्वि. शु. १५ र.	अक्तू. १३	रेव.	१३/३७ बाद,
कार्त्ति. कृ. १ चं.	अक्तू. १४	रेव.	१०/२० तक,
कार्त्ति. कृ. १ चं.	अक्तू. १४	अश्वि.	१०/२० बाद,
कार्त्ति. कृ. ४ शु.	अक्तू. १८	रोहि.	७/२९ से १६/५९ तक,
कार्त्ति. कृ. ४ शु.	अक्तू. १८	मृग.	१६/५९ बाद,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१९-२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. कृ. ५ श.	अक्तू. १९	मृग.	१५/०० से १७/४० तक,
कार्त्ति. कृ. १२ शु.	अक्तू. २५	उ.फा.	११/०० बाद,
कार्त्ति. कृ. १४ र.	अक्तू. २७	चित्रा	१२/२३ बाद,
कार्त्ति. शु. ३ बु.	अक्तू. ३०	अनु.	
कार्त्ति. शु. ११ शु.	नवं. ८	उ.भा.	१२/२४ बाद,
कार्त्ति. शु. १२ श.	नवं. ९	उ.भा.	१४/५५ तक,
कार्त्ति. शु. १२ श.	नवं. ९	रेव.	१४/५५ बाद,
कार्त्ति. शु. १३ र.	नवं. १०	रेव.	१६/३३ तक,
मार्ग. कृ. २ गु.	नवं. १४	रोहि.	
मार्ग. कृ. ६ चं.	नवं. १८	पुष्य	१७/१० तक, शुक्र
			पादवेध विचार्य,
मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २२	उ.फा.	९/०१ से १६/४१ तक,
मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २२	हस्त	१६/४१ बाद,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. २३	हस्त	१४/४४ तक,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. २३	चित्रा	१४/४४ बाद,
मार्ग. कृ. १३ र.	नवं. २४	चित्रा	१२/४७ तक,
मार्ग. शु. १ बु.	नवं. २७	अनु.	८/१२ तक,
मार्ग. शु. ५ र.	दिसं. १	उ.षा.	९/४० तक,
मार्ग. शु. १० शु.	दिसं. ६	उ.भा.	
मार्ग. शु. ११ र.	दिसं. ८	अश्वि.	१७/१५ तक,
माघ कृ. ५ बु.	जन. १५	उ.फा.	
माध कृ. ६ गु.	जन. १६	हस्त	९/४२ तक,
माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	
माघ कृ. ११ चं.	जन. २०	अनु.	
माघ शु. ४ बु.	जन. २९	उ.भा.	१२/१३ बाद,
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	उ.भा.	१५/१२ तक,
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	रेव.	१५/१२ बाद,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	रेव.	१८/०९ तक,
माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	अश्वि.	१८/०९ बाद,
माघ शु. ७ श.	फर. १	अश्वि.	१८/११ तक,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. १६	अनु.	११/४८ तक,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	२२/०८ तक,
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	१५/१७ तक,
चैत्र कृ. २ बु.	मार्च ११	हस्त	

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त "सात्त्विक देवप्रतिष्ठा" वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्तकाल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि—सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें—गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमश: शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का ही निर्देश किया गया है। शिवप्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अत: यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा-मुहूर्त्त लगाए गए हैं। इन मुहूर्त्तों में भी गुरु-शुक्रास्तकाल तथा सिंहाशकस्थ सिंहगत गुरु, भद्रा आदि को वर्जित किया जाता है।

श्रीगणेश, शिव, गौरी, दुर्गा, विष्णु, कृष्ण, राम, भैरव, हनुमान्, स्कन्द, नाग और परशुराम की मूर्ति-प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्त (सं. २०७६ वि.) (सन् २०१९-२० ई.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

पृष्ठ 285 पर सर्वदेव एवं तामसदेवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त दिये गये हैं। यद्यपि इन श्रीगणेश आदि 12 देवों की प्रतिष्ठा उन मुहूर्तों में निःशंक की जा सकती है, पुनरपि मुहूर्त्तशास्त्र में इन देवों की प्रतिष्ठा इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों एवं वारों में भी करने का विशेष निर्देश है। तदनुसार हम यहां इन गणेशादि देवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों, वारों के अनुसार भी साधित कर निर्दिष्ट करना हमने विगत वर्ष से प्रारम्भ किया है। श्रद्धालु लोग इन 12 देवों के इन अतिरिक्त प्रतिष्ठा-मुहूर्तों को भी अपेक्षानुसार उपयोग में ला सकते हैं। जान लीजिये--गणेश की तिथि कृ. चतुर्थी, शिव की तिथि कृ. चतुर्दशी और नक्षत्र आर्द्रा, गौरी की तिथि शु. तृतीया, दुर्गा की तिथि शु. नवमी और नक्षत्र मूल, विष्णु की तिथि शु. द्वादशी और नक्षत्र श्रवण, कृष्ण की तिथि कृ. अष्टमी, राम की तिथि शु. नवमी, हनुमान् की तिथि कृ. चतुर्दशी और वार मंगल, स्कन्द की तिथि शु. षष्ठी, नाग की तिथि शु. पंचमी, भैरव की तिथि कृ. अष्टमी तथा परशुराम की तिथि शु. तृतीया है। ध्यान दें--यहां इन सभी देवताओं की अपनी-अपनी तिथियां तो हैं, लेकिन अपना नक्षत्र कुछ ही देवताओं का है। **किञ्च**--अपना वार श्री हनुमान् जी का ही है। शेष देवताओं का कोई अपना वार भी नहीं है। ध्यान दें--कुछ नक्षत्र ऐसे भी हैं, जिनमें किसी भी देवता की प्रतिष्ठा को जा सकती है, जिनका प्रयोग हमने गत पृष्ठों पर "सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों" में किया है। यदि कहीं उन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हमें इन गणेशादि देवों के मुहूर्त्तकाल में प्राप्त हुआ है, उसका भी यहां हमने निर्देश नक्षत्र वाले कॉलम में किया है, अर्थात् उस नक्षत्र का वहां प्रयोग किया गया है।

यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि--इन 12 देवताओं की प्रतिष्ठा के ये मुहूर्त्तकाल गत पृष्ठ पर दिये सर्वदेव और तामसदेवों के प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तकालों की ही तरह युति, वेध, क्रान्तिसाम्य, गुरु-शुक्रास्त, भद्रा आदि सभी दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। ये सर्वथा शुद्ध हैं। इन्हें निःशंक प्रयोग में लाइये। **अपिच**--दैवज्ञ को यह भी जान लेना चाहिए कि--देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्न (दिन के पूर्वार्ध) में ही की जाती है। यहां "शुद्धकाल" वाले कॉलम में अनेकत्र शुद्धकाल नहीं दिया गया है। ऐसे स्थलों पर समझना चाहिए कि वहां प्रतिष्ठा के लिए पूरा पूर्वाह्न काल दोषमुक्त है।

श्रीगणेश-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. चतुर्थी)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ४ बु.	मई २२	---	---

श्रीगौरी-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ मं.	मई ७	रोहि.	
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	राहुयुति परिहार,
माघ शु. ३ चं.	जन. २७	शत.	
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	

श्रीशिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, आर्द्रा)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. १४ र.	जून २	---	---

श्रीस्कन्द-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ६)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ शु.	मई १०	पुन.	राहुयुति परिहार,
ज्ये. शु. ६ श.	जून ८		
माघ शु. ६ शु.	जन. ३१	रेव.	
फाल्गु. शु. ६ र.	मार्च १		११/१६ तक,

श्रीहनुमान्-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, मंगल)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. १४ र.	जून २	---	---

श्रीनाग-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ५)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. ४ शु.	जून ७	पुष्य	७/३८ बाद, गुरुपादवेध विचार्य,
मार्ग. शु. ५ र.	दिसं. १	उ.षा. /श्रव.	
माघ शु. ५ गु.	जन. ३०	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २८	अश्वि.	

श्रीदुर्गा-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९, मूल)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ९ चं.	मई १३		८/१६ तक, ११/५२ बाद,
ज्ये. शु. ९ मं.	जून ११	उ.फा.	८/४५ तक,
माघ शु. ९ चं.	फर. ३		११/०६ तक,

श्रीभैरव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ८ श.	अप्रै. २७	श्रव.	
आषा. कृ. ८ मं.	जून २५	उ.भा.	
मार्ग. कृ. ८ बु.	नवं. २०		८/३० बाद,
माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	७/२८ बाद,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. १६	अनु.	११/४८ तक,

श्रीराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ९ चं.	मई १३		८/१६ तक, ११/५२ बाद,
ज्ये. शु. ९ मं.	जून ११	उ.फा.	८/४५ तक,
माघ शु. ९ चं.	फर. ३		११/०६ तक,

श्रीपरशुराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ मं.	मई ७	रोहि.	
ज्ये. शु. ३ गु.	जून ६	पुन.	राहुयुति परिहार,
माघ शु. ३ चं.	जन. २७	शत.	
फाल्गु. शु. ३ बु.	फर. २६	उ.भा.	

श्रीकृष्ण-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ८ श.	अप्रै. २७	श्रव.	
माघ कृ. ७ शु.	जन. १७	चित्रा	७/२८ बाद,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. १६	अनु.	११/४८ तक,

श्रीविष्णु-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. १२, श्रवण)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १२ मं.	अप्रै. १६		११/४९ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	मई १६	चित्रा	८/१५ तक,
मघा. शु. १२ गु.	फर. ६		गुरुपादवेध विचार्य, राहुयुति परिहार,

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७६ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ-समाप्तिकालों के साधन में श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय—कुराली (पं.) के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है।—प्रियव्रत शर्मा

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि—इन तिथि-भ-वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं। अत्यन्त शीघ्रता की स्थिति में किसी भी शुभकार्य को सम्पन्न करने के लिए यदि गुरु-शुक्रास्त आदि दोषों के कारण शुभ (शुद्ध) समय न मिल पा रहा हो तो वहां इन शुभ (सर्वार्थसिद्धि आदि) योगों का प्रश्रय लेना चाहिए—ऐसी शास्त्राज्ञा है। अत: इन सुयोगों के काल में आप किसी भी शुभकार्य को नि:संकोच सम्पन्न कर सकते हैं। **ध्यान रहे**—इन सुयोगों के कालनिर्णय में भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि दोषों का विचार नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग—जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाये, तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन-कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश गुरु-शुक्रास्त आदि का विचार असम्भव होने पर इन सर्वार्थसिद्धि आदि योगों का आश्रय लेना चाहिए। **यहां ब्रैकेटों (Brackets) में दिये गये अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गये हैं।** ये योग (अमृतसिद्धि संज्ञक सर्वार्थसिद्धि योग) जिन-जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी हमने यहां साथ-साथ कर दिया है। **ध्यान रहे**—गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नये घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें नि:संकोच प्रयोग में लाइये।

रवियोग—रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति रखता है—**"कुयोगविध्वंस-करा: शुभेषु।"**

सिद्धियोग—सिद्धियोग भी **सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भांति ही प्रत्येक कार्य के लिए महत्त्वशाली माने गये हैं। सिद्धियोग में **यमघण्ट, विष** आदि कुयोगों का प्रभाव प्राय: समाप्त हो जाता है—ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग—मुहूर्त्तविदों का कथन है कि—इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाड़ी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है। **द्विपुष्करयोग**—ये योग त्रिपुष्करयोगों की ही भांति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर—इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है—**"त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।"**

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.
अप्रैल ७	सू.	उ.	अप्रैल ७	८	४४	अप्रैल २२	सू.	उ.	अप्रैल २२	१६	४५	मई १५	७	१६	मई १६	सू.	उ.	(जून ६	२०	२८	जून ७	सू.	उ.)गु.
अप्रैल ९	सू.	उ.	अप्रैल ९	१०	१९	अप्रैल २६	२३	१४	अप्रैल २८	२	१२	मई २४	७	३०	मई २५	१०	१४	जून १२	सू.	उ.	जून १२	११	५१
अप्रैल १०	सू.	उ.	अप्रैल ११	सू.	उ.	मई २	१३	१	मई ३	सू.	उ.	मई २८	१८	५८	मई २९	सू.	उ.	जून २१	सू.	उ.	जून २१	१८	१४
अप्रैल १२	९	५३	अप्रैल १३	सू.	उ.	(मई ३	सू.	उ.	मई ३	१४	३९)शु.	मई ३०	सू.	उ.	जून १	००	११	जून २५	सू.	उ.	जून २६	सू.	उ.
अप्रैल १४	सू.	उ.	अप्रैल १४	७	३९	मई ६	१६	३६	मई ७	सू.	उ.	जून ३	सू.	उ.	जून ४	०	५	जून २७	सू.	उ.	जून २८	९	११
अप्रैल १७	२३	३५	अप्रैल १८	सू.	उ.	मई ८	सू.	उ.	मई ८	१५	५९	(जून ४	०	५	जून ४	सू.उ.)चं.		जुलाई १	सू.	उ.	जुलाई १	९	२४
अप्रैल २०	सू.	उ.	अप्रैल २०	१७	५८	मई ९	१५	१७	मई १०	१४	२१	जून ६	सू.	उ.	जून ६	२०	२८	(जुलाई १	९	२४	जुलाई २	सू.उ.)चं.	

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१९ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०१९ ई.	घं.	मि.
(जुलाई ४	सू.	उ.	जुलाई ५	२	३०)गु.
जुलाई ७	२०	१३	जुलाई ८	सू.	उ.
जुलाई १४	१७	२५	जुलाई १५	सू.	उ.
जुलाई २३	सू.	उ.	जुलाई २३	१३	१३
जुलाई २५	सू.	उ.	जुलाई २५	१७	३९
(जुला. २७	११	३०	जुलाई २७	११	४६)श.
जुलाई २७	११	४६	जुलाई २८	सू.	उ.
(जुला.२९	सू.	उ.	जुला.२९	१८	२२)चं.
(अग. १	सू.	उ.	अग. १	१२	११)गु.
अग. ४	सू.	उ.	अग. ५	सू.	उ.
अग. ८	२१	२७	अग. ९	सू.	उ.
अग. ११	सू.	उ.	अग. १२	०	४५
अग. १८	१६	५४	अग. १९	सू.	उ.
(अग. २०	२२	२८	अग. २१	सू.	उ.)मं.
(अग. २४	सू.	उ.	अग. २५	४	१५)श.
अग. ३०	१७	११	अग. ३१	सू.	उ.
सितं. १	सू.	उ.	सितं. १	११	१०
(सितं. १	११	१०	सितं. २	सू.	उ.)र.
(सितं. ५	४	७	सितं. ५	सू.	उ.)बु.
सितं. ५	सू.	उ.	सितं. ६	४	८
सितं. ८	सू.	उ.	सितं. ८	६	२९
सितं. १५	सू.	उ.	सितं. १६	१	४४
(सितं. १७	सू.	उ.	सितं. १८	सू.	उ.)मं.
(सितं. २१	सू.	उ.	सितं. २१	११	२१)श.
सितं. २७	सू.	उ.	सितं. २८	१	४
(सितं. २९	सू.	उ.	सितं. २९	११	६)र.
(अक्तू. २	१२	५१	अक्तू. ३	सू.	उ.)बु.
अक्तू. ३	सू.	उ.	अक्तू. ३	१२	१०
अक्तू. ६	१५	३	अक्तू. ७	सू.	उ.
अक्तू. ७	१७	२५	अक्तू. ८	सू.	उ.

प्रारम्भ २०१९ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०१९ ई.	घं.	मि.
अक्तू. १३	सू.	उ.	अक्तू. १३	७	५२
(अक्तू. १५	सू.	उ.	अक्तू. १५	१२	३०)मं.
अक्तू. १६	१४	२१	अक्तू. १७	सू.	उ.
अक्तू. २१	१७	३२	अक्तू. २२	सू.	उ.
अक्तू. २२	१६	३८	अक्तू. २३	सू.	उ.
अक्तू. २५	सू.	उ.	अक्तू. २५	११	००
(अक्तू. ३०	सू.	उ.	अक्तू. ३०	२१	५९)बु.
नवं. ३	सू.	उ.	नवं. ४	०	५४
नवं. ४	सू.	उ.	नवं. ५	३	२३
नवं. १०	१७	१८	नवं. ११	सू.	उ.
नवं. १२	२०	५१	नवं. १४	सू.	उ.
नवं. १७	२२	५८	नवं. १८	२२	२०
नवं. १९	सू.	उ.	नवं. १९	२१	२२
(नवं. २७	सू.	उ.	नवं. २७	८	१२)बु.
दिसं. १	सू.	उ.	दिसं. १	९	४०
दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. २	११	४३
दिसं. ६	२२	५७	दिसं. ७	६	३४
(दिसं. ७	६	३४	दिसं. ७	सू.	उ.)शु.
दिसं. ८	सू.	उ.	दिसं. ९	३	३०
दिसं. १०	सू.	उ.	दिसं. ११	५	५७
दिसं. ११	सू.	उ.	दिसं. १२	सू.	उ.
दिसं. १४	५	५०	दिसं. १४	सू.	उ.
दिसं. १५	सू.	उ.	दिसं. १६	४	००
दिसं. २१	१९	४८	दिसं. २२	सू.	उ.
दिसं. २३	१७	३९	दिसं. २४	सू.	उ.
दिसं. २८	१८	४३	दिसं. २९	सू.	उ.
(सन् २०२० ई.)					
जन. ३	७	११	जन. ३	सू.	उ.
(जन. ३	सू.	उ.	जन. ४	सू.	उ.)शु.

प्रारम्भ २०२० ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२० ई.	घं.	मि.
जन. ५	सू.	उ.	जन. ५	१२	२७
जन. ७	सू.	उ.	जन. ७	१५	२४
जन. ८	सू.	उ.	जन. ९	सू.	उ.
जन. १०	१४	४८	जन. ११	सू.	उ.
जन. १२	सू.	उ.	जन. १२	११	४९
जन. १६	४	६	जन. १६	सू.	उ.
जन. १८	सू.	उ.	जन. १९	०	१५
जन. २०	सू.	उ.	जन. २०	२३	३०
जन. २५	२	४५	जन. २६	४	३५
जन. ३०	१५	१२	जन. ३१	सू.	उ.
(जन. ३१	सू.	उ.	जन. ३१	१८	९)शु.
फर. ४	०	५२	फर. ४	सू.	उ.
फर. ५	सू.	उ.	फर. ६	१	५८
फर. ७	१	२१	फर. ७	२४	००
फर. १२	११	४६	फर. १३	सू.	उ.
फर. २१	९	१३	फर. २२	११	१९
फर. २५	१९	१०	फर. २६	सू.	उ.
फर. २७	सू.	उ.	फर. २८	४	२
मार्च २	८	५५	मार्च ३	सू.	उ.
मार्च ४	सू.	उ.	मार्च ४	११	२३
मार्च ५	११	२६	मार्च ६	१०	३८
मार्च ११	सू.	उ.	मार्च ११	१८	५९
मार्च २०	सू.	उ.	मार्च २०	१७	५
मार्च २४	सू.	उ.	मार्च २५	४	१८

रवियोग (सन् २०१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ	घं.	मि.	समाप्त	घं.	मि.
अप्रैल ८	९	४२	अप्रैल ९	१०	१९
अप्रैल १०	१०	३३	अप्रैल ११	१०	२५
अप्रैल १३	८	५८	अप्रैल १६	४	१
अप्रैल १७	२३	३५	अप्रैल १८	२१	२५

रवियोग (सन् २०१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१९ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०१९ ई.	घं.	मि.
अप्रैल २४	१८	३५	अप्रैल २५	२०	३७
मई ७	१६	२७	मई ८	१५	५९
मई ९	१५	१७	मई १०	१४	२१
मई १३	१०	२७	मई १५	७	१६
मई १७	४	१६	मई १८	३	७
मई २४	७	३०	मई २५	१०	१४
मई २५	२०	२६	मई २६	१३	१३
जून ५	२१	५४	जून ६	२०	२८
जून ७	१८	५६	जून ८	१७	२२
जून ८	१८	१३	जून ९	१५	४८
जून ११	१३	००	जून १३	१०	५५
जून १५	९	५९	जून १६	१०	६
जून २४	०	७	जून २५	३	१
जुला. ५	२	३०	जुला. ६	०	१८
जुला. ६	१६	४९	जुला. ६	२२	१०
जुला. ७	२०	१३	जुला. ८	१८	३३
जुला. १०	१६	२१	जुला. १२	१५	५७
जुला. १४	१७	२५	जुला. १५	१८	५१
जुला. २३	१३	१३	जुला. २४	१५	४१
अग. ३	६	४३	अग. ३	१५	५७
अग. ४	४	५	अग. ५	१	४३
अग. ५	२३	४७	अग. ६	२२	२३
अग. ८	२१	२७	अग. १०	२३	५
अग. १३	२	५१	अग. १४	५	१८
अग. २२	०	४७	अग. २३	२	३६
सितं. २	८	३२	सितं. ३	६	२४
सितं. ४	४	५३	सितं. ५	४	७
सितं. ७	४	५७	सितं. ९	८	३५
सितं. ११	१३	५९	सितं. १२	१६	५८
सितं. २०	१०	१९	सितं. २१	११	२१

रवियोग
(सन् २०१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.
अक्तू. १	१४	२०	अक्तू. २	१२	५१
अक्तू. ३	१२	१०	अक्तू. ४	१२	११
अक्तू. ६	१५	३	अक्तू. ८	२०	१२
अक्तू. ११	२	१३	अक्तू. ११	७	२५
अक्तू. १२	५	९	अक्तू. १३	७	५२
अक्तू. १९	१७	४०	अक्तू. २०	१७	५२
अक्तू. ३०	२१	५९	अक्तू. ३१	२१	३१
नवं. १	२१	५१	नवं. २	२३	१
नवं. ५	३	२३	नवं. ८	१२	१२
नवं. १०	१७	१८	नवं. ११	१९	१७
नवं. १७	२२	५८	नवं. १८	२२	२०
नवं. २९	७	३३	नवं. ३०	८	१५
दिसं. १	९	४०	दिसं. २	११	४३
दिसं. ३	१२	२३	दिसं. ३	१४	१६
दिसं. ५	२०	७	दिसं. ८	१	२७
दिसं. १०	५	०	दिसं. ११	५	५७
दिसं. १८	१	२६	दिसं. १८	२४	००
दिसं. २८	१८	४३	दिसं. २९	१७	३५
दिसं. २९	२०	२९	दिसं. ३०	२२	४६
(सन् २०२० ई.)					
जन. १	१	२७	जन. २	४	२२
जन. ४	१०	५	जन. ६	१४	१५
जन. ८	१५	५१	जन. ९	१५	३७
जन. १६	४	६	जन. १७	२	३०
जन. २८	९	२२	जन. २२	१२	१३
जन. ३०	१५	१२	जन. ३१	१८	९
फर. २	२३	११	फर. ५	१	४९
फर. ७	२४	००	फर. ८	२२	५
फर. १४	७	२७	फर. १५	६	१
फर. २६	२२	८	फर. २८	१	८

रवियोग
(सन् २०२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.
फर. २९	४	२	मार्च १	६	४२
मार्च ३	१०	३१	मार्च ६	१०	३८
मार्च ८	६	५२	मार्च ९	४	९
मार्च १४	१२	२०	मार्च १५	११	२३

सिद्धियोग
(सन् २०१९-२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
अप्रैल २०	सू.	उ.	अप्रैल २०	१७	५८
मई ९	१५	१७	मई १०	सू.	उ.
मई २८	१८	५८	मई २९	सू.	उ.
जून ६	सू.	उ.	जून ६	२०	२८
जून २५	सू.	उ.	जून २६	सू.	उ.
जुलाई १४	१७	२५	जुलाई १५	सू.	उ.
जुलाई २३	सू.	उ.	जुलाई २३	१३	१३
अग. ११	सू.	उ.	अग. १२	०	४५
अग. ३०	१७	११	अग. ३१	सू.	उ.
सितं. ८	सू.	उ.	सितं. ८	६	२९
सितं. २७	सू.	उ.	सितं. २८	१	४
अक्तू. ७	१७	२५	अक्तू. ८	सू.	उ.
अक्तू. १६	१४	२१	अक्तू. १७	सू.	उ.
अक्तू. २५	सू.	उ.	अक्तू. २५	११	००
नवं. ४	सू.	उ.	नवं. ५	३	२३
नवं. १३	सू.	उ.	नवं. १३	२२	००
दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. २	११	४३
दिसं. २१	१९	४८	दिसं. २२	सू.	उ.
जन. १८	सू.	उ.	जन. १९	००	१५
फर. ७	१	२१	फर. ७	सू.	उ.
फर. २५	१९	१०	फर. २६	सू.	उ.
मार्च ५	११	२६	मार्च ६	सू.	उ.
मार्च २४	सू.	उ.	मार्च २५	४	१८

द्विपुष्करयोग
(सन् २०१९-२०२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१९-२० ई.	घं.	मि.	२०१९-२० ई.	घं.	मि.
मई २५	१०	१४	मई २६	८	४९
जून ४	१३	५७	जून ४	२३	८
जुलाई २८	१९	१७	जुलाई २९	सू.	उ.
अग. ६	१३	३०	अग. ६	२२	२३
सितं. २१	११	२१	सितं. २१	२०	२१
सितं. २९	२०	१३	सितं. ३०	सू.	उ.
नवं. २३	१४	४४	नवं. २४	३	४३
दिसं. ३	सू.	उ.	दिसं. ३	१४	१६
जन. २६	४	३५	जन. २७	६	१५
मार्च २१	सू.	उ.	मार्च २१	७	५६

त्रिपुष्करयोग
(सन् २०१९-२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
अप्रैल २०	१७	५८	अप्रैल २१	१२	३२
मई १	०	१८	मई १	सू.	उ.
मई ६	३	५९	मई ६	सू.	उ.
जून २४	०	७	जून २४	सू.	उ.
जून २९	९	५७	जून ३०	६	११
अग. १७	१३	५५	अग. १७	२२	४८
अग. २७	सू.	उ.	अग. २८	१	१३
अग. ३१	१४	७	सितं. १	८	२६
सितं. १०	सू.	उ.	सितं. १०	११	९
अक्तू. २०	१७	५२	अक्तू. २१	सू.	उ.
अक्तू. २९	सू.	उ.	अक्तू. २९	२३	११
नवं. ३	१	३१	नवं. ४	०	५४
दिसं. १४	सू.	उ.	दिसं. १४	८	४७
दिसं. २२	१८	३७	दिसं. २३	सू.	उ.
दिसं. २८	सू.	उ.	दिसं. २८	११	१०
जन. ७	सू.	उ.	जन. ७	१५	२४

त्रिपुष्करयोग
(सन् २०२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.
फर. १५	सू.	उ.	फर. १५	१६	२९
फर. २५	सू.	उ.	फर. २५	१९	१०
मार्च १	११	१६	मार्च २	सू.	उ.
मार्च १०	१९	२३	मार्च १०	२२	१

अमृतसिद्धियोग
(सन् २०१९-२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
(मई ३	सू.	उ.	मई ३	१४	३९)शु.
(जून ४	०	५	जून ४	सू.	उ.)चं.
(जून ६	२०	२८	जून ७	सू.	उ.)गु.
(जुला. १	९	२४	जुला. २	सू.	उ.)चं.
(जुला. ४	सू.	उ.	जुला. ५	२	३०)गु.
(जुला. २७	१९	३०	जुला. २७	१९	४६)श.
(जुला.२९	सू.	उ.	जुला.२९	१८	२२)चं.
(अग. १	सू.	उ.	अग. १	१२	११)गु.
(अग. २०	२२	२८	अग. २१	सू.	उ.)मं.
(अग. २४	सू.	उ.	अग. २५	४	१५)श.
(सितं. १	११	१०	सितं. २	सू.	उ.)र.
(सितं. ५	४	७	सितं. ५	सू.	उ.)बु.
(सितं. १७	सू.	उ.	सितं. १८	सू.	उ.)मं.
(सितं. २१	सू.	उ.	सितं. २१	११	२१)श.
(सितं. २९	सू.	उ.	सितं. २९	१९	६)र.
(अक्तू. २	१२	५१	अक्तू. ३	सू.	उ.)बु.
(अक्तू.१५	सू.	उ.	अक्तू.१५	१२	३०)मं.
(अक्तू.३०	सू.	उ.	अक्तू.३०	२१	५९)बु.
(नवं. २७	सू.	उ.	नवं. २७	८	१२)बु.
(दिसं. ७	६	३४	दिसं. ७	सू.	उ.)शु.
(जन. ३	सू.	उ.	जन. ४	सू.	उ.)शु.
(जन. ३१	सू.	उ.	जन. ३१	१८	९)शु.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2076 वि.) का 'शोधनिबन्ध' विशेषांक

(लेखक एवं सम्पादक—प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :-

इन नीचे लिखी 'अभिजित् प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा लिखित दैवज्ञ-प्रिय पुस्तकों के प्रतिपाद्य विषय एवं मूल्य आदि जानने के लिए हमें नीचे लिखे पते पर पत्र दीजिए। हम आपको एतदर्थ अपना विस्तृत पुस्तक-सूचीपत्र (Catalouge) बिना मूल्य भेजेंगे। चाहें तो आप नीचे दिए फोन नं. पर भी इन प्रकाशनों के बारे में अपेक्षित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पुस्तक	पुस्तक
(i) ग्रहोदयास्त-निर्णय....................	(vi) मुहूर्त्त-गजानन..............................
(ii) गणक मार्त्तण्ड..........................	(vii) ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन..............
(iii) शताब्दी ग्रहभोगांश....................	(viii) विश्व लग्नसारणी..........................
(iv) शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण.......	(ix) ग्रहणादर्श....................................
(v) व्रत-पर्व-विवेक..........................	(x) भारतीय चन्द्रोदयास्त-निर्णय...........

ग्राहकों के लिए हर्षप्रद समाचार

'अभिजित् प्रकाशन' की उपरोक्त इन सभी पुस्तकों में से Rs. 1000/- या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहक को पुस्तक मूल्य पर 20 प्रतिशत की छूट दी जायेगी और डाकखर्च भी माफ किया जायेगा।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला—हरियाणा के) **O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE)** के **Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC Code No.- ORBC- 0100988)** में भी जमा करवा सकते हैं। हमारे इस बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद हमारे फोन नं. 090413 30161 पर हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तकें, जो आप मंगवाना चाहते हैं, SMS द्वारा तुरन्त सूचित करना न भूलें।

भवदीया :—

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन',

कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109

Phone: 0172-2565 303, (M.) 09041330161

समस्याएं और समाधान

लेखक—प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर-6 (अभिजित्), पंचकूला-134 109

फलित एवं गणित (सिद्धान्त) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता।

विशेष निर्देश—समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ-साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यत: भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा—यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें—मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूं। अत: अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूं। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

—प्रियव्रत शर्मा

समस्या—प्रतिवर्ष हमारे कुछ व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) में पंचांगकार एकमत नहीं होते, जिससे धार्मिक जनता में भारी विक्षोभ पाया जाता है। क्या इस समस्या का कोई समाधान नहीं हो सकता?

—पं. मुरारिझा शास्त्री,
मु.पो. वेहट, (सहारनपुर) उ.प्र.,

समाधान—हिन्दुओं के प्राचीन परम्परागत व्रतपर्वोत्सवों की तिथियों के निर्धारण में वैमत्य एक ऐसी समस्या है, जिसका शत-प्रतिशत समाधान भारतीय पंचांगकार आज तक नहीं कर पाए, अथवा ऐसा कहना अधिक उपयुक्त होगा कि—इस समस्या के समाधान के लिए आज तक कोई ठोस कदम उन्होंने उठाया ही नहीं। भारत में पर्वोत्सवों की तिथियों से सम्बद्ध मतभेद के अपाकरण के लिए अनेकों ज्योतिष-सम्मेलन आयोजित किए गए, जिनका परिणाम सन्तोषजनक नहीं रहा। नवम्बर 1968 ई. में भारतसरकार द्वारा विज्ञानभवन दिल्ली में आयोजित ज्योतिष सम्मेलन में भी व्रत-पर्वों की तिथियों में उत्पन्न होने वाले वैषम्य के निराकरण के लिए कुछ प्रस्ताव पारित किए गए, जो अनेक त्रुटियों के कारण इस क्षेत्र में प्रभावशून्य ही रहे। इन सभी सम्मेलनों की विफलता का एकमात्र कारण यही रहा है कि—वैमत्य पैदा करने वाले सभी तत्त्वों का सुस्पष्ट विश्लेषण तथा उनका निवारण करने वाले उपायों पर एकैकश: गम्भीरता से विचार किया ही नहीं गया।

हमारे व्रतोत्सवों में उत्पन्न होने वाले इस अनैकमत्य के निम्नांकित ये तीन प्रमुख कारण रहे हैं—

1. पञ्चाङ्गीय गणितों में मतभेद।
2. ऋषि-आचार्यों के व्रतपर्व-निर्णायक वचनों में एकता का अभाव।
3. विभिन्न पंचांगों की गणना का विभिन्न अक्षांश-रेखांशीय आधार।

अब अनैकमत्य के इन तीन कारणों में से प्रथम कारण (पंचांगीय गणितों में मतभेद) का अस्तित्व समाप्तप्राय है, क्योंकि भारतसरकार द्वारा आयोजित Calendar Reform Committee द्वारा पंचांगों के निर्माण के लिए चित्राऽयनांशीय दृक्पक्ष को ही प्रमाणिक माना गया है। तदनुसार भारत के लगभग सभी पंचांग अब इसी पक्ष का अनुसरण कर रहे हैं। जिससे अनैकमत्य का यह कारण अब लुप्त है। इस प्रकार अब व्रत-पर्वों की तिथियों में उत्पन्न होने वाले मतभेद के शेष दो (द्वितीय और तृतीय) कारण ही उत्तरदायी हैं।

द्वितीय कारण (ऋषि-आचार्यों के व्रत-पर्व निर्णायक वचनों में एकता का अभाव) के सम्मार्जन के लिए "व्रत-पर्व सम्बन्धी धर्मशास्त्र के विशेषज्ञ विद्वानों की समिति" गठित होनी चाहिए, जो अनैकमत्य के शिकार व्रत-पर्वों के निर्णायक तत्त्वों को स्पष्टता से परिभाषित, परिमार्जित कर अन्तिम तर्कनिष्ठ मत (सिद्धान्त) स्थापित करे। इन दिनों मुझे ज्ञात हुआ है, कुछ पंचांगकार तथा अन्य लोग एक समिति बना रहे हैं, जो व्रत-पर्वों की तिथियों में मतभेद के कारणों पर गम्भीरता से विचार कर इस समस्या का अन्तिम समाधान ढूंढेंगे। इसके लिए समिति के सदस्यों को 'कृत्यकल्पतरु', 'काल माधव', 'पुरुषार्थ चिन्तामणि', 'निर्णयसिन्धु', 'धर्मसिन्धु' आदि प्रामाणिक ग्रन्थों का गम्भीर परिशीलन करना होगा। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए कालावधि कुछ भी लग सकती है। इस परिशीलन से प्राप्त अन्तिम परिणामों के सारांश को पंचांगकारों तक पहुंचाने के लिए Pamphlet (पुस्तिका) के रूप में प्रकाशित किया जाए और पंचांगकारों से अनुरोध (Appeal) किया जाए कि वे इन परिणामों को यथावस्थ स्वीकार कर लें। इस विषय में वे कोई 'ननु-नच' (तर्क-वितर्क) न करें। यह appeal पंचांगकारों द्वारा कहां तक मान्य होगी, यह तो समय ही बतलायेगा। इस appeal का तिरस्कार होने की स्थिति में धर्माचार्य-शंकराचार्यों के शासन को मान्यता दी जाएगी, ऐसा समिति के कुछ सदस्यों का कहना है।

अब हम व्रत-पर्वों की तिथियों में अनैकमत्य के तीसरे कारण (विभिन्न पंचांगों की गणना का विभिन्न अक्षांश-रेखांशीय आधार) को लेते हैं। इस कारण को संक्षेप में **"पंचांगगणना में भूपृष्ठीय भेद"** कहते हैं। भारत के सभी प्रदेशों में हिन्दी, अंग्रेजी, प्रान्तीय भाषाओं में लगभग 200-250 पंचांग प्रकाशित होते हैं। ये सभी पंचांग भिन्न-भिन्न नगरों के अक्षांश-रेखांशों के आधार पर बनते हैं, जिससे इनकी वारप्रवृत्ति, तिथिक्षय-वृद्धि, अपराह्ण, सायाह्न, प्रदोष आदि कालों की प्रवृत्ति, निवृत्ति आदि, जिनके आधार पर व्रत-पर्व की तिथियों (तारीखों) का निर्धारण किया जाता है, एक-दूसरे से मेल नहीं खाती। परिणामस्वरूप अनेकदा इन पंचांगों द्वारा निर्णीत तिथियों में ऐकमत्य नहीं हो पाता। इसलिए इन सभी पंचांगों का निर्माण किसी एक ही स्थल के अक्षांशादि के आधार पर करना होगा। इसके लिए भारत सरकार द्वारा 14 प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांगों के आधार स्थल रेखांश (पू.) 82^{0}-30', अक्षांश (उ.)23^{0}-11' (जिसे हम भारतीय केन्द्रस्थल कहेंगे) को ही आधार मानकर सभी पंचांगों का निर्माण होना चाहिए। इससे भारत के सभी पंचांगों द्वारा निर्णीत व्रत-पर्वों की तिथियों में ऐकमत्य रहेगा। यदि भारतीय पंचांगकार अपने-अपने पंचांगों को पूर्ववत् अपने ही नगर के अक्षांश-रेखांशों के आधार पर ही बनाना चाहें, तो वे ऐसा करने में स्वतन्त्र हैं। हां, उन्हें तब व्रत-पर्वों की तिथि का निर्णय करने के लिए भारतीय केन्द्रस्थल के ही सूर्योदयास्त, चन्द्रोदयास्त, अपराह्ण आदि काल आदि प्रयोग करना होगा, जिससे व्रत-पर्वों की तिथियों के निर्णय में भूपृष्ठभेद जन्य अन्तर न आने पाए।

भारत के प्रत्येक प्रान्त में स्थानीय व्रत-पर्वों का भी अनुष्ठान होता है। इन प्रान्तीय व्रत-पर्वों की तिथि का निर्धारण तत्तत्प्रान्तों की परम्परा-प्राप्त पद्धति से ही किया जाता है। अत: इनके निर्धारण के लिए स्थानीय पंचांग का ही प्रयोग होगा, यह तो स्पष्ट ही है।

किंच—विवाहादि मुहूर्त तथा अन्य वे सभी शुभ-अशुभ कृत्य जिनका सम्बन्ध व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष से है, उनका अनुष्ठान तो स्थानीय पंचांग के आधार पर ही करना होगा, वहां केन्द्र स्थलीय पंचांग का प्रयोग नहीं होगा—यह भी स्पष्ट है।

समस्या—(i) आपके पंचांग में वैवाहिक लग्नों का काल कन्यादान या सात फेरों या किसी अन्य वैवाहिक कार्य के निष्पादन का होता है?

(ii) विवाहांग-कृत्य दलन, कण्डन आदि विवाह दिन से पूर्ववर्ती 3-6-9 दिनों में वर्जित हैं,यदि वैवाहिक लग्न अगले दिन में चला जाता है,क्या तब भी यह गणना यथावत् रहेगी या लग्न दिन से की जायेगी।

(iii) आप अपने पंचांग में "त्रिबल शुद्धि विचार" के अन्तर्गत "विवाहादौ त्रिबल शोधनम्" कोष्ठक में प्रतिवर्ष 12वें चन्द्र को श्रेष्ठ चन्द्र अंकित करते आ रहे हैं,जबकि "ग्रह-योग एवं दाम्पत्य जीवन" पुस्तक के "विवाह में त्रिबल-शोधन" प्रकरण-3 में इसे नेष्ट माना है—ऐसा क्यों?

—रामअवतार राजपूत,
मुरादगंज, औरैया (उ.प्र.),

समाधान—(i) ये वैवाहिकलग्न पाणिग्रहण काल के होते हैं।

(ii) यदि विवाहलग्न आगे खिसक गया हो और दलनकण्डन विहित काल में न पड़ता हो, तो विनायक शान्ति करवानी चाहिए।

(iii) 'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन' के त्रिबल शुद्धि प्रकरण को ध्यान से पढ़िए। वहां द्वादशस्थ चन्द्र को ग्राह्य (पूज्य) बतलाया गया है।

समस्या—नक्षत्रान्त की 3 घड़ियां शुभ कृत्यों में वर्जित मानी गई हैं। लेकिन आपने इन्हें वर्जित नहीं किया, क्या कारण है?

—पं. देशराज शास्त्री,
मु.नोग, P.O. बिनौला (बिलासपुर) हि.प्र.,

समाधान—लग्नशुद्धि होने पर इन्हें (नक्षत्रान्त की 3 घड़ियों को) ग्राह्य माना गया है।

समस्या—वायुयान एवं शिप (समुद्री जहाज) में जन्म लेने वाले जातक के जन्मस्थलीय अक्षांश-रेखांशों का ज्ञान कैसे होगा?

समाधान—G.P.S (Global Positioning System) द्वारा इसे ज्ञात किया जा सकता है। यह सिस्टम वायुयान, शिप तथा अब लगभग सभी मोबाइल्स में भी उपलब्ध है।

समस्या—लीपइयर में बढ़ी हुई एक तारीख का क्या कारण है, हमेशा फरवरी की 28 तारीखों में ही जोड़ा जाता है?

समाधान—मूलत: फरवरी मास वर्ष का अन्तिम (बारहवां) मास था। इसलिए लीपइयर में बढ़ी एक तारीख (दिन) को इसी में जोड़ने की परम्परा है। स्पष्ट है—वर्ष का वास्तविक पहिला मास मार्च था। देखिए—मार्च को वर्ष का प्रथम मास मानने पर अप्रैल द्वितीय मास, मई तृतीय, जून चतुर्थ, जुलाई पंचम, अगस्त षष्ठ, सितम्बर सप्तम, अक्तूबर अष्टम, नवम्बर नवम, दिसम्बर दशम, जनवरी एकादश और फरवरी द्वादश मास होता है। ध्यान दें—यहां सातवें मास से दसवें मास तक की संज्ञाएं सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर हैं, जो संस्कृत के सप्तम, अष्टम,

नवम और दशम के सदृश हैं। क्योंकि संस्कृत English दोनों भाषाएं Indo-European परिवार की ही भाषाएं हैं, इसी कारण मासों के इन चार नामों में यह आश्चर्यकर सादृश्य है।

समस्या—व्रत की पारणा (व्रतान्त भोजन) कब करनी चाहिए?

समाधान—जिस तिथि का व्रत हो उस तिथि की समाप्ति पर दूसरे दिन (व्रत दिन से दूसरे दिन) प्रातः दिनमान के प्रथम पंचमांश में देवार्चन करके पारणा करनी चाहिए। यदि प्रातःकाल व्रत तिथि से पूर्ण तथा व्याप्त हो, तो मध्याह्न काल तक किसी भी समय पारणा की जा सकती है। यदि व्रततिथि का कोई योग या नक्षत्र भी निर्णायक हो, तो वहां, जहां तक सम्भव हो उस योग/नक्षत्र के काल को भी पारणा में छोड़ देना चाहिए। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के व्रत की पारणा मध्य रात्रि में पूजार्चना से निवृत्त होकर रात्रि में ही की जा सकती है। लेकिन वहां पारणा में निशीथ काल को वर्जित करना चाहिए।

समस्या—चलित कुण्डली से फलादेश प्रामाणिक होता है या राशि कुण्डली से?

—अरुण गौतम,

मु. बच्छाली, P.O. *बश्वाला (सोलन) हि.प्र.,*

समाधान—चलित कुण्डली से फलादेश कथन की परम्परा अब लुप्तप्राय है। फलित की सभी शाखाओं में लगभग शत-प्रतिशत दैवज्ञ राशि कुण्डली को ही आधार मानते हैं।

ध्यान रहे—फलादेश के व्यभिचरण की प्रतिशतता दोनों विधाओं में समान है।

समस्या—(i) क्या जातक की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के आधार पर उसकी आयु (जीवनावधि) का निर्धारण किया जा सकता है। आपने कुछ वर्ष पहिले श्रीमार्त्तण्डपंचांग के एक अंक में आयु निर्धारण पर चर्चा की थी। क्या वह विधि बिल्कुल सही result देती है?

(ii) उपचयस्थान 3, 6, 10, 11 शुभ हैं।

दुःस्थान 3, 8, 12 अशुभ हैं।

त्रिषडाय स्थान 3, 6, 11 अशुभ हैं।

यह जातक ग्रन्थों में लिखा मिलता है, इनमें 3, 6, 11 स्थानों को शुभ और अशुभ दोनों बतलाया गया है। यह विरोध क्यों?

—डॉ. कर्णवीर जैन,

प्लाट नं. 31, सेक्टर-56, गुड़गांव (हरि.),

समाधान—(i) स्पष्ट है, आयुसाधन पर मेरी लिखी लेखमाला, जो मार्तण्ड पंचांग के तीन अंकों में छपी थी, आपने पूरी नहीं पढ़ी। मैंने उस गणितमयी लम्बी लेखमाला में आयुसाधन करने वाली विभिन्न पद्धतियों को परस्पर विरोधी परिणाम देने वाली सिद्ध किया है।

(ii) फलित ज्योतिष में इस प्रकार स्पष्ट रूप में परस्पर विरोधी बातें पदे-पदे मिलती हैं। ज्योतिष की फलित शाखा में उपलब्ध ऐसी विरोधी बातों, सिद्धान्तों की कमी नहीं है। एक ही प्रकार की ग्रहस्थिति आदि में परस्पर विरोधी फलों की उपलब्धि ही इस प्रकार के विरोधों का कारण है।

— — —

अरुणोदय आदि काल -साधन

रामनवमी आदि लगभग सभी व्रत-पर्वों के दिन के निर्णय के लिए अरुणोदय तथा पंचधा विभक्त दिन के पांच भागों (यानी प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न) एवं प्रदोष और निशीथकाल की आवश्यकता रहती है। इन अरुणोदय आदि कालों का निर्धारण स्थानीय सूर्योदय-सूर्यास्त, दिनमान एवं रात्रिमान पर निर्भर करता है। इसके लिए एक सामान्य-सी गणितप्रक्रिया अपेक्षित है। इस सामान्य गणितप्रक्रिया से भी व्रत-पर्वनिर्णायक को मुक्ति दिलाने के लिए यहां "**अरुणोदयादिकाल कोष्ठक (i)**" दिया गया है, जिससे स्थानीय दिनमान, सूर्योदय और सूर्यास्त द्वारा इन अरुणोदयादि कालों के प्रारम्भ-समाप्ति-क्षण कोष्ठक में निर्दिष्ट जोड़-घटाव की प्रक्रिया से अनायास ही ज्ञात किए जा सकते हैं। स्पष्टता के लिए नीचे दिया उदाहरण देखिए–

उदाहरण—वाराणसी में 13 अप्रैल को मध्याह्न और प्रदोष के प्रारम्भ और समाप्तिकाल जानने हैं। इस दिन वाराणसी में सूर्योदय 5$^{\text{घं.}}$ 41$^{\text{मि.}}$ और सूर्यास्त 18$^{\text{घं.}}$ 16$^{\text{मि.}}$ और दिनमान 12$^{\text{घं.}}$ 35$^{\text{मि.}}$ है। कोष्ठक [**अरुणोदयादि काल कोष्ठक (i)**] में दिनमान 12$^{\text{घं.}}$ 35$^{\text{मि.}}$ के आगे मध्याह्न वाले कॉलम में दिए प्रारम्भ और समाप्ति वाले 5$^{\text{घं.}}$ 02$^{\text{मि.}}$ और 7$^{\text{घं.}}$ 33$^{\text{मि.}}$ को कोष्ठकगत निर्देशानुसार सूर्योदयकाल 5$^{\text{घं.}}$ 41$^{\text{मि.}}$ में अलग-अलग जोड़ देने पर 10$^{\text{घं.}}$ 43$^{\text{मि.}}$ और 13$^{\text{घं.}}$ 14$^{\text{मि.}}$ मध्याह्न का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल प्राप्त हुआ। इसी प्रकार इसी दिनमान 12$^{\text{घं.}}$ 35$^{\text{मि.}}$ के आगे कोष्ठक में प्रदोष वाले कॉलम के नीचे प्रारम्भ और समाप्ति वाले 0$^{\text{घं.}}$ 00$^{\text{मि.}}$ तथा 2$^{\text{घं.}}$ 17$^{\text{मि.}}$ को कोष्ठकगत निर्देशानुसार सूर्यास्तकाल 18$^{\text{घं.}}$ 16$^{\text{मि.}}$ में अलग-अलग जोड़ देने पर 18$^{\text{घं.}}$ 16$^{\text{मि.}}$ और 20$^{\text{घं.}}$ 33$^{\text{मि.}}$ क्रमशः प्रदोष का प्रारम्भ और समाप्तिकाल प्राप्त हुआ।

ध्यान दें—इस कोष्ठक में उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा प्राप्त अरुणोदय, प्रातः, संगव आदि का प्रारम्भ-समाप्तिकाल उसी देश/क्षेत्र के स्टैं. टा. में होगा, जिस देश/क्षेत्र के स्टैं. टा. में आपका सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल है। उपरोक्त उदाहरण में हमारा सूर्योदय व सूर्यास्तकाल भा. स्टैं. टा. में है, अतः इनसे प्राप्त उपरोक्त मध्याह्न एवं प्रदोष के प्रारम्भ-समाप्तिक्षण भी भा. स्टैं. टा. में ही हैं।

दूसरा कोष्ठक [**अरुणोदयादि काल कोष्ठक (ii**] भारत-केन्द्रस्थल [23°-11' (उ.) अक्षांश, 82°-30' (पू.) रेखांशस्थल] के लिए है। इस स्थल के अरुणोदयादि कालों के प्रारम्भ-समाप्तिकाल इस कोष्ठक से केवल अंग्रेजी तारीख द्वारा ही (दिनमान, सूर्योदय, सूर्यास्तकाल के बिना ही) तुरन्त ज्ञात हो जाते हैं। जैसे—28 मई को भारत के केन्द्रस्थल पर अरुणोदय 3$^{\text{घं.}}$-39$^{\text{मि.}}$ से 5$^{\text{घं.}}$-15$^{\text{मि.}}$, प्रातःकाल 5$^{\text{घं.}}$-15$^{\text{मि.}}$ से 7$^{\text{घं.}}$-56$^{\text{मि.}}$, संगव 7$^{\text{घं.}}$-56$^{\text{मि.}}$ से 10$^{\text{घं.}}$ -37$^{\text{मि.}}$, मध्याह्न 10$^{\text{घं.}}$-37$^{\text{मि.}}$ से 13$^{\text{घं.}}$-18$^{\text{मि.}}$ तक.... होगा। स्पष्ट है—यहां किसी प्रकार के जोड़-घटाव की भी जरूरत नहीं है। ध्यान रहे—इस कोष्ठक से प्राप्त काल हमेशा भा. स्टैं. टा. में होगा।

क्योंकि भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांगों में व्रत-पर्वतिथियों का निर्णय भारत-केन्द्रस्थलीय सूर्योदयास्त आदि अनुसार ही किया रहता है, अतः इस कोष्ठक को यहां देना आवश्यक समझा गया है। दूसरी बात यह भी है कि—भविष्य में भारत के सभी पंचांगकारों को व्रत-पर्वतिथिनिर्णय के लिए भारत-केन्द्रस्थलीय सूर्योदयास्तादि के ही प्रयोग का परामर्श विद्वानों द्वारा दिया जा रहा है, ताकि व्रत-पर्वतिथियों में 'भूपृष्ठ-भेदजन्य' वैमत्य दूर हो सके। बहुत सम्भव है कि—सभी पंचांगकार निकट भविष्य में भारत केन्द्र-स्थल से ही व्रत-पर्वतिथियों का निर्णय करें।

अरुणोदयादिकाल कोष्ठक (i)

(स्थानीय दिनमान द्वारा अरुणोदय, प्रातः, संगव आदि कालों का प्रारम्भ-समाप्ति काल जानिए)

दिनमान	स्थानीय सूर्योदय में से घटाइए	स्थानीय सूर्योदय काल में जोड़िए										स्थानीय सूर्यास्त काल में जोड़िए		
		प्रातः		संगव		मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न		प्रदोष		निशीथ
	अरुणोदय प्रारम्भ	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	
घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
9 30	1 36	0 00	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30	0 00	2 54	7 15
9 35	1 36	0 00	1 55	1 55	3 50	3 50	5 45	5 45	7 40	7 40	9 35	0 00	2 53	7 12
9 40	1 36	0 00	1 56	1 56	3 52	3 52	5 48	5 48	7 44	7 44	9 40	0 00	2 52	7 10
9 45	1 36	0 00	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45	0 00	2 51	7 07
9 50	1 36	0 00	1 58	1 58	3 56	3 56	5 54	5 54	7 52	7 52	9 50	0 00	2 50	7 05
9 55	1 36	0 00	1 59	1 59	3 58	3 58	5 57	5 57	7 56	7 56	9 55	0 00	2 49	7 02
10 00	1 36	0 00	2 00	2 00	4 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00	0 00	2 48	7 00
10 05	1 36	0 00	2 01	2 01	4 02	4 02	6 03	6 03	8 04	8 04	10 05	0 00	2 47	6 57
10 10	1 36	0 00	2 02	2 02	4 04	4 04	6 06	6 06	8 08	8 08	10 10	0 00	2 46	6 55
10 15	1 36	0 00	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	6 09	8 12	8 12	10 15	0 00	2 45	6 52
10 20	1 36	0 00	2 04	2 04	4 08	4 08	6 12	6 12	8 16	8 16	10 20	0 00	2 44	6 50
10 25	1 36	0 00	2 05	2 05	4 10	4 10	6 15	6 15	8 20	8 20	10 25	0 00	2 43	6 47
10 30	1 36	0 00	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30	0 00	2 42	6 45
10 35	1 36	0 00	2 07	2 07	4 14	4 14	6 21	6 21	8 28	8 28	10 35	0 00	2 41	6 42
10 40	1 36	0 00	2 08	2 08	4 16	4 16	6 24	6 24	8 32	8 32	10 40	0 00	2 40	6 40
10 45	1 36	0 00	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45	0 00	2 39	6 37
10 50	1 36	0 00	2 10	2 10	4 20	4 20	6 30	6 30	8 40	8 40	10 50	0 00	2 38	6 35
10 55	1 36	0 00	2 11	2 11	4 22	4 22	6 33	6 33	8 44	8 44	10 55	0 00	2 37	6 32
11 00	1 36	0 00	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 00	0 00	2 36	6 30
11 05	1 36	0 00	2 13	2 13	4 26	4 26	6 39	6 39	8 52	8 52	11 05	0 00	2 35	6 27
11 10	1 36	0 00	2 14	2 14	4 28	4 28	6 42	6 42	8 56	8 56	11 10	0 00	2 34	6 25
11 15	1 36	0 00	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15	0 00	2 33	6 22
11 20	1 36	0 00	2 16	2 16	4 32	4 32	6 48	6 48	9 04	9 04	11 20	0 00	2 32	6 20
11 25	1 36	0 00	2 17	2 17	4 34	4 34	6 51	6 51	9 08	9 08	11 25	0 00	2 31	6 17
11 30	1 36	0 00	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30	0 00	2 30	6 15
11 35	1 36	0 00	2 19	2 19	4 38	4 38	6 57	6 57	9 16	9 16	11 35	0 00	2 29	6 12
11 40	1 36	0 00	2 20	2 20	4 40	4 40	7 00	7 00	9 20	9 20	11 40	0 00	2 28	6 10
11 45	1 36	0 00	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45	0 00	2 27	6 07
11 50	1 36	0 00	2 22	2 22	4 44	4 44	7 06	7 06	9 28	9 28	11 50	0 00	2 26	6 05
11 55	1 36	0 00	2 23	2 23	4 46	4 46	7 09	7 09	9 32	9 32	11 55	0 00	2 25	6 02
12 00	1 36	0 00	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00	0 00	2 24	6 00
12 05	1 36	0 00	2 25	2 25	4 50	4 50	7 15	7 15	9 40	9 40	12 05	0 00	2 23	5 57
12 10	1 36	0 00	2 26	2 26	4 52	4 52	7 18	7 18	9 44	9 44	12 10	0 00	2 22	5 55
12 15	1 36	0 00	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15	0 00	2 21	5 52
12 20	1 36	0 00	2 28	2 28	4 56	4 56	7 24	7 24	9 52	9 52	12 20	0 00	2 20	5 50
12 25	1 36	0 00	2 29	2 29	4 58	4 58	7 27	7 27	9 56	9 56	12 25	0 00	2 19	5 47
12 30	1 36	0 00	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30	0 00	2 18	5 45
12 35	1 36	0 00	2 31	2 31	5 02	5 02	7 33	7 33	10 04	10 04	12 35	0 00	2 17	5 42
12 40	1 36	0 00	2 32	2 32	5 04	5 04	7 36	7 36	10 08	10 08	12 40	0 00	2 16	5 40
12 45	1 36	0 00	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45	0 00	2 15	5 37
12 50	1 36	0 00	2 34	2 34	5 08	5 08	7 42	7 42	10 16	10 16	12 50	0 00	2 14	5 35
12 55	1 36	0 00	2 35	2 35	5 10	5 10	7 45	7 45	10 20	10 20	12 55	0 00	2 13	5 32
13 00	1 36	0 00	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00	0 00	2 12	5 30
13 05	1 36	0 00	2 37	2 37	5 14	5 14	7 51	7 51	10 28	10 28	13 05	0 00	2 11	5 27
13 10	1 36	0 00	2 38	2 38	5 16	5 16	7 54	7 54	10 32	10 32	13 10	0 00	2 10	5 25
13 15	1 36	0 00	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15	0 00	2 09	5 22
13 20	1 36	0 00	2 40	2 40	5 20	5 20	8 00	8 00	10 40	10 40	13 20	0 00	2 08	5 20
13 25	1 36	0 00	2 41	2 41	5 22	5 22	8 03	8 03	10 44	10 44	13 25	0 00	2 07	5 17
13 30	1 36	0 00	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30	0 00	2 06	5 15
13 35	1 36	0 00	2 43	2 43	5 26	5 26	8 09	8 09	10 52	10 52	13 35	0 00	2 05	5 12
13 40	1 36	0 00	2 44	2 44	5 28	5 28	8 12	8 12	10 56	10 56	13 40	0 00	2 04	5 10
13 45	1 36	0 00	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45	0 00	2 03	5 07
13 50	1 36	0 00	2 46	2 46	5 32	5 32	8 18	8 18	11 04	11 04	13 50	0 00	2 02	5 05
13 55	1 36	0 00	2 47	2 47	5 34	5 34	8 21	8 21	11 08	11 08	13 55	0 00	2 01	5 02
14 00	1 36	0 00	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00	0 00	2 00	5 00
14 05	1 36	0 00	2 49	2 49	5 38	5 38	8 27	8 27	11 16	11 16	14 05	0 00	1 59	4 57
14 10	1 36	0 00	2 50	2 50	5 40	5 40	8 30	8 30	11 20	11 20	14 10	0 00	1 58	4 55
14 15	1 36	0 00	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15	0 00	1 57	4 52
14 20	1 36	0 00	2 52	2 52	5 44	5 44	8 36	8 36	11 28	11 28	14 20	0 00	1 56	4 50
14 25	1 36	0 00	2 53	2 53	5 46	5 46	8 39	8 39	11 32	11 32	14 25	0 00	1 55	4 47
14 30	1 36	0 00	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30	0 00	1 54	4 45

अरुणोदयादिकाल कोष्ठक (ii)

[भारत के केन्द्रस्थल (23° 11' उत्तर अक्षांश, 82° 30' पूर्व रेखांश) पर अरुणोदय, प्रातः, संगव आदि कालों की प्रारम्भ-समाप्ति (भा.स्टैं.टा.)]

तारीख	अरुणोदय प्रारम्भ		सूर्योदय अरुणोदय समाप्त		संगव प्रारम्भ		संगव समाप्त		अपराह्न प्रारम्भ		अपराह्न समाप्त		सूर्यास्त प्रदोष प्रारम्भ		प्रदोष समाप्त		निशीथ-काल (अर्धरात्रि)	
			प्रातः प्रारम्भ		प्रातः समाप्त		मध्याह्न प्रारम्भ		मध्याह्न समाप्त		सायाह्न प्रारम्भ		सायाह्न समाप्त					
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1 जन.	5	05	6	41	8	50	10	59	13	08	15	17	17	25	20	04	24	03
8 जन.	5	07	6	43	8	52	11	02	13	11	15	20	17	30	20	09	24	06
15 जन.	5	08	6	44	8	54	11	04	13	14	15	24	17	35	20	13	24	10
22 जन.	5	07	6	43	8	55	11	06	13	18	15	29	17	40	20	17	24	11
29 जन.	5	06	6	42	8	55	11	08	13	20	15	33	17	45	20	20	24	13
5 फर.	5	03	6	39	8	53	11	07	13	21	15	35	17	49	20	23	24	14
12 फर.	4	59	6	35	8	51	11	07	13	23	15	39	17	54	20	26	24	14
19 फर.	4	54	6	30	8	47	11	05	13	23	15	41	17	58	20	28	24	14
26 फर.	4	49	6	25	8	45	11	04	13	23	15	42	18	01	20	30	24	13
5 मार्च	4	43	6	19	8	40	11	01	13	22	15	43	18	05	20	32	24	12
12 मार्च	4	37	6	13	8	36	10	59	13	22	15	45	18	07	20	32	24	10
19 मार्च	4	30	6	06	8	31	10	56	13	21	15	46	18	10	20	33	24	08
26 मार्च	4	23	5	59	8	26	10	53	13	20	15	47	18	13	20	34	24	06
2 अप्रै.	4	16	5	52	8	21	10	49	13	18	15	47	18	15	20	34	24	03
9 अप्रै.	4	10	5	46	8	16	10	47	13	17	15	47	18	18	20	36	24	02
16 अप्रै.	4	03	5	39	8	11	10	44	13	16	15	49	18	21	20	37	24	00
23 अप्रै.	3	57	5	33	8	07	10	41	13	16	15	50	18	24	20	38	23	59
30 अप्रै.	3	52	5	28	8	04	10	40	13	16	15	52	18	27	20	39	23	57
7 मई	3	47	5	23	8	00	10	38	13	15	15	52	18	30	20	41	23	56
14 मई	3	44	5	20	7	58	10	37	13	15	15	54	18	33	20	42	23	57
21 मई	3	41	5	17	7	57	10	37	13	17	15	57	18	36	20	44	23	57
28 मई	3	39	5	15	7	56	10	37	13	18	15	59	18	40	20	47	23	58
4 जून	3	38	5	14	7	56	10	38	13	20	16	02	18	43	20	49	23	58
11 जून	3	38	5	14	7	56	10	38	13	20	16	02	18	45	20	52	24	00
18 जून	3	38	5	14	7	56	10	39	13	21	16	04	18	47	20	53	24	00
25 जून	3	40	5	16	7	58	10	41	13	23	16	06	18	49	20	54	24	02
2 जुला.	3	42	5	18	8	00	10	43	13	25	16	07	18	50	20	56	24	04
9 जुला.	3	45	5	21	8	03	10	44	13	26	16	08	18	49	20	55	24	05
16 जुला.	3	47	5	23	8	04	10	45	13	26	16	07	18	48	20	55	24	06
23 जुला.	3	50	5	26	8	06	10	46	13	26	16	06	18	46	20	54	24	06
30 जुला.	3	53	5	29	8	07	10	46	13	24	16	03	18	43	20	52	24	06
6 अग.	3	56	5	32	8	08	10	46	13	24	16	02	18	39	20	50	24	05
13 अग.	3	59	5	35	8	11	10	47	13	23	15	59	18	34	20	46	24	04
20 अग.	4	02	5	38	8	12	10	46	13	20	15	54	18	29	20	43	24	01
27 अग.	4	04	5	40	8	13	10	45	13	18	15	50	18	23	20	38	24	01
3 सितं.	4	07	5	43	8	14	10	44	13	15	15	45	18	16	20	33	23	59
10 सितं.	4	09	5	45	8	14	10	43	13	12	15	41	18	09	20	28	23	57
17 सितं.	4	11	5	47	8	14	10	41	13	08	15	35	18	02	20	25	23	54
24 सितं.	4	13	5	49	8	14	10	39	13	04	15	29	17	55	20	18	23	52
1 अक्तू.	4	16	5	52	8	15	10	38	13	01	15	24	17	48	20	13	23	50
8 अक्तू.	4	18	5	54	8	15	10	37	12	58	15	19	17	41	20	08	23	47
15 अक्तू.	4	21	5	57	8	16	10	36	12	55	15	15	17	35	20	03	23	46
22 अक्तू.	4	24	6	00	8	18	10	36	12	54	15	12	17	29	19	59	23	44
29 अक्तू.	4	27	6	03	8	19	10	35	12	52	15	08	17	24	19	54	23	43
5 नवं.	4	31	6	07	8	22	10	36	12	51	15	05	17	20	19	53	23	43
12 नवं.	4	36	6	12	8	25	10	38	12	51	15	04	17	16	19	51	23	44
19 नवं.	4	40	6	16	8	28	10	39	12	51	15	03	17	14	19	50	23	45
26 नवं.	4	45	6	21	8	32	10	42	12	52	15	02	17	13	19	50	23	47
3 दिसं.	4	50	6	26	8	35	10	45	12	54	15	03	17	13	19	52	23	49
10 दिसं.	4	54	6	30	8	39	10	48	12	57	15	06	17	15	19	54	23	52
17 दिसं.	4	58	6	34	8	42	10	51	13	00	15	08	17	17	19	56	23	55
24 दिसं.	5	02	6	38	8	46	10	55	13	03	15	11	17	20	19	58	23	59
31 दिसं.	5	05	6	41	8	50	10	59	13	08	15	17	17	25	20	04	24	03

सूक्ष्म ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदयास्तकाल-साधन

मेरी पुस्तक "ग्रहोदयास्त निर्णय" में दिया गया 0° से 63° अक्षांश तक का सूर्योदयास्तकाल वस्तुतस्तु भा. स्टैं. मेरिडियन का स्था. म. का. है, किंच यह यथार्थतः सन् 2000 ई. के लिए है। इसे अत्यल्प अशुद्धि की उपेक्षा करते हुए विश्व के किसी भी स्थल तथा पूर्वापरवर्त्ती 2-2 शताब्दियों के लिए प्रतिवर्ष प्रयोग में लाया जा सकता है। ऐसा करने पर इससे ज्ञात उदयास्तकाल में इस अवधि में विश्व के किसी भी स्थान पर एक या दो मिनट से अधिक अशुद्धि नहीं होगी। फलादेश एवं जनव्यवहार के लिए भी एक-दो मिनट तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल पर्याप्त होता है, फिर भी यदि कोई दैवज्ञ सूक्ष्मतम (सेकण्ड तक सूक्ष्म) सूर्योदयास्तकाल जानना चाहता है तो उसे निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाना होगा। इस प्रक्रिया द्वारा ज्ञात सूर्योदयास्तकाल में 4-5 सेकण्ड से अधिक अशुद्धि नहीं होगी, बशर्ते कि स्थानीय अक्षांश, रेखांश तथा तात्कालिक सूर्यभोगांश (स्पष्टसूर्य) अपेक्षित सूक्ष्मता वाले हों।

सूर्योदयकाल ज्ञात करने के लिए अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर के अलावा स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. (अभीष्ट नगर/ग्राम जिस देश/कालक्षेत्र में स्थित है, उस देश/कालक्षेत्र के स्टै. टा.) के अनुसार प्रात: 6 बजे अभीष्ट तारीख के निम्नांकित पदार्थ भी मालूम कीजिए—

(i) सायन सूर्यभोगांश (रा. अं. क.)।
(ii) सूर्यक्रान्ति (अं.क.)।
(iii) वेलान्तर-संस्कार (मि.से.)।
(iv) स्थानीय चर (मि.से.)।

इसी प्रकार सूर्यास्तकाल जानने के लिए भी अभीष्ट नगर के अक्षांश-रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा स्थानीय स्टै. टा. के अनुसार 18 घं. 00 मि. पर अभीष्ट तारीख को निम्नांकित पदार्थ मालूम कीजिए—

(i) सायन सूर्यभोगांश (रा. अं. क.)। -
(ii) सूर्यक्रान्ति (अं.क.)।
(iii) वेलान्तर-संस्कार (मि.से.)।
(iv) स्थानीय चर (मि.से.)।

सायन सूर्य की रा. अं. क. द्वारा आगे पृष्ठ 303 पर दिए गए "क्रान्ति-वेलान्तर कोष्ठक" से क्रान्ति (सूर्यक्रान्ति की अं. क.) तथा वेलान्तर के मि. से. ज्ञात कर लें। क्योंकि, यह कोष्ठक एक-एक अंश के अन्तर पर क्रान्ति और वेलान्तर बताता है, अत: सूर्य की शेषकलाओं से अनुपात द्वारा क्रान्ति और वेलान्तर का यथार्थ मान (कला तथा सूक्ष्मक्रान्ति और सेकण्ड तक सूक्ष्म वेलान्तर) जान लीजिए। क्रान्ति की दिशा (उत्तर या दक्षिण) तथा वेलान्तर का चिह्न (धन या ऋण) भी इस कोष्ठक से मालूम कर लीजिए। इस प्रकार ज्ञात क्रान्ति की अं. क. तथा अभीष्ट नगर के अक्षांश की अं. क. द्वारा आगे पृष्ठ 305 पर दिए गए 'चरकोष्ठक' से चर के मि. से. (या घं. मि. से.) जानिए। 'चरकोष्ठक' में क्रान्ति और अक्षांश एक-एक अंश के अन्तर पर दिए गए हैं, अत: क्रान्ति और अक्षांश की शेषकलाओं के लिए यहां अलग-अलग दो बार (एक ओर क्रान्ति की कलाओं के लिए और दूसरी ओर अक्षांश की कलाओं के लिए) अनुपात करके सेकण्ड तक शुद्ध चर प्राप्त करना चाहिए। इस प्रकार वेलान्तर और चर द्वारा अभीष्ट नगर, का सूक्ष्म (लगभग सेकण्ड तक शुद्ध) सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल इस तरह जान लीजिए—

अभीष्ट तारीख के प्रात: 6 बजे के चर और वेलान्तर के मिनट, सेकण्डों (या घं. मि. से.) को 6 घं. में इनके चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट तारीख और नगर का सूर्योदयकाल (स्था.म.का.) बन जाएगा।

इसी तरह अभीष्ट तारीख के 18 बजे के चर और वेलान्तर को 18 घं. में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट तारीख और नगर का सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) प्राप्त हो जाएगा।

सूर्योदय और सूर्यास्त के स्था. म. का. में अभीष्ट नगर का स्टैं. अं. चिह्न के विपरीत जोड़ने या घटाने पर स्थानीय स्टै. टा. के अनुसार सूर्यादय और सूर्यास्तकाल प्राप्त होंगे।

ध्यान रहे—चर का चिह्न '**चरकोष्ठक**' से ज्ञात नहीं होता है। चर का चिह्न कब धन(+) माना जाएगा और कब ऋण (–), इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—

अभीष्ट नगर का अक्षांश और क्रान्ति—दोनों यदि एक ही दिशा के (दोनों उत्तर या दोनों दक्षिण दिशा के) हों तो चर उदय (सूर्योदय बनाने) के लिए ऋण (–) और अस्त (सूर्यास्त बनाने) के लिए धन (+) होगा। यदि दोनों की दिशाएं भिन्न-भिन्न हों तब चर का चिह्न इसके विपरीत; (उदय के लिए धन और अस्त के लिए ऋण) होगा।

उदयास्त की पूरी प्रक्रिया स्पष्ट करने के लिए नीचे उदाहरण दिया जा रहा है—

उदाहरण—वाराणसी में 10 नवंबर, सन् 2001 ई. को सूक्ष्मतम सूर्योदय, सूर्यास्तकाल जानने हैं?

सूर्योदयकाल साधन—

10 नवंबर, सन् 2001 ई. को 6 घं. 00 मि. (भा. स्टै. टा.) पर सायनसूर्य 7 रा. 17 अं. 41 क., तदनुसार "**क्रान्ति-वेलान्तर कोष्ठक**" से सूर्यक्रान्ति द. 17 अं. 6 क. और वेलान्तर –16 मि. 3 से. मिले। क्रान्ति 17 अं. 6 क. और वाराणसी के अक्षांश 25 अं. 20 क. द्वारा 'चर कोष्ठक' से चर +33 मि. 29 से. मिला (क्योंकि, यहां अक्षांश उत्तर और क्रान्ति दक्षिण दिशा की है, अर्थात् ये दोनों परस्पर भिन्न-भिन्न दिशा की हैं, अत: उदयकाल के लिए यह चर पूर्वोक्त नियमानुसार धन (+) माना गया है)। **अब वाराणसी में 10 नवंबर, सन् 2001 ई. को सूक्ष्मतम सूर्योदयकाल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार ज्ञात होगा—**

घं.	मि.	से.	
6	00	00	
+	33	29	(चर)
6	33	29	
–	16	03.	(वेलान्तर)
6	17	26	[सूर्योदयकाल (स्था.म.का.)]
–	02	00	[वाराणसी का स्टैं. अं. (चिह्न बदलकर)]
6	15	26	[10 नवं., सन् 2001 ई. को वाराणसी में सूर्योदयकाल (भा. स्टैं. टा.)]

सूर्योस्तकाल साधन—

10 नवंबर, सन् 2001 ई. को 18 घं. 00 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सायनसूर्य 7 रा. 18 अं. 11 क., तदनुसार "**क्रान्ति-वेलान्तर कोष्ठक**" से क्रान्ति द. 17 अं. 15 क. और वेलान्तर –16 मि. 00 से. मिले। क्रान्ति 17 अं. 15 क. और वाराणसी के अक्षांश 25 अं. 20 क. द्वारा '**चरकोष्ठक**' से चर –33 मि. 48 से. मिला। (अक्षांश और क्रान्ति

की भिन्न-भिन्न दिशाओं के कारण अस्तकाल के लिए यह चर ऋण (–) चिह्न वाला है)। अब वाराणसी में 10 **नवंबर, सन् 2001 ई. को सूर्यास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार जाना जाएगा—**

घं.	मि.	से.	
18	00	00	
–	33	48	(चर)
17	26	12	
–	16	00	(वेलान्तर)
17	10	12	[सूर्यास्तकाल (स्था.म.का.)]
–	02	00	[वाराणसी का स्टैं. अं. (चिह्न बदलकर)]
17	08	12	[10 नवं., सन् 2001 ई. को वाराणसी में सूर्यास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)]

ठीक, इसी प्रकार भारत से अन्य किसी भी देश के नगर का सूक्ष्मतम सूर्योदय-सूर्यास्तकाल जाना जा सकता है। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि—जिस देश/क्षेत्र के नगर का उदय-अस्त साधन किया जा रहा है, उस देश/क्षेत्र के स्टै. टा. के अनुसार ही प्रात: 6 बजे और 18 बजे का सायनसूर्य स्पष्ट करके तदनुसार क्रान्ति, वेलान्तर, चर जानकर पूर्वोक्त पद्धति अनुसार वहां का सूर्योदय-सूर्यास्त ज्ञात करना होगा।

इस पूर्वोक्त प्रक्रिया से ज्ञात सूर्योदय-सूर्यास्तकाल **ज्योतिषशास्त्रीय** ही होंगे। अर्थात् ये काल सूर्य-बिम्ब केन्द्र का किरणवक्रीभवन संस्काररहित उदयास्त बतलाएंगे। **ध्यान रहे**—लग्नादि-साधनार्थ इष्टकाल बनाने के लिए इन्हें ही प्रयोग में लाना चाहिए। सूर्यबिम्ब के पूर्वी क्षितिज में दृश्य उदय और पश्चिमी क्षितिज में दृश्य अस्तकाल के लिए इन ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकालों में भारतीय नगरों के लिए क्रमश: लगभग 3½ मिनट ऋण और धन करने होंगे। अधिक अक्षांशीय स्थलों के लिए तो यह संस्कार 11 मिनट से भी अधिक हो जाता है।

ध्यान दें—भारतीय अधिकतर पंचांगों में जो सूर्योदयास्त दिया रहता है, वह किरणवक्रीभवन संस्कृत होता है। जिससे उन पंचांगों का प्रयोग करने वाले दैवज्ञ लोग इष्ट स्थलीय, इष्ट कालिक लग्न साधन करने के लिए सूर्योदयादिष्ट बनाने के लिए इसी किरणवक्रीभवन संस्कृत सूर्योदय को ही प्रयोग में लाते हैं, जिस कारण इससे साधित लग्न में अनिवार्यत: अशुद्धि रहती है। भारतीय नगरों में यह अशुद्धि लगभग एक अंश की होती है, अत: उन्हें सूर्योदयादिष्ट काल द्वारा लग्न साधन के लिए ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय का ही प्रयोग करना चाहिए।

क्रान्ति-वेलान्तर कोष्ठक (भाग 1)

सायन सूर्य राशि →	(0) मेष				(1) वृष				(2) मिथुन				(3) कर्क				(4) सिंह				(5) कन्या			
अंश ↓	क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर	
	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.
0	उ. 0	00	+7	28	उ.11	28	−1	02	उ.20	09	−3	31	उ.23	27	+1	39	उ.20	09	+6	22	उ.11	28	+2	39
1	0	24	7	10	11	49	1	15	20	22	3	27	23	26	1	53	19	56	6	24	11	07	2	22
2	0	48	6	52	12	10	1	27	20	34	3	22	23	26	2	06	19	43	6	25	10	46	2	05
3	1	12	6	33	12	31	1	39	20	46	3	17	23	25	2	20	19	29	6	26	10	24	1	48
4	1	35	6	15	12	51	1	51	20	57	3	11	23	23	2	33	19	16	6	25	10	03	1	30
5	1	59	5	57	13	11	2	02	21	08	3	05	23	21	2	46	19	01	6	24	9	41	1	12
6	2	23	5	38	13	31	2	12	21	19	2	58	23	18	3	00	18	47	6	23	9	19	0	54
7	2	47	5	20	13	51	2	22	21	29	2	50	23	16	3	13	18	32	6	21	8	57	0	35
8	3	10	5	02	14	11	2	31	21	39	2	42	23	12	3	25	18	16	6	18	8	34	+0	16
9	3	34	4	43	14	30	2	40	21	48	2	34	23	08	3	37	18	01	6	14	8	12	−0	03
10	3	58	4	25	14	49	2	49	21	57	2	25	23	04	3	49	17	45	6	10	7	49	0	23
11	4	21	4	07	15	08	2	57	22	06	2	16	22	59	4	01	17	28	6	05	7	27	0	44
12	4	45	3	48	15	26	3	04	22	14	2	06	22	54	4	12	17	12	6	00	7	04	1	04
13	5	08	3	30	15	45	3	11	22	22	1	56	22	49	4	23	16	55	5	54	6	41	1	24
14	5	31	3	12	16	03	3	17	22	29	1	46	22	42	4	34	16	38	5	47	6	18	1	45
15	5	55	2	54	16	20	3	22	22	36	1	35	22	36	4	44	16	20	5	40	5	55	2	06
16	6	18	2	36	16	38	3	27	22	42	1	23	22	29	4	54	16	03	5	32	5	31	2	27
17	6	41	2	19	16	55	3	32	22	49	1	11	22	22	5	04	15	45	5	23	5	08	2	49
18	7	04	2	02	17	12	3	36	22	54	1	00	22	14	5	13	15	26	5	14	4	45	3	10
19	7	27	1	44	17	28	3	39	22	59	0	48	22	06	5	22	15	08	5	04	4	21	3	32
20	7	49	1	27	17	45	3	41	23	04	0	35	21	57	5	30	14	49	4	54	3	58	3	53
21	8	12	1	11	18	01	3	43	23	08	0	22	21	48	5	38	14	30	4	43	3	34	4	15
22	8	34	0	55	18	16	3	44	23	12	−0	10	21	39	5	45	14	11	4	31	3	10	4	37
23	8	57	0	39	18	32	3	45	23	16	+0	03	21	29	5	52	13	51	4	18	2	47	4	59
24	9	19	0	23	18	47	3	45	23	18	0	17	21	19	5	58	13	31	4	06	2	23	5	21
25	9	41	+0	08	19	01	3	44	23	21	0	31	21	08	6	04	13	11	3	53	1	59	5	43
26	10	03	−0	06	19	16	3	43	23	23	0	44	20	57	6	09	12	51	3	39	1	35	6	04
27	10	24	0	20	19	29	3	41	23	25	0	58	20	46	6	13	12	31	3	25	1	12	6	25
28	10	46	0	35	19	43	3	38	23	26	1	12	20	34	6	17	12	10	3	10	0	48	6	46
29	11	07	0	49	19	56	3	35	23	26	1	25	20	22	6	20	11	49	2	55	0	24	7	08
30	उ.11	28	−1	02	उ.20	09	−3	31	उ.23	27	+1	39	उ.20	09	+6	22	उ.11	28	+2	39	द. 0	00	−7	30

क्रान्ति-वेलान्तर कोष्ठक (भाग 2)

सायन सूर्य राशि → अंश ↓	(6) तुला				(7) वृश्चिक				(8) धनु				(9) मकर				(10) कुम्भ				(11) मीन			
	क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर	
	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.
0	द. 0	00	-7	30	द.11	28	-15	37	द.20	09	-13	50	द.23	27	-1	35	द.20	09	+11	03	द.11	28	+13	59
1	0	24	7	52	11	49	15	45	20	22	13	33	23	26	1	06	19	56	11	20	11	07	13	54
2	0	48	8	13	12	10	15	53	20	34	13	16	23	26	0	37	19	43	11	36	10	46	13	47
3	1	12	8	35	12	31	15	59	20	46	12	59	23	25	-0	08	19	29	11	51	10	24	13	40
4	1	35	8	56	12	51	16	05	20	57	12	41	23	23	+0	21	19	16	12	06	10	03	13	33
5	1	59	9	16	13	11	16	10	21	08	12	22	23	21	0	50	19	01	12	20	9	41	13	25
6	2	23	9	36	13	31	16	14	21	19	12	02	23	18	1	19	18	47	12	33	9	19	13	16
7	2	47	9	56	13	51	16	18	21	29	11	41	23	16	1	48	18	32	12	46	8	57	13	07
8	3	10	10	16	14	11	16	20	21	39	11	20	23	12	2	17	18	16	12	58	8	34	12	57
9	3	34	10	36	14	30	16	22	21	48	10	58	23	08	2	46	18	01	13	09	8	12	12	46
10	3	58	10	55	14	49	16	23	21	57	10	36	23	04	3	14	17	45	13	19	7	49	12	35
11	4	21	11	14	15	08	16	23	22	06	10	14	22	59	3	42	17	28	13	28	7	27	12	23
12	4	45	11	32	15	26	16	23	22	14	09	50	22	54	4	09	17	12	13	37	7	04	12	11
13	5	08	11	50	15	45	16	21	22	22	09	26	22	49	4	36	16	55	13	45	6	41	11	58
14	5	31	12	08	16	03	16	19	22	29	09	02	22	42	5	03	16	38	13	52	6	18	11	45
15	5	55	12	25	16	20	16	16	22	36	08	36	22	36	5	30	16	20	13	58	5	55	11	32
16	6	18	12	41	16	38	16	12	22	42	08	10	22	29	5	56	16	03	14	03	5	31	11	18
17	6	41	12	57	16	55	16	07	22	49	07	44	22	22	6	21	15	45	14	08	5	08	11	03
18	7	04	13	13	17	12	16	01	22	54	07	17	22	14	6	46	15	26	14	12	4	45	10	48
19	7	27	13	28	17	28	15	55	22	59	06	50	22	06	7	11	15	08	14	15	4	21	10	33
20	7	49	13	43	17	45	15	47	23	04	06	23	21	57	7	35	14	49	14	17	3	58	10	18
21	8	12	13	57	18	01	15	39	23	08	05	55	21	48	7	58	14	30	14	18	3	34	10	02
22	8	34	14	11	18	16	15	30	23	12	05	27	21	39	8	21	14	11	14	19	3	10	9	46
23	8	57	14	24	18	32	15	20	23	16	04	59	21	29	8	44	13	51	14	19	2	47	9	29
24	9	19	14	36	18	47	15	10	23	18	04	31	21	19	9	06	13	31	14	18	2	23	9	12
25	9	41	14	48	19	01	14	58	23	21	04	02	21	08	9	27	13	11	14	17	1	59	8	56
26	10	03	14	59	19	16	14	46	23	23	03	33	20	57	9	47	12	51	14	15	1	35	8	39
27	10	24	15	10	19	29	14	33	23	25	03	04	20	46	10	07	12	31	14	12	1	12	8	21
28	10	46	15	20	19	43	14	19	23	26	02	35	20	34	10	26	12	10	14	08	0	48	8	03
29	11	07	15	29	19	56	14	05	23	26	02	05	20	22	10	45	11	49	14	04	0	24	7	46
30	द.11	28	-15	37	द.20	09	-13	50	द.23	27	-01	35	द.20	09	+11	03	द.11	28	+13	59	द.0	00	+7	28

चर कोष्ठक (भाग 1)

क्रान्ति ⟩	0°	1°	2°	3°	4°	5°	6°	7°	8°	9°	10°	11°	12°
अक्षांश	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	चं. मि. से.	चं. मि. से.
0	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 0 00	0 0 00
1	0 00	0 04	0 08	0 13	0 17	0 21	0 25	0 29	0 34	0 38	0 42	0 47	0 51
2	0 00	0 08	0 17	0 25	0 34	0 42	0 50	0 59	1 07	1 16	1 25	1 33	1 42
3	0 00	0 13	0 25	0 38	0 50	1 03	1 16	1 28	1 41	1 54	2 07	2 20	2 33
4	0 00	0 17	0 34	0 50	1 07	1 24	1 41	1 58	2 15	2 32	2 50	3 07	3 24
5	0 00	0 21	0 42	1 03	1 24	1 45	2 06	2 28	2 49	3 10	3 32	3 54	4 16
6	0 00	0 25	0 50	1 16	1 41	2 06	2 32	2 57	3 23	3 49	4 15	4 41	5 07
7	0 00	0 29	0 59	1 28	1 58	2 28	2 57	3 27	3 57	4 27	4 58	5 28	5 59
8	0 00	0 34	1 07	1 41	2 15	2 49	3 23	3 57	4 32	5 06	5 41	6 16	6 51
9	0 00	0 38	1 16	1 54	2 32	3 11	3 49	4 27	5 06	5 45	6 24	7 03	7 43
10	0 00	0 42	1 25	2 07	2 50	3 32	4 15	4 58	5 41	6 24	7 08	0 7 51	8 36
11	0 00	0 47	1 33	2 20	3 07	3 54	4 41	5 28	6 16	7 03	7 51	8 40	9 28
12	0 00	0 51	1 42	2 33	3 24	4 16	5 07	5 59	6 51	7 44	8 36	9 28	10 21
13	0 00	0 55	1 51	2 46	3 42	4 38	5 34	6 30	7 26	8 23	9 20	10 17	11 15
14	0 00	1 00	2 00	3 00	4 00	5 00	6 00	7 01	8 02	9 03	10 05	11 07	12 09
15	0 00	1 04	2 09	3 13	4 18	5 22	6 27	7 32	8 38	9 44	10 50	11 57	13 04
16	0 00	1 09	2 18	3 27	4 36	5 45	6 54	8 04	9 14	10 25	11 36	12 47	13 59
17	0 00	1 13	2 27	3 40	4 54	6 08	7 22	8 36	9 51	11 06	12 22	13 38	14 54
18	0 00	1 18	2 36	3 54	5 12	6 31	7 50	9 09	10 28	11 48	13 08	14 39	15 50
19	0 00	1 23	2 45	4 08	5 31	6 54	8 18	9 42	11 06	12 30	13 55	15 21	16 47
20	0 00	1 27	2 55	4 22	5 50	7 18	8 46	10 15	11 41	13 13	14 43	0 16 14	17 45
21	0 00	1 32	3 04	4 37	6 09	7 42	9 15	10 48	12 22	13 57	15 31	17 07	18 43
22	0 00	1 37	3 14	4 51	6 29	8 06	9 44	11 22	13 01	14 40	16 20	18 01	19 42
23	0 00	1 42	3 24	5 06	6 48	8 31	10 14	11 57	13 41	15 25	17 10	18 56	20 42
24	0 00	1 47	3 34	5 21	7 08	8 56	10 44	12 32	14 21	16 11	18 01	19 52	21 43
25	0 00	1 52	3 44	5 36	7 28	9 21	11 14	13 08	15 02	16 57	18 52	20 48	22 45
26	0 00	1 57	3 54	5 52	7 49	9 47	11 45	13 44	15 43	17 44	19 44	21 46	23 48
27	0 00	2 02	4 05	6 07	8 10	10 13	12 17	14 21	16 26	18 31	20 37	22 44	24 52
28	0 00	2 08	4 15	6 23	8 31	10 40	12 49	14 58	17 09	19 19	21 31	23 44	25 57
29	0 00	2 13	4 26	6 40	8 53	11 07	13 22	15 37	17 52	20 09	22 26	24 44	27 04
30	0 00	2 19	4 37	6 56	9 15	11 35	13 55	16 16	18 37	20 59	23 22	0 25 46	28 12
31	0 00	2 24	4 49	7 13	9 38	12 03	14 29	16 55	19 23	21 51	24 20	26 50	29 21
32	0 00	2 30	5 00	7 30	10 01	12 32	15 04	17 36	20 09	22 43	25 18	27 54	30 32
33	0 00	2 36	5 12	7 48	10 25	13 02	15 39	18 18	20 57	23 37	26 18	29 00	31 44
34	0 00	2 42	5 24	8 06	10 49	13 32	16 16	19 00	21 45	24 32	27 19	30 08	32 58
35	0 00	2 48	5 36	8 25	11 14	14 03	16 53	19 44	22 35	25 28	28 22	31 17	34 14
36	0 00	2 54	5 49	8 44	11 39	14 35	17 31	20 28	23 27	26 26	29 26	32 29	35 32
37	0 00	3 01	6 02	9 03	12 05	15 07	18 10	21 14	24 19	27 25	30 33	33 41	36 52
38	0 00	3 08	6 15	9 23	12 32	15 41	18 50	22 01	25 13	28 26	31 40	34 56	38 14
39	0 00	3 14	6 29	9 44	12 59	16 15	19 32	22 50	26 08	29 39	32 50	36 16	39 39
40	0 00	3 21	6 43	10 05	13 27	16 50	20 14	23 39	27 06	30 33	34 02	0 37 33	0 41 06
41	0 00	3 29	6 57	10 27	13 56	17 27	20 58	24 30	28 04	31 39	35 16	38 55	42 35
42	0 00	3 36	7 12	10 49	14 26	18 04	21 43	25 23	29 05	32 48	36 32	40 19	44 08
43	0 00	3 44	7 28	11 12	14 57	18 43	22 30	26 18	30 07	33 58	37 51	41 46	45 44
44	0 00	3 52	7 44	11 36	15 29	19 23	23 18	27 14	31 12	35 12	39 13	43 17	47 23
45	0 00	4 00	8 00	12 01	16 02	20 05	24 08	28 13	32 19	36 27	40 37	44 50	49 05
46	0 00	4 09	8 17	12 27	16 37	20 48	25 00	29 13	33 28	37 49	42 05	46 27	50 52
47	0 00	4 17	8 35	12 53	17 12	21 32	25 51	30 16	34 40	39 07	43 36	48 08	52 42
48	0 00	4 27	8 53	13 21	17 49	22 18	26 49	31 21	35 55	40 31	45 10	49 52	54 37
49	0 00	4 36	9 13	13 50	18 27	23 06	27 47	32 29	37 13	42 00	46 49	51 41	56 37
50	0 00	4 46	9 32	14 19	19 07	23 56	28 47	33 39	38 34	43 31	48 31	0 53 35	0 58 42

चर कोष्ठक (भाग 2)

क्रान्ति ⟩	13°	14°	15°	16°	17°	18°	19°	20°	21°	22°	23°	24°
अक्षांश	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.
0	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00
1	0 55	1 00	1 04	1 09	1 13	1 18	1 23	1 27	1 32	1 37	1 42	1 47
2	1 51	2 00	2 09	2 18	2 27	2 36	2 45	2 55	3 04	3 14	3 24	3 34
3	2 46	3 00	3 13	3 27	3 40	3 54	4 08	4 22	4 37	4 51	5 06	5 21
4	3 42	4 00	4 18	4 36	4 54	5 12	5 31	5 50	6 09	6 29	6 48	7 08
5	4 38	5 00	5 22	5 45	6 08	6 31	6 54	7 18	7 42	8 06	8 31	8 56
6	5 34	6 00	6 27	6 54	7 22	7 50	8 18	8 46	9 15	9 44	10 14	10 44
7	6 30	7 01	7 32	8 04	8 36	9 09	9 42	10 15	10 48	11 22	11 57	12 32
8	7 26	8 02	8 38	9 14	9 51	10 28	11 06	11 44	12 22	13 01	13 41	14 21
9	8 23	9 03	9 44	10 25	11 06	11 48	12 30	13 13	13 56	14 41	15 25	16 11
10	0 9 20	0 10 04	0 10 50	0 11 36	0 12 22	0 13 08	0 13 55	0 14 43	0 15 31	0 16 21	0 17 10	0 18 01
11	10 17	11 07	11 56	12 47	13 38	14 29	15 27	16 14	17 07	18 01	18 56	19 52
12	11 15	12 09	13 03	13 58	14 54	15 50	16 47	17 45	18 43	19 42	20 42	21 43
13	12 13	13 12	14 11	15 11	16 11	17 12	18 14	19 17	20 20	21 25	22 30	23 36
14	13 12	14 15	15 19	16 24	17 29	18 35	19 43	20 50	21 57	23 08	24 18	25 30
15	14 11	15 19	16 28	17 38	18 48	19 59	21 11	22 24	23 37	24 52	26 07	27 24
16	15 11	16 24	17 38	18 52	20 07	21 23	22 40	23 58	25 17	26 37	27 58	29 20
17	16 11	17 29	18 48	20 07	21 27	22 48	24 10	25 33	26 58	28 23	29 50	31 18
18	17 12	18 35	19 59	21 23	22 48	24 14	25 42	27 10	28 40	30 10	31 43	33 16
19	18 14	19 42	21 11	22 40	24 10	25 52	27 14	28 48	30 23	31 59	33 37	35 16
20	0 19 17	0 20 50	0 22 23	0 23 58	0 25 33	0 27 10	0 28 48	0 30 27	0 32 08	0 33 49	0 35 33	0 37 18
21	20 20	21 59	23 37	25 17	26 58	28 40	30 23	32 08	33 54	35 41	37 31	39 22
22	21 25	23 08	24 52	26 37	28 23	30 10	31 58	33 49	35 42	37 35	39 30	41 27
23	22 30	24 18	26 08	27 58	29 50	31 43	33 57	35 33	37 31	39 30	41 31	43 34
24	23 36	25 30	27 24	29 20	31 18	33 16	35 16	37 18	39 22	41 27	43 34	45 44
25	24 43	26 42	28 43	30 44	32 47	34 52	36 57	39 05	41 15	43 26	45 40	47 56
26	25 52	27 56	30 02	32 09	34 18	36 28	38 40	40 54	43 10	45 28	47 48	50 10
27	27 01	29 12	31 23	33 36	35 51	38 07	40 23	42 45	45 07	47 32	49 58	52 27
28	28 12	30 28	32 46	35 05	37 25	39 48	42 12	44 38	47 06	49 38	52 11	54 47
29	29 25	31 47	34 10	36 35	39 02	41 30	44 01	46 33	49 08	51 46	54 27	57 09
30	0 30 39	0 33 06	0 35 36	0 38 07	0 40 40	0 43 15	0 45 52	0 48 31	0 51 13	0 53 57	0 56 45	0 59 34
31	31 54	34 28	37 04	39 41	42 21	45 02	47 46	50 32	53 20	56 12	0 59 06	1 02 04
32	33 11	35 51	38 33	41 17	44 03	46 52	49 42	52 35	55 30	0 58 30	1 01 31	1 04 37
33	34 29	37 16	40 05	42 56	45 48	48 44	51 41	54 41	0 57 44	1 00 51	1 04 00	1 07 13
34	35 50	38 44	41 39	44 36	47 38	50 38	53 43	56 51	1 00 01	1 03 15	1 06 33	1 09 54
35	37 13	40 13	43 15	46 20	49 27	52 36	55 48	0 59 04	1 02 22	1 05 44	1 09 10	1 12 40
36	38 37	41 45	44 54	48 06	51 20	54 37	0 57 57	1 01 20	1 04 47	1 08 17	1 11 51	1 15 30
37	40 05	43 19	46 36	49 55	53 17	56 41	1 00 09	1 03 40	1 07 15	1 10 54	1 14 37	1 18 24
38	41 34	44 56	48 20	51 47	55 17	0 58 49	1 02 25	1 06 05	1 09 48	1 13 36	1 17 28	1 21 25
39	43 06	46 36	50 08	53 42	57 20	1 01 01	1 04 46	1 08 34	1 12 26	1 16 23	1 20 25	1 24 35
40	44 41	0 48 18	0 51 58	0 55 41	0 59 28	1 03 17	1 07 10	1 11 08	1 15 10	1 19 16	1 23 28	1 27 45
41	46 19	50 04	53 53	57 44	1 01 39	1 05 38	1 09 40	1 13 47	1 17 58	1 22 15	1 26 37	1 31 05
42	47 59	51 54	55 51	0 59 51	1 03 55	1 08 03	1 12 15	1 16 31	1 20 53	1 25 20	1 29 53	1 34 32
43	49 44	53 46	57 53	1 02 02	1 06 16	1 10 33	1 14 55	1 19 22	1 23 54	1 28 32	1 33 16	1 38 07
44	51 32	55 44	0 59 59	1 04 18	1 08 41	1 13 09	1 17 41	1 22 19	1 27 02	1 31 52	1 36 48	1 41 51
45	53 24	57 45	1 02 10	1 06 39	1 11 13	1 15 51	1 20 34	1 25 23	1 30 18	1 35 19	1 40 28	1 45 45
46	55 20	0 59 51	1 04 26	1 09 06	1 13'53	1 18 39	1 23 33	1 28 34	1 33 41	1 38 56	1 44 18	1 49 49
47	57 20	1 02 02	1 06 48	1 11 38	1 16 33	1 21 34	1 26 41	1 31 54	1 37 14	1 42 42	1 48 19	1 54 04
48	0 59 26	1 04 18	1 09 15	1 14 17	1 19 24	1 24 37	1 29 56	1 35 22	1 40 56	1 46 39	1 52 30	1 58 32
49	1 01 36	1 06 40	1 11 49	1 17 03	1 22 22	1 27 48	1 33 20	1 39 01	1 44 49	1 50 47	1 56 55	2 03 14
50	1 03 53	1 09 09	1 14 29	1 19 56	1 25 28	1 31 08	1 36 54	1 42 50	1 48 54	1 55 08	2 01 33	2 08 11

सात ऋषियों का धाम–'सप्तर्षि तारामण्डल'

(सप्तर्षि तारामण्डल में वसिष्ठादि सात ऋषियों को पहिचानिए)

लेखक–प्रियव्रत शर्मा,

सप्तर्षि तारामण्डल को लगभग सभी लोग पहचानते हैं। उत्तरी ध्रुव से कुछ दूरी पर स्थित यह तारामण्डल हमेशा उत्तरी ध्रुव की पूरी परिक्रमा 24 घण्टे में करता रहता है। उत्तरी-गोलार्ध के प्रदेशों में यह आसानी से दिखाई पड़ता है। उत्तरी-भारत के प्रदेशों में तो यह उत्तरी क्षितिज से काफी ऊपर बड़ी आसानी से दिखाई देता है। इस तारामण्डल को English में Ursa Major कहा जाता है। जैसाकि इसके नाम से स्पष्ट है–इसके 7 तारे मरीचि, वसिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, क्रतु एवं पुलह–ये सात ऋषि माने जाते हैं। सर्वसाधारण तो क्या, पठित व्यक्तियों को भी यह ज्ञात नहीं है, कि इनमें से कौन सा तारा, कौन सा ऋषि है। हिन्दुधर्म पर आस्था रखने वालों को तो यह जानना ही चाहिए, ताकि वे रात्रि में इन ऋषियों का दर्शन करके प्रतिदिन इनका अभिवादन कर सकें।

यहां हम **'सप्तर्षि तारामण्डल'** का एक चित्र दे रहे हैं, जिसमें यह दिखाया गया है, कि कौन सा तारा, कौन सा ऋषि है। इस चित्र को देखने का प्रकार यह है–इस चित्र को अपने सिर के ऊपर आसमान की ओर ऐसे फैला कर रखिए कि इसके पूर्व आदि दिशाओं वाले भाग अपनी-अपनी दिशाओं की ओर हों। यह तारामण्डल भी अन्य सभी तारों एवं तारामण्डलों की भांति 24 घण्टों में पूर्व से पश्चिम की ओर उत्तरी ध्रुव की पूरी परिक्रमा करता है। जिससे 24 घण्टों में एक बार यह चित्र में दिखाई गई स्थिति में अवश्य आता है। अर्थात् तब यह तारामण्डल उत्तरी ध्रुव से बिल्कुल ऊपर होता है और तब, जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, मरीचि (η) तारा पूर्व की ओर और शेष सभी तारे इससे पश्चिम की ओर स्थित होते हैं। **अब इस चित्र को देखें**–यहां Ursa Major Constellation के β, α, γ, δ, ε, ξ, η तारे क्रमशः पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, अत्रि, अंगिरा, वसिष्ठ और मरीचि हैं। **आचार्य वराह मिहिर** ने इस तारामण्डल में सप्तर्षि ताराओं की स्थिति का स्पष्टीकरण **'बृहत्संहिता'** में इस प्रकार किया है–

**"पूर्वे भागे भगवान् मरीचिरपरे स्थितो वसिष्ठोऽस्मात्। तस्यांगिरास्ततोऽत्रिः तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च॥
पुलहः क्रतुरिति भगवानासन्ना अनुक्रमेण पूर्वाद्यात्। तत्र वसिष्ठं मुनिवरमुपाश्रिताऽरुन्धती साध्वी॥"**

इसका अर्थ है, कि–इस तारामण्डल में सबसे पहले पूर्व की ओर भगवान् मरीचि और इससे पश्चिम की ओर क्रमशः वसिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह एवं क्रतु भगवान् स्थित हैं। यहां मुनिवर वसिष्ठ के बिल्कुल समीप में ही उनकी पतिव्रता पत्नी **'अरुन्धती'** के नाम वाला एक छोटा सा तारा भी है, जिसे इस चित्र में दर्शाया नहीं गया है। वसिष्ठ ऋषि (तारा) के पास स्थित इस अरुन्धती तारा को देखने के लिए वसिष्ठ तारे के ऊपर ही निगाह टिकानी होगी, तभी उसके बिल्कुल पास स्थित (वसिष्ठ तारे से लगभग सटा हुआ) **'अरुन्धती'** नाम का यह छोटा सा मंद तारा देखा जा सकेगा। वसिष्ठ तारे पर निगाह केन्द्रित किए बिना इसे नहीं देखा जा सकता।

पुलह (β) से क्रतु (α) तारे की ओर गुजरती सरल रेखा सर्वप्रथम जिस चमकीले तारे को लगभग छूती है, वही तारा उत्तरी ध्रुव है। यह क्रतु से लगभग 27 अंश की दूरी पर स्थित है। यह ध्रुवतारा लगभग स्थिर है। इसके चारों ओर आकाशस्थ उत्तरी गोलार्ध के सभी तारे 24 घण्टों में पूरा चक्कर काटते रहते हैं। ध्रुव को English में α Ursae minoris कहा जाता है।

यहां दिए गए कोष्ठक में इन सातों तारों और ध्रुव के विषुवकाल, क्रान्ति एवं दीप्ति-अंक (Magnitudes) दिए गए हैं। दीप्ति-अंक तारों की चमक का मापदण्ड है। **ध्यान रहे**–जिस तारे का दीप्ति-अंक जितना ज्यादा होगा, उतनी ही उसकी चमक कम होगी। अर्थात् दो तारों में से जिसका दीप्ति-अंक अधिक होगा, वह दूसरे से कम चमकने वाला होगा। सबसे कम चमकने वाले तारे का दीप्ति-अंक 6 माना गया है। इससे अधिक दीप्ति-अंक वाला तारा नंगी आंख से नहीं देखा जा सकता है।

यहां कोष्ठक में प्रदर्शित इन सप्तर्षि तारों के दीप्ति-अंकों से स्पष्ट है, कि अंगिरा तारा इन तारों में सबसे ज्यादा एवं अत्रि तारा सबसे कम चमकदार है। क्रतु एवं मरीचि- दोनों तारों की चमक लगभग बराबर है। ध्रुव तारे की चमक वसिष्ठ, अत्रि, पुलस्त्य एवं पुलह नामक तारों से अधिक और क्रतु, अंगिरा एवं मरीचि से कुछ कम है।

सप्त-ऋषि ताराओं के विषुवकाल, क्रान्ति और दीप्ति-अंक

तारा	ऋषि	विषुवकाल		क्रान्ति		दीप्ति-अंक
		घं.	मि.	अं.	क.	
β Ursae Majoris	पुलह	11	00	+ 56	31	2.4
α Ursae Majoris	क्रतु	11	02	+ 61	54	1.9
γ Ursae Majoris	पुलस्त्य	11	52	+ 53	51	2.5
δ Ursae Majoris	अत्रि	12	14	+ 57	11	3.4
ε Ursae Majoris	अंगिरा	12	52	+ 56	06	1.7
ζ Ursae Majoris	वसिष्ठ	13	22	+ 55	04	2.4
η Ursae Majoris	मरीचि	13	46	+ 49	27	1.9
α Ursae Minoris	ध्रुव	2	04	+ 89	08	2.1
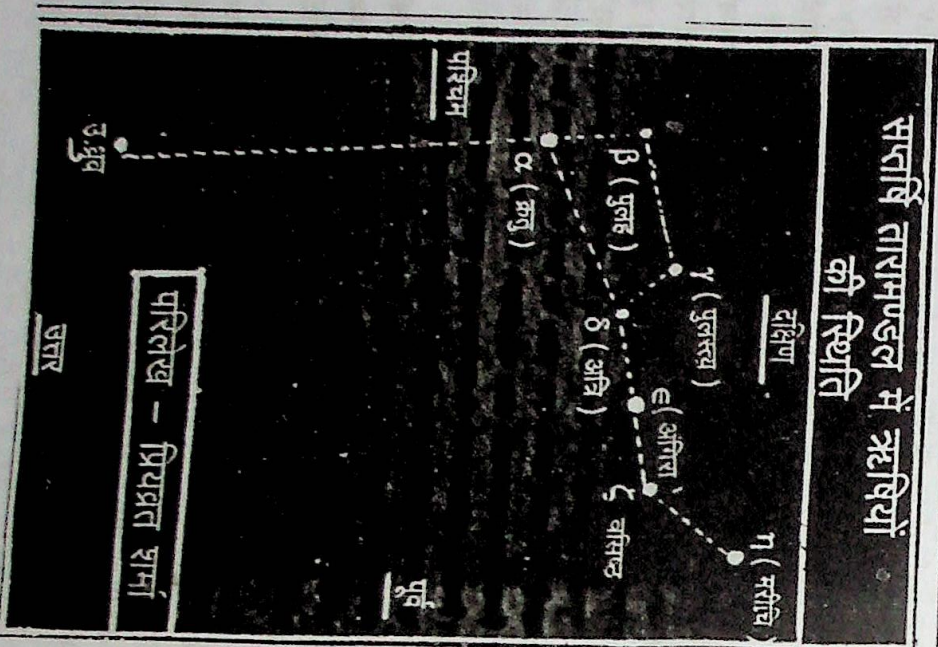
ग्रहणादर्श

लेखक–प्रियव्रत शर्मा

[सन् 2016 से 2050 ई. तक भारत में दृश्य सूर्य–चन्द्र ग्रहणों का सांगोपांग विवरण]

इस पुस्तक में सन् 2016 से 2050 ई. तक (35 वर्षों में) भारतभूमि पर दिखलाई पड़ने वाले सभी सूर्य–चन्द्र ग्रहणों का सर्वाङ्गीण विवेचन है। चन्द्रग्रहण के स्पर्श, मध्य, मोक्ष और खग्रासारम्भ–समाप्ति के सेकण्ड तक शुद्ध काल, ग्रासमान तथा ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त ग्रहण वाले भारतीय स्थलों के अक्षांश–रेखांश निर्दिष्ट हैं।

इस 35 वर्षीय अवधि में भारतीय क्षेत्र में घटित होने वाले सूर्यग्रहणों के विभिन्न अक्षांश–रेखांशीय स्थलों के स्पर्श, मध्य, मोक्ष के सेकण्ड तक शुद्ध काल तथा परमग्रासमान पृथक्–पृथक् कोष्ठकों में दिए गए हैं। सूर्यग्रहण के ग्रस्तोदयास्तवाले स्थलों के अक्षांश–रेखांशों को भी पृथक् कोष्ठकों में दिया गया है। खग्रास एवम् कंकण सूर्यग्रहणों के प्रारम्भ–समाप्तिकाल तथा खग्रास–कंकण ग्रहण के पथ (पट्टी) की दक्षिणोत्तरी सीमाओं के अक्षांश, रेखांश किंच खग्रास–कंकणग्रहण के मार्ग (पट्टी) की मध्यवर्त्ती रेखाओं के अक्षांश–रेखांश भी दिए गए हैं, जिनकी मदद से यह अनायास जाना जा सकता है कि– भारत में अमुक खग्रास या कंकण ग्रहण कहां–कहां, कब–कब दिखाई देगा तथा किन स्थलों पर खग्रास, कंकण ग्रहण की अवधि कितनी होगी ? इसके साथ ही भारत के प्रसिद्ध 225 नगरों में प्रत्येक सूर्यग्रहण के स्पर्श, मोक्ष आदि काल भी पृथक् कोष्ठक में प्रदर्शित हैं।

यहां दिए गए सूर्यग्रहण के विभिन्न अक्षांश–रेखांशीय स्पर्श–मोक्षादि के कालों द्वारा कोई भी व्यक्ति भारत–मानचित्र पर स्पर्श–मोक्षादिदर्शक रेखाएं भी आसानी से अंकित कर सकता है और उनसे किसी भी नगर/ग्राम में उस सूर्यग्रहण के स्पर्शादि काल एक ही दृष्टि में तुरन्त जान सकता है।

ग्रहण विश्व के अन्य किन–किन देशों में दृश्य होगा, इसका निर्देश करने वाले भूगोल-चित्र भी दिए गए हैं। भारतीय भूभाग पर दृश्य सूर्य–चन्द्रग्रहणों के सभी खगोलीय चमत्कारों **(Celestial Phenomona)** का इसके सदृश स्पष्ट एवं परिपूर्ण विवेचन आपको अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

भारतीय पञ्चाङ्गकारों के लिए तो यह प्रकाशन वरदान सिद्ध होगा। यह पुस्तक 2019 ई. के मध्य तक प्रकाशित हो जाएगी– प्रतीक्षा कीजिए।

साईज 28 × 21 से. मी. (एटलस साईज), पृष्ठसंख्या 722

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS (1951 To 2050 A.D.)

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)

(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टै.टा.) कालिक त्रिकालज्ञ सूक्ष्म दृक्प्रसिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु, स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टै. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गिकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है। ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विश्व के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप से लाभान्वित होंगे।

मूल्य **Rs.1000/-** + डाकव्यय **Rs. 60/-**

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज 24 × 18½ से. मी.
पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टै. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1', 0°–2', 0°–3', 0°–4', 0°–5' अक्षांश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह संदिग्ध लग्न 'सन्देहास्पद लग्न') जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं। भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टै. अ. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टै. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टै.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य **Rs. 500/-** + डाकव्यय **Rs. 50/-**

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

श्री राम
राशि रत्न भाग्य
श्री राम
सभी राशियों के रत्न, सभी राशियों के उपरत्न, नवरत्न लूज सेट, नवरत्न अंगूठी व पेन्डेन्ट, सभी राशियों पर लगने वाली राशि की अंगूठियां व पेन्डेन्ट शुद्ध चांदी में, पूजा के काम में आने वाले श्री यंत्र, गणेश, शिवलिंग, रुद्राक्ष के मुखदार दाने । से 14 मुखी व सभी प्रकार की मूर्तियाँ तथा रुद्राक्ष मालाऐं उचित रेट पर मिलती हैं।
पन्ना
हीरा
मोती
पुखराज
माणिक
मूंगा
लहसुनिया
नीलम
गोमेद
मुफ्त मूल्य सूची के लिए स्वयं मिलें, फोन करें, पत्र व्यवहार करें अथवा हमारी वेबसाइट पर लागऑन करें।
ज्योतिषाचार्यों के लिए विशेष छूट, ज्योतिषी कृपया सम्पर्क करें।
पूरणमल शंकरलाल
हाउस नं. 150, ग्राउण्ड फ्लोर, हल्दिया हाउस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
माल पार्सल या वी.पी.पी द्वारा भी भेजा जाता है।
(M) 09829019860 (Shankarlal Soni), (M) 09829069860 (Vikas Soni)
Phones- (O) 0141-2566750, 0141-4106750, (R) 0141-2296141
Email- Rashiratanbhagya@gmail.com
Website- www.rashiratanbhagya.com

साईज़ 28 x 21 से. मी. (एटलस साईज़),
पृष्ठसंख्या 722

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS (1951 To 2050 A.D.)

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)
(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज़ के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टै.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्‌सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु, स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टै. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है। ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में लाभान्वित होंगे।

मूल्य Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/-

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज 24 x 18½ से. मी.
पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टै. टा) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टै. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1', 0°–2', 0°–3', 0°–4', 0°–5' अक्षांश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (द्रि:द्र गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने फ़लत तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं। भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टै. अ. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टै. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टै.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

सभी राशियों के रत्न, सभी राशियों के उपरत्न, नवरत्न लूज सेट, नवरत्न अंगूठी व पेन्डेन्ट, सभी राशियों पर लगने वाली राशि की अंगूठियां व पेन्डेन्ट शुद्ध चांदी में, पूजा के काम में आने वाले श्री यंत्र, गणेश, शिवलिंग, रुद्राक्ष के मुखदार दाने। से 14 मुखी व सभी प्रकार की मूर्तियाँ तथा रुद्राक्ष मालाऐं उचित रेट पर मिलती हैं।

पन्ना हीरा मोती
पुखराज माणिक मूंगा
लहसुनिया नीलम गोमेद

मुफ्त मूल्य सूची के लिए स्वयं मिलें, फोन करें, पत्र व्यवहार करें अथवा हमारी वेबसाइट पर लागऑन करें।

ज्योतिषाचार्यों के लिए विशेष छूट, ज्योतिषी कृपया सम्पर्क करें।

पूरणमल शंकरलाल

हाउस नं. 150, ग्राउण्ड फ्लोर, हल्दिया हाऊस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

माल पार्सल या वी.पी.पी द्वारा भी भेजा जाता है।

(M) 09829019860 (Shankarlal Soni), (M) 09829069860 (Vikas Soni)
Phones- (O) 0141-2566750, 0141-4106750, (R) 0141-2296141
Email- Rashiratanbhagya@gmail.com
Website- www.rashiratanbhagya.com

"ज्योतिष रत्न"

(ज्योतिष पर आधारभूत पुस्तक)

इस पुस्तक में ज्योतिष और दर्शन शास्त्र का समन्वय कर इसे सत्य व रोचक बना दिया है। चूंकि दर्शनशास्त्र व ज्योतिष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अतः एक अच्छा ज्योतिर्विद् वही हो सकता है जिसे ज्योतिष के साथ-साथ दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हो, क्योंकि समस्त पराविद्याओं का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है। यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालदर्शी होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक भी थे। इसके अलावा इस पुस्तक में खगोल गणित व फलित ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय देते हुए षोड्षवर्ग सिद्धान्त की सरल व्याख्या की गई है तथा साथ में सभी ग्रहों का पौराणिक, वैज्ञानिक और सामान्य परिचय देते हुए भौतिक और अभौतिक स्तर पर उनके सम्पूर्ण कारकत्व की तार्किक विवेचना की गई है।

इस पुस्तक में फलादेश की "सम्यक" विधि की व्याख्या ठोस फलित सूत्रों के साथ की गई है तथा साथ ही इसमें एक संक्षिप्त ज्योतिष शब्द कोश व प्रश्नोत्तर माला भी दी गई है।

मूल्य : 125/- रुपये + 35/- (डाक व्यय)

सुख-समृद्धि की राह : गृह-वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125/- + 35/-

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

- ❖ सुख और समृद्धि ❖ उत्तम दाम्पत्य जीवन
- ❖ स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति ❖ उत्तम शिक्षा और
- ❖ घर और व्यवसाय में सफलता
- ❖ एक बेहतर जीवन प्रणाली

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गया है। **भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन से लेकर आंतरिक साज-सज्जा** तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। **फ्लैट्स के चयन** और आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों-सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

तन्त्र पथ प्रदर्शक

लेखक:- श्री रमेश दत्त झा झक्करनाथ, झाबाबा मूल्य : रूपये 150.00 *(डाक खर्च 50 रु. अलग)*

प्रस्तुत शोध प्रबंध में- तंत्र, मंत्र, यंत्र, ज्योतिष एवं साहित्य कर्मकाण्ड के विषय पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत-शोध-प्रबन्ध ''रूचि'' को तंत्र विद्या के विषय में आकृष्ट करना है।

''गुरुमुख'' (दीक्षा संकार) के लिये प्रारंभिक-प्रयास, धार्मिक उपासना, पूजा-पद्धति साधना-उपासना की ''आचारसंहिता'' (नियमादि) रहस्यमयी माया के गूढ़ तथा गोपनीय-विज्ञान, जोकि तंत्र विषयक-विवेचनात्मक समीक्षा के आधार पर, यह शास्त्र षट्कर्म (Six fold activity) के रूप में माना जाता है। इसके वस्तुस्थिति से यथा संभव विषय-वस्तु से परिचय कराना चाहता हूँ।

- जिस प्रकार ''उपासना के ये सभी क्रियाएं-इच्छानुसार प्रार्थना द्वारा अलौकिक प्रेरक शक्ति के माध्यम से प्रगतिशील मानव, उत्तम और सही दिशा में सफलता प्राप्ति के लिए प्रगति-पथ पर अग्रसर हों एवं गति प्राप्त करने के लिये उचित दिशा की ओर संकेत करती है। यह संकेत हमारी कुछ विश्वस्त परम्परा पर आधारित है। 6 प्रकार के कर्म इस प्रकार है - मारण मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, उद्वेषण और शान्ति। मानसिक तनाव, विकलता हलचल उद्विग्नता, आदि में शान्ति कर्म के द्वारा समाधान होता है। इस प्रकार से आवश्यकतानुसार अन्य कार्यों क लिये दूसरे निर्दिष्टकर्म से समाधान संभव होता है।

कुर्लाणवतंत्र के अनुसार - तांत्रिक प्रवृत्ति - सांसारिक वस्तु की उपलब्धि के लिये है। इसका फल शीघ्र होता है। महाकाव्य और पुराण में - इस रहस्यमय गूढ़ एवं गोपनीय विद्या के बारे में उपाख्यान के रूप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। ये सभी वर्णन प्रयोग रूप में है। यह विद्या पहले राक्षसों के बीच थी ऋषि शुक्राचार्य को भी यह विद्या प्राप्त थी, परन्तु सिर्फ राक्षस ही उनके शिष्य थे।

इस प्रकार यह ब्रह्म विद्या के रूप में अवतरिक हुआ। तंत्र विद्या के विषय में - हमेशा वर्णन है कि यह एक रहस्यमयी, गूढ़ और गोपनीय मार्ग है। एक तरह से - यह साथकों के धन-सम्पत्ति हरण कर देता है। पत्नी एवं उनके जीवन को भी बर्बाद करदेता है। फिर भी - इसके प्रति आस्था विश्वास और भरोसे पर सन्देह नहीं करना एवं इसके रहस्य को दूसरों के सामने व्यक्त नहीं करना चाहिये।

किसी भी जाति के कोई भी व्यक्ति बिना कोई दिक्कत के इस शास्त्र में प्रवेश कर सकते हैं। मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं, यदि उनकी रुचि हो। प्राप्त करने की मानसिकता हो। प्राप्त करने योग्य हो। दृढ़ संकल्पित हो। तंत्र शास्त्र एंक सुलभ व्याख्या है। वेदों की सत्यता का प्रमाण है। अल्पज्ञानी, थोड़ी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के लिए कलियुग के व्यस्त और बोझिल लोगों के लिए सर्वोत्तम और सर्वोच्च साधन है।

मनुष्य के कष्टों के समाधान के लिये - भगवान शिव ने इस शास्त्र को इसी युग (काल) के लिए उत्कृष्ट शैली में प्रचारित किया। धार्मिक सत्यता में प्रवेश करने का एक पारपत्र (बीजा) के रूप में तंत्र का आविष्कार किया।

इस प्रकार आगे बढ़ने के लिये - आध्यात्मिक निर्देशन भी आवश्यक होता है। सिद्धि और माया तंत्र शास्त्र में - शिव-पार्वती (कथोप-कथन) उत्कृष्ट और विशिष्ट भाषा शैली है। प्रतिमा की रचनात्मक क्रिया और पीठों की स्थापना मन्दिरों के निर्माण, जीवों के कल्याण, मानवों को दीक्षा (संस्कार) प्राप्त होने के लिये होता है। उपासना, साधना, तपस्या तथा आध्यात्मिक प्रयोगात्मक कर्म के लिये ही होता है। जिसे वांछित फल की प्राप्ति होती है, मनोरथ सिद्ध होता है। विशेष रूप से जिसकी जैसी भावना वैसा ही फल होता है।

अतः उपर्युक्त विषय वस्तुओं का विस्तृत वर्णन (संकेत) रूप में इस पुस्तक की विशेषता है।

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

1. 'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय'—यह शताब्दी पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतष कार्यालय है, जिसने असंख्य लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal), जन्म समय, जन्म तारीख और जन्म स्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर अक्षांश, सूर्योदयास्त, अयनांश आदि में सभी अपेक्षित सूक्ष्म संस्कार देकर स्वनिर्मित अत्याधुनिक/कम्प्यूटरीकृत सारणियों द्वारा भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा/दशा और निवास स्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल अतीव सूक्ष्मतापूर्वक बनाये जाते हैं, जिनमें स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, धन-सम्पत्ति, भाग्योदय, कार्यक्षेत्र, प्रगति आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्रादि हिन्दी में सुन्दर व संक्षिप्त फलादेशसहित अत्यन्त सावधानी से बनाये जाते हैं।

नोट—प्रत्येक कार्य की पूरी फीस ऑर्डर के साथ ही भेजें। V.P.P. नहीं की जायेगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा। डाकव्यय अलग से होगा।

(i)	भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस	Rs. 800/-
(ii)	भारतीय विस्तृत (बड़े) जन्मपत्र की फीस	Rs. 1200/-
(iii)	विदेशी जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iv)	भारतीय टेवा/दशा की फीस	Rs. 300/-
(v)	विदेशी दशा की फीस	Rs. 500/-
(vi)	भारतीय वर्षफल की फीस	Rs. 500/-
(vii)	विदेशी वर्षफल की फीस	Rs. 1000/-
(viii)	शुद्ध विवाहमुहूर्त्त/कुण्डली मिलान की फीस	Rs. 1100/-
(ix)	फोन पर मुहूर्त्त/मिलान की फीस	Rs. 2100/-
(x)	सर्वसाधारण प्रश्न की फीस	Rs. 1100/-

2. हमारे यहां मन्त्रादि साधनाकाल के विशेष समय में नवग्रहयन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र, सिद्धगोपाल यन्त्र आदि भी बनाये जाते हैं। जिनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण यह है—

(i) सिद्ध शनियन्त्र—इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभ पीड़ा से मुक्ति मिलती है। फीस—Rs. 2100/-

(ii) श्रीलक्ष्मी यन्त्र—अष्टगन्ध आदि से विधिवत् शुभ वेला में बनाये इस यन्त्र को पूजास्थल या गल्ले में रखने से लक्ष्मीजी की अपार कृपा रहती है। फीस—Rs. 5100/-

(iii) अठाराहा नाशक यन्त्र—जिन औरतों के बच्चे अठाराहा, मसान दोष आदि के कारण मर जाते हैं, उनके संरक्षणार्थ यह यन्त्र वरदान रूप है। फीस—Rs. 2100/-

(iv) सिद्धगोपाल यन्त्र—इस यन्त्र को श्रद्धासहित स्त्री धारण करे तो चिरंजीवी पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। फीस—Rs. 2100/-

व्यापारियों के लिए चांस (तेजी-मन्दी)

समय-समय पर हम रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड, शेयर मार्कीट, सोना, चांदी आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज, तिल-तेल सरसों, बिनौला आदि तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट तथा सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित Report की अडवांस फीस Rs. 5100/- प्रतिमास एवं वर्षभर की फीस Rs. 51000/- के हिसाब से चार्ज किये जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार- विमर्श' के अन्त में देखें।

नोट—Report के अतिरिक्त Phone पर प्रतिदिन बात करने की फीस अलग से होगी।

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ-साफ डाक पते के साथ फोन नं. एवं Pincode लिखना न भूलें।

—: पण्डित जी से मिलने हेतु :—

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय—7 से 10 A.M.

पण्डित जी से मिलने का समय—9 A.M. से

(दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित कर लें।)

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र-व्यवहार के लिए पता—
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु.पो. कुराली, जिला मोहाली (पंजाब) पिन-140103,
फोन—0160-2641277, 09988407010
Website : www.shrimartand.com